



दक्षिणी हिन्दी-काव्यधारा



# दखिखनी हिन्दी-काव्यधारा

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक  
विहार-राष्ट्रभाषा-मण्डल  
पटना - ३

[ ० ]

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

शकाब्द १८८०, विक्रमाब्द २०१५, ख्रिष्टाब्द १९५९

मूल्य सजित्द ६ ००

मुद्रक  
सम्मेलन मुद्रणालय  
प्रयाग

## वक्तव्य

आजकल अनेक क्षेत्रों में अनुसन्धान की प्रवृत्ति बढ़ रही है। फलस्वरूप कितने ही पुराने तथ्य बदल रहे हैं। बहुत-सी पुरानी परम्पराओं की जगह नई परम्पराएँ स्थापित हो रही हैं। यह कोई अनहोनी बात नहीं है। नई-नई खोजों से पूर्व-निश्चित सिद्धान्त अथवा इतिहास का रूप प्रायः परिवर्तित होता रहता है। पहले भी ऐसा हुआ है और आगे भी यह होता रहेगा। परिवर्तनशीलता का यह सत्य इस पुस्तक में प्रत्यक्ष मुखर है।

इस पुस्तक के विचारशील पाठक देखेंगे कि खड़ी बोली के आदिकवि कहे जानेवाले अमीर खुसरो के सम्बन्ध में जो मान्यता अबतक चली आ रही है, उसमें भी अब परिवर्तन की अपेक्षा होगी। विद्वद्वर राहुलजी के अन्वेषणों से, पहले की बहुतेरी धारणाएँ बदल चुकी हैं। उनके अनुसंधानों ने हिन्दी साहित्य को भी प्रभावित किया है। उसके इतिहास में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पहले वीरगाथाकाल से ही उसके इतिहास का आरम्भ माना जाता था। किन्तु उनकी खोज से उस काल के चार-पाँच सौ वर्ष पहले का सिद्धकाल माना जाने लगा। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के इतिहास का आरम्भिक समय बारहवीं शताब्दी के बदले सातवीं-आठवीं शताब्दी निश्चित हो गया।

श्री राहुलजी ने विभिन्न रुचि के हिन्दी पाठकों के लिए प्रचुर साहित्य रचा है। विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से उनके और भी दो बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—बौद्ध सिद्ध सरहपाद का 'दोहा-कोश' और दो खण्डों में 'मध्य एशिया का इतिहास'। इन दोनों गवेषणापूर्ण ग्रन्थों से हिन्दी साहित्य के बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हुई है। दूसरे इतिहास-ग्रन्थ के लिए भारत-सरकार ने ग्रन्थकार को पाँच हजार रुपये का पुरस्कार भी दिया है, क्योंकि गत वर्ष के हिन्दी प्रकाशनों में वही सर्वोत्तम ग्रन्थ समझा गया।

आशा है कि भाषा-तत्त्व-शोधकों और साहित्यिक अनुसन्धायकों के लिए यह पुस्तक विशेष उपयोगी प्रमाणित होगी और इस विषय में आगे भी खोज करने की प्रेरणा देगी।



## दो-शब्द

‘दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा’ को आज प्रकाशित होते देखते बड़ी प्रसन्नता होती है। सात-आठ वर्ष पहले यह संग्रह तैयार हो गया था, और इसके कुछ अंश पत्र-पत्रिकाओं में निकले भी। ऐसी काव्य-धाराओं की बड़ी आवश्यकता थी। यद्यपि अपभ्रंश और दक्खिनी हिन्दी को छोड़ बाकी को मैंने लिखने का दायित्व नहीं लिया था। ‘संस्कृत काव्यधारा’ भी छप गई, जिसको इसके बहुत पीछे लिखना शुरू किया था।

दक्खिनी हिन्दी-साहित्य की ऐसी कड़ी है, जिसको भुलाया नहीं जा सकता। खुसरो को खड़ी (कौरवी) हिन्दी का प्रथम कवि बतलाया जाता है, पर इसमें सन्देह है। खुसरो के समय अर्थात् १३वीं सदी का अन्त अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं का सन्धि-काल था। उस समय प्राकृत तत्सम शब्दों का प्रयोग ज्यादा होता था। खुसरो के समकालीन फारसी इतिहासकार राजपूत के लिए राउत शब्द का प्रयोग करते हैं, जो स्पष्ट राउत का ही अरबी लिपि द्वारा भ्रष्ट लेख है। ऐसे शब्दों का खुसरो की कविता में अभाव है। दूसरे, खुसरो की कविताओं का कोई भी समकालीन या उससे तीन-चार सौ वर्ष बाद के हस्तलेख नहीं मिलते। इस प्रकार खड़ी हिन्दी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी कवि थे। एक ओर उन्होंने बोलचाल की कौरवी को साहित्यिक भाषा का रूप दिया, तो दूसरी तरफ उनकी कृतियों ने उर्दू कविता का प्रारम्भ किया। हमारी हिन्दी उर्दू की, विशेष तौर से गद्य की ऋणी है। दिल्ली के राज्यपालों, सेनापतियों और दूसरे शासकों के साथ कौरवी भारत के भिन्न-भिन्न भागों में पहुँची है, हाँ साधारण बोलचाल के लिए ही, राजकीय कार्य या साहित्य के लिए नहीं। वह काम तो फारसी सँभाले हुई थी। कुरु के अज्ञातप्राय जनपद की दिल्ली को मुस्लिम शासकों ने अपनी और भारत की राजधानी बनाया। इस प्रकार ६ शताब्दियों के कन्नौज के महत्व को मिटा दिया। उपनिषद् और ब्राह्मणकाल में कुरु भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र था, पर प्रायः अठारह-उन्नीस शताब्दियों से वह अपने महत्व को खो चुका था। दिल्ली के कारण उसका भाग्य लौटा। और आज उसकी भाषा हमारे समस्त देश की सम्मिलित भाषा बन गई।

हिन्दी के साहित्यिक विकास में दक्खिनी हिन्दी और उर्दू का बहुत बड़ा हाथ है। उर्दू को बहुत से लोग हिन्दी का प्रतिपक्षी समझते हैं, जो गलत है। हम हिन्दीवाले उसे हिन्दी की एक शैली मानते हैं। जो विरोध है, वह केवल उसकी अरबी लिपि के कारण ही। वह समय दूर नहीं है, जब उर्दू का समस्त श्रेष्ठ साहित्य नागरी अक्षरों में आकर सबके लिए सुलभ हो जायेगा। कौरवी लोकभाषा से व्यवधान करने के लिए उर्दू ने जो विधि-निषेध बनाये, हिन्दी ने उसे स्वीकार कर लिया। कौरवी में ‘आवै है’ का प्रयोग आज भी होता है, उर्दू ने ‘आता है’ कर दिया, तो हिन्दी भी इस लक्ष्मण-रेखा के बाहर जाने की शक्ति नहीं रखती।



भूमि का म किती जानवाये जाता था आगे जहाँ-कहाँ मंते पढ़ा है इसलिए वहाँ अधिक बहने की आवश्यकता नहीं रह गई। दरिदरों काय्य के और भी मघट विन्ने हैं, जिन्में एर ईदग-वाद में योडे ही दिन पहले निाला है, और बहुत जच्छा है। यदि इन मघटों को मात्र प्राठ साल पहले मंने देगा होता, तो शायद इस काय्य में शायद न मगाता।

यह उग्रह शायद यों ही कीडों के गाते के लिए पढा गया, यदि इसे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने न स्वीकार किया होता, इसलिए मं परिषद् का श्राप है।

मसूरी  
३-६-५८

—राहुल सांकृत्यायन

## कवि-सूची

कवि	काल	पृष्ठ
<b>१. आदिकाल (१४००-१५०० ई०)</b>		
१. बंदानेवाज	(१३४३ ई०)	३
२. शाहमीराँजी	(मृ० १४९६ ई०)	५
३. अशरफ	(१५०३ ई०)	६
४. फ़ीरोज	(१५६४ ई०)	७
५. बुरहानुद्दीन जानम	(ज० १५२२ ई०)	८
६. एकनाथ	(१५४८-९९ ई०)	१०
७. शाह अली	(मृ० १५६६ ई०)	११
८. वजही	(१६०९ ई०)	१७

## २. मध्यकाल (१५००-१६५७ ई०)

९. मुहम्मद कुल्ली	(१५८०-१६१२ ई०)	८०
१०. अब्दुल	(१६०३ ई०)	१२७
११. अमीन	(१६२० ई०)	१२८
१२. गौवासी	(१६२० ई०)	१३१
१३. तुकाराम	(१६०८-४९ ई०)	२१८
१४. मीराँ हुसैनी	(१६२३ ई०)	२२०
१५. अफ़जल	(१६२६ ई०)	२२१
१६. मुकीमी	(१६२७ ई०)	२२३
१७. कुतबी	(१६३४ ई०)	२२६
१८. अब्दुल्ला कुतुब	(१६३९ ई०)	२२७
१९. सनअती	(१६४५ ई०)	२२९
२०. खुशनूद	(१६४६ ई०)	२३९
२१. रुस्तमी	(१६४९ ई०)	२४९
२२. निशाती	(१६५६ ई०)	२५१

३: उत्तरकाल (१६५७-१८४० ई०)

२३	नसरी	(१६५७ ई०)	२५९
२४	मिर्गंजी सुदानुमा	(मृ० १६५९ ई०)	२८४
२५	तवई	(१६७० ई०)	२८५
२६	गुलाम अली	(१६८० ई०)	२८९
२७	इश्रती	(१६८० ई०)	२९२
२८	जईफी	(१६८९ ई०)	२९९
२९	मुहम्मद अमीन	(१६९७ ई०)	३००
३०	वज्दी	(१७०३ ई०)	३०२
३१	वली दमनी	(१७०५ ई०)	३०५
३२	वली बेलोरी	(१७०८ ई०)	३१०
३३	हाशिम अत्री	(१७३७ ई०)	३१८
३४	क्यामी	(१७५१ ई०)	३२८
३५	वाकर आगाह	(१७४५-१८०५ ई०)	३३०
३६	'तुराव' दस्तनी	(१८४० ई०)	३३६
	शब्दानुक्रमणी		३४१

भाग १  
आदिकाल (१६७०-१८४० ई०)



## §१. ख्वाजा बंदानेवाज (१३४३ ई०)

इतका मूल नाम सैयद मुहम्मद हुसैनी था। दक्षिण भारत के यह ख्वाजा मुईउद्दीन चिश्ती (अजमेर) है। आमतौर से यह ख्वाजा बंदानेवाज (स्वामी भक्तवत्सल) अथवा लम्बे केश रखने से ख्वाजा बंदानेवाज गेसू-दराज के नाम से ही प्रसिद्ध है। इनके पिता सैयद यूसुफ शाह एक प्रसिद्ध संत थे, जो दिल्ली के प्रसिद्ध मुस्लिम संत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के खलीफा (उत्तराधिकारी) बुरहानुद्दीन गरीब के साथ दक्खिन आये। बंदानेवाज १३१८ के आसपास दिल्ली में पैदा हुए, और अपने पिता के साथ शैशवावस्था में दक्खिन गये। पिता पाँच वर्ष का शिशु छोड़ कर मर गये। उनकी कब्र देवगिरि (दौलताबाद) के पास खुल्दाबाद में आज भी पवित्र मानी जाती है। [खुल्दाबाद (स्वर्गनगरी) में ही पीछे औरंगजेब भी दफन किया गया।] पिता के मरने पर बंदानेवाज अपनी माँ के साथ दिल्ली लौट गये, जहाँ ख्वाजा नसीरुद्दीन चिराग-दिल्ली के शिष्य तथा मरने पर उनके गद्दीनशीन हुए। अपनी विद्वत्ता और संतपन के कारण दिल्ली में इनकी काफी प्रतिष्ठा थी। अस्सी वर्ष के थे, जब मास्को की होली जलानेवाले तैमूरलंग ने १३९८ में दिल्ली में ध्वंस-लीला मचाई। उजड़े दयार को छोड़कर वृद्ध बंदानेवाज सपरिवार गुजरात आदि होते दक्खिन (दौलताबाद) आये। इससे आधी शताब्दी पहिले (१३४७ ई०) हसन गंगू अलाउद्दीन हसन बहमन शाह ने बहमनी राज्य स्थापित किया था। हसन के पोते तथा आठवें उत्तराधिकारी फीरोजशाह (१३९७-१४२२) ने अपने दादा द्वारा स्थापित राजधानी गुलबर्गा में ख्वाजा को बड़े सम्मान के साथ बुलाया, जहाँ ही १०५ वर्ष की दीर्घ आयु (१४२३ ई०) में इनका देहान्त हुआ।

ख्वाजा ने फारसी में कई पुस्तकें लिखी हैं। उनकी निम्न पुस्तकें दक्खिनी हिन्दी में हैं—

१. चक्कीनामा (पद्य)
२. मेराजनामा (गद्य)
३. से: पारा (गद्य)

कविता के नमूने हैं—

देखो वाजिद<sup>१</sup> तनकी चक्की। पीड चातुर होके सक्की<sup>२</sup> ॥  
सौकन इब्लिस<sup>३</sup> खिच खिच थक्की। के या विस्मिल्ला अल्ला हो<sup>४</sup> ॥

---

१. उचित, विहित, २. सखी, ३. शैतान, ४. भगवान्के नामके साथ, हे भगवान् !

अलिफ़<sup>१</sup> अलया उमका दिमता । म्याने<sup>२</sup> मुहम्मद होकर बमता ॥  
 पछी तलव<sup>३</sup> यारू दिमता । के या विस्मिल्ला ० ॥  
 वदानेवाज उदा हुमेनी<sup>४</sup> । मो वदगी<sup>५</sup> में रहने  
 के या विस्मिल्ला ० ॥\*

—चकरीनामा

और गद्य क नमून\*—

( १ )

नबी कहे<sup>१</sup> तकहीक जुदा<sup>२</sup> के म्याने सत्तर हजार पदें उजियाले<sup>३</sup> के हों<sup>४</sup> अनोरे के । अगर उसमें त एक पदा उठ आवे, तो उमरी जाचने में जलूँ । हार एक वकन ऐमा होता है, समझो और दवा बपत्रा<sup>५</sup> अथेरेक उजियालेके आगिफान<sup>६</sup> पर है । बले<sup>७</sup> वासिलान<sup>८</sup> पर पदें नूगनी<sup>९</sup> व बवामिगान<sup>१०</sup> का मफा पदा होता है । मो मुहम्मद का नूर, ए जर्जाज<sup>११</sup> अब्वल<sup>१२</sup> ग्नीवियत<sup>१३</sup> को पदा । मिवाय तन-जमाशे<sup>१४</sup> जिम्म<sup>१५</sup> के पदें कू अपडे<sup>१६</sup> राज<sup>१७</sup>, उस जमाल उरूहियत<sup>१८</sup> के पदें मुम्बिनुल्-अजुद<sup>१९</sup> कू अपड मकू । उरूहियत के पदें अपडे, आगिफुल्वज्ज<sup>२०</sup> कू अपड सके । इस सहूलकुदम<sup>२१</sup> के पदें कू अपड बाज उम वित्रियाई<sup>२२</sup> के पदें कू उजियाले में ताग उचक कर नहीं दिमते । यो हा दाना अरलम<sup>२३</sup> कू या आफताब होकर उमे मागूम हो गया ।

—मेराजनामा

( २ )

मवाल—जाती ईमान<sup>१</sup> कौन ना और मिफाती<sup>२</sup> ईमान<sup>३</sup> कौन ?

जवाब—अस्रड हाल नाबिती<sup>४</sup> है, मो जाती ईमान वह है । नाबिती आती और जाती है, सो मिफाती ईमान ।

मवाल—ईमान के झाटा क्या ? और ईमान के डाल्या क्या ? और ईमान के बात और ईमान का वतन<sup>५</sup> क्या ? और ईमान का बीज क्या ? और ईमान का पोस्त<sup>६</sup> क्या ? और ईमान का मिर् क्या ? और ईमान का जीव क्या ?

१ अरबी का प्रथम अक्षर, २ बीच में, ३ इच्छा, लोभ, ४ वदानेवाज (कवि), ५ भवित, सेवा ।

\* (पृष्ठ १९-२० डा० सैयद मुहीज्जहीन कादिरि जोर) के आधार पर ।

\* उर्दू शहपारे (पृष्ठ ३१९-२०)

६ पैगवर मुहम्मद, ७ भगवान् की खोज, ८ प्रकाश, ९ और (कौरवी), १० ज्ञानी लोग, ११ त्रि-तु, १२ मुक्त, भगवानको प्राप्त, १३ प्रकाशमान, १४ भगवान्को न प्राप्त, १५ प्यारे, १६ प्रथम, १७ सौन्दर्य, अच्छाई, १८ प्रकाशमान शरीर, १९ शरीर, २० पहुँचे, २१ बिना, २२ ईश्वरत्व का सौन्दर्य, २३ जिसका अस्तित्व सभव हो, २४ जिसका ज्ञान होना सभव हो, २५ पवित्र आत्मा, २६ महत्ता, २७ जगह, स्थान, २८ व्यक्ति-सम्बन्धी श्रद्धा, २९ गुण-सम्बन्धी श्रद्धा, ३० श्रद्धा, ३१ पक्कापन, ३२ घर, स्वदेश, ३३ चमडा ।

जवाब—ईमानकी जीव कुरान। ईमानकी जड़ तोवा<sup>१</sup>। ईमानकी डाल्यां सो बंदगी<sup>२</sup>। ईमानकी वात परहेजगारी<sup>३</sup>। ईमानका तुख्म<sup>४</sup> सो इल्म<sup>५</sup>। ईमानका पोस्त सो शर्म<sup>६</sup>। ईमानका वतन सो मोमिन<sup>७</sup> का दिल है।\*

—शहपा<sup>८</sup>

## §२. शाह मीराँ जी (मृ० १४९६)

ख्वाजा बंदानेवाज के द्वितीय उत्तराधिकारी (खलीफा) ख्वाजा कमालुद्दीन बयाबानी के शिष्य शाह मीराँ जी भी दक्खिन के बड़े संतों में हैं। इन्हें शम्शुल्-उश्शाक (प्रेमियों का सूर्य, भक्त-सूर्य) कहा जाता है। वह कोरे भक्त ही नहीं, बल्कि अच्छे विद्वान् भी थे। इन्होंने मदीना में बारह वर्ष बिताये थे, जहाँ से लौटने पर बयाबानी के शिष्य ही बीजापुर के बाहर रहने लगे। १४९६ (९०५ हि०) में मृत्यु के बाद बीजापुर के पास शाहपुर में इनकी समाधि बनाई गई, जहाँ हर साल उर्स लगता है। इनकी कुछ पुस्तकें हैं—

१. खुशनामा (पद्य)
२. खुशनब्ज (पद्य)
३. शहादतुल्-हकीकत (पद्य)
४. शाह मर्गबुल-कुलुब (गद्य)
५. सबरस (गद्य)

इनके एक शताब्दी बाद बजही ने अपना गद्य-ग्रंथ 'सबरस' लिखा था। मीराँ जी के गद्य का नमूना देखिये।\*—

जो कोई आशिक कूं इस सात चीजते मना करे, खुदायताले<sup>९</sup> उसे दुनिया में सो<sup>१०</sup> फना<sup>११</sup> करे। खूबसूरत देख, राग सुन, खुशबूई, खुशकर, केफ खा बेपर्वा च और शेर<sup>१२</sup> पर खुदा कूं मौन याद कर। मुहब्बत सो बंधा<sup>१३</sup> अपने काम में मशगूल<sup>१४</sup> रह। किससों नको<sup>१५</sup> झगड। यहां आराम, या<sup>१६</sup> काम, यां हाल, यां वसाल<sup>१७</sup> यां यो खसरे<sup>१८</sup> वाले। जो कुछ तूं देखेगा जो सुनेगा, सो सब दर्द-सर<sup>१९</sup> है। मुशाहिदी मुराकबे<sup>२०</sup> में परखत्या सैर तैर में तूं रहेगा। इस जमाने में किसकूं करफे-करामात<sup>२१</sup> हुआ, जो तुझे होयेगा, यो जो कीमिया<sup>२२</sup> करेगा, धदा नहीं होता और हुआ च का कर दिलपर आता। सीधे वात पकर, घर कूं आ। तूं कूं<sup>२३</sup>, जवान में काई कूं<sup>२४</sup> जाता। अब्बल तुझे जो कोई सिखलाता है, उसे पूछ—“तूं मुझे सिखलाता, सो तुझ पर खुला है।”

१. पश्चात्ताप, अपराध-क्षमापन, २. भक्ति, सेवा, ३. संयम, ४. बीज, ५. ज्ञान, ६. लज्जा, ७. श्रद्धालु भक्त।

\*उर्दू शहपारे, पृ० ३२१।

८. महामहिम भगवान्, ९. से, १०. नष्ट, ११. पद्य, १२. बड़ा, १३. लगा, व्यस्त, १४. नहीं, १५. यहाँ, १६. मिलन, १७. झगड़े, हानि, १८. शिर की पीड़ा, १९. साक्षात्कार, समाधि, २०. प्रकटन, सिद्धि, २१. रसायन, पारस, २२. तुमको, २३. क्यों।



इसका काम उस पर नहीं खुल्या, सो तुझ पर क्या खोलेगा ? तू क्या समझकर भूल्या है ? बहुत सिखेगा, तो इधर-उधर किया चार हिकायता' । इस हिकायता सो क्या हासिल ? तू दुनिया के धधे में हिल गया' है और इसकी बात भी आजाद' है । वले' यों खबर है, कि उसकी बिसरनी में भी उसी का पार है और अपसते अपे' आपकू याद दिलाता है । तू भी उसे याद कर । आशिक' है, तो उसे बिसर नको' । उसकी याद सो 'दिल कू शाद' कर और आपसकू अपे याद दिलाता सो अपमकू दिखलाता है, कि यो देनो यो मेरी सूरत ही, मुझे देत, काकू वेदिल होता है । में इता तेरे नजदीक हू और तू मुझे नहीं देखता ।

### ५३. अशरफ (१५०३ ई०)

नानक और मूरदास के बीच के काल में शैम शरफुद्दीन अशरफ (कवि अशरफ) हुए । इनके वारे में अधिक मालूम नहीं है । इन्होंने इमाम हुसैन पर पडी आफतों के सम्बन्ध में अपना काव्य 'नौ मिरहार' ९०९ हिजरी (१५०३ ई०) में लिखा । पंद्रहवीं शताब्दी के आरम्भ के इस कवि ने अपनी भाषा को हिंदवी कहते हुए लिखा है ।

वाचा<sup>१</sup> कीना<sup>२</sup> हिंदवी में । किस्मा मकतल<sup>३</sup> गाह हुसेन ॥  
नजम<sup>४</sup> लिखी सब मौजू आन । यों मैं हिंदवी कर आसान ॥  
यक यक वोल यह मौजू<sup>५</sup> आन । तकरीर हिंदवी सब बखान ॥

अपनी कविता की प्रशंसा में लिखते हैं—

नामा कत्या वोल सवार । जानी<sup>६</sup> मोतिया कैरा हार ॥  
सोने की ज्यो घुटी<sup>७</sup> घड । मानिक मोती हीरे जड ॥  
यक यक वोल यह मानिक मोल । सीम<sup>८</sup> तराजू सेंती तोल ॥  
वद<sup>९</sup> पिरिये सोनेतार । सच्चा हुआ नौसिरहार ॥

'नौमिरहार' में मगलाचरण है\*—

अल्ला वाहिद<sup>१०</sup> हक सुभान । जिन यह सिरज्या भुइ-जसमान ॥  
चदा सूरज तारे रुख । वादल विजली मेह अचूक ॥

खालिक वारी (जिसे गलती से खुसरो की कृति समझा जाता है) की तरह अशरफ ने वाहिदवारी नामक एक कोश-ग्रंथ लिखा है ।

१ कयाएँ, २ प्राप्ति, लाभ, ३ फेंसा, ४. स्वतंत्र, ५. लेकिन, ६ अपने-आप, ७ प्रेमी, ८ नहीं, ९ स्मरण से, १०. प्रसन्न, ११ बचन, १२ किया (पजावी), १३ कर्बला को कया, १४ पद्य, १५ उचित, १६ मानो, जैसे, १७ अगूठी, १८ चावी, १९. बाष ।

\*तस्किरा उई-मस्तूतात् पृष्ठ १८ ।

२० अद्वैत, एक ।

## §४. फ़ीरोज़ (१५६४ ई०)

फ़ीरोज़ की प्रशंसा वजही और निशाती—जैसे महान् कवियों ने की है। वजही ने अपने कथा-काव्य 'कुतुब-मुश्तरी' में लिखा है\*—

कि फ़ीरोज़ आ ख्वाब<sup>१</sup> में रातकूं। दुआ देके चूमे मेरे होठ कूं ॥  
कह्या है तूं यो शेर ऐसा मुसद्स<sup>२</sup>। कि पढ़नेको आलम करे सब हबस<sup>३</sup> ॥  
इब्न-निशाती ने भी अपने कथा-काव्य 'फूलवन' (१६६५ ई०) में लिखा है†—  
नहीं वह क्या करूं फ़ीरोज़ उस्ताद<sup>४</sup>। जो देते शायरी का कुछ मेरे दाद<sup>५</sup>।

गोलकुंडा का पुराना कवि फ़ीरोज़, मुहम्मद कुल्ली कुतुब और राजकवि वजही से भी पहिले इब्राहीम कुतुब शाह के समय (१५५० ई०) में हुआ था। कवि ने अपने गुरु बीजापुर के सन्त मख्दूम जी शेख मुहम्मद इब्राहीम (मृत्यु २३ मई १५६५ ई०) की प्रशंसा में 'तौसीफ-नामा' लिखा। ग्रंथारम्भ में वह कहता है—

तु फ़ीरोज़ खस्ता<sup>६</sup> कु (अति) मान दे। मंगूं दान तुझकने ईमान<sup>७</sup> दे ॥  
सों फ़ीरोज़ सुपने में पाया रतन। रख्या ढांक सो रतन जिउसों रतन ॥

गुरु-महिमा के कुछ पद्य हैं—

बराहीम मख्दूमजी<sup>८</sup> जीवना। कि मैं<sup>९</sup> सिर्फ<sup>१०</sup> वहदत<sup>११</sup> सदा पीवना ॥  
मेरा पीर मख्दूम जी जगमने<sup>१२</sup>। मंगूं न्यामत<sup>१३</sup> (मैं सदा) उसकने ॥  
करें मुझपर प्यार ये पीब जग<sup>१४</sup>। कि तुझ प्यार ते होय मन्धीर<sup>१५</sup> जग ॥  
पिया जीव ते तो हमन<sup>१६</sup> वास है। तु हम जीव के फूल का बास है।  
वही फूल जिस फूल की बास तूं। वही जीव जिस जीवकी आस तूं ॥  
सो तूं रख है दीन का बारदार<sup>१७</sup>। जो तुझ छाँब तल जग है पकड्या करार<sup>१८</sup> ॥  
अछो<sup>१९</sup> मुझ उपर छाँव तेरा जरम<sup>२०</sup>। कि आधार मेरा सो तेरा करम<sup>२१</sup>।  
करीमाँ<sup>२२</sup> की मज्लिस करामत<sup>२३</sup> तुझे। अमीना<sup>२४</sup> की सफ<sup>२५</sup> मैं अमानत<sup>२६</sup> तुझे ॥  
सदा मस्त मदहोश<sup>२७</sup> दीदार का। सचा तूं तलबगार<sup>२८</sup> करतार<sup>२९</sup> का ॥

\*उ. श पृष्ठ ८७।

१. स्वप्न, २. अष्टपदी, ३. लालच। †त. उ. म. पृष्ठ १४५। ४. गुरु, ५. न्याय, ६. भग्न, परेशान, ७. श्रद्धा, भक्ति, ८. स्वामी, सेव्य, ९. शराब, १०. केवल, ११. अद्वैत, १२. जग में, १३. न्यामते, सर्वोत्तम पदार्थ, १४. दुनिया के प्यारे, १५. मन्दिर, मनघीर, १६. हमारा, १७. फलदार, १८. धैर्य, १९. रहो, २०. सदा, २१. कृपा, २२. कृपालु, २३. सिद्धि, २४. अमानत रखनेवाला, २५. पांती, २६. अमीनपद, २७. मतवाला, २८. चाहवाला, प्रेमी, २९. भगवान्।

मुहीदीन मस्दूम जी जागना । हमें जीव अम' पीवसो लागना ॥  
 अहे पीव मस्दूम जी जाइया । मुहीदीन दूजे पा जम' जाइया ॥  
 तुजे राउ' ने जग राता' जनम । मुहीदीन वूजे मो तू कसाता जनम ॥  
 मुझे दान दे दीनो दिलशाद' कर । दुनिया के गुनाहा ते आजाद' कर ॥  
 निगहवान' मेरा तु मुज रखे निगाह । मुजे देवे दुश्मन ने मेरा पनाह ॥  
 जिसे पीर मस्दूम जी पाव है । उसे दीनो दुनिया में क्या वाक' है ॥  
 जिसे पीर मस्दूम जी माइया ।

### ५५ बुरहानुद्दीन जानम् (१५२२ ई०)

बीजापुर के सन्त मीरा जी शम्सुल-उरशाक के यह पुत्र और उत्तराधिकारी थे । इनका जन्म १५४३ ई० (१५० हि०) में हुआ था, इस प्रकार यह सूत्रदास से भी पहिले हुए थे । बुरहानुद्दीन अपने पिता की भाँति गम्भीर विद्वान् तथा प्रसिद्ध मन्त थे । इन्होंने कलाम और सूफी ज्ञान पर कई पुस्तकें लिखी, जिनमें 'सुपमुहेला' और 'इरशादनामा' सुन्दर पद्यों में हैं । 'इरशादनामा' अशरफ के 'नौमिरहार' से इक्कासी वष बाद लिखा गया । जानम् अपनी भाषा को हिन्दी कहते हैं—

यह सब बोलू हिन्दी बोल । पन तू अनमी सेती खोल ॥  
 ऐव' न राखें हिन्दी बोल । माने तू चख देखें खोल ॥  
 हिन्दी बोलो किया बखान । जेकर फनाद अथा मुज ज्ञान ॥

शाह बुरहान ने दोहे भी लिखे हैं । इस प्रकार वह दक्षिणी के उन कवियों में हैं, जिन्हें देश के साहित्य का परिचय था ।

'इरशादनामा' में पुस्तक के बार में लिखते हैं—

नाम किताब इस आख्या' होय । खातिर<sup>१</sup> लिया इस राख्या होय ॥  
 'इशादनामा' इसका नाम । लोडे<sup>२</sup> फिकर<sup>३</sup> इसे मुदाम<sup>४</sup> ॥  
 यह सब बोल्या है अनजान । आविद<sup>५</sup> आजिज<sup>६</sup> है बुरहान ॥  
 हिजरत नुह सह नकद<sup>७</sup> मान । 'इशादनामा' लिख्या जान ॥

अपने गुरु तथा पिता मीरा जी शाह की प्रशंसा में लिखने हैं —

सिफन<sup>८</sup> करू कुछ अपना पीर<sup>९</sup> । जिसते रीशन<sup>१०</sup> होय जमीर<sup>११</sup> ॥

१ ऐसे, २ सवा, ३ राजा, ४ प्रिय, ५ प्रसन्न, ६ मुक्त, ७ रक्षक, ८ डर, ९ दोष, १० कहा, ११ दिल, मन, १२ चाहे, १३ चित्ता, १४ सदा, १५ भक्त, पूजक, १६ हूरान, परेशान, १७ नौ सौ नब्बे १९० । \*त उ म पृष्ठ १९।  
 १८ गुण, १९ गुरु, २० प्रकाशमान, २१ आत्मा ।

जिन मुंज लीता<sup>१</sup> कर उपदेश । वाई<sup>२</sup> इस चख<sup>३</sup> लेउं गवेस ॥  
 धौं जगमें मुंज बैत<sup>४</sup> वही । सिमरुं ले मन नेत वही ॥  
 तिसकूं सिमरे तन मन शाद<sup>५</sup> । जिसका है मुंज पर शाद<sup>६</sup> ॥  
 जग में अहैं तूं ही रतन । पर्दे में ले करुं जतन ॥  
 राख्या कौंदन कर इस ढांव । तिल तिल<sup>७</sup> सिमरुं ले उस नांव ॥  
 पीर की राजी शम्श उशाक<sup>८</sup> । धौ जग रव<sup>९</sup> नुज किया कशाक<sup>१०</sup> ॥

आरम्भ में अल्ला की स्तुति की है—

अल्ला सिमरुं<sup>११</sup> पहले आज । कोना<sup>१२</sup> जिन यह धौ जग काज ॥  
 जगतर करो तूं करतार । समूकेरा सिरजन हार ॥  
 अस्तुत ओरुं<sup>१३</sup> करने चख । फुर्सत<sup>१४</sup> पाऊ बोलने मुख ॥  
 कुदरत<sup>१५</sup> तू तुज अंत न पार । अगनित कीना हो परकार ॥

“इरशादनामा” में शिक्षा दी गई है—

जे कोई पढ़कर करें सवाद<sup>१६</sup> । राहे-हक्कीकत<sup>१७</sup> पर होय शाद ॥  
 बनकी तू ना होवे वाड़ । गफलत केरे खुलें किंवाड़ ॥  
 इसमें कीता कर सकलाव<sup>१८</sup> । ल्या ल्या रच रच स्वालों-जवाब<sup>१९</sup> ॥

कल्मतुल-हक्कायक (सत्यवाणी) को शाहबुरहान ने १५८२ ई० (१९० हि०) में लिखा था । इस प्रकार यह अकबरकालीन गद्य का सुन्दर नमूना है, जिसमें जहाँ-तहाँ पद्य भी हैं । ग्रंथ की भाषा लेखक ने गूजरी कही, जिसका अर्थ गुजराती नहीं, बल्कि गुजरात में बसे मुसलमानों में प्रचलित हिन्दी है, जैसा कि निम्न उद्धरण से मालूम होगा—

“यो गूजरी जवान । नाम ई किताब कल्मतुल-हक्कायक” । इसकी भाषा अरबी-फारसी से लदी है ।

“इन्शाअल्ला-ताला कि खुदाय-ताला कदीमुल्कदीम क्यों था ? जात व सिफ़ात व कुल्ले मख्लूकात इव्तदा-व-इन्तहा, वाली व फ़ानी, कदीम व जदीद, बा-हमा व बे-हमा बदी सबव सवाल-व-जवाब रोशन कर कर देखाया है ।

पद्यों में से कुछ है :—

“तूं ने देख्या आपस आप । जे घड्या यह तुज पाप ॥  
 आरे<sup>२०</sup> तूं इस सफा<sup>२१</sup> में नूर । कि जैसा आकाश में सूर ॥

१. लिया, २. वापी, कुआँ, ३. चक्षु, आँख, ४. पद्य, ५. प्रसन्न, ६. प्रसन्नता, ७. पल-पल, क्षण-क्षण, ८. प्रेमियों के सूर्य, ९. भगवान्, १०. प्रकट, ११. सुमिरन करुं, १२. किया, १३. चाहें, १४. छुट्टी, १५. भगवान् की माया, १६. आस्वाद लेना, १७. सच्चा मार्ग, १८. लाभ, १९. प्रश्नोत्तर । २०. हाँ, २१. स्वच्छता ।

अरे तूँ अपने आपसे देख । जहूर<sup>१</sup> कू करता लेखालेख ॥  
 व खाली दिसता ठाँव । वह कइया<sup>२</sup> अपना नाँव ॥  
 यो गफलत मेरी टूटी । जे नजर ऐसी फूटी ॥  
 यह सदके<sup>३</sup> मुशिद<sup>४</sup> छूटा । यह घोर अधारा फूटा ॥  
 जैसा खाली फूल । या देखें जैसा डोल ॥

### ५६ एकनाथ (१५४८-१९ ई०)

यह महाराष्ट्र में पैठन (प्राचीन प्रतिष्ठान), जिला औरंगाबाद में ब्राह्मण-वंश में पैदा हुए । इनके दादा भानुदास मराठी के प्रसिद्ध कवि थे । एकनाथ देवगिरि (दौलताबाद) में अपने गुरु जनार्दन स्वामी के पास बारह वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करते रहे । इसके बाद गुरु की आज्ञानुसार व्याह किया । मराठी में इन्होंने रामायण, भागवत आदि बहुत-से ग्रंथ लिखे । इनके बनाये लोकगीत भी प्रसिद्ध हैं । इनकी मृत्यु १५९९ ई० के फागुन महीने में बतलाई जाती है । इस प्रकार यह गोस्वामी तुलसीदास से तीस वर्ष बाद मरे । कहते हैं जिस साल एकनाथ ने वाराणसी में अपने भागवत को समाप्त किया, उसी साल गोस्वामी ने "रामचरितमानस" का आरम्भ किया । उत्तर में रहने के कारण इनकी प्रवृत्ति हिन्दी की ओर भी हुई थी । इनके कुछ हिंदी पद\* हैं—

आदि पुरुष निर्गुण निराधार की याद कर । मेरे गुरु परवर्दिगार की याद कर ।  
 जिने माया अजब बनाई । उस वस्ताद की याद कर ।  
 गैबी खजाना जिमने दिया । उस साह्व की याद कर ।  
 सन्त महन्त की याद कर । गुणी गुणवन्त की याद कर ।  
 श्री भगवन्त की याद कर । जोग-जुगत का बाधा तोडा ।  
 शम-दम का सिर पर समला छोडा । समता सो ही सुहावे तुरा ।  
 गुरु गाहडी वीर पुरा । नैन चीर के पैही मुद्रा ।  
 कान फार के छाये निद्रा । अनहद ध्वनी धुमक वाजे ।  
 नाग-सुर धुँक गर्जे । चल चल चल ।  
 निरजन जगल के जिवडे । खेलना होय तो उलट दृष्टि से खेल ।  
 आवी करुणा तेरा तमाशा । पैल तेरी मूँडी काटूंगा ।  
 साप सब भुले बिच, किडे । प्रपच कोठरी में आके दडे ।  
 वडे वडे जनावर पाले । हरे, लाल, सफेत ।  
 सजले, काले, पिले, भले, येभले । हाडीबाग अभिमान जिवडे झुटमुठ चिपीच लडे ।  
 नहिँ कहू तो ब्रह्माण्ड काटने दीरे । देखो मियाँ हाय हाय ।  
 डख मारा वे डख मारा । सो वडे वडे कू नही उतारा ।

१ प्रकाश, २ कहा गया, ३ नौछावर, ४ गुरु ।

\* 'दक्खिनी का पद्य और गद्य'—(श्रीराम शर्मा) पृष्ठ ५७—६६ ।

जब गुरु-ग्यान का लगाया मोहरा । जहर उतारा ।  
 देखो मियां बाजीगिरी विद्या खेल । हांडीवाग बड़ा अलबेला ।  
 हात हलावे के पांव हलावे । भोले भोले लोक भुलावे ।  
 आ वे हांडीवाग । वाप बड़ा क्या वेटा बड़ा ?  
 बेटे आगे वाप खड़ा । गुरु बड़ा क्या चेला बड़ा ?  
 चेले आगे गुरु खड़ा । चेला तो प्रेम महेल पर चढ़ा ।  
 धनी बड़ा क्या चाकर बड़ा ? चाकर आगे धनी खड़ा ।  
 सास बड़ी क्या बहू बड़ी ? बहू आगे सास खड़ी ।  
 बीबी बड़ी क्या बांदी बड़ी ? बांदी आगे बीबी खड़ी ।  
 निराधार की ले कर छड़ी । बीबी खसम की छाती पर चढ़ी ।  
 तैं बड़ा क्या मैं बड़ा ? मेरे आगे तैं खड़ा ।  
 मैं नहीं मैं नहीं । आलस छाया मेरे गुरु ।  
 ग्यानी कू ग्यान लगाऊँ । लोभे आँधे कू उड़ाऊँ ।  
 फुक मारुं तो जा जा जा । बौध के पहाड़ पर जा ।  
 बच्चा जाहाँ आना नहीं, ताहाँ ज्या । मेरे सद्गुरु दाता कू शरन ज्या ।  
 मेरे सद्गुरु दाता की इतनी-सी लकरी । मूल मंतर हात मो पकरी ।  
 जिदर दौरा उदर दौरा । फेर देखे तो मेरी मेरे सात ।  
 देख अवी करुंगा खबूतर का तमाशा । विन पर से उड़ता है कैसा ?  
 खेल खेलते अविद्येके खलीते में घुसा । बाहेर कैसा आवेगा ?  
 आव वे, आव बाहर आव । जिसे नहीं हात ना पाव ।  
 जिसे नहीं गांव ना ठांव । जिसे नहीं रूपरेखा नांव ।  
 भाव ना अभाव कुछ नहीं । धीरे धीरे तेरा बी मंतर बोलूँ ।  
 लिंगदेह की गांठ खोलूँ । एक बार ऐसा खेल खेलूँ ।  
 कि मेरे बड़े बड़े खेल थे । हा तो एक, एक के दो ।  
 दो के तीन, तीन के चार । चार के पांच, पांच के पच्चीस ।  
 पच्चीस के छव्वीस, छव्वीस का एक । एक बी नहीं, तो जनार्दन देख ।

### ९७. शाह अली (मृ० १५६६ ई०)

“भाङ्गूक-अल्ला” (भगवत्-प्रियतम) उपनाम था । यह अहमदाबाद में पैदा हुये और वहीं इनकी शिक्षा-दीक्षा हुई । एक गांव की जागीर मिली थी, इसीलिये “गांवधनी” भी कहे जाते थे । यह सूफी सन्त थे । इनके उपदेशों को “जवाहर-उल्-इस्त्रारे-अल्ला” (भगवत् रहस्य-सार) में इनके शिष्यों ने जमा किया । इनकी कविता के नमूने देखिये\*—

\*‘दक्खिनी का पद्य और गद्य’, पृष्ठ ६७—७० ।

आपी खेळूं आप विलाऊं। आपी आपम ले, कल लाऊं॥  
 मेरा नांव मुझे अत भावे। मेरा जीव झुंकी पर जावे॥  
 मेरी निया मुझी सूं माती। रह री, अपनई रूप लुभाती॥  
 ला का निया सो मुंज मूं मिथ्या। जद का सो धन आपम दीया॥  
 जी को अपनइ रूप लुभावे। भइ सो क्यो न आप सुहरावे॥  
 मै मुंज रह्या, ना तूं सघाती। 'शाहअली' जिव ही मुज साथी॥  
 मुंज विन कोइ नही जग माहा। चेरी सुहागिन हूं तिम नाहा॥  
 आपन खेले आप विलावे। आपन आपस ले कल लावै॥

× × ×

हामिल सब कुगन का है इतना जानो।  
 वहम दुई का दूर करो होर मुंजे पछानो॥  
 हूँदन निवली पीव कूं, अपस गई मो खोय।  
 जिघर देखूं (सो) एक हूं, मुंज विन और न कोय॥  
 मै आपकूं भाय कह्या, मा-बाप अपस्कूं कह्या।  
 तिस आप पद आवे दया, रे भाइयो ही से करु॥  
 जब प्रेम अपने चित धरु, अपसे दिखाऊ मन हरु।  
 यो आपके घूंघट कर, रे भाइयो, हाँ सो करु॥

× × ×

है सो हो हो होय रही है।  
 जिघर देखूं एक वही है॥  
 मै तो बहुत छिपाया पन काहू कीजे।  
 आप माता जब जन दिमूं कहा थे कल दीजै॥  
 दीठा पर्या जग सूं मव रहे सो जोय॥  
 हुव जे भोत छिपाये सूं कित माने कोय॥  
 जैसा कोई होय मे मव कोइ कहती।  
 आवत जनदिमे ओ क्या क्यो छिप्या रही॥  
 आपें वरक्त होय, करे भेस मेरा लेता।  
 मुंज कूं जाके 'शाहअली' तइ दिखला देता॥  
 किन्हें केरे दीठतें जे तिल भी टलता।  
 कुछ भी छिपाता आपकूं तो मरा चलता॥  
 अमरन मेरा मही मो पिव है। पिव का जिव सो मेरा जिव है।  
 हार हमेलों मुंज शहवाहा। मोतीहार सो तुम गल माहा॥  
 मुंज शह जन्तर कछू न भावै। प्यारो चोला चीर उतरावे॥  
 एकमेक जो रास्या लौं हूँ। सो बुज अमरन क्यो कुछ छोडे॥

× × ×

जब ज्यों राखे तब त्यों रहिये । लटका पिव का किसे न कहिये ॥  
 जे कहना होय सो कहिये । मन माहीं, ले न रहिये ॥  
 कभी सो मजनु होय बिरलावे । कभी लैला होय दिखलावै ॥  
 कभी सो खुसरो शाह कहावे । कभी सो शीरीं हो कर आवे ॥  
 कभी सो साथी कहें अली जियो । अली मुहम्मद कहीं कहावे ।  
 कभी सो शाह हुसेनी राजा । एवें तिल-तिल भेस भरावे ।  
 अहरपनवाली जग रतनाली । बेनी वासक हरतिल काली ।

इ जो बाँकी भों दो माली । रे जीव सब सुन एवें कीजे ॥

यह जीव 'शाहअली' जिउ दीजै । दोनों जगमाँ तू राज करीजे ॥

आज प्रेम तो तुज सूँखेलूँ, जो ये वाचा देवे ।

जे तूँ जीते मुँज कूँ लीजे, होर धन जीते तूँ लेवे ॥

एक सो बात प्रेम की भारी । दूजा तुज सूँखेल चढाई ।

तिस पर तै मतवाली केती । भर भर प्याली प्रेम पिलाई ॥

×

×

×

जिसें तिरे दो, नयन हाते . . . सो तो नही साथी ।

तुज बिन कुछ भी ना जोऊँ, क्या करूँ संघाती ॥

ये यारी होर दोस्ती मेरी ।

ये सब यारी दोस्ती तेरी ॥

हब क्या कीजै बात घनेरी ।

×

×

×

क्या कुछ रूप है मुँझ माँ सहेली ।

जे हूँ किसमें देख करे हो जाऊँ खेली ॥

रूप लुभाने आपके धन आप दिखावे ।

आगे अपने रूप के सो दास कहावे ॥

जग में मुँझ बिन कोइ नहीं हौँ अपने दासा ।

ए जी, महके फूलरी सब मेरा वासा ॥

ये जग मेरी आरसी कर अपस देखूँ ।

अपना रूप बखेर करि मुँझ जन धन पेखूँ ॥

सूरज-तारोँ चाँद-माँही में खाल अछाय ।

की उजाली माँझ जगेँ होर दिया विदाय ॥

इन सब कलियोँ माँ महीन रँग आप दिखाऊँ ।

राती माती होय सही मुँझ वारी जाऊँ ॥

अली मुहम्मद नाम मुझे बन दास कहाऊँ ॥





भाग २  
मध्यकाल (१५००-१६७० ई०)



## §८. वजही (१६०९ ई०)

यद्यपि दक्खिनी हिन्दी कविता का आरंभ ख्वाजा बन्दानेवाज (१३४१ ई०) अर्थात् विद्या-पति के समय से होता है, किन्तु उसको उन्नति के शिखर पर पहुँचानेवाला वजही है। वह राज-कवि मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५८०-१६११ ई०) के पिता सुल्तान इब्राहीम कुल्ली कुतुब शाह (१५५०-८० ई०) के समय कविता करने लगा था, यही तुलसीदास की तरुणार्थ का समय है। वजही के दो काव्य-ग्रंथ मिले हैं, जिनमें से एक “कुतुब मुश्तरी” को उसने १६०९ ई० में (अर्थात् अकबर की मृत्यु के चार वर्ष बाद तथा तुलसीदास के निधन से १४ वर्ष पहिले) समाप्त किया था। यह कवि की मौलिक कृति है, जिसमें उसने बंगाल की राजकुमारी मुश्तरी और अपने संरक्षक इब्राहीम कुतुबशाह के उत्तराधिकारी मुहम्मद कुल्ली कुतुब के काल्पनिक प्रेम का वर्णन किया है। लेकिन ग्रंथ-समाप्ति के समय मुहम्मद कुल्ली कुतुब युवराज नहीं, बल्कि सुल्तान और ख्यातनामा कवि हो चुका था। वजही की आरम्भिक कविताओं का पता नहीं लगता। जिस समय (१६०९ ई०) कुतुब-मुश्तरी समाप्त की, उससे बहुत पहले से उसने कविता करनी शुरू की होगी। वजही के समकालीन गौवासी आदि और भी कितने ही कवि गोलकुंडा में मौजूद थे, लेकिन वह अपने से पहले के कवियों में फीरोज और महमूद का ही सम्मान के साथ स्मरण करता है। गौवासी को तो वह बहुत नीची निगाह से देखता है, यद्यपि गौवासी का स्थान दक्खिनी हिन्दी-कवियों में वजही से कम नहीं है। आलोचकों का मत है, कि गौवासी के तेज के सामने अंत में वजही इतना धूमिल हुआ कि उसने “कुतुब-मुश्तरी” लिखने (१६०९ ई०) के बाद फिर पद्य-काव्य पर कलम नहीं उठायी और २६ वर्ष बाद (१६३५ ई०) यदि लिखा भी, तो गद्य “सबरस” ही। “सबरस” वजही की मौलिक कृति नहीं समझी जाती, किन्तु वह अपने कवितामय गद्य के रूप में विशेष महत्त्व रखता है। तुलसीदास के तुरन्त बाद या समकालीन गद्य का क्या रूप था, इसका यह एक अच्छा नमूना है। इस प्रकार यह महाकवि गद्य और पद्य दोनों का उत्कृष्ट रचयिता है। गद्य में ऐसा कोई उदाहरण उत्तर के समकालीन हिन्दी-कवियों द्वारा उपस्थित नहीं किया गया।

आजकल हिन्दी-कवियों के ऊपर एक यह आक्षेप किया जाता है, कि ये स्वयंभू कवि किसी को अपना गुरु नहीं बनाते। यद्यपि यह कोई उचित आक्षेप नहीं है, नवीन कवि पुराने कवियों की कृतियों द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उर्दू-कवियों में तो परिपाटी बन गयी है, कि वे किसी-न-किसी कवि को अपना गुरु बनाते हैं, और गुरुकवि अपने शिष्य की कविता के संशोधन में काफी परिश्रम से काम लेता है; लेकिन वजही और गौवासी के समय गुरु-परम्परा कायम करने की कोई परिपाटी नहीं थी। दक्खिनी हिन्दी के छन्द सभी अरबी छंद हैं, जो मात्रिक होते हैं और स्वरों के खींचातानी करने में कोई रुकावट नहीं डालते, इसलिए जहाँ तक छंद का

मन्त्रन्व है, कवि को कोई शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं थी। वजही के समय भी सुल्तान के कवि-दरवार हुआ करते थे, किंतु इब्राहीम कुतुबशाह का समय वह समय था, जब कि दरवारों में हिन्दी नहीं, फारसी कविता की तूती बोल रही थी। दक्खिनी हिन्दी-कवियों ने उन्हीं अरबी छंदों को अपनाया था, जो फारसी में भी एकाधिपत्य रखते थे। बाकी अलकार आदि जो कविता के मजाने, गभीर तथा चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक होने हैं, उनका ज्ञान उन्हें पुस्तकों तथा कवि-दरवारों द्वारा ही प्राप्त हुआ करता था। फारसी कविता का जिसने रसाम्बादन और अवगाहन न किया हो, ऐसा दक्खिनी कवि शायद ही कोई हो।

यद्यपि वजही के बुढापेमें, मुहम्मद कुल्ली के नाती तथा द्वितीय उत्तराधिकारी अब्दुल्ला कुतुब शाह (१६२४-७२) के समय (शाहजहाँ और औरंगजेब के काल में) गौवासी गोलकुण्डा का राजकवि था, और वजही का मितारा डूब चुका था, लेकिन जैसा कि डॉक्टर जोर ने कहा है—

“वजही कई बातों के लिहाज से दक्खिन का एक अद्वितीय साहित्यकार है। उसका विषय स्वयं उसकी मानसिक उपज है। उसको इस दान पर अभिमान था, कि उसने और कवियों की तरह दूसरों से विषय उधार नहीं लिया। दूसरी भाषाओं से अनुवाद करना या दूसरे के विषय को उधार लेना उसकी दृष्टि में चोरी और दगावाजी-जैसा अपराध था। वजही वह मौभाग्य-शाली कवि है, जिसकी रचना के गद्य और पद्य दोनों नमूने इस समय मौजूद हैं। ये दोनों उसकी साहित्यिक शक्ति के सबसे अच्छे नमूने हैं। उसके गद्य “नवरम” के गुणों से साहित्यप्रेमी अपरिचित नहीं हैं और उसके पद्य “कुतुब मुश्तरी” के अध्ययन में कहा जा सकता है कि वह गोलकुण्डा का बहुत बड़ा शायर है। वह वस्तुतः दक्खिन का एक आला दरजे का कवि था। उसने बहुत अच्छा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। उसमें बनावटी और रूढिग्रस्त विचारों का कोई स्थान नहीं है। उनमें मालूम होता है कि सर्वप्रथम उर्दू (दक्खिनी) कवियों ने हिन्दी-कविता का अनुकरण आरम्भ किया था। यदि वह इस पर कायम रहते तो शायद उनकी कविता आज किसी दूसरे ही रंग में होती।”

## १ कुतुब-मुश्तरी\* (२००० शेर)

### (१) गौवासी पर आक्षेप

जो लक' बम कोई मिर लेवे रजकूँ । न पावे कधी' इस छिपे गजकूँ ॥  
हुआ जीव' जब शेर' ओ बोलने । खजीने' लग्या गैव' के खोलने ॥  
अगर गोते' लक' बम गौवास म्माय । तो एक गौहर' इस घात अमोठक न पाय ॥  
यो मोती नहीं वो' जो गौवास पाये । यो मोती नहीं वह जो किम हात आय ॥

\*उर्दू-शहपारे, पृ० ८६, ८७ ।

१ लाल, २ कमी (कौरवी), ३ मन, ४ पद्य-काव्य, ५ यह (कौरवी), ६ खजाना, ७ गुप्त, ८ डुबकी, ९ गोता लगानेवाला, गौवासी कवि, १० मोती ११ वह (कौ०) ।

गौवासाँ कई गोते खा खायकर । मुये है सो इस समद<sup>१</sup> मे आय कर ॥  
 अपन होके ल्याना सो है झूठ सब । खुदा, गैबते<sup>२</sup> देवे तो क्या अजब<sup>३</sup> ॥  
 किहंस तुमने वीच समद एक आय तो । मरे डूब मिल सिरउ पर पर्यो<sup>४</sup> हो ॥  
 इब्राहीम कुतुब शाह (१५५०-८० ई०) की प्रशंसा में वजही कहता है\*—  
 बराहिम कुतुबशाह राजाधिराज । शहशाह है शाह-शाहों मे आज ॥  
 अदलबख्श<sup>५</sup> होर दाद<sup>६</sup> उसते अच्छे<sup>७</sup> । सदा खल्क<sup>८</sup> सब शाह उसते अच्छे ॥  
 जिते बादशाहों है संसार के । भिकारी है सब उसके दरबार के ॥  
 सुलेमाँते फाजिल<sup>९</sup> है सब बख्त बल<sup>१०</sup> । पड़े देव-जिन सब है उस हुक्म तल<sup>११</sup> ॥  
 उसी शाह आदिल<sup>१२</sup> के गुस्से ते डर । लिया है गगन कूँ पवन पेट पर ॥  
 इता बल है उस अदल के फ़न मने<sup>१३</sup> । कि बिज्यां खड्यां कांपियां पन<sup>१४</sup> सुने ॥

### (२) तबई द्वारा प्रशंसा

बाद के गोलकुडा के कवि तबई (१६६९ ई०) अपने कथा-काव्य (मस्नवी) “बहराम गुल्अन्दाम” मे वजही की प्रशंसा करते लिखा है—

लग्या मै जो यों<sup>१५</sup> मस्नवी<sup>१६</sup> बालेने । यो मोतियां निछल<sup>१७</sup> ढाल यो रोलने<sup>१८</sup> ॥  
 यो वजही मेरे ख्वाब मे आयकर । मुख अपना सो रुखनाद<sup>१९</sup> दिखलायकर ॥  
 सरासर सुन्या जो मेरी मस्नवी । क्या<sup>२०</sup> “वात तबई है तेरी नवी” ॥  
 हो खुशहाल<sup>२१</sup> सुनकर यो बातां मेरे । अपस के<sup>२२</sup> ले हाताँ<sup>२३</sup> में हाताँ मेरे ॥  
 बड़े प्यार सों अपना यो मनल । सुन्या सो पड्या ख्वाब मे से उछल ॥

### (३) आत्मश्लाघा

#### (क) काव्य-प्रशंसा\*

कता<sup>२४</sup> हू सुनो कान धर लोग हो । कहावत मने<sup>२५</sup> बात जो आये सो ॥  
 अगर शेर<sup>२६</sup> कोई खूब कह कर जो लाय । तो खूबाँ<sup>२७</sup> कू वह सुन रश्क<sup>२८</sup> अलबत्ता आय ॥  
 एकस कूँ<sup>२९</sup> सो एक डाँक सकते नही । एकस कूँ सो एक मान रखते नही ॥  
 अगर कुछ कहे तो किधर का किधर<sup>३०</sup> । कहे तो कते है इसे हेच<sup>३१</sup> कर ॥  
 अराई<sup>३२</sup> मे इसकूँ ज्यों धीर थे<sup>३३</sup> । फ़ज़ीहत करे पाव लग<sup>३४</sup> सीर थे ॥  
 अगर खूब जो बोले तो वों<sup>३५</sup> रहे । दिगर<sup>३६</sup> जो बुरा बोले तो यों अहै<sup>३७</sup> ॥

१. समुद्र, २. गुप्त, ३. आश्चर्य, ४. पाद, पैर ।

\*उ. श. ९२ ।

५. न्यायकारी, ६. न्याय, इंसाफ, ७. रहे, ८. संसार, ९. अधिक, १०. उसके सौभाग्य का बल, ११. उसके हुक्म के नीचे, १२. शाह न्यायकारी, १३. मे, १४. पुनि, १५. यह (कौरवी), १६. कथा-काव्य, १७. निर्मल, १८. बहाने, १९. समान, २०. कहा (कौरवी), २१. प्रसन्न, २२. अपने, २३. हाथों । \*उ. श. पृ० ८८ । २४. कहता, २५. में, २६. कविता, पद्य, २७. भले, २८. ईर्ष्या, २९. एक-एक, ३०. अटपटांग, ३१. छोटा, ३२. संवारना, ३३. से (सब जगह), ३४. तक, ३५. वैसे, ३६. दूसरा, ३७. हू (व्रज) ।

## (४) मगलाचरण—

## (क) ईश्वर-स्तुति\*

अपे फूल अपे फल वन अहे । अपे चांद अपे सूर अपे घन अहे ॥  
 गरज' एक आप च' सवे ठार' है । उमी नूर' का मव में झलकार' है ॥  
 खुदाया' बडा तूं बडाई है तुज । हमन सब वेंदे है खुदाई है तुज ॥  
 जो जग में मदा काल जीता अछूं । मुह्व्वत केरी मैं कूं पीता अहूं ॥

## (ख) पैगम्बर-स्तुति†—

मुहम्मद नबी नांव' तेरा अहे । अरश के उपर छांव तेरा अहे ॥  
 कि चौदह मुलक का तूं सुल्तान है । अली मा तेरे घर मैं परधान'' है ॥  
 असी होर एक लाख पैगम्बर आय । वले'' मतवा'' कोई तेरा न पाय ॥  
 शफाअत'' करनहार सबका तुंही । अपे लाडला एक रवका तुही ॥  
 मुहम्मद कू जिस रात मेराज'' होइ । न था दूसरा वां अलीबाज कोइ ॥  
 इनो तीनों कूं वात यो फाम'' है । ममजता वो चीथे का नै काम है ॥

## (ग) अली-स्तुति‡

तूं जग का पियारा तूं जगका अधार । खुदा का तु ह्दम'' नबी'' कातूं या' ॥  
 अली का मुह्व्व नै जे कोइ सच तूं जान । हरामीपनी'' का वही है निशान ॥

## (५) कविकर्म-शिक्षा‡—

कता \* हूं तुजे पदकी एक वात । कि है फायदा इसमने'' धात धात'' ॥  
 जो बंक्स्त'' बोले तो वतिया पचीस । भला है मो एक वंत'' बोले सन्नीस ॥  
 मलासत' नहीं जिस केरी वात में । पड्या जाय क्यो जुज'' लेकर हाथ में ॥  
 जिसे वात के रत्न'' का फाम नै । उसे शेर' कहने सो कुच काम नै ॥

\* 'योरोप में दक्खिनी मख्तूतात' नसीरुद्दीन हाशिमि (हंदराबाद, १९३२ ई०) पृ० ३०,  
 हस्तलेख ११३४ हि० (१६२४ ई०)

१ अर्थात्, २ आप ही (मराठी), ३ ठौर, ४ प्रकाश, ५ चमक, ६ हे भगवान,  
 ७ रहूं, ८ मदिरा ।

\* यु द पृ० २९ (हस्तलेख ११३४ हि०, १६२४ ई०)

९ पैगम्बर, १० नाम, भरोसा, ११ प्रधान, राजमन्त्री, १२ लेकिन, १३ दर्जा,  
 पद, १४ सिफारिश, १५ अल्ला को देखने के लिए मुहम्मद का स्वर्ग जाना, १६ समझ, फहम ।

† यु द पृ० ३१ वहाँ ।

१७ सखा, १८ पैगम्बर, मुहम्मद, १९ नीचता ।

‡ ज श पा च—९७ । यु द पृ० ३१ ।

२० कहता, २१ इसमें, २२ भाति-भाति, २३ बेसमय, २४ पद्य, २५ कोमल,  
 २६ कोमलता, २७ पत्रों का समूह, २८ सबध, रीति, २९ पद्य ।

नको<sup>१</sup> कर तूँ ले बोलने का हवस<sup>२</sup> । अगर खूब<sup>३</sup> बोले तो एक बैत<sup>४</sup> बस ॥  
 वो कुच<sup>५</sup> शेरके फ़न<sup>६</sup> मे मुश्किल अच्छे<sup>७</sup> । कि लफ़्ज होर मानी<sup>८</sup> यों सब मिलअछे ।  
 उसी लफ़्ज कूँ शेरमे ल्याई तूँ । कि ल्यायां है उस्ताद जिस लफ़्ज कूँ ॥  
 अगर फ़ाम से<sup>९</sup> शेरका तुजकूँ छंद । चुने लफ़्ज ल्या होर मानी<sup>१०</sup> बुलंद ॥  
 रख्या एक मानी अगर जोर है । वले<sup>११</sup> भी मजा बात का और है ॥  
 अगर खूब महबूब<sup>१२</sup> ज्यों सूर<sup>१३</sup> है । सँवारे तो नूरे अलानूर है<sup>१४</sup> ॥  
 अगर लाख ऐबों<sup>१५</sup> अच्छे<sup>१६</sup> नारे में । हुनर<sup>१७</sup> हो दिसे खूब सिंगार में ॥  
 हुनर मुश्किल उस शेर में योच<sup>१८</sup> है । कि थोडे अच्छे हर्फ<sup>१९</sup> मानी<sup>२०</sup> सो कै<sup>२१</sup> ॥  
 दिवाना हूँ मै इस रँगी बात का । कि हर दिल मे जिव हो खडे ठार आ ॥  
 कहाँ बात वो चंचल हुआ चुलबुली । कि दिलकूँ न हासूँ<sup>२२</sup> करे गुलगुली<sup>२३</sup> ॥  
 मेरी बत सुन बात इस धात<sup>२४</sup> बोल । कि जिव<sup>२५</sup> कूँ खुशी होर दिलकूँ कलोल ॥  
 यो न मोल है बाल इसे बोल नै । हर एक बोल है वही<sup>२६</sup> यो बोल नै ॥  
 सखुनगो<sup>२७</sup> वही जिसकी गुफ्तार थे<sup>२८</sup> । उछल कर पड़े आदमी ठार थे<sup>२९</sup> ॥  
 यो बोल्या हूँ सब गज नारज<sup>३०</sup> है । अझूँ<sup>३१</sup> मेरे दिल मे बहुत रज है ॥  
 जो लक वर्स<sup>३२</sup> कोइ सह लेवे रंज कूँ । न पाये कधी<sup>३३</sup> इस छिपे गज कूँ ॥  
 नको<sup>३४</sup> बोल मजमून<sup>३५</sup> तूँ होरका<sup>३६</sup> । कि काला है दो जग में मूँ चोर<sup>३७</sup> का ॥  
 जिता चोरी कर चोर अपे साव<sup>३८</sup> होय । दगाबाज उचक्के कूँ मानै न कोय ॥  
 चुरा कर चुराता न कह जोर कोय । यो बाताँ समझते सो है होर कोय ॥\*

(६) स्वदेश-प्रेम†--

दखिन सा नही ठार<sup>३९</sup> संसार मे । निपज<sup>४०</sup> फ़ाजिला<sup>४१</sup> का है इस ठार मे ॥  
 दखिन<sup>४२</sup> है नगीना अँगूठी है जग । अँगूठी कूँ हुर्मत<sup>४३</sup> नगीना ही लग<sup>४४</sup> ॥  
 दखिन मुल्क कूँ धन अजब साज है । कि सब मुल्क सिर होर<sup>४५</sup> दखिन ताज है ॥  
 दखिन मुल्क मौते च<sup>४६</sup> खासा अहै । तिलंगाना उसका खुलासा अहै ॥

१. नहीं (मराठी), २. अभिलाषा, लोभ, ३. अच्छा, ४. पर्याप्त, ५. कुछ, ६. काव्य-कला, ७. है, ८. शब्द और अर्थ, ९. समझके, १०. अर्थ, ११. लेकिन, १२. प्रियतमा, १३. सूर्य, १४. प्रकाश के ऊपर का प्रकाश, १५. दोषगण, १६. रहे, है, १७. गुण, १८. यही, १९. अक्षर, २०. अर्थ, २१. कई, अनेक २२. वहाँ से, २३. गुदगुदी, २४. भाँति, २५. मन, दिल, २६. ईश्वर, शब्द, २७. वाणी, वक्ता, कवि, २८. वचन से, २९. ठौर से, ३०. नारंगी, थोड़ा, ३१. अजहूँ, आज भी, ३२. लाख वर्ष, ३३. कभी, ३४. नहीं, ३५. विषय, बात, ३६. और का, ३७. मुँह, ३८. साधु, सच्चा ।

\* उ० श० पृ० ९७ ।

† उ० श० पृ० ९८ ।

३९. ठौर, ४०. उपज, कृति, ४१. निपुण, शास्त्रनिष्णात, ४२. दक्षिण-भारत, ४३. इज्जत, ४४. तक, ४५. और, ४६. बहुत ही (मराठी) ।



## (७) पानगोष्ठी\*—

शहशह' मजालिस' किये एक रात। वजीग के फर्जन्द' ते मव मगात ॥  
 हर एक ब्रूमूरत हर एक खुशल्का'। मो हर एक दिलकग' हर एक दिलख्वा' ॥  
 महावत' के कामामें जम जर्म है ज्यो। दुजावत के कामा में रस्तम है ज्यों ॥  
 नदीम होर मुनिव' मुघड फहमदार। अये' शहमो मिलकर यो सब एक ठार' ॥  
 सुराही पियाले ले हातां मने' ॥ नदीमा ते मशगूल' वातां मने ॥  
 लगे मुनिवा गाने यो माजमो। कि प्रगती हिले मस्त आवाज सों ॥  
 जो मुनिव वो मेहरा' में इम घात गाय। तो फिर उनकूं इम शोक ते हाल आये ॥  
 जो गावो वो शह कूं कमाने' अये। मो रागां प रागां जमाते अये ॥  
 नदीमा लताफत में जो चख आयें। तो रीतियां कूं खुगकर घडी में हेमाये ॥  
 शगव होर सुाही नकल होर जाम' ॥ हुये मस्त मजलिम के लोगो तमाम ॥  
 जो हुइ रात आधी विछी' दोपहर। खबरदाग्यारां हुये बेखबर ॥  
 बिम गये नदीमां तरज' बात का। गँवाये खबर मुनिवां जात' का ॥  
 न मिलने न खूवां झगडते कही। यकम के उपर एक पडते कही ॥  
 लगे मस्त हो मुटने' मन्नी मंगात। एकमके' मो पावा उपर एक हात ॥  
 मो यो कुच वह यारां हुये बेखबर। कि पानी पीते थे शराव है कि कर' ॥  
 एकमकूं बुला एक अजमाउमो। गले लगते थे मस्त हो छाउ' सो ॥  
 वजाओ जो कै' तो उठें गायकर। मुट मुनिवां होश खुशी पायकर ॥  
 सुराही पियाले मो हम्दस्त' हो। करा फिरते थे वो दोनो मस्त हो ॥  
 ऐता मस्त माकी' हुजा सुव गवाय। कि प्याला मगे तो मुगही कुं ल्याय ॥  
 कह्या शाह दिलने च' प्रगना भग्रा। किमी पास जाहिर न करना भला ॥  
 किसें कटें कि मुज इश्क उमका अहै। वही जाने मुंज इश्क जिमका अहै ॥  
 जे कोई राज' यो वापकन' खोलेंगा। 'दिवाना हुआ' कर मुंजे बोलेंगा ॥  
 नहीं बात कहने की यो खोलकर। कि ममज्ञाउ अब मैं किसकूं बोलकर ॥  
 जछूं सेजप मौज ज्यों आवमें। कि चटका लगा गइ मकी' खाव में ॥  
 जिता' मुनिवा' शहकूं ममशी कहे। तगाफल' किये शाह होर चुप रहे ॥

\* उ० श० पृष्ठ १९१-१२।

१ राजाधिराज, २ जल से, ३ पुत्र, ४ सुमुख, ५ चित्ताकर्षक, ६ मनोहर,  
 ७ मुहब्बत, ८ सदा, ९ वीरता, १० वादक, ११ थे, हुते, १२ ठौर, १३ हाथों में,  
 १४ लगे, व्यस्त, १५ जगल, १६ भले न लगते, १७ प्याला, १८ पीछे, १९ ढग,  
 २० व्यक्ति अपने, २१ फँकने (पजावी), २२ किती के, २३ क्योकर, २४ छाया,  
 २५ फहं, २६ हाथ मिले, २७ मदिरा पिलानेवाला, २८ दिल को ही, २९ कहें,  
 ३० रहस्य, ३१ वाप के पास, ३२ रहें, ३३ सखी, प्रियतमा, ३४ जितना, ३५ गायक,  
 वादक, ३६ भूल।

कितै कै<sup>१</sup> कि मस्ती की चाले है यो । किते कै<sup>२</sup> पिरीत के उलाले<sup>३</sup> है यो ॥  
कितै कै<sup>४</sup> उसे कुच्च ओछट<sup>५</sup> हुआ । कितै कै<sup>६</sup> उसे इश्क का पट<sup>७</sup> हुआ ।

×

×

×

छुपी रात उजाला हुआ देस<sup>८</sup> का । लग्या जग करन सेवा परमेस का ॥  
शफक<sup>९</sup> सुबह का नैहै असमान में । कि लाले खुले सुंबुलिस्तान में ॥  
जो आया झमकता<sup>१०</sup> सुरज वाट कर । अंधारा जो था सो गया न्हाट<sup>११</sup> कर ॥  
सुरज यों है रंग आसमानी मनै<sup>१२</sup> । कि खिल्या कमल फूल पानी मने ॥  
हर एकस कुं हर एक कुच फाम<sup>१३</sup> था । नवल शह कू<sup>१४</sup> उस नार का फाम था ॥  
कह्या शाह अब हाल नै मुंज मने<sup>१५</sup> । भला है जो गंज हो अछे गंजमने ॥  
अपसमे अपे फिक्र<sup>१६</sup> कुछ गूंद<sup>१७</sup> कर । रह्या गुंचे कि निम्ने<sup>१८</sup> मुख मूंदकर ॥  
कि धरता हूं दिलमें जे कुच बात मै । करूं जा के बात किस सात<sup>१९</sup> मै ॥  
न कोइ यार दिलसोज<sup>२०</sup> मोहरम<sup>२१</sup> है मुंज । न कोई हम्नफ़स<sup>२२</sup> होर हम्दम<sup>२३</sup> है मुंज ॥  
जिते इस ज़मानेमने<sup>२४</sup> यार है । दगावाज ऐवां चुननहार<sup>२५</sup> है ॥  
उनको<sup>२६</sup> कू पत्या<sup>२७</sup> बात बोल्या न जाय । उनों के कने दिल कुं खोल्या न जाय ॥  
पत्याना उनोंकू कहौ क्यों कि कर<sup>२८</sup> । कि दिल में बुरे खूब है मूं उपर ॥  
यो यारी में किस घात<sup>२९</sup> का कह<sup>३०</sup> अछे<sup>३१</sup> । जो मूंमें शकर दिलमने जहर अछे ॥  
जे कोइ यार यारामने<sup>३२</sup> नेक है । जवां होर दिल दोनों उस एक है ॥  
न मै भाई में हूं न मै माइमें । कि तालिब कू<sup>३३</sup> है लाफ़<sup>३४</sup> तन्हाइ मै ॥  
जे कोइ घर में मशगूल अछे<sup>३५</sup> यारसों । नही काम कुछ उसकू बाजारसों ॥  
जिसे यार का ध्यान नित यार है । जो आलम<sup>३६</sup> की सोहबत<sup>३७</sup> ते बेजार<sup>३८</sup> है ॥  
किया लोग नज्दीक के दूर सब । नदीम<sup>३९</sup> होर मुत्रिव<sup>४०</sup> यो है सब अजब ॥  
अंझू<sup>४१</sup> लाल मद<sup>४२</sup> नैन प्याला हुआ । नदीम आह मुत्रिव सो बाला हुआ ॥\*

### (द) प्रेम-स्वप्न†--

देखी ख्वान<sup>१</sup> में शह की एक बन अहै । वो बन नै जमीं के उपर घन अहै ॥  
फिरै चांद सियाँ सुंदरियाँ उस मने<sup>२</sup> । सितारे नैनक याँ परियाँ उसमने ॥

१. कहै, २. उल्लास, ३. औझट, ४. रोग, ५. दिवस, ६. सूर्योदय की लालिमा,  
७. चमकता, ८. भाग (पं०), ९. आसमानी में, १०. समझ, ११. नये शाह को,  
१२. मुझमें, १३. विचार, १४. गूंध, १५. भांति, १६. साथ, १७. सहानुभूतिकारक,  
१८. हृदयभेदी, १९. एक कण, २०. एक सांस, २१. दुनिया में, २२. दोष निकालनेवाला,  
२३. उनको, २४. पतियाकर, २५. कैसे, क्योंकर, २६. भांति, २७. क्रोध, २८. है,  
२९. दोस्तों में, ३०. चाहनेवाले को, ३१. आराम, ३२. संलग्न रहै, ३३. दुनिया, ३४. संगत,  
३५. दुखी, ३६. गायक, ३७. वादक, ३८. आँसू (पंजाबी), ३९. मदिरा ।

\* उ. श. पृ० १९० ।

† यु० द० म० पृ० ३३, ३६ ।

४०. भोजन, ४१. उसमें ।

रगारंग चमना मने फूल थे । नवल शाह<sup>१</sup> तमाशे मे मशगूल थे ॥  
 पड़ी ओ चिते दिष्ट<sup>२</sup> उस नार पर । अखल कम हुई शह हुआ नेच पर ॥  
 सो इम परी में वी<sup>३</sup> थी वो च<sup>४</sup> घन<sup>५</sup> । किलब्दाये<sup>६</sup> थी मौत जोरों सो मन ॥  
 जो देख्या अथा<sup>७</sup> रवाव में माह<sup>८</sup> कू<sup>९</sup> । हुआ रवाव में ख्वाव उस शाह कू<sup>१०</sup> ॥  
 जो इस नीद मे होर तक होशियार । न थी उस सवूरी<sup>११</sup> न था उस करार ॥  
 बराहिम कुतुब शाह मजलिस सिंगार । किये मुस्तइद<sup>१२</sup> मोपे<sup>१३</sup> अशरत<sup>१४</sup> अपार ॥  
 जित्या<sup>१५</sup> खूब खुश-शमल<sup>१६</sup> थ्या<sup>१७</sup> मुंदरियाँ । मो कर तातक होर कोप कजरा तक्या ॥  
 जो चीन होर माचीन<sup>१८</sup> कीथी बुता<sup>१९</sup> । सो खुशतवा<sup>२०</sup> गुश-फहम<sup>२१</sup> गुग-मूरता<sup>२२</sup> ॥  
 हरेक खूब महबूब<sup>२३</sup> बुत फारसी<sup>२४</sup> । बदन ज्यो (कि) जलती<sup>२५</sup> अछै आरसी ॥  
 अजब एक उम वक्त पीर मद<sup>२६</sup> था । हुनखद<sup>२७</sup> आकिल<sup>२८</sup> जहाँगद<sup>२९</sup> था ॥  
 दुनिया के अपन वद<sup>३०</sup> ते आजाद<sup>३१</sup> हो । फिरे गर्जते<sup>३२</sup> शक लग<sup>३३</sup> वाद<sup>३४</sup> हो ॥  
 बघन<sup>३५</sup> रममे था कघन शरम में । कि उस्ताद था वो हरेक काम में ॥  
 अतागद मो नक्काश<sup>३६</sup> का नाम था । भला होर बुरा सब उसे फाम था ॥  
 जो बगाले का सेह<sup>३७</sup> जिवधात<sup>३८</sup> है । मो इस मुश्तरी<sup>३९</sup> नार की बात है ॥  
 बगाले शकरकू<sup>४०</sup> जो यों ल्याती है । मो उसके जघर डमकू वन पीती है ॥  
 अपस पेन्ज<sup>४१</sup> दिगला वो शोप<sup>४२</sup> नार । मुरज, चाद, तारे मित्रा एक नहार<sup>४३</sup> ॥  
 अतारदवू<sup>४४</sup> शह हाल सब बोलकर । वही रवाव देखी वी सो खोलकर ॥  
 वि उम वनि सा मुज इस्क इम बात है । कह्या हू तुजे मैं जो बुच बात है ॥  
 त्रि आशिक अहे तू अपे ददमन्द<sup>४५</sup> । तुजे फाम इम काम की सब हे छद<sup>४६</sup> ॥  
 एताल<sup>४७</sup> उसके मिलने वी तदवीर कर । तू वेग<sup>४८</sup> हो नको<sup>४९</sup> काम तासीर<sup>५०</sup> कर ॥

### (९) प्रेमरभ\*—

(क) "कुतुब-मुश्तरी" का नायक इब्राहीम कुतुबशाह का पुत्र तथा युवराज एव भाव  
 महाकवि मुहम्मद कुली कुतुब है । प्रेमरभ के बारे मे है —

कह्या इल्म<sup>१</sup> मे देक<sup>२</sup> न वो आपते । कि फजन्द<sup>३</sup> यो बस्तवर<sup>४</sup> वाप ते ॥  
 रव नाँव करतार कने मग पनाह<sup>५</sup> । सुलखन मुहम्मद कुली कुतुबशाह ॥

१ युवराज, २ दृष्टि, ३ भी, ४ ही (मराठी), ५ तख्ती, ६ फँसाये, ७ था, हत  
 ८ चाद, ९ घंघे, १० तैयार, ११ मुझ पर, १२ आनद, १३ जितने, १४ सुरूप  
 १५ थीं, १६ महाचीन, १७ सुंदरियाँ, १८ सुमन, १९ सुबुद्धि, २० सुरूपा, २१ प्रियतम  
 २२ पारमी सुदरी, २३ उज्ज्वल, २४ बुद्धा, २५ कलाकार, २६ बुद्धिमान, २७ विश्व  
 पर्यटक, २८ बघन, २९ स्वतंत्र, मुक्त, ३० गर्व से, ३१ पश्चिम तक, ३२ वायु, बात  
 ३३ कभी, ३४ चित्रकार, ३५ जादू, ३६ जानकार, ३७ मिठास, ३८ अपने से ही, ३९  
 चंचल, ४० दिन, ४१ पीड़ित, ४२ ढग, उपाय, ४३ अब, ४४ जल्दी, ४५ नहीं, ४६ देर

\* यो० द० म० पृष्ठ ३२ ।

४७ विद्या, ४८ देस, ४९ पुत्र, ५० भाग्यवान्, ५१ शरण ।

करे जम<sup>१</sup> दुआ जीवसों जग उसे । हयात होती है ज्यास्त<sup>२</sup> तिलतिल<sup>३</sup> उसे ॥  
जवानी की दरिया कूँ आया अघान<sup>४</sup> । मुहम्मद कुतुबशाह हुआ अब जबान ॥  
एता जोर था, उसके एक दस्त सों । उचा<sup>५</sup> के पछाडी मते इस्त<sup>६</sup> कूँ ॥

(ख) प्रेम की पीड़ा\*--

न भुईँ पर दिखै वह न असमान में । रह्या शह उसी नारि के ध्यान में ॥  
लग्या तलमल्याने बहुत धात<sup>७</sup> सों । कह्या जाय ना बात वो बात सों ॥  
न यो बात हर एककूँ फाम<sup>८</sup> होय । वही जानै जिसपर जो यो काम होय ॥  
कधी<sup>९</sup> चख<sup>१०</sup> हंसे होर कधी चख रोये । कधी सुद्<sup>११</sup> पावे कधी सुध खोय ॥  
इसी धात दिन रात रहता अछे<sup>१२</sup> । अपस में अपे<sup>१३</sup> वह यों कहता अछे ॥  
भुलाई चंचल धनि<sup>१४</sup> वो यों शाहकूँ । कि लहराये ज्यों कहरवा<sup>१५</sup> काह<sup>१६</sup> कूँ ॥  
उठे और फिर सोये शह जाय कर । कि वो नारि भी ख्वाब<sup>१७</sup> में आयकर ॥  
जो हर बार यो ख्वाब में यार आय । तो आशिक<sup>१८</sup> कूँ बिन ख्वाब भी कुछ न भाय ॥  
परेशान हैरान बेताब था । न कुच उसकूँ आराम ता<sup>१९</sup> ख्वाब था ॥  
लग्या शाह उसासां भरन आह भर । कि नज्दीक नै है वो गुनबंत नार ॥  
कधीं बेखबर होय कधीं होशियार । कधीं पीव-पीव कै<sup>२०</sup> कधी यार-यार ॥  
यों सुन मुत्रिबाँ<sup>२१</sup> सब खबरदार होय । जो मस्तान थे वों सो होशियार होय ॥  
भौत धात<sup>२२</sup> सों बात समझायकर । कहे शहकूँ नज्दीक यूँ आय कर ॥  
कि ए शह, तूँ जम<sup>२३</sup> शाहखुरम हुआ च । नही गम तुझे कुच तु बेगम हुआ च ॥  
जे कुच तुजकूँ होना सो हाजिर है सब । उसासाँ जो भरता सो तूँ क्या सबब ॥

(१०) प्रेम-पद्य--

(क) गजलां†--

पिउ अपने कूँ टुक आज मै, निस सपने देखी सोय कर ।  
जब पिउ चल्या<sup>२४</sup> सुट<sup>२५</sup> सेज मुँज, तब सोती उठी रोय कर ॥  
हाथ बढ़ा अपना सारने<sup>२६</sup> मुँज चल चल लाग्या मारने ।  
ना जाऊं साईं कारने भी, अजऊं क्या क्या होयकर ॥  
ना पूछूँ वहमन<sup>२७</sup> जोसी, कव मिलना पिउसों होसी<sup>२८</sup> ।  
गम विरहा सब मै सोसी<sup>२९</sup>, ना जाने दुख यो कोइकर ॥

१. सदा, २. ज्यादा, ३. पल-पल, ४. उबाल, ५. उठा, ६. मस्त हाथी ।

\* उ० श० पृष्ठ १८९ ।

७. भौति, ८. समझ, ९. कभी, १०. चक्षु, आँख, ११. सुध, होश, १२. रहे,  
१३. अपने-आप, १४. तरुणी, १५. चुम्बक, १६. घास, १७. स्वप्न, १८. प्रेमी, १९. था,  
२०. कहें, २१. वाद्यवादक, २२. बहुत भौति, २३. सदा ।

† उ० श० पृ० १९२ ।

२४. चलता, २५. छोह (पंजाबी), २६. हटाने, २७. ब्राह्मण, २८. होगा,  
२९. सहेंगी ।

फत्ताही (मुहम्मद यहिया) तेमूर के पुत्र शाहखुव के समय नेशापुर (सुरामान) का विद्वान् था, जिनकी मृत्यु ८५२ हि० (१४४२ ई०) में अर्थात् "सवरस" लिखने में १८७ वष पहले हुई थी। फत्ताही ने "दस्तूर-उश्शाक" (प्रेमियों की रीति) नाम में पांच हजार शेरों का एक कथा-काव्य लिखा था। उसने "शविस्ताने ख्याल" (सकल्प रात्रि) और "हुस्न व दिल" लिखे थे, जिनमें "हुस्नोदिल" "दस्तूर-उश्शाक" का गद्यमय मक्षेप है। इसका ढग वही है, जैसे संस्कृत में "प्रबोधचन्द्रोदय" "मकल्प सूर्योदय" नाट्य-काव्य का है जिनमें योग वेदान्त की शक्तियों को पुरुषाकार बना कथा रूप दिया गया है।

फत्ताही के नायक, नायिका और प्रति-नायक, प्रतिनायिका हैं 'दिल' और 'हुस्न', 'अदल' और 'इस्क'।

वजही ने अपने इस ग्रंथ को मौलिक कृति कहते लिया है—

"शरज' मौन नादिर' वाता बोल्या हू, दगिया होकर मोतिया रोल्या हू। मोतिया के मौजा' का मैं दरिया हूँ, तमाम मोतियाँ सो भरचा हूँ। जे कोई बात हमारी चल्या वो हमारा च है। हर चद' फहमदारी' है, चल्या तो क्या हुआ बात हमारी है। अगर नुकता है किमी ते कुछ जान्या, हम जाहिर' हम वातिन' उमे नै मान्या, तो वो मुमल्मान नै, उमे ईमान नै। ऐसेसे डरना, भीत-भीन परहेज' करना। यो वी एक खोरी है, यो वी एक हरामखोरी है।"\*

अब्दुल हक साहेब टिप्पणी करते कहते हैं—“लेकिन वजही के मुँह में यह बात कुछ अच्छी नहीं मालूम होती। उसने सारा किस्सा शुरू से जाखिर तक फत्ताही से लिया, और कही इसका इकरार' नहीं किया। यही नहीं, बल्कि तहरीर का अस्लूब' भी उसीमें उड़ाया। वाबजूद इसके हम वजही को उस्ताद मानते हैं, और जो काम उसने किया है, उसका एहसान

और तिनिहू आश्रमनि की पालना करतु है। अरु अपुनु ससार-समुद्र के पार होतु है, सुस्त्री ऐसी बडी है। अरु स्त्री पुरुष की अर्धांगु है। अरु स्त्री ऐसी है, जाके बल गृहस्थ बडे रिपु इन्द्रियनि जीततु है। और तीनिहू आश्रमनि इन्द्रिय डगावती है। सु तिनि इन्द्रियनि हम तुमारे बल अना यास ही जीतत ह। जैसे गडपति गड के शत्रुनि जीतत है। ताते सुनहु दिति, जौलों हमारी सम्पूर्ण आउ बोति है ती लौं हम तुमहि उरन न व्है सकिहै। ताते अवहि हमारी एक विनती मानहु। अरहि यह महाघोर बेरा है। सु इहि बेरों भूत परेत फिरत है, अरु महादेउ फुनि अबहि फिरत है। सु महादेव जो देपिह, ती हम पर दुपु पाइहै। सु तुम घरीकु देपहु।”इतनी बात जबही कस्यप कही, दिति के मन एकौ न आई। कामु जु अतिही व्याप्यो, सु दौरि कै दिति कस्यपु जाइ गही, अति आतुर व्है रति दानु मागन लगी, तब कस्यप मन मध्य दुपु पाइकै ईश्वरसँ अपराधु क्षमाइक दिवु फहूँ रतिदानु देत भए। सु ताते इहि प्रकार स्त्रीजु कछू कयों चाहै, ताकौ अतराउ न करहौं।”

—सवरस (भूमिका) सम्पादक मौलवी अब्दुल हक, हैदराबाद १९३२ पृ० १२।

१ हृदय, २ सौंदर्य, ३ बुद्धि, ४ प्रेम, ५ अभिप्राय, ६ मृत्यु, ७ दुर्लभ, ८ लहर, ९ सदा, १० समझदारी, ११ प्रकट, १२ बाहरी, १३ समय। \* वही पृ० ७। १४ स्वीकृति, १५ ढग।

न मानना हकीकत<sup>१</sup> में ना-इन्साफी<sup>२</sup> है। उस जमाने में उर्दू नस्र<sup>३</sup> का नाम न था, और न नस्र लिखना कोई कमाल की बात समझी जाती थी। एक तो रिसाले जो इसके कव्ल<sup>४</sup> के पाये जाते हैं वह इस काबिल नहीं कि महफिले-अदब में जगह पावें। 'सबरस' उर्दू नस्र की पहिली किताब है, जो अदबी एतवार से बड़ा दरजा रखती है\* ।”

वजही के सबरस के आधार पर जौकी (शाह हुसेन बहरूल उर्फ, ज्ञानसागर) ने १६६७ ई० (११०९ हि०) में “वसालुल आशिकीन” (प्रेमी मिलन) को पद्य-बद्ध किया और मुजुमीं शाह वैरुल्ला वीजापुरी ने १६७५ ई० (१०८६ हि०) में अपनी मस्तवी “गुलशने जश्न दिल” (मनमहोत्सवोद्यान) लिखी।

(२) संक्षेप—

(क) कथारंभ—

एक शहर<sup>५</sup> था। उस शहर का नाँव सीस्तान। उस सीस्तान के बादशाह का नाँव अकल<sup>६</sup>। दीनो दुनिया का तमाम काम उसते चलता। उसके हुकम बाज<sup>७</sup> जर्रा<sup>८</sup> कई नै हिलता। उसके फ़रमाये<sup>९</sup> पर जिनो<sup>१०</sup> चले, हर दो जहाँ<sup>११</sup> में होये भले।...

सो इस अकल पादशाह कूँ... एक फ़र्जन्द<sup>१२</sup> था, कि उसका जोडा दुनिया में कै न था... नाँव उसका दिल।... सो एक देस<sup>१३</sup> उस अकल पादशाह आलमपनाह<sup>१४</sup> साहब-सिपाह<sup>१५</sup> जल्लअल्लाह<sup>१६</sup>... के दिल पर कुछ आया, अपना अंदेशा<sup>१७</sup> अपसकूँ भाया। सो उस दिल शाहजादेकूँ... उस इल्मां<sup>१८</sup> धनी कूँ तन के मुल्क की बादशाही दिया, तन के मुल्क का बादशाह किया।... सिर छतर छाया, तखत बसलाया<sup>१९</sup>।... जिधर जिधर दिल जाता, दिल के पीछे तन वी आता।...

(ख) मदिरा-महिमा—

आशिक दिल कूँ शराब का भौत ध्यान, चतुर सुघरोल<sup>२०</sup>, शराब वगैर<sup>२१</sup> नै रहाता एक तिल<sup>२२</sup>। शराब उसे मोत भाया था, शराब पीना उसे आया था।... पादशाहां कूँ शराब पीने का क्या डर? पादशाह कूँ अदल इंसाफ<sup>२३</sup> वगैर होर कुछ पूछ-विचार न होसी<sup>२४</sup>। पादशाह

१. वस्तुतः, २. अन्याय, ३. गद्य, ४. पहिले।

\* सबरस के सम्पादन करने मे जिन हस्तलेखों की सहायता ली गई, उनमे एक १७०५ ई० (१११७ हि०) का था, और दूसरा १७६३ ई० (११७७ हि०) का, अर्थात् ग्रन्थ लिखने के समय से ७० साल ही बाद का।

† 'सबरस' (सम्पादक—श्रीराम शर्मा, हैदराबाद, १९५५ ई०) पृष्ठ १३ से तुलना करें।

५. नगर, ६. बुद्धि, ७. विना, ८. कण, अणु, ९. आज्ञा देने, १०. जो, ११. दोनों लोक, १२. पुत्र, १३. घोस, दिवस, १४. लोकशरण, १५. सेना-स्वामी, १६. भगवच्छाया, १७. विचार, १८. विद्याओं, कलाओं, १९. बैठाया।

+ वहीं पृ० २३, २४।

२०. सुघर, २१. विना, २२. क्षण, २३. न्याय, २४. होगा (पं० गु०)।

शराब पिया, तो गुनहगार<sup>१</sup> न होमी। पादशाहां कूं गुदा ने प्यार कर कुछ दिया है, दुनिया का सवाद<sup>२</sup> पादशाहो खातिर पैदा किया है। पादशाहा खुशी पर आये, तो सलक<sup>३</sup> कूं वी खुशी भाये। हर एक कोई दो प्याले पिया, पादशाहां कूं दुआ दिया। दो देस की दुनिया महजूज<sup>४</sup> हो जिया। जान ताजा, ईमान ताजा तो सब जहान<sup>५</sup> ताजा। जा आशिक<sup>६</sup> होर माशूक<sup>७</sup> अछै, वहाँ शराब न अछै तो बडा हैफ<sup>८</sup>, जो नमक नै सो खाना। जो कोई आशिक है, उसे शराब भीत भाता। शराब आशिक होर माशूक के दिल के शक दूर करता, शराब दोनो कूं मुहब्बत में चूर करता। शराब पिये पछो दिल में कुछ खिलाफ नै अछता<sup>९</sup>। शराब पिये वगैर दिल माफ न अछता। दुनिया का लफ्जत, तो पी शराब। शराब न अछै तो आशिक के अगे दुनिया सब खगव। शगव हरगिज गम<sup>१०</sup> कूं आने नै देता। शराब खुशी कूं दिल में तो जाने नै देता। अगर मँगता<sup>११</sup> है गम कूं मार, तो शराब पी। अगर मँगता है जफ़ा<sup>१२</sup> तेरे अगे<sup>१३</sup> हारे, तो शराब पी। अगर मँगता है सज़ावत<sup>१४</sup> पर आन, तो शराब पी। अगर मँगता है माशूक सों हिज<sup>१५</sup> पाने, तो शगव पी। अगर मगता है हुस्न का नज़ारा करे, तो शराब पी। दिल में मुहब्बत भरे, तो शराब पी। ऊचा चढने मगता है, तो शराब पी। सुदा कूं अपडने<sup>१६</sup> मगता है, तो शराब पी\*।

आशिक की इनादत<sup>१७</sup> हुस्न<sup>१८</sup> देखना, राग सुनना, शराब पीना है। आशिक जे मैयाने<sup>१९</sup> में पाया, सो कावे मे जाहिद<sup>२०</sup> के हात नै आया। आशिकी मुसाहिमत होर यारी<sup>२१</sup> है, इवादत बदगी होर<sup>२२</sup> खिदमतगारी है। महवूर्वा<sup>२३</sup> है सो साहब<sup>२४</sup> की गोद में सोते, चाकर हँ सो हात जोडकर बडे होते।†

(ग) अमृतसजीवनी की खोज—

उम वक्त एकाएक ऐन मस्ती<sup>२५</sup> में वादा-परस्ती<sup>२६</sup> में एक कदीम नदीम<sup>२७</sup> मौत लताफत<sup>२८</sup> सो, एक ताजे आवेहयात<sup>२९</sup> का किस्सा पढचा, सो बोल्या कि जो कोई या ताजा आवेहयात पावेगा, दूसरा खिज<sup>३०</sup> होयेगा, इस जग में सदा जीवैगा।

इम आवेहयात की बात का असर<sup>३१</sup> मौत घात<sup>३२</sup> दिल् वादशाह के सिर चढचा। नाँव सुनते च<sup>३३</sup> दिल हुआ बेताव। वास आने च में चढचा शराब।

आशिक पर सबूरी<sup>३४</sup> है हराम। सबूरी का नाँव लेते जीव जावे, आशिक ते सबूरी क्याकर आवे? वेमवरी<sup>३५</sup> आशिक की सिफन<sup>३६</sup>, बेताबी आशिक की इज्जत, तिलमिलाना आशिक का काम, जलना आलिश का इहतराम<sup>३७</sup>।

१ अपराधी, २ आस्वाद, ज्ञान, ३ दुनिया, ४ स्वाद पाया, ५ दुनिया, ६ प्रेमी, ७ प्रियतमा, ८ रहै, ९ अफसोस, १० रहता, ११ रज, १२ चाहता, १३ जुल्म, १४ आगे, १५ दानशीलता, १६ वियोग, बिरह, १७ पाना।

\* वही, पृ० २९।

१८ भक्ति, १९ सौंदर्य, २० मद्यशाला, २१ सयमी, २२ दोस्ती, २३ और, २४ प्रेमिका, २५ स्वामी।

† वही, पृ० ३१।

२६ मतवालापन, २७ मद्यसेवा, २८ प्रतिहार, २९ कोमलता, ३० अमृतसजीवनी, ३१ जलदेवता, ३२ प्रभाव, ३३ भाँति, ३४ ही, ३५ सतोप, ३६ असतोप, ३७ गुण, ३८ सम्मान।

दिल पादशाह...मौत बेदिल हुआ। दिल पर काम मुश्किल हुआ। शहर सब हैरान, घर पर लोकाँ परेशान। जेते जितना दौड़े सर-गर्दाँ होकर सब सिर फोड़े। पेशवा, दबीर, अमीर, नजीर, कोई कर नै सकै उसकी तदवीर\*।

...दिल बादशाह कूँ...एक जासूस<sup>२</sup> था। उसका नाँव नजर<sup>३</sup>, सब ठाँव उसका गुजर<sup>४</sup>, सब जागा की मालूम उसे खबर।...अक़ल भौत धरे, नै होता सो काम करै। कोई न जा सके वहाँ जावे, कोई खबर नै ल्याता सो खबर ल्यावै।...सो वो नज़र जासूस दिल...के हुजूर<sup>५</sup> आकर...ताजीम कर...भौत अदब<sup>६</sup> सो बोल्या, बात का माया खोल्या, कि “ऐ दिल बादशाह...दिलकूँ रख घट<sup>७</sup>, तकवा<sup>८</sup> नको सट<sup>९</sup>।...इस काम पर एताल<sup>१०</sup> में राजी<sup>११</sup>, देख मेरी जबानबाजी<sup>१२</sup>। मुझे रुखसत<sup>१३</sup> दे। इस काम कूँ मै जाऊंगा, जिधर तिधर धूँढ़<sup>१४</sup>, तू मंगता सो आबेहयात की खबर ल्याऊंगा।...

...दिल बादशाह...यो-बात सुन्या, उमेद<sup>१५</sup> के चमन में ते गोद भर भर फूल चुन्या।

मन के चमन<sup>१६</sup> मे वाव आ, फलके है गुँचा<sup>१७</sup> आस का।

डाली च पर फूल हंस पड्या, उम्मेद अव है वास का‡।

...नजर जासूस कूँ शाबाश कह्या, ...रजा<sup>१८</sup> दिया कि “तू जा, यो खुशखबर लेकर वेग आ।...ताखीर<sup>१९</sup> नको कर।...”

जासूस नजर दिल पादशाह आलमपनाह सों बिदा होकर कदम अंगे धर रवाना हुआ, जो वाव कै उठा कै गिर्या, जागा जागा हूँढ्या, आलम सब फिर्या।...फिरते-फिरते एक शहर में आया। उस शहर के इमारताँ जैसियाँ किसी शहर में कोई आज लग नै बंधाया। कि उस शहर के आसपास, तमाम फुलवारी, तमाम फूलाँ की वास। लोकाँ सब बाँके...नेक-नीयत नेक-कर्दार<sup>२०</sup>, परदेसी कूँ आये-गये कूँ भौत करते प्यार।...

नजर वहाँ के लोकाँ ते लिया खबर कि “यो ठाँव क्या है, इस शहर का नाँव क्या है?” वहाँ के लोकाँ हुये एक कोले<sup>२१</sup>, सब बोले, कि “इस शहर का नाँव आफ़ियत<sup>२२</sup>, होर इस शहर के पादशाह का नाँव नामूस<sup>२३</sup>।”...

नजर(नामूहस पादशाह)...सो जाकर मिल्या, अपने काम खांतिर भौत बिलबिल्या<sup>२४</sup>। नामूस पादशाह उसे देख कर...भौत खुश हुआ। हँस्या, हिल्या, गुँचा था सो खुशी सो जो फूल खिल्या।...उसे अपने नज़दीक बसलाया<sup>२५</sup>। पूछ्या कि “तू कौन है, तेरा मकसूद क्या

१. धूल फाँकता। \* 'सबरस', पृ० ३३।

२. गुप्तचर, ३. दृष्टि, ४. गति, ५. सामने, ६. सम्मान, ७. ठीक, ८. षट्कर्म, ९. छोड़, १०. वस्तुतः, ११. स्वीकारो, १२. दाव, १३. छुट्टी, १४. हूँढना।

† वहीँ पृ० ३४, ३५।

१५. आशा, १६. बाग, १७. कली। ‡ वही पृ० ३५। १८. अनुमति, १९. देर, २०. सुकर्म, २१. ओर, २२. मंगल, २३. सम्मान, २४. अफसोस, २५. बंठाया।



है, तू काँते आया ? "नजर बोल्या कि "ए नामूस वादशाह आवेहयात जो मैं मगता हूँ, उमी कूँ पछाने, काँ अछैगा, सो खुदा जाने ।"

नजर नामूस पादशाह कूँ सलाम कर कुछ कलाम कर चल्या, निदान उस आवेहयात का कई नै पाया कर भौत तिलमिलाया ।

जाते-जाते तिलमिलाते-तिलमिलाते हूँ खाते-खाते वाट में देखा, एक डूंगर अजीमु-रदान, दूसरा आसमान, हर एक खाने में उसके चाँद सूरज का मकान । नजर उसकी बुलदी पर नै जाती, कचलाती भी फिर-फिर आती । जीव नै रह्या, उस डूंगर के नजदीक गया । वहा के लोकाँ कूँ पूछ्या कि "इस जागाँ कूँ क्या कते है ।" उनो बोले कि "यो डूंगर पर कुहना बूडा अछता है रात-देस, उसमें परसन हुआ है परमेस, उसका नाव जक मगर होर उसमें कुछ नै फक ।

नजर कूँ भौत यी तलव की आम, बाव हो कर डूंगर पर चड गया जक के पास । उन कह्या "ऐ पीर, सलाम, साहब तदवीर सलाम ।"

उने कह्या—“ऐ जवान, अलैक सलाम्, अलैक सलाम\* ।”

वैत (पद्य)†—

यो काँवा यो काँका यो दोनो हुवाई ।

तमाशा अजब है नवी आदानी ।

जक कह्या कि—“यहाँ तूँ क्या आया ? कौन तुझे यहाँ लाया ? कौन तुझे यो वाट दिख-लाया ? यहाँ क्या है तेरा काम, हेरान हूँ मैं नै होता फाम ।”

नजर अपने दिल की गाठ खोदया, उसे ताजे आवेहयात का किम्सा बोल्या ।

रिजक ने कह्या—वह एक चरमा तू कता मो वहिदत में है । तूँ उस चरमा कूँ धूँडता दुनिया मियाने, उसका निदान कोई क्या समजे क्या जाने । अगर तुझे होना चाहे मो पानी, तो आशिक के अजवाँ में है उस पानी की निगानी । आशिक की अखी का पानी क्या है इस्क की खूम । उम पानी ते क्या अजब जो युवा मो जीवता होय । मसीहा का दम उस पानी ते फेज पाया, मसीहा उस पानी ते मुँये कूँ जिलाया । उस पानी सो वे-अदबी ना करना, उम पानी मो भौत डरना । यो पानी अगर मेह की मौज उचावे, तिलमें आलम कूँ गुलिस्ता कर दिखलावे । फूलकूँ फुलवाडी करे, वाडकूँ वाडी कर, पातकूँ झाड करे, ककर कूँ पहाड करे । तेरा सखुन मुँसे नुशी दिया, तेरी बात में भौत हिज किया । तू कह्या सो बात मेरो बातमें है, दो देस वी उम रात में है । तू जो मोती सुट्या में चुन्या, तूँ जो बोल्या सो मैं सुन्या । वले मेरा मुद्दा कुछ जुदा है, किमने क्या होवेगा हताल खुदा है ।

\* 'सवरस', पृ० ३५ ।

† वहाँ, पृ० ४२ ।

‡ समझ ।

‡ वहाँ पृ० ४३ ।

२ कहता, ३ बीच, ४ विचित्र, ५ धरकत, ६ अपमान, ७. कृपा, ८ पल में, ९ वचन, १० स्वाद ।

यो वह वहाँ ते उठ्या, उसकी खिदमत के बन्द मेंते छुट्या। इस कोम पर यों थी कजा, 'जाता हूँ' कर मँग्या रजा। इस फ़िक्र ते चल्या, भौत तिलमिल्या भी अपने काम कूँ बाव होकर जंगले-जंगल चल्या। उस जंगल में. . . एकाएक कोट नजर आया, आसमाँ पर पड्या था उसका सामाँ। सात ज़मीन उस कोटे के एक तरफ का पाया, हर एक कँगूरा उसकी अर्श<sup>१</sup> का हमसाया<sup>२</sup>। ऐसा कोट दुनिया मै आज लगन<sup>३</sup> कोई पादशाह न बंधाया। . . . उस कोट कने<sup>४</sup> आकर वहाँ के लोकाँ की रविश<sup>५</sup> पाकर, पूछ्या कि, "इस कोट का नाँव क्या है, इस कोट के पादशाह का नाँव क्या है\* ।"

लोकाँ बोले कि "इस कोटका नाँव है हिदायत और इस कोट के पादशाह का नाँव हिम्मत ।" . . . जासूस नजर हिम्मत पादशाह आलमपनाह. . . सों जाकर मिल्या। . . . नजर खातिर वहाँ टुक जम्या, चन्द रोज हिम्मत की खिदमत में गम्या। गमते-गमते वहाँ हिम्मत कने एक देस उस ताजे आबेहयात की बात कहा। . . . हिम्मत सुन हँस्या, हँसकर भी रोया, अँझुवाँ सों मुँह धोया, लहू कू पानी मे घोल्या होर बोल्या। उस ताजे आबेहयात की वाकने, ताकत नै मुझ मने। . . . ए नजर खूब नजर कर, इस बातते दर गुजर कर। . . . भौत लोकाँ इस बाट में आकर जीवाँ गँवाये है। . . . तुटे दिलकूँ जोड़, इस बात का दुँवाला<sup>६</sup> छोड †. . .

नजर यो खबर सुन भौत घबड़ा हुआ, चित का बुरा हुआ। . . . मामला कुछ का कुछ खड्या<sup>७</sup>, अँदेशे में पड्या. . . "दिल के उधर देखता हूँ. . . आशिक काबिल<sup>८</sup> की बात खातिर मैकाँ आती है, पंद<sup>९</sup> किसी की काँ भाती, दोस्ती जाकर दुस्मनी बसाती। दिल मेरी बात कूँ काँ मानेगा, अगर बोलूँगा दुश्मन कर जानेगा। . . . दिलके दिल में मेरी है आस, मै भी अंपड्या<sup>१०</sup> हूँ हिम्मत पास। . . .

. . . कुछ अँदेशा अँदेश कर कदम कुछ पेश कर हिम्मत कूँ बोल्या. . . "तूँ बादशाह, तूँ हिम्मत, तूँ फतह<sup>११</sup>, तूँ नस्रता। मुझे मेरे काम कूँ हिम्मत दे, हिम्मत की कुछ मत दे। . . . खुदा खातिर जों-त्यों उस आबेहयात काँ है, उसका निशान बोल। . . .

हिम्मत नजर कूँ मौत कस्या, पेट पकड पकड कर होग्या। कहा. . . शावाश तुझे। . . . जिसका जफ़र ऐसा अछैगा, उसका साहब कैसा अछैगा। . . . अल्-किस्सा<sup>१२</sup> हिम्मत ने नजर कूँ, इस खुशखबर कूँ खिलवत में ले जाकर अपने नजदीक बसला कर समझाया, मकसूद<sup>१३</sup> उसका पाया। . . . कहा. . . मशरिक बलायत में. . . एक बादशाह है, . . . इस्क<sup>१४</sup> उसका नाँव है, हर दिल में उसका ठाँव, सबसों जोड्या किसी सों नै तोड्या †. . . ।

वह शाह इस्क है यो सब जहाँ उसका है।

सितारे चाँद सूरज आसमाँ उसका है। ‡

१. भगवदाज्ञा, २. पड़ोसी, ३. तक, ४. पास, ५. ढंग।

\* वहीं पृ० ४४। ६. पीछे। † वहीं पृ० ४५।

७. खींचा, ८. योग्य, ९. शिक्षा, १०. तैयार, ११. विजय, १२. संक्षेपतः, १३. अभिप्रेत, १४. प्रेम।

‡ वहीं पृ० ५३।

इश्क आग है, जाँ जामे वाँ जले, इश्क की आग कूँ कौन सँभाले ? इश्क का जीव हुस्न, उम जीव में लाख-लाख गुन, इश्क कूँ झाड है हुस्न पानी, हुस्न ते कायम इश्क की जिन्दगानी । इस दोनो च का हूँ शोर घरे घर टारें ठार । इश्क आशिक, माशूक हुस्न नारी, इश्क के माशूक दायम सँवारी सिंगारी । इश्क बादशाह कूँ एक बेटी है, भीत मकबूल<sup>१</sup> भीत खुश-अमूल<sup>२</sup> भीत खुश-रग, भीत खुश-ढग । नूर में सूर नै उसके सम, नाजुक नरम, जो फल जो अवरेशम<sup>३</sup> । अँगियाँ कू घेरें अंगर करनाँ, सुध छोड दीवाना होकर फिरना । (वैत)

घर मे हँसते निकले अँगन मने फूलाँ झडे ।

आशिक ही कर चाँद और सृग्ज दरवाजे पर आकर पडे ।\*

नाँव उसका हुस्न, किने बोलूँ उसके गुन । कौहकाफके उधर एक शहर है । उस शहर में एक वाग है, कि उस वागकूँ बहिश्त<sup>४</sup> उस वाग रदक ते दाग है । उसके फूल देगते जीव आवे, उस वागकूँ बहिश्त भो क्यो तद्रीह दिया जावे । सेहन उसका मोतिया सो भर्या, जा तारियाँ सो गगन, बहिश्त उसके एक वाग के कोने का चमन । जिस दिलखा शहर में यो दिलाराम वाग है । उस शहर का नाँव दीदार<sup>५</sup> उस दिलाराम वाग का लकव रखसार<sup>६</sup> । इस वाग में एक चश्मा है । उस चश्मे का नाँव घन, मनमोहन जगजीवन । भौनेज मीठा जो नवात<sup>७</sup>, इस चश्मे है तूँ भँगता सो आवेहयात, उसका सिंगार, जिस पर झुल्या सब ससार । इश्क की बेटी भीत नाज मो, भीत साज सो, लटकती, ठमकती, झलकती, झमकती रखसार की फुलवाली में नाज<sup>८</sup>, गजमा<sup>९</sup>, इश्वा<sup>१०</sup>, अदा<sup>११</sup>, हरकत<sup>१२</sup> दिलरवाई<sup>१३</sup>, खुशनुमाई<sup>१४</sup>, लताफत<sup>१५</sup> ऐसियाँ चाँद जैसिया सुधड सहेलियाँ सो मिल-मिल, ऐसियाँ रगीलियाँ, छरीलियाँ मिल-मिल दायम<sup>१६</sup> तमाशे देखती फिरती । वैत—

आईँ घन चमकते आगन में । फूल फिरता है फूल के वन में ।

हिम्मत यो बात कहा, गुम हो रह्या । नजर सुन्या बेसुध हुआ, सिर धुया, दोनो हुए जेहोश । वारे बवत कूँ दोनो हुशियार हुए । दोनो खडे हुए, दोनो हैरान दोनो परेशान, एक का एक देख मु ।

हिम्मत कहा "मै कहा सो अगे आया । ऐताल मुझे मै क्या कहूँ न कहूँ तो चुप क्या रूँ । तूँ तो भीत दाना<sup>१७</sup> भीत आकिल है, बले हुशियार शहर दीदार कूँ अपडना भीत मुश्किल है । घाट में जिन्यकी मेहनत हायल<sup>१८</sup> है । अके<sup>१९</sup> एक शहर के नाँव सुबुकसार । एक देव है बादशाह उसका नाव रकीब । बले इश्क बादशाह फरमाये सो रकीब<sup>२०</sup> बरे ।

१ स्वीकृत, २ सिद्धांत, ३ उपमा ।

\* वही, पृ० ५४ ।

४ स्वर्ग, ५ दर्शन, ६ गाल, ७ फल, ८ गर्व, ९ हाव-भाव, १० भाव-भगी,

११ डग, १२ चाल, १३ मनोहारिता, १४ शोभा, १५ कोमलता, १६ सदा ।

† वही, पृ० ५५ ।

१७ चतुर, १८ व्यवधायक, १९ आगे, २० प्रतिद्वंद्वी ।

दिलरुवा शहर दीदार का निगहबान, अगयार कूँ वाँ नै देता आन, हरगिज किसी ते नै डरता। जो कोई आता उसे मना करता। . . . जो कोई आता उससों झगड़ता, कुत्ता होकर लड-लड पडत्या। जाँ ऐसा आदमी अछै नित, कुत्ता रखने की वहाँ क्या हाजत ? न भले ते डरेगा न बुरे ते डरैगा, एक रकीब हजार कुत्ते का काम करेगा। . . . तू अगर उस शहर सुबुकसारते . . . खलासी पावेगा, होर खुदा ले जावेगा, तो . . . शहर दीदार में जावेगा। याद अछो, वहाँ मेरा एक भाई है, एक माई-जाई है, क़ामत उसका नाम, इस्तक़ामत<sup>१</sup> उसका काम, दिलरुवा शहर दीदार में उसका मुक़ाम। क़बूल सूरत मदनमूरत, बुलंद-बाला, भोते च आला, दिलकु लगे, जीव कूँ ठगे, सुध छीने, बुध छीने . . . करार कूँ बेकरार करे, इन्तज़ार कूँ प्यार करै, सबूरी कूँ लूट लेवे, इज्ति-राब<sup>२</sup> कूँ कूवत देवे। . . . क़ामत मै वो एक आफ़त है, आशिकों के दिलों का ज्याफ़त<sup>३</sup> है। उस क़ामत कूँ . . . तेरी सिफ़ारिश खातिर एक किताबत<sup>४</sup> लिख देता हूँ, तेरे किस्से की हिकायत लिख देता हूँ। मेरा नाँव ले, यो किताबत उसके हाथ दे, अल्बत्ता तुझसों कुछ मुहब्बत धरैगा, मुरव्वत करेगा। . . .

### (घ) सुबुकसार में—

तूँ कहाँ का है, इस जागाँ तूँ क्यों आया ? इस शहर की बाट तूँ क्यों पाया ? तुझे कौन दिखलाया ?

नजर . . . समझाया कि यो तुरफ़ा वक्त है, काम भौत सख़्त है। यहाँ अक़ल न बिसरना, अँदेश कर कुछ काम करना। . . . रकीब रुसियाह कूँ . . . सलाम कर कलाम<sup>५</sup> कर चुप नही रह्या। क्या कि, “मै हकीम हूँ, भौत मातवर हूँ, सब हिकमत ते बा-खबर हूँ . . .। बेजान कूँ देऊँगा जान, शागिर्द है मेरा अफ़लातूँ, अरस्तू, बूअली होर लुक़मान। . . . खुदा कूँ भाया जो मुझे इस मुल्क मे लाया। अगर हिकमत पर मै ध्यान धरूँगा, तो माटी कूँ सुन्ना करूँगा। . . . बग़ैर पुट बग़ैर अग, पीतल कूँ कर दिखलाऊँगा सुन्ने ते खास।”

हिम्मत ने नज़र कूँ उस आवे-हयात का निशान दिया। . . . नजर हिम्मत कने रजा मंग कर उमँगकर भौत मुहब्बत सों . . . मशरिक<sup>६</sup> के मुल्क के उधर रुख़ किया। . . . नज़र कूँ पकड़िया उचाट, यही अपे और अपनी बाट। देश चलते-चलते तलमलते-तलमलते अपने दिलकूँ तकवा दिया, समझाया। एक देस . . . उस शहर सुबुकसार में आया। रकीब बादशाह के लोकाँ . . . देखे, कि यो आदमी इस शहर में नवा आया है, . . . जासूस है, भेदी है। चोर है आया, इस शहर का क्या माया है ? बैत—

पराये शहर में हरगिज, खुदा किसे न ले जाये।

अगर हजार भला है वी, उसकूँ कौन पतियाये\*।

. . . पकड कर जकड कर रकीब बादशाह . . . कने जने मिलकर ल्याये।

१. दृढ़ता, २. अधीरता, ३. न्योता, भोज, ४. लेख, ५. वचन, ६. पूर्व।

\* वहीं, पृ० ५८।

रकीब मुत्रे का तागिब' था। नजर के हुजूर उमके मूँ में थे। या निकाल्या वि  
“तेरे वार्ता मुन मैं रहा हूँ आम कर, ऐताल जो तूँ कहा ल्यो सुना गम' कर”।

नजर जवाब दिया कि “उम सुत्रे की तर्कीब कूँ कुछ-कुछ दारुवाँ का भीत दग्कार है,  
मजदन' उम दारुवाँ का दिलरुवा शहर दीदार है, होर गुल्दान रवमार है।”

रकीब बोल्या “अगर सुत्रा राम करना मुयस्मर है, शहर दीदार होर गुल्दान  
रवमार भी नजदीक बल्कि नजदीकतर है। खुदा कादिर' है, जो कुछ तूँ मँगता सो सत्र हाजिर  
है। हमें तुमें मिलकर जायें, जो कुछ मुस्तैदी हो शहर दीदार ल्यायें।”

उने ची कहा खूब, इने भी कहा भीत खूब, मतलब पर आया मतलूब'। त्रैत—

जवाँ एक थी दोनो का दिल जुदा था ॥

समजता हाल उनका सो खुदा था\* ॥

रकीब होर नजर दोनो मिलकर एक दिल कर शहर दीदार उधर चले।  
दिल में बोड-बपट मूँ पर दोनो भले

अगर कोई मरद या स्तिरी है।

दुनिया में सब दगावाजी भरी है ॥

वो रकीब नापाक यो नजर सीनाचाक दोनो आये, दीदियाँ कूँ दूर ते शहर दीदार  
का तमाशा देख लाये। कामत जो नजर कूँ रकीब की संगत देखा, चोरीयो उसके अहवाल  
की बात पूछ्या। नजर अपना किस्मा कामत' कूँ बोल्या, हिम्मत ने मकतूब' लिखा था, सो  
कामत के अग खोत्या। कामत उस मकतूब का मज्मून' खातिर ल्याया। कामत कूँ एक गुलाम था,  
सोमसाक उसका नाम था। उसे बोल्या कि “नजर कूँ किधर तो भी पिन्हीं” कर, जीवदान दे  
मुशिवल इमका आमान कर, कि रकीब जितना बूँडे, तो वी इमे कयो न पावे, रकीब के हाथ में  
नजर फिर न जावे ॥”

गुलाम ने नजर कूँ फस' के आमरे टिपाया, जे कोई न पावे उसका माया।  
रकीब देखता है, जो नजर नै, जिघर धूँडता वी किघर नै। रकीब गुमराह रसियाह परेशान  
फिकर में चौक्या। आखिर कुछ तदवीर नै दिमी। ला-इलाज नापुश होकर अपने शहर  
उधर फिरया। नजर रकीब के हात ते खलामी पाया, खुश होकर कामत कने आया  
रकीब वी महनत ते आम्दा" हुआ, तेरी मेहर" का मुजे आज्मूदा" हुआ। तू मुझपर लै  
शफाकत" लै प्यार किया, मुझपर तू ने उपकार किया। यो काम करने तू च सके, खुदा तुने  
सलामत रये। मुजे लग्या है शहर दीदार का हथाल, रखा दे ऐताल"। भीत जरूर है यो काम,  
जरूर है मेरा खुदा च कूँ फाम" ॥५।

१ इच्छुक, २ ठोक, ३ खान, ४ दवा, ५ शक्तिमान, ६ इच्छित।

\* वहाँ, पृ० ५९। † वही, पृ० ६२।

७ स्थिरता, ८ पत्र, ९ विषय, १० छिपा। ‡ वहाँ, पृ० ६४।

११ मनभरा, १२ मेहरबानी, १३ परीक्षित, १४ दया, १५ अभी,  
१६ समझ। ५ वहाँ, पृ० ६५।

कामत कहा... "ऐ वल्लाह, बि-स्मिल्लाह... खुदा तुझे तेरी मुराद कूँ अँपडावै, जो कुछ तू मँगता सो खुदाते पावै\* । . . ."

(ड) हुस्न के पास—

नजर<sup>१</sup> कामत सों बिदा होकर, तस्लीम<sup>२</sup> कर, सिर पर हात धर-कर, अपने ठारते हिल्या । चल्या, सो देखने उस शहर दीदार कूँ, उस रंग भरे गुल्जार कूँ । . . . बारे हजार मशक्कत सों हजार मेहनत सों शहर दीदार कूँ आया, नजर की जीव भौत खुशी पाया । उस शहर दीदार मे देख्या रुखसार, अजायब गुल्जार, मगर नवीं बहिश्त पैदा किया है परवर्दगार<sup>३</sup>, झाडॉ-डालियाँ सब फूलाँ सों बार, फूलाँ सब नादिर सब अचंबा सब औतार<sup>४</sup> । †

बैत—सिफ़त उस बाग की गर कोई सुनावे ।

अजब क्या रश्क जो जन्नत<sup>५</sup> कूँ आवे ॥

भक्कबूल<sup>६</sup> वहाँ हर फूल फूलता, पातोंपात जीव बहलाना, आशिक देख वहाँ जीव खोना, हर फूल मे लाक तिलिस्म<sup>७</sup> लाक टोना । . . . नजर कूँ ऐसी जागा परते गुजरना भौत मुश्किल हुआ । नजर खवार आवारा, कुछ नै दिसता बेचारा‡ ।

हुस्न नार औतार<sup>८</sup> खुशदीदार खुश-गुफ्तार<sup>९</sup> खुश-रफ्तार<sup>१०</sup>, दीदियाँ<sup>११</sup> का सिंगार, दिल का आधार, फूल डाली ते खूब लटकती, चलने में हंसकूँ हटकती<sup>१२</sup>, रावी<sup>१३</sup> ते मीठी बोले बात, आवाज ते कुमराँ कूँ करे शहमात<sup>१४</sup>, कँवल के फूल की फँकुड़ियाँ<sup>१५</sup> जैसे हात । चमन में फूल शरमे हुजूर<sup>१६</sup>, लाज ते आसमान पर चडे चाँद सूर । मस्त हत्ती ते मगरूर<sup>१७</sup> माती माती, किसे खातिर<sup>१८</sup> नै ल्याती, बाल जानो काले नाग, गाल जानो इश्क की आग ।

बैत—यो मोहन धन अजायब<sup>१९</sup> मोहनी है ।

सुरज उसके दरस का दरसनी है ॥

. . . उसकियाँ अँखियाँ जानो लाले, जानो शराब के प्याले । दाँतों देख मोती के दाने, घरे घर फिर कर होते दीवाने§ । . . .

सो उस दिलरुबा नार कूँ, दीदियाँ के सिंगार कूँ, चतुर चौसार कूँ, एक सहेली थी, भौत छबीली थी, रात रंगीली थी । नाँव उसका जुल्फ था, लट, साँवली निपट, रंगकूँ काली, धूँगरवाली । कामत के गुल्जार का होर शहर दीदार का तमाशा देखती थी, जो व जा देखती थी, अब व हवा देखती थी, तमाशे सों जीव लायी थी, आसाइश<sup>२०</sup> पाई थी । सो उस वक्त धूप की गरमी थी, खपनी नरमी थी, कमर के छाँव तले आई थी । एकाएक नजर पर उसकी

\* वहीं, पृ० ६६ ।

१. दृष्टि, २. नमस्कार, ३. पालनहार, ४. अनर्घ । † वहीं, पृष्ठ ६७ ।

५. स्वर्ग, ६. पसंद, ७. जादू । ‡ वहीं, पृष्ठ ६८ ।

८. सुदर्शनी, ९. सुवचनी, १०. सुगमनी, ११. दृष्टि, १२. हटाती, १३. लजाती, १४. पराजित, १५. पंखुडियाँ, १६. सामने, १७. अभिमानी, १८. दिल, १९. अद्भुत । § वहीं, पृष्ठ ६९ । २०. आराम ।

नजर पड़ी, बैठी थी, सो विचक्कर उठ पड़ी। नजर (बोली)—कूँ “तू कौन, विधर ते आया  
इम बाग की खबर तूँ क्या पाया तू परेशान मा दिमता, हैरान सा दिमता, कुछ गंवा लिया  
त्यो दिसता, किमी की चोरी की त्यो दिमता।”

दोनो हैरान दोनो सरगदान<sup>१</sup>, सक्ते नै है एकम कूँ एक पिछान। नजर की माँ थी  
हिन्दुस्तानी स्थापेशानी<sup>२</sup>, बाप या तुर्किस्तानी। लट (जुल्फ) सो लटपट होकर यार निपट  
होकर आशनाई व हम्दाहरी<sup>३</sup> का इन्तजार किया।

इम वक्न वारे अपनी दस्तगारी कूँ ठार, जीव लगातर वालेवाल, बोल्या उमने अहवाल  
कि या लग जाकर यो पड्या हूँ, क्या कहे तदबौर नही, अड्या हूँ। लटकूँ उमकी परेशानगी  
पर उमकी हैरानगी पर मेहर<sup>४</sup> आई, उमे गत्रे लाई, कही “ए भाई, मुदा है कुछ गम  
न कर, मुश अछ अपने मुदा कूँ नको विमर<sup>५</sup>।”

यो बोल बोल लट भीत लम्बी भीत बडी वहाँते पेचाँ खाने-पाने कमर पर चडी। वहाँ  
ते वो चार तार मुट नजर कूँ कमर पर ल्याई। वही “ऐताल खुशी, विधर जाता उबर  
जा भाई।”

नजर लटकूँ भीत भली कर जान्या, भीत उमका उपकार मान्या, हिम्मत मग्या, रुक्मत  
मग्या। लटने प्यार सो अपने लट में ते चट बाट कर थोडे दे वांछी “कै तुजे कुछ काम मुदिकल  
पटे, तो यो बाल आग पर जल, मै हाजिर हूँगी उम ठार, पेलाड<sup>६</sup> नाम बरखहार परबदिंगार।  
डर नको, इम वक्न पर हिम्मत विमर नको।”

लट (जुल्फ) सो विदा होकर नजर वहाँते शहर दीदार के उबर चलने मबूँ बद्रम किया,  
खुश हुआ होर गम कम किया। वारे वेग च शहर दीदार में हयसार के गुलजार में आग्या।  
एकाएक वहाँ बितेक हट्याँ धच्चे नजर नजर के पडे। जितने उतने भीत मुहाने, जानो  
तिल व दाने, हए एक जानो शराप के बुन्द। नजर पूछ्या कि “तुमें कौन है, क्या नाम  
घरते है, क्या काम करते है?”

उना बोल कि, “हुस्न नार, आलम के दिलो का अघार ह्दश होग जगवारते भीत  
मगाय य। तो एक तिल घरती है। वह तिल आफन है, बला है, आशिकाँ के दिलो में उमका  
गलबला है। महेर<sup>७</sup> टोने वा एक आगिकाँ पर करता जुल्म, सब आगिकाँ होने यहाँ हैरान  
होर गुम। जिम जागिर कूँ उनके मारघा वा न कँ दाद मग्या न कँ पुकारघा। भीत छनीला  
बटा हटोला (है वो तिल), हमें मव उमके गुलामाँ है, चमने-चमन पानी देते फिरते है। याड,  
व पात, फग यहा का है हमारे ह्वाले, यो फल झाडाँ मव पानी देते हमी पाले।”

नजर कूँ एक भाई था भीत मुशफार्म<sup>८</sup> गमजा उसका नाम। न्हाणपन ते च जुदा पड्या  
था, ऐमा कुछ किस्मा खड्या था। आगिर हुस्न की खिदमत उमे रोजी हुई। बजारा<sup>९</sup> या

१ परेशाँ, २ एका एक, ३ काले ललाटवाली, ४ एक नगर का निवासी,  
खुशेशवासी, ५ दया। \* पृ० ७०। † पृ० ७१। ६ प्रथम। ‡ पृ० ७२। § पृ० ७४।

७ जाहू, ८ सुरग, ९ सयोग।

हुआ, जिस वक्त कि नजर रुखसार के गुलजार का नजारा करता था, . . गमजा नरगिसजार में . . मस्त फिरता था, . . . सब ठार नज़र करता था। नज़र कूँ नजर सों देखा। गमजा नै पिछान्या, कोई वेगा है कर जान्या। हडबडा उठ्या। अपना लहो आपे घट्या, उस घर उचाया कि “तू कौन है इस बाग में आया ?” गमजा मस्त गुस्से सों हमदस्त नज़र कूँ मारने के खातिर नज़र की अँखियाँ बाँध्या, तन पर के कपडे उतारचा। मँगता था कि मारे, वले नै मारया, कुछ दिल में विचारचा। न्हानपन में नज़र होर गमजे की माँ ने कुछ फिक्र की थी, दोनों को लाल दी थी बाजू कूँ बाँदने मेहर . . . मुहब्बत सों नाँधने। . . . गमजे ने नज़र के बाजू का वो लाल पिछान्या, कि “यो तो अपना भाई है . . . अपस में होर इसमें क्या जुदाई है।” भौत रोया गले लगाया। . . . बोल्या, यो किससा किसे होगा फ़ाम, खुदा के ऐसे है काम ? भौत इज्जत सों भौत हुर्मत सों गमजे ने नज़र कूँ अपने घर लेकर गया, दिलासा दिया। जो तवाज़ा<sup>१</sup> करना था त्यों तवाज़ा किया। . . .

हुस्न नार गुल-अज़ार<sup>२</sup> ने, अँखियाँ के सिंगारने, दिल के आधार ने, सुनी कि गमजे का भाई जो न्हनपनते बिछुड्या था, सो मिल्या, गमजे के दिल का गुंचा जों फ़ूल खिल्या। . . . हुस्न नार चतुर चौसार, साहेब-सूरत<sup>३</sup>, साहेब-दीदार<sup>४</sup> दूसरे देस गमजे कूँ बुलाई, कही . . . “मैं सुनी हूँ कि भौत देसाँ बिछुड्या था सो मिल्या है तेरा भाई। क्या नाम धरता है। क्या काम करता है ?”

गमजा बोल्या कि—“मेरे भाई का नाँव नजर, अजब मर्द है बाखबर।”

बोली कि, “क्या हुनर जानता है ?”

बोल्या कि, “लाल, मानिक, हीरे, रतन, खूब पिछानता है\*।”

हुस्न नार दिल-परवार<sup>५</sup> दिलदार जीव के आधार पास बड़े मोल का भौत तोल का अजब एक जवाहर था, कि किसी बादशाह के खजाने में वैसा जवाहर न था। . . . बोली कि “मेरे दिल में भौत देसाँ में यो था। खबर लेती थी जा-ब-जा कि कोई मर्द खास पैदा होये, कि जवाहर कूँ जाने, जवाहर की क़दर पिछाने।” . . .

यो बात हुये पछीं गमजे ने नजर कूँ दुसरे देस हुस्न के हुज़ूर लाया। नजर आया, नज़र का रविश हुस्न में भौत भाया। नजर की नजर हुस्न पर पड़ी, हुस्न की नजर नजर पर पड़ी। सलाम-अलैक, अलैक-सलाम, ज्यों दुनिया की रविश था, त्यों चला दुनिया का कामाँ। वैत—

चतुर था गया वेग मजलिस कूँ काम।

रिझाकर लेना दिल चतुर का है काम‡॥

१. सन्मान।

२. गाल, ३. शोभावान्, ४. दर्शनीय।

\* वहीं, पृष्ठ ७३।

५. हृदयपोषक।

† वहीं, पृष्ठ ७४।

‡ वहीं, पृष्ठ ७४।

६



हुस्न धन मनमोहन जग-जीवन इल्म की जा जो वूसी वात, नजर त्यो-न्या एक-एक वात कूं बहा सौ-सौ घात । छवीली नार रगीली मेह्रकार<sup>१</sup> वो वात मुन हुई शहमात<sup>१</sup> । हुस्न की वात से दुसिया का दुग जावे, मूं देखते दिल में ह, मामूरत है । खजानेदार वी बेग च धाया । जो सूरत हुस्न धन मनमोहन मगी मो लेकर आया, दिगलाया । नजर की जो उम मूरत परनजर पडी, हैरान हुआ । बह्या—मनहरन मूरत यो आशनाई<sup>१</sup> की सूरत मुझे भौन भाई, बले या सूरत यहाँ क्यों आई ? यो पाक सूरत औतार मूरत शाम के पादशाह की है, आलम तमाम ब वादशाह की है । इस सूरत के माहेब का नाँव दिल । नजर जगा के पदे गोन्या, छिपिया वार्ता बोल्या । हुस्न यो स्वाद-भगिया वार्ता मुन कुछ फिकर दिल पर ल्यायी, दिल पिघलाई आशिक हुई, दिल परते उड गई हुई ।\*

वैत—हुस्न पर दिल भूल्या दिल हुस्न ऊपर ।

पड्या अब काम मुदिकल हुस्न ऊपर ॥†

हुस्न कूं दिल का लग्या न्यान, दिल हुस्न का हुआ परान । ‡

गजल—महेली यार विछुड्या है मुझे वो याद आता है ।

बिसर नै सकनी एक तिल म्याने वो सौ वार याद आता ॥

जहाँ मैं देखती हूँ वहाँ मुझे उमका च मूं दिसता ।

वही बसना है दिल में वो च ठारे ठार याद आता ॥

खाना नै भाता, पानी नै भाता, दिल का यातिर हुस्न की जीव जाता ।

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन दिठ खात्री । दिल पर जो आशिक हुई थी, सो कह कर "मुझे दिल पर आशिक किया है, त्या च ऐताल उमके मिलने की वी फिकर । खुदा तुझे फुमत दिया है । मुझे दिल पर आशिक करने तुझे आता, दिलकूं मुझपर आशिक किया, तो तेरा क्या जाता ? ज कोई चतुर ह जे कोई मुजान है, मो तुजे पहिचानता है । तू यो किया, मा वो वी करने जानता है ।

नजर बाल्या × — "ऐ हुस्न जगजीवन मनहरन, मनमोहन जीवा वी प्यारी दिला कूं आराम देनहारी । दिल लेना हात भौत कना मुश्किल है । दिल वादशाह, दिल आप भाता, दिठमो दिल मिले वगैर दिल हात नै आता । दिल तो मिठे, जो दिल कूं दिल मिला जाने, ज कई दिल मो दिल मिलाव दिल कूं पिछानै । ऐ वन की प्यारी, ऐ नादिर सुदरी, ऐ दुनिया के मरग की अपछरी, ग गुनवन्ती गुनभरी, तूं दिल लाई है, तुझे भौत हवम आई है । तू हुस्न, तुजे दिल सो दिल खाना सुहाता है, दिल कूं भी हुस्न भौत भाता है । बले मैं क्यों कर तुजे दिल सो मिलाऊँ ? मैं दिल कूं क्यों तरे कने ल्याऊँ । मैं तुजे क्यों दिखलाऊँ ? एकाएक क्यों ल्याया जात है ? क्यों मिलाया जाता है ? दिलकें तरे कने ल्याना है, सो खूने-जिगर खाना है, एक पाद-

१ जादुगर, २ पराजित, ३ मित्रता ।

\* वहाँ, पृष्ठ ७५ ।

† वहाँ, पृष्ठ ७५ ।

‡ वहाँ, पृष्ठ ७६ ।

× वहाँ, पृष्ठ ७९ ।

शाही कूँ उलटाना है, एक पादशाही मे खलल भाना है । . . . खतर है, जिव का डर है । अकल पादशाह जो दिल बादशाह साहेबसिपाह का बाप, उन्ने दिलपादशाह कूँ तनके कोट में असीर<sup>१</sup> किया है, कै ना जावे कर तदवीर किया है । न किधर जान देता, न किधर आन देता, कि दिल आशिक है, . . . क्या जाने क्या करेगा ? . . . (दिल) उस बाप के हुकम में गिरिफ्तार है, अपने भाते मे नहीं बे-इस्तिहार है । दिल हजार-हजार जागा फिरने कूँ तिलमिलता, वले वो बाप है । क्या करेगा, बाप सों कुछ नही चलता । माँ-बाप मजाजी खुदा, उनों के हुकम सों क्यों होना जुदा । उनों दुनिया में ले आये, उनों परवरिश किये, उनों बढ़ाये । उनों सों बेअदबी<sup>२</sup> क्यों करचा जावे ? बड़ा मक्का बड़ा मदीना सो मा-बाप । सुबा उठ उनों का मूँ देखे तो झड़ते सब पाप । अगर खिदमत में अपना जनम खोयेगा, तो वी मा-बाप का उतराई कोई क्या होयेगा । . . .

आज वरसाँ हुये । . . दिल कूँ आबे-हयात<sup>३</sup> की प्यास लगी है, प्यास पकड़्या है . . . बहुत आस लगी है । . . अगर कोई तूँ नजदीक का आदमी देवैगी मेरी संघात, होर वो आबे-हयातकों है, सो बोलेगी बात, तो मै जाकर समझाकर दिलकूँ तिल<sup>४</sup> मे राम<sup>५</sup> कर्हूँगा, तेरी खातिर यो काम कर्हूँगा, तेरा वी काम होता है, उसे वी आराम होता, मेरा वी नाम होता है . . . ।

हुस्न घन मनमोहन जगजीवन एक गुलाम धरती थी, कि वो एक पल में मश्रिक<sup>६</sup> होर मगरिव<sup>७</sup> में फिर आवे, आसमान, जमीन, अर्शा कुर्सी की खबर ल्यावे । वेगी में भीत मशहूर, शरम हुजूर, सूरतनवीसी<sup>८</sup> के काम में तमाम ख्याल उसका नाम, चतुर चौसार, हुस्न का आईनादार, हर एक काम मे उसका आड था ।

वारे हुस्न घन मनमोहन के एक याकूत की अंगुशतरी थी । उस आबेहयात के चश्मे पर मुहर कड़ी थी । हुस्न हूर<sup>९</sup> ने अँखिया के नूर ने दिल कूँ बुलाने खातिर वो अंगुशतरी दे ख्याल होर नज़र के हात अपने जिव की जो कुछ थी सो बोली बात कि, “आबे-हयात का यह मुहर निशान है । लेकर जाओ दिखलाओ होर दिल कूँ मुझ लग ज्यों-त्यों लेकर आओ\* ।”

हुस्न यों मँगती है जो दिल कूँ बुलाया ।

दिल भोला भूल्या सो क्यों न आया ॥

ख्याल होर नजर हुस्न कनेते रज़ा लेकर दुआ देकर तन के शहर कूँ चले । . . . केतेके देसाँ कूँ चलते-चलते शहर में आये । दिल पादशाह का दीदार पाये । नजर खुशखबर ल्या तस्लीम<sup>१०</sup> कर गुजरचा । सो क्रिस्सा वयान किया । हाल हकीक़ च जो कुछ था, सो सब अयाँ<sup>११</sup> किया । . . . दिल नज़र कूँ अपने हमराज<sup>१२</sup> किया, भीत सरफ़राज<sup>१३</sup> किया, हज़ार-हज़ार शाबाश दिया, गले लाया । कह्या—“मर्दा जो है सो हिम्मत करते है, ज्यों बोलते है त्यों च करते है । . . . दिल रो-रो कर हँस-हँस कर यो च बात पूछ्या, केता वक्त लग योंच फिर-फिर कर योंच बात

१. कैदी, २. असम्मान, ३. जीवन, ४. पल, ५. आराम, ६. पूर्व, ७. पश्चिम, ८. चित्रकारी, ९. अप्सरा । \* वहीं, पृष्ठ ९७ । १०. सलाम, ११. प्रकट, १२. रहस्यज्ञ, १३. सुभागा ।

पूछ्या। उसका बस होय तो सारा देस सारी रात पूछता अछै यो बात। चाखी सो जानके नही चाख्या सो क्या पिछानै।

आखिर स्थाल होर नजर दोनो मिलकर एक दिल कर वो याकूत की अगुस्तरी का निशान कि उम परी ने उन हर कने आली' इस्वी ने, उन गुनवन्ती गुनभरी ने दी थी, सा दिल के हाथ में दिये, सिद्धमत मुजरा<sup>१</sup> किये। दिल वो अँगूठी देख चूम-चाट सिर चढाया। नजर ने जीव के जिगर ने बोल्या कि—“ऐ दिल बादशाह ऐती मशकत ऐती मेहनत मै इम खातिर किया कि तू पिछाने तू मुझे माने। मेरा था सो मै किया, ऐताल तेरा तू जाने\*।

दिल पादशाह ने बोल्या कि, “ऐ नजर जो कुछ बोलता है, सो खूब बोलता है। मै बी जानता हूँ, ज्यो तेरा मँगता है दिल, वा च तेरी मुराद होयेगी हामिल। माल क्या तुजते ज्यास्त है। माल खच करने कूँ है न कि साली सन्दूक में भरने कूँ है। मदं वो जो खुदा दिया मो माल अपे सरचे, अपना नाँव जगावे, न कि यो माल छोड जावे। दुनिया दो देस का मेहमान ठीक पिछान, नाँव कर ले, कुछ काम कर ले।”

दिल के दिल में भरी थी आस, उम याकूत की अगुस्तरी<sup>१</sup> ते आने लगी आवेहयात की वाम। दिल के दिल में जीव आया, टपाल कूँ नजदीक बुलाया। पूछा कि—“तू क्या काम करता है? क्या हुनर धरता है? ”

स्थाल बोल्या कि—“मै नक्काश हूँ सूरतनबीस मेरा नाव है, विचित्र हूँ चित्र चित्तेरना मंग काम है। ऐसा चित्र चितरूँ, जो देखे सुघ न रहे, जो कोई देखे सो शाबाश कहे।”

दिल कह्या “क्या चितरता सो चितर, देंव तेरा हुनर।”

स्थाल खुश-हाल होकर हात में ल कलम उमी दम मनमोहन की सूरत, जगजीवन की सूरत, हुस्न घन की सूरत लिखकर दिखलाया। दिल एते च उस हुस्न की अजायब सूरत पर, मनहर मरत पर आशिक हुआ वो नकश भाया। उस नकश कूँ जिव लाया, सुघ खोया, आहनाले भरने लग्या, दीवानी-दीवानी चालें करने लग्या। अकल सुट्या, कुछ था सो कुछ हुआ। “हुस्न हुस्न” यो च लगी थी उसकी धुन१।

आखिर टपाल नजर मो विचार कर दिल शहर दीदार सो अजम<sup>२</sup> किया। उस वक्त दिल पाम एक बजौर था, वहम उसका नाम, भरम उसका काम। उनने सुन्या कि दिल एताल जाता है, आप दिल भाता है। स्थाल होर नजर की बात कूँ लगेगा, तो क्या हमारे हातकू लगेगा। भौत च पकड्या है इज्तराब<sup>३</sup>, आखिर मुल्क सब करे खराब। पर्वा नही करता ताज होर तख्त का, क्या जाने क्या लिखा है वरन वा। बंग-ब्रेग वो अकल पादशाह कने जाकर जिव लाकर उन चोरने उन हरामखोर ने चाडी<sup>४</sup> खाया, पछाडी खाया, अँखियाँ में पानी ल्याया, सब खोलकर बह्या था, सो ऐताल आया है, फितना<sup>५</sup> उचाया है। इश्क पादशाह की बादशाही में ते एक घर-घरालू दगावाञ्च स्थाल नाम नक्काश कूँ सघात ल्याया है। यो दोना जने मिलकर मँगते हैं, जो

१ बडी, २ उपस्थिति। \* वहाँ, पृष्ठ ९८।

† वहाँ, पृ० ९९।

३ अगुठी। ‡ वहाँ, पृ० १००।

§ वहाँ, पृ० १०१। ४ सकल्प, ५ अधीरता, ६ झुगली, ७ सकट।

दिल कू दीदार के शहर के उधर ले जावें, इस भरे शहर मे कुछ फ़ितना उचावें, तन के मुल्क कू खराब करें, एक बला ल्यावें। . . . वेगे च कुछ इसकी तदबीर कर, जो करना है सो कर आज कुछ भला बुरा हुआ तो पछी क्या इलाज, नहीं तो वही च **मरहठी** मसल होता "बहुत झेला झेला झेला, बैल के लापरुकी जहून पा केला।" . . . मै कता हूँ तुजे, तू तो अक़ल है, वले मुझे यों दिसता कि आखर कुछ खलल है। यो नज़र का आना जाना, यो **ख्याल** कू संगत ल्याना, यों दिल कू फ़ुसलाना हो यो जमाना। खुदा ख़ैर करे, किसी सों न बैर करे। . . . ऐ अक़ल बादशाह, मेरी बात जान पिछान, कि इश्क़ बादशाह आखिर तुझसों लडैगा। तुझमें होर इश्क़ में कुछ क्रिस्सा खडैगा, काम मुश्किल पडैगा। तू राजोट कर इश्क़ सों सुलह किया है, इश्क़ ने तुझे भाग-भरोसा दिया है। . . . पादशाहाँ में यों बी एक जिनस का मकर अच्छता है। इस शक्कर में जहर अच्छता है। . . . खुदा करे जो यो क़ौलो-करार अच्छो, उसका यों च प्यार अच्छो, यों च दोस्त अच्छो। नामुराद क्या मँगता है . . . मुराद। अड्या क्या मँगता है . . . हमदाद। . . . बकौल **अहले-हिन्द** प्यासा क्या मँगता . . . पानी। . . . बोले नै . . . ज्यों शराब का असर, त्यों बादशाह का प्यार, ऐसे प्यार कू क्या एतवार, तिल ते उतरे तिल मे चढ़े। . . . ऐसे प्यार कू क्या पतियाना ? . . .

नफ़र<sup>१</sup> क्या मँगता . . . साहेब का फ़तेह होय तो मुराद कू अँपडे नफ़र। . . . साहेब वही च जिसे साहेबी करनी आये, नफ़र वही जो कर जानता है नफ़राई। राम जैसा साहेब आपे, तो हनुमंत जैसा नफ़र पैदा होय, दरिया होकर बैठे कोई तो वहाँ आपे गौहर<sup>२</sup> पैदा होय। . . . इश्क़ पादशाह सों सुलह-सलाह किये हूँ कर बी गमना अच्छना हरचन्द भाग-भरोसा किये है कर बेगम ना अच्छना। . . .

अक़ल पादशाह ने यो सब सुन **वहम** कू गले लगाया, वहम का अँदेशा भौत भाया। क्या . . . "शाबाश वहम, तेरा बहुत खूब है फ़हम। तेरी फ़िक्र मेरे खातिर आई। तुझे हम<sup>३</sup> वज़ीरी देना हम पेशवाई<sup>४</sup>। . . .

अक़ल ने वहम क्या सो बातों . . . दिल मे लाया। फ़िलहाल लश्कर भेजकर दिलकू होर नज़र कू बन्द करने फ़र्माया। . . . वहम की बातों का असर चड्या, जो कुछ वहम क्या था, सो उसका मां के ख्याल में पड्या। . . . जो काम पकडे भी घट पकडना, खूब डट पकडना, मर्द दानाई का हट पकडना\*। . . .

वो याक़ूत की अंगुशतरी जो दिल ने हुस्न धन मनमोहन ते आशिक़ हो लिया था, वो अंगुशतरी कुछ मस्लहत देख नज़र कू दिया था। . . . जो कोई वो अँगूठी मूँ मे रखे, तो किसी के नज़र ना पड़े। होर दुसरी खासियत उसमे यो थी, कि जो कोई वो अँगूठी रखे अपने सघात, उसकी नजर तले दिसो चश्मा आवेहयात। नजर वो अँगूठी मूँ में लेकर सबकी नजराँ को दगा देकर हँसता-खेलता उस अक़ल पादशाह के बन्द में ते भार आया, ख्याल का वहाँ च ख्याल आया। . . . देखने उस हुस्न नार कू दीदियाँके सिंगार कू, दिल के आधार कू शहर दीदार कू जाने-अख्तियार कू, पाँव सार हुआ। नज़र . . . वेगेच शहर दीदार मे रुख़सार के गुलज़ार में आया। सैर करते चश्मा . . . जिसे आवेहयात कहते हैं, सो उस रुख़सार के गुलज़ार में पाया। नज़र लालची लालच

१. सेवक, २. मोती, ३. भी, ४. महामंत्रित्व। \*वहीं, पृष्ठ ११६।

भरघा। ज्यो आवेहयात पीवने कूं मूं पमारघा, अपना पत हारघा चोरी किया। बज्रा उम वक्त यो घडी, कि वो अंगूठी मूं में ते निकल उस आवेहयात के चरमे में पडी। दगा दवा कर बहुत पछताकर हैफी खाने लगा। लै तरस्या लै तप्या, आवेहयात का चरमा नजर तले ते छिप्या। नजर हैरान डेवाडोल, किमे कहे ग्योल, मूं में ते भार फद\*—

गैवा लिया चतूं अब क्या गमाते पचतावे।

यो वस्तु वो नही जो गई मो हात फिर आवै ॥†

नजर निडाल, नजर का यो हाल। एकाएक रकीब कैं देख्या। सो नजर कें लग्या 'वाल' पकडघा-जकडघा, आजार' दिया मार दिया, दद सारघा जाल्या, अपने घर ले जाकर वदीखाने में घाल्या'। वक्त देम यो च टाल्या। नजर का कोई दस्तगीर' नही, कुछ तदबीर नही। यकायक एक रात जुल्फ (लट) ने जो अपने उस देम वालां दिये थे, उमके हात, वक्त पर याद अछो', सो उम वक्त वो वक्त याद आया। फिल्हाल एक दो बाल लेकर बेग-बेग आग पर जलाया। तो का तो य च देसता है, जो जुल्फ हाजिर हो आई। पूछी कि—“क्या हाल है रे माई? ”

“क्या पूछेंगी मेरा हाल, क्या बोलूं ऐताल?”

जुल्फ कही “गम नको” कर, हिम्मत कम नको वर। चलता मो च अडता' चहता मो च पडता, होआर का खेल जो आग सो है, तो एकादे वक्त जलता बी है। गगा की धूपकाले में न्हनी, वर्षकाले में बडी, जगल का झाड उमे कधी फूल-फल कधी पतझडी। मद वो जो अपने वक्त करे' बुल वक्त, अवुलवक्त' अछे', न (कि) इन्नुल्-वक्त'। मद कधी फूलते नाजुक कधी फौलादते सस्त अछना, हर एक जा हिम्मत सो रहने मर्दे बु वस्त अछना'। जिसमें कुछ नेम है, जिसमें कुछ धरम, ज्यो सुना जैसा व मस्त बैसा च नग्म। दोहरा

मेऊ मतत न छोडिये, मत छोड पत जाय।

लछमी मतकी दामि है, पग लागै घर आयइ ॥

वारे जुल्फ ने धम करी बहुत करम करी। उस वदीखाने में ते बुच फद कर भार काडी, उस रकीब कूं उम बदवस्त-वदनसीव कूं पचतावे में पाडी। नजर कू गले लाई, खसार के गुल्जार होर शहर बीदार की बाट दिखलाई। कही—“एताल जा, अपना मुद्आ पा।” वैत—

मुरव्वत मौत की चोटी की जाई।

बलाते भार काडी बाट दिखलाई ॥

१ पद्य। \* वहीँ, पृ० ११७।

† वहीँ, पृ० ११८। २ साथ, ३ कष्ट, ४ डाला, ५ सहायक, ६ रहो, ७ नहीं, ८ थकता, ९ समय को बनावे, १० समय का पिता, ११ रहे, १२ समय का पुत्र, १३ रहना।

‡ वहीँ, पृ० १२२।

§ वहीँ, पृ० १२२।

नजर जुल्फ़ सों विदा होकर चल्या । सो दीदार के शहर मे रखसार के गुलजार मे आया । हुस्न धनका मनमोहन का जगजीवन का मुलाकात पाया । घड़ी एक सास भर्या धरी उसास । गुजर्या था, सो क्रिस्ता कह्या हुस्न छंदभरी औतार स्त्री पास । हुस्न नार कूँ . . . हैरानगी लगी, परेशानगी लगी, कि मै जानती थी कि दिल ज्यों त्यों आवेगा, दीदार दिखलावेगा, मेरा दिल दिल ते आराम पावेगा । यों नही जानी थी कि, कि यो क्रिस्ता यों खड़ंगा, भी ऐसा वक्त पड़ेगा ।

हुस्न दिल मे ल्यायी, अपने गमजे कूँ नज्दीक बुल्याई, जो बात थी, उसे समझाई ।

. . . कही—“एताल’ इसका इलाज यो है, कि तूँ होर नजर दोनों मिलकर एक दिलकर तन के शहर कू जाओ, होर दिलकूँ कुछ तदवीर कर, तसखीर<sup>३</sup> कर, कुछ फ़न कर सेहर-टोना-टामन कर ज्यों त्यों मुझ लग ल्याओ\* ।” फ़र्द—

वार न लगसी दिल कूँ आने कूँ ।

गमजे कूँ भेजी है बुलाने कूँ ॥

### (च) दीदार नगर पर आक्रमण—

. . . गमजा होर नजर लोगां चुने-चुने जले-जले भुने-भुने अपनी सघात लेकर शहर दीदार ते तन के शहर के ऊपर रख धरे । यों चले सौ मंजिल की एक मंजिल करे । . . . नजर जिस वक्त अक़ल के मंदिर में ते भार आया था, अक़ल तोय भेद पाया था कि नजर यहाँ ते जो जावेगा अल्बत्ता कुछ फ़ितना उचावेगा । . . . उसने यों समजकर लिख्या था, अपने सरहद के सरदारों कूँ कि चारों तरफ़ के मुस्तैद रखो बहादुराँ कूँ । इस नजर कूँ इस निडर कूँ इस मुल्क मे ते भार जान नको देओ, होशियार अँछो । . . .

जहद<sup>१</sup> व रिया<sup>२</sup> का नोकर था एक मुकाम होर रिज्क<sup>३</sup> (जर्क) का एक बेटा था, तोबा उसका नाम, उसे फ़रमाया था, यो च काम, कि नजर कूँ सँभाल कि सरहद ते भार न जावे । . . . वारे क़जा यों होता है, जो गमजा होर नजर दोनों . . . उस डूंगर तले आये । उस डूंगर तलें एक फूलवाड़ी थी । उस फूलवाड़ी में खड़े आसाइश पाये । जागा भौत भाई, रात के जागे थे, टुक नीद आईं । . . .

कितेक वक्त कूँ सूरज ने सिर काड्या, आसमान का पर्दा फाड्या, उजाला संचर्या ठारे-ठार रोशन हुआ सब संसार । अजहुँ देस<sup>४</sup> चड्या नहीं पाव घड़ी, जो सुबा पड़ी, उस किला के दीदवान ते देख्या . . . कि नजर निडर बेजिगर सघात लशकर लेकर यहाँ उतर्या है । हैराँ हुआ, कधी नहीं सो यो क्या हुआ, वेग-वेग तोबा कने आकर समजाकर नजर कूँ ज्यों लशकर सो डूंगर तले देख्या था, त्यों कह्या । तोबा कूँ उस वक्त बहुत गुस्सा आया, चुप नहीं रह्या, नजर होर गमजे पर जाकर पड्या । नजर होर गमजा दोनों अपने लोकाँ सों एकाएक नीद मेंते हुए

१. अभी, २. जय । \* वहीं, पृ० १४३ ।

३. पवित्राचार, ४. दिखावट, ५. रोजी । † वहीं, पृ० १२३, १२४ ।

६. दिवस, दिन ।

भजते उठे हक्का-बक्का हुये, लडते-पडते उठे । नजर होर गमजा दोनों मस्त दोनो वी  
दिलावर दोनो तोवा कूँ हवार किये, घडी में झगडा हुआ फ़नेह । बँत—

गमजा है अपनी बात सुने तो छोडेगा ।

गमजा हजार तोवा कूँ एक तल में तोडेगा ॥

तोवा का लश्कर न्हाट्या, तोवा का सीना फाट्या ।

केता गमजे की राबें मार तोवा ।

बेचारा क्या करे उम ठार तोवा ॥

तोवा का कोट लूटे तोवा कूँ नंगाये, तोवा के मिर पर हजार-हजार बलायाँ ल्याये ।  
तोवा कूँ मुश्किल पड्या सस्त, तोवा कूँ तोवा करने कन अग्या वक्त । तोबा पैमाल हुआ ।\*

पछी रिस्क का जो वहाँ सोमआ था, उमे भी तोडे, झगडा न जीते वो जागा भी छोडे ।  
वहाँ ते आफियत शहरकूँ जाने अँगे रखे कदम । गमजा होर नजर अपना लिवास फिराकर कल-  
दरी पकडे रमम । आफियत के शहर में आकर बात किये, नामूस<sup>१</sup> पादशाह सो मुलाकात  
किये । नामूम पादशाह आगिकमिफत माहेब-हिम्मत था, गल्या था, तिलमिल्या था ।  
नामूम पादशाह उनोकूँ देखते च माल-मुल्क सब छोड्या, कुछ लोड्या कलदर हुआ, समुदर हुआ,  
फवीर हुआ, अमीर हुआ । गमजे के हात में भँपड्या । नामूमवा यो हाल हुआ, नामूस  
पायमाल हुआ ।

बादअजाँ<sup>२</sup> नजर होर गमजा शहर तन के उघर चले । जो शहर तनके नज्दीक  
अँपडे भी अपना लिवास फिगये-बदलाये, फिर कर पँने कपडे । गमजा शराब पिया था आया  
कैफी अपने लश्कर पर पड फूँका । उम दुआ में था बहुत असर, हरिना की सूत पकड्या मव  
लशकर ।†

जिम वक्त तोवा गमजे के लश्कर ते शिकस्त खाया, सो तन के शहर के उघर खाना  
होकर कने आया । तस्लीम किया, खिदमत वजा लाया । गमजे ते जो कुछ वेददी<sup>३</sup> हुई थी, सी  
मव व्यान किया, अकल कूँ परेशान किया । हैरान किया । , अकल जैसा पादशाह गमजे  
वी यो वेददी सुनकर बहुत वेग दिलकूँ तलब कर्या । जितना सई करना था उतना सब कर्या,  
दिल के हातपाँवा के बँदा वाँब्या था, मो खोल्या, गमजे की वेदादी<sup>३</sup> का किस्सा बोल्या . यो  
गमजा है, यो दगावाजाँ हँ, इनो सो जीव लानकर इतोकूँ पतियानकर पचतावेंगे, दगा खावेंगे ।  
अगर इतने पर भी तरे दिलपर आता च है, कि शहर बीवार कूँ जानाँ च है, होर हुस्न घन मनमोहन  
का वसाल पानाँ च, उसे गले लानाँ च (हँ) . तो एक बात मेरी सुन, इस बात में बहुत गुन ।  
हमारा लडता सी लश्कर, दुश्मन पर पडता सो लश्कर, तनके मुल्क में ते अपनी सघात ते होर

\* वहाँ, पृ० १२८ । १ सम्मान, २. इसके बाद ।

† वहाँ, पृ० १२८ । ३ अन्याय, ४ मिलन ।

शहर दीदार के उधर डेरा दे। . . . अकेले जाना, बहुत जवान है, . . . हुस्न धन मनमोहन जगजीवन पास लश्कर बहुत है। . . . अगर तेरे पास भी लश्कर अच्छे तो खूब है। . . .

दिलकूँ यो बात बहुत खुश भाई, भौत भाई। बापकूँ क्या. . . "एताल मै अस्तियार अपना तेरे हात दिया, जे कुछ तू कता सो मै किया। आशिक जानबाजी हूँ, जों तू कता है, वोंच राजी हूँ। जों तूँ फरमाया है, त्यों च जाता हूँ। खुदा करता है, तो हुस्न सों मिलकर, हुस्न कूँ भी फाँदे में पाता हूँ।" आशिक वो जो माशूक<sup>१</sup> को भावे, आशिक वो जो माशूक कूँ रिझावे, अपे तिलमलाता त्यों उसे भी तिलमिलाये, जों अपे तरसता, त्यों उसे भी तरसावे। आशिक जों माशूक कूँ जपै तो खूब, माशूक भी आशिक खातिर तपे तो खूब\* ।

गवालियर के सुभाने, यों बोलते है (दोहरा) :

वरती म्याने रीज धर, बीज बिखर कर बोय ।

माली सींचै सौ घड़ा; रुत आये फल होय ॥

वारे दिल सबकूँ बुलाकर लश्कर हाज़िर करने का हुक्म दिया। लश्कर अपना सब देख्या, लश्कर की गिनती लिया। हिम्मत कर्या, सीने में उसास भर्या, शहर दीदार के बाट में पाँव की जागा सिर धर्या। एकल देख्या कि दिल तो रवाना हुआ, मेरी बात उसे बहाना हुआ। बहुत मेह, व मुहब्बत सों. . . तीन मंजिल अँपड़ाता<sup>२</sup> आया। दिलकूँ अकल दिया सँभलाया। एते मे सँघात लोगाँ कै सुद पाये, खबर लेकर आये, कि इस सेहरा, में हरना भौत है ठौरठार।†. .

लागे लागां यो वाव पर लेने।

अकल दिल दोनों कूँ दगा देने ॥‡

. . . हरिन तो है भौतेच आले, वले हरिना मे है आदमी के चाले। जंगल मे रहते, इतना च है तो बात नही कते। अजब है यो हैवान सब आदमी का धरते ज्ञान। या जिन्नाँ ने हिरनाँ का लिये लिबास, इस बातकूँ खूबी करना तफास। . . . दिल वादशाह<sup>०</sup> बात इस घात सुन बहुत पकड़्या उमस, इस तार इस ठार शिकार खेलने की आई हवस। . . . अपे नवाँ नौतेका जवान, ताजी पर सवार हो हात मे ले तीर हो कमान, हिरनाँ के पीछे घोड़ेकूँ दिया ताब, या वाव पछीं जानो दौड़ी वाव। उनोंकूँ हिरनाँ कते वो हिरनाँ न थे, गमजे का चश्म, उनोकूँ पकड़ने कौन कर सकता। . . . दिल नज्दीक आपे लगन हरगिज दूर नही जाते थे। अकल होर दिल कूँ कहोर उनोके लश्करकूँ वाटेवाट यों च खींचते ल्याते थे। दूर गये तो खड़े रहकर अपसकूँ दिखलाते, बहुत नज्दीक आये तो निकल जाते। . . .

वारे अकल पादशाह<sup>०</sup> रह्या थक्या, अकल पादशाह<sup>०</sup> कूँ बुरा लग्या। . . . फ़रजन्द जिगरगोशा, हर दो-जहाँ का तोशा, सीना फोड़्या क्यों जाता है? फ़रजन्द कूँ छोड़्या क्यों जीता

१. प्रियतमा ।

\* वहीं, पृ० १३०।

२. पहुँचता । † वहीं, पृ० १३१।

‡ वहीं, पृ० १३२।



है? मेहर सो माँ-बाप की, बाकी मेहर पुन-पाप की, दुनिया में मव मित्रोंगे तहकीक जान ना मिलनी सो मा-बाप हो गगे-भाई होर भान<sup>१</sup>।

अकल पादशाह अपना लश्कर जोड़्या, यो भी हिरनों के पछी लग्या शहर तनकू छोड़्या। दिल होर अकल दोनो हुये वयावानी दोनो कू लगी हैरानी मरगदानी\*।

वारे नजर होर गमजा जो दिल पादशाह० कू पुलाने जातेये, रयाने जाने थे,। सो दिलकू च इपर आते देख, हुस्न धन मनमोहन जगजीवन खातिर तिगमिलाता दये। कह अल्ह-मदो लिल्लाह काम पाया सरजाम, एताल फनेह हुआ काम, जिमकी खातिर हमें जाते थे मो बा च अंगे आया, खातिर हमारी तमतली पाया। एताल फिर यो हो, जो हमें दिलके बने ना जाना, अकल होर दिल हमना ना देये, त्या च इन दोनो कू शहर दीदार के नजदीक त्याना।<sup>२</sup>  
वैत—

नजर होर गमजे के चालें बला ल्याये।

कि दिल होर अकल दोनो मिल दगा गाये ॥‡

यो च चटक लाते-लाते फादे में भाते-भाते<sup>३</sup> फुमलाते, फुमलाते दीदार शहर लगन लाय, अपना काम फनेह हुआ कर बहुत सुशहाली पाये। हजार-हजार आनन्द मो लाख लाख छद सो हुस्न धन जगजीवन मनमोहन बने गय, मलाम किये, गुजर्या मो किस्मा वाले तमाम किये, सुगुरु हो आपे बहुत गवामी पाये। हुस्न धन० नजर होर गमजेकू गले लाई, कुछ बरज कुछ दई<sup>४</sup>। होर फिर अपस में किये कि अकल बडा पादशाह है, अपने लश्कर मो नज्दीक आया है। मस्लहत का काम यो दीगने, कि वापकू खबरदार बरना कि इन लश्कर कू दूर करने का कुछ इलाज करे। मक्तूब लिखकर भेजे वाप बने। मजूमन या था, उम मक्तूब मने कि “नक्काश सूब मत्र नक्काशा में अब्वल, मेरा था एक गुलाम ख्याल उसका नाम। आज पादशाह न उसे पानी न उमे खाना देता, न इपर आन देता। हमें उसे बुला भेजे बहुत गस्मा कर, (वो) अपने लश्कर मो आकर बहुत गीगा करता है। मागता है जो शहर दीदार कू इस गुल भरे गुलजार कू लेवे।

औरत की जाति कुछ झूठा कुछ मच लेकर बोरी बात “तू इस्क है तुझसो अकल क्या करना। बले अकल मकरी है, उमके मकरते बहुत डरना। तू मन्त बो होगियार, दगा देन केती बार। मन्मुय हो जाय आकर मन्मुय ह्कागे, दगो मे चिमटी हली बो मारे। दगो मो बकरी गालिब बाध पर हाये। यो बात मव खातिर त्याना, हुगियार अछना, दगा न खाना ×।

इस्क बादशाह० यो वाक्या<sup>५</sup> मुन्या, गुस्से ते मिर धुन्या।

कह्या—अकल कू वजूद क्या है, जो ऐमा काम करे, अपसकू रिसवा हमना बदनाम करे।

१ बहिन। \* वहाँ पृ० १३३। † वहाँ पृ० १३४। ‡ वहाँ पृ० १३५। २ डालते।  
× वहाँ पृ० १३६। ३ पत्र।

वारे मेहर नाम... इस्क का एक सिपहसालार था, अपने-ढंग पर हुशियार था, ... उसे फरमाया कि... मुशककत, दर्द मेहनत, गम अलस, ज़ारी, बदनामी... यो वजीर बड़े बड़े, सब हाजिर खड़े, उनोंकी जी की बात ले, उनो कूँ अपने सँघात ले... जेता लश्कर है, बाकी वजीर-सरदार जितना नर है कारगर है, यो सब यकवार शहर दीदार के उधर ले जा।\*

वारे अक़ल होर दिल के लश्कर सों टुक झगड़ा वजा, उस लश्कर कूँ बेजान कर... कि दूसरा ऐसे कामते डरे, दुसरी बार भी कोई ऐसी चाली न करे।

जो ग़मज़ा आये लड़ने कूँ अक़ल उस ठार क्या करना।

उठैगा हात क्यों उस ठार यहाँ तरवार क्या करना ॥

वैसे सुबास (खुशबूई) की बास कि दिलकूँ जलानहारी थी, दिलकूँ भौत प्यारी थी, दिल मे होर उसमें यारी थी। ... वो हुई दिल के उधरकूँ, †

नकौ डर। या बाव काँ लगते इसे किसके जख़म का उसे क्या गम...

आडे वक्त दिलकूँ मदद आई, वारे सँभाली।

काम हुआ मुश्किल, एताल हिम्मत छोड़ने में क्या हासिल। मारना या मरना, अपना नाँव करना। न्हाटे तो क्या आयेगा, न्हाटे तो क्या बँचने पावेगा। बख़्तों में लिख्या सो बँधा जावेगा या न्हाटे ते खुदा कूँ भी भावेगा। जीवकूँ कता डरना यो मर्दी का वक्त है, कुछ भी तो भी करना। जीव गया तो गया, बले शर्म न जाना, न कि जीव होर शर्म दोनों गँवाना। यों हुआ तो मर्दा में मर्द क्यों कहवाना होर लोकाँ मे भी क्या मूँ दिखलाना।...

दिल कह्या... "खूब कही एक सुबास, ... इस वक्त मुझे तेरे च आस मे भी दिल हूँ, बड़ा हूँ, कायम होकर खड़ा हूँ। क्या करूँ, इस्क होर हुस्न का लश्कर क़वी है। ... मै भी यहाँ जीवते झाड़्या हूँ, हिम्मत किया हूँ, रन-खम गाड़्या हूँ। क्यूे मे पड़कर रसरी काटना नहीं फबता, आशिक कूँ न्हाटना च नहीं फबता। दिल तो हिम्मत धरता, देखे एताल खुदा क्या करता" ‡

वारे, ओ सुबास जो दिल कने आई थी, दिलसों दिल लाई थी। उनने खूब दो-चार हमले करी। ... इस्क के लश्कर कूँ हैरान करी, परेशान करी।

चौथे देस भी यो झगड़ा... निबड़्या नही च था। ... अपस मे अपे लड़ते थे झगड़ते थे, न व न्हाटते न वो न्हाटते। एककूँ एक डराते एककूँ एक डॉठते, आटाअट था कटाकट था।

हुस्न धन० लश्करते ऐसी खबर पाई, बहुत हैफ़ीखाई... कि "आखिर खुशी है गम, इस झगड़े का क्या आलम? यो झगड़ा क्यों आखिर निबडता है? किसपर क्या वक्त पड़ता है। आखिर वो बिन पर की परी अपस मे अपे कुछ फिकर करके... ख्याल कूँ आलम के कार कूँ... वुलाई, उससों मशौरत लाई। × ...

उन ख्याल ने बौल्या कि—"ए हुस्न धन... तुझे कोहक़ाफ़ की परियों मे एक हमजाद है, तुझते हमेशा उसका दिलशाद है, ... बहुत दिलावर बहुत जोरावर, किसी ते न डरे, जाँ जावे

\* वहीं, पृ० १३७।

† वहीं, पृ० १३८।

‡ वहीं, पृ० १३९।

× वहीं, पृ० १४०।

वहाँ फतेह करे। ज कोई मैदान में मद होकर निबलता, उसके आचे च त गलता। मामने आकर कोन दे मक्ता जवाब, हटीली हटभरी, जंघुल कही मौ करी। खुश-शकल कबूल-मूरत, मन-हरनमूर्त रूप भीने च आला, जाँ बैठे बहा पडे उजाला। हूँमे तो फूल झडे, मोले तो नवात होर मोती पडे। वो यहाँ आये तो भौत भला है। उनने ऐमी जगह पर करी है घर, कि हरगिज तही पडता किसी का नजर। बहा जा कोई किमे दिसे ना, उमका निशान कोई किसे दिसे ना। उमका नाँ भी हुस्न च है।\* (फद) —

सोल कर क्या कहूँ कि कैमी है।

हुस्न की भान' हुस्न जैमी है॥

वा भी आगिवाँ पर जुल्म करती है। तुझमें क्या इशवा थोडा है, वो भी तरा च जोडा है। एक कूँ छिपाना, एक कूँ दिखलाना, नादिर है तुमें दुनियाँ में दोनो भाना। तुमें दो फूल दो तारे, दो देवे दोनो माग यमकावे, दोपरियाँ दो हर, दो चाद दो मूर, दो बाद-शाह खूनखार, दोनो साहेबनिपाह दो सखियाँ, दोनो भी दो-आलम कियाँ अखिया, दोनो दो वहिश्त या दा महदूब नादिर नारिया जीवाकियाँ प्यारिया, मव गुनमे सारियाँ। जो कोई उनो सो जीव लावे, वो हर्गिज न मरे, दोनो दो आवेहयात के झरे। अगर तूँ होर वो दोना मिलकर आते हैं, तो अल्यता उस अकन पर जफर' पाते हैं। दिलमा तो यारी है, दिलक झगडा मितारी है। वाप है कर दित्त अकल के पाम है, वले उमे भौत तेरी आम है। बिल हुस्न के गुलाम का गुलाम है, उसे लडने-झगडने मो क्या काम है। इधर दाई उयर हुआ है, उमे रेचारे कूँ भी बहुत मुश्किल हुआ है।†

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन ने बोला कि "क्या फायदा?"

वो गुलगूँ-बचन ने बोली "क्या फायदा झगडे कूँ अखाडे हैं। हुस्न होर बिल। जो मदद आये लग बहुत मुदिकल। एतारु हमें झगडे की लाफ में, वो हमजाद हमारी कोहकाफ में, दद खुरासान में दाह हिदुस्तान में।" वो दाह को आना, उम दद को जाना शाबाश तुझसा मशवर्त' करी सारी रात, तूँ मुझसो बोल्या आखिर ऐमी बात ।

ख्याल न क्या "तूँ हुस्न है, तुझमें नाजुकिया याता बहुत है। कुछ बात के पठी भी गम करना है, कुछ समझना है, पाना है दिलकूँ वेगम करना है। क्या वास्ते, कि मेरे पास एक अबर का दाना है, बहुत पुर'ना है। जिस वक्त कि मैं आग पर रखूंगा उस अबर के दाने कूँ, तो केति धार है तेरे हमजाद तूँ तरे पाम ल्याने कूँ। घडाँ में आयेगी पवनवारी, कि वो है परियो में की रहनहारी।" ×

हुस्न धा० यो बात सुन निपट फारिगवाल' हुई बहुत खुशहाल हुई। फिलहाल उस अबर के दाने कूँ आग पर जलाया, उस हुस्न के हमजाद' कूँ हाजिर कर हुस्न के

\* वहाँ, पृ० १४०।

१ बहिन, २ बिजय। † वहाँ पृ० १४१। ३ सलाह। × वहाँ पृ० १४२।

४ छट्टी, ५ बहिन।

हुजूर ल्याया। हुस्न देख हुई हैरों, यकायक यो किधरते पैदा हुई यहाँ। . . . वो नाज वो गमजो की घड़ियाँ, एक कूँ एक देख कर दोनों हँस पड़ियाँ। वारे. . . हात में ले हात दोनों सकी चकल-चकल गले लगी। वैत\*—

दो बिछड़े दो अजीजों आ मिले है।

दो गुँचे दोनों फूल होकर खिले है ॥

वात में वात अक़ल होर दिल के लश्कर का किस्सा काडा, अपने राज का पर्दा फाड़ा, . . . अपने हमदर्द पास दर्द कहा।

(हुस्न) कही—हमना होर दिल मे आशिकी<sup>१</sup> होर माशूकी<sup>२</sup> की निस्वत दरम्यान<sup>३</sup> है, दो तन है, वले दो तन कूँ एक जान है। दोहरा. . .

जे मैं कही सो उन कहा, प्रीत अहै इस घात<sup>४</sup>।

दो मनका एक मन भया, दो की एकहि वात ॥

दिल बाप के मुलाहजों सों चुप झगड़े में आता है, नही तो यो झगड़ा उसे कधों भाता है। . . .

हुस्न धन० की वात हुस्न की हमजाद सुन सब खातिर किया विचारी, कही. . . खुद है, डर नको, अकल क्या अछे बेचारी. . .

मेह जो इश्क़ का सरलश्कर<sup>५</sup> था, . . . हमजाद हुस्न ने भी अपना नाज, अपना गमजा अपना शेवाँ<sup>६</sup> अपना जाला अपना छंदवंद सब उसकी मददगारी कूँ भेजी, उसकी यारी कूँ भेजी। . . .

होर हुस्न कने भी एक हाजिब था आकिलकारी, खूब करता था कमानदारी. . . नांव उसका हलाल कमानदार, धाक उसकी ठारेठार, उस शहबाज कूँ भी हुस्न. . . “मदद कूँ जा” कही, “बेग फ़तह कर आ” कही।†

यो हलाल कमांदार. . . मेह सिपहसालार सों. . . मिलकर. . . हात मे तीर कमान लिया। इश्क़ का लश्कर बहुत वरजोर हुआ। . . . हलाल कमांदार. . . अकल के लश्कर मे जा पड्या। . . . हलाल आशिकों का काल. . . मर्दाना था, दाना था, तवाना था। अकल कूँ जाकर घट किया, तकवा<sup>७</sup> निपट किया। हुआ खुदा का लोड्या<sup>८</sup>, वले अपनी हिम्मत नही छोड्या। अकल कूँ जाकर हट किया हँकार्या। बाप के जहल ते, अपनी कूबत के बलते, ना देख सक कर इस गलगाल में. . . एकाएक दिल मियाने मे आया। सो (हलाल) ना जानकर. . . दिलकूँ तीर मार्या, दिलकूँ घोड़े पर ते उतार्या, झगड़ा बेग नहीं भँग्या। किसे मारने गया, सो मिलेग्या, जेता कोई ज्ञान धरे, कजा कूँ क्या करे? . . . अकल दिलकूँ घोड़े पर ते पड्या देख्या, . . . घबरा हुआ अकल का सीना फाट्या। अकल का लश्कर सब न्हाट्या, क्या न्हाया क्या बड़ा एक जना नहीं रह्या। . . . अकलकूँ एताल अकल आई पचताने लग्या, सिर कूट लिया मूँ मे माटी भाने

\* वहीं, पृ० १४३।

१. प्रेमी होना, २. प्रियतम होना, ३. बीच, ४. भाँति, ५. मुख्य सेनापति, ६. कर्त्तव्य।

† वहीं पृ० १४४। ७. शूद्धाचार, ८. जल्दी।

लग्या वारे, यो अकल आई पचताने हुआ, खुदा जाने किधर गायब हुआ। कोई कता शहर तनकू गया, कोई कता वाई च मे पड्या गिर, कोई कता झगडे च में मारा गया, कोई कता वाट म किमके हात उतारे गया। 'कूंचे कूंचे यो हिकायतां, हजार जने हजार वातां।'

दिल के वस्तां मे वी लिरया था, मो अँपड्या, दिल वी हुस्न के हात म सँपड्या आखिर हुस्न का फनह हुआ, जो मँगती थी (सो) हुआ। फनह का बाजा बजने लग्या, हुस्न का वाजार गज-गजने लग्या। हुस्न धन मनमोहन जगजीवन जुल्फ कू फरमाया कि, "अकल पोर पछी दौड बेग, ना सग देव ना रेग। अपने ताग सो धुये की धारा सो उसे जकडल्या, पकड ल्या।"

अकल को रमी के पाँव लगाकर जावे, तो बेचारी जुल्फ किधरते खीचकर ल्याय।

वैत —

जो जो नसीवा में था सो वो अँपड्या।

अकल न्हाट्या फकीर सपड्या ॥\*

हुस्नधन मनमोहन कू एक दाई थी, जिसका गुन उसने पाई थी। उसका नाँव नाज, बहुत चतुर चौसार बरसाज। हुस्न ने दिल के इस्क की कही बात, मशवरेत करी उस दाई के सगात, कि "दिल मेरा दीवाना, मै दिल की दीवाना। दीवाने दोनो मिले जो च दोनो की जिदगानी। वो भी बेताब मै भी बेताब, दोनो कू खड्या है इज्तराब।"

इस्क बादशाह कने० मेह सिपहसालार कू भेजे। कि हमना मे होर अकल मे ज्या निबरया, अकल नामदा की वाट न्हाट गया, सो खबर अपडवै हो इस्क क्या बता सो खबर ल्यावै, तो देखे इस्क इस बाब क्या फरमाता, उसकी खातिर कें क्या आता? बड्या की बडी अकल, न्हनियाँ की अकल मे हजार खलल। अगर जेता अकल धरेबच्चा, आखिर भौकच्चा सो कच्चा।

बडे नेक हारे बढते वाकिफ हो रहते है, बड्या कू बडे चुप नै कहते है। उनो वी कुछ देव है, बहुत काम किये है। दुनिया का भला बुरा सब फाम किये है। न्हनेतेकामाँ कू हरगिज न जासै, कौजा दगा देने जाया तो दगा ना खामै। पुस्तकार आदमी टुक अच्छता हे तजर्वाकार, मव जागा अच्छता है खबरदार। हर कोई अपनी अकल में गक है, वले तजर्वे का टुक फक है। हर कोई अपनी जागा एक सवाद पकड रहया है। वकौल अहले-खुरासान, जिनाँ कू मव मुल्क मे देते है मान। (मिस्रा) †

"कस न गोयद कि दूगे-मन तुग-अस्त"।

(कोई नही कहता, मेरा दही सट्टा है ॥)

बड्या ते टुक डरना, हर एक काम किये तो बड्याँ कू खबर करना। आखिर खूब अच्छेगा, तो 'करो' कयेगे, व अगर बुरा अछैगा, तो ज्वाब ना दे चुप रहेंगे। ‡

यो नाज दाई हुस्न धन० कू गले लाई, कही "बला लाऊगी० बहुत खूब फरमाई। खूब तूझे यो अकल आई। तेरी अकल पर मै वारी, काँ है दुनिया तुज जैमी चतुर नारी? मिर तें पाव लग गनभरी, बहुत अदेशे करी।" ×

\* वहाँ, पृ० १४६।

‡ वहाँ, पृ० १४९।

† वहाँ, पृ० १४८।

× वहाँ, पृ० १५०।

हुस्न होर नाज नार यो बात अपस में विचार मेह सिपहसालार कू बुलाय वों च उसे फरमाये । . . . मेह अफताब-चेहर उसकी बात सुन इश्क लग गया, सलाम किया, कलाम किया । अक़ल यों न्हाटा होर दिल यों सँपड्या कर कह्या, नसीबा में जो अंपड्या कर कह्या । इश्क बहुत हंस्या अक़ल पर . . . कि “अक़ल अजब जाहिल है, बड़ा नाक्राबिल है, कि जो काम हातते नैं होता, सो काम करने जाता, ऐसे कामोंते क्या हात में आता . . . अक़ल, अकल कहते सो उसकी यो च अक़ल ? उसे क्या गर्ज था, कि इश्क के कामों में करता दखल । हुस्न सों दावा लाना, अपनी इज्जत अपे च गँवाना ।” . . .

इश्क फ़रमाया कि . . . जुल्फ़ कूँ वोलो कि “दिल के गले मे हल्के का तौक भी, तारां का जजीरों सो जकड़ कर अक़ल जाँ गया अछैगा, वहाँ ते पकड़ कर ल्या । ग़मजा, शेवा, इश्वा, छंद, चाला उनोकूँ अक़ल बहुत मुफ़तिन है । . . . \*

मेह ने . . . वेग आकर दुआ कर हुस्न कूँ सुनाया, . . . समझाया । हुस्न यो बात सुन अंदेशा करी, मस्लहत पर नज़र धरी । कि . . . “काम ऐसा करना, जो कुछ काम होये”, वही च नाज दाई, जिसकी अकल उसकी खातिर आई, देस बुलाई, कही—“इस काम का इलाज यो च है एताल, कि इस जागा अपस कूँ बहुत रखना सँभाल, अपसकूँ वावल न करना, उतावल न करना, बहुत धीर अछना, गँभीर अछना । . . . सबूरी अब्वल कड़वी लगती है, बले बहुत मीठी होती है, बीजते झाड़, झाड़ते डाली, डाली ते पात, पात ते फूल, फूलते फल आता है । देखते-देखते, सुनते-सुनते, खातिर ल्याते-ल्याते फ़िकर करते-करते रहते-रहते मालूम होती है काम की धात । . . . इस दिल कूँ . . . चंद रोज बहुत मुहब्बत सों बहुत मुरब्बत सों . . . एक जागा धरै, पछीं अहिस्ता-अहिस्ता जो कुछ इश्क फ़रमायेगा, तो उसकी भी एक फ़िक्र करें । यहाँ वेगी काम नही आती । . . . ख़सार के गुल्जार में एक कूवाँ है, कुछ सुन्ने सों मुस्तीद हुआ है, . . . चाह ज़कन उसका नाम । उस चाह मे दिल कूँ . . . बद करना । . . . (बैत)—

अजब चाले बैरियाँ हैं औरतों यो ।

न जानूँ काँते सिक्कियाँ हिकमतां यो ॥ . . . ‡

दिल बहुत पकड़कर आस, कुछ कम हेक मास उस चाह मे, उस नाले उस आह मे गिरिफ्तार था । हुस्न धन० कधी याद करै कर उम्मेदवार था . . . कि . . . “मेरा इश्क तो बहुत गर्म, कधी तो भी उसका दिल होयेगा नर्म ।” . . . ऐसे में यों हुआ खुदा का फ़रमान, हुस्न को भौते च तिलमिलने लगा परान । हुस्न धन० भी आशिक थी, . . . दिल के दीदार का गालिब हुआ इश्तियाक<sup>१</sup>, सीने में उबल्या फ़िराक<sup>२</sup> । सरलशकर, जो था मेह उसके एक बेटी थी पुरसेह, बफा, उसका नाम, हुस्न सों उसे बहुत उल्फत था बहुत आराम, बैत—

\* वहीँ, पृ० १५१ ।

‡ वहीँ, पृ० १५३ ।

१. इच्छा, २. वियोग ।

पर आसाइश किया है। आह मारी, पुकारी बेचारी भीत की जारी। . जगमग रह्या है, तमाम गुलशन, फूलां नही यो दीवे हुये है, रोशन बाग में पड्या है सब उजाला, आफनाव हुआ है हर एक लाला। अँखियां में ते अजूआं का बुंद पडता, फूलते जाने शबनम झडता। दोना हुये दो झरे, पानी हो लहू भरे। अजू डलते है उजले होर लाल, खुदा कूं मालूम इम विचारे का हाल। दिल हुआ इश्क ते दानादान, आँख हुई याकूत होर अत्मास<sup>१</sup> की खान। दीदे दीदार कूं तरमते, बादल होकर मोती बरमने। दिल के इश्क में अपम कूं जला ली, दोनो पावा पडी बला बला ली। यो हुस्न नार मुद्ब्वत की मतवाली दिल का सिर गोद में उँचा ली, मीने सा मीना गी। इश्क मिर चड्या, एकाएक दिलके मूं पर उसकी अँखियां में ते अजू का बुद पड्या। दिल नीद में ते जाग्या, हैरान होकर देखने लग्या। ज्यो बाग में ते कलिया, सब फूल कर फूल हो करतिया रग-रलिया। ठारें ठार, चारो तरफ झलकते है झलकार। झाडां ने सब ताजा किये है मिगार, गले में फूलां के भाये है हार, पानी कालोयां में सब शराब हुआ, मगर साय सुट्या उसकी अँखियां का खुमार। हुस्न ऐसी नार चांद जैसी अचवा औतार, बेइतियार नारी रोनी है, जार-जार, \* बँत—

जो आँखी हुस्न कूं देखे वो आँखी खुद को खोती च है।

एता तारीफ जग करता अजूहें तारीफ होती च है ॥

(हुस्न) खुदागुपनार, वो खुदापतार, तो दीदां का सिंगार, जीवका अधार, अलम का मदार, अजब खूबी का नूर, महबूबी का नूर, छद भरी वाली, लताफत के फूल की डाली, नाजां में कारी, गमजियां कूं उपजान हारी, दातां जैसियां निवातां, फूल की फुडियां जैमे हाता, किरना जैसे बाल, आफनाव जैसा जमाल, कमर देख शेर जा शरम हुजूर, उसकी चाली ने वाडी हत्ती की चाल में कमूर । इस बजा के महबूब भीत च खूब (कूं देव) दिलकी सुद नही रजी, बुद नही रही। मुद्ब्वत कर जोश दिल में उठी रोश, जागा पर नही रहे होश, आह मार उट्या, पुकार उट्या। इश्क का अमर भीत चट्या, दौडकर दोनो पांव पड्या कमर में हात भर्या, चकल कर गले लाया। कह्या हुस्न धन० माशूक आशिक पर एता बी प्यार करती है, एता बी उपकार करती है। “ऐ परी, तू मुझे सरफराज<sup>१</sup> करी। जीव के तहोये का घाव ज्या त्यो सामेगा दिल, बले बसाल के खजर का जरम मोसना भीत मुश्किल।” फर्द—

गले लग मोने होर बेताबी नही जाती है यो मुश्किल।

विरह में तिलमिल्या जो त्यो हलाक है वस्ल<sup>२</sup> में बी दिला ॥

दूर की आग ज्यां त्यो टाल्या जाये, नजीक की आगकूं क्योकर संभाल्या जाया। जो

१ आँसू, २ पद्मा।

\* वही पृ०, १५८।

३ सौभाग्यशाली, ४ मिलन।

† वही, पृ० १५९।

कोई खुदा के कारखाने में जाते, आखिर इस फिक्र पर आते । . . . रब ने उनकाँ दिया यो मंसब,  
आजाद आशिक यो छोड़ दिया सब । दाखिनी दोहरा\* . . .

तेरे करतब करन ते, मै चुप हुई बदनाम ।  
में म्याने ते उठ गई, तूँ जाने तेरा काम ॥

जो आशिक यों हुए हैं अस्फियार खुदा का भी उनोंपर प्यार । . . . फिराक<sup>१</sup> के जलनेकूँ  
सब कोई जानता, वसाल में कूँ कौन पिछानता† ?

पानी में की जो आग कते सो वसाल है ।  
इस आग म्याने जलनेकूँ किसका मजाल है ॥

आल्किस्सा<sup>३</sup> दिल कह्या—“मै आशिक हूँ, अगर होता हूँ, तो सुहाता है, तूँ माशूक<sup>४</sup>  
तुजे क्यों रोना आता है ? जफ़ा<sup>५</sup> आशिक का वतन . . . मुकाम, तू माशूक तुजे गम सों क्या काम ?  
माशूक शीरी<sup>६</sup> आशिक सलोना, माशूक का काम हंसना आशिक का काम रोना । . . .  
मुहताज माशूक गनी, जों आजाद होर असीर, जों बादशाह होर फकीर‡ . . . ।

हुस्न धन० बोली कि—“सुन ऐ दिल, यो बात समझना है भौत मुश्किल । जानती  
हूँ किस पानी सों खमीर हुई आशिक की खाक, कि हम फिराक में हम वसल में दोनों जागे हैं ललाक,  
न यहाँ आराम न वहाँ आराम । . . . जल-भस्म होकर वारे पर उडे, जो आशिक हाये, . . .  
इश्क के शहर में पिरीत के नगर में माशूक वही च, जो आशिक कूँ प्यार करे, आशिक पर उपकार  
करे, आशिक के दिल कूँ गुलज़ार करे, न कि बेजार करे खवार करे । . . . अगर आशिक मरता,  
अछैगी बी, हंसतियाँ खडियाँ रहेगियाँ । . . . मुआ तो आगमें पड चुप अपस जलता । दिल में नहीं  
लाता, तोडने नै जानता भी होर एकम सों जोडने नहीं जानता । तोडने जाता तो तुटता नहीं,  
छुडा लेता तो छुटता नहीं । दिल मे इश्क सुलग्या, आशिक बेचारा हिलग्या । . . . इश्क का  
स्वाद उसी ठार, जाँ दो तरफ ते उबलते प्यार । मै तेरे दीदार की बहुत मुश्ताक थी, . . . सो  
मुराद बर आया, यहाँ खुदा मिलाया । आशिक थी, तेरी खबर चोरी सों तुझे देखने आई थी ।  
इश्क का दुःख सहा नहीं गया, जीता रहूँगी तो बी नहीं गया । मै इश्क तुझसों लाई हूँ, जीवपर  
उठकर आरई हूँ । एताल रजा दे जान जाती हूँ, वसाल की जागा खातिर ल्याती हूँ । या तुझे  
बुला भेजती हूँ या मै अपे तुजे बुलाने आती हूँ । मै कही सो तहकीक जान, दिलमें अपने बुरा नको  
मान । खलक के मूँ में आकर पडी बात, असमान टूटचा तो कौन देता हात, समुंदर कूँ क्यों बांदना  
पाल, आफ़ताब कूँ क्यों रखना संदूक में घाल । दीवा घरमे रोशन हुआ, पछीं जोतकूँ काँ ले  
जाना ? वन में फूल खिला, पछी वासकूँ क्यों छिपाना ? मूँ में ते बोल निकल्या, पिछीं सो क्या  
फिकर आता है ? तीर कमान ते छुटचा तो क्या सँभाल्या जाता है ? थाल भुई पर पडचा,  
आवाजकूँ क्यों पकडचा + । . . .

\* वही, पृ० १६० । १. वियोग ।

† वही, पृ० १६२ ।

२. संक्षेप में, ३. प्रियतमा०, ४. जुल्म, ५. मीठा ।

‡ वही, पृ० १६५ । + वही, पृ० १६५ ।



दिल कहा—ओ नार शीरी-गुप्तार<sup>१</sup> आशिकाँ की अँखियाँ का सिंघार  
चतुर-चौसार, तू ऐसी है, जो कोई तुझसे बुरा माने, तेरी बातकू झूल कर जाने । विस्मिट  
ल्लह खुदा हमाराह<sup>२</sup> जाना वेग कर फिर आजा\* ।

हुस्न परी-औतार इस्तिरी ने ख्याल, होर नजर होर तबस्सुम<sup>३</sup> कूँ दिलवने रखकर  
कसाल को छज्जे पर चडी सारा देस वहा च थी, ता शाम पडी । फ़द

भुँईं परको चदनी (सो) बिन पर की परी है ।

दिल सेती मिल कि दिलसो क्या क्या अदा करी है ॥

वो छद-भरी उस ठार एक अदा<sup>४</sup> करी । चफा होर नाज उस छज्जे पर इश्क  
की मजलिस सँवारी । दिल होर नजर होर ख्याल होर तबस्सुम उस बाग मे व पानी चरमे पर  
सुहवत रखते थे ।

वारे, हुस्न धन० कूँ भौत मुश्किल लगी दूरी, दिल मे कुछ नहीं उवरी सबूरी । “क्या  
करूँ” कही हत जोडी, वे ताकती हुई पूरी अपना दिल खोली, चफा कूँ बुलाकर बोली इताल ख्याल  
होर नजर होर तबस्सुम कूँ बोले कि दिल का दिल हात लेवो, सब मिल उसे दारवे बेहोशी देवो ।

होर जुल्फकूँ वहो कि दिलकूँ इस छज्जेपर यो लेकर आ कि दिल भी न जाने, न अपसकूँ  
समझें न दुसरेकूँ पिछाने ।†

ख्याल होर नजर होर तबस्सुम होर चफा दिलकूँ दाखवे-बेहोशी दिये देखवर बेसुद  
किये । जुल्फ दिलकूँ कुल्फ होर छज्जे पर खीच ल्याई, कि दिल कूँ रखर नहीं आई । अपने  
सीनेपर उसका हात धरी, आह भरी, उसास भरी, टुक हँसी टुक रोई, अपसमें कुछ बातें करी‡ ।  
फ़द—

तमाशा है अजब कुछ आज इस ठार ।

कि आशिक मस्त होर माशूक हुशियार ॥

(हुस्न ने) कही—“ऐ दिल मे क्या क्या जफा देखी तेरे बदल, तुझपर भी लई-लई  
मेहनत गुजरी मेरे बदल । तेरी यारी पर मैं वारी, तेरी अख्तियारी पर मैं वारी । यो नवा  
मिलना, एकाएक फूल होकर क्यों खिलना, मूँ देखते शरम आती, एकाएक क्यों बात बोली जाती ।

उसने दिलकूँ देखवर की कि दिलकूँ सो कुछ हिप्प<sup>५</sup> पावे । हुशियारी मे आखभर  
देखते मुवादा<sup>६</sup> लाज आवै । वह चतुर परी, ऐसी कुछ फिकर करी, दिल देखवर मतवाला,  
हुस्न करती कुछ हातवाजी कुछ ऊपर चला । वाँ नजर सो वो कुछ किया जाता । जो भँवर  
फूल का रस लेता । जो अपसकूँ इश्क की मस्ती बहुत चडे, यो छतरा वज्द<sup>७</sup> मँने वम भार

१ मधुर वचन, २ साय । \* वही, पृ० १६६ ।

३ मुस्फुराहट, ४ हाव-भाव ।

† वही, पृ० १६० ।

‡ वही, पृ० १६७ ।

५ वियोग, ६ कदाचित्, ७. तल्लीनता ।

पडे। तुरुम-इन्सान, इस तुरुम में लई-लई तमाशे है जान-छान। इस खतरेकूँ जोरसो खोलना है अँखियाँ की बाट, इस खतरे कूँ जोर से चडाना है ट घ। . . .यो तनका वसाल नहीं यह दिलका वसाल है, आ खडे रहना किसका मजाल है।

(ज) इश्क-

ग्वालियर के गुनी, उनों ते बीयो बात गई है सुनी (दोहरा)

जिनकूँ दरसन इत्त है, तिनकूँ दरसन उत्त।

जिनकूँ इत्त दरसन नहीं, तिनकूँ इत्त ना उत्त\* ॥

आशिक ने कोशिश करना कि कहीं इश्क की आग खूब सुलगे, जाहिर<sup>१</sup> दिल किसी के फंदे में खूब हिलगे। पछीं अपनी हिम्मत फ़ाम<sup>२</sup>, अपनी-अपनी तलब अपना-अपना काम। खुदा ने लै कुछ करचा है, खुदा के आलम में सब कुछ भरचा है, एक है हरचा है, जिधर देखें उधर दरचा है। उसमें तो अव्वल आशिक कूँ फ़र्ज भौत देखना, खुश करना, शराब पीना होर राग सुनना। यहाँ सब है, यही तमाशा अजब है। . . . माशूक नज़दीक अच्छ कर तपना तरसना न्हना काम नहीं, अँखियाँतली दीदार शेर अंझ बरसाना न्हना काम नहीं। यो इश्क जोराँ सों कोई नहीं भाया, जिसे खुदा दिया उसे आया। किसी की बहूबेटीवो, अपने घर में तिलमिलता वो अपने घर मे लेटी। यो फिरता घरके आसपास, उसे घर में जांचती ननद होर सास। उसकी सँगात उसका मर्द सोता, यो रात-देस याद कर-कर रोता। इसे न भीतर करार न भार, छिपे चोरीसों कधीं कधीं होता दीदार। यो आशिक दीवाना है च वेफ़ाम<sup>३</sup>, बहुत मीठा लग्या चोरी का काम। हलाल ते दिल कचाता, हराम मौत सवाद लाता। . . . मना किये काम सो ईसान कूँ भौत भाया है। . . . अगर हराम कूँ मना न करते, तो अजब नहीं, जो कोई हराम न करता, हराम कूँ मना करने ते हराम पर जाहिल<sup>४</sup> आदमी एता लज़जत पकड़ कर जिद्द धरता। अगर हलाल कूँ बी मना करते, तो हलाल वी भौत भाता। हराम कूँ सब सुट देते, हलाले च खुश आता आदमी। बहुत बुरी बला है। आदमी ते हद हुआ है, मकर जना<sup>५</sup> कूँ भाता, मियानेमियाँ मँग-मँग भेजता। उन्ने के खाये सो झूटे पान। उसकी खून लगी सो अंग की चोली, उन्ने खुशबुई लाई सो खुशबूई उन्ने खाई सो गोली। बुढियाँ लाती इधर इधर की हिकायतों<sup>६</sup>, बहुत स्वादकियाँ होतियाँ बाताँ। . . . एक जनी सों जीव नहीं लाते, सौ जनियाँ कने जाते। एक घर में चार भार, यो भी अजब तमाशे का है ठार। . . . घूंगट मेंते मूँ भार नही काढते, बाजार में खडे अच्छ पर्दे फाडते। हटक हटक लोगाँ कूँ बुलाते, एकसकूँ दिखलाकर एकसकने जाते। उस जागा क्यों जीव लाना, यो किसे भाना। . . . यहाँ इश्क की तो है गरमी, वले<sup>७</sup> भौते च है बेशर्मी। हजारों की, केते यारां की, ऐसियाँसों क्या करना यारी, ऐसियाँ सों ते क्या ढूँढना तफ़ादारी? यो बैठियाँ है पैके मिलाने, उनों मुहव्वत क्या जाने? यो स्वाद बाजारी, मुबलिंग एक रात की यारी। खीसे-किया दुश्मन, घर के लोकाँ के हिस्से कियाँ दुश्मन। ऐसियाँ क्या पतियाना ऐसियाँ कूँ क्यों देना मत, एकसपास

\* वही, पृ० १६८।

१. प्रकट, २. समझ, ३. बे-समझ, ४. मूर्ख, ५. स्त्रियाँ, ६. कहानियाँ, ७. लेकिन।

मन एकम पाम तन । ऐसियाँ का का आस, जीव ला कर फुमलातियाँ, महज<sup>१</sup> पैकियाँ च खातिर आतियाँ, जो लगन कुछ अछता<sup>२</sup> तो लगन पातियाँ । एक घडी कुछ नहीं तो निकल जातियाँ । जानो कधी आई न थी, जानो आशानाई<sup>३</sup> च न थी, । ऐसी छिनाला के वेरी चालें, ऐसी छिनाला ते खुदा सँभाले । यो बुरे चढ, यहा कौन कर कमता दिलकूँ घढ । जैता नेम-धरम होयगा, अगर फजर<sup>४</sup> अछैगा तो यहा नरम होयगा\* ।

यो हरक जैमी हुस्नपरी, वो देम दिल कूँ देखवर कर उम बसाल के छजे पर ल्याकर हिफज करी । दिल कूँ वेहोश कल म्हाडी पर ल्यावै ले जावे, किसे ना दिखलावै, किसे न सुनावे । चोरी का काम, किसे नहीं होने दे फाम । जैमे में रकीब की एक बेटी थी, उसका नाम गैर<sup>५</sup>, सबमा उमका बैंग । जाहिरी<sup>६</sup> राजी सो रहती थी, हुस्न कने<sup>७</sup> दगावाजी मो रहती थी । जाँ जाने, दो में थगडा लगावै, मिल्याँ कूँ विचडावै । लूतरी चाडीमार<sup>८</sup>, दिल में कुछ होर मूँ मे कुछ हो हुस्न धन० कने रहती, बले भेद अपना किसे नहीं बहती । हुस्न नार दिल का अवार चतुर-चौमार ममजती कि यो नामाकूल गम नही धरती, एक्स के अग एक्स की बात करती । मू की बहुत हल्की शोल निडर अपें च शर्म नही धरती सो किसकी शर्म कि उसे क्या खबर ? हुस्न उसे जानती थी, खूब पिछानती थी । जो हुस्न मनमोहन बाग में आये, उम नापाक कूँ सँभाल न ल्यायै † ।

(२) गैर ने समजी कि हुस्न धन० अपस सो कपट पकडी है, अपस सो हट पकडी है, यहाँ तो कुछ प्यार नहीं, एताल कुछ भला बाल नहीं । जिधर गई भी अकेली जाती, मुझे संगत न ले जाती, मैं उसे नै भाती । गैर की गैरत<sup>९</sup> उठ खडी, गैर हुस्न के दुवाल<sup>१०</sup> पडी कि देखू यो मुजते अपसकूँ छिपाती, जकेली किधर जाती । यो च बरते-बरते एक गत उस बाग में हुस्न धन मनमोहन दिल सो मिलने जाती थी, यो वी उसके संगत चोरी सो लग पछी आती थी ‡ ।

हुस्न नार चतुर-चौमार जो दायम जाती थी, वो च जाकर उस छजे पर चढी, यो वी उम छजे पर जाकर एक कोने में मारी दडी । हुस्न होर दिलकूँ के चाले सब खातिर ल्याई, उनी दिनो का भेद पाई । गैर कू वी उर्मे-दोनों का चाला देखकर इस्क हायल हुआ, गैर का वी दिल दिल पर मायल<sup>११</sup> हुआ । इन कमजात ने अपना ज्ञात दिखलाई, आखिर अपनी जात पर आई, कि हुस्न की चोरी सो उम म्हाडी<sup>१२</sup> पर चडना, होर दिल के बसाल की लफजत कूँ अपडना मैं वी हुस्न ते हुस्न मे खूब हूँ, दिलरवा<sup>१३</sup> हूँ, महबूब हूँ । मैं वी चुगुलाने जानती हूँ, मैं वी दिलकूँ भाने जानती हूँ । क्या मुजमें नाज होर गमजा नहीं, क्या मुजमें शंवा और इशवा नहीं । मेरा मूँ भी फूल का चमन । अँवियाँ जो लाले हैं । मुंज में वी बाले-बाल छेद होर चाले हैं ।

१ केवल, २ रहता, ३ दोस्ती, ४ भोग, स्वाद । \* वही, पृ० १६७ । ५ शत्रु, पर, ६ प्रकट, ७ के पास, ८ चुगलखोर, ९ नालायक । † वही, पृष्ठ १७३ ।

१० लज्जा, ११ पास ।

‡ वही, पृष्ठ १७४ । १२ आकृष्ट, १३ कोठा, १४. मनोहर ।

अगर खूबी का दावा धरूंगी, तो हूर-परी सों बात करूंगी। मै बी आरसी में अपसकूँ देखती हूँ, अपसकूँ जानती हूँ, अपसकूँ की खूबी कूँ खूब पिछानती हूँ।

वारे एक रात हुस्न धन० मन-मोहन जगजीवन शहर में च थी। हुस्न का नहीं हुआ आना, वक्त खाली देखी इस हरामखोर कूँ यो च हुआ बहाना। दिलसों मिलने खातिर वह मौत तडफडी। उस बाग में उस वसाल<sup>१</sup> के छज्जे पर चढ़ी, सेहरटौना भीत जानती थी, वहां हुस्न की सूरत पकडी खड़ी। ख्याल होर नजर होर तबस्सुम<sup>२</sup> होर वफ़ा कूँ जो हुस्न फरमाती थी, वों च अपे भी फ़रमाई। . . . दिलकूँ पिलाई, होर जुल्फ<sup>३</sup> कूँ बी हुस्न के नर्मो च बोलकर ज्यों त्यों दिलकूँ उस वसाल के छज्जेपर ल्याई मँगाय गले लई समजाई। . . . यो बदअस्ल<sup>४</sup>, शैतान की नस्ल, हुस्न के तख़्तपर दिलसों लट पट हुई, उसका बी दिल दिलसों लग्या, दिलपर आशिक़ निपट हुई। वैसे में ख्याल जो सोता था जाग्या, 'दिल दिसता नही' किधर गया है, कर धूँढने लाग्या\*।

दिल की खातिर अजब रखे रखवाल।

ग़ैर जो चोरी किये, तो जाग्या ख्याल॥

(झ) सौत--

ख्याल का मुश्किल हुआ हाल। धूँढते-धूँढते वसाल के छज्जेपर जो आया, तो मकसूद<sup>५</sup> अपनी पाया। देखता है जो ग़ैर दिलकी गोद में मस्त पडी है। ख्याल फ़िल्हाल शहर दीदार-कूँ जाकर उस गुलजारकूँ जाकर जो कुछ देख्या था, सो हुस्न नारकूँ दिलके सिंघारकूँ दीघाँ<sup>६</sup> के अधारकूँ खबर बोल्या, मामला यों है कर बोल्या। हुस्न यो बात सुन हैरान, परेशान सरगर्दान। ना खाना ना पानी, कडुवी हुई सब जिंदगानी,। आगकी भडकी उठी तन में, आहाँ मारने लगी मन में,। सौकन के छल, नऊज बिल्लाह<sup>७</sup> जीव जावै निकल। इस छलकूँ कौन सँभाले, तन-मन रंग-रूप, सब जालें। अगर मर्द आग में पडो कहे तो आग में भी पडना भाये, वले सौकन की छल सोस्या न जाये। सौकन अछै जिस ठार, उस मर्द ते बी दिल बेजार। . . . जाँ सौकन होती, वहाँ औरत . . . बेजार होकर मर्दकने सोती, न मनका स्वाद न तन का स्वाद। सीना जलता दिल में तडफडी, सेज मे आई है जाकर दोजख में पडी। . . . सौकन न सोवै न सोने देवै, सौकन जीवपर उठे सौकन जीव लेवै। सौकन ते मुहव्वत मे फ़तूर उठै, सौकनते जुड्या दिल तुटै। इस इधर ते साले उधर ते सालियाँ, चारों तरफ ते बरसती गालिया। कोई कुआँ गिरती, कोई बाँई घर में खेलतियां चाई माई। यो घर मे सुख सों नही सोता, मियानेमियां लोगों का हँसना होता। जो देखे तो कलकल, औरत ते ज़ियास्त सासकी झल। साला दुश्मन साली दुश्मन, वजर का उस बेचारे का मन। किसे-किसे समझावै, किस-किसके तगाघाँ ते भार आवे। ब्रेट बेटी अपनियां मा वां खातिर जुदा लडते, यो जुदा तिलमिलते, वो जुदा चिरफडते†। . . .

१. मिलन, २. मुस्कुराहट, ३. अलकें, ४. दोगला।

\* वही, पृ० १७५।

५. इच्छित, ६. नेत्र, ७. खुदाकसम।

† वही, पृ० १७६।

सौकनकूँ देखने का किसे ताव, जिस घर में सौकन आई वो घर उराव । जिनने असूदगी कूँ दुमरी औरत किया, उनने बतरी अपसकूँ अजाव में दिया । केती जागा अपसकूँ घाट भावै, एक दिल दो जागा क्यों लावै ? एकसो तोडना, तो दुसरे सो जोडना । इदर यो लडती, उधर वो झगडती । सुवा उठकर घरमे कचाट, आसूदगी का बारावाट, एकस कने सोता, दिल दुसरी पर होता । एकसकूँ किया प्यार, तो जानो दुमरी कूँ दिया जहार । एकमकूँ पान विलाया, ता दुमरी कूँ जानो आग लाया । एकसकूँ फूल पिन्हाया, तो दुसरी कूँ जानो अगारियाँ में भया । एकससा बात किया, तो जानो दुमरी के जीव पर घात किया । एक नरुदीक सोती, तो दूसरी रोती मरने पर राजी होती । कलकलाती तिल-मिलानी कई का कई नही सो झगडा बाडती, दोनो को खुशी मे खलल पाडती । सौकन न सोवै न सोने देवे, अपना दावा न छोडे, अपना वर लेवे । यो बेचारा न इधर का न उधर का, क्या जाने किधर का । यहाँ चाना साता, तो वहाँ पानी पीता । इथत गुम हुआ, घर जहमुम हुआ । रात-देस झगडा किसे आता, घर मे ते न्हाट जाने का वक्त आता ।\*

हुस्न धन०इस गैर के रदक ते अचल भागाई अँखियाँ के अशक ते जलती तिलमिलती, कपडे फाड लेती, सिंगार तनका काड लेती । गालियाँ देती, रोनी हैरान होनी बसाल' के छज्जे पर आई, गैर कूँ देखी तरत पर मस्त, बिल उमसो हम्दस्त, मूँ सो मूँ मिलाये है, सीने सा सीना लाये है, खुद यो रही, सो रही है । हुस्न नार सुदरी बहुत नखरे भरी इस्तिरी पुकार उठी, आह मार उठी कि, "आह यो क्या हुआ ? वाय' यो क्या हुआ ? इन छिनाल ने मुजे जीवो मारा, इन छिनाल ने अपन दुद सारी, इन छिनाल ने मेरा घर घाली । इन छिनाल ने मुचे देम-अतर दी । उसे और जागा न थी, जो यहा ख्याल करग गरम, इतना तो बी मेरी आशनाई का नही रमी शरम ।

उसे ठार कही न थी, क्या अपने जनम मे किससो यारी की न थी । इसकी चोरी की जागा देखो, इसकी हरामखोरी का जागा देखो । दुनिया ते डरना, नरुदीक का आदमी यो क्या एताल करना । आस्तीन मे की आग घरमे दुश्मन, आदमी कूँ आदमी पतियाता, क्या जाने कोई कोई किसके लकवन, के कुडँग ओलकवन, बदनीयत बुरे आदमी कूँ केता करता जतन काम पडे वगैर आदमी जाया नही जाता, कुछ मुश्किल खडे वगैर पिछान्या नही जाता । सुना होर पीतल दोनो का एक रग है, बले इमका और ढग है उसका और ढग है । पीतल बी पीला दिम्या तो क्या हुआ ? पीतल बी छनीला दिम्या तो क्या हुआ ? आफताव सबपर परतो सुटता, बल जिसमे जीहर है वो च जाहर होता में होते बुँदले पडते है, बले जिसमें कुछ जाँत' है, वोच गीहर होता बुरे सो भलाई दुश्मन सा सगाई ।

(ब) दिलपर हुस्न का कोप—

हुस्न कूँ लगी तकवक', गैर कूँ गालियाँ देने लगी "मू कारी झोंटा-काटी, मेरा बस होय तो इसे बहुत लोकरूँ, मेरा बस होय तो इसे छुरियाँ भोकरूँ, वो नीमा, कहँ, कीमा बरूँ ।

\* वही, पृ० १७६ ।

१ मिलन, २ वाह, ३ प्रभा । † वही, पृ० १७८ । ४ घबराहट ।

बहुत सिर चडी है, धगड<sup>१</sup> कूँ ले पडी है । बहुत अपसकूँ मुरव्वती है, कुत्ते की खीर चुरौती है । अजहूँ भी जीव नहीं भाग्या, धंगड बहुत मीठा लाग्या । यो छिनाल खुदाते नहीं डरी, क्या बला करी ? झगडा लानहारी, दुदकारी, चील होकर हातमें ते झोंटे मारी । इताल में वाई<sup>३</sup> गिरूँ के कुवा में ? कती थी सो हुवा\* ।”

गौर, दिल में रखती थी वैर, जो हुस्न का सुनी आवाज, समजी कि यो हुस्ने च जो करी है इतना नाज । . . . यारकूँ प्यार दिखलाती है, अपना एतवार दिखलाती है । . . . औरत की जातकूँ इतना कला, तोबा . . . यो क्या बला ? घडी एक आह भारती, घडी एक उसास भरती । इते गमजे<sup>३</sup> इसमें थे, तो इनने दिलकूँ यों हलाक करी । मर्द भंवर हजार फूल की लेवे वास, यो केता पुकारती फिरेगी आसपास ? मर्दकूँ कोई रखवाल रख सक्या है, मर्द कूँ कोई सँभाल रख सक्या है ? . . . मर्द हजार जागा जायेगा, उसे काँका झल आयेगा । . . . एती चतुरी एती चौसार, लड झगडकर कोई मंगती है प्यार ? लडने झगडनेते क्या प्यार आता है ? वल्कि प्यार है सो बी जाता है । वो औरत अजब है गंवार, जो मर्दकने लडकर मंगती है प्यार । . . . छोरियाँ छारियाँ अजहूँ कुछ तन पर पडचा नहीं, भला बुरा सिरपर कुछ खडचा नहीं । मर्द का दिल हात लेना जानतियाँ, क्या फ़ायदा मर्द कूँ गवाँ लेकर पछीं तापतियाँ । . . . औरत ने मर्द का जीव पकडे तो अबूदगी ना देखना अपने तन की, खातिर रखना मर्द के मन की । . . . सवाद समझनहारी औरत काँ है ? सब गुन में सारी औरत काँ है ? . . . अपसकूँ घडी-घडी सँवार मर्दकूँ दिखलाना, अपने दिल में का कुछ प्यार मर्द कूँ दिखलाना, . . . औरत ने मर्द की बहुत भिन्नत करना, पाँव पर हात सुटना, अलावला लेना, सीनेसों सीना चिकलना, हँसना गड देना, खुब्वोई मे तमाम महक रहना, अपने दिल की बात खोल कहना । . . . यो तनसों तन दिलसों दिल मिलने की जागा है, अपसकूँ कली कर वा अछना, यो फूल होकर खिलने की जागा है । मर्द भंवर है, फूल का रस लेने आया है, औरत पर आशिक हुआ है, दिलकी हवस लेने आया है । मर्द सों एक चित्त एक दिल अछना, जों मर्द का दिल मँगता, त्यों मर्द से मिल अछना । . . . नार उसे कते है, चौसार उसे कते है । . . . ऐसियाँ औरताँ खातिर जीवाँ देते है मर्दा, ऐसियाँ औरताँ खातिर हजार-हजार सोसते है सरदर्दा । जिनाँ औरताँ ने यो छन्द नही पाई, क्या काम आती रूखी कबूल-सूरताई<sup>५</sup> ? कबूलसूरती और उसमे यो छंद, भौते च खूब सुन्ना होर सुगंद । औरत की सिफ़त<sup>४</sup> क्या है ? नाज, गमजा शेवा, चाला, नाजुकी, नरमी दिल हात में पकडना, हँस बात बोलना, मिलना लेना होर मुहब्बत की गरमी । औरत में जितनी सिफ़त है, उतनी सिफ़त मर्द कूँ दिखलाना, मर्द ते यो सिफ़त न छिपाना, मर्द कूँ न भुलाना । औरत कूँ यो सिफ़त खुदाने मर्द को भुलाने खातिर दिया है, न कि मर्द ते छिपाने खातिर दिया है । . . . बहुत पाके हो चले, तो मर्द प्यार करता है, पाँव खाक हो चले, तो मर्द प्यार करता है । खुदा ने कह्या है, मर्दकूँ नीमे-खुदाइ<sup>६</sup>; उसकी बाततेँ क्यों होना जुदाई । . . . जो कोई औरत चौसार है होर चतुर, वो यों चलती है,

१. संड-मुसंड, २. वापी । \*वही, पृ० १७९ । ३. चितवन, ४. सुन्दरता, ५. गुण, ६. आधा ईश्वर ।

जो मर्दे अपे उसका होता शर्म हुआ घरवार अपना देता सब उसके हात, उसके सामने फिरके भी नहीं करता बात। उमे च जानता है घर की इस्तिरी, लखनवती गुनभरी उसके हातमें देता अख्तियार जो कुछ वो करे मो करी। .. जिम औरत कू मंग्या घरका धनी, उसके दीवकू क्यों न होसी रोशनी\* ?

शेर अपने दिलमें कतेक वक्त लग तकपग तकपग ऐसियाँ कुछ बातें कटकर असपेमें अपम हैरान रहकर भी कही। इताल यहा रहना खूब नहीं, यो बात किमे पास बहना खूब नहीं। सो साहिर्<sup>१</sup> थी, जेतेक बढियाँ में माहिर थी। भेस अपना फिराई सूरत पकडी होर। हुस्न की नजर तले में अपमकू छिपाई, कमाल के छज्जे परते उतर तले आई। अपने दिलकू जा भावना मो करी, भी शहर सुबुकसार<sup>२</sup> के उवर कदम घरी।

हुस्न घन० कू दिल का यो रविश नहीं भाया, दिलपर बहुत गुस्मा आया। या चाँद-मूरज की जाई, जिसपर खतम हुई जेवाई,। रयाल होर नजर होर तबस्सुम को फरमाई कि "इस दिलकू इम जाहिल कू इस नावाबिल कू, इस वाग में ते बाहर काडो, इसकी दोस्ती का वरक<sup>३</sup> फाडो। वेग इम वाग में ते इसे भार<sup>४</sup> ले जाओ। कई न्हाट<sup>५</sup> जावेगा सँभालो, इसे गजब के बदीखाने में घालो। इस वाग में भी नको देवो आने, अगर कई निकल आवेगा तो तुमें जाने। तुमें तीन जने च नजर चारो कघन रखो, होशियार अछा इसे जतन रखो।"

इताल काँका इस्क काँकी यारी, काँका दिल काँकी दिलदारी ? काँका गमजा काका नाज, मू देखने ते हुई बेजार बाज ? वो तो औरत थी, कम-बुर्दा थी, कम-जात थी, अपना जीव दिखलाई, यो तो मद था, दिल सँभालना था, इसे यहाँ क्यों हिस आई। क्यों उसकी मुहव्वत भाई होर पर दिल घग्ना दुस्त नहीं है, एक कू छोड दूसरे पर नजर करना दुस्त नहीं है।

दिल होर हुस्न में पडी हुई, असी बातों हुई। जिस वक्त शेर ऐसी करी काडी, उना दोनो में जुदाई पाडी। (शेर) शहर बीदार ते शहर सुबुकसार कू गई, हुस्न होर दिल का विस्सा सब रकीब बेनसीव कू कई। फर्द—

बात का लाभ किया करे है यो।

बार जीवाँ की इस्तिरी है यो॥

(ट) दिल की मुक्ति—

उवर हुस्न होर दिलकू दगा दी, उवर रकीब कू ला दी। रकीब के दिल में भडका उट्या, सीना फूट्या। बेटी ते बापकू, जयास्त उठे झल। अपसमें अपे जलजल हलाक होता सीना ते चाक होना। शहर बीदार कू आया। धूँढते धूँढते हुस्न के गजब के बदीखाने में

\* वही, पृ० १८०-१८२।

१ जाहू, २ हलकापन, ३ पन्ना, ४ बाहर, ५ भाग। † वही, पृ० १८३।

६ अल्पबुद्धि। ‡ वही, पृ० १८४।

दिलकूँ पाया। सेह्रर में नादिर था, होने पर कादिर था, ख्याल, होर तसव्वुर होकर नज़र पर कुछ मंतर सुट्या दाने, यो तीनों हुये दीवाने । . . . उन नापाक ने फुर्सत पाया, हुस्न के गजब के बंदीखाने में ते दिल भार ल्याया । . . . दिलकूँ शहर सुबुकसार कूँ ले चल्या । . . . उसमें एक कोट। उस कोट का नाँव हिजराँ। उस कोट में दिलकूँ भाया। दिल बहुत जफ़ा पाया, अपनी जीवनते बेज़ार हो आया, यो आशिकी पर बहुत पचताया । . . . हुस्न क्या सबब मुँजपर एता गुस्सा करी, क्या मेरा गुनाह देख्या कि दीवानी हुई वो परी। क्या मुजते चूक आई नाग-हानी बला मुँजपर भाई । . . . खुदाते बी नहीं डरी, दिल में आया सो करी। पूछना, विचारना, एकस के कहे सुने पर क्या नाहक एकसकूँ जीवों मारना\* । . . .

हुस्न बी अजब तमाशे की धन है, तमाशे का उसका मन है । . . वो मेह व प्यार क्या हुआ ? † . . .

वो जीना क्या हुआ ? वो तरसना वो तपना क्या हुआ ? वो यारी होर बेजारी जों वजही साहेबेदद अपने जमाने का फर्द कता है, कि :

हर कि रा मन यार करदम् ओ ब-मन अगयार गश्त ।

क्रीमते हम् चूँ दोस्त को आखिर बमन दुश्मन न शुद ॥२६॥ (३)

(त) नारी-निन्दा--

मुँजे बहुत लगता है इस ठार अजब, अजब अजब हजार अजब, औरत अजब है शकर, वले इस शकर में तमाम भरे हैं मकर । बोले हैं कि शेर शैतान ते मकरे, जनाँ ते खुदा अपनी पनाह में रखे । यो दोनों बलायाँ कूँ को जीत सके, उनो कूँ समजाने किस आकिल कूँ अहै बल, नादान ज्ञात । इनो कूँ तलबे-अक़ल, समजकर नहिँ करतियाँ काम, खोल बोले बी नहीं होता फ़ाम । यो कौम बहुत जाहिल, कम-अक़ली उनोकूँ हुई है हवाल । . . . यों क्या दुनिया में औरताँ होकर आइ यो है, यो औरताँ नहीं खुदा कियाँ बलायाँ<sup>१</sup> हैं । घर में अछ कर एता गलवाल करतियाँ, अगर यो भार निकलतियाँ तो क्या बला करतियाँ ? इसी च ते खुदा उनोकूँ छिपाया, 'घर में ते भार नको निकलने देओ' कर फरमाया । अगर घर में ते उनो का पाँव भार पडे, खुदा जाने बेचारे पर मर्दा पर क्या क्या वाक्का खडे । घर में उनोकूँ यों छिपाते, जों शैतानाँ कूँ शीशे में भाते । . . . जानतियाँ, अक़ल उधरै च है अपे है जिधर", अपनी अकल के अंगे दुसरे की अकल किधर ? . . . दावा बड़ा अक़ल न्हत्री । . . . हज़ाराँ में एक नेक जनाँ, उनो च कते<sup>२</sup> हैं गुनवंत धनां, उनो च कूँ कते हैं भी इस्त्रियाँ हैं, जिनाँ दुनियाँ में नाँव करियाँ हैं । . . . दुनियाँ में ऐसियाँ बीबीयाँ बी हुइयाँ हैं, उनो अजकूँ बी जीतियाँ हैं, नहीं मुइयाँ हैं ‡ । . . .

\* वही, पृ० १८४ ।

† वही, पृ० १८५ ।

१. आफत, २. कहते । ‡ वही, पृ० १८६ ।



वारे वो गैर मन में ते बाडी बैर, दिल कूं ख्वारी यो जारी, तिलमिलना यो जलना देप जाने क्या दिल मे त्याई, दिलपर बहुत मेहर<sup>१</sup> खाई, अपने कामते आप पचताई, हेफी खाई, कि "दिलते बिचडाई दिल की महवूव, यो काम अछे कुच नही करी सूब ।" इधर सो दिल कल-कलाता, उधर सो हुस्न कलकलानी । क्या जाने भी किधर की बला किधर आती । गैर वा उतर्या रोस, कतेक वक्त लगन बोली अफमोम अफसोस । खातिर<sup>२</sup> करार कर अपस में कुछ विचार कर हुस्न धन० कने यक रक्वा लिख भेंजी इस मजमून सो "अगर तूं मुजपर गुस्सा करी है, तो मेरा गुनाह है, गुस्से का ठार है । बले, दिल वेगुनाह है, पाक है, दिलने तूं यो क्यों बेजार है ? मैं तेरी मूग्त होकर सडी, तो दिलकूं भरकी पडी । तो दिल इस बेहोशी में हुआ राजी, दिल क्या जानता मेरी दगाबाजी ? दिल बेहोश था, अपस में अपे फरामोश था । मस्त पर गुनाह लाजिम करना दुरुस्त नही है । मस्त पर एता कपट धरना दुरुस्त नही है । दिल साफ है मस्त होर सोते का गुनाह माफ है । जो अगर होशियाग अछता, तो यो काम हर्गिज ना होता । मस्त, क्या जाने सोता, मस्त क्या जाने क्या होता । मैं तेरी बी गुनहगार, दिल की बी गुनहगार हूं । मैं पाप भीत की, दोनो कूं वो दगा दी । दोनो की मुहब्बत में खलल भाई, एकस ते एकसकू बिछडाई । तू चतुर तूं चौसार, तुजे सब नाम है, गुनहगार कूं बखशना बहुत बडा काम है ।"

(हुस्न ने) सोच्या, मेरे कामां ते च दिल मुंजते पड्या दूर, दिलकूं एताल मूं क्या दिखलाऊं । मैं दिलकी खिदमतगार हूं, दिल मुंजे बेचैगा तो मैं बे-इस्तियार हूं । वो मेरा साहेब मुंजे उसकी आस, मैं बन्दी होकर अछूंगी उसके पाम । गुस्से कूं मारना था, किसी सो विचारना था । हर एक काम कूं चार जनियां सो मश्वरत<sup>३</sup> करना, मश्वरत में बहुत फ़ायदा है । अगर अपस ते यो बात मैं न पाती, उस चार जनिया में एकस कूं बी तो अकल आती । कोई तो बी कुछ कता, अल्बत्ता चुप ना रहता । चार जने चार बात बोलते, बात का मानी<sup>४</sup> खोलते । किसी की अकल मे ते बी कुछ काड कर देखना कुछ बुरा नही है, यो पर्दा बी फाडकर देखना बुरा नही है । जां मश्वरत ना करना वहाँ मश्वरत करने गये, तो कुछ का कुछ होता, रुच का काम सब बेरुच होता<sup>५</sup> ।

### पुनर्मिलन—

वारे हुस्न धन मनमोहन कही कि जघाते<sup>६</sup> जो कोई दुनियां मे आया अछैगा, अजब है जो कोई ऐसा दगा खाया अछैगा । हुस्न नार दिल के सिंगार ने दीघा<sup>७</sup> के अधारने बी दिलकने हजार-हजार इश्तियाक, हजार-हजार फिराक<sup>८</sup> सो किताब लिखी "तेरी मुहब्बत की सो तेरी मुहब्बत की सो, तेरे जलने की सो, तेरे तिलमिलाने की सो, तेरे वसाल की उम्मीदवारी

१ दया, २ मन, ३ सलाह, ४ भेद । \* वही, पृ० १८७ । ५ जबसे, ६ नेत्र, ७ वियोग ।

की सों, तेरे आफताव जैसे मूँ की सों । तेरे किरनाँ जैसे रों की सों, तेरे वादल जैसे वालाँ की सों, तेरे चांद जैसे गालाँकी सों, तेरे तारे जैसे नैनाँ की सों, तेरी शकर जैसी वतियाँ की सों, तेरे अधर की सों, तेरी कमर की सों, तेरे धन की सों, तेरे बदन की सों, तेरे नाँव की सों, तेरे छाँव की सों, कि तू तहकीक़ जान, ऐ यार मेरा गुनाह कुछ नहीं इस ठार । . . . यो बला ग़ैर ने बेसाई<sup>१</sup>, यो आग ग़ैर ने सुलगाई । मै आशिक़ थी, क्या करूँ, कहाँ गया, मुँजते रह्या न गया । मुँजेवी झल आई, यो बला . . . अपस पर ल्याई । . . . खुदा न झलकावै झलका झलकार, अपसकूँ मार लेते नहीं आती सार । . . . इश्क की वुरी अक़ल जितनी मुहब्बत उतनी झल । जिस मुहब्बत कूँ झल नहीं, उस मुहब्बत कूँ बल नहीं । . . . मुहब्बत झाड झल फूल, फूल झाडका दिसैगा मक़बूल<sup>२</sup> । . . .”

ऐसे नक़श-निगार<sup>३</sup> सों बहुत प्यारसों किताबत . . . ख्याल के हात भेजी, रातौरात भेजी । ख्याल जिसकी वावते अगली चाल, फ़िल्हाल उस हिजराँ<sup>४</sup> के कोट में जाकर उस मुहब्बत के मैदान के कोटमें जाकर दिलकूँ, आशिक़ कामिल कूँ यो किताबत अँपडाय, जबानसों बोल्या । . . . उताल दिल दिल न सँभाल हुस्न की किताबत देख आहाँसों सीना जाल्या, अँखियाँ मेंते लहू के अंझू ढाल्या, बैत—

पडन रुक्का दिया दिल जीव के हात ।

किताबत कूँ कते आधा मुलकात ॥

. . . अपस में अपे फ़िक़र करचा, भी इसमे क्या मक़र है कर डरचा । दिल दोचीता, दूद का जल्यो छाछ फूँक पीता । कहा . . . “वो गुस्ता क्या था, यो प्यार क्या है ? ऐसे प्यारकूँ एतवार क्या है ? ऐसे प्यारकूँ कौन पतियावै, ऐसे प्यारते एक अघे वक्त जीव जावै । रुक्का खोल पडचा, अपना हात अपे लडचा । कहा, ‘ग़ैर पर हजार हजार लानत . . . है तो एक बला हो आई, नापाक ने जीवपर ल्याई । . . . दिलने वी समजा कि गुनाह हुस्न का नही, . . . उस हरामजादी कमबस्त का है, गुनाह उस पापिन बेरहम दिल-सख्त का है, बले पुख्त छिनाल, बहुत नाजुक चली चाल । हुस्नकूँ टाली, रखवालाँ कूँ वी उछाली । झगडे का झगडा ल्याई, झगडा लाकर वी दोनों कूँ मिललाई\* । फ़र्द—

ऐसे चलन्ताँ में कोई अगर आवै ।

गर फ़रिस्ता अच्छै दगा ख़ावै ॥

ज्यों तोडें त्यों साँदै, ज्यों खोले त्यों वाँदै । . . .

दिल ने . . . हुस्न धन० कूँ लिख्या कि . . . “तेरी खूबी की सों, तेरी महबूबी की सों, तेरी मतलूबी की सों, तेरे मुखमक़बूल की सों, तेरे सीसफूल की सों, तेरे नत की सों, तेरे

१. खरीदी, २. पसन्द, ३. रूप-रेखा, ४. विधोग ।

\* वही, पृ० १९१ ।

सत की मो, तेरी मतवाली आँवो की सो, कबूलमूरत नाक की सो, तेरे इस नाजुक नरम लाल होठो की मो, तेरे हाताँ की मेंहदी लगाई सो उस रंगिले बूटाँ की मो, तेरे नवबाराँ जैसे दाताँ की सो, तेरे अबलो च बँसी बाताँ की सो, तेरे फूलाँ जैसे हाताँ की सो, तेरी जुल्फाँ के तारा की सो, तेरे गलेके हाराँ की सो, तेरे चाँद बैसे जोवन की सो, तेरे चाँदनी सार के झलकने तन की सो, तेरे शेरनी बँसी कमर की सो, तेरी अजदहा बँसी कमर की सो, तेरी रानाँ<sup>१</sup> की सो, तेरी साक की सो, तेरे शोक होर इस्तियाक की सो, तेरे पाव की सो, तू चलती सो उम तेरे पाँव तले के ठाँव की सो। तेरे कँठ की सो, तेरे कँठमाल की सो, तेरी ठुठ्ठी की सो, तेरे गाल की सो, तेरी नाखाँ भरी चाल की सो, तेरे धूगरवाले बाल की सो, तेरी कबूल-मूरत<sup>२</sup> की सो, तेरी मदनमूरत की सो, तेरी बफा की सो, तेरी जफा की सो, कि जो मैं यो हवका पड्या, तो सी हिस्सा अगला मुँजे मुहव्वत का असर चड्या। यहाँ न गुनाह तेरा है, न कुछ तकसीर मेरा है। इतना करी सो यो गैर, इताल जान दे यो वैर। इताल खुदा जानता है कि मेरा दिल तेरे नाँव बहुत है साफ, मेरे दिल में तेरे बाव नही कुछ खिलाफ़। अगर सच पूछेगी, तो ऐ मनमोहन परी, इतना सब तू च करी। अगर तू ह्याल होर नजर होर बफा होर तबस्सुम बू कह कर मुँजे दाख्ये-वेहोशी न पिलाती, तो मुँज पर होर तुजपर एती बला कै आती? तू करने गई छन्द, घैर ने वहाँ अपम कू यो करी बन्द। इसी च ने कते हैं, कि औरत नाकिस-अकल है, यो कदीम नकल है। औरत अपने घरबार कू खूब है, औरत साग सबजी बेसवार कू खूब है। घर का घदा उसका काम है, बाकी घदे का उसे क्या फाम है? घर की रहनहारी, घर का खबर उसे मालूम भारके कामों क्या जानती बेचारी। महबूब की बात, फूल का पात, कुमलाते बाराँ नई, बास निकल जातै वार नई। बावरा, उस बावरे पर क्यों करना पतियार (महबूब है) जिसकू खुदा दिया, मान, जिसकू खुदा का ध्यान, जिसकू खुदा की पिछान, जिसका रोशन ईमान, जिसका बडा ज्ञान चतुर सुघड सुजान।

अकल पादशा ह जो शिकस्त खाया, फिरकर शहर तन (वदन) में आया, खुदा जाने बिघर जा मूँ छिपाया। दिल तीर खा अड्या, झगडे में घोडे परते पड्या। हो सव्वि अकल का सर-लश्कर<sup>३</sup> था, बहुत दिलावर था, जो इश्क के लश्कर ते मोड खाया, शहर हिदायत कू आया। हिम्मत कू बोल्या कि दिल तो जस्मी होकर पड्या, हुस्न के हात चड्या। अकल शिकस्त खाकर तायब हुआ, खुदा जाने किवर गायब हुआ। जो कुछ कजा थी, सो हुई, खुदा की रखा सो हुई। हिम्मत ने सिर धुनकर कहा कि "अकल का मुँज पर हक बहुत है, हवयारी यो है कि इस वकन अकल होर दिल की खबर लेना उनोकू तकवा देना। बैत—

जिसे जो कोई प्यार करता है।

हकयारी वो पार रखता है\* ॥

इश्क के लश्कर सो बी फिरकर झगडा करे रगडा करे, यक नाँव करे, मारें

१ जाँघ, २ दुष्ट आश्रुति, ३ सेनापति, ४ पतिव्रता।

\* वही, पृ० १९३।

या मरै। हिम्मत यो बातकर ल्होआ<sup>१</sup> हात कर अपना लश्कर मुस्तैद किया, . . . एक-एक की गिनती लिया। चारों तरफ ते उठियाँ फौजाँ, जानौ कहर<sup>२</sup> के दरिया की मौजाँ। शहर दीदार की तरफ चल्या, . . . जानो डूंगर हिल्या, ठारें ठार खलक खलबल्या। केतेक देसाकूँ कामत के बोस्तान<sup>३</sup> जमें आया। भाई कूँ अकल होर दिल का अहवाल पूछ्या गले लाया।

कामत बोल्या कि . . . “ए हिम्मत तू खूब यो पूछ्या। तुजपर हजार रहमत। . . . अकल पादशाह एत्याँ कूँ लिया-दिया, खिलाया-पिलाया, बले इस वक्त उसे पूछने तुझ बगैर यहाँ कौन आया? . . . एताल क्या पूछना उसका न हाल? आज यक साल है, कि दिल हिजराँ<sup>४</sup> के कोट में बहुत बदहाल है, होर अकल बी शहर। तन कूँ गया है अपने कदीम वतन कूँ गया है। इस्क का बहुत लश्कर है। इस्क बहुत जोरावर है। इस्क सो जेता कोई लडेगा, पूरा ना पडैगा। इस्क सों मिल चले तो च नफा है, नहीं तो बहुत जफ़ा है। इस्क ते लड़कर क्या किया, झगडकर क्या किया, अपसकूँ खराब किया। लडकर क्या पाया, अपना मरम गँवाया, . . . बहुत आखिर पचताया। . . . बैत—

अकल सों लड अक्वल अकल सों विचार।

अकल जाँ न चले वहाँ तरवार॥

. . . जो दर्द दारू<sup>५</sup> ते खूब नही होता, उसे दाग देना, यो बात इसते कहे कि बातते कोई कुछ पन्द<sup>६</sup> लेना। एक बात है मेरी फ़ाम कर। जितना सकैगा उतना दोस्ती सों कामकर। इस्क बहुत बड़ा पादशाह जोरावर, समज सों लड अकल ते नको पड टुक मुलाहिजा कर। . . . गरूर कूँ जीवपर आये, तो कोई ल्होये पर हात भाना, चुपे च ल्होये पर भाना सो बला जीव पर ल्याना। यो क्या फ़ाम है? यो क्या काम है? . . . इस फ़ाम नको पड़ नको लड, नको झगड़। सुलह सों काम न होय तो लडना, तदवीर ना चलै तो झगड़ना। . . . लडे कूँ नको कर इज्तराव<sup>७</sup>, भौताँ का होयगा घर खराब। . . . इस्क का लश्कर बहुत बेनिहायत, जिधर देखैगे उधर उसकी विलायत। . . . बडे डूंगर पर न्हन्ना डूंगर पडे, फत्तर<sup>८</sup> ते फत्तर जुदा होये न्हन्ना डूंगर बालू होकर सब झडे। . . . सत में पीट रगडकर सूल उठाना, आकिल यो काम क्या माना। . . . एताल तदवीर इसकी यो है कि इस्के च सों इस्क होना, इस्के च कूँ समझाना, इस्के च कूँ अपना करना। अगर कोई बडे की अदब रख्या तो न्हन्ना नहीं होता, नै रख्या तो कोई सीके काम में मना नहीं होता। बड्याँ की अदब रखना अपनी बडाई है, यो बडाई बड्याँ ते आई है, यो बडाई न्हन्नाँ कूँ, बड्याँ कूँ सबकूँ भाई है\*। . . .

कामत हिम्मत का भाई, कामत की नसीहत हिम्मत की खातिर आई। हिम्मत लश्कर सब अपना कामत कने छोड्या, कामत के कहे पर इस्क सों जोड्या। . . . दिल का कपट दूर किया, हट दूर किया। इस्क कूँ ‘बडा है’ कर जान्या, इस्क की बडाई मान्या। इस्क ने हिम्मत

१. हथियार, २. क्रोध, ३. बाग, ४. वियोग, ५. दवा, ६. शिक्षा, ७. अधीरता, ८. पत्थर।

\* वही, पृ० १९५।

कूँ गले लगाया। इस्क कूँ हिम्मत पर बहुत मेहर आई, सच्ची बात सब किमे भाई। रहनेकूँ अजायब नादिर<sup>१</sup> एक जागा दिया, बहुत तवाजा बहुत ताजीव<sup>२</sup> किया। बाट की माँदगी चडी थी, सो उमका उतार हुआ, हिम्मत दिल करार हुआ। पछी इस्क ने उसे एक रात खिलवत<sup>३</sup> में बुलाया। हिम्मत ने लई वाता इधर उधर बियाँ, जिधर तिधर बियाँ मुनाया। उस वार्ता में अकल और दिल की बी वार्ता ल्याया। इस्क बहुत खुश होकर राजी हुआ। इस्ककूँ बहुत खुश आया। आखिर करार हुआ कि इस्क पादशाह<sup>४</sup> के घर अकल कूँ वजीरी देना, सब पर अमीरी देना, इस्क जैसे पादशाह कूँ अकल जैसा वजीर होना। दिलावर लोगो की सुहवत नहीं भाई, बादशाही जाकर वजीरी आई। इस्क पादशाह<sup>४</sup> ने अपने मेहर खुसद चेहर सरलस्कर कूँ फरमाया कि शहर बदन कूँ वेग जा। होर अकल कूँ बहुत दिलासा देकर, बहुत दिल हात लेकर इज्जत मो समजा कर मुँज लग लेकर आ। होर वह कि दिल आजुर्दा<sup>५</sup> नको कर, तू हमें भाई है, हमना तुमना में क्या जुदाई है? हमारी वजीरी तेरी पादशाही ते कुछ कम नहीं है, दिल खुश रख कुछ गम नहीं है\*।

मेहर यो बात सुन शहर बदन कूँ खाना हुआ, बहुत वेग च जाना हुआ। अकल मो मुलाकात किया, जो इस्क क्या था मो बात किया। अकल ने दिल का पूछधाँ अहवाल मेहर ने कहा "दिल धी है खुशहाल, तेरा बी बुलद हुआ अकवाल<sup>६</sup>।" वर अब अनन्द बढाई, तेरी मकसूद<sup>७</sup> हासिल हुई मुराद घर आई।

अकल अदेश देख्या कि लश्कर डूँडचा, बादशाही का बद छूटचा, फिर लडने का सकत नहीं, तदवीर कूँ बी गत नहीं। मुल्क हुआ परागदा<sup>८</sup>, साहेब होकर बैठया हर एक बदा। घर-घर अमीर, घर-घर राजौन घर घर तदवीर। हर कोई सरखुद कोई नहीं सुनता किसी की बुद। जिसे देग्यता हूँ वो दिल में बदनीयत करता इस्क बादशाह सो बहुत डरता। जीत देने वने थे जो काम पडे, वो दोस्त सब दुश्मन होकर सडे। इताल फिर पडे वस्न, इत ल वी की पादशाही का का तख्त? इस्क मो मिलने च नफा है। (अकल ने) कहा बहुत खूब हमें दोनो मिल जावें, इस्क फरमाता सो खातिर ल्यावें इस्क सो मुलाकात करे, अपने जीव के बारे बात करे‡।

बादशाही चिन्ता—

मेहर के सगात अकल रातें रात इस्क के हजूर आया, हुआ दिया,

१ दुर्लभ, २ सम्मान, ३ एकांत, ४ परेशान।

\* वही, पृ० १९८।

५ प्रताप, ६ इच्छित।

† वही, पृ० १९८।

७ उजाड़।

‡ वही, पृ० १९९।

दस्तबोसी किया। इश्क कूँ बी भौत भाया। इश्क ने वी अकल कूँ गले लगाया, दिलासा दिया बहुत बहुत समजाया। कहा... "इताल मै पादशाह कूँ वजीर, तेरे हात में दिया अपना मुल्क अपनी सब तदबीर। तुजे भाये सो कर।... मै मस्त हूँ, मेरी निगहवानी मे अच्छ। मै होर शराब, राग होर महबूब, मै इश्क हूँ, मुँजे यो च खूब। बाकी का दर्दसर तूँ जाने। यो दर्दसर मुँज लग नको दे आने। मँगता हूँ, इस दुनिया मे दो देस बे-गम हो अछूँ।... कब लग इस दुनिया में गिरिफ्तार हो अछना, अपने दिल की खुशी ते बेसार हो अछना। सुबा उठकर यो लोकोँ का कुचाट, दिल... बहुत पकड्या है उचाट। किस किस सों जँग किस किस सों आश्ती<sup>१</sup> करूँ, केताँ कूँ समझाऊँ, केताँ की दिल दास्ती करूँ? जनम यों च किया बरबाद, ना दिल की खुशी न खुदा का याद। एती आरजू सों दुनिया में आना होर तख्त पर बैठ इधर उधर का गम खाना।... इधर की हाँक उधर का पुकार, मुल्क में गौगा ठारेंठार।... तख्त पर बैठ तो क्या बादशाही, आई ऐशो-इशरत का नांव है बादशाही।... दो देस की दुनिया बादशाहों के घर में दायम<sup>२</sup> धँगाना-अछना, दायम हंसना-खेलना, लेना-देना, पीना-खाना अछना, गाना-बजाना अछना, घर का एक यात्रा एक हाट हो रहना, रात-देस तमतमाट हो रहना।... बादशाह का घर बादशाह के जैसा दिसना... बादशाह के घर में कोई आये तो यों अछना जानो मेजबानी कूँ आया है, गमकूँ विसर जावे जानो शादमानी कूँ आया है। दुनिया की बहिश्त है बादशाह का घर, न कि बादशाह के घर में आये बी दर्दसर।... नेम होर धरम की नांव बादशाही है।... बादशाही आती वले बादशाही कर जानना बहुत मुश्किल है, बादशाह होकर अपस पिछानना मुश्किल है। यो जो लश्करी लश्करी धने की झडती देता, त्यों बादशाह बी बादशाही की झडती देता है, यानी अदल होर इंसाफ़ करना, खलक कूँ आसूदा रखना, खलक कूँ मुराद कूँ अँपडाना<sup>३</sup>, खलक की दुआ लेना है।... खलीफ़ा यानी खुदा की जागा पर बैसनहार, हर एक बात कूँ हकसों करना बूज विचार।... यो खुदा का खलीफ़ा सा दिस आयेगा, उसका चलंत बी खुदाकूँ भायेगा।... यहां हक चलना हक पर दिल धरना है, बादशाही करना खुदाई करना है।... एताल मुँजे तुज जैसा वजीर मिल्या है, खुदा है मद देख हुआ है।...

आखिर जिस वक्त कि इश्क पादशाह की अकल पर वजीरी मुकरर हुई, इश्क पादशाह<sup>०</sup> हिम्मत कूँ फ़रमाया कि दिल कूँ हिजराँ के कोट मे रकीब ने दुँद सों बंद किया है, ... तूँ जाकर... दिलकूँ... वहां ते मेरे हजूर ल्या, होर उसके पाँव में का बंद काड<sup>४</sup> कर उस रकीब बे-नसीब के पाँव मे भा। होर गैर कूँ जो उसकी दुख्तर<sup>५</sup> है... उसे बी खूब कलब जागे में कद कर आ। जो वह कई निकल न जावे, वो कई झाँकने की फुर्सत ना पावे। वो बहुत बुरी है, शकर की छुरी है, जां जायेगी, वाँ बला बेसायेगी।\*

हिम्मत ने इश्क पादशाह कूँ सलाम किया, मुद्दा सब फ़ाम किया। हिजराँ के कोट कूँ चल्या।... वहां जाकर लडकर झगड कर कोट लिया, झण्डा फतह किया। दिल कूँ उस कोट में तोभार ल्याया। दिल के पाँव का बंद काडकर रकीब... के पाँव में भाया। होर गैर कूँ बी

१. मित्रता, २. सदा, ३. पूरा करना, ४. वियोग, ५. निकाल, ६. बेटी।

\* वही, पृ० २०१।

पुराने घर में छोड़्या, चारों तरफ ते बादान चिया, दरवाजों के पाटां जोड़्या, कि दुसरी बार ऐसी शैतानी न करे, दो देस अदब पावे, टुक उरै। घेर खातिर बी जीव तिलमिलता, बले क्या करना दुनिया का काम है, अदब किये बाज नही चलता। पछी हिम्मत ने दिलकू बहुत दोस्तीदारी सो इश्क पादशाह० के हुजूर ल्याया, दिलकू हार अकल कू होर इश्क कू एक जागा मिलाया। यो सब जो सगे, एक्स के गले लगे। अदावत<sup>१</sup> होर हट दूर हुआ, सब कोड-कपट दूर हुआ। खातिर अकल होर इश्क होर हिम्मत मिल देंगे कि दिलका हुस्न मो अकद<sup>२</sup> करना (क्यों) कि दिल ने हुस्न खातिर बहुत जफा<sup>३</sup> देख्या है, बहुत सात्या है।\*

### (क्ष) उपसहार—

सब मिले, सब हुये खुशहाल। वहे एताल दिलकू ना विमरना, यो काम अदेशे हूँ सो करना। इस काम कू मव करकर दिये। व्याह का बाज भाडे, डरे, ठारेंठार दिये घर सवारे। जागा जाग नकश नगारे। सदर<sup>४</sup> विधाये पाचे, रभा, उरवमी, मेनका पातुरां नाचे। ठारेंठार आराइश<sup>५</sup> किये। दिल सूरज का हुस्न चाद सो जलवा दिये नाज, गमजा, इशवा, लताफत, मेहर छद यो चदनियां सारिया उस सूरजपर उस चांद पर तारें कारियां। मुदनरी तमाशा देखने आई, जीहरा ने जलवा गाई। इताल गमे विसरने खातिर इशरत की खिलवत करने खातिर फूलां मो सेज सवारे छपर पलग का पर्दा उतारे। दोनों दिल खोल दिये, गुजरा किस्सा बोल लिये। एकमकू एक गले लाते, एकस पर एक कुर्बान जाते। एकस की खातिर एक तडफडाते, एकस के एक पांव पडते आह मारते उनास भरते। एकमकू एक देखते नौद उड गई, नही सोने। इताउ की मुशी याद आई तो हँमते, अब्बल का दुख याद आया तो रोने। अपस में अपे ज्यो जाते त्या बहुत सवाद सो मव गत गुजराने। पांव में पांव, सीने सा सीना अघर पर अघर हात में हात दोनों मिल यो मोने, जानो एक बजूद एक जाते। मुरव्वत चुल्बुलाने लगी, मुहव्वत आख्यां में घुलने लगी, बगाड्या गोर किया। घुंगरु गुल उचाये, कमर तें जर कमर खुलिया, हारा सीने पर दूंद लाये, फ्ला खूये<sup>६</sup> में भिगें तो का तोये च कुभलाये। खुन्बोर्ड की डोरी छुटी, चौधर वास की महकार उठी। दो चार प्याले शराव पिये, दुनिया में जो कुछ करते मो गये।

हुस्न घन हाँक मारी, चिलचिलाकर उठी। दिल वादशाह चतुर जीहरी। हुस्न नार करी रोने के बहाने। दिल लग्या गले लान्हा समधाने। रोनी थी, सो यकायक हस पडी भी, अपन में वो गले लगने लगी धडी-घडी भी। वो ही मुहव्वत वो ही प्यार, एकम पर एक मदक्रे<sup>७</sup> एकम पर एक बलिहार। दोनों कू हुआ बमाल<sup>८</sup>, अपना दिल खुश तो सब आलम खुशहाल। दिलकू मिल्या जीव का जानी।

दिल ने खातिर करार किया, धरदार किया दिलकू फजदां हुये, फजन्दां खिरदमुदा<sup>९</sup>

१ दुश्मनी, २ व्याह, ३ जुल्म। \* वही, पृ०-२०३। ४ फर्श, ५ सजावट, ६ क्यूे। ७ बहो, पृ० २०५। ८ नौछावर, ९ मिलन, ९ बुद्धिमान्।

हुये । उस फर्जन्दाँ में का बडा फर्जन्द सो यो किताब (जो) है अपने वक्त का लुकमान . . . अफलातून, अपने वक्त का खुसरो . . . फ़रहाद मजन् अपने वक्त का खाकानी-अनवरो-सादी . . . जो किताब पादशाह कूँ मजलिस में फिरे, मोतियाँ के दरिया में तरे, आशिकाँ का दिल बहलाता, माशूकाँ कूँ तपाता । सब के दिलकूँ इससो काम, बहुत इसमें अक़ल बहुत इसमें फ़ाम<sup>१</sup> । जाँ यो अछै वाँ दिलगीरी ना आवै, सुहबत इसकी सबकूँ भावै । . . .

. . . वारे जिस वक्त था एक हज़ार व चहल व पंज (१०४५ हि०), उस वक्त जहूर पकड़ाया<sup>२</sup> यो गंज । जो कोई साहेबे-सखुन<sup>३</sup> अछैगा, जो कोई साहेबे-फ़न<sup>४</sup> अछैगा,<sup>५</sup> उसे यो सखुन<sup>६</sup> असर करैगा, मस्त बेखबर<sup>७</sup> करैगा, अपना करैगा अपनी उधर<sup>८</sup> करैगा । वो पिछा-नैगा . . . इमना<sup>९</sup> याद करैगा . . . अजब मर्द<sup>१०</sup> था कहैगा, अजब साहेबेदर्द<sup>११</sup> था कहैगा । . . .

हज़ार शुक्र कि वारे अल्हम्दो-लिल्लाहि किताब तमाम हुआ, इताल जों हस्न होर दिल अपनी मुराद कूँ अँपडे . . . त्यों पादशाह होर पादशाह के दोस्ताँ . . . अज़ीजाँ . . . ख्वेशाँ<sup>१२</sup> . . . करावंताँ, पादशाह के प्यारियाँ, प्यारे, मांगते, मंगनहारे, पादशाह के खिदमतकाराँ . . . सब अपनी मुराद कूँ अँपडो,<sup>१३</sup> उनों कूँ गैब की न्यामत सँपडो\* . . . ।

---

१. समझ, २. प्रकाशित हुआ, ३. वाणीस्वामी, कवि, ४. कलास्वामी, कलाकार, ५. रहैगा, ६. वाणी, काव्य, ७. मस्त, बेहोश, ८. अपने को उस ओर, ९. हमको, १०. अद्भुत पुरुष, ११. वेदनावाला, १२. मिले, १३. पहुँचे ।

\* वही, पृ० २०५ ।





**भाग २**  
**मध्यकाल (१५००-१६७० ई०)**

(  
2

(  
1

, ,

)

—

+  
R  
2

## १९. मुहम्मद कुल्ली (१५८०-१६१२ ई०)

### १. कवि

सामन्तशाही युगमें किसी सामन्त के सहारे साहित्य को आगे बढ़नेका मौका मिलता है। दक्खिनी हिन्दीके लिये ऐसा सुयोग्य तब मिला, जब कि गोलकुण्डाकी गद्दी पर मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५८०-१६१२) बैठा। यह ठीक है, कि मुहम्मद कुल्ली दक्खिनी हिन्दी का प्रथम कवि नहीं है। उससे पहले ख्वाजा बंदानिवाज (मृ० १४२१ ई०) का 'चक्कीनामा', अशरफ (१५०३ ई०) का 'नौसिरहार', फीरोज (१५६४ ई०) का 'तौसीफनामा', बुरहानुद्दीन जानम् (१५८२ ई०) का 'इरशादनामा' लिखा जा चुका था। सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब का शासन गोलकुण्डा की बहुत ही शांति और समृद्धि का समय था। उसके दादा कुल्ली कुतुब (१५१८-४३) ने बहमनी राजके ध्वंसावशेष पर अपने राज्य की नींव रखी। वह एक साहसिक वीर ईरानी तुर्क था। लेकिन उसका पोता और पाँचवाँ उत्तराधिकारी एक हिन्दू माँ का पुत्र होने से अपने देश और उसकी चीजों का अधिक परिचय ही नहीं रखता था, बल्कि उनके प्रति यथाशक्ति प्रेम भी रखता था। उसके बाप-दादा जहाँ अपनी धार्मिकताके प्रमाण-स्वरूप खूब दाढ़ी रखते थे, वहाँ यह कवि-सुल्तान दाढ़ी से ही मुक्त नहीं था, बल्कि उसकी वेशभूषा भी विल्कुल स्वदेशी थी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि वह इस्लाम का भक्त नहीं था। कोई ऐसी कविता नहीं है, जिसमें मुहम्मद कुल्लीने अल्लाह और उसके पैगम्बर की प्रार्थना-स्तुति न की हो।

मुहम्मद कुल्लीका बाप इब्राहीम कुल्ली भाई से जान बचाकर विजयनगर में शरणार्थी हुआ था। गद्दी प्राप्त करनेमें उसे सबसे अधिक सहायता हिन्दुओं से मिली थी, इसलिये हिन्दुओं के साथ उसका अधिक अच्छा संबंध होना स्वाभाविक था। इब्राहीम की एक रानी भागीरथी आध्र-महिला थी, जिसको ही भविष्य के महान् कवि को पैदा और प्रभावित करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। कहा जाता है—मुहम्मद कुल्ली ने तेलुगु-भाषा में भी कवितायें की थीं, किन्तु उनके उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं। अपनी कविता में संस्कृत-शब्दों का इसने जैसा उपयोग किया है, उससे जान पड़ता है, कि उसको भारतीय साहित्य का कुछ परिचय अवश्य था। मुहम्मद कुल्लीका जन्म १५६४ ई० में हुआ था और बाप के मरने के बाद १५ साल की उमर (१५८० ई०) में वह गद्दी पर बैठा। उसके पिताका बहुत-सा समय लड़ने-भिड़ने और राज्यके विस्तार करनेमें बीता था। कवि सुल्तानको शांतिसे कविता करने तथा प्रेम और मदिराके महोत्सवों को मनानेका पूरा अवसर मिला। उसके जन्मके एक साल बाद (१५६५ ई०) दक्षिणकी पाँचों मुसलमान रियासतोंने मिलकर विजयनगर को खत्म कर दिया। उसके समकालीन

अकबरने गुजरात तक ही अपनी विजयको सीमित रखा। इस प्रकार दक्षिण और उत्तर दोनों ओरमें किसी बड़े शत्रु का भय नहीं था। हाँ, पाँचों बहमनी रियासतोंकी आपसमें कभी-कभी अनबन होती रहती थी, लेकिन उसने मुहम्मद कुल्लीके समय कोई गम्भीर रूप धारण नहीं किया। मुहम्मद कुल्लीकी बहिन चाँद बीबी अहमदनगरकी प्रसिद्ध वीरागना थी, जिसने मुगलोकें सामने सिर नवाना स्वीकार नहीं किया। मुगल-साम्राज्यका सीधा सबब अभी गोलकुण्डा या बीजापुरसे नहीं हो पाया था।

गोलकुण्डाका यह रगीला सुल्तान कविताकी भाँति दूसरी ललित-कलाओंका भी प्रेमी था। मदिरा, मदिरेक्षणका प्रेमी तो उमे होना ही चाहिये था? जवानीमें वह गोलकुण्डाके समीप चचलम् की नर्तकी भागमतीके अपना हृदय दे चुका था। इस प्रेमकी कितनी ही कथायें प्रसिद्ध हैं। इसी चचलम् गाँवमें मुहम्मद कुल्लीने अपनी प्रेमिका भागमतीके नाम पर भागनगर बसाया। पीछे जब भागमती राज-महिषी बनकर हैदरमहलकी उपाधिमें विभूषित की गयी, तो भागनगरको हैदरावादके नामसे प्रसिद्ध करने की बहुत कोशिश की गई। इतिहासकार फरिश्ता तक ने लिखा है कि हैदरावाद नाम रखा तो गया "लेकिन दरम्यान खलायक मशहूर व भागनगर अन्त, न हैदरावाद" (लेकिन लोगोंमें यह शहर हैदरावादके नामसे नहीं, बल्कि भागनगरके नामसे प्रसिद्ध है)। फरिश्ताकी शिकायत हो सकती थी, लेकिन अब तो दुनियाँ भागनगर को कब की भूल चुकी है और सभी हैदरावाद को जानते हैं। सभव है, आंध्र-प्रदेश की राजधानी होने के बाद फिर उसे भागनगर बनने का सौभाग्य प्राप्त हो।

मुल्तान मुहम्मद कुल्ली (१५८०-१६१२ ई०) अकबर का तरुण सम-सामयिक था। वह गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) से ११ साल पहिले मरा। कहते हैं, उसने एक लाख से अधिक पद्य (शेर) रचे।

## २ कविता

भाषा—मुहम्मद कुल्ली ही नहीं, बल्कि दूसरे भी मुसलमान कवियों के सामने देशभाषा को अपनाने के समय यह सवाल बराबर आया, कि किस रूप में भाषा को अपनाया जाय। दक्खिनी-हिन्दी के इन कवियों की रचनाओं में संस्कृत और हिन्दी के शब्द बहुत अधिक मिलने हैं, जिन्हें आगे चलकर कम-से-कम करते अन्त में केवल व्याकरण हिन्दी का रहने दिया गया। पर, पुराने कवियों ने भी हिन्दी छन्दों को कभी नहीं अपनाया, वह सदा अरबी छन्दों को लेते रहे। इस प्रवृत्ति को देखने में साफ मालूम होता है, कि यदि हिन्दुस्तान ईरान की तरह पूणतया मुसलमान हो गया होता तो हमारे छन्दों की भी वही गति हुई होती, जो कि ईरान में हुई। ईरान के फिरदौसी जैसे राष्ट्रवादी कवि भी अरबी-छन्दों का ही प्रयोग करते रहे। विद्वानों को बड़ी प्रसन्नता हुई, जब कि मध्य-एशिया की मरुभूमि से मानी की किसी पुस्तक में पुराने ईरानी छन्द देखने को मिले। वस्तुतः इन कवियों ने भाषा के हिन्दीकरण की ओर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना कि उमके इस्लामीकरण की ओर।

मुहम्मद कुल्ली की कविता पर सूफी विचारों की भी छाप है, इसलिये यह कहना मुश्किल है

कि वह कहीं लौकिक प्रेम का वर्णन करता है और कहीं पारमार्थिक प्रेम में चला जाता है। पिया के चरना और साई समझावना ऐसी ही संध्या-भाषा की कवितायें हैं। इसका असर वियोग-संबंधी कविताओं में भी मिलता है। चांदनी और पिया भी एक सुंदर कविता है। नखशिख के भी कितने ही वर्णन मुहम्मद कुल्ली की कविता में मिलते हैं। प्रेम और बुद्धि का झगड़ा सभी जगह कवियों के हृदय में रहता है। मुहम्मद कुल्ली बुद्धि-पंथी नहीं, प्रेम-पंथी है।

गोलकुण्डा पर ३२ वर्ष शासन करके कुल्ली ने गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त से ११ वर्ष पहले शरीर छोड़ा। इसी ने हैदरावाद को संस्थापित कर चहारमीनार, दादमहल जैसे अनेकों सुन्दर प्रासादों से अलंकृत किया, जिनमें से अब थोड़े ही बाकी रह गये हैं। हमारा सौभाग्य है कि हिन्दी के इस महान् कवि की साहित्यिक कृतियाँ अब भी सुरक्षित हैं, यद्यपि वह नागरी-अक्षरों में प्रकाशित नहीं हुई हैं।

सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुबशाह की कवितायें दूसरी दक्षिणी कविताओं की तरह अरबी-लिपि में लिखी गई हैं। यद्यपि तथाकथित मुगलों के आदिपुरुष तैमूर के समय अरबी की सुधरी और सुन्दर लिपि नस्तालीक आविष्कृत हो चुकी थी और बाबर तथा उसके उत्तराधिकारियों ने उसका भारतवर्ष में खूब प्रचार किया, लेकिन दक्षिण में बहमनी-राज्य अब भी टेढ़ी-मेढ़ी अरबी लिपि को ही इस्तेमाल करते थे। मुहम्मद कुल्ली का दीवान (अकारान्त क्रम से कविताओं का संग्रह) कवि के जीवनकाल ही में लिखा गया, अब भी मौजूद है। उसके अक्षरों की सुन्दरता देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है। अरबी-लिपि में स्वरों की कमी के कारण हिन्दी, विशेषकर तत्सम शब्दों का लिखना कठिन था, किन्तु उन्हें शुद्ध लिखने के लिए मुहम्मद कुल्ली के दीवान में उसी तरह स्वर-चिह्नों को बड़े ध्यान से लगाने की कोशिश की गई है, जैसे कुरान लिखने में।

धार्मिक त्योहार और रीति-रिवाजों के बारे में मुहम्मद कुल्ली ने कितनी ही कवितायें की हैं, किन्तु उसका जौहर तब खुलता है, जबकि वह धर्म की लक्ष्मण-रेखा से बाहर जाता है। वसन्त इस्लामी त्योहार नहीं था, जलवा (सोहाग) भी प्रेम से अधिक संबंध रखता है, वर्षाकाल और ठंड-काल (शीत ऋतु) के वर्णनमें कवि मुक्त होकर प्रकृति के क्षेत्र में विचरण करता है।

अन्य राजाओं और सुल्तानों की तरह इस रसिक कवि का अन्तःपुर भी सुन्दरियों से भरा हुआ था। भागमती नृत्यकला और संगीत में उस समय अद्वितीय थी। जिसके लिए मुहम्मद कुल्ली का उस पर उतना ही प्रेम था, जितना उसकी मृत्यु के सात वर्ष पहले गद्दी पर बैठनेवाले जहाँगीर का नूरजहाँ से (अथवा शाहजहाँ का मुमताजमहल से)। भागमती अभी भागमती ही थी, जब कि उसके नाम से भागनगर बसा। किन्तु जल्दी ही सुल्तान मुहम्मद कुल्ली ने अपने हरम में स्थान देकर उसे हैदरमहल का नाम प्रदान किया और जैसा कि अभी कहा, उसने असफल प्रयत्न किया कि भागनगर को हैदरावाद कहा जाय। हैदरमहल की प्रशंसा में कई कवितायें मुहम्मद कुल्ली ने लिखी हैं। भागमती गुण में ही नहीं, रूप में भी विशेषता रखती थी।

## ३ मगलाचरण

(१)

चंद सूर तेरे नूर<sup>१</sup> ते<sup>२</sup> निस दिन कुं नूरानी<sup>३</sup> किया ।

तेरी सिफत<sup>४</sup> किन्<sup>५</sup> कर सके तू<sup>६</sup> आपि मेरा है जिया ॥

तुंज नाम मुंज आराम है, मंज जीव सो तुज नाम है ।

सब जगकुं तुझसां काम है, तुज नाम जपमाला हुआ ॥

तुज याद मे जग मोहिया, है जग उपर तेरा मया<sup>७</sup> ।

जो जग मंगे<sup>८</sup> सो तू दिया, तू ही जगत का है दिया ॥

जीता हूँ तेरा आसते, आया है रह्म<sup>९</sup> अकास ते ।

जं कुच मँगू<sup>१०</sup> तुज पासते, सो है सो मुजकुं तू दिया ॥

भौतिक<sup>११</sup> मया सेती अपन, दीता<sup>१२</sup> कुतुब कुं सब दखिन ।

सेऊँ<sup>१३</sup> नवी<sup>१४</sup> का नित चरन, जब लग है तन म्याने<sup>१५</sup> जिया\* ॥

(२)

दिला<sup>१६</sup> मंग खुदाकन<sup>१७</sup> कि खुदा काम देवेगा । तुमन मनके मुगदां<sup>१८</sup> के भरे जाम<sup>१९</sup> देवैगा ॥

खारिज<sup>२०</sup> की अगिन कह<sup>२१</sup> के पानी से बुझागा । बराहिम नमूने<sup>२२</sup> मुझकुं सुख आराम देवैगा ॥

दु अलम<sup>२३</sup> के दुवारे खुले है ऐश<sup>२४</sup> के खातिर । जो कोई नवी<sup>२५</sup> नामसो दिल राम<sup>२६</sup> देवैगा ॥

जे दाल मैं मुहब्बत अली व आले-अली<sup>२७</sup> वाह । उसे खूने-जिगर दाहवे<sup>२८</sup> नाकाम<sup>२९</sup> देवैगा ॥

न खा गम तुंजमाने<sup>३०</sup> का तेरा काम खुदासो । हर एक पस्तिमे<sup>३१</sup> तुजकुं बुलद नाम देवैगा ॥

अपन बस्त की रोते<sup>३२</sup> कही दिल में न कर गम । तुजे दाहवे सेहत<sup>३३</sup> सो शफाजाम<sup>३४</sup> देवैगा ॥

रकीवी<sup>३५</sup> के दुखो सेती कुतुब शाह तू न कर गम ।

खुदा सारे रकीवां के गले दाम<sup>३६</sup> देवैगा† ॥

१ प्रकाश, २ से, ३ प्रकाशमान, ४ गुण गान, ५ कौन, ६ माया, छोह, ७ चाहे,  
८ कृपा, ९ बहुत कुछ, १० दिया, ११ पूजूं, १२ पैगम्बर मुहम्मद, १३ इतने में ।

१४ कुल्लियात सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब सपादक डॉ० सैयद मुहीउद्दीन कादिरि और  
(भाग १) पृ० ३ ।

१५ हे हृदय, १६ भगवान् के पास (रहेलखडी), १६ अभिलाषाएँ, १७ प्याला,  
१८ बाहरियो, विद्यार्थियो, १९ कोप, २० इब्राहीम की भाति, २१ दोनो लोक, २२ आनन्द,  
२३ पैगम्बर (मुहम्मद), २४ आराम, २५ अलीको सतान, २६ दवा, २७ बेकार,  
२८ दुनिया का, २९ अवसाद में, ३० अपने भाग्य की निकृष्टता से, ३१ स्वास्थ्य की  
औषधि, ३२ स्वास्थ्यका प्याला, ३३ ईर्ष्यालु, ३४ फदा, फांसी ।

† वही, भाग २ (दीवान पृष्ठ १) ।

४. उत्सव

(१) नौरोज (नव-वर्ष)

नवा नौरोज<sup>१</sup> नवरंग जों कलियाँ-कलियाँ खिलाया है ।

बँदा नारियाँ कूँ फूल चुनडियाँ कमल कंचुकियाँ खिलाया है ॥६४५॥

सुरंग फुल प्याले शबनम<sup>२</sup> सों धुला मय<sup>३</sup> भर गुलाली तिस ।

सबज रंगी निहालाँ<sup>४</sup> नौरँगियाँ हत<sup>५</sup> दै पिलाया है ॥

दिसें जों बुलबुलाँ तिलतिल<sup>६</sup> तलाँ नारियाँकी नरगिस<sup>७</sup> पर ।

प्रेममय परमलाँ<sup>८</sup> दे तिनकूँ जीवाँ दे जिलाया है ॥

तरोताजे<sup>९</sup> तरावतसों कमल, गुललाल नारियाँ कूँ ।

बँदावन ताफते हरिये उपर फूलाँ फुलाया है ॥

भँवर फूलाँ के पिछड़ी<sup>१०</sup> में हो काला जों कि कोयल हो ।

हरी डालाँ उपर फिर फिर सुंदर फुलकर जलाया है ॥

चलाने ते भँवर के भर रहे सरवन<sup>११</sup> हमन कर की ।

कयाँ मुख मोड़ि कल्याँ सों फिर खुदा एकजा हिलाया है ॥६५०॥

कल्याँ कंचलियाँ क्वार्याँ नार्याँ कल्याँ कूँ नौ रोज आया ।

मुहम्मद सदक्रे<sup>१२</sup> कुत्वा कूँ अनन्दाँ सो मिलाया है\* ॥६५००॥

(२)

पिया मुख नूर<sup>१३</sup> ते<sup>१४</sup> है जावदाँ<sup>१५</sup> हम्<sup>१६</sup> ईद<sup>१७</sup> व हम् नौरोज<sup>१८</sup> ।

सूरज आओ हमट<sup>१९</sup> या न अधाँ<sup>२०</sup> हम् ईदो हम् नौरोज ॥१३७॥

मुवारक<sup>२१</sup> वन तेरे मुख-नूर सूरज ते हुआ पैदा ।

खराजाँ<sup>२२</sup> लेके आये हैं शहां<sup>२३</sup> हम् ईदो हम् नौरोज ॥

मुवारकवाद<sup>२४</sup> देने आइया नौरोज तुज दरबार ।

अदिक सुखते करें तारे कुराँ हम्० ॥

यहाँ आये हैं जीनत<sup>२५</sup> देखने तुझ वजमे-इशरत<sup>२६</sup> का ।

१. नववर्ष, २. ओस, ३. मद, शराब, ४. पौधे, ५. हाथ, ६. पल-पल, क्षण-क्षण, ७. आँख की तरह का फूल, ८. प्रेममद, ९. अभिनव, १०. पंखुड़ी, ११. कान, १२. नौछावर, बलिहारी ।

\* कुल्लियात, भाग १, पृष्ठ १२९ ।

१३. प्रकाश, १४. से, १५. सनातन, अमर, १६. भी, १७. महोत्सव, १८. नववर्ष, १९. तुला २०. प्रकट, २१. बधाई, मंगल, २२. कर, २३. बादशाह, २४. मंगल हो, २५. शोभा, २६. आमोद-गोष्ठी ।



यहाँका शाह, देने दौलताँ हम् ॥१४०॥  
 खतम हूररँ मजालिसँ देयने आया है छन्दाँ सो।  
 दिलाओ पान, बटियाँ चाँदे स्वाँ हम् ॥  
 फलकँ नी ते सो आये पेशकशँ अकवाल होर दौलत।  
 सुशी शादी सेती हम् मजियाँ हम् ॥  
 दमेदमँ मुस्तरीँ होर जोहराँ ल्याये है पवर नसरत् ॥२९॥  
 जो निकले दावगोँ साहेबकराँ हम् ॥  
 परम मोती ममुन्दर दिलते तब लें जोकसोँ भरभर।  
 तो आया सिज्दसँ करने आस्ताँ हम् \* ॥१४५॥

### (२) सुख विलास—

सदा होवे शह वज्मँ में वेह अनन्द । कि दौलत है उम शाह का सदैँ वुलद ।  
 सँवारे गगन से रंगीठे महल । रतन, जोत झलकँ किया सूर चन्द ॥  
 सजन के जशनँ में सुग्ज से भगत । दिखावें अजब दीमँ सो छद-बद ॥  
 सभी साज धजते है गुन भेद सो । निपजतेँ है उस सम्जते जिनके छद ॥  
 गरजने है उम धुन ते झाताँ गगन । जगत रक्शँ करता नई कुच गजद ॥  
 नही वज्म उस मारकाँ होर जकँ । नजर न लगै त्यो सुटोँ अग सपद ॥  
 नवी सवके कुतवा करै सुख विलास । कि दायमँ अठो ईद के त्या अनन्द ॥

### (३) जलवा (सोहाग)—

परम प्यारी का जलवाँ गाओ सारे । उमे चँद-सूरमो परियाँ सिंगारे ॥८२१॥  
 सुहागाँ भाग फुल मस्तक खिले है । सहेल्याँ आखी तोरे नवारें ॥  
 रवा दो तस्तँ जलवे का मुशी मों । कि चौधरँ चौक मोत्याँ सो सँवारे ॥  
 चढाओ नेल अब मातों सुहागाँ । मगाताँ हो के जोहराँ हतँ निगारे ॥  
 पिला शवंत देओ हाता मे चीडे । वदाओ सारियाँ मोत्याँ किनारे ॥  
 मुहम्मद कुत्व शह होर उस परी वूँ । मुदायाँ रव जदाँलगँ है सितारे ॥८२२॥

१ घन, २ देवकयारें, ३ सभा, ४ छल-छद, ५ से? ६ आकाश, ७ भँद,  
 ८ शोक-नाशक, ९ क्षण क्षण, १० शुक, ११. बृहस्पति, १२ विजय का समाचार, १३ वाव से,  
 १४ चक्रवर्ती, १५ शोक से, लालसा से, १६ प्रणाम, दडबतु, कोरनिश, १७ दरबार, आस्थान।

\* कुल्लियात, भाग ३, पृष्ठ २२।

१८ राजसभा, शाह का जलसा, १९ सौ, २० उत्सव, २१ छद-बद, २२ उपजते  
 (गुजराती), २३ रुचि, २४ नृत्य, २५ हानि, २६ सारखा, सद्श, २७ छोडो, फँको,  
 २८ आग में धूप, सपदको धूपकी तरह आगमें डालकर भूत भगाया जाता है, २९ सदा,  
 ३० रहो, ३१ सोहाग या सोहाग रात, ३२ नौछावर करें, ३३ सिंहासन, ३४ चारो धारे,  
 ३५ सोहाग, ३६ नाइन, ३७ बृहस्पतिग्रह, ३८ हाथ, ३९ हे भगवान्, ४० जबतक।

† कुल्लियात भाग १, पृष्ठ १६१।

(४) कंठमाला—

निपट धीट<sup>१</sup> शोखी<sup>२</sup> सों आकर खड़ी जब । सो औचट नज़र मेरी उसपर पड़ी तब ॥८६७॥  
 नवेली पिरितला कि है ठैर<sup>३</sup> नै मुज । सकी<sup>४</sup> मिलने तै पिउकू जाती करन<sup>५</sup> अब ॥  
 पियारी रै नाजुक कली जौ चँपे की । तो रेशम ते आले हैं वालाँ के उस खब ॥  
 दो खसार<sup>६</sup> उसके है रंगी गुलालाँ । ओ चलने कू देस हंसदरियाई होय सब ॥८७०॥  
 ओ—मुख पाक निर्मल है सूरज के नमने<sup>७</sup> । चँपे की कली जों सोहै नासिका छब ॥  
 नयन सांई के देख कुमलावै नरगिस । अधर है रसीले कि नावार्त<sup>८</sup> के छब ॥  
 नवी सदेके<sup>९</sup> कंठमाल जव पैन आई । कुतुब कंठ लाकर चुम्या उसके दो लब<sup>१०\*</sup> ॥

(५) राग (संगीत)—

मुकट रागाँ पियारी आप रागै राग गाती है ।  
 मुखारे राग गाती मुख लहराँसों सुहाती है ॥९०१॥  
 सबाही राग गाकर मुँज सुवा के तख्त बसलाओ ।  
 धनास्त्री गाके धन मुँजकू सुरंग प्याला पिलाती है ।  
 मेरे सँग मिल न जाती सुन के गाती संकराभरना ।  
 सिरि रागाँ जो गाती इस्तिरी तूँ मुँजकू भाती है ॥  
 अलापे कानडा गज्जा कमा भीं की चड़ाई है ।  
 इशक की आग में अब्रू कमाँ कोशी सिकाती है ॥  
 कि गौरी राग जो गावे, तो गोरियाँ का मुलक जीता ।  
 सुसारंग नयनि सब रंग में सुरंगों सो सुहाती है ॥  
 सभी रागाँ के गले फुलहार पाया है सो मल्हारा ।  
 जो गावै रामकेरी राम कर रावां रिझाती है ॥  
 सभी रागाँ मुहम्मद कुल्ब शह् कूँ जम सुहाये ते ।  
 नवी दौलत शेअर मेरा शकर निम्ने जगाती हैं ॥९०७॥

५. ऋतु

(१) बसन्त—

बसन्त आया सकी<sup>११</sup> जों लाल गाला । कुसुम चोला . . . . . ॥६७५॥

१. ढीठ, २. चंचलता, ३. ठहरना, ४. सखी, ५. युग, ६. कपोल, ७. नाई, सबूश,  
 ८. मिसरी, ९. पैगम्बर की बलि जाऊँ, १०. ओठ ।

\* वही, पृष्ठ १६८ ।

† वही, पृष्ठ १६८ ।

११. सखी ।

पपीहा गावता है मीठे वैंनां। मधुर रस दे अघर रसका पियाला ॥  
 पियारीहोरपियाहत<sup>१</sup> मेंसों हतले । सरो वन में न्हिजी<sup>२</sup> गल फूलमाला ॥  
 कँठी कोयल<sup>३</sup> सरस नांदा सुनावै । तनन् तनूतन् तनन् तनूतन्तला ला ॥  
 गरज बादल ते दादुर गीत गावै । कोयल बूके सो फुलवन के पियालाई ॥  
 सदा सेवा करै ऐसी गुसाईं । दलिदूर दूर कर करता निहाला ॥६८०॥  
 ननी सदवे<sup>४</sup> हुआ कुतुवा तेराजीत । दुंधां मीने<sup>५</sup> में सलता दुक्क भाला \* ॥

## (२)

उमगों से वमैत आई नुरानी<sup>१</sup> । कर्यां वसवत<sup>२</sup> मक्या<sup>३</sup> सब आरुसानी<sup>४</sup> ॥६८१॥  
 वसैत के फुल खिजे है अपरँगोले । हुआ हैरान देग उसतेई<sup>५</sup> मानी<sup>६</sup> ॥६९०॥  
 कुतल के झूले मोहते है ओमुख पर । कि जो फुलपर डुले भँवरा मोजानी ॥  
 जडित चगक्या सो<sup>७</sup> शह पहिले वमत जब । पिलावे नेह-मद तव शह कि म्यानी<sup>८</sup> ॥  
 बुहुक कोयल वमैत के गग गाई । कि पाई है उम रतमे सुल-निशानी ॥  
 हवा आकर सफा फुलवन वूतूँदे । कि देल ओ-नकश हो हैरान मानी ॥  
 नवी सदके<sup>९</sup> कुतुव शह बाई जमजम<sup>१०</sup> । सुहावै सँग भरे हुस्नो मुहानी<sup>११</sup> ॥६९५॥

## (३)

वसैत का फुल खिल्या है सो ज्यो याकूत रुम्मानी<sup>१</sup> ।  
 करो मिलकर सहेल्यां सब वसैत के ताई मेहमानी ॥१९०॥  
 वसैत का रत बुझाया है विरह अँगकूँ सुझ्यां सेती ।  
 नवेल्यां मिल करो मजलिस नवेली आज शाहानी ॥१९१॥  
 सकल झाडां कूँ लागे है जवाहर के नमन्<sup>२</sup> फूलां ।  
 सो फूलां सो करे तिल-तिल<sup>३</sup> पिया पर गीहर्-अफशानी<sup>४</sup> ।  
 वसैत फूला का शवनम<sup>५</sup> मय<sup>६</sup> सो भर साकी<sup>७</sup> सुराही में ।  
 जो उस मद ते मदन चडकर हमन रँग होय नुरानी ॥  
 जो गरजे मस्त हो बादल सुराही नित करै गल-गल<sup>८</sup> ।

१ हाय, २ डाला, ३ कोकिला-कठी, ४ पैगम्बर की बलिहारी, ५ दुश्मन की छाती ।

\* कुल्लियात भाग १, पृष्ठ १३६ ।

६ प्रकाशमान, ७ परिधान, ८ सखिया, ९ दुलहन की, १० उसको, ११ ईरान का पैगम्बर और प्रसिद्ध चित्रकार (ईसवी तीसरी सदी), १२ चरखियो से, १३ मध्य में, १४ पैगम्बर के नौछावर जाऊँ, १५ सदा, सवदा, १६ सौ-दर्य ।

† वहाँ, पृष्ठ १३८ ।

१७ रुम्माका पञ्चराग मणि (लाल), १८ भाति, नाई, १९ पल-पल, २० मोती की बरसा, २१ ओस, २२ मद, २३ मधुवाला, २४ कलकल शब्द ।

पियो प्याला ओ गलगल नादसों हें मेघ नैसानी<sup>१</sup> ॥  
 पिला साक्री सरासर मय कि ता होय् कश्क<sup>२</sup> हमनाकू<sup>३</sup> ।  
 कि इस मयते दिसै मुँजकू सदा सब राज् पिन्हानी<sup>४</sup> ॥१९५॥  
 अँवर होर यो दो मुश्को-जाफ़रा<sup>५</sup> का रत<sup>६</sup> आया है ।  
 इसी ते वार् उनोका जग में करता है गुलिस्तानी<sup>७</sup> ॥  
 निछल<sup>८</sup> फुलके अरक म्याने<sup>९</sup> गलाओ तुम कदम छँदसों ।  
 वले<sup>१०</sup> फितना<sup>११</sup> अरक<sup>१२</sup> सब बास में करता है सुल्तानी ॥  
 बँधाओ हाँजखाने<sup>१३</sup> चाँदो सूरज के सहेल्यो मिल ।  
 भराओ नीर अँमृत का कि खेलै रंग-अफ़शानी<sup>१४</sup> ॥१९८॥  
 वसँत फुलका हमायल पहन कर आई अँगन में छन ।  
 सौ फुल सिंगार के नकशाँमने हैरान है मानी ॥  
 बँदी चुनरी पिरित नकशे करी उस पर विगट तारे ।  
 नवे कद पर सुहाता है फुलाँ चोला अरूसानी ॥  
 सूरज किरना की चिर क्याँ हात में ले छरल यह चित सों ।  
 सहेल्यो सों अछो मुँजकू सदा ए खेल अरजानी ॥  
 नजर है मुस्तफा होर मुर्तजा का कुत्ब शह ऊपर ।  
 कि दुश्मन की पेशानी पर लिखे हर्फे-पशेमानाँ ॥  
 उनों के दुश्मनाँ ऊपर अजल ते लान वाजिब है ।  
 अगर होए समरकंदी बुखाराई वो मुल्तानी ॥  
 नजाकत शेर के फनमें खुदा बखशा है तूँ तजकूँ ॥  
 मआनी शेर तेरा है किया है शेर-खाकानी\* ॥

(२) वर्षा—

( १ )

रत आया कलियाँ का हुआ राज । हरी डाल सिर फूलाँ के ताज ॥१९४॥  
 मेहाँ बुँद का लेओ हत प्याला । रुप नार्याँ साजे एकसते एक साज ॥  
 तन थंडत<sup>१५</sup> लरजत<sup>१६</sup> जोवन गरजत । पिया मुख देखत कंचुकी कसब कसे आज ॥

१. वैशाखी बादल, २. हृदय कपाट खुलना, ३. हमको, ४. छिपा रहस्य, ५. कस्तूरी और केसर, ६. ऋतु, ७. पुष्पवाटिका, ८. निर्मल, ९. रसमें, १०. लेकिन, ११. झगड़ा, जाद्, १२. शराब, रस, १३. कुंडघर, १४. रंग-वर्षा ।

\* कुल्लियात, भाग ३, पृष्ठ ३४ ।

१५. ठंडा होता है, १६. काँपता ।

नारी मुख झमकै जैसे विजली । अचल वाक्क में सोहै उस लाज<sup>१</sup> ॥  
 केसफूल दीखै सितारे आसमाँ । उस जमाने की परी पद्मनी आये आज ॥  
 चौधर<sup>२</sup> गरजत होर मेंहाँ वरसत । इश्क के चमने चमन भीरा का है राज ॥  
 हजरत मुस्तफा<sup>३</sup> के सदके<sup>४</sup> आया वरमकाल । कुतुब शह इश्क करो दिन-दिन  
 राज\* ॥१५०॥

( २ )

सहेली बनी नीली रत में शिवानी । मेघा छाये अवर रंगारंग निहानी<sup>१</sup> ॥१६७॥  
 सोहे मीस अंचल घनुर<sup>२</sup> ज्यो गगन पर । मिरिग<sup>३</sup> में मृगनियाँ की कसबत<sup>४</sup> सोहानी ॥  
 पियारी के खूबे बुंद<sup>५</sup> मशाता<sup>६</sup> निगारे<sup>७</sup> । भवाँ कज<sup>८</sup> सोहेंयो ज्यो असमाँ समानी<sup>९</sup> ॥  
 इशिक<sup>१०</sup> के बने वन सो पिक नाद गावे । पपीहा के वोलाँसो पिड-पिड फगानी<sup>११</sup> ॥  
 चमन नादसो ताल दार<sup>१२</sup> बजावै । जोवन ले पखावज बजावै समानी<sup>१३</sup> ॥  
 गुलाबी है गालाँ पिया ले मल्हारी<sup>१४</sup> । नवेली नवी कोप्लियाँ ते जत्रानी ॥  
 नवी सदके<sup>१५</sup> ऐसे मिरियसाल<sup>१६</sup> नित नित । अली की दुआते छतर आसमानी<sup>१७</sup> ॥१७३॥

( ३ )

मिरिगसाल<sup>११</sup> आइया फिरते मिरिग-नयनी सिगाराँ कर ।  
 जडित मानिक बहुरियाँ लाल मोतियाँ लेके<sup>१२</sup> धाराँ वर ॥१८१॥  
 बदल जूडे मे केवडे फकुडियाँ<sup>१३</sup> झमकाओ विजलियाँ ज्यो ।  
 छिपा खोपे<sup>१४</sup> में फुलतारे बदल के अंधकाराँ कर ॥  
 रमीले कठ सो आलाप अब कोथल के कुहकारे ।  
 पपीहे नाद सो मद पिउ निते बदना<sup>१५</sup> खुमाराँ<sup>१६</sup> कर ॥  
 हर्या शीशा हर्या प्याला हर्या कसबत<sup>१७</sup> हर्या जोवन ।  
 हर्या ज्वानी हर्याली में न याँ मोत्याँ के हाराँ कर ॥  
 निछल<sup>१८</sup> मुख नीर पूराँ में मछ्या<sup>१९</sup> लाचन तेरा चचल ।  
 जोवन गज गर्जने ऊपर लटाँ वादल के माराँ कर ॥१८५॥

१ उसकी लज्जालुता, २ चारो ओर, ३ माय पैगम्बर, ४ नौछावर, बलि ।

\* कुल्लियात, भाग १, पृष्ठ १७६ ।

५ गुप्त, अप्रकट, ६ प्रकाश, ७ वर्षा-ऋतु, ८ परिधान, ९ पत्तीने की बूद,  
 १० नाइन, ११ सज्जित करे, १२ टेढी, १३ समाई, १४ प्रेम, १५ फदन, १६ एक  
 बाजा, १७ सुन्दर, १८ मल्हार राग, १९ पैगम्बर की बलिहारी, २० वर्षा काल ।

† वही, भाग १, पृष्ठ १९१, १९३ ।

२१ वर्षा, २२ लेकर, २३ पखुडियाँ, २४ जूडा, २५ कमौना, २६ मदालस,  
 २७ परिधान, २८ निर्मल, २९ मीन ।

हवा आना दिखाकर बोंप सों<sup>१</sup> कर साज मल्हारा ।

रिझा ले शाह कूँ प्यारी बजाकर जीव के ताराँ ॥

मुहम्मद कुत्ब शह के कंठ लग नित दिन लगे झड़ ज्यों ।

दुजें अतिभोग गरमी ते पुहे<sup>२</sup> खुय बुँद<sup>३</sup> बाराँ<sup>४</sup> कर\* ॥९८७॥

( ४ )

गरज्या मिरग<sup>५</sup> खुश्याँ सों सिंगारो आओ सकियाँ<sup>६</sup> ।

पड़ता है मेघ फुइ-फुइ बोली भिगाओ सकियाँ ॥१०१८॥

अत्तार बाव पन<sup>७</sup> में फूँलाँ के खोल तवले ।

महकार<sup>८</sup> उचइयाँ<sup>९</sup> है फिर मन में घाओ सकियाँ ॥

जों लाल फूल डाल्याँ पर त्यों दंडाँ पड़ अपने ।

बाजूबंदा के सिर ते<sup>१०</sup> फुँदने फुलाओ ॥१०२०॥

अस्मान होर जमी सब यक रंग हो सोहाता ।

है आज ऐश<sup>११</sup> का दिन मल्हार राग गाओ ॥

कर किसवत<sup>१२</sup> अहमरी<sup>१३</sup> सब सिर पाँव लग मुकलल<sup>१४</sup> ।

सूरज शफ़क<sup>१५</sup> में ज्यों त्यों हर यक दिपाओ ॥

याकूत अधर पियाल्याँ मे भर के मय मुहब्बत ।

शाहे नवल मुहम्मद तइं भी पिलाओ ॥

नटियाँ<sup>१६</sup> कूँ नैन पुतल्याँ के मद पिला मनी कर ।

शह के मँधर-अँगन<sup>१७</sup> में नट सों नचाओ सकियाँ † ॥१०२४॥

( ५ )

सालाँ व साल<sup>१८</sup> मिरगाँ<sup>१९</sup> आनंद सों कुजाओ<sup>२०</sup> ।

जोवन तवल<sup>२१</sup> खुइयाँ सों नित नित तुमें बजाओ ॥१०३६॥

तज तनके जल्वे म्याने<sup>२२</sup> जल्वेके राग सोहत ।

रजनी के हत पियाला मय सबके तइं ले जाओ ॥

चुनरी जो चुनके बाँधी औ चीर उसकूँ सोहता ।

वत्तीस वर्न साजाँ<sup>२३</sup> अब तन उपर सजाओ ॥

१. चावसे, २. फुहार पड़े, ३. पसीने की बुँद, ४. वर्षा ।

\* वही, भाग १, पृष्ठ १९५ ।

५. वर्षा, ६. सखियाँ, ७. अतरवाली हवा का होना, ८. महक, ९. उठाया, १०. शिर से, ११. आनन्द, १२. पोशाक, परिधान, १३. लाल, १४. सुनहरे, १५. उषा की लालिमा, १६. नर्त्तकी, १७. मंदिर-आंगन ।

† वही, भाग १, पृष्ठ २०१ ।

१८. प्रतिवर्ष, १९. वर्षा, २०. कूजित करो, २१. यौवन, व्राद्य, २२. सोहाग में, २३. आभूषण ।

अप लोप<sup>१</sup> में गुंदि है केवडे के फूठ छवि सों ।

छंद सो<sup>२</sup> प्पाला हतेली नाइयाँ के तें ले जाओ ॥

सदके<sup>३</sup> नजी<sup>४</sup> के ईदा<sup>५</sup> जलना<sup>६</sup> तुमन<sup>७</sup> गोहावे ।

फुतुवे जमा<sup>८</sup> के ताई तोहफा<sup>९</sup> तुमें ले जाओ\* ॥१०४०॥

(३) शरद —

हवा आइ है लेवे भी थट काला<sup>१</sup> । पिया विन सताता मदन वाले वाला ॥१०५१॥

रहन न सके मन पिया बाज<sup>२</sup> देगे । होवे तन कूं सुग जय मिठे पीउ वाला<sup>३</sup> ॥

ऐ मीतल हया मुंज गमे<sup>४</sup> ना पिया विन । भुलाया है मुज जीव<sup>५</sup> कूं ओ उजात्रा ॥

जो रात आगे चंदनी वि मुंजकू मनावे । वि चदन<sup>६</sup> मुज नई नयन मोज<sup>७</sup> लाला ॥

मेरे मन कूं आता है लालन मा मिठना । मुंजे आने है पीउ हत वठ माला ॥१०५७॥

नजी मदके<sup>८</sup> बुत्वा अनदांगो मिलकर । अपम मांड<sup>९</sup> सो पीवे जम मद पियाला<sup>१०</sup> ॥

### ६ कवि की प्रेमिकाएं

बुतुज के रनिवाम मे बहुत गो सुंदरिया थी । जिनमें बला-गिण्णाता होने से भागमती (हैदरगहल) का सम्मान अधिक था । भात्रुव बनि होने से वह अपनी दूारी प्रयमियो पर भी उदारतापक्व अपना स्नह वितरण रगता था । गउयो पर उमने कविता की, जिनमें से कुछ महीं उद्धृत हैं ।

(१) हग्री—

( १ )

हनी मिगते अपकूं गेवारी अजायव । मशाता<sup>१</sup> पगी हो निगारी 'अजायव'<sup>२</sup> ॥२११६॥

नवली के वद मम<sup>३</sup> मरा कद न होव । कि नी राउ मने<sup>४</sup> है पियारी अजायव ॥

मदन फूल<sup>५</sup> के रग साडी चंदी है । मोहे उमकी मोत्या विनारी अजायव ॥

तुमन याद<sup>६</sup> की मस्ती मुयकूं चडी है । नयन मन में पिलती गुमारी 'अजायव ॥

नवी मदके<sup>७</sup> कृत्वा रिझाने के ताई । बजाता है ताना दोतारी अजायव<sup>८</sup> ॥२१९०॥

१ जूडा, २ चाव से, ३ बलिहारी, ४ पैगम्बर, ५ महोत्सव, ६ सोहाग,  
७ तुमकी, ८ नैट ।

\* वही, भाग १, पृष्ठ २०४ ।

९ सरदी, १० विना, ११ बाला, प्रेमी, १२ पसद, १३ प्राग, १४ सुशी,  
१५ फूल, १६ बलिहारी, १७ स्वामी, १८ मद्यचक्र ।

† वही, भाग १, पृष्ठ ८७ ।

१९ नामन, सिंगार करनेवाली स्त्री, २० सजावट, २१ अदभुत, २२ शरीर सदृश,  
२३ में, २४ तुम्हारी स्मृति, २५ मदालसता, २६ पैगम्बर की बलिहारी ।

‡ वही, भाग १, पृष्ठ २२५ ।

( २ )

परम मोती चुवाया<sup>१</sup> हूँ, सक्याँ गूँदो खुश्याँ सेतीं ।

कि मुख रूपों के झलकारे<sup>२</sup> झमकते है मुरां सेतीं<sup>३</sup> ॥२१२२॥

इशक<sup>४</sup> दाव पूँजसों खेलती है ओ न्हनी प्यारी ।

चँदा मुख पर नये चँदा दिखाती है नवाँ सेती ॥

कहूँ तुज भेस के बासाँ कि या तुज भेद की कहनी ।

कि तुझ वासाँ के महकारे महकते इश्के-जां सेतीं<sup>५</sup> ॥

महकना बास तुज तन यों कि महके सात<sup>६</sup> का मह ज्यों ।

पेरेम की वात करता हूँ पेरेम के आशिकाँ<sup>७</sup> सेती ॥

तेरे नैनाँ की झमकन में सोहावे भेद काजल का ।

लगे ना चाक<sup>८</sup> दो तन का नयन के मंतराँ सेती ॥

मुहम्मद बालपन ते है मुहम्मद के गुलामों मे ।

तो जीता दाव मै पयाँ सों सारे सुन्नियाँ<sup>९</sup> सेती\* ॥२२२७॥

(२) साँवली —

मेरी साँवली मनकि प्यारी दिसै । कि रँग रूप मै कँचली नारी दिसै ॥२१५०॥

सोहै सब सहेल्याँ में काली अजब<sup>१०</sup> । सरोन्निच्छ<sup>११</sup> नारी ओतारी<sup>१२</sup> दिसै ॥

सक्याँ<sup>१३</sup> मे डोले नेहावाजी सों जब । ओ-मुख जोत ते चँदकि ख्वारी<sup>१४</sup> दिसै ॥

तुँ सवमें उत्तम, नारि तुज सम नही । कोयल तेरी बोलाँ ते हारी दिसै ॥

तेरी चाल नेकी सभी मनकूँ भाय । सक्याँ तूँ (है)जों फुल्ल भारी दिसै ॥

बहुत रँग सों आप रंग्या सक्याँ । वले<sup>१५</sup> काँ<sup>१६</sup> तेरे रगकि नारी दिसै ॥

नवी सदके<sup>१७</sup> कुत्बा पियारी सदा । सहेल्याँ में जेवा<sup>१८</sup> तुमारी दिसै ॥२१५६॥

(३) कँवली —

(१)

ले खड़ी कमली पियारी अपने हत म्याने<sup>१९</sup> पियाले ।

ले विचकती हिल्डोनी में<sup>२०</sup> पवन जीवन हरन वाला ॥२१७१॥

१. चुन लाया, २. चमक, ३. प्रकाश से, ४. प्रेम, ५. प्राण से, ६. शान्ति, ७. प्रेमियों,  
८. टुकड़ा, ९. सुन्नी सम्प्रदाय ।

\* वही, भाग १, पृष्ठ २३२ ।

१०. अद्भुत, ११. सरो वृक्ष जैसा जिसका शरीर हो, १२. दुर्लभ, अवतारी,  
१३. सखियाँ, १४. बदनामी, बरवादी, १५. लेकिन, १६. कहा, १७. पैगम्बर की बलिहारी,  
१८. सुन्दर, १९. हाथमें, २०. मिलने में ।



इस्क बसा के मी फमा वाक खीचे आब<sup>१</sup> धन जो ।

वेस म्याने<sup>२</sup> फुल जडी चोटीमने<sup>३</sup> दवना व वाला ॥

कौवलि मुख पर भी चडाई है या नूगं सेती<sup>४</sup> ।

इस्क के फर लिखे है पृछो तुम उस नादांवाला ॥

इस्के वुता<sup>५</sup> तं लगे है मेरे नैन म्याने<sup>६</sup> कुमारी<sup>७</sup> ।

नयन लज्जत<sup>८</sup> मुंज चलाकर मेरे तन में कर उजागा ॥

खिचनी खिचाती गडी है प्यारि अपने खज्ज<sup>९</sup> सेती ।

अंचल ओझलते नचाती है, नयना-पुतल्यां का चाली<sup>१०</sup> ॥

नी रतन रोगन हुये है उसके अंग के रंग सेती ।

चांद सूरज के हमायल<sup>११</sup> पाये<sup>१२</sup> है गले कंठमाल ॥

है मुहम्मदकुत्व शह वदा<sup>१३</sup> अली का कमतरिना ।

तो अजलते उडते है मुंज निर पे अम्मानी कमाला<sup>१४</sup> ॥२१७७॥

( २ )

तुज कद् देग सर<sup>१५</sup> वाहाके<sup>१६</sup> किये है वन में ।

तुज कद् सोहावता है जन्नत केरे<sup>१७</sup> चमन में ॥२१७८॥

पलकां नमद<sup>१८</sup> तके कर गख्या हू मै तके तै<sup>१९</sup> ।

जो पूतली वो हिन्दी टुक आये मुंज नयन में ॥

दो लव<sup>२०</sup> तेरे रगीले याकूतकू एदये रग ।

ले भीक<sup>२१</sup> रग अकीका<sup>२२</sup> रगी हुये यमन में ॥२१८०॥

खिल्वत<sup>२३</sup> मे गमते<sup>२४</sup> शहू जब डुवता है चांद घन पर ।

छुप जाय सूर तिसमें निकले जो शह अंगन में ॥

वारीक तुझ कमर देख वारीक हुआ हू जी बाल ।

बैसा नही है कोई तार एक पैरहन<sup>२५</sup> में ॥

काल्या गोरचा सकया कूं जगमें जो ध्या मो बिसरया ।

कवली सकी<sup>२६</sup> कूं देसत मै सुद<sup>२७</sup> भुल्या दखन में ॥२१८३॥

१ जल, तेज, २ केश-मध्ये, ३ चोटी के बीच, ४ आभा से, ५ सुन्दरियोंका प्रेम, मूर्ति-प्रेम, ६ नयनके भीतर, ७ जुआ, ८ नयनास्वाद, ९ खाद्य, १० गतिमा, ११ गलेका आभूषण (हमेल), १२ पाये (पजाबी), १३ दास, १४ ध्वजा ।

\* वही, भाग १, पृष्ठ २३५ ।

१५ सरो वृक्ष, १६ हाँके, १७ स्वर्ग के, १८ नम्दा, फर्श, १९ लिये, २० ओठ, २१ भोज, २२ एक लाल पत्थर, २३ एकान्त, २४ मौज करते, रहते, २५ परिवान, २६ सखी (तरुणी), २७ सुघ ।

† वही, पृष्ठ २३६ ।

(४) पियारी--

( १ )

सक्याँ जा मना ल्याव प्यारी कुँ आज । कि सब छंद भरचा का अहै सीस ताज ॥२१९४॥  
 कहो यों कि मंदिर कुं बहु जेव सों<sup>१</sup> । सँवारे वले<sup>२</sup> ना गमे तुज्ज<sup>३</sup> बाज<sup>४</sup> ॥  
 मदन आ सताता है गर म्यान कूँ<sup>५</sup> । करोदाद्<sup>६</sup> अपे आ, तुमारा है रज ॥  
 अजायब<sup>७</sup> है किस्वत तुमाँ हुस्न<sup>८</sup> की । कि उसते सोहातां है इश्क्यां<sup>९</sup> का साज ॥  
 तु खुवान का रूप में है वादशाह । तो ल्याये हैं सब तेरे ते<sup>१०</sup> नेह-खराज<sup>११</sup> ॥  
 तुमन मुख का नूर जब देखूँ मै । ओ एक छन मुझे सौ वरस का है आज ॥  
 नबी सदके कुत्बा ते मजलिस सदा । सोहाता है, जो हुस्न सो<sup>१२</sup> मुल्क लाज\* ॥२२००॥

( २ )

प्यारी तु बोल मारे तुज बोल नै<sup>१३</sup> पतियार ।  
 दिसता है बोल तेरा हर एक जों किनारा ॥२२१५॥  
 चोटी तेरी सो नाग<sup>१४</sup> है होर जहर उसमे कडवा ।  
 ओ घर खेलों में दिसती तूँ साचली<sup>१५</sup> सँपारा<sup>१६</sup> ।  
 फिर फिर भँवर के निमने<sup>१७</sup> तुज बास हूँ तो लेऊँ ।  
 उस वास में नही हूँ नरगिस्स का खुमारा ॥  
 देख-देख कर सँदलकूँ लाना<sup>१८</sup> मुशक कि लाना ।  
 तू-तन की वास आता सचला<sup>१९</sup> जिवाँ सँवारा<sup>२०</sup> ॥  
 पैनी<sup>२१</sup> है काँज<sup>२२</sup> की काज अछरी<sup>२३</sup> बंधी सो हत मे ।  
 क्या जानें पाच<sup>२४</sup> होर काच<sup>२५</sup> ओ हिंदवी गंवारा ॥  
 तुज-बोल मे नमक नें तेरे अधर में रस ने ।  
 तेरे कनक मे कसनें होर चोटि है अंधारा ॥२२२०॥  
 ऐसे रतन रसन<sup>२६</sup> सों दरिया ते कुत्ब काडे ।  
 दो जग में उसकूँ दायम है मुर्तुजा<sup>२७</sup> अधारा † ॥२२२१॥

१. सौन्दर्य से, २. लेकिन, ३. तेरे, ४. बिना, ५. उसको, ६. न्याय,  
 ७. अद्भुत, ८. तुम्हारा सौन्दर्य, ९. नाज, नखरा, १०. तेरे से, ११. स्नेह का शुल्क,  
 १२. सौन्दर्य से।

\*वही, पृष्ठ २३९।

१३. नहीं, १४. सच्ची, १५. सँपेरा, १६. भँवर की भाँति, १७. चंदन को लगाना,  
 १८. सच्चा, १९. नौछावर, २०. पहिनी, २१. एक वृक्ष, २२. अप्सरा, २३. पत्ता, २४. शीशा,  
 २५. वाणी से, २६. पैगम्बर मुहम्मद ।

† वही, भाग १, पृष्ठ २४२ ।

( ३ )

पियारी तेरे विछडने ते रयन मुँज नीद आवै ना ।

तुँ कुदरतकी<sup>१</sup> घडी तुज विन घडी पीरिन मो भावे ना ॥२२२२॥

रयन-दिन कूच<sup>२</sup> जाने ना जो कोई जिव आशिक है तेरा ।

लगा है याद<sup>३</sup> यो तेरा कि भी कुछ याद आवै ना ॥

पिरित तेरे कुँ लुकमाँ<sup>४</sup> भी सके न दाह<sup>५</sup> देने कुँ ।

सेहत<sup>६</sup> क्या होये आशिक तें<sup>७</sup> जो लव शर्मत<sup>८</sup> चग्नावै ना ॥

सची तुम रात का यक रात मुँज सौ रात हो दिसता ।

कना<sup>९</sup> किस सेज रहना मैं जो तूँ सज अव-बुलावै ना ॥

तेरी इस आँच<sup>१०</sup> ते दिल है जैसा अवलाज का किल्ला ।

कि जो नावत<sup>११</sup> तूँ घट है अपमकूँ पिगलावै<sup>१२</sup> ना ॥

तेरी वाता तेरी घाताँ<sup>१३</sup> तेरी रीताँ अहे बहु घात<sup>१४</sup> ।

देती जो कुछ तूँ गाल्याँ दे (अदर-) वामे दिलावै ना ॥

नबी सदके<sup>१५</sup> इगक वाता<sup>१६</sup> खुदा तुजतै<sup>१७</sup> दिया खाना<sup>१८</sup> ।

तुजे कुदरत<sup>१९</sup> पता है जो कुतुब कूँ ममजावै ना<sup>२०</sup> ॥२२२८॥

(५) गोरी—

सोहाता है मुस-हुस्न<sup>१</sup> गोरी का शबाव<sup>२</sup> । ओ-मुख चद पड चँदक्याँ है लाजो नकाव<sup>३</sup> ॥२२२९॥

ओ-कद<sup>४</sup> सर्व नै है कुँदन का निहाल<sup>५</sup> । श्रमकता है तो उगते मूरज का ताव<sup>६</sup> ॥

तूँ रग रस्त की वाग की है कली । तो चूता है जीवन का तुज मुखते आव<sup>७</sup> ॥

ग्माले<sup>८</sup> अघर है तेरे मद भरे । सो कगते है उशकाक<sup>९</sup>-दिलकूँ कवाव ॥

कहूँ जुल्फ या ताज सुवल मोहे । ओ मुख फूल पर जो कि चँद पर महाव<sup>१०</sup> ॥

तेरी चाल मद-भस्त ते लाजे गज । नही उनमें ये भेद होर ए शिताव<sup>११</sup> ॥

नबी-मवके<sup>१२</sup> कुत्वा सो गोरी मिली । तो गल वाँह दे उससूँ पीवै शरावाँ ॥२२२५॥

१ ईश्वरोप शक्ति, २ कुछ, ३ स्मृति, ४ लुकमान हकीम, ५ दवा, ६ स्वास्थ्य, ७ प्रेमी के लिये, ८ अघर रस, ९ कहना, १० ताप, ११ मिसरी, १२ पिघलावै, १३ ढग, १४ प्रकार, १५ बलिहारी, १६ प्रेमवाताँ, १७ तुझसे, १८ उसका, १९ प्रकृति ।

<sup>१</sup> वही, भाग १, पृष्ठ २४३ ।

२० मुख सौ-दर्य, २१ जवानी, २२ पदाँ, २३ शरीर, २४ बूटा, २५ प्रकाश, २६ चमक, २७ रसीले, २८ प्रेमीगण, २९ बादल, ३० जल्दी, ३१ बलिहारी ।

† वही, पृष्ठ २४५ ।

(६) छबीली—

छबीली सों लग्या है मन हमारा । कि उस विन नहिं हमन<sup>१</sup> यक तिल<sup>२</sup> करारा<sup>३</sup> ॥  
 सबूरी<sup>४</sup> कूँ नही है ठौर दिल में । सबूरी क्यों करे सो करनहारा ॥  
 अलक फांसी सों पंखी जिव पकडने । दिखाई गाल ऊपर<sup>५</sup> तिल का चारा ॥२२५०॥  
 बसे मन में सो उसके ख्याल निसदिन । नहीं उस ख्याल विन मुँज-मन में ठारा ॥  
 नयन वहरी<sup>६</sup> छोडी सूकी<sup>७</sup> डोरी सों । करै चंचल पंखी दिलकूँ शिकारा ॥  
 मया कर ना करै माशूक<sup>८</sup> अपे हो । कहो न क्या करै आशिक<sup>९</sup> वेचारा ॥  
 नबी सदके कुतुब आशिक है तेरा । सदा मिल अछ<sup>१०</sup> नहो एक तिल<sup>११</sup> बिन्यारा\* ॥२२५४॥

(७) लाला (लाली)—

( १ )

हिल्या मन तो बाला सकी<sup>१२</sup> सुन मो लाला<sup>१३</sup> । विरहते मो जाला वली वालि बाला ॥२२५५॥  
 (जो) वन वन है आला<sup>१४</sup> मो कर मत्तवाला । मंगे<sup>१५</sup> मेरा ख्याला सुराही पियाला ॥  
 तरखता<sup>१६</sup> है चोला मुँजे बाज ढोला । हुआ है अवोला मेरा साईं वाला ॥  
 अधर का पियाला दे होठो<sup>१७</sup> हवाल । तुं कर फूलमाला तो तन जावै झाला<sup>१८</sup> ॥  
 मो मन तो सों फूल्या गया मन सो तोल्या । विरह राज<sup>१९</sup> खोल्या तुं दे अब वसाला<sup>२०</sup> ॥२०॥  
 मै गाऊं यलल्ला<sup>२१</sup> वले मन तलल्ला । हुआ मन अलल्ला अपे आग ले ला ॥  
 नबी सदके कुत्बा तु मन सेज बसला । बुला ल्या भुला ल्या नवारो मलाला<sup>२२</sup> † ॥२२६१॥

( २ )

इश्क में मस्त मतवाला हूँ लाला । तुं अप अधरों ते मुँजकूँ लेना प्याला ॥२२६२॥  
 मुरा के सुर नहीं ओ रस सुरस है । अधर-रंग में ह्याते आव जाला ॥  
 भरी जोवन जवानी भेटनी सों<sup>२३</sup> । मो दिल मैखाना<sup>२४</sup> प्याला देउ गुलाला ॥  
 खुमारो सुन काहे मुँज दे न बोसा<sup>२५</sup> । चमन गालों मे है दँत फुल कुलाला ॥  
 जोवन माती पियाले नैन कीती<sup>२६</sup> । तेरे हँसने ते होये देस<sup>२७</sup> उजाला ॥  
 नबी सदके<sup>२८</sup> रहे तुझ इश्क म्याने<sup>२९</sup> । कुतुब सों क्या<sup>३०</sup> पिरित देउ कठमाला ‡ ॥२२६८॥

१. हमको, २. पल, ३. धैर्य, ४. सन्तोष, ५. ठौर, ६. बाज (पक्षी), ७. सूखी, ८. स्नेह, ९. प्रियतम, १०. रह, ११. पल ।

\* वही, भाग १, पृष्ठ २४७ ।

१२. सखी, १३. मेरी लाली, १४. बढ़िया, १५. चाहता है, १६. तड़कता है, १७. अधरों से, १८. झल्लाहट, १९. विरहका भेद, २०. मिलन २१. यला-ला (शब्दानुकरण), २२. रंज ।

† वही, भाग १, पृष्ठ २४८ ।

२३. से, २४. मधुशाला, २५. चुम्बन, २६. किया (पंजाबी), २७. द्यौस, दिवस, २८. पैगंबर की बलिहारी, २९. प्रेम में, ३०. किया ।

‡ वही, पृष्ठ २४९ ।

## (८) मोहन—

पिरित ताजी लगी है मुंज सगी<sup>१</sup> मोहन पियारी सो ।  
 बँध्या हँ दिल ओ चातुर छद छरी मुनरत तारीगो ॥२३०१॥  
 उमेदो के अयू<sup>२</sup> मोती के रागां बाघ<sup>३</sup> दुह कर डंक ।  
 रयन सारी सुवह लग मुंज गई है बेकरारी<sup>४</sup> सो ॥  
 गिया<sup>५</sup> तिनूबन् सवया ह् यक परन की उम चदरभुग वू ।  
 मोहानी मवज<sup>६</sup> मारी मो शिफरु अचल<sup>७</sup> तिनारी गो ॥  
 अजहु दिमत्या है तुज मुलमें गियान्यां साहँ अँग सँग क्यां ।  
 अजहुँ घुलतो अहँ तेरी नयन निय थँ। गुमारी मो ॥  
 सजन के नेह में विन मस्त होय नै काम हासिल<sup>८</sup> तू ।  
 नहीं है इशक कू बुठ आगनाई<sup>९</sup> होगियारी<sup>१०</sup> सा ॥  
 पिया मिलने के किस्मे शीफ मा को<sup>११</sup> रँग-रँग सेनी ।  
 न को साजन की दरी की वचा नेह की दुख्यारी सो ॥  
 नगी सदके हूये है मुजकू लावा<sup>१२</sup> वे ऊपर लावा ।  
 किय हँ गेह वा गौदा कुतुब यह नेह भारी गा\* ॥२३०७॥

## (९) हैदरमहल (भागमती)—

( १ )

हैदरमहल मया<sup>१</sup> ते नावात<sup>२</sup> धोल साजे । दिन दिन अनँद सेती तबलां मदन के वाजे ॥  
 उम मव-वद्<sup>३</sup> के ऊपर जल्वा<sup>४</sup> है नौरतन का । इशकके पातुरो मव उस फास<sup>५</sup> देख लाजै ॥२३२३॥  
 सब आशिकां के दिल में है इशकफूल जल्वा । पुतल्यां नैन क्यां मेरे मन में अनँद सों गाजे ॥  
 इशक का टीना लाई अपनी पेशानी<sup>६</sup> ऊपर । चौफेर नौरतन के तारैं भहठ मा वाजे ॥  
 चादर इशक का ओठे जा विरवहृटी दीसै । तेरे इशक के रयाजा देखे है लाजो भाजे ॥  
 मावे<sup>७</sup> सों विद<sup>८</sup> बनकर विरदा मो नाचे नरमन<sup>९</sup> । मावे रमाल उडते है राज करते राजे ॥  
 सिदके नगी शुकर<sup>१०</sup> तुजकू मिलीये पातुर । हैदरगुलामी सेती तुज-मीस ताज साजै ॥२३०९॥

१ मेरी सखी, २ आंसू, अजू (पजाबी), ३ फँली, ४ अधीरता, ५ किया, करी,  
 ६ हरी, ७ उपा (अचल), ८ प्राप्ति, ९ मित्रता, १० चाह से, ११ कई, १२ लाभ ।

\* वही, पृ० २५५ ।

१३ हैदरमल (भागमती) की माया (प्रेम) से, १४ मिसरी, १५ सरोज-से सीधे  
 सुडौल शरीरवाली, १६ सोहाग, १७ पास, १८ ललाट के ऊपर, १९ २० २१ नृत्य के रूप,  
 २२ धन्यवाद ।

† वही, पृष्ठ २५७ ।

( २ )

भवाँ-अबरू<sup>१</sup> में मावे बिरद बाँदै । इशक के राग तामें भेद बाँदै ॥२३३०॥  
 तेरे केश में कँवल होर सूर<sup>२</sup> आवे । कमाँ भौवाँ में काजलसाज सादे<sup>३</sup> ॥  
 चोली तँग अँग में नित नारँग निपजे<sup>४</sup> । नयन सूकाँ<sup>५</sup> सों गो चित नित्त फाँदे ॥  
 सुने जाली मने<sup>६</sup> मन में हिलजा । इशक नादान<sup>७</sup> सों नित आनंद ते (वा) दे ॥  
 तुँ घुरकर देख रखी है किन ये तुरी । किते<sup>८</sup> काँदयाँ<sup>९</sup> पुछूँ न बूझे काँदे ॥  
 नबी<sup>१०</sup> सदके मिली हैदर पियारी । सेव्याँ सेतीं चित्तसों चित्त बाँधे ॥  
 तेरे अंचल पै है चँदनी का छाया । कुतुब डाबाँ<sup>११</sup> सों बिरवाँ कास बाँदे\* ॥२३३५॥

( ३ )

नयन पुतलि हमसों करे एक बात । नयन वनमें दावा<sup>१२</sup> के फूलाँ खिलात ॥२३५१॥  
 इशक किसवताँ<sup>१३</sup> ते मुँजे मुश्तरी । इशक अँत अधर मेवा तुजकूँ सोहात ॥  
 इशक तोरे जोबन की सारा<sup>१४</sup> करे । अधर तेरे कौसर<sup>१५</sup> का प्याला पिलात ॥  
 अधर पर तेरे है पेरेम का निशाँ । अधर चूमते ते सो लाजै नबात<sup>१६</sup> ॥  
 उचित चाँद सोहते तेरे दो-दो दिल । तेरा मूखडा प्रेम कहानी सुनात ॥  
 चतुर नारियाँ में चतुरपन तुझे । कि आपस के<sup>१७</sup> मन म्याने<sup>१८</sup> माँगू मनात<sup>१९</sup> ॥  
 नबी-सदके मावे<sup>२०</sup> चतुर कुत्व सास । कि रोयाँ मने<sup>२१</sup> कुत्व तारा जँतात† ॥२३५७॥

(१०) हातम—

नारी सो है तुज अताले वाला<sup>२२</sup> । झलकार सही . . . . . ॥२३७४॥  
 संपोली उपर भ्रंग<sup>२३</sup> सुट्या<sup>२४</sup> चाम । छूटे अलकाँ में फूलमाला ॥  
 रतन ते अदिक दिपै होटों पर । अधरों के ऊपर जडे सो लाला ॥  
 देख चँदनी में चंदमुखी कूँ । सुरज कूँ पिलाये छंद सों पियाला ॥  
 दिन रात हुआ जो खोले घन केस । निस में जो हँसे पड्या उजाला ॥  
 नारयाँ में जो नाज<sup>२५</sup> भाग अचकल । अँग सँग सों करै पिया निहाला ॥  
 नित पीवे अली के सदके हातम । कुत्वा के अधर ते मय पियाला‡ ॥२३८०॥

१. झूलता, २. सूर्य, ३. संधान करे, साज, ४. उपजे (गुजराती), ५. काँटे,  
 ६. स्वर्णजाल में, ७. अज्ञ, ८. कितना, ९. रोये, १०. पैगम्बर की बलिहारी, ११. दाव-पेच ।

\* वही, पृष्ठ २५८ ।

१२. कामना, १३. पोशाक, १४. सार, १५. स्वर्गकुंड, १६. मिसरी, १७. अपने,  
 १८. मन में, १९. मिलात, २०. शरण, २१. राजाओं ।

† वही, पृष्ठ २६२ ।

२२. उतावली चाल, २३. भुजंग, २४. छोड़ा (पंजाबी), २५. हावभाव ।

‡ वही, पृष्ठ २६८ ।

## (११) हिंवी छोरी—

रंगीली साईं ते तूं रंग भरी है। सुगड सुदर सहेली गुन भरी है ॥२३९२॥  
 लटकना विजली निमने उम सुहावै। वो हिंदी छोरी बहु छद शहपरी है ॥  
 चंदर-मुस सोहन्या जब नाचत्यां है। जो तनमें तूं सुरंगी जो परी है ॥  
 सभी हूरा न आमै आज तुज मम। कि तूं-वाला में सब अवर भरी है ॥  
 उपजता है तेरे मुपते जे शामी। ओ शावीते मां जोहरा मुस्तरी है ॥  
 नवी सदके रिझाये फुत्व गहकूं। तोसकिया में तूं जैसी गहपरी है\* ॥२३९८॥

## (१२) पद्मिनी—

( १ )

तुज नाक मोती मुख ऊपर देता है आवमो। या पिच्छ के चरमेमें तिरता बुडुडा पुरसावसो ॥  
 ओ बुडुडे का अकम तेरे मुप ऊपर या छाया। ज्यो चांदनी की जोतिमने मुष्की कक है दावमो।  
 तुज नैन की रावत चढाई भी कर्माना रुम कर। मव आशियां में मुज ऊपर रावे चापनावु सो ॥  
 जब नाक में मवरा सुहागा पैन आई जलवे में। वोडुफुलदे मुज ज्ञान पर मिक्वा करे  
 राव-ताव सो।  
 मुक्वा जो लटकाई भुनक वालो में पद्मिनि पद्मिने। एक तिल में हिलजाई मुंजे उस कमरे के  
 कुल्लावम ॥  
 कुल्लाव मुट मन में कऊ रैची अलक डोरीसिती। अप डक के खलां दिवाती है अजव लखवाव  
 सो ॥२४०५॥  
 हस्त्रिन गविन हो ग चित्तिनी भुलवर रहे धन भेद में। वो पद्मिनी मिलकर सोहै अब कुस्त्रशह  
 नञ्वावसो ॥२४०५॥

## (१३) सुदर—

( १ )

चदर-मुग तुज लाल लव है, दसन जो तेरे तारे है।  
 वहो यह चांद कांका है, विस अममां तो उतारे है ॥

१ नाई, भांति, २ चतुराई, ३ परियो की रानी, ४ स्वर्ग की उप्सराएँ, ५ होगी (पजावी), ६ एक सुगंधित रत्न, ७ जवानी, ८ बृहस्पति, ९ शुक्र।

\* वहाँ, पृष्ठ २७१।

१० तेज से, ११ अमृत कुडका रक्षक देवपुत्र, १२ बुलबुला, १३ यौवनपूर्ण, १४ छाया-  
 चित्र, १५ प्रकाश में, १६ काला घब्बा, १७ रावट, १८ अगूर, १९ सोहागरात, २० ताप,  
 प्रकाश, २१ एक आभूषण, २२ पल, २३ हिलमिल गई, २४ कहुँ (कौरवी), २५ प्रकार।

विही, पृष्ठ २७२।

अगर यह चाँद उस असमाँ का कहे जग तो कबूलूँ क्यों ।  
 समाँ के<sup>१</sup> के चाँद मुख में कवन देख्या जो तारे हैं ॥  
 सुरज चँद सो<sup>२</sup> सुँदर मुख कूँ दिये तश्बीह<sup>३</sup> सब शायर<sup>४</sup> ।  
 वले<sup>५</sup> पूँछै जो मुँजकूँ तो उस-अंगे<sup>६</sup> ओ बेचारे<sup>६</sup> है ॥  
 कहे देखे करिश्मा<sup>७</sup> कर वो सुँदर नाजनी मुँजकूँ ।  
 तो उस नैना के झलकारे झलकते जो कटारे है ॥  
 समा आ बाज के ऊपर हृदफ<sup>८</sup> सो सूर<sup>९</sup> करना वो ।  
 भवां के कौस सो तारे के नयनाँ तीर मारे है ॥२४१०॥  
 सुरज होर चाँद के किरना झलकते सो दिसै मुज यों ।  
 कि जों मँगते सुँदर कने<sup>१०</sup> ओ गदा<sup>११</sup> हो हत पसारे हैं ॥  
 ऐसी सुँदरकूँ पाया हूँ खुदा के रहम<sup>१२</sup> ते कुतुबा ।  
 जो हूरहोर मलक<sup>१३</sup> देखकर हुये हैरान सारे है\* ।

( २ )

आई नारी सुलक्खन चंद-पेशानी<sup>१४</sup> । हिदोले चित में लालनकूँ पेगाने ॥१६२२॥  
 वचन-अमृत कुरंग-नयनी सौ वो वार । पेरेम के नाव सो<sup>१५</sup> घुंगुह बजाने ॥  
 सो नारी पद्मिनी अति चंचली है । सुँदर मद गल सुवाकर मद जो आने ॥  
 फरिस्ता देख मुख सुध भूल जावे । सरग आछर<sup>१६</sup> हुई है उस-दिवाने ॥  
 पंखी देखत सो मुख परवाज<sup>१६</sup> होये । मिरिगनयनी मिरग तन में रिझाने ॥  
 सखी सुँदर नहीं उस सम जगत में । चमक चमकानने जग मन भुलाने ॥१९२७॥

(१४) रंगीली—

मेरी मिठ वोलनी मीठाइ सो प्याला पिलाती है ।  
 खुमारी रात का अपने नयन म्याने<sup>१७</sup> दिखाती है ॥ २४२० ॥  
 मेरी शीरी<sup>१८</sup> कंधी करती कंगन वजते है नादाँ सो ।  
 रतन टीला (टीका) धरे मँगमे नवे छँद सो दिपाती है ॥  
 नबी मनवालि मद प्याला पिलाती नैन नकलाँ<sup>१९</sup> सो ।  
 नयन खुम्मारि अपने तन चढा धनुक नवाती<sup>२०</sup> है ॥

१. घुस के, २. उपमा, ३. कवि, ४. लेकिन, ५. आगे, ६. तुच्छ, ७. चमत्कार,  
 ८. डर, ९. सूर्य, १०. पास, ११. भिखारी, १२. दया, १३. अप्सरा ।

\* वही, पृष्ठ २७४ ।

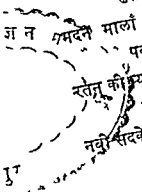
१४. चाँद-सा ललाट, १५. अक्षर, १६. सूरज, १७. नयन में, १८. माधुरी, फर्हाद  
 की प्रेमिका, १९. लीला, नयन-लीला, २०. मिसरी ।

[वही, पृ० २७४ ]



दक्खिनी हि वी काव्यधारा

अंचल झकार की चांवाँ चंदर-सूरज निमन' झमकै' ।  
 डलक नार (ओ) लटक चालांमने' चालाँ नपाती है ॥



मालाँ नवे जोवन नवले तन उपर मोहते ।  
 पवन के राग रँग गाकर मुँजे छँद सो' रिझाती है ।  
 रत्न की श्यारि मानिक जोत प्याला भर पिलाती है ।  
 रंगीली विखवहूटी विखवहूटियो में सुहानी है ॥  
 नवी सदेके मुहम्मद कुत्व सो मिल अछ' घडी अवत' ।  
 चँदा ऐसी सहेत्या तै मुरज सा मुग दिवाती है\* ॥२४२६॥

(१५) नाजनी—

धन' दीद' पर नादीद' रन सूरज नही रहता सडा ।  
 तारे चंदर सुन यो खबर सब रैन में रहे गडबडा ॥  
 सो धनका मुख झलकावता निसमें मुरज छुप जावता ।  
 दिनमें चँदा नहिं आवता तारे तुटै सब झडपडा ॥२४४०॥  
 सहेली का खोपा है वदक वुंद-खुर्य' झडे जो मेहो निछल' ।  
 देपत चंचल नैना चपल विजली तो जावे कडकडा ॥  
 बिच नीर कोई न आये कर कोई आग फिर ना जाय बर ।  
 बाडी सो पलवाँ लायकर सूका' करे आडाअडा ॥  
 धन सीस पर फूलाँ चडे अवर पै जो तारे जडे ।  
 हुराँ मलक" देखन सडे दिसता तमाशा या वडा ॥  
 हाताँ में लाली यो बमे कीते" शिकार वो सवकसे" ।  
 नूनी निशानी सच दिमै उडशाक" ले चँग सपडा" ॥  
 सिदके नवी ता दास हू मै दास रासिल" रास" हू ।  
 कुत्वा अली का दाम हू पक्कड खडा दिल दिल फडा ॥२४४५॥

(१६) चचलनयन—

दो नैन तुज अव" तले हू नारवेरे रवाव" में ।  
 दो मस्त शोखीसो मुते मस्जिद बेरे मेहगव' मे ॥२४६२॥

१ चंद्र-सूर्य के समान, २ झलकें, ३ चालो में, ४ रहा ।  
 \*वही, पृष्ठ २८५ ।  
 ५ तरणी, ६ आँख, ७ न नजर, ८ पसिने की बूद, ९ काँटा, १० देवकयाएँ,  
 ११ फरिश्ते, १२ किये (पजाबी), १३ सब किसीकी, १४ प्रेमी लोग, १५ पहुँचा,  
 १६ सच्चा, १७ सीधा ।  
 †वही, पृष्ठ २८९ ।  
 १८ तेरी भौं, १९ स्वप्न, २०. नमाज पढ़ने का ताक ।

तुज नैन चंचल.....कानपर दो जुल्फ<sup>१</sup> सों।  
 खेलै जो धर थुड्डी<sup>२</sup> के कू तुज मुख के महताब<sup>३</sup> में ॥  
 यह क्या अजब पडता नजर जो धूप पडती चांदपर ।  
 या मुख नुरानी<sup>४</sup> जोत भर है नैन केरे शाब<sup>५</sup> मे ॥  
 है लश्करी नैनां तेरे संजोर सलह<sup>६</sup> कला करै ।  
 कोइ रीस<sup>७</sup> तिसकी क्यों कर सों दिस करे असबाब<sup>८</sup> में ॥  
 नैनों धलाती<sup>९</sup> सुंदरी तव कुतबशह कू भावती ।  
 मिल सेज में रीझावती चौसार<sup>१०</sup> तू हर बात में\* ॥२४६६॥

(१७) फितनये-दकिन--

हिल्जाये<sup>११</sup> जीवां कू सकी अप-चोली केरे ताब<sup>१२</sup> मे ।  
 पुतली निमन<sup>१३</sup> लुडकाय है दिल अप-नयन-मेहराब में ॥२६०१॥  
 कहिया कि "मुख दिखला मुँजे छाती सों छाती ला मुँजे ।"  
 कहई "अपनि-घर आ मुँजे" बेसुद हुआ इस जाब<sup>१४</sup> मे ॥  
 सूरज बदन झलकाये जब छुप जाय तारे लाज सब ।  
 देखत सो उसका जोत-छब ताकत न है महताब में ॥  
 क्या चलबली<sup>१५</sup> सोधन है तू, हर फनमने पुरफन<sup>१६</sup> है तू ।  
 होर फितनये दक्खिन<sup>१७</sup> है तू सरजोर<sup>१८</sup> हर एक बात<sup>१९</sup> में ॥  
 सदके नबी कुतबा सों मिल करते रल्या<sup>२०</sup> हर एक तिल<sup>२१</sup> ॥  
 लुब्दाये<sup>२२</sup> कर मुज जीव दिल पिघलाय जो कंद आबमें<sup>२३</sup> ॥२६५५॥

(१८) तिलंगिन<sup>२४</sup>--

पियारी जोहती मै पन्त<sup>२५</sup> तुज पेम<sup>२६</sup> । मुँजे जिव देवना है पेम में नेम ॥२६०६॥  
 गरब<sup>२७</sup> सों मै न बूजी थी पियाकू । कि एक था मुज नयनतल कोह<sup>२८</sup> होर हेम ॥  
 ढुँड्यां हूँ मूँ नही पाया पिरित जेह । बहुत जोया हूँ नै पाया हूँ मै थेम<sup>२९</sup> ॥  
 पेरेम पियका हमारा जीव संजिवो । पेरेम पँथ मे है उश्शाकॉ<sup>३०</sup> का यह नेम ॥  
 नबी सदके<sup>३१</sup> कुतुवशह सांवली सों । वचन हिंदी सों बोले एम्म रे एम<sup>३२</sup> † ॥२६१०॥

१. अलक, २. ठुड्डी, ३. चाँद, ४. प्रकाशमान मुख, ५. जवानी, ६. हथियार,  
 ७. ईर्ष्या, ८. विषय, ९. गिराती, १०. सर्वतोभद्र ।

\*वही, पृष्ठ २८९ ।

११. फँसाय, १२. ताब, सौन्दर्य, १३. पुतली-सी, १४ जवाब, उत्तर, १५. चंचल,  
 १६. कलामें, कला-मर्मज्ञ, १७. दक्खिनी की आफत, १८. बली, १९. बात, विषय, २०. रत्ने,  
 मिले, २१. क्षण, २२. खींचे, फँसाये, २३. पानी में, २४. आंध्र तरुणी (गोलकुंडा आंध्र  
 में है), २५. पथ, २६. तेरा प्रेम, २७. गर्व, २८. पहाड़, २९. ठाँव, ३०. प्रेमी, ३१. बलिहारी,  
 ३२. क्या रे क्या (तेलुगु) ।

† वही, पृष्ठ ३२१ ।

## (१९) वसिष्ठकी पुतली

सदा मुँज मस्त करती है नयन गेती नयन पुतली ।  
 वाली गम्ज<sup>१</sup> के प्याले पिलाती है जुवन-पुतली ॥२६१६॥  
 नयन मो 'मर' वर<sup>२</sup> कहती वर<sup>३</sup> अत्र सत्र मैं कीता ।  
 नयन होते हैं रोशन देवती तू है गगन-पुतली ॥  
 भवा कदनीमने<sup>४</sup> मैं यो रक्षा ज्यो नूह<sup>५</sup> वदती मैं ।  
 पिरित दरियामन<sup>६</sup> पाया परी ऐमी रतन पुतली ॥  
 तेरा मुग लोहकलिया<sup>७</sup> या डरू ना मैं परी-जिनने ।  
 हिंदू पातुर मँपडती नै विचकनी ज्यो हरिन पुतली ॥  
 अगर मँगनी रिजाने आशिकी क तै<sup>८</sup> घडी तिलतिल<sup>९</sup> ।  
 अचर झलनाये रोमा<sup>१०</sup> मोचके उगडग वचन पुतली ॥  
 नयन के हीब<sup>११</sup> मैं पुतली नवी चाल्या-मो तिरती है ।  
 नयन आशिक है देनके वचन मुनने वरन पुतली ॥  
 नरी मदके (जो) गिरने जीतिया नादान<sup>१२</sup> बानी<sup>१३</sup> कू ।  
 अनन्दा<sup>१४</sup>मो मिनी कुतुबे-जमा<sup>१५</sup> सैती वसिष्ठ-पुतली\* ॥२६१७॥

## ७ गजलें (प्रेम-गीत)

## (१) सौदर्य—

( १ )

मुचमें वनफशा<sup>१</sup> रँग तिला वा नूर<sup>२</sup> मैं तू पाइया ।  
 ज्यो स्याम रग चदागो मिल मत्र जग प चँदना छारवा ॥२९॥  
 मुरा कावा के म्याने-मने<sup>३</sup> मकगूद मुज<sup>४</sup> पाने-गने ।  
 उम्मेद के वाने-मने<sup>५</sup> गौहर<sup>६</sup> के दावे लाइया ॥३०॥  
 कुतल में केपडे नेस है लोगो कहे निम-देस<sup>७</sup> है ।  
 मानिक उजाले सीग है मतर मो मैं हिल जाइया<sup>८</sup> ॥  
 मजनु<sup>९</sup> मो मंग नाम है वहशी<sup>१०</sup> तू मुजमो राम<sup>११</sup> है ।  
 इन मुख अलप मुज दाम<sup>१२</sup> है इक वीच में गलवाहिया ॥

१ कटाक्ष, २ घेयं, ३ भौं-रूपी नाव में, ४ जल-प्रलय का पैगम्बर, ५ समुद्र में,  
 ६ ताबीज, ७ तर्क, से, ८ पल-पल, ९ रोप, १० कुड, ११ खेवूस, १२ बाला, तरणी,  
 १३ युगका ध्रुव ।

\*वही, पृष्ठ ३२३ ।

१४ एक फूल, १५ प्रकाश, १६ बीच में, १७ मेरी अभिलाषा, १८ घर में,  
 १९ मोती, २० निशि-दिवस, २१ फँसाया, २२ जगली, २३ सतोप, २४ जाल ।

तुज गाल फुल आले<sup>१</sup> ऊपर लट है सो गुल्लाले<sup>२</sup> उपर ।

या है भँवर लाले उपर सो नकश मुज मन काइया ॥

मुज ख्याल-म्याने तूँ बसे मुज ज्ञान-दीवा तूँ दिसे ।

कित्ता कसौटी पर कसे मै ध्यान तुजसों लाइया ॥

विरहा मआनी<sup>३</sup> मिल अहै उसका दिला मुज दिल अहै ।

फुल संग रकीबा<sup>४</sup> हिल अहै क्यों भी तो धुन विलगाइया\* ॥३५॥

( २ )

जुलफ़ के जदवल<sup>५</sup> में हिलजा है देखो बादे-सबां<sup>६</sup> ।

हिलजता है बाव ऐसा बूझो वो क्या है बला ॥११९॥

नैन मिठाई सों लबदे<sup>७</sup> जाहिदाँ<sup>८</sup> तुज-नेह में ।

हम मख्री कूँ चाखता है ओ मिठाई सब रवा ॥१२०॥

तेरे मुख के नूरते होता मुनव्वर चाँद अजित<sup>९</sup> ।

दिलकी तहकीकाँ सों देखो है बी वातां बेरिया<sup>१०</sup> ॥

तेरे मुख मस्हफ़ उपर<sup>११</sup> खीचे सूके<sup>१२</sup> का ज़बर<sup>१३</sup> ।

जज्म<sup>१४</sup> हो रहिया है दिल तशदीद<sup>१५</sup> ना कर आ पिया ॥

सब्ज खत अँगे<sup>१६</sup> कहते है बात लोकाँ सब्जी का ।

क्या खबर है उनकूँ क्यों पीला हुआ सब गया<sup>१७</sup> ॥

केस खोले करने कंधी रात है हमना कुँ वो ।

माँग काडे जब सकी वो देस<sup>१८</sup> हमना कूँ सुवा ॥

तुज केता कोँ<sup>१९</sup> ऐ शमे<sup>२०</sup> अप-रोशनी ते सिर न खीच ।

मारते है दम-बदम<sup>२१</sup> गर्दन कि तूँ है बेहया<sup>२२</sup> ॥

सीधे कर हुनराँसेती<sup>२३</sup> दिखलाते उसका नूर सब ।

नूर जाता उफ<sup>२४</sup> सेती इसते सदा है बेनवर<sup>२५</sup> ॥

रात सारी तेरे गम खींचे<sup>२६</sup> सफ़्रां हमनाँ उपर ।

मीठे वचनाँ ते लिख्या मेरी खलासी<sup>२७</sup> का रुखा<sup>२८</sup> ॥२७॥

१. ताक, २. लाल फूल, ३. कुतुब कविका एक उपनाम, ४. प्रतिद्वंद्वी ।

\*वही, भाग २, पृष्ठ ४ ।

५. अकलका फंदा, ६. प्रातः समीर, ७. फँसे, खिंचे, ८. संयमी, धार्मिक, ९. आदित्य, १०. निर्लज्ज, ११. गाल, १२. काँटा, सूखा, १३. स्वर का भार, १४. हल् (हलन्त) का चिन्ह, १५. द्वित्व-चिह्न, १६. आगे, १७. तृण, १८. दिवस, १९. कहूँ (कौरवी), २०. मोमबत्ती, दीपबत्ती, २१. क्षण-क्षण, २२. निर्लज्ज, २३. कलाओं से, २४. अफसोस, २५. बेचारा, २६. जुल्म, २७. मुक्ति, २८. रुक्का, लेख पत्र ।

अप-गुनाहामि हमी साते है गोते रात-दिन ।  
 अपनी कुदरत हात मा मुजकूँ उचारो ऐ खुदा ॥  
 तेरी अचल बाव ते है ईसबो-दम जन्वगर<sup>१</sup> ।  
 वो अँचल मुंज हात में है ज्यो कि मूसा का अमा<sup>२</sup> ।  
 मैं न जानूँ कामा वो दुतपाना<sup>३</sup> व मैगाना<sup>४</sup> वूँ ।  
 देवता हूँ हर बहा दिसता है तुज-मुग का सफ़ा<sup>५</sup> ॥१३०॥  
 आगे<sup>६</sup> है पदों अँगरे के मआनी तेरे सज ।  
 शुक कर हागि<sup>७</sup> हुआ है मुद्दा तूँ उम-दुआ\* ॥

( ३ )

तुज मुगवमलपे फिरता है भोग होकर अनास ।  
 दीवँ ये, जो पनेंग फिरे बेगउर<sup>१</sup> अकाम ॥१८४॥  
 तुज इस्क की वफा<sup>२</sup> में कमर पादया है वर ।  
 चंद-सूर का गो वाया<sup>३</sup> अहै जर-बमर<sup>४</sup> खवान ॥  
 उहरे खुदा<sup>५</sup> न देग निया<sup>६</sup> आम्का दी ।  
 तुज नैन दौलने<sup>७</sup> होना जेरोजवर<sup>८</sup> अकाम ॥  
 तू मेरी वाम है मनी होर तेरी वाम में ।  
 फिरता है उवाडोल कियरका कियर अकाम ॥  
 तुज दरम देग डरते पेताव<sup>९</sup> होयउर ।  
 मिर तुज चरन मी लाने कूँ आवे उतर अकाम ॥  
 चँद-सूर की अँगियाँ मो तुज देवने केने<sup>१०</sup> ।  
 लाया है नूर नीर नयन ते<sup>११</sup> विछड अकाम ॥  
 करता है गाही<sup>१२</sup> कुत्व मुहम्मद के नाव ते ।  
 तूँ-दाम हो रैया है मुहम्मद के घर अकामाँ ॥

( ४ )

दीपै जो गाह<sup>१</sup> सूर गहे<sup>२</sup> डूरे क्यो है डर ।  
 मुख मूर<sup>३</sup> हर नूर<sup>४</sup> मदा दीपै मेरे घर ॥८६६॥

१ ईसा की प्रकाशमान साँस, २ लाठी, ३ प्रतिमा-गूह, ४ मधुशाला, ५ स्वच्छता, उज्ज्वलता, ६ पाते (पजावी), डालते, ७ प्राप्ति, प्राप्त, ८ तेरी कामना ।

\*वही, पृष्ठ १४ ।

९ बेहोश, १० ईमानदारी, ११ पाया (पजावी), १२ सुनहरा कमरबंद, १३ भगवान् के लिये, १४ निश्चयनकर, ध्यानकर, १५ दृष्टि फिराते, १६ चारा चारा, १७ अघोर, १८ देखने के लिये, १९ आसुओं से, २० वादशाही, राज्य ।

†वही, पृष्ठ १२६ ।

२१ स्थान, २२ वहाँ, २३ मुख-सूर्य, २४ अप्सरा की पवित्रता ।

तुज मुख झलक की साजते सब दिन चदा सूरज ।  
 टुक मुख दिखावै लाज छिपै न आवै तेरे सर ॥  
 कुदसी<sup>१</sup> लिखे है दिल में तुमन नूर के वरन<sup>२</sup> ।  
 झलका दिखाओ तिल में<sup>३</sup> जड़ित जेका मौज पर ॥  
 तुज-अंग वास मनमने<sup>४</sup> फुल हो खिलै सोहन ।  
 सो वास ना समन मने<sup>५</sup> ना मुश्क<sup>६</sup> ना अंबर<sup>७</sup> ॥  
 हुरा<sup>८</sup> तवक सो नूर के ल्याइयाँ है चावसों ।  
 आरति सितारे सूर-चंदा करने तुज उपर ॥८७०॥  
 आशिक कहते है वागकूँ बहलाने जायें दिल ।  
 क्या बूझे फूल जाग<sup>९</sup> मगर बू जेतो भंवर ॥  
 घुंघरू वा घंट मस्त झनक साजकर चले ।  
 सो नाद सुनके मस्त हती जायें हार डार ॥  
 हँस्ति<sup>१०</sup> सक्याँ सो घंट सुनत गड़बड़ा उठ्याँ ।  
 बाबर गयंद तन्त पिछान्याँसो सर-कसर<sup>११</sup> ॥  
 कुल्बा तु दुख विसार बहक्के<sup>१२</sup> अलीवली<sup>१३</sup> ॥  
 ले हात खरग मार कमर खारजीयेँ खर<sup>१४</sup>\* ॥८७४॥

( ५ )

सुरज मुख फूलपर फूल्ये है अंबर-फूल<sup>१५</sup> कुंतलर के ।  
 न पाये यो अजब<sup>१६</sup> फूलाँ सो मुक्की<sup>१७</sup> केस अचपल के ॥१८९०॥  
 घुंगरबाल्याँ छव अलकाँ<sup>१८</sup> छव नयन पर फितने<sup>१९</sup> कर्तियाँ लख ।  
 सो जों के मस्त हर्न्याँ गल जञ्जीर<sup>२०</sup> बां पाय है . . . के ॥  
 चकोराँ होर रावी<sup>२१</sup> हंस सुरँग सुरखाबी<sup>२२</sup> फल देखन ॥  
 चँदरमुख लब-शकर<sup>२३</sup> ते सिर सो खूबी . . .न्दवानी चंचल के ॥  
 जो निर्मल मोतियाँ चोली सों जोवन देख पूछ्या है ।  
 सो कै छँद सौ छुपा लेकर आय् दिन आज आँचल के ॥

१. पवित्र लेख, २. रंग, ३. पलमें, ४. मनमें, ५. चमेली में, ६. कस्तूरी,  
 ७. सुगंधित रत्न, ८. अप्सराएँ, ९. कौआ, १०. हस्तिनी, ११. पूर्णतः, १२. भगवान् के  
 लिये, १३. अली स्वामी, १४. विधर्मी (शिया भिन्न) गदहा ।

\* वही पृष्ठ १३३ ।

१५. आकाशफूल, १६. अद्भुत, १७. कस्तूरी-रंग (काले), १८. अलकों की शोभा,  
 १९. घोखा, २०. गलेकी शृंखला, २१. तोता, २२. एक चिड़िया, २३. शक्कर-जैसा  
 मोठा ओठ ।

पदक धन पैना छँदवँद सो फिरे धन ज्वाँ हुआ हैराँ ।

मगर ल्याये पकड सूरजकुँ मोतियाँ हार तुज-गल के ॥  
तिरै जो वाम<sup>३</sup> आ जल में दिसे रोमावली यो उस ।

न जाने दे रखे लहराँ सो कुँदन जेर<sup>१</sup> निर्मल के ॥  
छबीली सुन गजल फुत्वा कि खुश हो आ वचन कनमें<sup>१</sup> ।

कहूँगा एक गर बोसे<sup>१</sup> दो दे है आझल अचल के\* ॥१८९६॥

(२) नख-शिल—

( १ )

तेरे दो नयन है मद मस्त मतवाले । तेरे दो गाल है खूबी<sup>१</sup> के गुलाल ॥१२५९॥  
तेरे मुख की लटाँ नै है कि दो नाग । सुलेमाँ की अँगूठी<sup>२</sup> के है रखवाल ॥१२६०॥  
भवाँ तेर्याँकुँ क्यो लिलैगा नक्काश<sup>३</sup> । कमा दो सीचियाँ है सस्त अश्वाल<sup>४</sup> ॥  
सख्याँ के हात में देख प्याली मद की । नही देख्या अगिन के तै जो मय्याल<sup>५</sup> ॥  
तुँ मोती बेचहा<sup>६</sup> तुज वहा<sup>७</sup> मैं । जगत का माल<sup>८</sup> है तेरा सो पामाल ॥  
जहाँ है सीमिया<sup>९</sup> का नरश उमते<sup>१०</sup> । कहे है आरिफा<sup>११</sup> सब उसकुँ तमसाल<sup>१२</sup> ॥

नवी सद्के कुतुब जम<sup>१३</sup> ऐश<sup>१४</sup> कर ऐश ।

कि तुज दर पर पडे है फतहो-अक्वाल<sup>१५</sup> † ॥

( २ )

उजाला अगमने<sup>१</sup> क्षमक्या वादे वाल भोली जो । हुआ फिर रैन अंधारा वँदे मो वेस खोली जो ॥  
लटकते जब चलै सो धन सिके है चाल हसीका<sup>२</sup> । वैनवन फूल सब भरिये जो हंमकर बात बोली जो  
मुँजे जब देखकर सो धन दसन-तल ल्याये लव दीसे । दमन नावात<sup>३</sup> अघरा मृतके पानी सो धुली जो ॥  
करो अब आशवाँ दिल घट<sup>४</sup> वचन माशूक<sup>५</sup> का यक नै । वफा<sup>६</sup> अछउराँ जो थे मो अपने दिलतै धोली जो

मुहम्मद का मुहद्वत आ किया है ठार मुँज-दिल मे ॥

अली घर भीक मगत तै भरी मुँज दिल की झोली जो † ॥१५१९॥

१ पहनकर, २ एक भछली, ३ सुवर्ण, ४ कानमें, ५ चुवन ।

\* वही, पृ० २४८ ।

६ सौ-वध, ७ जादूकी अगूठी, ८ चित्रकार, ९ आकार, १० प्रवाह,  
११ अनमेल, १२ तेरा मुल्क, १३ मोल, १४ चाँदो, १५ उससे, १६ जानी,  
१७ उदाहरण, १८ सदा, १९ आनन्द, २० विजय और प्रताप ।

† वही पृष्ठ, १६५ ।

२१ जगमें, २२ कहाँ, २३ मिसरी, २४ छोटा, २५ प्रिय, २६ ईमानदार ।

‡ वही, पृष्ठ २०० ।

( ३ )

छबीली है सूरत हमारे सजन की । कि या पूतली उस<sup>१</sup> कहूँ अप-नयन की<sup>२</sup> ॥१७३१॥  
न देख्या निछल कोई उस सार<sup>३</sup> सूरत । सराऊँ<sup>४</sup> किते जेब<sup>५</sup> अपने मोहन की ॥  
चँदा सा देख्या मुख उस सर्व-कद<sup>६</sup> पर । तो होती है शर्मिदा पुतली गगन की ॥  
तेरा हुस्न फुलवन ते नाजुक<sup>७</sup> दिसै तो । न दीसै तेरे अंगे<sup>८</sup> छव कोइ वन की ॥  
नयन तेरे दो फूल नरगसिते जेबा<sup>९</sup> । नजाकत<sup>१०</sup> है तुज-मुख में रंगी चमन की ॥  
तेरे जुल्फ फंदा<sup>११</sup> में दिल आशिकाँ के । रहे हैं सो आशिक हो पिउ के नयन की ॥

नबी सदके कुतुबा सो ओ पिउ मिल्या है ।

तो क्या कहूँ सकूँ बात उस-मुख सुमन की\* ॥१९३७॥

( ४ )

पियारी के नैनाँ है जैसे कटारे । न सम उसके अंगे कोई है दो-धारे ॥१७८७॥  
असर<sup>१२</sup> तुज मुहब्बत का जिसकूँ चड़ैगा । तेरे लाल<sup>१३</sup> बिन उसको कोइ न उतारै ॥  
दो लोचन है तेरे निसँग चोर रावत । उनोसों दिलेरी न कर सब हि हारे ॥  
सुहाता है तुजकूँ गुमाँ होर गरुरी<sup>१४</sup> । कि माते अहै तुज-हुसन<sup>१५</sup> के पियारे ॥१७९०॥  
सख्याँ में है तू मिर्गानयनी छबीली । सजन तो नहीं होते तुजते किनारे ।  
अजब चंचलाई है तेरे नयन में । कि खंजन नमन<sup>१६</sup> एक तिल<sup>१७</sup> कै<sup>१८</sup> न ठारे ॥

नबी सदके कुतुबा सो मद पीवे जम जम<sup>१९</sup> ॥

ओ चंद-मुख कि जिस मुखतें जोती सिंगारे† ॥१७९३॥

( ५ )

फुले रयन या तारे धन या भँवरे मुख ले मोगरी ।

या नीलमीं तारों सों भर मोती पिरोये सोक री ॥१८२९॥

सर्वन<sup>२०</sup> है ओ या सेवती फुल या सीपियाँ जौहरियाँ की ।

या चँद नौ<sup>२१</sup> दुकान देख पाये जग जौहरी संतोख री ॥

१. उसे, २. अपने नयन, ३. उसके सारखा, ४. सराहूँ, ५. सुन्दर, ६. सरो-  
जैसे सीधे कदवाली, ७. कोमल, ८. आगे, ९. सुन्दर, १०. कोमलता, ११. अलक के फंदों ।  
\* वहीं, पृष्ठ २२७ । १२. प्रभाव, १३. प्रिय, १४. अभिमान, १५. तेरा सौन्दर्य, १६. खंजन से,  
१७. पल, १८. कहीं, १९. सदा ।

† वही, पृष्ठ २३३ ।

२०. कान, २१. नया चाँद ।



भौंवा है ओ या दोनो आँन या मुद्<sup>१</sup> है दाम<sup>२</sup> के ।  
 या चँद नव्रे या भौरि पर ना गमज लई जग जोग री ॥  
 या मुख है ओ या पुनम या सूल शीलानूरपा<sup>३</sup> ।  
 या दर्पन ओ या जाम<sup>४</sup> जग या फुल मरग के लोक री ॥  
 धन का दहन<sup>५</sup> हीर्या का तन लव<sup>६</sup> लाल कुँदन है जकन<sup>७</sup> ।  
 सुत्रे सीने पर कुच रतन तै ऐसी कै<sup>८</sup> किस यो करो ॥  
 जो ले तँवरा हातमें गाने लगे महेल्यां सो मिल ।  
 कँठ-जेल<sup>९</sup> अपना तनके जो घोडा गले है सोकरी ॥  
 हजरत नवी के सदके सुन वाता कुतुब गहमस्त हो ।  
 बहिया कि करता रात-दिन ऐमी मखी सों भोग री\* ॥१८३५॥

## (३) प्रियतमा आनन्दमयी—

पियासो रात जागी है सो दिस्ती है मो धन सरखुश<sup>१</sup> ।  
 मदन सरखुश, सयन सरखुश, अँजन सरखुश, नयन सरखुश ॥१०५७॥  
 पियारी प्यारमो पी है पियाला पेम वा तो है ।  
 दहन<sup>२</sup> सरखुश, दमन सरखुश, रमन सरखुश, वचन मरखुश ॥  
 नयन मतवाली हो झुलती पियाली पेम पी पी कर ।  
 जोवन सरखुश है, सो मन मरखुश, तो तन मरखुश, वग्न<sup>३</sup> सरखुश ॥  
 सखी लट सुबुलिस्ता<sup>४</sup> ते बताये<sup>५</sup> बाव परिमल तू<sup>६</sup> ।  
 चमक सरखुश है, वन सरखुश, समन<sup>७</sup> सरखुश, अगन सरखुश ॥१०६॥  
 चडी है नेह की मस्ती सपीकू पीव के संगते ।  
 चरन मरखुश, चलन सरखुश, हिलन मरखुश, डुलन मरखुश ॥  
 मदन सो मटपटाई मो अजायब कुछ है ठव धन वा ।  
 जकन<sup>८</sup> सरखुश, चुमन सरखुश, लगन सरखुश, है मन सरखुश ॥  
 नवी सदके कुतुब बहु गुन रयन-दिन ऐश करने ते ।  
 जोवन सरखुश, मदन सरखुश, जगन सरखुश, मगन मरखुश ॥१०६३॥

## (४) जगमोहनी प्रियतमा—

जगमोहिनी वो उत्तम सो नारी । शह पेमसेती जगडनी है भारी ॥१८५७॥

१ मुद्दी, २ जाल, ३ ज्वाला, प्रकाश, चरणवाला, ४ प्याला, ५ मुख, ६ ओठ, ७ ठुड्डी, ८ फहाँ, ९ षठ के नीचे ।

\* वही, पृष्ठ २३८ ।

१० विभोर, प्रसन्न, ११ मुख, १२ कान, १३ जटामासी (बालछड) का बाग, १४ दिखला दे, १५ तेरी सुगधि, १६ चमेली, १७ ठुड्डी ।

† वही, भाग २, पृष्ठ १३७ ।

अमृतवचनी मीठी जबाँ सों । छन्द-बन्द-अभरन सो आप-सँवारी ॥  
 वो छंद-वंद भरी है पिया रिझाती । कै सूजती उससों तूँ गँधारी ॥  
 गर यों करती है छंद छाले । है पेम के पंत में वो सारी ॥१८६०॥  
 हे मृगनयनी गयंदगँवनी । नैनोसों करै कमान दारी ॥  
 दूतिन तू न खा होशियार बाजी । प्यारी व पिया में है सो नारी ॥  
 सदके नबी है कुतुब के मानी ॥  
 सखियाँ मेंहूँ है शहकि प्यारी\* ॥

(५) मस्त प्रियतमा--

मदन मस्त बदिल मस्त कजन मस्त परी मस्त । हुई मस्त पवनमस्त लगन मस्त परीमस्त ॥३४३॥  
 चढ़ी मस्त वही मस्त डुली मस्त रही मस्त । मुखा मस्त सदा<sup>१</sup> मस्त सोहन०मस्त ॥  
 खड़ी मस्त अंचल मस्त ढली मस्त ओ रही मस्त । गजक मस्त नुकल मस्त वचन० ॥  
 परी मस्त विपन मस्त सुरा मस्त हुई मस्त । मिली मस्त खिजी मस्त रसन मस्त ॥  
 खोपा मस्त फुलाँ मस्त कजलमस्त खुली मस्त । लटाँ मस्त नयन मस्त देखन मस्त ॥  
 तिला मस्त<sup>२</sup> तुरा मस्त धरा मस्त धड़ी मस्त । शकर मस्त चुमन मस्त हंसन० मस्त ॥  
 चोली मस्त कमल मस्त भंवर मस्त ।  
 कुतुब मस्त करी<sup>३</sup> मस्त यों मस्त परी मस्ताँ ॥३४९॥

(६) प्रेमवियोगिनी--

( १ )

पिया जों जों मिले त्यों त्यों दूतिन<sup>४</sup>-दिल दाग जाली है ।  
 सरासर<sup>५</sup> दूतनी के तै करो जो जाग<sup>६</sup> काली में ॥१४८२॥  
 पियारे आजकल आवेंगे कर ले आस ला रह कर ।  
 हरेक तिल<sup>७</sup> कूँ करन<sup>८</sup> करकर गुसाईं बाज<sup>९</sup> टाली में ॥  
 जपूँ मै जागने में तुज, सेबूँ सपनेमने<sup>१०</sup> भी तुज ।  
 जनम तुज ध्यान में कट्या<sup>११</sup> नहीं हूँ तुजतै खाली मै ॥  
 तुमन बिन देस मुँज निस है तुमन सों रैन मुँज दिन है ।  
 खड़ी एक पाँव पर जों सुख मिलने की उताली<sup>१२</sup> में ॥  
 नबी सदके कुतुब कन मै वचन कह जाति के मुन्किर<sup>१३</sup> ।  
 सख्याँ सब ग्वाही है तो बात करती देखी हाली में‡ ॥१४८६॥

\* वही, भाग २, पृष्ठ २४२ ।

१. स्वर, २. काला तिल, ३. किया ।

† वही, पृ० ४७ ।

४. सौत, ५. पूर्णतः, ६. कौआ, ७. पल, ८. युग, ९. विना, १०. सपने में,  
 ११. कटा, १२. उतावली, १३. इन्कार करनेवाली ।

‡ वही, भाग दो, पृष्ठ १९५ ।

( २ )

गुमाईं पाम भेरे हैं कि देवी आज सपने में ।  
 उठी जब हडबडाकर मैं न देती सेज अपने में ॥१४८७॥  
 पिया की छाती लगकर मैं रही थी टिपके छाती में ।  
 तहाते यो<sup>१</sup> दूतिन काडी जो मत देखे छुपने में ॥  
 न बूझूं तुज पिरित म्याने<sup>२</sup> मेरा चित क्यों वर आवेगा<sup>३</sup> ।  
 न मुंज में मन्न<sup>४</sup> ता तुज मेह<sup>५</sup> जावे कन<sup>६</sup> जपनेमें ॥  
 तुमारी सौं तुमनवूं मैं कधी भी याद आई थी ।  
 तुमन जपनेते निम-दिन मैंन पुनम-चेंद जो है खपनेमें ॥  
 नवी मदवे रे कुतुवा भर्या है इस्क का वाजार ।  
 जो कुच मंगता है सौदागर नफा कुछ नं है तपने में\* ॥१४९१॥

( ३ )

पिया किस सात<sup>१</sup> जिव लाये कि समजे किसकु<sup>२</sup> जाता नै ।  
 जो आंसू पोछने जाऊँ उसामां वात आता नै ॥१५०४॥  
 पिया तो शतं<sup>३</sup> बोले हूँ कि मैं तुज सेज आऊँगा ।  
 बले<sup>४</sup> मुज सेज आये धाज<sup>५</sup> मेरा दिल पत्यातां नैं ॥  
 कते<sup>६</sup> है वाग में गये तो गँवाया जाय दुख दिलका ।  
 बले मुक वाग पिउका देखे विन मुंज दुखल जाता नैं ॥  
 फूलों सब वास के वनमें खिले हूँ मना भलातैं<sup>७</sup> तैं ।  
 बले पिउ-धासु<sup>८</sup> थरक् विन वास विन हरवास भाता नैं ॥  
 मुहम्मद नाँव दिल में रख मुहब्बत सो मुहम्मत तूँ ।  
 अलौ के इस्क विन कुच काम भी तुजकू सुहाता नैं ॥१५०८॥

( ४ )

तुज विन प्यारे नीद टुक नैनामिं मुंज आती नहीं ।  
 रैनी अधारी है कठिन तुज विन कटी जाती नहीं ॥१५२०॥  
 तरा खबर<sup>१</sup> ऐ मोहनी मुंकुं किया है वेखबर ।  
 दिलते खबर की याद सा अपने के<sup>२</sup> जल्लाती नहीं ॥

१ यही, २ बीच में, ३ सफल होगा, ४ सतोप, ५ तेरी दया, ६ युग ।

\* वही, भाग २, पृष्ठ १९६ ।

७ साथ, ८ किसी को, ९ वचन, १० लेकिन, ११ विना, १२ कहते, १३. मन  
 सुमाने ।

† वही, पृष्ठ १९८ ।

१४ विचार, १५ क्यों ।

हावे न पावे<sup>१</sup> रोम रोम बजते अहै तुज याद<sup>२</sup> नित ।  
 ओ नाद पाव्यां का मुँजे कै<sup>३</sup> याद दिलाती नहीं ॥  
 केता सबूरी<sup>४</sup> मै करूँ जो मीन पानी ते बिछड़ ।  
 तू गल<sup>५</sup> सुनाती है बले कै<sup>६</sup> मुँज गले लाती नहीं ॥  
 केता अपसकूँ नाज होर छँद में पवांगी<sup>७</sup> ऐ सखी ।  
 आ सेज पर मिल मिल गमें तुज बिन मुजे राती<sup>८</sup> नहीं ॥  
 ऐ धन घुंगटमें नाजके केता छुपा के आपसे ।  
 कै मुँज नैन-तार्यां मै तुज मुखचंद झमकाती नहीं ॥  
 खाना-नबी<sup>९</sup> सदके कुतुब आशिक कहाता है तेरा ।  
 उस दिन यकी<sup>१०</sup> पहिचान तू भी<sup>११</sup> कोइ तुज साती<sup>१२</sup> नहीं\* ॥१५२६॥

( ५ )

तेरे दरसन कि मै हूँ साई माती । मुजे लाओ<sup>१३</sup> पिया छानी सों छाती ॥१९६०॥  
 पियारे हात धर सभालो मुँजकूँ । कि तिल-तिल<sup>१४</sup> दूती<sup>१५</sup> तुज-माती डराती ।  
 पेरेम प्याला पिलाओ मुँजकूँ दमदम<sup>१६</sup> । कि तूँ है दो जगत में मुँज सँगाती ॥  
 न राखूँ तुज नयन में राखूँ दिल मे । कि तूँ मेरा पियारा जिउका साथी ॥  
 पिया के ध्यान सों मै मस्त हूँ मस्त । मुँजे बिरहे के बैनां कै<sup>१७</sup> सुनाती ॥  
 अगर एक तिल पड़े अंतर<sup>१८</sup> पिया सों । नयन जलसों सप्त समदर<sup>१९</sup> भराती ॥

नबी सदके कहै कुतुबा कि प्यारी ।

रिझा दमदम अघर प्याला पिलाती† ॥१९६६॥

(७) प्रियतमा-दर्शन—

ऐ नार मोसी नार है तेरा सरस दरस । जिस हीन पर जो दिस्ट<sup>२०</sup> करे होय ओ परस<sup>२१</sup> ॥१७७॥  
 दिल लूटे बाज<sup>२२</sup> तिल<sup>२३</sup> रती<sup>२४</sup> नै शोख<sup>२५</sup> सुंदरी । दिल लूटने के काम में तुजकूँ बहुत है जस ॥

१. हायहाय, २. स्मृति, ३. क्यों, ४. संतोष, ५. बात (पंजाबी), ६. लेकिन,  
 ७. डालंगी, ८. फिर, ९. पैगंबरके परिवार, १०. विश्वास, ११. फिर, १२. साथी ।

\* वही, पृष्ठ २०१ ।

१३. लगाओ, १४. पल-पल, १५. सौत, १६. क्षण-क्षण, १७. क्यों, १८. फर्क, भेद,  
 १९. सप्त समुद्र ।

† वही, पृष्ठ २५८ ।

२०. दृष्टि, २१. पारसमणि, २२. विना, २३. पल, २४. रहती,  
 २५. गर्वोली ।

ना जानूँ तुज दरस में सखी क्या मतरा अहै । सैली तुजे सो देख के मजनू किये अपस ॥  
 शीरी है तू व खुसरवे-शीरी है तेरा नाँव । फरहाद हो के जिव करे तुज सेरी<sup>१</sup> हवस<sup>२</sup> ॥  
 यूसुफ हुसन<sup>३</sup> तेरा है जुलेखा है दिल मेरा । तुज भुज पिरित कसौटी पे देख्या हूँ कसमकस ॥  
 मासूक हो आशिक<sup>४</sup> हमें मिलके दोनों है । ना आ दूतिन हमनमने<sup>५</sup> तेरा है सग वस ॥

सदके नवी कुतुब के दिल में जो इश्क है ।

ओ इश्क है जगत मने<sup>६</sup> ससार का कलस\* ॥

### (८) प्रेमी अधीर—

पिया वाज<sup>७</sup> प्याला पिया जाय ना । पिया वाज यक तिल<sup>८</sup> जिया जाय ना ॥१७१॥

कहेते पिया विन सवूरी<sup>९</sup> कहूँ । कहया जाय अम्मा<sup>१०</sup> किया जाय ना ॥

नही इश्क जिस वह बडा कूड<sup>११</sup> है । कधी उससे मिल बैसिया<sup>१२</sup> जाय ना ॥

कुतुब साह न दे मुज दिवाने<sup>१३</sup> कुं पद ॥

दिवाने कूँ कुछ पद<sup>१४</sup> दिया जाय ना ॥१७३॥

### (९) प्रेमी पागल—

बाग दिल में तुज मुहब्बत का अचवा फुल गया ।

वास सुँघ फूली अरक का<sup>१५</sup> मैं हुआ हूँ डगमग्या ॥४९॥

ये इलम<sup>१६</sup> होर ये कुतुब<sup>१७</sup> होर किसते बझ्या जाय ना ।

आलिमा<sup>१८</sup> बेचारा देखकर उसकी तक<sup>१९</sup> में रहे थक्या ॥५०॥

साँवली कद-सर्वे<sup>२०</sup> कूँ आगे है अब भीठे नवात<sup>२१</sup> ।

चलन जाकर मैं डरौं सेती रह्या हूँ धकधक्या ॥

शीशे के कुलकुलते पियाले म्याने वाँधे बुडबुडे<sup>२२</sup> ।

बुडबुडा वो नेह के जोरो सौ<sup>२३</sup> जगमें जगमग्या ॥

तू अँधारे पथ में ना मँगे रोशनी अगयार<sup>२४</sup> ते ।

रोशनी तुज देवे कौन कुदरत<sup>२५</sup> उजाले का लग्या ॥

१ तेरे साथ, २ कामना, ३ यूसुफ का सौन्दर्य, ४ प्रेमी, ५ हमारे में, ६ जगत में।

\*वही, पृष्ठ १२६।

७ विना, ८ पल, क्षण, ९ धँयँ, सतोष, १० लेकिन, ११ अघा, १२ मिल  
 बँठा, १३ पागल, १४ उपदेश।

† वही, पृष्ठ २३।

१५ शराब का, १६-विद्या, १७ पुस्तकें, १८ पड़ित लोग, १९ ताक, २० सरो  
 जैसे कववाली, २१ मिसरी, २२ बुलबुला, २३ बल से, २४ पराये लोगो से, २५ शक्ति।

मैं उम्मी<sup>१</sup> कर गिनते हैं सब उम्मियाँ तू इल्म में ।

मो जवानी<sup>२</sup> का कलम तुज वस्फ<sup>३</sup> लिख ना सक भग्या ॥

तुम मआनी के गुनाहाँ का रकम<sup>४</sup> करते है कै<sup>५</sup> ।

मै मुहम्मद नांव ते दोनों जहाँ म्याने जग्या\* ॥५५॥

### (१०) प्रेमी-समझावना—

सकी<sup>६</sup> आपे तूँ साईं समजावना । मंदिर मेरे समजाव कर ल्यावना ॥२१६॥

प्यारी का करना है मनभावना । पिया मुख वचन ते मँगल गावना ॥

पिया हात में है मेरा अख्तियार । मुँज अपना किया है मो मन-भावना ॥

मुँजे गुंचे<sup>७</sup> कू देख याद आवता । अलंकार सो साईं मुस्कावना<sup>८</sup> ॥

जलाना दूतिन<sup>९</sup> कू अगिन रश्क में । संताने दूतिन मुँजसों रावना<sup>१०</sup> ॥

बुलाना बखत<sup>११</sup> मुँज हँसी बाजी सों । दूतिन देखने मुँज मंदिर आवना ॥

नबी सदके<sup>१२</sup> कुत्बा तूँ उस छोकरी । सयन की सरक में सो हिलगावना † ॥

### (११) प्रेमी-विरह

विरह मुँज जागता<sup>१३</sup> है साईं तुम बाज<sup>१४</sup> । मेरे मंदिर तुम आ देउ वस्ल<sup>१५</sup> का राज ॥५१॥

जो आशिक<sup>१६</sup> साईं कारन जी छिपावे । उसे नै आशिकाँ के सफ़्र मने<sup>१७</sup> लाज ॥

जिने साबित कदम<sup>१८</sup> है इश्क म्याने<sup>१९</sup> । धरेगा पेम उसके सीस पर ताज ॥

जिने कामिल<sup>२०</sup> किया है पेम अपना । गनी<sup>२१</sup> है दो जगत में नै वह मुहताज<sup>२२</sup> ॥

पिरितकूँ जान आशिक जो अहै फ़र्द<sup>२३</sup> । तूँ यों बूजे तो तुज दिखलाये मिनहाज<sup>२४</sup> ॥

पिरित तुजकूँ करै गर तीर-वारा<sup>२५</sup> । तूँ अपना सीना कर उस ताईं आमाज<sup>२६</sup> ॥

नबी सदके कुतुब शह दो जगत में । अली का मेहू तुज सिर दुरंतुताज<sup>२७</sup> ‡ ॥५५७॥

### (१२) प्रेम बाधा—

सहेली न कर तूँ हमनसेती दंद<sup>२८</sup> । कि मै बूझे हूँ तेरे सब छंद-बंद<sup>२९</sup> ॥६४१॥

१. अनपढ़, २. मेरे मुँह से, ३. तेरे गुण, ४. लिखना, ५. क्यों ।

\* वही, भाग २, पृष्ठ ६ ।

६. सखी, ७. कली को, ८. मुस्काना, ९. सौत, १०. राजा, ११. समय,  
१२. नौछावर ।

† वही, पृष्ठ २८ ।

१३. जाँचता, १४. विना, १५. मिलन, १६. प्रेमी, १७. पांती में, १८. दूढ़ पग,  
१९. प्रेम में, २०. पूर्ण, २१. धनी, २२. गरीब, २३. अकेला, व्यक्ति, २४. मार्ग, २५. तीर-  
वर्षा से मारना, २६. लक्ष्य, निशाना, २७. तेरे मुकुट का मोती ।

‡ वही, पृष्ठ ७४ ।

२८. द्वन्द्व, झगड़ा, २९. चाल ।

भँतर पढती है दूती पिउ-दिष्ट<sup>१</sup> पर । कि जेवा<sup>२</sup> दिसे उस नयन अपने छद<sup>३</sup> ॥  
 सकी चाटे न वर मो प्यारेसेती । कि सलता है मुँज सीना में तेरा दद ॥  
 पियाकू सत्रा नेह आता अहै । दुतिन उमके नै पिउ अँगे<sup>४</sup> अजमन्द<sup>५</sup> ॥  
 नही देखे है किम<sup>६</sup> चमन मे कधी । मजन कद्<sup>७</sup> ऐसा सरो कोद बुलद ॥  
 मुहुब्बत पियाला पर्यां ले खड्यां । दिसे या उनन हतमे ज्यो सूर-चन्द ॥  
 मुहम्मद गुलामी<sup>८</sup> ते कुत्वे जमा<sup>९</sup> । सवयांगल मे पाया<sup>१०</sup> है अप नेह-फद\* ॥६४७॥

(१३) बुनाई—

चदा मुख पर मकीकन<sup>११</sup> देखने वागीते वालां कुच<sup>१२</sup> ।  
 गुसेसो उस उपर खीचूं<sup>१३</sup> कमां अब्रू-हलाला<sup>१४</sup> कुच ॥  
 तुमारा हुम्न मेरे दो नयन में नकश<sup>१५</sup> बांध्या है ।  
 जे कोइ देखें तुमनकू<sup>१६</sup> कुच होवे उनके निहालां<sup>१७</sup> कुछ ॥  
 न आवे सर्व कू<sup>१८</sup> हर्गिज कधी ओ नार का डुलना ।  
 सोहाते है उनोकू<sup>१९</sup> नाज<sup>२०</sup> होर चालें व चालां कुच ।  
 जेते है समेंद<sup>२१</sup> होर खुश्री<sup>२२</sup> कुं भी क्या जीते मँगते ।  
 हमायल<sup>२३</sup> नम्ने पाये<sup>२४</sup> है गले में कठमाला कुच ॥  
 गँवाने गम गया में वाग में देला अजायब<sup>२५</sup> कुच ।  
 पिया के पाँव पडने तै<sup>२६</sup> हुये फूल डालां कुच ॥  
 दो दिल होर<sup>२७</sup> पूंग के मोती तुमनकन<sup>२८</sup> नै फरें वाता ।  
 उमी ते होके निमल डुलने है खूवां<sup>२९</sup> के गालां कुच ॥  
 मआनी इश्क के तारां नो बुनता है सरामर<sup>३०</sup> मय ।  
 सरामर कि<sup>३१</sup> वुन सकमी<sup>३२</sup> उतो के है खियाला<sup>३३</sup> कुचा ॥१६॥

(१४) प्रेम-विष

तेरी नेहका मुँजकू<sup>३४</sup> विच्छ लड्या । मेरे स्वही तनमें विम उमका चड्या ॥  
 मैं आई हूँ तुज पास उतारा करन । तुमी करने हारा उतारा पियारा ॥  
 जो देखी मैं उस रूपवता सजन । नयन उस सलोने ते फिर विस चड्या<sup>३५</sup> ॥

१ प्रिय की दृष्टि, २ सुन्दर, ३ चाल, छल छद, ४ प्रिय के आगे, ५ सम्मानित, ६ किसी, ७ प्रियतमाका कद, आकृति, ८ दासपन, ९ युग का ध्रुवतारा, १० पाया (पजाबी), डाला ।

\* वही, पृष्ठ ८५ ।

११ सखी के पास, १२ कुछ, १३ झू, चद्र घनुष, १४ चित्र, १५ सतुष्ट, १६ लीला, १७ समुद्र, १८ स्थल, १९ हमेल, २० पाये (पजाबी), डाले, २१ अद्भुत, २२ तई, लिये (स्हेलखडी), २३ और, २४ तुम्हारे पास, २५ सुन्दरियां, २६ पूर्णतया, २७ किसने, २८ सकोंगे (पजाबी), २९ विचार ।

† वही, पृष्ठ ६९ ।

‡ वही, भाग २, पृष्ठ २७ ।

(१५) प्रेम-प्रतीक्षा—

करी फडके<sup>१</sup> आवेंगे मन-हरना । लगूंगी आज पिया के चरना ॥  
 सँवारी हूँ मै सदे सीना<sup>२</sup> तुतै<sup>३</sup> । मो अंगन में तू पिया पग धरना ॥  
 कि देवो मुजकूँ असर<sup>४</sup> तुम ललना । कि तुमीं मन के मेरे है परना<sup>५</sup> ॥  
 दूते का कूड़कपट दूतिन कूँ । नेहनगर में तो सकियाँ सों फिरना ॥  
 फूल-वन में तेरा नाजुक है दहन<sup>६</sup> । चुप रहना आह सखी ना करना ॥

नबी सदेके कुत्बा के मन में ।

जौ सी नाव<sup>७</sup> सकी<sup>८</sup> जप हरना\* ॥

(२)

युसुफ़े-गुम<sup>९</sup> फिर आगा<sup>१०</sup> अब व कनआँ<sup>११</sup> ग़म न खा ।  
 घर तेरा उम्मेदका होगा गुलिस्ताँ<sup>१२</sup> ग़म न खा ॥  
 ऐ हिया, नेह दुख दुख्या सो खूब होगा हाल तुज ।  
 म का चिन्ता हो गया फिर आकि जानाँ<sup>१३</sup> ग़म न खा ॥  
 विरहे कहावे दो दिन था दूर अपने पीवते ।  
 दायम<sup>१४</sup> एकधा तूँ न रहसी<sup>१५</sup> कार मीजाँ<sup>१६</sup> ग़म न खा ॥  
 जम<sup>१७</sup> बहारे-उम्र तुज है फिर कि आगा<sup>१८</sup> बाग मे ।  
 चत्र<sup>१९</sup> फूलका खिलके रेंगीं मुर्ग खुशखवाँ<sup>२०</sup> ग़म न खा ॥  
 हाँ तु ना उम्मेद ना हो कौन जाने सिरें-नौब<sup>२१</sup> ।  
 क्या अच्छैगा<sup>२२</sup> पदे ओझल खेल पुतल्याँ ग़म न खा ॥  
 ओ जँगल में शौक सों अब कावा खातिर<sup>२३</sup> रख कदम ।  
 तुज अगर बोले चुभे काँटे मुगीलाँ<sup>२४</sup> ग़म न खा ॥  
 ए हिया, मोजाँ ते न डर मन का भाता होयगा ।  
 तो तुझे है नूह कस्तीबान<sup>२५</sup> तूफाँ ग़म न खा ॥  
 बाट तेरा दूर अगर है इश्क पथ दिखलायगा ।  
 शाहे रायाँ<sup>२६</sup> तूँ है रायाँ मे ज रायाँ<sup>२७</sup> ग़म न खा ॥

१. अब, जब, २. कलेजा, छाती, ३. तेरे तई, तेरे लिये, ४. प्रभाव, ५. प्राण, ६. मुख,  
 ७. नाम, ८. सखी ।

\* वही, पृष्ठ ७१ ।

९. लुप्त, १०. आयेगा, ११. कनआँ मुल्क मे, १२. पुष्पवाटिका, १३. प्यारी,  
 १४. सदा, १५. रहैगा, १६. काम नापनेवाला, १७. सदा, १८. आयेगा, १९. छत्र,  
 २०. सुभाषी, २१. गुप्त-रहस्य, २२. रहैगा, २३. कलाके लिये, २४. बबूल, २५. नाविक,  
 मल्लाह, २६. शाहंशाह, २७. राजाओंसे ।



कुरबशाह इम गजे फिक्रो खिलवते<sup>१</sup> दीनी मने<sup>१</sup>।

ता अछे<sup>१</sup> ददत<sup>१</sup> दुआ वो दसें कुरआ<sup>१</sup> गम न खा\* ॥८०॥

### (१६) प्रेम-उल्लास—

तुज रूप देख पाते है चित के नयन उमस<sup>१</sup>। अस्तुत तेरी करन केरे तिल-तिल<sup>१</sup> वचन उमस ॥९७०॥  
तुज हुस्न केरे दार<sup>१</sup> में रक्काम<sup>१</sup> होयकर। बरता है रक्म मस्ती मो पाकर गगन० ॥  
जिस देस<sup>१</sup> ते तुज देख्या उस दिन ते वेसुद हो। भी<sup>१</sup> तुजसो मिलने ताई करे जीव तन० ॥  
हे बेवहा<sup>१</sup> बतन सकी तू तो तेरे ऊपर। आपसके तै<sup>१</sup> निवारने<sup>१</sup> बरने रतन० ॥  
तेरा उमम सका कधी जासे<sup>१</sup> न मुंजे सेती। राख्या हु दिलके तवले में तेरा जतन० ॥  
तुज मुख के नीरते सो तेरी पायकर सदा। पाते है ताजा होय कि सब फूलवन० ॥

सदके नवी के कुत्ब सदा इश्कबाज<sup>१</sup> है ॥

इस काम में मुजे देते है पज-तन<sup>१</sup> उमसा ॥

### (१७) प्रेम-न्यास—

सकी, आज प्याला आनन्द का पिला मुंज। ब याकूत अघरा<sup>१</sup> की मस्ती दिला मुज ॥५३७॥  
महल दिसते है नूर के अति सफा<sup>१</sup> सो। सकी ल्या सजनकू मनाकर बुला मुंज ॥  
गगन से तबक<sup>१</sup> मोतियां सो भरे हो। पिया आरती ताई पिउकू हिला<sup>१</sup> मुंज ॥  
तेरे नेह विन जीवना मुंज न भावै। ममीहानमन<sup>१</sup> आप-दम<sup>१</sup> मो जिला मुंज ॥  
अघर तेरे विन मुज न भावै अकीवी<sup>१</sup>। वदन<sup>१</sup> तेरे विन नै है नीका तिला<sup>१</sup> मुंज ॥  
तेरे हुस्न<sup>१</sup> विन होर मुंज नैन में वद<sup>१</sup>। न आवे कि है इन सेती इत्ला<sup>१</sup> मुंज ॥

नवी सदके कुत्बा अली मेह सेती।

बँधा दिल कही नै उनन विन बला<sup>१</sup> मुंज‡ ॥५४३॥

१ एकान्त, २ में, ३ रहै, ४ तेरी पीडा, ५ कुरानका पाठ।

\* वही, पृष्ठ ९।

६ गरमी, उल्लास, ७ पल पल, ८ युग, ९ नत्क, १० दिवस, ११ तो भी,  
१२ अनमोल, १३ अपने लिये, १४ रोकने, १५ जायगा (पजाबी), १६ प्रेमखिलाडी,  
१७ पांच चीर (मुहम्मद, फातिमा, अली, हसन, हुसेन)।

† वही, पृष्ठ १२५।

१८ लाल जैसे ओठ, १९ अति स्वच्छ, २० थाल, २१ फँसा, खींचा, २२ ईसा  
की तरह, २३ अपनी श्वास, फूफ, २४ एक लाल पत्थर, २५ मुख, २६ सोना, २७ सौंदर्य,  
२८ कभी, २९ परीक्षा, ३० अलीकी दया से, ३१ आफत।

‡ वही, पृष्ठ ७३।

(१८) प्रेम-मदिरा—

( १ )

सकी तुज अधर ते पिला मुँज नबेज<sup>१</sup> । चुमन के नकल सों पिला मुँज नबेज ॥७६९॥  
जिया कूँ<sup>२</sup> दिया है सफा<sup>३</sup> नेह-शराब । दिया दिलकूँ<sup>४</sup> कौसर<sup>५</sup> जला मुँज नबेज ॥  
मेरे नैन जौ सूर<sup>६</sup> पुरनूर<sup>७</sup> कर । दिलाकूँ<sup>८</sup> दिलाकर खिला ॥  
तेरे नैन ते मुँज चड्या है असर<sup>९</sup> ।  
दिया तुज तिला<sup>१०</sup> की कला ॥  
जो वन की सुराही कुतुब हत में दे ।  
बशारत<sup>११</sup> दिया कुत्कुला मुँज नबेज\* ॥७७३॥

( २ )

ननाँ के बंद<sup>१२</sup> में हिलज्या<sup>१३</sup> हो किन<sup>१४</sup> नहीं है अगाहा<sup>१५</sup> । ना बूझ सक कहते मुँजकूँ<sup>१६</sup> दीवाना गुमराह<sup>१७</sup>  
नेह खरग-धार उपर चलना बहुत है मुश्किल । चलना सकउसके ऊपर खोये है सब अपनी राह । १६७० ।  
पियार ओ इश्क का होकर नेह सफ़्त<sup>१८</sup> में डरता हूँ । है मुद्दा यह मेरा सिज्दा<sup>१९</sup> करूँ ओ दरगाह<sup>२०</sup> ।  
मुखफूल-आसमाँ में दिसते है तोरे जौहर । अप काम में है फिरते नहीं किसते कोई अगाह ।  
है मात तेरे जिस्म अँगे कैकवाद व रुस्तम । चरे<sup>२१</sup> बंदे है तेरे हमकूँ रख अपने दिलख्वाह<sup>२२</sup> ।  
किन लिख सके हिसाब तेरी सिफ़त<sup>२३</sup> के या रब<sup>२४</sup> । मुँगी बनो चहें इन्शा<sup>२५</sup> कलमाँ होय है ज्यों कार<sup>२६</sup> ।  
काफ़िर<sup>२७</sup> कहो मुँजे कोई या जाहिद<sup>२८</sup> व सुसलमाँ । अहराम<sup>२९</sup> बाँधा उसका न सूजे<sup>३०</sup> होर दरगाह ।  
तुज नेह सूर<sup>३१</sup> कूँ झारन कोई जगमें । यक रंग होये सो झाडे तू दीसे सब में जमजाह<sup>३२</sup> ।  
ताकीब है हमारी तरकीब<sup>३३</sup> लै तराकीब<sup>३४</sup> । टुक नोश दारु<sup>३५</sup> भेजो तरकीब होवैगा शाह ।  
मै तिफल<sup>३६</sup> हो तुम्हारे मक्तवते<sup>३७</sup> इल्म बूझ्या । तो देवें आलमाँ<sup>३८</sup> सब शाबाशी मुँजकूँ गहगाह<sup>३९</sup> ।

ये सरफ़राजी<sup>४०</sup> बस है दो जगमने<sup>४१</sup> मआनी ।

मुँज सीस पर लिख्या है इस्मे<sup>४२</sup> मुहम्मद अल्लां ॥१६७९॥

१. जौ की शराब, २. को, ३. स्वच्छ, ४. स्वर्गकुण्ड, ५. सूर्य, ६. प्रकाशपूर्ण,  
७. प्रभाव, ८. तेरे तिल, ९. सुसमाचार ।

\* वही, पृष्ठ १०१ ।

१०. बंधन, ११. फँसा १२. कोई, १३. जानकार, १४. पथभ्रष्ट, १५. प्रेम-पाती,  
१६. दंडवत, कोरनिश, १७. दर्बार, १८. दास, १९. मनमाना, २०. गुण, २१. हे भगवान्,  
२२. लेख, २३. तूण, २४. नास्तिक, अधर्मी, २५. संयमी, २६. हजके समय की पोशाक,  
२७. सूझे, २८. सूर्य, २९. सदा प्रतापी, ३०. बहुत, ३१. युवतियाँ, ३२. पीने की दवा,  
३३. बच्चा, ३४. पाठशालासे, ३५. विद्वान् लोग, ३६. जब-तब, ३७. सम्मान, ३८. दोनों  
लोकों में, ३९. नाम ।

† वही, भाग २, पृ० २२० ।

## (१९) प्रेम-मस्त—

सजन मेरा चचल अहै पेम-माता<sup>१</sup> । सकयाँ कूँ पिया बात रगी सो भाता ॥१८३॥  
 मोहन कोप करत है, आप नाज सेती<sup>२</sup> । दूतिन जा कहे है मगर मेरी बाता ॥  
 सँताते हैं छदो सो माजन बलेकिन<sup>३</sup> । सजन का मया नेह मुँज दिल न पाता ॥  
 मेरी चिन्त<sup>४</sup> करने हैं साजन पिरित मो । उमीने सदा विरह कूँ मैं सनाता ॥  
 दूतिन गलती होर बलती जौं भोमवत्ती । गँवाती है जलने मने<sup>५</sup> सारी रात ॥  
 सदा माँगूँ मैं जीव होर दिल सो पिउकूँ । कि उस दिन दुजा मेरे मन न समान, ॥  
 नवी सदके कुत्वा सो कह विनती मेरी ।  
 कि तुम हुस्न<sup>६</sup> का छव मेरे मन रिखाता<sup>७</sup> ॥१८९॥

## (२०) प्रेम-सुख—

( १ )

एँ नार मेरे नैन कूँ दे आपना दीदार ऐश<sup>१</sup> ।  
 मरवन्<sup>२</sup> मि तपते है मेरे इनकूँ भी दे गुप्तार ऐश<sup>३</sup> ॥२५२६॥  
 मुँज नाक धन<sup>४</sup> तुज नाकते दम वाम<sup>५</sup> का घरता हवस<sup>६</sup> ।  
 दम वाम देकर तू उमे दायम<sup>७</sup> दिये आपार ऐश ॥  
 तुज दुर अघर<sup>८</sup> तिसमे नवात अम्नीत<sup>९</sup> भर ।  
 मेरे अघर पर घर अघर मँगता हूँ मैं आमार ऐश<sup>१०</sup> ॥  
 मुँज कठ धन तुज कठ की बँठकूँ बहुत मगता अहै ।  
 मुँज कठ सा हम कठ<sup>११</sup> होने मूग का झलवार ऐश ॥  
 बाहा मेरधा मुश्ताक<sup>१२</sup> है तुज बाह के गलहार के ।  
 बाहाँ मने<sup>१३</sup> वा<sup>१४</sup> ना सके तुज बाँह का गलहार ऐश ॥  
 मुँज हात मँगना है अदिक<sup>१५</sup> तुज हात सो मिलने के तै<sup>१६</sup> ।  
 मुँज हात कूँ अप हात सो करने दे तूँ एँ यार ऐश ॥  
 भेटन के दो बट सेति धन कुच कच्च अपना तू कर ।  
 हम दोनो कुच सो कुच लगा कुछ कुछ करे हगवार ऐश ॥

१ प्रेम-मस्त २ नाजसे, ३ लेकिन, ४ चिन्ता, ५ जलने में, ६ तेरे सौ-दर्य ।

\* वहाँ, पृष्ठ २५ ।

७ आनन्द, दर्शनका आनन्द, ८ श्रवण, कान, ९ दचनका आनन्द, १० तरणी, प्यारी, ११ इवास-गध, १२ लोभ, १३ सदा, १४ मोतिपौवाला ओठ, १५ मिसरी, अमृत, १६ आनन्दका प्रभाव, १७ एक बट, १८ चाहनेवाली, १९ बाहोंमें, २० पा, २१ अधिक, २२ मिलनेके लिये ।

छातीं सों छाती एक कर एक जीभ होर यक मीत सों ।

तुज नखसेती नख मुंज करन में है ठारेठार ऐश ॥  
मेरी तेरी रोमावली जमना बो गंगा जों मिल अहै ।

रौं रौ सो मछली होयकर करते है तुज गंगाधार ऐश ॥  
दो नाभि दो भंवरे अहैं संग्राम के दरिया मन<sup>१</sup> ।

दो मन तेरा दो तीर तिर करते अहैं इस ठार ऐश ॥  
तुज मुंज कमर के कटिमने<sup>२</sup> पीरित एकट सँपडचा<sup>३</sup> विकट ।

इस कटमने करता अहै दायम<sup>४</sup> मदन का भार ऐश ॥  
तेरे मेरे पावाँ सकी<sup>५</sup> जों नाग नागिन मिल रहे ।

सदके नबी<sup>६</sup> करता कुतुब करतार ते आपार ऐश\* ॥२५३८॥

( २ )

सदा मुंज ईद सूरी<sup>७</sup> है कि मै धन वस्ल<sup>८</sup> पाया हूँ ।

वफा<sup>९</sup> के मन्तराँ सेती सो धन का मन रिझाया हूँ ॥२५३९॥  
कहो चँद-सूर कूँ जा जो यकायक आज ना निकलें ।

कि धन-मुख-नूरते अपनी मजालिस<sup>१०</sup> में दिपाया हूँ ॥२५४०॥  
हजारों मिनताँ करता तो टुक हँस बोलती नैं थी ।

सो आ उतरी है बाताँ में कि मै मद भी पिलाया हूँ ॥  
शराब होर इश्कवाजी<sup>११</sup> बाज<sup>१२</sup> मुंजते ना रह्या जाये ।

कि यो वो काम कर ना कर मै ले सौगंद खाया हूँ ॥  
सकी<sup>१३</sup> हरगिज नको<sup>१४</sup> कह हो कह्या मै बात तुजकूँ जो ।

कि दो तन फट परैगी वो उसे में आजमाया<sup>१५</sup> हूँ ॥  
समनदिल<sup>१६</sup> म्याने गव्वास<sup>१७</sup> होकर गोते मार बरसाँथी<sup>१८</sup> ।

वचन के मोति (निरछल) धुँड साक तुजताँई ल्याया हूँ ॥  
सो धन जा ऐश कूँ पूछै कि तूँ आया है किस खातिर ।

कह्या हँस ऐश<sup>१९</sup> अजल<sup>२०</sup> ते मै कुतुब शह खातिर आया हूँ† ॥२५४५॥

१. दरियामें, २. कटिमें, ३. पहुँचा, ४. सदा, ५. सखी, ६. पैगम्बरकी बलिहारी ।

\*वही, भाग १, पृष्ठ ३०३ ।

७. वीरता-महोत्सव, ८. संभोग, ९. ईमान, १०. जल्से, ११. प्रेम-लीला,  
१२. विना, १३. सखी, १४. नहीं, १५. परीक्षा किये, १६. समुद्र, १७. गोताखोर,  
१८. बरसातमे, १९. आनन्द, २०. आदिकाल ।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३०५ ।

( ३ )

रैन सब शह मो मिलकर जागी मो छव नीका है प्यारी का ।  
 नयन माते अलक विपरे असर धुलता सुगारी का ॥  
 दिया झूला पेरेम वारा डोले फुलडालि हो नारा ।  
 छुटे गल मोतिया हारा ॥  
 चले लटपट लटकवाली सो हो शह मद सो मतवाली ।  
 अँचल सिर छूट गुल लाली झुले इस मतवारी का ॥  
 चँचल का मुस छवीला है अघर अमृत रसीला है ।  
 अजित झलकार टीला है कि चदा रात सारी का ॥  
 दसन के दाग गालापर भँवर जो फुल गुलाला पर ।  
 दिसै फुङ् झलक वाला पर सो जुगना<sup>१</sup> रात अधारीका ॥२५५०॥  
 सुलक्वन छँदभरी चचल विसाये सीसते अचल ।  
 मती होय मस्त जो मगल सो मद पी पिउ की प्यारी का ॥  
 नवी सदके कुतुब गजे तबल आनन्द नित गाजे ।  
 सदा फुङ् गेंद कँठ साजे सो जोवन धन हमारी का\* ॥२५५२॥

(२१) प्रेम-रीति—

नयन दुनखाना<sup>१</sup> पुत्ल्यां कूँ अछूता<sup>२</sup> करता हूँ मेवा ।  
 सिदुर टीला पेशानी<sup>३</sup> राखे तिल-तिल<sup>४</sup> रीत अटे नेवा<sup>५</sup> ॥२५१२॥  
 मुसलमा<sup>६</sup> रीत काफिर रीत क्या रीत ऐ न जानूँ मैं ।  
 कि जग के लोग रीताँ छोड पकडे रीत तुज जीवा ॥  
 वरे हूँ कान में मुदरे चडाई है भभूती तन ।  
 कि पुत्ल्या म्याने<sup>७</sup> दिम्ती है सो सचली पुत्लि जिंव दीवा ॥  
 उमँग नही की करती<sup>८</sup> में सख्यां चढ खेल्त्यां है खुश ।  
 अँचल अर्धग सुट पकडे उनाका हत सेती रँवा<sup>९</sup> ॥  
 पिरित मेहतर<sup>१०</sup> सो आई है सखी अब दूद जोवन पर ।  
 नयन आ मिल खुला खेती सुराही न सुरा पीवा ॥  
 मेरा अमत अँचल ओझल लजत मुंजकूँ दिखाये है ।  
 पसारचा हात में आसां सो ओ अस मुंजकुं तक रँवा ॥

१ चिह्न, २ जुगनू ।

\*वही, भाग १, पृष्ठ ३०७ ।

३ नयन रूपी प्रतिमा-गृह (मन्दिर), ४ केवल, ५ टीका सलाह पर, ६ पल-पल,  
 ७ नई, ८ पुतलियोमें, ९ नाव, १० रहंगा, ११ महतर ।

नबी सदके पिरित बागाँ में इश्रत करता हूँ करसूँ<sup>१</sup>।

कुतुब शह कूँ खिलात्याँ है सहेल्याँ रँग-भरा मेवा\* ॥२५१८॥

(२२) प्रेम और बुद्धि—

पेरेम आपना चत्र<sup>२</sup> जगपर सो छाया । जहाँ अपनापनी छाया अपस वाँ दिखाया ॥२५८८॥

पेरेम फूलवन में सुगँद वास महका । पेरेम आपने हात अरगज गलाया<sup>३</sup> ॥

सभी आलिमा<sup>४</sup> अब पडन<sup>५</sup> जानते है । नहीं कोई पाया ऐ पीरित का माया ॥२५९०॥

पेरेम के सौ पैमाने<sup>६</sup> सों मद पिलाकर । पिया ताक अब<sup>७</sup> सों सिज्दा<sup>८</sup> कराया ॥

अकल के तख्त पर पेरेम तख्त बैठा । इश्क अकल के हात अपसे नवाया ॥

न आशिककूँ कटता है बिन इश्क एक तिल । वो आकिल<sup>९</sup> सदा जिन पिरित सों गँवाया ॥

पियारे से गमता<sup>१०</sup> नबी सदके कुतुबा ।

पेरेम उसकूँ साजे जिने यों गमाया<sup>११</sup> ॥

(२३) प्रेम-स्मृति—

जग जोत इश्क का<sup>१२</sup> ओ लाई अँचल क्लिनारा ।

लब्धा<sup>१३</sup> जिया पँखी ज्यों उस जोतकूँ हमारा ॥१०३॥

जब तूँ बुलाई हमना<sup>१४</sup> पीरित में आपना कर ।

जोसी<sup>१५</sup> न कर तूँ फिर कर हम खातिर<sup>१६</sup> इस्तखारा<sup>१६</sup> ॥

तुज मुख की झलक<sup>१७</sup> होर पेशानि की तजल्ली ।

छिपता है सूर निसकूँ ज्यों छिपता देस<sup>१८</sup> तारा ॥

ऐ दीदवाँ<sup>१९</sup> तअद्दी<sup>२०</sup> ना कर मुजे नही डर ।

नेह शह<sup>२१</sup> मै हूँ काजी कोतवाल हेचकारा<sup>२२</sup> ॥

अब आँखियाँ कूँ कह तूँ टुक मर्हमत नजर<sup>२३</sup> कर ।

ताले<sup>२४</sup> लिख्यासो अँपड्या<sup>२५</sup> उसकूँ नहीं है चारा ॥

जह्दाद<sup>२६</sup> होर आलम<sup>२७</sup> हो जौहरी व सराफ ।

ना बूझे तूँ बुझ्या सो कर बात आशकारा<sup>२८</sup> ॥

१. करूँगा ।

\* वही, भाग १, पृष्ठ ३०० ।

२. छत्र, ३. लगाया, ४. विद्वान्, ५. पढ़ता, ६. प्याला, ७. भ्रू-रूपी, ८. प्रणाम, बँडवत, ९. बुद्धिमान्, १०. पसंद होता ।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३१७ ।

११. प्रेमका, १२. फँसा, खिचा, १३. हमको, १४. ज्योतिषी, १५. हमारे लिये, १६. शुभ-कामना, शुभ-प्रार्थना, १७. चमक, १८. द्योस, दिवस, १९. रक्षक, २०. कड़ी, २१. प्रेमनगर, २२. बेकार, २३. दृष्टि, २४. भाग्य, २५. पहुँचना, २६. संयमी, २७. पंडित, २८. प्रकट ।

नेहवुंद अझुवाँ ते जाता फतर<sup>१</sup> तडक गल ।

हेरान है मआनी ओ दिः मे नै है ठारा<sup>\*</sup> ॥१०९॥

(२४) प्रेम छद-चद—

पिरित जलमें जिने रँ होर न जाने । ओ पिरित वातकू हरगिछ न माने ॥२५५७॥

जिने जम<sup>१</sup> नेह घ्यानाँ में रह्या है । उमे मालूम है सब नेह के माने<sup>१</sup> ॥

हक अप पिरित के तै दो जग न पाया । वडे भाग उमके जिन ये पय पिछाने ॥

इशक की जिन न वूजे उन निकट भाव । पिरित में उन करे भौत<sup>१</sup> आनेभाने<sup>१</sup> ॥

हमारा भेद नै जुझते न को आव । हमारे होर पियाके दरमियाने ॥

करे सेवा पेरेम का रात-दिन यो । विरह की रैन जिन कोई बहाने ॥

नवी मदके पियारी कुत्व आवै ।

पेरेम के छदवंद सब तूँ पिछाने ॥२५६३॥

(२५) मोहिनी ताबीज—

(१)

पिया का रूप निर्मल है सदा मेरे नयन ताबीज । पियारेका पिरित प्यारी के न्हनपनतेमन ताबीज<sup>१</sup> ॥

सजन के ओठ अमृत का लजत<sup>१</sup> एक देम<sup>१</sup> चाखेते । मो बोल जतकू अजउलग किया है मुंज रमन० ॥

सकी मुंज लव पे<sup>१</sup> दिसनी सो निशानी वूजती है क्या । दिसे मेरे अघरकू प्यारसो पिउ की रमन० ॥

अजब ताबीर<sup>१</sup> है तुज नाँवमें प्यारे जा सुनने मे । मवयाँ भुल जाके लिखलिय लेके कख्याँ हँ अपन० ॥

मेरेबाजू कू<sup>१</sup> जब लालन पणडते पाचो उँगल्याँनो । सो उँगल्या है सवयाँ मुंज वाजूके बुदन रतन० ।

पिया का नेह ल्याया वरजोर मुंजलू बुंद<sup>१</sup> गोयाँ हूँ । कि कुच परिचीत ना होमे<sup>१</sup> ह्मन पर अप तुमन० ॥

पिया जिमदिन नहीं लगते गले मुंजसो तो दुख है मुज । गले लगना पियाका है सो मेरा दुखभंजन० ॥

न जाने किसवू अपनेह फेदमे सँपडाने मँगते है । सुनी हूँ कि लिखे है अपम हातो मजन ताबीज ॥

मगी ताबीज<sup>१</sup> पिउवन<sup>१</sup> वस्ल<sup>१</sup> का नेहते दिवानी हो । हुये मेरे दिवाने जप दिये मुंजकू ललन० ।

सजन एक दिन विसर कर मुंज मलामाँ कौके लिख भेजे ।

सो उस व आगजकुँ जिउ नमने<sup>१</sup> जतन करके हुअन० ॥

वसा सो वरस लग कुत्वै जमाँ इस जगमे जीनेतै । अजल दिनते दिये लिखकर दयाते पजतन<sup>१</sup> ‡ ॥७६४॥

१ आँसू, २ पत्थर (दिल्ली), ३ ठौर ।

\* वही, भाग २, पृष्ठ १२ ।

४ रहे, ५ सदा, ६ अर्थ, ७ बहुत, ८ बहाने ।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३१२ ।

९ जतर, १० मत्तरका, ताबीज, ११ स्वाद, १२ दिवस, १३ ओठपर, १४ प्रभाव, १५ बाँह को, १६ मेरे पसीनेकी बुंद, १७ होगा (पजाबो), १८ तेरी ताबीज, १९ प्रियके पास, २० मिलन, २१ जीव समान, २२ पाँच बीर ।

‡ वही, भाग २, पृष्ठ ९४ ।

(२)

मं उस बुतेहिन्दी<sup>१</sup> के राख्या हूँ दिलमें लिख वचन तावीज ।

वो मुँजते दूर ना होये त्यों किया बुज<sup>२</sup> पर बँदन<sup>३</sup> तावीज ॥  
दुआ होर मंतरां सेती वो चंचल मुँजकूँ सँपडे<sup>४</sup> कर ।

बँध्या हूँ उसके दो जुल्फां सेती मै जिउ के मने<sup>५</sup> तावीज ॥  
पिरित वरजोर धन वरजोर होर वरजोर<sup>६</sup> नाज<sup>७</sup> उसका ।

बहुत परिचीतका<sup>८</sup> होना मुँजे नसरत करन<sup>९</sup> ॥  
इश्क के मारमें जानेकूँ मुँज दिलकूँ नहीं कुच डर ।

किया हूँ उसकी पीरितकूँ मैं आपस का सुमन<sup>१०</sup> ॥  
पिरित के कौल<sup>११</sup> देती है, वले<sup>१२</sup> मुँजकूँ पत्यारा नै ।

पत्यारा<sup>१३</sup> तो होवे मुँजकूँजो देवे मुँज चुमन<sup>१४</sup> ॥  
व पर्दायेत<sup>१५</sup> कटरायेत होर चालाक अचपल है ।

नजर में किस<sup>१६</sup> न आवै त्यो रखे है दो जोवन तावीज ॥  
मुहम्मद होर अली का नांव लेकर कुत्वशह जीत्या ।

सो चंचल के दो जोवन गढ तिसउपर के भी तने तावीज<sup>१७</sup> ॥

(२६) प्रेमालाप—

(१)

सो धुन के लब<sup>१८</sup> ते मँग्या वोसा<sup>१९</sup> मै तो पुछी नाम ।

जो कह्या नाम उसे, बोली नाम दे दशनाम<sup>२०</sup> ॥१३१५॥  
हँसी में सुटके<sup>२१</sup> अपस-मस्ती के वहाने सों ।

दिखा के छंद चली हतमें ले सुराही जाम ॥  
शराब पीके सूरज कर दिखाई अप तूँ समज ।

अवल तू नैन सितारचां सों मुख था बदर तमाम<sup>२२</sup> ॥  
जो फूल पेन<sup>२३</sup> खडी धन सो जौ निहाल<sup>२४</sup> खित्या ।

सरग में सर्व न तुजसा ऐ सर्व-गुलअन्दाम<sup>२५</sup> ॥

१. हिन्दी-सुन्दरी, २. भुज, ३. बंधन, ४. प्राप्त, ५. दिलके भीतर, ६. बली,  
७. नखड़ा, हाव-भाव, ८. परिचय, ९. विजय करना, १०. करार, ११. लेकिन,  
१२. पतियाना, विश्वास, १३. अवगुंठन, १४. कैसे ही ।

\* वही, पृष्ठ ९७ ।

१५. ओठ, १६. चुंबन, १७. गाली, १८. छोड़कर, १९. संपूर्ण, २०. पहिन,  
२१. पौधा, २२. सरो और फूल-जैसे शरीरवाली ।



मुमन<sup>१</sup> पै दाल सुँवुल<sup>२</sup> या देसा कि तिल गखे ।

जीवाँ के पग्नी<sup>३</sup> पकडने अलक के मुलपर दाम<sup>४</sup> ॥

वन पै लवद<sup>५</sup> कर ओ लव सदाँ अजल<sup>६</sup> ते कहे ।

अबर्द<sup>७</sup> लगे मुँजे तुजमो है तुजकूँ मुजसो काम ॥

नवी के सदके कुतुब शह लग्या है धनके गले ।

जो लाम अलिफ नमन<sup>८</sup> मिल रहे अलिफ होर लाम\* ॥१३०१॥

( २ )

पिग्ति के दावा<sup>१</sup> खेलने तुजसो नहीं ना हारमूँ<sup>२</sup> ।

तनमें ग्वू क्या काम जिव जो इश्कपर ना वाग्मूँ<sup>३</sup> ॥१४७५॥

जो मुँज वितरते है तुमी तुम ना विमर रहते हमें ।

हमना<sup>४</sup> तुमन तिन ना गमै<sup>५</sup> जाता बहुत दुस्वार<sup>६</sup> मू ॥

जो जीव सेती मिल है तन वो जिउ भोगे तुजमों मिलन ।

दो नैन पिया तुज देखन, दिछडा ना अपदीदार<sup>७</sup> सूँ ॥

कयो रह मकूँ तुजमो एवट<sup>८</sup> जाता मुझे हर तिल<sup>९</sup> विवट ।

लामे है चोराये अजुट<sup>१०</sup> तुम आपने पर वारसूँ<sup>११</sup> ॥

घाटे<sup>१२</sup> मदन सादो मुँजे पानी न अनभावे<sup>१३</sup> मुँजे ।

यक तिल बरस जावे मुजे क्या पृछने तकरार<sup>१४</sup> सूँ ॥

जवते जगत में आइया जो जिउ भोग्या मो पाइया ।

डोरा जिकरका<sup>१५</sup> लाइया में हैदरेकरार<sup>१६</sup> सो ॥१४८०॥

जव लग है तन म्याने<sup>१७</sup> जिया तब लग रहूँ तुजमो पिया ।

कुतुवा जिया दिल वादया हजरत नवी दरवार<sup>१८</sup> सो ॥१४८१॥

( ३ )<sup>१</sup>

छोडो वहाने<sup>१</sup> कुतवा तुमन परते वारी<sup>२</sup> । करो मुज मया<sup>३</sup> मैं हूँ चेरी तुमारी ॥२००३॥

जो कुछ हुस्न तुज है, सो किनकूँ नहीं है । तु पिउती नजरमें है तूँ सबते प्यारी ॥

१ चमेली, २ जटामासो का दाना, ३ पक्षी, ४ जाल, ५ चिपक, ६ हँसते ओठवालां, ७ आदि (सूष्टि)-काल, ८ अन्त (प्रलय)-काल, ९ भाँति, नाई ।

\* वही, भाग २, पृष्ठ १७१ ।

१० वाव-पेच, ११ हाहंगा, १२ वाहंगा, १३ हमको, १४ पटरी जमे, १५ कठिन, १६ निज दर्शन, १७ अलग-अलग, १८ पल, १९ वाट, २० वाटंगी, २१ डाह, २२ भावे, २३ वार-वार, २४ स्मरण-तत्तु, निरतर स्मरण, २५ महावीर अली, २६ तन के भीतर ।

† वही, भाग २, पृष्ठ १९३ ।

‡ वही, भाग २, पृष्ठ १९३ ।

पिया होर पियारचां के रँगसंग देखत । दुतिन<sup>१</sup> रस्क सों आप सुद-बुद बिसारी ॥  
सहेली इशारत<sup>२</sup> करे नैन छँद सों । मुँज यों कि साई कुँ तिल-तिल<sup>३</sup> रिझा री ॥  
पियारी के ताले<sup>४</sup> क़वी<sup>५</sup> हैं पिरितमें । कि साजन उपर आप तनमन कुँ वारी ॥  
न कर भाना<sup>६</sup> पिउ मद देव अप लाल अधरतो, कि उस मद का मुँजकूँ लगी है खुमारी ॥

नबी सद्के कुतुबा तुं ए रतबा<sup>७</sup> पाया ।

कि तुज दौर<sup>८</sup> में दीन<sup>९</sup> कुँ है इस्तवारी\* ॥२००९॥

## ८. स्फुट कविताएँ

### (१) निशा आगमन—

निसके समंद<sup>१०</sup> स्याम में सुन्ने की जोरक<sup>११</sup> डुब्बियाँ । (वो) डुबने में तिरने लगे वुडबुडे कै लख हजार ।  
गर्ब<sup>१२</sup> के चह<sup>१३</sup> में पड्या युसुफ़ अंबरका सूर । जग सभे याकूब कै नैननमने<sup>१४</sup> अंदकार<sup>१५</sup> ॥  
आग इन्नाहीम का वुजके हुआ फूलवन । रैन सो तिस आग का है, धुँये का धुँधकार ॥  
चंद हो सिकंदर चल्या इन के जुल्मात में । शमा दीपक मशाला रोशन हुये अपार ॥  
चर्ख के खुमखाने<sup>१६</sup> में सूर पिया जानो मद । मस्त हो जाकर पड्या गर्ब के चश्मे मँझार ॥  
धन के लगन शमा चाँद तारे पतँगके नमन<sup>१७</sup> । उडते है उस आस-पास इष्कते बेअख्तियार<sup>१८</sup> ॥  
घन के सौ हौखाने<sup>१९</sup> में रैन भरा नीरजौ । चाँद फुयारा<sup>२०</sup> नमन तारे बुँदां नीर सार<sup>२१</sup> ॥  
घन के मद्रसे कने<sup>२२</sup> चाँद मुदरिसकने<sup>२३</sup> । बहस<sup>२४</sup> करन तारे आये तालिबे-इल्माँ के सार<sup>२५</sup> † ॥

### (२) चित्रकाव्य—

नहीं कै	तुज ऐसी	सहेली	छबीली
तुज ऐसी	न अच्छसे	जगत मे	रगीली
सहेली	जगत मे	न देख्या	गहेली
छबीली	रंगीली	गहेली	नवेली

इस वंघ से निम्न प्रकार के और कितने ही पद्य बनते हैं —

१. सौत, २. संकेत, ३. पल-पल, क्षण-क्षण, ४. भाग्य, ५. दृढ़, ६. बहाना, ७. दर्जा,  
८. युग, जमाना, ९. घेर्य ।

\* वही, भाग २, पृष्ठ २६३ ।

१०. समुद्र, ११. नाव, १२. सूर्यास्त, १३. कुआँ, १४. नेत्रोंकी भाँति, १५. अंधकार,  
१६. घटिका-गृह, मधुशाला, १७. भाँति, नाई, १८. बेवस, १९. कुंडगृह, २०. फौवारा,  
२१. जल-समान, २२. पाठशालाओं में, २३. अध्यापकों के पास, २४. वाद-विवाद,  
२५. विद्यार्थियों की भाँति ।

† वही, भाग ३, पृष्ठ ३८ ।

नही कैं न अछसे न देख्या नवेली । छत्रीली जगत में जगत में छत्रीली ॥  
 नवेली न देख्या न अछसे<sup>१</sup> नही कैं । नही कैं न अछसे न देख्या गहेली<sup>१</sup> ॥  
 नही कैं न अछसे सहेली रंगीली । तुज ऐसी जगत में छत्रीली रगीली ॥  
 छत्रीली जगत में गहेली गहेली । महेली रगीली न देख्या नवेली ॥  
 सहेली न अछसे न देख्या रगीली । तुज ऐसी जगत में जगत मे गहेली\* ॥

### (३) चाँदनी—

चले चाँदनी में जब लटक पिउ हमारा । उनन अक्स<sup>१</sup> दीपै चेंदरते अपारा ॥२४९८॥  
 वसे जिम हिया म पिग्गित हम मजन की । विन् उमकी पिस्ति कुच नही उस पियारा ॥  
 जिनें साँइ के इश्क वा मद पिया है । न करसे<sup>१</sup> उसे होर मस्ती उतारा ॥  
 जे कोइ मस्त है साँइ के हुम्न छविते । उसे मानै नेह पत में जग सारा ॥  
 पिया नूर बसता है मुंज दिल झमक<sup>१</sup> में । कि जिस नूरते है सुरज आशकारा<sup>१</sup> ॥  
 सकी पीड चिन्ता लगा है हमनकूँ । सजन विन न करसे ले होर कोइ निवाग ॥

नवी सदके फुतुवा का मन तुजसो लाग्या ।

कि अप-जीव<sup>१</sup> में तेरा कीता<sup>१</sup> है ठारा† ॥२५०४॥

### (४) अग्योक्ति—

बाग में आके भँवर फूल सो कहा यो वचन ।

नाज<sup>१०</sup> कम कर, कि खिले फूल बहुत तेरे नमन<sup>११</sup> ॥१३६६॥

फूल हँसकर कहा 'सच ना रुठमो<sup>१२</sup> वले<sup>१३</sup> । आशिकाँ ना कहै माचूक<sup>१४</sup> कूँ यो सस्त वचन ॥

गर हवस<sup>१५</sup> है तुजे उस लाल प्याले ते शराव । पलक की अनिया सेती वीद<sup>१६</sup> तूँ मानिक-रतन ॥

हथ<sup>१७</sup> लग वास मुहुव्वत की न आसे<sup>१८</sup> उसकूँ । जिन पेधानीसेती<sup>१९</sup> झाड्या नही मैखाने अगन<sup>२०</sup> ॥

बहिस्तेके<sup>२१</sup> बागमें कल वावके अतिलुत्फ<sup>२२</sup> सेती ।

लटे सुबुल<sup>२३</sup> का सो विसग्धा है सेहर<sup>२४</sup> का सो पवन ॥

१ कहीं, २ है, ३ गर्वगहिल्ली ।

\* वही, भाग ३, पृष्ठ ५३ ।

४ रूप, चित्र, ५ करेगा (पजाबी), ६ चमक, ७ प्रकट, ८ अपने दिल में, ९ किया (पजाबी) ।

† वही, भाग १, पृष्ठ २९६ ।

१० हाव-भाव, ११ तेरी तरह, १२ रुठूंगा (पजाबी), १३ लेकिन,  
 १४ प्रियतमा, १५ कामना, लोभ, १६ बिधे, १७ प्रलय दिन, १८ आयेगी (पजाबी),  
 १९ जिसने ललाट से, २० मधुशाला का आंगन, २१ स्वर्ग के, २२ अत्यन्त स्वाद,  
 २३ सुबुल जैसी अलकें, २४ प्रात ।

हौं कह्या जमके तखतकूँ कि तेरा जाम<sup>१</sup> कहाँ । ज्वाब देता कि तुं चुप हो गये ले ऐसे करन<sup>२</sup> ॥  
इश्क की बात नहीं ओ जो जवां मे उसकी । साकियाँ<sup>३</sup> आके प्याला देके बस कर यों वयन ॥

कुतुब के सब्र<sup>४</sup> सो अँझुवाँ<sup>५</sup> दिये दरियाकुँ उमक<sup>६</sup> ॥

क्या करूँ इश्क नहीं देता है यो बात छुपने\* ॥

(५) बुड्ढी की कहानी—

परियां के बाग म्याने<sup>७</sup> देख्या मंघिर<sup>८</sup> गुलाली । वाँ यक परी के मुखते सब वन लिया था लाली ।  
ओ नार नार चंचल गुल लाल गाल फुलदल । खिडकी मनेते<sup>९</sup> अँचल सिरपर ते सिरते ढाली<sup>१०</sup> ॥  
तारे चंद उपरो कर राखे सो माँग सिर पर । जुगनी जडी मुनव्वर<sup>११</sup> ओढे झना सो आली ॥  
पडिया नजर यकायक हिल्ज्या सो जीव<sup>१२</sup> बेशक<sup>१३</sup> । चंगी उठी ज्यों चकमक हुस्तो हमन हलाली<sup>१४</sup> ॥  
भुज उस लग्या हिलावा वो तन सो देख सोहवा । उस घरमें लाय लावां गत्तां सो जा उछाली ॥  
सुन अक्ल उस बुडी<sup>१५</sup> की सास आई उस गुडी<sup>१६</sup> की । सो जिव मुखी खडीकी खिडकी पै झांप घाली ॥  
भौवाकूँ गाँठ बा<sup>१७</sup> कर मुँजकूँ निपट दबाकर । गुस्सेते उस जुदाकर दीनी<sup>१८</sup> हज़ार गाली ॥  
मुखपर बुडीकी झुडरी<sup>१९</sup> कूशां के टल<sup>२०</sup> की झुडरी<sup>२१</sup> । मू चंदपे करना तिरडी ओ पापिनी है माली ॥

कुत्बे जमां<sup>२२</sup> मआनी बसकर बुडी कहानी ।

शैतान की है नानी आपसकूँ आप जाली<sup>२३</sup> † ॥२५८७॥

### §१०. अब्दुल (१६०३ ई०)

अब्दुल (अब्दुलगनी) तुलसीदास और मुहम्मद कुल्लीका समकालीन बीजापुर महाराष्ट्र का कवि था, जिसने १६०३ ई० (१०१२ हि०) में अपने संरक्षक इब्राहीम अदिल (१५८०-१६२६ ई०) के सम्बन्ध में अपना काव्य इब्राहीमनामा (७५० वैंत) अपने शाह-उस्ताद (राजगुरु) की आज्ञा पर हिंदी भाषा में लिखा । इसमें वर्णित विषय हैं—

- |                             |                      |
|-----------------------------|----------------------|
| १. बादशाहकी दानशीलता        | २. बीजापुर नगर       |
| ३. दुर्ग और प्रासाद         | ४. नृत्य, गीत        |
| ५. बादशाह का दरवार          | ६. नौरस महल          |
| ७. शाही सभा                 | ८. शिकार और सेना     |
| ९. बादशाह के साथी           | १०. बादशाहके घोड़े   |
| ११. बादशाह के शस्त्रधारी    | १२. शाही बागकी मजलिस |
| १३. वंसतोत्सव               | १४. वर्षगाँठका भोज   |
| १५. ग्रंथ-समाप्ति की तिथि । |                      |

१. प्याला, २. युग, ३. मधुवाला, ४. धैर्य, ५. आँसू, ६. लहर ।

\* वही, भाग २, पृष्ठ १७८ ।

७. बाग में, ८. मन्दिर, ९. खिडकी में, १०. डाली, ११. प्रकाशमान, १२. मन, १३. निस्सन्देह, १४. रंज, १५. बुड्ढी, १६. गढी, १७. पा (पंजाबी), डाल, १८. दिया (पंजाबी), १९. झुरी, २०. टाल, २१. पापिनी, २२. युग का ध्रुवतारा, २३. जलाया ।

† वही, भाग २, पृष्ठ २१५ ।

“इब्राहीमनामा” का एक महत्त्व अच्छा काव्य होना है, साथ ही इसका ऐतिहासिक महत्त्व भी बहुत है। अकबर-समकालीन इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) दक्षिण का एक शक्तिशाली वादशाह था। अपने काव्य लिखने का कारण बतलाता है।

उन्ही शाह-उस्ताद कर सो नजर<sup>१</sup>। बुलाया जो अब्दुल कुँ सिर हाथ धर ॥  
नवी बात मज्मून<sup>२</sup> कर इक किताब। न कोई पिनक<sup>३</sup> गूँघ्या है तिसका जवाब ॥  
न बाकी रहे कुछ तो आलम<sup>४</sup> निशान<sup>५</sup>। अगर कुछ रहे तो वचन शेर जान।  
सो यो वचन सुन शाह उस्ताद का। पूछ्या जगत-गुर, शेर कह किस ज्वान<sup>६</sup> ॥  
जवाँ हिंदवी मुझसो होर<sup>७</sup> देहलवी। न जानूँ अरब होर अजम<sup>८</sup> मस्नवी<sup>९</sup> ॥  
कह्या शाह-उस्ताद अब्दुल सो यो। तू हर एक जवाँकार शेर बात यो ॥  
फने शेर<sup>१०</sup> सब मुल्क में एक घात<sup>११</sup>। इशक<sup>१२</sup> परगटे छिपें रुप बात ॥

काव्य के आरम्भ और अन्तकी कुछ पवितयाँ—

आरम्भ—

करूँ इवतेदा<sup>१</sup> शह बराहीम नाम। कि जिस सिफत<sup>२</sup> आल्या<sup>३</sup> फिर्या है तमाम<sup>४</sup> ॥  
सुरग मित पाताल हर एक धरा। रखा रूप सरवर हो आलमभरा ॥  
इलाही<sup>५</sup> जवाँ गज तूँ बोल मुझ। अमोलक<sup>६</sup> वहाँ कर जे बोल मुझ ॥  
कहूँ विस्म<sup>७</sup> अब्बल तो अल्लाह लाय। गले मुख सुले जीव<sup>८</sup> पकडे सो लाय\* ॥

### §११ अमीन (१६२० ई०)

दक्खिन में अमीन उपनाम के कई हिन्दी कवि हुये हैं, जिनमें एक बीजापुरी “बहराम हुस्नवानूँ” का रचयिता इब्राहीम आदिल द्वितीय के समय (१५८१-१६२६ ई०) में हुआ, और मुहम्मद कुल्ली, वजही, गौवासी का समकालीन था। दूसरा अमीन गोलकुडा के अब्दुल्ला कुतुब (१६२४-१७२९ ई०) का समकालीन तथा पहिले के वाद में हुआ, जिसने “अबूशहमा” की कथा पद्यबद्ध की। यहाँ पहिले अमीन से मतलब है। “बहराम व हुस्नवानूँ” को वह समाप्त नहीं कर पाया, जिसे बीजापुर के दूसरे कवि दौलत ने १६३८ ई० (१०४८ हि०) में पूरा किया। अमीन फारसी का भी कवि था।

(१) अमीन दरवारी कवि नहीं बल्कि शाह आलम नामक किसी पीर का अनुयायी था। मगलाचरण में उसने लिखा है—

१ कृपा, २ विषय, ३ चिन्तन, ४ सत्कार, ५ चिह्न, ६ भाषा, ७ और,  
८ पारसी, ९ कथा, १० काव्य-कला, ११ एकघा, एक भाँति, १२ प्रेम,  
१३ आरभ, १४ जिसका गुण, १५ दुनिया, १६ सारी, १७ भगवान्, १८ मूल्य,  
१९ नाम से, २० चिह्न।

\* व० उ० म० पृ० २६७।

इलाही जगत का करनहार तूँ । गरीबाँ नबीयाँ<sup>१</sup> का उद्धार तूँ ॥

(२) बहराम और हुस्नवानू की प्रेम कथा आरम्भ है —

यकायक मेरे दिल पै आया खियाल । किसान यह कहूँ मैं मुकीमीं मिसाल<sup>२</sup> ॥  
जबाँ पर वचन खूब आता चला । यो मज़मून<sup>३</sup> खुशतर निभाता चला ॥  
किसा में किया है जो गुल नामका । सो वानूँ<sup>४</sup> हसन शाह बहराम का ॥  
जो कोई पढ़े सो करे मुँजकूँ याद । तअज्जुव से दिलकूँ करे अपने शायद ॥  
अमीं दास्ताने किसान<sup>५</sup> अब करो । खुदा की सना<sup>६</sup> बीच दायम<sup>७</sup> रहो ॥  
किसा फारसी सुनके पाई खबर । खुदा की जो कुदरत<sup>८</sup> में एक था शहर ॥  
कि फारस उसी शहर का नाम था । वहाँ बादशाह शाहा बहराम था ॥  
इसम<sup>९</sup> शाह बहराम उसका असल<sup>१०</sup> । उसे गौर<sup>११</sup> के सैद<sup>१२</sup> का था अमल<sup>१३</sup> ॥  
लकव<sup>१४</sup> तब हुआ शाह बहराम गौर । न था उसके सानी<sup>१५</sup> कोई जग में और\* ॥

### (३) प्रातःकाल का वर्णन

हुआ सुबह<sup>१६</sup> का वक्त यकायक तमाम । लग्याँ बोलने तूतियाँ खुश-कलाम<sup>१७</sup> ॥  
सुबह पन अपस मुदसों खींचा नकाब<sup>१८</sup> । हो मशरिक<sup>१९</sup> से निकला तवा आफताब<sup>२०</sup> ॥

### (४) प्रथम मिलन

राजकुमारी हुस्नवानू और उसकी तीन सहेलियाँ तालाब में नहा रही थी । उनमें बहराम की ही बात चल रही थी । बहरामने उनके कपड़े छिपा दिये । बाहर आकर देखती है तो कपड़े नहीं हैं । इसी समय की घबड़ाहट को कविने चित्रित किया—

सहेलियाँ जो थ्याँ तीन उसके सँगात । उनों ने निकाले यह उस वक्त बात ॥  
सुना शहर फ़ारस का है बादशाह । है खूबी मने<sup>२१</sup> खूब ज्यों मेहोमाह<sup>२२</sup> ॥  
कते<sup>२३</sup> है बहुते खबसूरत है वो । फिरँग चीन की खबमूरत<sup>२४</sup> है ओ ॥

१. पैगम्बर, २. स्थायी रूपका, ३. निबंध, ४. सुन्दरी, ५. कथा-विस्तार, ६. स्तुति,  
७. सदा, ८. शक्ति, ९. नाम, १०. वास्तविक, ११. गोरखर, जानवर, १२. शिकार,  
१३. काम, शौक, १४. उपाधि, १५. जैसा ।

\* युं. द. पृष्ठ २१९ ।

१६. प्रातः, १७. सुवचन, १८. पर्दा, घूँघट, १९. पूरव, २०. सूर्य ।

† वही, पृष्ठ २२० ।

२१. सुन्दरतामें, २२. सूर्य-चन्द्र, २३. कहते, २४. सुन्दर मूर्ति ।

अगर्चे वही आदमीजाद है । चँदा उसके आगे सो बी मात है ॥  
 ले आया उसे देव आशिक हीर । रखा है लिया कर अपस ठार पर ॥  
 कबूतरहो उसकू चलो देख आये । पिछूँ अपने घरकूँ अपस सब सिधायें ॥  
 उठी बोल वानू हुसन तव शिताव<sup>१</sup> । 'मै देखा है इम् शव<sup>२</sup> परेशान खाव<sup>३</sup> ॥  
 नहीं कुछ नफा आज इस बात का । मेरे दिल में धोखा है कुछ घात का ॥  
 कि वल्लाह अअलमू<sup>४</sup> लगे कुछ बला । अपन सब उस ऊपर होयें मुत्तला<sup>५</sup> ॥  
 मेरे दिल कूँ दहशत<sup>६</sup> बड़ी आज है । निगहवान<sup>७</sup> अपना खुदा आज है ॥  
 देखे (गे) किसी ओर दिन आयकर । अछी नेक सायत अपन पायकर<sup>८</sup> ॥  
 अपस मे वह कर आप अपना करार । नहाकर के पानी सा आयी बहार<sup>९</sup> ॥  
 न देसा अपस रस्त<sup>१०</sup> कूँ ठार पर । उठ्याँ तुरत मीना परा वार<sup>११</sup> कर ॥  
 वह रोने लग्याँ वहाँ निपट जारजार<sup>१२</sup> । सवर<sup>१३</sup> कर गरेवाँ के तै फाडफाड ॥  
 लग्याँ दिल मे करने अपस के विचार । हुयाँ गम सो रो रो भीत बेकरार ॥  
 सबर लेवा है कौन ऐसा वशर । जिने दस जग हुआ किया है गुजर ॥  
 लग्याँ ढूढने वाग भीतर तमाम । हरेक ठार गुजर्याँ व हर यक मुकाम ॥  
 वहाँ धूँड्याँ मौत बेजार हो । अपस मे वह सब आप लाचार हो ॥  
 खड्याँ हो उसी ठार की ताअवाज । कि "ऐ दुज्दे छदी व हीलादराज<sup>१४</sup> ॥  
 तु है आदमी या फरिस्ता मगर । कि है जिन परी देव बेदादगर ॥  
 तु होये अपम की कहे जा मुराद । कसम है खुदा कि करे उसकू शाद<sup>१५</sup> ॥  
 वह सुन शाहवाँ सेती आया बहार । देखत शहकी खूबी गइयाँ सुधविचार ॥  
 तुरत सेती मिलकरयो कीनी अरज । "कहो तुमकूँ हम साथ क्या है गरज ॥  
 जो कपडे हमारे रखे हैं छुपा । जो दिल मे होवे सो तुम देओ बता<sup>१६</sup> ॥  
 उनो साथ तव शाह उठा बोलकर । छुपे राज दिल के सभी खोलकर ॥  
 "तुमारे जो साथ है वानू हुसन । उने दिल में मेरे किया है वतन ॥  
 मेरा जीव उमपर हुआ है फिदा । खुदा उसमें मुजकूँ न राखे जुदा<sup>१७</sup> ॥  
 यह सुनकर परि्याँ ने दिया तव जवाब । उठा शर्म का मुखतें दूजा नकाब ॥  
 "तू है वादशाह जग में इन्सान का । तुझे है मरातब<sup>१८</sup> सुलेमान का ॥  
 तू ह शहखिरदमद<sup>१९</sup> रोशन जमीर<sup>२०</sup> । तू है जग के इनसान मे बेनजीर ॥  
 हमारी जवाँ से कहें क्या तुझे । यो है सब हकीकत हवेदा तुझे ॥  
 अबस तुगने हमसो किया है खियाल । यही बात होनी निपट है मुहाल ॥

१ जल्दी, २ आज रात, ३ स्वप्न, ४ अल्ला जानता, ५ लगन, फँसे, ६ भय,  
 ७ रक्षक, ८ बारह, ९ वस्त्र, १० भार, ११ फूट-फूटकर, १२ सतोष, १३ बहानेबाज,  
 १४ खुश, १५ पद, सर्पावा, १६ अधिक बुद्धिमान्, १७ विवेक ।

कहाँ हम परीजाद<sup>१</sup> कहाँ आदमी । कहाँ आसमाँ और कहाँ है जमीं ॥  
 देओ कपड़े होर इने देओ रजा<sup>२</sup> । खुदा इसका देवेगा तुमकूँ जजा<sup>३</sup> ॥  
 कहा शह ने “हरगिज़ न होये यह बात । मेरा जी लग्या है इसी के संगीत ॥  
 मेरे तें इसी साथ अब काम है । मेरे दिल में अब यह दिलाराम<sup>४</sup> है ॥  
 अगर तुम करो फंद हजाराँ हजार । न देऊँगा कपड़े तुम्हे एकबार” ॥  
 देखा तब परिश्यों ने यह अटका है अब । इसे देख शह<sup>५</sup> दिल में हटका है अब ॥  
 करें क्या अपन अब इसका इलाज । कठिन<sup>६</sup> सरपै मुश्किल पडी आके आज ॥  
 कहा उसकुँ अपनों में समझायकर । बहुत हिकमताँ सेती<sup>७</sup> वहलायकर ॥  
 वलेकिन न समझा यही शह-जवाँ । चला छोड़ उसकूँ अपन होय रवाँ ॥  
 “यह सबपर कछू तुमतो आशिक नहीं । सहेल्याँ है हम तेरे लायक नहीं ॥  
 हमारे देओ कपड़े हमन हात में । तुजे हैं नफा देख इस बात में” ॥  
 कहा शह ने “नूर अला नूर<sup>८</sup> है । यही बात मुजकूँ सो मंजूर<sup>९</sup> है” ॥  
 दिये कपड़े उनके सो होकर खुशहाल<sup>१०</sup> । रखा रखत<sup>११</sup> बानूका शह ने सँभाल ॥  
 ले कपड़े सहेल्याँ गयाँ घर तरफ । हुआ होश उसका सभी बरतरफ<sup>१२</sup> ॥  
 खिजल<sup>१३</sup> हो सरोपा<sup>१४</sup> डुबी आब<sup>१५</sup> में । पडी गमसों हैरत के<sup>१६</sup> गर्दाब<sup>१७</sup> मे ॥

## §१२. गौवासी (१६२० ई०)

### १. जीवनी

मुल्ला गौवासी दक्खिनी हिन्दीके तीन महाकवियोंमेंसे एक है । वह गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-कालमें कविता करने लगा था । इसकी दो कृतियाँ मिली हैं, जिनमेंसे एक “सैफु-ल्मलूक-व-बदीउज्जमाल” को उसने गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त के दो साल बाद (१६२५ ई० में) लिखा था । इसकी दूसरी कृति “तूतीनामा” है, जिसे उसने पहली कृतिसे चौदह साल बाद (१६३९ ई० में) समाप्त किया । वह गोलकुडा का शायर था, जिसके पास हैदराबाद तब आबाद हो चुका था । मुहम्मद कुल्ली कुतुब शाहने हैदराबाद को अपनी प्रेमिका भागमतीके नामपर पहले भागनगर नाम दिया था, बादमें उसने प्रेमिकाका नाम ‘हैदरमहल’ रख कर नगर को भी “हैदराबाद” प्रसिद्ध करना चाहा था, लेकिन तब वह सफल नहीं हुआ । यद्यपि गौवासीकी रचनाएँ मुहम्मद कुल्ली कुतुब शाह (मृत्यु ११ जनवरी १६१२ ई०) के समय ही शुरू हो गई थीं, किन्तु अभी वह सम्मानित राजकवि नहीं हुआ था । मुहम्मद कुल्लीके उत्तराधिकारी मुहम्मद कुतुबके शासनके चौदह साल (१६१२-२६ ई०) में भी इस महान् कविकी कदर नहीं हुई । अगले उत्तराधिकारी सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शाह के शासन काल (१६२६-६२ ई०)

१. देव-कन्याएँ, २. स्वीकृति, ३. बदला, ४. प्यारी, ५. चाल, ६. बहुत, ७. उपाय से, ८. प्रकाशके ऊपर प्रकाश, ९. स्वीकृति, १०. प्रसन्न, ११. वस्त्र, १२. उचाट, १३. लज्जा, १४. सिरसे पैर तक, १५. पानी में, १६. आश्चर्य के, १७. जलके भँवर ।



में ही गोवामीका सितारा ओज पर पहुँचा। "तूतीनामा" (१६३९ ई०) लिखने के समय वह राजकवि था।

### (१) आश्रयदाता—

गौवामी से पहिले वजहीकी कीर्ति चारो ओर छाई हुई थी। वजही अपने इस तरुण समकालीन कवि से केवल ईर्ष्या ही नहीं करता था, बल्कि भय भी खाता था। उसने अपने ग्रन्थों में उम पर ठीठे कसे हैं। सम्भव है, वजही की प्रतिद्वन्द्विता ने भी तरुण कवि को मुहम्मद कुली कुतुब जैसे महान् कवि के सम्मान का पात्र न होने दिया हो, अथवा यह भी हो सकता है कि वह अर्भा कविता की पाठशाला का एक शिशु-छात्र मात्र था। कवि-सुल्तान का उत्तराधिकारी और दामाद उतना कविता-प्रेमी नहीं था, न अपने ससुर की तरह मुल्लो की खीची सीमा से बाहर जाकर उदारता दिखाना चाहता था। सम्भवतः इमी कट्टरपन के कारण उसने भी गौवामी की प्रथम कृति "सैफुलमलूक" के प्रकाशित हो जाने पर भी कवि की कोई कदर नहीं की। कवि कुछ निराश सा हो चुका था, जब कि उसने तीसरे सुल्तान अब्दुल्लासे दया की आशा रखते हुए निम्न पवित्रता लिखी—

जो सुल्तान अब्दुल्लाऽ इमाफ कर । मेरे जीहराँ पति<sup>१</sup> दिल साफ कर ॥  
 देवे दाद मेरा बहुत मान पाँव । उमस दूरने<sup>२</sup> ता गरीवान<sup>३</sup> पाँव ॥  
 कि यो शाह मेरा खरीदार होय । तो ताजा<sup>४</sup> मेरा तब गुल्जार<sup>५</sup> होय ॥  
 कि गमगी<sup>६</sup> हूँ मैं सस्त ससार ते । धरँ दगदगे लाख उस आजार<sup>७</sup> ते ॥  
 परेशानगी<sup>८</sup> में जम्या दयाल मैं । ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल में ॥

—सैफुलमलूक

गौवासी की प्रार्थना अकारण नहीं गई। सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब ने उसका बहुत सम्मान किया। १६३५ ई० में वह दरवार का राजकवि ही नहीं था, बल्कि इसी साल मुहम्मद आदिल शाह (१६२६-५६ ई०) के दरवार में उसे गोलकुण्डा का राजदूत बना कर भेजा गया। बीजापुर के सुल्तान ने उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की, बड़-बड़े इनाम दिये। गौवासी ने भी सुल्तान की इस कृपा के लिए तारीफ के पुल बाँधने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अपने दूसरे काव्य "तूतीनामा" में सामयिक दूसरे दरवारी हिन्दी-कवियों की भाँति उमने झूठी तारीफ के पुल बाँधे हैं।

### (२) वैराग्य उपदेश—

गवासी अगर तू<sup>१</sup> है सचला गवास<sup>२</sup> । लगा इश्क अपने खुदा साथ खास ॥  
 चलोगा कंता नफस<sup>३</sup> के कय मने । कंता होयगा नाव के पय मने<sup>४</sup> ॥  
 जे मुच रवास्त<sup>५</sup> तरा है सब उसपे छोड । दुन्या के, इलाके<sup>६</sup> ते तू दिलवू<sup>७</sup> तोड ॥

१ परसे, २ दूरसे, ३ अचल, ४ नया, हरा-भरा, ५ मनकी फुलवाडी, ६ शोकाकुल, डु खी, ७ उसके कष्ट, ८ हैरानी, ९ गोला लगानेवाला, १० लोभ, ११ नामके पीछे, १२ अभिलाषा, १३ सम्बन्ध।

२. सफुल्मलूक

“सैफुल्मलूक व बदीउज्जमाल” २२८५ शेरों के कथाकाव्य को गौवासी ने १६२५ ई० (हि० १०३५) में ३० दिनों में लिखा। मूल कहानी “अलिफलैला” की है।

(१) ईश्वर-स्तुति—

इलाही जगत का इलाही<sup>१</sup> सो तूँ । करनहार जम<sup>२</sup> बादशाही सो तूँ ॥  
 तेरे हुक्मतल नौगढ़ असमान के । रईयत मलिक<sup>३</sup> तेरे फरमान<sup>४</sup> के ॥  
 भरचा जिस गढ़ाँ बीच तारे हशम<sup>५</sup> । करे नौबता<sup>६</sup> सों उल्लंग दमवदम ॥  
 जहाँ लग जो बादल के है गडगडाट । तेरी फ़तेह दौलत<sup>७</sup> दमामे<sup>८</sup> के ठाट ॥  
 इती तेरे दरबार के प्हाड़ सब । छड़ीदार तुझ दार<sup>९</sup> के झाड़ सब ॥  
 तेरी बादशाहत कूँ कुछ अन्त नै । तेरे मुल्क में गैरकूँ<sup>१०</sup> निप्त<sup>११</sup> नै ॥  
 गवासी जो तुझ दार का खाक<sup>१२</sup> है । तेरी बाट का महज<sup>१३</sup> खाशाक<sup>१४</sup> है ॥  
 दिखा की मया<sup>१५</sup> करतुँ मुझ खाक कूँ । दे रंगवास मुझ दिल के फलफाक कूँ ॥

(२) असफलता—

कवि ने, जान पड़ता है, अपनी कविता सुल्तान मुहम्मद कुतुब शाह (कवि मुहम्मद कुल्ली के दामाद—भतीजे) के उत्तराधिकारी के समय आरम्भ की थी, किन्तु दरबार में पुछार नहीं हुई। पहिले उसने लिखा था—

सो सुल्तां मुहम्मद कुतुबशाह गॅम्भीर । जग आधार होर जग दस्तगीर ॥

किन्तु कुतुबशाह ने दस्तगीरी (हस्तावलम्बन) नहीं की, इसलिए उसे हटा गौवासी ने उसके पुत्र अब्दुल्ला को अपनी कविता अर्पित करते लिखा:—

जो सुल्तान अब्दुल्ला आफ़ाकगीर । सुलक्खन शहशाह<sup>१६</sup> गढ़ूं सरीर ॥  
 चन्दा चौदवाँ खुसरवे बुर्ज<sup>१७</sup> का । अमोलक रतन<sup>१८</sup> हुस्न के दूज का ॥  
 सकल पादशाहाँ में उसका है नाँव । सो कुतब का कुत्व तारा<sup>१९</sup> है नाँव ॥  
 सुलेमाँ के जो तख्तका नाँव है । अता<sup>२०</sup> शहकूँ ओ तख्त का ठाँव है ॥  
 परचाँ देव<sup>२१</sup> आवे बतन<sup>२२</sup> छोड़ सब । खड़े होर<sup>२३</sup> है डरते हत जोड़ सब ॥  
 न शहसार<sup>२४</sup> सूरज किस<sup>२५</sup> आसमान है । न शह-सा रतन जग केरे खान है ॥  
 गवासी जो शायर<sup>२६</sup> है शह का मुवाम । करे यों दुआ शहकूँ सुब्ह-शाम ॥  
 जहाँ लग यो दुनिया बसनहार है । जहाँ लग यो अम्बर निराधार है ॥  
 जहाँ लग अछो<sup>२७</sup> शह की शाही करार<sup>२८</sup> । रखे अम्न<sup>२९</sup> सों शहकूँ पर्वदगार<sup>३०</sup> ॥

१. भगवान्, २. सदा, ३. स्वामी, ४. आज्ञा ५. सम्मान, ६. बाजे, ७. राजपाट, ८. बाजे, ९. द्वार, १०. दूसरे, ११. अधिकार, १२. मिट्टी, १३. केवल १४. तृण, १५. दया, १६. चक्रवर्ती, १७. राजशिखर, १८. मोती, १९. ध्रुवतारा, २०. प्रदान, दान, २१. परी, देवता, २२. स्वदेश, २३. और, २४. शाहके समान, २५. किसी, २६. कवि, २७. रहो, २८. स्थिर, २९. शांति, ३०. पालक।

(३) अपनी कविता के बारे में कविका कथन है—

जो एक दोस निकले सेहर गाह<sup>१</sup> कर । चल्या फूलवाडे कदन<sup>२</sup> ख्यात्र कर ॥  
 मो यो कुछ वहाँ फूल वार<sup>३</sup> आये थे । मवजपोश<sup>४</sup> डाल्या पर झलकाये थे ॥  
 मगर पात्र<sup>५</sup> मो शमा के झाडकर<sup>६</sup> । दिवे त्याये थे नूर के सरवसर<sup>७</sup> ॥  
 मेरी रुह परवाना<sup>८</sup> के सारका<sup>९</sup> । जो आशिक है नूरो की झलकार का ॥  
 देप उस शमा के झाडकूँ नूर के<sup>१०</sup> । लग्या फिरने खुद गोल पँख सूर<sup>११</sup> के ॥  
 मुँज हाल उम ठार पैदा हुआ । सआदत केरा दिन हवैदा<sup>१२</sup> हुआ ॥  
 मेरे बदन का सूर<sup>१३</sup> झलकाइया । मुख अकवाल<sup>१४</sup> चौधर<sup>१५</sup> ते दिखलाइया ॥  
 किवाडाँ खुले सब मेरे फाम<sup>१६</sup> के । खुले फूल मकसूद के<sup>१७</sup> वाम के ॥  
 मेरा जीव बुल्लुल हो बोलन लग्या । छुपे गैव के नगमे<sup>१८</sup> खोलन लग्या ॥१७०॥

इस प्रकार किमी वाग में सँर करते समय यह काव्य-तरंग कवि के हृदय में तरंगित होने लगा ।

मेरा दिल खजीना जो<sup>१९</sup> मामूर<sup>२०</sup> है । वचन के जवाहर सो भरपूर है ॥१८४॥  
 लगा रोलने ताइ<sup>२१</sup> में जोहराँ । दिपाया तजाल्या<sup>२२</sup> में नी अँवराँ ॥  
 किया शेर<sup>२३</sup> ताजा बडे छन्द सो<sup>२४</sup> । हरेक वेद<sup>२५</sup> विसलाइया चन्द सो ॥  
 खियालाई के फौजाँकू<sup>२६</sup> दीडाइया । हजाराँ नवे पदिवहाँ<sup>२७</sup> लाइया ॥१८८॥  
 रख्याँ बोलपर बोल यो रस भरे । जो इसते मिठाई के बछराँ<sup>२८</sup> झडे ॥१९०॥  
 मेरा ज्ञान अजब शककरस्तान<sup>२९</sup> है । जो इसते मिठा सब हिंदुस्तान है ॥  
 जते हैं जो तूती हिंदुस्तान के । भिकारी हूँ मुँज शककरस्तान के ॥  
 वहाँ ताजे मज्मून<sup>३०</sup> यकनिल मने<sup>३१</sup> । कि वेहद उबलते हैं मुझ दिल मने ॥२०१॥  
 हुनर की गवी का मो मैं घाय हूँ । बतन के उत्तम गज<sup>३२</sup> का ताग हूँ ॥२०२॥  
 मेरी जीभ अजब सङ्ग है आवदार<sup>३३</sup> । सदा तेज पानी घरें बेसुमार<sup>३४</sup> ॥२०४॥  
 फहम<sup>३५</sup> का सो गम्भीर दरिया हूँ मैं । जवाहर क मीजाँ सो भरिया हूँ मैं ॥२०६॥  
 यो अमृत सो बतिया बडे शौक सो । मैं लिखने लग्या दिल की अत जीव<sup>३६</sup> सो ॥२१॥  
 मुनेँ आशिका<sup>३७</sup> यो तो हैराँ होयें । पडेँ पीर-मदा<sup>३८</sup> तो फिर जवाँ होयें ॥२१४॥

१ टहलना, २ पासकी ओर, ३ बाहर, ४ हरितवसन, ५ पत्रा, ६ मोमबत्ती के झाडफानूस, ७ विलकुल, ८ पतंग, ९ समान, १० प्रकाशके, ११ सूर्य के पल, १२ प्रकट, १३ भाग्यका सूर्य, १४ प्रताप का सूर्य, १५ चौघार, चारो तरफ, १६ समझ, १७ अभिलाषा के, १८ अदृष्टके गीत, १९ खजाना जँसा, २० पूर्ण, २१ प्रकाश २२ पद्य, २३ घावते, २४ बध, २५ सेनाओं को, २६ उपमाएँ, २७ वर्षा?, २८ श्रकर स्थान, २९ विषय, ३० एक क्षण में, ३१ कोश, ३२ तेज, ३३ असीम, ३४ बुद्धि, ३५ रवि, ३६ प्रेमी, ३७ बुद्ध पुण्य ।

निरंजन जगत का तू सामीतु अहै । दयावन्त दातार नामी अहै ॥  
 वली जाऊँ उसकी दया के उपर । मेहरबान रबकी मया<sup>१</sup> के उपर ॥२१६॥  
 जो गौवास<sup>२</sup> हूँ मैं कमर बाँ दिया । सो समूदर<sup>३</sup> में... लिया ॥  
 सो यों मोतियाँ ढाल लाने लगा । जवाहर के ल्यों रास भाने<sup>४</sup> लग्या ॥२२३॥  
 पिरोने लग्या बैस<sup>५</sup> अप हात सों । रँगारँग हाराँ बहुत भाँत सों ॥२२६॥  
 हरेक हार सिंगार संसर का । सुरज हो डुबे जोत हर हार का ॥२२७॥  
 कि हजरत सुलेमाँ के वक्त पर अथा<sup>६</sup> मिस्र मे राज<sup>७</sup> एक वख्त पर<sup>८</sup> ॥२२९॥  
 नगर मिस्र का तिस अथा तख्तगाह<sup>९</sup> । अथे तिस जब्त तल<sup>१०</sup> सकल बादशाह ॥  
 नवल आसिम उस राज का नेक नाँव । शहाँ में अथा उस-शरफ<sup>११</sup> ठाँव-ठाँव ॥२३१॥  
 सदा राज करता अथा अपसेता । वले<sup>१२</sup> उसकुँ बेटी न बेटा अथा ॥२३८॥  
 सो एक घोस अपस में अँदेशा किया । फिकर जाद<sup>१३</sup> हो मनमें यों लाइया ॥

### ३. कथा-संक्षेप

#### (क) ब्याह की चिट्ठी—

कि अपसी<sup>१४</sup> मुलक माल पर्वदगार<sup>१५</sup> । यता कुछ दिया है जो नैं उस सुमार<sup>१६</sup> ॥  
 वले कोइ जतन इस रखनहार नै । कि मुझबाद मेरा कोइ इस ठार<sup>१७</sup> नै ॥२४१॥  
 अगर कोइ फ़र्जन्द<sup>१८</sup> होता मुँजे । तो यह जग में आनन्द होता मुजे ॥२४२॥  
 बड़ा नाँव होता मेरा ठार-ठार । दुनियाँ मे रहता मेरा यक यादगार<sup>१९</sup> ॥  
 सुबा उठ करे खैर-खैरात<sup>२०</sup> बहुत । कि होता कि फ़र्जन्द अब से तुरत ॥२४८॥  
 सदा रात-दिन उसकुँ यही काम है । न निस नीद न दिन कूँ आराम था ॥२५१॥  
 शहाँ मै अगरचे<sup>२१</sup> हूँ मै जगपती । वले घर कूँ नै कोइ दीवा-बती ॥२७६॥  
 वजीराँ सुने शाह सों यो विचार । शहंशाह कूँ धीर<sup>२२</sup> दे सब एक बार ॥२७९॥  
 नजूम्याँ<sup>२३</sup> कु एक धरते<sup>२४</sup> हाजिर किये । छुपा शाह का राज<sup>२५</sup> जाहिर किये ॥२८०॥  
 शहंशाह क ताला<sup>२६</sup> कवी<sup>२७</sup> पाय कर । वशारत<sup>२८</sup> दिये शह कूँ यो आय कर ॥२८२॥  
 कि “ऐ बादशाह भोगनी<sup>२९</sup> बख्तऽवर<sup>३०</sup> । तुँ फ़र्जन्द के कारण अब गम न कर ॥  
 यमन के जो राजे की बेटी है एक । चँदर-सूर खाते है रश्क<sup>३१</sup> उसकुँ देख ॥  
 उसे मंग तुज शाहकूँ सो सजे । कि देगा खुदा उसते फ़र्जन्द तुझे” ॥२८५॥

१. दया, २. डुबकी लगानेवाला, ३. समुद्र, ४. डालने, ५. माला, ६. था (हता),  
 ७. राजा, ८. भाग्यवान्, ९. राजधानी, १०. आज्ञाके नीचे, ११. उसकी दया प्रसिद्ध,  
 १२. लेकिन, १३. फिकर करनेवाला, १४. अपने, १५. पालक (भगवान्), १६. इयत्ता  
 (गिनती), १७. ठौर, १८. संतान, १९. दानपुण्य, २०. यद्यपि, २१. धीरज,  
 २२. ज्योतिषियों, २३. एक ओर से, सब जगह से, २४. रहस्य, २५. भाग्य,  
 २६. शक्तिशाली, २७. खुशखबरी, २८. भोगवाला, २९. भाग्यशाली, ३०. ईर्ष्या ।

महाराज गम्भीर आसिम नवल । चड्या देव अपस हात अकवाल बल ॥२८९॥  
 किया हुकम आनन्द पा वेहिसाव । लिखे नामा<sup>१</sup> शाहे यमनकू<sup>२</sup> शिताव<sup>३</sup> ॥२९१॥  
 समज शाह के दिल के सूरत<sup>४</sup> कू<sup>५</sup> । लिख्या नामा<sup>६</sup> वेगी कर इस घात<sup>७</sup> सो ॥२९३॥  
 कि “भोगनी शाह समरथ सजन । तुम्हारा मदा गम अछो<sup>८</sup> अजुमन ॥२९४॥  
 मेरे दिल में यो आवता है एताल<sup>९</sup>” । जो जाहिर<sup>१०</sup> व बातिन<sup>११</sup> अछै<sup>१२</sup> एक हाल ॥३००॥  
 तुम्हारा मेरा घर सो है एक घर । तुम्हारा कह्या है मेरे सीस उपर ॥  
 वलेकिन<sup>१३</sup> सुन्या हूँ मैं तुमनाकुं<sup>१४</sup> एक । उतम पाकदामन<sup>१५</sup> है फर्जन्द नेक ॥  
 अगर उसे मेरे अवद<sup>१६</sup> में ल्यायेंगे । मेरी वस्त<sup>१७</sup> कर मुझकू<sup>१८</sup> दिखलायेगे ॥  
 तुम्हारा वफादार कहलाऊगा । अजीजां की शत<sup>१९</sup> वजा लाउँगा” ॥३०४॥  
 जो कुछ खिलअतो<sup>२०</sup> खुसरवानी<sup>२१</sup> अथे । जो कुछ तोहफे<sup>२२</sup> नादिर<sup>२३</sup> शहानी अथे ॥  
 दिये दबदवे साथ<sup>२४</sup> हाजिब<sup>२५</sup> मँगात । तुरत वात लाये मरातिव<sup>२६</sup> मँगात ॥३०८॥  
 अँग<sup>२७</sup> मेहतरा<sup>२८</sup> सो खजाना किये । यमन के कदन<sup>२९</sup> खुश रवाना किये ॥३०९॥  
 एकेक मुल्क एकेक शह एक एक विलायत । एकेक कोट एकेक गढ लख धात धात<sup>३०</sup> ॥  
 उलँगते उलँगते चले ता यमन । खबर किये यमन के शहशाह कन<sup>३१</sup> ॥३११॥

### (ख) यमन शाहजादी से व्याह—

वो नामा सरासर पढाया तमाम । मोमकसूद<sup>१</sup> खातिर<sup>२</sup> में लाया तमाम ॥३१५॥  
 हुआ खुश लिखे सो हरेक वैन पर । ले नामा रख्या आपने नैन पर ॥३१६॥  
 दिया अपनी बेटी कू<sup>३</sup> उस शाहकू<sup>४</sup> । वैध्या अकद<sup>५</sup> सूरजकू<sup>६</sup> उस माह<sup>७</sup> कू<sup>८</sup> ॥३२०॥  
 परया सी कनीजा<sup>९</sup> उतम जात क्याँ । चचल छद-भरियाँ<sup>१०</sup> सुरजघात क्याँ<sup>११</sup> ॥३२३॥  
 हरेक साफ तन ढाल मोती दिसै । नवे रग जाली में जोती दिसै ॥  
 सभी किसवताँ<sup>१२</sup> उनकू<sup>१३</sup> रँगरेग सब । हरेक खुशनुमा<sup>१४</sup> होर खुश-आलग<sup>१५</sup> सब ॥३२५॥  
 गुलामाँ केतेक खूब साहेव-जमाल<sup>१६</sup> । मुना-बाँदे खडिया<sup>१७</sup> केतेक कर हमाल ॥  
 केतेक तबले<sup>१८</sup> के मिस्ल<sup>१९</sup> तातार के । केतेक फश वेमिस्ल<sup>२०</sup> जरनार<sup>२१</sup> के ॥  
 दर्याई तुरग होर हती वेशुमार<sup>२२</sup> । अमोलक केतेक जिस<sup>२३</sup> के यादगार<sup>२४</sup> ॥

१ चिट्ठी, २ जल्दी, ३ सुरति, मशा, ४ चिट्ठी, ५ इस भाँति, ६ रहो,  
 ७ इस समय, ८ बाहर (प्रकट), ९ भीतर, १० हूँ (गुज०), ११ लेकिन, १२ तुम्हारी,  
 १३ सती, साध्वी, १४ व्याह, १५ हित वस्तु, १६ कर्त्तव्य, १७ परिधान, १८ राजसी,  
 १९ भेंट, २० दुर्लभ, २१ वैभवके साथ, २२ दूत के साथ, २३ दर्जे के अनुसार,  
 २४ आगे, २५ अमात्य, २६ की ओर, २७ लाख भाँति, २८ बादशाह के पास (र०),  
 २९ अभिप्राय, ३० दिल, ३१ व्याह, ३२ चाँद, ३३ लौडिया, ३४ चतुराई-भरी,  
 ३५ सूर्य-जंसी, ३६ पोशाक, ३७ सुदशना, ३८ सुस्वरा, ३९ सुदर, ४० खड,  
 ४१ बतला, ४२ समान, ४३ अनुपम, ४४ जरदोजी, ४५ अनगिनत थी,  
 ४६ जातिके, ४७ स्मृति-चिह्न।

जो था मर्तबा<sup>१</sup> जहेज<sup>२</sup> केरा<sup>३</sup> जेता । किया मुस्तअद<sup>३</sup> यक तरफ़ ते वता<sup>४</sup> ॥  
 बडे मर्तबे<sup>५</sup> सों सऽरा बे-हिसाब<sup>६</sup> । लिख्या मिस्र के शाहकूँ यों जवाब ॥३३०॥  
 कि “ऐ बादशाह जगपती नामदार । तेरी बादशाही अछो बरकरार” ॥  
 सदा फतहो नसरत<sup>७</sup> सों तूँ राज कर । वसे लग दुन्या नित नवे काज कर ॥  
 तु दरिया है गंभीर गुन ज्ञान का । कि होता तूँ फ़र्जन्द<sup>८</sup> सफ़वान का ॥  
 दया कर जो मुँजकूँ किया याद तूँ । सो रोम्-रोम्<sup>९</sup> कुँ मेरे किया शाद<sup>१०</sup> तूँ ॥३३४॥  
 मुबारिक तुमन ख्वास्तगरी<sup>११</sup> अछो<sup>१२</sup> । यो नारी सदा तुजकूँ प्यारी अछो” ॥३३९॥  
 लिख्या यो नवाजिश<sup>१३</sup> कर इसघातसात<sup>१४</sup> । बडे गलगले<sup>१५</sup> होर मरातिब<sup>१६</sup> सँगात ॥  
 अनँदकी खुशी मंग अल्लाहकन<sup>१७</sup> । दिया पारकी मेज उस शाह कन ॥३४१॥  
 जो नज्दीक जों मिस्र के आइये । अँगे<sup>१८</sup> एक हाजिब<sup>१९</sup> कुँ दौडाइये ॥३४४॥  
 जो आसिम नवलशह खबर पाइया । उमस सात<sup>२०</sup> खुशियाँ मने<sup>२१</sup> आइया ॥३४५॥  
 किया काज का साज खुश ठार-ठार<sup>२२</sup> । हुआ जग में यो काज सब आशकार ॥३४७॥  
 वो महलाँ चितर सों चितारे तमाम । सदा खुसवानी<sup>२३</sup> सँवारे तमाम ॥३४८॥  
 बटे बाट धग<sup>२४</sup> नौ रतन के विधाये । मुरस्सा के खुश बारगाहाँ<sup>२५</sup> उचाय<sup>२६</sup> ॥३५०॥  
 कुदम<sup>२७</sup> जाफराँ कै<sup>२८</sup> गलाने लगे<sup>२९</sup> । गलाँ हौजखाने<sup>३०</sup> भराने लगे ॥  
 पिसा मुश्क<sup>३१</sup> फुलनीर मे घालकर<sup>३२</sup> । देखीये नवा एक बरसकाल<sup>३३</sup> कर ॥  
 मिले मज्लिसाँ<sup>३४</sup> होर वजीराँ तमाम । सलहदार<sup>३५</sup> सर्दार अमीराँ<sup>३६</sup> तमाम ॥  
 रँगारँग हुआ शाह का भार<sup>३७</sup> सब । झलकने लग्या जडित सिंगार सब ॥३५४॥  
 मँगा शाहताजी<sup>३८</sup> पवन सा शिताब<sup>३९</sup> । न सावज<sup>४०</sup> रखे कोइ उसका रिकाब<sup>४१</sup> ॥३५९॥  
 सो हाता मने पैनकर हस्तकर<sup>४२</sup> । उतम जात ताजी<sup>४३</sup> को उपराल चल ॥३६०॥  
 यकस तर्फ<sup>४४</sup> कैसर जो पकडचा है जीन । कि दूजी तरफ़ शाह फकफूर<sup>४५</sup> चीन ॥  
 चल्या सामने होने उस हूर<sup>४६</sup> कूँ । निछल<sup>४७</sup> नूर के पाक समदूर<sup>४८</sup> कूँ ॥  
 दमामे लगे पीठ सों गाजने । वजंतर हरेक जिन्स<sup>४९</sup> के बाजने ॥  
 उठे बोल अंबर दो तारे तमाम । लगे गावने गानहारे तमाम ॥

१. दर्जा, २. दहेज का, ३. तैयार, ४. उतना, ५. दर्जे, सम्मान, ६. अनगिनत, ७. कायम, ८. विजय, ९. पुत्र, १०. रोम-रोम, ११. प्रसन्न, १२. मँगनी, १३. रहों, १४. कृपा, १५. भौतिसे, १६. कल-कल, १७. दर्जे, इज्जत, १८. अल्लाके पास, १९. आगे, २०. दूत, २१. जोशके साथ, २२. प्रसन्नता मे, २३. जगह-जगह,, २४. राजसी दरवाजे, २५. पाँवडे, २६. चँदवे, २७. उठाये, २८. कहीं, २९. केसरको, ३०. घोलने लगे, ३१. कुण्ड, ३२. कस्तूरी, ३३. घोलकर, ३४. वर्षा-ऋतु, ३५. सभाएँ, ३६. शस्त्रधारी, ३७. सामन्त, ३८. बाहर, ३९. अरबी घोड़ा, ४०. जल्दी, ४१. जानवर शिकार, ४२. साथ, ४३. हाथोंमें, ४४. ताजी, ४५. एक ओर, ४६. बगपूर, देवपुत्र, ४७. अप्सरा, ४८. निर्मल, ४९. समुद्र, ५०. प्रकार ।

'अगर-ऊद-अवर' जलाने लगे। बुखारी' के असमान छाने लगे ॥  
 देखे लोग उस हूर के शाह कूँ। मिले सामने आके बहुमान सो ॥३६६॥  
 जो आया निकल शाह मैदान में। उजाला पड्या सातो अस्मान में ॥३६९॥  
 महलदार' हर एक वो साहेब-जमाल'। उडाने लगे शह पै लगटे रुमाल' ॥३७०॥  
 रुमाल के अकसाँ झलकने लगे। हवापर सो विजल्याँ चमकने लगे ॥  
 भरे थे हरेक ठार यो खामो-आम'। जो छुपगे थे एक घरते' तारे तमाम ॥  
 मती हस्त' अगे' सोहाने अथे'। पहाडाँ मगर चलकर आते अथे ॥  
 हरेक हस्त बेमिस्त' मकवूल' खूब। मुरस्ता' की पिठयाँ उपर झूल खूब ॥  
 तुरग बाव के पाव' कइ लग हजार। चितर में चितारे सके न चितार ॥  
 विचकते अपन छाँव देख ठाव में। मुरस्ता कि ठाडे रह एक पाव में ॥  
 नफीरचा वरगम' यो (तर-) तराट। सिने आसमाँ' के गये फाट-फाट ॥  
 सके' वादे पै' भर ले फुलवीर' सो। छिडकने लगे चौकघन' घोरसो ॥  
 जो अहिस्ता' डग-डग चलाने लगे। चँदर सूर मात हो सराने' लगे ॥३७१॥  
 अपन शहर में शाह ज्यो आइया। महल्ला में सबकूँ बुला लाइया ॥३८१॥  
 जो उस हूर' की आइ ज्यो पालकी। खुशी हुइ जियादा नवल' लाल की ॥३८२॥  
 तजल्ली देखन वै हुआ वेकरार'। सो दौडाइया दिलकूँ बे-इस्तियार' ॥  
 उसी रात उस साथ सोहवत' किया। मदन' कामनी मद व इशरत' किया ॥३८६॥  
 खुशी सो लिया शाहजादी के हात। वैध्या उसके गौहर' कूँ अरमास' मात ॥३८७॥  
 यकायक जो कुदरत' केरा वात हुआ। वेतेक दिन कू उम्मेद का फल हुआ ॥३९०॥

### (ग) पुत्र-जन्म—

इलाही' जो साहेब' है ससार का। जो देता है मग्या मँगनहार का ॥३९१॥  
 जो बेटा दिया शाह कूँ वेवदल'। चँदर-सूर ते खूब निर्मल निछल ॥३९२॥  
 खुश्याँ साथ अमृत' घडी फाल 'देक। सो सैफुलमलूक' कर रख्या नाँव नेक ॥३९७॥  
 जो था सालेह उम शाह केरा वजीर। खुदा उस के हक' पर हुआ दस्तगीर ॥  
 उसी रात उसे एक बेटा दिया। दिवा उसके घर का सो रोशन किया ॥

१ घूप, २ सुगधियोके नाम, ३ घुएँ, ४ सुन्दर, ५ झडियाँ, ६ प्रतिबिम्ब,  
 ७ बड़े-छोटे लोग, ८ एक ओरसे, ९ मस्त हाथी, १० आगे, ११ ये, १२ अनुपम,  
 १३ दिलपसन्द, १४ जरी, १५ हवा जैसे पैरवाला, १६ एक बाजार, १७ आकाशकी  
 छाती, १८ भिन्नता, १९ प्याले, २० गुलाबजल, २१ चारो ओर, २२ घीरे-घीरे,  
 २३ सराहने, २४ अप्सरा, २५ नूर, २६ अघोर, २७ बरबस, २८ समागम, २९ काम,  
 ३० आनन्द, ३१ मोती, ३२ हीरा, ३३ भगवान्की माया, ३४ अल्ला, ३५ स्वामी,  
 ३६ अनुपम, ३७ अमृतवेला, ३८ शकुन, ३९ देव-सङ्ग, राज-सङ्ग, ४० उसके लिये।

मुबारिक घडी में देखत फ़ाल<sup>१</sup> ओ । सो साअद<sup>२</sup> कर उसका रख्या नाँव सो ॥  
 जो इस हालते शहकुँ<sup>३</sup> अँपडी<sup>३</sup> खबर । फुटचा<sup>४</sup> सिरते भी खुरमी<sup>५</sup> पायकर ॥  
 बुला भेजिया बेग सालेह के तै । कह्या यों कि “इस धात<sup>६</sup> मँगता हूँ<sup>७</sup> मै ॥  
 जो यो दोनों मिलकर एक ठार अछै । बँधै<sup>८</sup> एक दिल हो कि होर यार अछै<sup>९</sup>” ॥  
 मँग्या-भेज साअद कुँ वै<sup>१०</sup> शह्यार<sup>११</sup> । दो दायाँ रख्या दोनों कुँ एक ठार ॥४०४॥  
 वरस सात के ज्यों वो दोनों हुये । मुअल्लिम<sup>१२</sup> कुँ यक खूब पैदा किये<sup>१३</sup> ॥४१२॥  
 ले जाकर जो बसलाये मक्तब मने<sup>१४</sup> । लगे पडने<sup>१५</sup> दिन-रात दोनों जने ॥  
 किये इल्म तहसील<sup>१६</sup> इस धात सों । जो दम मार कोइ ना सके बातसों ॥  
 हुये खुशनवीसी<sup>१७</sup> के यों धात में । जो सातों कलम<sup>१८</sup> आये थे हात में ॥  
 तिर-अंदाज<sup>१९</sup> ऐसे हो निकले वो दोय । बराबर उनके न था जगमें कोय ॥४१६॥

(घ) पद-प्रदान—

सो यक घोस सैफुल्मलुक जग-उजाल । शहंशह के जिउके चमन का निहाल<sup>२०</sup> ॥४२४॥  
 चल्या शह कुँ तस्लीम करने ब-दिल<sup>२१</sup> । अदब साथ सिर भूईँ धरने ब-दिल ॥४२६॥  
 देख्या शाह दोनों केतै जो निझा<sup>२२</sup> । सोने होर रूपे की दो कुरस्याँ मँगा ॥  
 किया अम्र<sup>२३</sup> बैसाइ कर<sup>२४</sup> दोइ कुँ । लग्या देखने भर नज़र दोइकुँ ॥  
 हुआ मन में खुशहाल एस धात सों । कह्या जाय न ओ किसी वात सों ॥  
 उबलने लग्या प्यारका दिलमें शौक । मंगाय़ा खजीनें में ते एक संदूक ॥४३०॥  
 वो संदूक खोल एक अंगुश्टरी<sup>२५</sup> । झमकता नगीना सो ज्यों मुश्टरी<sup>२६</sup> ॥४३२॥  
 निछल जरजरी<sup>२७</sup> खूब जरबफ्त एक । यो दो वस्तकुँ काड अपे शाह देख ॥  
 सो सैफुल्मलुक के दिया हात में । हो खुशहाल भौते च<sup>२८</sup> उसी सात<sup>२९</sup> में ॥  
 मंगाय़ा उतम जात तेजी<sup>३०</sup> अनूप । पवनसार<sup>३१</sup> जल्दी में अपरूप रूप ॥  
 किया पेशकश<sup>३२</sup> होर नेवाज्या<sup>३३</sup> बहुत । बुलाकर कहा “ऐ मेरे मन के पूत ॥  
 यों तेजी उतम होर यो अंगुश्टरी । यो जरबफ्त निर्मल निछलं जरंजरी ॥  
 मेरेतैं दिये ते सुलेमान भेज । परचाँ होर देवा के सुल्तान भेज ॥  
 अजब<sup>३४</sup> कुछ खजीने मेरे है यो । दिया हूँ तुझे मै कि तेरे है यो ॥४३९॥

१. हस्तावलम्बन, २. सुभागा, ३. पहुँची, ४. खुला, ५. खुशी, ६. भाँति,  
 ७. चाहता हूँ, ८. बँधें, ९. रहै, १०. वहीं, ११. बादशाह, १२. अध्यापक, १३. बैठाये,  
 १४. पाठशालामे, १५. पढ़ने, १६. विद्याध्ययन, १७. सुलेखकता, १८. लिपि, १९. धनुष  
 चलानेवाला, २०. बूटा, २१. दिल से प्रणाम करने, २२. ध्यान से, २३. आज्ञा,  
 २४. कहकर, २५. अंगूठी, २६. शुक्रतारा, २७. जर्दोजी, २८. बहुत ही, २९. साथ,  
 ३०. ताज़ी ( अरबी घोड़ा ), ३१. वायु-समान, ३२. इनाम, ३३. नौछावर किया,  
 ३४. अद्भुत ।



## (३) वकीयुल्जमाल के चित्रपर मुग्ध—

यकायक सो दिलकूँ लग्या जो तलाश<sup>१</sup> । मो बेमिस्ल<sup>२</sup> जरवपत का वो कमाश<sup>३</sup> ॥  
 देख्या खोलकर सरवसर<sup>४</sup> ज्यो उने । मो तस्वीर पाया अजब<sup>५</sup> उस मन<sup>६</sup> ॥  
 वह तस्वीर देखी दिवाना<sup>७</sup> हुआ । वहीं इश्क का उमकूँ भाना<sup>८</sup> हुआ ॥  
 अपममें लग्या देखने जार-जार<sup>९</sup> । सो पटने लग्या वेखवर<sup>१०</sup> ठार-ठार ॥  
 वो मूरत नजर<sup>११</sup> भर ही चूम कर । सो जागा किया दिलमने<sup>१२</sup> सूब कर ॥  
 दिया सग सार्या केरा छोडकर । लिया सींच दम<sup>१३</sup> सवते मुत्त मोडकर ॥  
 अँधारे भरी कोठरी में यकट<sup>१४</sup> । मो जा पर रह्या वेखजर हो निपट ॥  
 जो भाअद हुआ नीद में होशियार । लग्या देखने ताई अँसियाँ पसाग ॥४६०॥  
 नजर नै पड्या शाहजादा कही । लग्या डूँडने हैरान हो हर कही ॥  
 सो पाया अँधारे मने<sup>१५</sup> एक ठार । पड्या था अकेला दुखी वेकरार<sup>१६</sup> ॥  
 अँझू<sup>१७</sup> अखियाँ में ते डुलते अये । नवा होकर दो भरते चलते अये ॥  
 न जरा<sup>१८</sup> खबर कुछ उमे जात<sup>१९</sup> की । न ताकत जवाँ को है कुछ वात की ॥  
 जेता साअद उसकूँ उचाने<sup>२०</sup> कुँ जाय । जेता पाँव पडकर मनाने कूँ जाय ॥  
 वेता<sup>२१</sup> अप सँ दिखलाये बेहोश कर । न दे जाब<sup>२२</sup> चुप रह फरामोश<sup>२३</sup> कर ॥  
 उठा मायद उस देखकर तिलमिला । ॥४६७॥  
 जो दरहाल<sup>२४</sup> शह कूँ खबर जा दिया । यकायक शह का सो मीना<sup>२५</sup> तडलिया<sup>२६</sup> ॥४६८॥  
 वो देखन कुँ बेटे के आया नजीक । मो वेताव<sup>२७</sup> सख्ते च<sup>२८</sup> पाया अधीक ॥४६९॥  
 देख्या यो वेताव यकवारगी । बमर वँस गई होर लगी तगवगी ॥४७७॥  
 सो उस वक्त किमकूँ ना कर खबर । मुवादा<sup>२९</sup> नजर कुछ लगी होयकर<sup>३०</sup> ॥  
 दवायाँ कुँ धो-धो पिलाने लगा । लिख्या ताविजो ल्या बेवाने लग्या ॥४७९॥  
 जेते थे हकीमा<sup>३१</sup> जपन शहर वे । हलज-चीन (होर) मावरा-नहर<sup>३२</sup> के ॥४८०॥  
 । कह्या मेहरवानी सेती ला गले ॥४८२॥  
 करेगा दवा जो कोई दद फाम<sup>३३</sup> । देऊँगा उसे वादशाही तमाम ॥४८६॥  
 हकीमाँ देपन नाडी ज्यो आयें हैं । दरद जाहिरा<sup>३४</sup> कुछ नही पाये हैं ॥४८९॥  
 हुयें एक तरफने पशोमान<sup>३५</sup> सब । रहे दर्द ना फाम हैरान सब ॥४९०॥

१ खोज, २ अनुपम, ३ कपडा, ४ पूरी तौरसे, ५ विचित्र, ६ उसमें, ७ पागल,  
 ८ बहाना, ९ फूट-फूट, १० बेहोश, ११ आँखोंमें, १२ दिलमें, १३ साँस रोक लिया,  
 १४ अकेला, १५ अँधेरे में, १६ अधीर, १७ अश्रु, १८ जरा कुछ भी, १९ अपनी,  
 २० उठाने, २१ उतना, २२ जवाब, २३ भूला, बेसुध, २४ उसी समय, २५ कलेजा,  
 २६ फटा, २७ अधीर, २८ सख्त ही, २९ शायद, ३० मत्र धो-धो, ३१ वैद्य,  
 ३२ दजला-फुरात या आमू-सिर दरिया के द्वारे, ३३ समझ, ३४ प्रकट, ३५ हैरान ।

जो उस ददं का जिन्स<sup>१</sup> कुछ होवता । तो दारू वा दरमन<sup>२</sup> कुँ रुच होवता ॥  
 सभी हर दरद कुँ है हरकै<sup>३</sup> दवा । वले<sup>४</sup> इश्क के दर्द कुँ नै दवा ॥४९२॥  
 मुसल्लम<sup>५</sup> शहंशाह हुआ लाइलाज<sup>६</sup> । न था काम उसे कुछ बैठे रोये बाज<sup>७</sup> ॥४९४॥  
 सो एक घोस<sup>८</sup> आये वजीराँ सकल । कहै शाह कुँ यों कि “शाहे नवल ॥४९६॥  
 भला है जो साअद कुँ उसके नजीक । अछै<sup>९</sup> उसके दुख-दर्द में हो शरीक ॥५०१॥  
 वही उसके दिल का जो अंत पायेगा । वही उसकुँ मारग मने लायेगा” ॥  
 शहंशाह कुँ खुश लग्या वो विचार । दिया भेज साअद कुँ बटे के ठार ॥  
 गया शाहजादे के ज्यों वो नजीक । लग्या रोवने जार उसके अधीक ॥  
 कह्या यों कि “ऐ लाल साहेबजमाल<sup>१०</sup> । न सूरज चँदरमे है तेरा मिसाल<sup>११</sup> ॥  
 तेरा नूर<sup>१२</sup> हर ठार मामूर<sup>१३</sup> अछो<sup>१४</sup> । तेरा दिल खुश्याँ साथ जम<sup>१५</sup> पूरा अछो<sup>१६</sup> ॥  
 है मुज नैनकुँ नूर तुज नूर ते । सदा सूर मुजकुँ तुज सूर ते ॥  
 अधंर खोल मुज साथ कुछ बोल तूँ । तेरे दिलमें क्या है सो कह खोल तूँ ॥  
 कि तेरा सदा मै वफादार<sup>१७</sup> हूँ । हरेक ठार तेरा मै गमखार<sup>१८</sup> हूँ ॥  
 यकायक यो आया हूँ क्या फिक्र<sup>१९</sup> तुज । लग्या किसूँ ते ध्यान होर जिक्र<sup>२०</sup> तुज ॥५१०॥  
 नजर किस सुरज पर पडी जग करे । जो यों नित उबलते है जल के झरे<sup>२१</sup> ॥  
 तेरा चाँद किने<sup>२२</sup> है तूँ किसका चकोर । . . . . . ॥५१२॥  
 मुजे खोलकर तू कहे तो भला । वगर<sup>२३</sup> नै तो मै काट लैउँगा गला” ॥  
 कमर में ते वै<sup>२४</sup> अपने खंजर कुँ काड । गया आपना पेट लेने कुँ फाड ॥  
 देख ये हाल दरहाल सैफुलमलूक । पकड हात सायद केरा देख मुख ॥  
 विरह आज सो जल बोला आह मार । अँगारे नयन मे ते डाल्याँ हजार ॥  
 पिछान्या कि साअद वफादार है । अपन दुख होर दर्द का यार है ॥  
 वो जरबफत का पारचा<sup>२५</sup> लाइया । जो भी सूरत उसमे सो दिखलाइया ॥  
 कहा “मै इसी का दिवाना<sup>२६</sup> हूँ भौत<sup>२७</sup> । अगरचे<sup>२८</sup> अपन ठार दाना हूँ भौत ॥५२०॥  
 यही रूप लबदाइया<sup>२९</sup> है मुँजे । यही हुस्न<sup>३०</sup> बेसुध किया है मुँजे ॥  
 कही रूप दुनिया मे इस सारका<sup>३१</sup> । न देख्या है कोई खल्क संसार का” ॥५२२॥  
 सुन्या राज<sup>३२</sup> साअद अपन यार ते । रजा<sup>३३</sup> लेकर आया जो उस ठार ते ॥५२४॥  
 शहंशाह कुँ तस्लीम<sup>३४</sup> आकर किया । सो ओ सूरते-हाल<sup>३५</sup> सब बोलिया ॥

१. जाति, २. औषध, ३. हर कहीं, सब जगह, ४. लेकिन, ५. पूरी तौर,  
 ६. अचिकित्स्य, ७. विना, ८. दिन, ९. रहे, १०. सुन्दर, ११. समान, १२. तेज,  
 १३. भरा, १४. रहो, १५. सदा, १६. पूर्ण, १७. सच्चा भक्त, १८. संवेदक, १९. चिंता,  
 २०. स्मृति, २१. झरने, २२. कौन, २३. नहीं तो, अन्यथा, २४. वहीं, २५. कपड़ा,  
 २६. पागल, २७. बहुत, २८. यद्यपि, २९. बुद्धिमान्, ३०. सौन्दर्य, ३१. सारखा, ३२. रहस्य,  
 ३३. सम्मति, ३४. प्रणाम, ३५. अवस्था ।

## (च) प्रेमिका की खोज बेकार—

अजायब<sup>१</sup> लग्या शहकूँ उम भेद पर। कहा खोलते सबकुँ यो सरबसर ॥५२५॥  
मै यक द्योम बैठा अया तस्त पर। मो देस्या यकायक उसी वक्त पर ॥५२७॥

। केनेक शह पर्या<sup>२</sup> ऐन<sup>३</sup> झलकारमो ॥५३१॥

मेरे तरुन के अगे<sup>४</sup> आइयां तमाम। कियां मुजकूँ देक यक तरफ ते मलाम ॥

कह्या मुजकूँ ऐ साहेबे-तख्तोताज<sup>५</sup>। हमनकूँ मुलेमान मेजा है आज ॥

वो जरवफ्त का पारचा<sup>६</sup> लाइया। मेरे अगे<sup>४</sup> रख खोल दिगलाइयां ॥

जो या उम मन<sup>७</sup> सूरते बेनजोर<sup>८</sup>। ॥५३५॥

कह्यां खोल यो मुज उपर कर करम<sup>९</sup>। यो ल्यायां है अज गुल्मताने अरम<sup>१०</sup> ॥

कि है शहपरी यक बबीमुल्जमाल। सो यो पाक सूरत है उमका मिनाल ॥

वो शहवाल<sup>११</sup> बन शाह रुग<sup>१२</sup> राज की। सो बेंटी है अति शर्म होर लाज की ॥

परे होर परिया<sup>१३</sup> जहाँ लग तमाम। करे आके शहवालकूँ सब सलाम ॥५४०॥

वो जरवपत बेमिस्त<sup>१४</sup> न होवे कर। यक् अगुस्तरी यक तुरंग तिस उपर ॥

लेकर आयकर पेशकश<sup>१५</sup> मुंज किया<sup>१६</sup>। यकायकक मव गैव<sup>१७</sup> होकर गियां ॥५४२॥

अदेशे मने<sup>१८</sup> पड हो दिलीर<sup>१९</sup> अधिक। हलो<sup>२०</sup> शाहजादे के आया नजीक ॥५४७॥

केतेक घोस<sup>२१</sup> खातिर<sup>२२</sup> कूँ टुक जमा राक। ॥५४८॥

जो लेऊँ परे मै चला हात पाव<sup>२३</sup>। खबर तरे मकसूद<sup>२४</sup> की ठाँव ठाँव ॥५५३॥

जो इम घान<sup>२५</sup> मो मग मुहलत<sup>२६</sup> लिया। सो लागीं कुँ मुल्के मुलक भेजिया ॥५५४॥

जो गये थे रमूला<sup>२७</sup> तमाम एकवार। लगे ढूँढने आलमें<sup>२८</sup> ठार ठार ॥५५६॥

खुरामान, रुम होर शाम होर खोतन। हवश होर गुजरात दिल्ली दखन ॥५६१॥

इराक होर शीराज<sup>२९</sup> होर खोजद। दुखारा-बलय यजद होर समरकन्द ॥

ससजान वाशान सजान सब। हलव चीन तुरान ईरान सब ॥

मवा<sup>३०</sup> आगरा होर सकल पुर्तगाल। मो मशरिक व मगरिक<sup>३१</sup> जनुव होर शुमाल<sup>३२</sup> ॥

तका परलका होर बगाला व गौड। बेचारा जिघर के उघर दौड दौड ॥

गये यक तरफ ते जगत के ऊपर। न पाये गुलिस्ताँ अरम का खबर ॥

वरम एक लग सब परेशाँ हुये। फिर आये मिसर कूँ पशेमा<sup>३३</sup> हुये ॥

सुन्या ज्यो यो अहवाल<sup>३४</sup> सैफुन्मलुक। लग्या गम पै गम करने होर दुख पै दुख ॥

१ विचित्र, २ अप्तराएँ, ३ ठोक, ४ आगे, ५ मुकुट, तिहासनके स्वामी, ६ कपडा, ७ आगे, ८ उसमें, ९ अनुपम, १० कृपा, ११ स्वर्गका उद्यान, १२ परियोकी रानी, १३ नाम, १४ परा और परी लोग, १५ अनुपम, १६ भेंट, १७ करीं, १८ लुप्त, १९ चितामें, २० दु खित चित्त, २१ धीरे-धीरे, २२ दिवस, २३ दिल, २४ हाथ-पैर, २५ ईम्सित, २६ भाँति, २७ छुट्टी, २८ दूत, २९ दुनियामें, ३० तेहरान, ३१ मक्का, ३२ पूर्व-पश्चिम, ३३ दक्षिण, ३४ उत्तर, ३५ हेरान, ३६ हालत।

अंधारे भरे घरमने<sup>१</sup> जायकर । पड्या घरतिरी सो अड्डाय<sup>२</sup> कर ॥  
 सिना गम सेती कूटल ना लग्या । कर उस नार कू याद<sup>३</sup> रोना लग्या ॥५७०॥  
 सँगाती कुँ अपने पुकारन लग्या । न सह सक विरह आह भरने लग्या ॥५७३॥  
 करे याद तिल-तिल<sup>४</sup> रोवै जार-जार । पडे बेखबर<sup>५</sup> होयकर ठार-ठार ॥  
 खबर पायकर टुक<sup>६</sup> जो हृशियार होय । नजीक आपने तो नही देखे कोय ॥  
 वह सूरत<sup>७</sup> रखे आपने नैन<sup>८</sup> तिल । उस ऊपर ते जावे और कह बल-बल ॥  
 कहे यो कि "मुँज मन की दिलदार<sup>९</sup> तूँ । मेरे मन में निस-दिन वसनहार तूँ ॥  
 तु किस समुद्र<sup>१०</sup> की ढाल मोती हैगी । तूँ किस खान की लाल जोती हैगी ॥  
 किस आसमान की है चंदरभान तूँ । किस अकलीम<sup>११</sup> की री है सुल्तान तू ॥  
 है फुल डाल तू किस गुलिस्तान<sup>१२</sup> की । झमकती<sup>१३</sup> है शाम<sup>१४</sup> किस शबिस्तान<sup>१५</sup> की ॥५८०॥  
 जो इस घात तूँ मुजकू लबदाइ<sup>१६</sup> है । मेरे मन कुँ चित अपना लाई है ॥  
 न जानूँ तुझे किस घडी पाऊ मैं । सो क्यों ढूँड काडू<sup>१७</sup> तेरा ठाँव में" ॥५८२॥  
 दिने दिन इसी घात<sup>१८</sup> बैठा अछै<sup>१९</sup> । देखी उस पियारी के जीता अछै ॥५८५॥  
 नवल शाह आसिम लग्या तिलमिलन । दुखी पूत कू देख फिर फिर जलन ॥  
 रह्या सूख दुबला तुलक-तार<sup>२०</sup> हो । निपट जिन्दगानी से बेजार हो ॥  
 अपसते अपी<sup>२१</sup> भर ठंडी सर्द उसास । कह्या आयकर अपने फ़र्जन्द<sup>२२</sup> पास ॥५८८॥  
 "लग्या है परी साथ तेरा जिया । न समझे किसी बात तेरा जिया ॥५९४॥  
 परी कूँ किने<sup>२३</sup> जाके ल्या ना सके । कहाँ है सो किन<sup>२४</sup> खोज पा ना सके ॥५९५॥  
 अगर बादशाहों की बिटिया में कै<sup>२५</sup> । दिल अछता<sup>२६</sup> तो देता मिला तुजकूँ मै" ॥५९७॥  
 सुना सरते<sup>२७</sup> सैफुलमलुक ज्यों बात यो । . . . . . ॥५९९॥  
 कह्या "शहनशाह अगर लाख हूर<sup>२८</sup> । उतर आये जन्नत<sup>२९</sup> ते मेरे हुजूर<sup>३०</sup> ॥  
 तो जर्री<sup>३१</sup> न हो मेरा किस पै खियाल । मुजे हो तो होना वदीयुल्जमाल ॥६००॥  
 मेरे दिलमें आता है अब यो खियाल । जो लेऊं रजा<sup>३२</sup> तुज कने<sup>३३</sup> ते एताल<sup>३४</sup> ॥६०४॥  
 फिरुं जाके आलम<sup>३५</sup> में चौफेर मे । जो लेऊ गुलिस्ताँ-अरम का खबर ॥६०६॥  
 सो कैसा है देखूँ दरचा<sup>३६</sup> का सफ़रमै । अपे ही करूँ अपाने तदबीर<sup>३७</sup> मे" ॥  
 जो था शाह अब्वल<sup>३८</sup> ते रंजूर<sup>३९</sup> पूर । हुआ सरते भी दुख तले चूर-चूर ॥६११॥  
 कह्या यों कि फ़र्जन्द<sup>४०</sup> मुजे है सो एक । क्यों उस एक कूँ देऊँ रजा देके देख ॥६१३॥

१. घर में, २. अरराय, ३. स्मरण, ४. क्षण-क्षण, ५. बेहोश, ६. थोड़ा,  
 ७. तस्वीर, ८. आँखोंके सामने, ९. प्रिय, १०. समुद्र, ११. राज्य, १२. फुलवारी,  
 १३. चमकती, १४. मोमबत्ती, १५. रात, १६. खींचा, १७. कैसे, १८. भाँति, १९. रहै,  
 २०. पतला-सा, २१. आप ही आप, २२. पुत्र, २३. कोई, २४. कौन, २५. कहीं,  
 २६. रहता, २७. फिर से, २८. अप्सरा, २९. स्वर्ग, ३०. सामने, ३१. किचिन्मात्र,  
 ३२. आज्ञा, ३३. तेरे पास, ३४. अब, ३५. दुनिया, ३६. समुद्र, ३७. उपाय,  
 ३८. पहिलेसे, ३९. रंजीदा, ४०. पुत्र ।

सकति है जो बिन तख्त बिन ताज अछूँ । वले ताव नै मैं जो इस वाज अछूँ ॥६१४॥  
 केनेक वारकूँ फिर मँगात । वि कहने लग्या "क्यो रखूँ कैद मात" ॥६१८॥  
 मुवादा<sup>१</sup> दुग्यां ते सीना फोड ले । मुवादा यो जिवने ते दिल तोड ले ॥  
 दुजा होर नै है जो कौं कुच इमे । किया है निपट इश्क यो हिच<sup>२</sup> इसे ॥६२०॥  
 भला जो खुदा पर तवक्कल<sup>३</sup> करूँ । इमे वाट लाने केरा बल करूँ ॥६२१॥  
 दे साअद कूँ सँफुलमुल्क के दुँवाल । खाना किया होर हुआ वै<sup>४</sup> निढाल ॥६४०॥  
 लग्या रोने फज्रन्द के ध्यान सो । गुला भेजा वै अपने परधान<sup>५</sup> कूँ ॥६४२॥

### (छ) राजकुमारी की समुद्र-यात्रा—

करनहार नैर उम पिग्ति घाट का । देवे काड मार्ग यो उम वाट का ॥६४४॥  
 जो साअद व सँफुलमुल्क ज्हाज<sup>६</sup> चड । चले गलगले माय दरिया में पड ॥६४५॥  
 तलें माफ पानी उपर आसमान । वरमता हुआ माजदिल<sup>७</sup> दरमियान ॥  
 मफावस्ग<sup>८</sup> चौवेर मौजा गँभीर । तमाशा केतव उम मने<sup>९</sup> वेनजीर ॥  
 मो दख जौक पाने मने<sup>१०</sup> घात घात<sup>११</sup> । चलाने लगे ज्हाज दिन होर रात ॥६६८॥  
 पयोपै<sup>१२</sup> केतक घोस कश्या<sup>१३</sup> चलाय । मो यो ठार दरिया के दरमियान आय ॥७०१॥  
 यकायक उठा वाव<sup>१४</sup> तूफान का । दरया कूँचड्या ताव तूफान का ॥७०३॥  
 निपट आये ते दाट<sup>१५</sup> काले अमाल<sup>१६</sup> । छुपा मूर होर चाँद पकड्या निपाल ॥  
 बरसने लग्या मेघ उपरालते । न बरस्या बधी यो बरम-काल ते ॥  
 पड्या गिदं चारो तरफ अक्वार । कडकने लग्या विजलियाँ ठार ठार ॥  
 न दिन फाम होता समवते न रात । हुआ रात होर घोम मिल एक घात ॥  
 खुदा सो पड्या आके मारयाँ कुँ फाम<sup>१७</sup> । भरोसा सुटे<sup>१८</sup> जीवने का तमाम ॥  
 कि दरिया उबलने लग्या शोर सो । उठे मौज तूफानके जोरसो ॥  
 होइया कस्तियाँ दरहमू<sup>१९</sup> यक प्रार<sup>२०</sup> ते । रह्या खल्क<sup>२१</sup> आजिज<sup>२२</sup> हो तदवीर ते ॥७१०॥  
 भर आया ज्हाजाँ मने<sup>२३</sup> आव सब । गवाता गया माल व अमवाव मत्र ॥  
 बडा कुछ हुआ तफरा<sup>२४</sup> हौलनाक<sup>२५</sup> । हुये लोग लै<sup>२६</sup> यक तरफ ते हलाक<sup>२७</sup> ॥  
 उठ्या मौज ज्यो सो वो वहती वही । चली शाहजादे की कश्ती<sup>२८</sup> कही ॥  
 हुआ ज्हाज तूफानने चूर-चूर । मलिक<sup>२९</sup> होर साअद पडे दूर दूर ॥  
 विला साअद अप मीम ले घात घात । चल्या जो कही अपनी कश्ती संगत ॥  
 तरफ हम के जा के साअद पड्या । हवश मुल्क कूँ जाय तस्ला लग्या ॥७१६॥

१ रूँ, २ लेकिन, ३ ताकत, ४ कैद साथ, ५ शायद, ६ कूँ, ७ ऐसा ही,  
 ८ भरोसा, ९ पीछे, १० वहाँ, ११ मत्री, १२ ज्हाज, १३ मद्धिम, १४ स्वच्छताप्रद,  
 १५ उसमें, १६ शोक पानेमें, १७ भाति-भाति, १८ लगातार, १९ नावें, २० बापु,  
 २१ डाट, २२ बादल, २३ समझ, २४ छोडा, २५ छिन्न-भिन्न, २६ एक ओर से,  
 २७ दुनिया, २८ हँरान, २९ जहाजों में, ३० पानी, ३१ भेद, ३२ भयानक,  
 ३३ बहुत, ३४ मृत, नष्ट, ३५ नाव, ३६ स्वामी ।

(ज) हब्सी बंदीखाने में—

अँख्याँ खोल देखनं लग्या ठार-ठार । न लश्कर है अपना न साअद है यार ॥७२०॥  
 सभी गर्क<sup>१</sup> हो जाके याराँ पचास । जो बाकी अथे सो मिले आसपास ॥७२२॥  
 उचा<sup>२</sup> शाहजादे कु बसलाइया<sup>३</sup> । . . . . . ॥७२३॥  
 न था शाहजादे कुँ रोय बिन करार<sup>४</sup> । कि साअद के उपराल था भीत प्यार ॥७२९॥  
 यकायक बडे गुलसेती हाक मार । निकल जंगियाँ<sup>५</sup> आये यकघेरते भार<sup>६</sup> ॥७३१॥  
 सलहपोश<sup>७</sup> सारे बडे धात के । बडे थोबडे<sup>८</sup> होर बडे जात<sup>९</sup> के ॥  
 दरचा परके वो चोर सारे अथे<sup>१०</sup> । पकड आदम्या खानहारे अथे ॥  
 देखे शाहजादे की कस्ती कुला । लगे मारने वाँ तुफगा<sup>११</sup> बला ॥७३४॥  
 पकड शाहजादे कुँ यारा सँगात । वही बन्द कर ले चले रातेरात ॥  
 सुबा हो उजाला हुआ देखकर । सब आये किनारे कुँ दरिया उतर ॥  
 निझा<sup>१२</sup> देखते है जो दरिया किनार । रखे है तखत एक उँचा सवार ॥  
 कुढंगी जंगी बिलखन<sup>१३</sup> उस पे चड । बडे मौज बैठा है सख्ती अकड ॥  
 एता कुछ बदशकल चेहरा अथा । जो देखन किसे उसकुँ जहरा न था ॥७४०॥  
 बडा भूत कहते सो था आप वो । कि था सारे भूताँ केरा बाप वो ॥  
 गया होंठ उपरका जो यकघेर<sup>१४</sup> कुँ । लग्या था पेशानी उलग सीरकुँ ॥  
 तले का यों आया अथा लटक होंट । जो था उसके गुरग्योँ<sup>१५</sup> मने फर्क योट ॥  
 लँबा कद लँबी नाक चौडे बुलाख । दिसे गारके नाद<sup>१६</sup> लब्दाँ<sup>१७</sup> फराख<sup>१८</sup> ॥  
 बडे डागरे सारके<sup>१९</sup> कान दो । उजड घर केरे खोड जो रान दो ॥  
 मसे काले उसके नज्दीक सार्या कुँ ल्याय । उसे यक तरफ<sup>२०</sup> ते सलामा दिलाय ॥७४९॥  
 बेड शाहजादे कुँ वो देखकर । ले जाओ कह्या अपनी बेटी के घर ॥७२१॥  
 सो काले जंगी दोय संगत जा । दिये उसकि बेटी केरे हात जा ।  
 लेकर आये जंगिन कने<sup>२१</sup> शाह कुँ । मिलाये जोहल<sup>२२</sup> साथ ज्यों माह<sup>२३</sup> कुँ ॥  
 वले शाहजादे का देख ओ जमाल<sup>२४</sup> । दिवानी हुई इश्क लाई कमाल<sup>२५</sup> ॥७५५॥  
 बडे शौक होर जौक<sup>२६</sup> सों दौड आय । सो शाहजादेकेरा ज्यों निझाय ॥७५९॥  
 सो देख शाहजादा हुआ वै<sup>२७</sup> निढाल । रगे-रग मे यक धोर ते<sup>२८</sup> बैठा कँटाल ॥७६०॥

१. डूब, २. उठा, ३. बैठाये, ४. धीरज, ५. हब्सी, ६. एक ओरसे, बाहर,  
 ७. कवचधारी, ८. मुँह, ९. जाति, १०. थे (हते), ११. बन्दूक-तोप, १२. ध्यान लगा,  
 १३. अलक्षण, १४. एक ओर, १५. भेदियों, १६. गढ़हेकी भाँति, १७. ओठ, १८. चौड़े,  
 १९. ढोरके से, २०. एक ओरसे, २१. हब्सीनीके पास, २२. सनीचर, २३. चन्द्र,  
 २४. सौन्दर्य, २५. पूरा, २६. रुचि, २७. वहीँ, २८. एक तरफसे ।

## (स) कुरुपा हृदयान—

। निपट रुसियाही में अगुस्त थी ॥७६१॥  
 कि था थोवडा उसका ज्यो फील<sup>१</sup> का । सर उसका सो काला रंजन नीलका ॥७६२॥  
 अँख्या डोगियाँ ज्यो खडी मारके । दो दीदा भीतर ज्यो पयर गार<sup>२</sup> के ॥७६३॥  
 चड्या होट उपरालका नाक पर । थुडी पर पड्या है तल्लेका उत्तर ॥७६४॥  
 तमाम अग गोनीवेरा टाट ज्यो । चूच्याँ दो मीनेपर है दो माट ज्यो ॥७६५॥  
 निकल पेट अगे टल्लेक ज्यो आ खडा । अथा पेट ये सस्त पेडू वडा ॥७६६॥  
 वोवी<sup>३</sup> खुल रही थी मो ज्यो ओखली । मुसल होके दौडी थी रोमावली ॥७६७॥  
 लडकती जो चुतडा पै चोटी दिमें । सो ज्यो झाटकी पेड मोटी दिसै ॥७६८॥  
 सुये सार<sup>४</sup> पँहल्याँ उपर तेज वाल । न थी जगमें डायन कोइ उसके मिमाल ॥७६९॥  
 सडी बाँस बगलामें ते यो झरे । जिने वाम उसकी सुंगे सो भेरे ॥७७०॥  
 पवन सारका उम कि टुक वाम पाय । तो ल्या हल्कमें अँतडियाँ न्हास<sup>५</sup> जाय ॥७७१॥  
 अँग्याँ में कोई ऐसी काली न थी । हो काली कै ऐमी खुजाली न थी ॥७७२॥  
 अगर लावें जिम ठार मग्नल हज़ार । उन आवे तो तीरे पड अदकार ॥७७३॥  
 चली घरमने<sup>६</sup> शाहजादे कूँ ले । कँदूरे<sup>७</sup> करे वार अपने वले<sup>८</sup> ॥७७४॥  
 जो वँठे दोनो मिल कँदूरे उपर । सो वो ज्यो हनी होर् रयो ज्यो मछर ॥  
 कि आ नामुवाफिक<sup>९</sup> मोहवत घडी । पगन उटके जा फिकर लागी वडी ॥७८०॥  
 जो फारिग हुये पेट भर खाना खा । मँगाई तुग्त मस्त प्याला नि का ॥  
 सो गडव्यापे गडवी लगी खेलने<sup>१०</sup> । लगी शाहजादा सो मिल खेलने ॥  
 पिये शाहजादे मो मिल बैस कर । ॥७८३॥  
 कबूल्या<sup>११</sup> नही शाहजादा उमे । टरया देख तन परके उमके मसे ॥७८५॥  
 गुसा साथ अति जगिया कूँ बुलाय । सो सगी चकी पीसने कूँ मँगाय ॥७८८॥  
 “मलिकजादे के कने<sup>१२</sup> ले जा” कही । “सुवा उठकर आटा पिसाओ” कही ॥  
 हुआ शाहजादा दुखी लाइलाज<sup>१३</sup> । कह्या दिलमें मौत अपनी आई है आज ॥७९०॥  
 लग्या पीसने आटा रही आट कर । छले आये हाता कूँ सब दाट<sup>१४</sup> कर ॥  
 सो खलरी निवल आई दौय हात की । मुशक्कत<sup>१५</sup> लगी घोस होर रात की ॥  
 हनेल्याँ जो नाजुक<sup>१६</sup> अये पानने । नरमतार<sup>१७</sup> नरम रुई खतियान<sup>१८</sup> थे ॥  
 गढे पड रहे सस्त पीलाद हो । गई नाजुकी तन कि वरवाद हो ॥७९४॥

१ हायी, २ खडड, ३ नाभि, ४ सूये जँसी, ५ भाग, ६ घरमें, ७ आहार,  
 ८ लेकिन, ९ नापसद, १० उडेलने, ११ स्वीकार किया, १२ राजकुमार के पास,  
 १३ वेदवा, १४ डाट, १५ मेहनत, १६ कोमल, १७ कोमलतर, १८ धुनी ।

(ब) भागकर द्वीप में—

केतेक दिनकुँ ओ जंगिये नाबकार<sup>१</sup> । सुन्या ज्यों सो घरमेंत काडा बहार<sup>२</sup> ॥  
 सो बेटी कई ते<sup>३</sup> बुरा मान कर । कपट दिलमने आपने आनकर ॥  
 मँगाया तबर<sup>४</sup> एक लसडी<sup>५</sup> सँगात । दिया फिर दुखी शाहजादे के हात ॥  
 दे याराँ कुँ दुँबाल<sup>६</sup> इसके तमाम । सो लकडचा ढुलाने लग्या सुब्ह शाम ॥  
 रह्या शाहजादे केरा हाल सब । दुखों तल हुआ हाल पामाल<sup>७</sup> सब ॥  
 गये कपडे अँग के सबे फाट-फाट । परेशानगी हो लग्या वै<sup>८</sup> उचाट ॥८००॥  
 किया फिकर<sup>९</sup> ये अपने याराँके पास । “भला है जो इस ठारते जाये न्हास<sup>१०</sup> ॥८०३॥  
 जो सौ वरस अछौगे<sup>११</sup> हमें इस कने । रहेगे इसी गिरफ्तारी<sup>१२</sup> मने ॥  
 हमन पर किसे<sup>१३</sup> प्यार आसे<sup>१४</sup> न याँ । हमारा दरद दुक्ख जासे<sup>१५</sup> न याँ ॥  
 सकल एक मत होयकर एक बार । किये होडी<sup>१६</sup> यक मुस्तयद इस्तवार<sup>१७</sup> ॥८०६॥  
 दरचा के उपर ज्यों खाना हुये । सो खुशहाल सबके पराना हुये ॥८१०॥  
 सो हाडी चलाने लगे हात हात । केतेक घोस चलने लगे राते रात ॥  
 दिसे मौज<sup>१८</sup> कहीं ऊँचनीचे होर कही । ले जाता खडा वाव आ रहीं कहीं ॥  
 कही डूबते होर कही तैरते । हलाकी सेती<sup>१९</sup> फेरते फेरते ॥  
 केतेक झाड वाँ देखते मेवादार<sup>२०</sup> । हरेक झाड़ वा सों आया है बार<sup>२१</sup> ॥  
 हो खुशहाल यक दम वही दुक्ख छोड । सो मेवे लगे खावने तोड-तोड ॥  
 किये प्यास होर भूँख कूँ दफ़ा<sup>२२</sup> वाँ । हुआ दस्त<sup>२३</sup> राहत केरा<sup>२४</sup> नफ़ा वाँ ॥८१७॥  
 हुई रात देक<sup>२५</sup> उस जँजीरे मने<sup>२६</sup> । रहने काँ फिकर<sup>२७</sup> किये सब जने ॥८१९॥  
 अथा झाड वाँ यक बुलँद सायादार । सो उस झाड पर चढके बैठे हुशयार ॥८२०॥  
 अँधारा गिरद<sup>२८</sup> ज्यों हुआ ठार-ठार । जनावर निकल आये दरिया ते बार<sup>२९</sup> ॥  
 निहंगों<sup>३०</sup> केतेक पहाड वैसे गँभीर । हतीसार के माहिमा बेनजीर<sup>३१</sup> ॥८२२॥  
 केतक शकल मे ऐन<sup>३२</sup> जैसे शगाल<sup>३३</sup> । केतक बद-शकल<sup>३४</sup> रीछ केरे मिसाल ॥८२४॥

(ट) प्रातःकाल—

केतक उसमने के थे ऐसे बडे । देखे आदमी तो वही जले मरे ॥८२५॥  
 नुरानी सुबा<sup>३५</sup> का जो बारा हुआ । चँदरका झलक टुक एतारा हुआ ॥८२९॥

१. दुष्ट, २. बाहर, ३. पाससे, ४. कुल्हाड़ी, ५. रस्ती, ६. पीछे, ७. बर्बाद,  
 ८. वहाँ, ९. चिंता, १०. भाग, ११. रहेंगे, १२. बंधन, १३. किसीकी, १४. आयेगा  
 (पं० गु०), १५. जायेगा, १६. नाव, १७. बराबर, १८. लहर, १९. मृत्युसे,  
 २०. फलदार, २१. भार, लटक, २२. खतम, २३. हाथ, २४. आरामका, २५. देख,  
 २६. द्वीपमें, २७. चिंता, २८. आसपास, २९. बाहर, ३०. मगर, ३१. अद्वितीय, ३२. बिलकुल,  
 ३३. सियार, ३४. कुरूप, ३५. प्रातः।



सितारे लग डूबने ठार ठार। पँखी उठ लगे गुल करन यो पुनार ॥८३०॥  
 अरस का मुरग वाग कहने लगा। सुवा का ठंडा बाव वहने लया ॥  
 मुरज के उजाले कूँ जो खोज पाय। ॥८३३॥  
 रयन सब दरिया के देखत यो खलल<sup>१</sup>। छुपे ठार ते शाहजादा निकल ॥८३३॥  
 कहा यो कि "अव याँते जाना भला। बलायाँ ते अपसी<sup>२</sup> वचाना भला ॥८३४॥  
 सो चुन ल्यो मेवा निछल घात-घात। लिये बाँध तोशा<sup>३</sup> सुशी अपने साथ ॥  
 रवाना हुये बेग मिल सब जने। चले फिर तवकल<sup>४</sup> सो दरिया मने ॥  
 जफा होर दुख देखते ठार ठार। ॥८३५॥

## (ठ) नारी का बदी—

। यकायक होर एक जजीरे में आय ॥८४०॥  
 हुवा होर ठंडी छाँव खुश वाकी देख। लगे नीद सो नीद लेने टुक एक ॥८४२॥  
 सो ऐसे मने आप चोरो वहाँ। पिछाडे<sup>५</sup> बँदे सबके हत<sup>६</sup> जोर सो ॥  
 चले मारते लेके स्वारी सँगात। हुवा दुखल याराँ कुँ भारी सँगात ॥  
 बहरहाल इमगुल में ते भार<sup>७</sup> पड। चल्या शाहजादा कही न्हाम<sup>८</sup> कर ॥८५४॥  
 पकड शाहजादे कुँ दी बद कर। लेकर आइयाँ अपने राजे के घर ॥८५९॥  
 'सो सँफुलमलूक देखता हो वाँ। रखे थे तस्त<sup>९</sup> सूर सा दरमियाँ ॥८६०॥  
 'सो बैठी हूँ वाँ नार मकबूल<sup>१०</sup> खूब। सुरज पाद ते सूब निर्मल मरूप ॥  
 मुरक्कस<sup>११</sup> जरीना<sup>१२</sup> वो पेने है नार। खुश-आवाज<sup>१३</sup> सो देख बोली पुकार ॥  
 'कहाँ ते तुँ आया है ऐ नेकनाम। तुँ किस मुल्क का बोल तेरा मुकाम<sup>१४</sup> ॥  
 अथ<sup>१५</sup> हाल जे दुख का था जेता। सरामर<sup>१६</sup> बह्या योलकर सब वता<sup>१७</sup> ॥८६६॥  
 सो वा नार भी यो कही उसके तँ। ॥८७४॥  
 'अगर तूँ मेरा दिल करे खुश एताल<sup>१८</sup>। जतन से रखूँगी तुझे ज्यो निहाल<sup>१९</sup> ॥८७५॥  
 जो कुछ मनाई मनानेके धात<sup>२०</sup>। कबूल्या नहीं शह उस आतिश सँगात<sup>२१</sup> ॥८७८॥  
 सुनी नार सँफुलमलूक से यो बात। गुसे सात दौडाई शह पर सो हात ॥८९४॥  
 । रखी कैदसो कैद कर सातरा ॥८८६॥  
 जो यक रात आधी रात गुजरी अथे। मँग्या हासने नाहै उस बद से ॥८९०॥  
 मत्याँ<sup>२२</sup> हो पडचा है किसे नै खबर। निकल भार आया दरियाके उपर ॥८९३॥  
 यकायक तस्ता दिस्त्या यक वहाँ। निकल कर चल्या होर हुआ तब रवाँ ॥८९४॥

१ बाधा, २ अपनेको, ३ भरोसा, ४ इसी समय, ५ पीछेकी ओर, ६ था,  
 ७ बाहर, ८ भाग, ९ सिंहासन, १० पसंद, ११ मुनहरा, १२ आभूषण, १३ सुकठ,  
 १४ निवास, १५ इसके बाद, (बाद-जाँ), १६ बिल्कुल, १७ उतना, १८ अब,  
 १९ पौधा, २०. भाँति-भाँति, २१ आगके साथ, २२ मस्त।

(ड) राक्षसों के चंगुल में—

दरचा में जफ़ा होर दुख देखता । सो डुबता निकलता चल्या तैरता ॥८९६॥  
 छ महीने पछीं यक जँजीरा<sup>१</sup> दिस्या । जजीरा देखत दिलमने<sup>२</sup> यों हस्याँ ॥९००॥  
 कह्या दिल मने शाह गुर्बतसँगात<sup>३</sup> । “जजीरा यो दिसता है रोशन-सिफात<sup>४</sup> ॥९०१॥  
 मुवादा अछैगी<sup>५</sup> बलायाँ कु बल । मुवादा मुझे जाय चिंता निगल ॥  
 चल्या फिर्क<sup>६</sup> करता जजीरे कने । सो रख तख्ता उसपर लग्या फीरने ॥९०३॥  
 यकायक राकस<sup>७</sup> निकल आके भार<sup>८</sup> । सो पा बास आदम की दौडचा पुकार ॥९०५॥  
 देख्या शाहजादा बलायाँ कु बल । सो तख्ता बिसर कर चल्या वै निकल ॥९०७॥  
 जमीं<sup>९</sup> पर चल्या न्हासता न्हासता<sup>१०</sup> । . . . . . ॥९०८॥  
 जहाँ पर देखे उस बलायाँ कुँ शाह । पहाड दौडते है या बादल सियाह ॥  
 सो फिर देखता होर अधिक न्हासता । अदिक न्हाटता होर सिना फाटता ॥८१०॥  
 छ महीने पछीं न्हासतान्हासता । खडा एक जजीरे<sup>११</sup> कने आसता<sup>१२</sup> ॥६१४॥

(ढ) श्वमुखों, पृष्ठपादों और बंदरों के देश में—

जजीरे के भितराल-डरता घुस्या । वॉ सगसार<sup>१३</sup> थक दौड उस पर धरचा ॥७१९॥  
 सो सैफुलमलूक कुँ पकड ले चल्या । मो जिवका भरोसा वहाँ ते टल्या ॥७२०॥  
 सो रोता वहाँ शहर में आइया । दिल अपना तमाशे सो भूलाइया ॥९२२॥  
 सो बदशक्ल<sup>१४</sup> मूँ है कुते सारका<sup>१५</sup> । वदन उस लटकता सुवर सारका ॥  
 सो हत-पाव उनके है अद्म्याँ के सार<sup>१६</sup> । . . . . . ॥९२३॥  
 कहा शहर मामूर<sup>१७</sup> है जिन्स<sup>१८</sup> ते । न थे वहाँ कोई सगसार ते ॥९२६॥  
 ले गये सामने अपने राजा के पास । खडे रह गये देखते आसपास ॥९२८॥  
 “खिला खाना मोटा करो” कर उसे । . . . . . ॥९३२॥  
 . . . . . । रखाने कुँ फरमाइया संगदिल<sup>१९</sup> ॥९३३॥  
 रह्या बंदमें शाहजादा वहाँ । सो दिन बीस म्याने<sup>२०</sup> यकायक वहाँ ॥९३४॥  
 खदेडे जो थे राकसाँ उसके तै । जँजीरा<sup>२१</sup> ह, हरेक ढँढ आये वै<sup>२२</sup> ॥९३५॥  
 सो सगसार<sup>२३</sup> का शाह पाया खबर । बहुत राकसाँ आये कर शहर पर ॥  
 वहीं तफत होकर उठचा सगसार । किया लडने ते मुस्तअद अपना भार<sup>२४</sup> ॥९३६॥  
 हलों<sup>२५</sup> शाहजादा जो निकल्या बहार । लग्या देखने शहर मे ठार-ठार ॥९४०॥

१. द्वीप, २. दिलमें, ३. परदेशमें गया, ४. उज्ज्वल गुणोंवाला, ५. रहेगी, ६. चिंता, ७. राक्षस, ८. बाहर, ९. जमीन, १०. भागता-भागता, ११. द्वीप, १२. आकर, १३. कुत्ता, १४. कुरूप, १५. कुत्ते जैसा, १६. आदमी जैसा, १७. भरा, १८. सामान, १९. कठोरहृदय, २०. बीस दिनके बीच, २१. द्वीप, २२. वहाँ, २३. कुत्ता, २४. बाहर, २५. धीरे-धीरे ।

इलाही<sup>१</sup> जा उस पाक आशिक<sup>२</sup> उपर । मित्या यक जजीरा उसे खूबतर<sup>३</sup> ॥१५७॥  
नजर नै पड्या कोइ सगसार वाँ । निकल शहर ते वेग हूवा रवाँ ॥१४१॥  
जो उम शहर में जा देख्या हर मकाँ । कि नै आदमीजाद<sup>४</sup> का कुच निशाँ ॥१५९॥  
हरेक तरफ रोशन है वाजार चार । ॥१६०॥

भरे ह वहाँ द्वालपाये<sup>५</sup> बहुत । न हिलते न चलते<sup>६</sup> सो बैठे बहुत ॥  
सो लडने लगे द्वालपाये वहाँ । हजे आके लटपट हुये जो तथा ॥  
गले होर<sup>७</sup> हाताँ में पावाँ सो पेच । लगे मारने हात सो खीच खीच ॥  
जो मादा किये उसकूँ दौडायकर । वहाँते लगे अपने राजे के घर ॥१६४॥  
रखाने कूँ फरमाइया वद कर । सो यक महल में जा रखे वद कर ॥१६७॥  
केतक दिन उसी वद में पड रह्या । निकल जाउँ कर फिक्र यक दिन किया ॥१७०॥  
। अघी रात गई फिक्र करने मने<sup>८</sup> ॥१७१॥

सो मद पी हुये थे मती वो जेने । जो वेमुद हो आसपास मगले सोने ॥१७२॥  
वही न्हास<sup>९</sup> कर जा जंगल में पड्या । ॥१७५॥

चल्या था द्योस न्हामता<sup>१०</sup> जो तलक । जो ऐसे मने<sup>११</sup> रात आई बलग ॥१७८॥  
छुपा मूर भी शाय<sup>१२</sup> ले नूर का । सड्या आ चदा तव ले नूर<sup>१३</sup> का ॥१७९॥  
चदा चौकदन<sup>१४</sup> रस्त साधा अया<sup>१५</sup> । तनावा सितारचाँ सो वाँध्या अया ॥१८०॥  
सुरय्या<sup>१६</sup> शमाजोत<sup>१७</sup> लडकाय<sup>१८</sup> कर । जगाजोत असमान पस सरवमर<sup>१९</sup> ॥१८१॥  
सो मैफुन्मलूक रैन सगली कट्या । उसी में उजाला रयन का फुट्या ॥१८८॥  
चँदर जब निकल रवा वाँध्या तमाम । शफक<sup>२०</sup> में खडा रह किया उस सलाम ॥१८९॥  
सती हात की नारके हात भो । शफक खूा में थे उचा हात सो ॥१९१॥  
मुरग अशै<sup>२१</sup> का हाँक मारन लग्या । परिचाँ<sup>२२</sup> सो अपने विचरने लग्या ॥  
परदे लगे कूकने ठार-ठार । दरिन्दे<sup>२३</sup> चले सैर करने कुँ भार<sup>२४</sup> ॥  
रयन ज्यो जनी सुबहके पूतकूँ । मो रोशन हुआ सुबह की रूत सो ॥१९४॥  
अदिक भूक होर प्यासते तिल्लमिल । लग्या सैर करने कुँ जगले जगल ॥१९९॥  
जो तनहाँ<sup>२५</sup> जिघर चलके जाता अछै<sup>२६</sup> । उघर का जँगल जगमगाता अछै ॥१००॥  
जहाँ लग जो वाधाँ दरिन्दे अये । जहाँ लग जनावर परदे अथे<sup>२७</sup> ॥  
वरावर उमीकेमो फिरने लगे । ॥१००२॥  
जगल में जो वडै के फलफलाल<sup>२८</sup> अछै । ॥१००३॥  
सकल जायें चुन चुन के ल्याने के तै । मलिकजादे<sup>२९</sup> कुँ ला खिलाने के तै ॥१००४॥

१ भगवान्, २ पवित्र प्रेमी, ३ सुन्दर, ४ मानव, ५ पक्षी, ६ और, ७ करनेमें, ८ भाग, ९ भागता, १० इसी समय, ११ जवानो, १२ शक्ति, १३ चारो तरफ, १४ था (हता), १५ सप्तपि तारे, १६ मोमबत्ती प्रकाश, १७ लटका, १८ पुरो तौरसे, १९ लालिमा, २० स्वर्ग, २१ पक्षी, २२ श्वापद, २३ बाहर, २४ अकेला, २५ रहे, २६ थे (हते), २७ फलफलारी, २८ राजकुमार ।

सो कहने लग्या "ऐ खुदाबन्दगार" । . . . . . ॥१००९॥  
 कहाँ ते मुजे तँ कहाँ लाइया । सो ला किस बला में सँपडाइया<sup>१</sup> ॥१०१०॥  
 जिधर देखता हूँ उधर बे क्रयास<sup>२</sup> । जंगलके जानवर खडे आसपास ॥  
 गर्मू<sup>३</sup> क्यों इनन साथ दिन-रात मै । करुं इस गुँग्या साथ क्या बात मै ॥१०१२॥  
 सो एक रात अधीरात गुजरी देखत । जगत नैन<sup>४</sup> कूनीद पकडी देखत ॥१०१९॥  
 जनावर लगे ऊघने ठार ठार । पडे बेखबर सब न कोइ होशियार ॥१०२०॥  
 चल्या उस अधी रात वाँते निकल । बडे दगदगे<sup>५</sup> साथ जँगले जँगल ॥१०२२॥  
 केतेक दिनकूँ जो बाट पाया टुक एक । नजर तल पड्या दूरते शहर एक ॥१०२४॥  
 जो उस शहर का कैसरीया था नाँव । सफ़ा जा-व-जा<sup>६</sup> हो हवा ठाँव-ठाँव ॥१०२५॥  
 जो ल्या सातों अस्मान उसमे छिपाँय । तो एक कोने में उसके सब छुपके जाँय ॥१०२७॥  
 निछल<sup>७</sup> चौकदा<sup>८</sup> रस्ते बाजार जार । . . . . . ॥  
 वले<sup>९</sup> आदमीजाद<sup>१०</sup> नै कोइ वहाँ । भरे है वहाँ नादरे जाँ-तहाँ ॥  
 हकूमत<sup>११</sup> उननका च<sup>१२</sup> है ठार-ठार । उननका च चलता है वाँ कारोबार ॥१०३०॥  
 देखे शाहजादे कुँ जो सरबसर । लेगे अपने राजे कने क़ैद कर ॥  
 जो देखता है वां शाहजादा निझा<sup>१३</sup> । अजायब तरह का है ऊँचा छजा ॥  
 रखा है जडत तख्त म्याने मियाँ<sup>१४</sup> । ज़मी वाँ की दिसती है ज्यों आसमाँ ॥  
 छत्रीला जवाँ एक ज्ञानी सुगड । खुश उस तख्त उपराल बैठा है चड ॥  
 सकल वाँदरे दायरा छोडकर । खडे है अदब साथ<sup>१५</sup> हत जोड कर ॥  
 बुला बाँदरचाँ कूँ कह्या ओ जवाँ । कि कुरसी लेकर आ रखो म्याने म्याँ ॥  
 लेकर आये जो वेग कुरसी निछल<sup>१६</sup> । . . . . . ॥१०३७॥  
 मलिकजादे<sup>१७</sup> कूँ वैसला<sup>१८</sup> उस उपर । लग्या पूछने हाल उस सरबसर ॥  
 कि "ऐ जाँ, तूँ काँ ते आया है कि । कहाँ कहाँ ते किस गाँव जाता है कि ॥  
 तूँ किसका है जाया तेरा ठाँव कौन । कहाँ चाँद तेरा है असमान कौन" ॥१०४०॥  
 जो ऐसी ओ शीरी-जबानी किया । मलिकजादे कूँ गाल<sup>१९</sup> पानी किया ॥१०४३॥  
 सो एक धोरेते<sup>२०</sup> हाल अपना अथा । जो कुछ तिलमिलाना व तपना अथा ॥१०४४॥  
 सरासर कह्या खोल उस जान सों । लग्या पूछने उसकूँ फिर ज्ञान सों ॥१०४६॥  
 सो पूछ्या कि "इस राज इस ठार तूँ । मारातिब<sup>२१</sup> यो पाया है किस धात सों ॥१०४९॥  
 तुजे बाँदरचा साथ नमता है क्यों ।" . . . . . ॥१०५०॥  
 कह्या तव वो राजा कि "सुन ऐ अनीस<sup>२२</sup> । मेरा बाप था मिस्र केरा-रईस ॥

१. स्वामी, २. पहुँचाया, ३. अपार, ४. बिताऊँ, ५. लोकनेत्र, ६. भय,  
 ७. जगह-जगह, ८. निर्मल, ९. चारों तरफ, १०. लेकिन, ११. मानव, १२. शासन,  
 १३. उनका ही, १४. ध्यान कर, १५. बीचमें, १६. स-सम्मान, १७. स्वच्छ, १८. राजकुमार,  
 १९. बैठा, २०. गलाकर, २१. एक तरफसे, २२. दर्जे, २३. मित्र ।

दिया भेज मुंज करने सौदागरी । ॥१०५४॥  
 यकायक सो कस्ती<sup>१</sup> फुटी मोज मार । सो तस्ते उपर एक निकल्या बहार<sup>२</sup> ॥१०५५॥  
 वहाँ वांदरे फौज आइये । पकड मुंजे वाते यो लाइये ॥  
 सितम-जोर<sup>३</sup> सो बेसला तस्ते उपर । दिये पादशाही मुंज एस वक्त पर ॥  
 दोहाई मेरे शहर में सब फिराय । चल्या है रसम<sup>४</sup> इस वजा का मुदाय<sup>५</sup> ॥  
 जो मरता है राजा उननका कधी । करार<sup>६</sup> उनकू अछता<sup>७</sup> नही है कही ॥१०६०॥  
 उनन के अवलके महाराज की । सो वेटी है अतिशर्म होर लाज की ॥१०६२॥  
 गमू<sup>८</sup> उस सेती मैं कि हम-जिन्स<sup>९</sup> है ॥ ॥१०६३॥  
 दोनो मिलके खुशजौक<sup>१०</sup> सो खान खाय । रगीला शराव अगवानी<sup>११</sup> भोगाय ॥१०६८॥  
 पियाले लगे ऐश सो झेलने । हुये मुस्तअद<sup>१२</sup> वांदरे खलने ॥  
 अपस मे अपस ताल मडल वजाय । विकट वाजियाँके तमाशे दिखाय ॥१०७०॥  
 कुलांटचाँ उछलने लगे मेल खूव । ॥  
 हुनर-भेद<sup>१३</sup> अपना जेता था दिखाय । बहरहाल<sup>१४</sup> दोनो कुँ खुश कर हँसाय ॥  
 केतेक घोम शहजादे कू रख वाँ राज । ॥  
 पया पै<sup>१५</sup> रख इस घात<sup>१६</sup> दिन तीन चार । शिगुफ्ना<sup>१७</sup> किया माँदगी सब उतार ॥  
 समज ख्याल उमका कहा यो उसे । कि<sup>१८</sup> तूँज्यो मो आशिक हुआ है जिसे ॥१०७५॥  
 यहाँ कोइ उसते खबरदार नै । किमी मुल्क में ओ ते इजहार<sup>१९</sup> नै ॥१०७६॥  
 तवक्कल<sup>२०</sup> सो कर आपने मन कू शाद । मुलुक डूँड होर पातूँ अपनी मुराद ॥१०८०॥  
 कर इजहार अपने जेते मेहूर ते<sup>२१</sup> । रवाना किया खुश उसे शहर ते ॥१०८३॥  
 चल्या शाहजादा ले बत्या गमी । उठी सिलगकर विरह की आग भी ॥१०८८॥  
 सरासर<sup>२२</sup> सरीर आपना जालता । अँगारे अँझू<sup>२३</sup> गर्म अधिक डालता ॥१०९०॥  
 निपटे निपट जँगले जगल झाड । ॥  
 उलगता<sup>२४</sup> गया एक जजीरे कने । जो देसता है जा उस जजीरे मने<sup>२५</sup> ॥१०९२॥  
 भरे है मकोडे वहाँ ठार-ठार । हती सारके आदम्याँ खानहार ॥१०९५॥  
 झुके होने फिरते है चारो वेतै । सो खाने मगे<sup>२६</sup> उम विचारे के तै ॥  
 लग्या फिर वह जिवके डरौँ न्हासने<sup>२७</sup> । सो देख्या पँखी एक ऐसे मने<sup>२८</sup> ॥  
 बडा धड शतुरमुर्ग के सारका<sup>२९</sup> । ॥  
 किनारे पै दरिया के बैठा है आ । पकड वै लिया उसके दो पाँव जा ॥  
 चल्या उसकूँ ले मुर्ग<sup>३०</sup> उस ठार ते । उडचा होर हुआ गायब ससार ते ॥११००॥

१ नाव, २ बाहर, ३ जुल्म, जबदस्ती, ४ रवाज, ५ प्रकार, ६ सदा, ७ घय,  
 ८ होना, ९ गुजारा कल्ले, १० सजातीय, ११ मुश्चि, १२ लाल, १३ तँयार,  
 १४ गुणका रहस्य, १५ सब तरहसे, १६ लगातार, १७ भाँति, १८ उत्फुल्ल, १९ प्रकट,  
 २० भरोसा, २१ कृपासे, २२ बिल्कुल, २३ आज भी, २४ लाँघता, २५ द्वीपमें,  
 २६ चाहे, २७ भागने, २८ इसी समय, २९ सद्दश, ३० पक्षी ।

उलंगता उलंगता केतक पार<sup>१</sup> वो । चल्या एक समुन्दर<sup>२</sup> के पेलाड<sup>३</sup> वो ॥११०१॥  
 चल्या जो सो धन पाड वतन आपने । . . . . . ॥११११॥  
 वहां आपने ठार का खोज काड । . . . . . ॥१११३॥  
 उतार उस उपर शाहजादे के तै । बच्याँ पास अपने चला दौड वैड ॥१११५॥  
 अवल ते यक आदम जो वै मार कर । रख्या था जतन आपने ठार पर ॥१११६॥  
 सो टुकडे कर उस बाँट भाने<sup>४</sup> लग्या । बच्याँ ताई अपने खिलाने लग्या ॥  
 देखत शाहजादा जो उस झाडतल । पडै सो जहाँ के तहाँ हाड गल ॥  
 यकायक आया उसे भाने<sup>५</sup> एक साँप । बडा सारखा धड जमीं कूँ ले ढांप ॥  
 धुलारा<sup>६</sup> उचाता<sup>७</sup> वहाँ आइया । बच्याँ कूँ सो खाने केतै धाइया ॥११२०॥  
 चड्या झाड उपराल दे झाप<sup>८</sup> मार । सब उसके बच्याँ कूँ निगल एक बार ॥  
 लिया उस मुर्ग की मुँडी जायकर । भसम कर सुटचा<sup>९</sup> तल मने<sup>१०</sup> खायकर ॥११२२॥  
 जँगल बीच पड लाख दुश्वार सात<sup>११</sup> । लग्या न्हासने<sup>१२</sup> ताई बाकी संगत ॥११२६॥  
 . . . . . । सो उठता वा पडता हरेक ठाव में ॥११२७॥  
 अधिक प्यास होर भूक ते तिलमिले । चल आया हलौ एक हरे झाड तले ॥  
 सो वाँ एक चश्मा अथा आबका<sup>१३</sup> । खजल<sup>१४</sup> उस अँगे<sup>१५</sup> आब-गुल्लाल था ॥११२९॥  
 पड्या था वहाँ गैबका<sup>१६</sup> एक अनार । सो रँग-रस भरचा (होर) मिठा दानेदार ॥११३०॥  
 भुका था सो वै<sup>१७</sup> छील खाया उसे । रगे-रग<sup>१८</sup> मने जीव<sup>१९</sup> आया उसे ॥  
 पिया नीर चश्मे मने जायकर । किया तकिया उस झाड तल आय कर ॥  
 पंखी एक ऐसे में मुरगोल<sup>२०</sup> उठा । . . . . . ॥  
 'सुता है जवाँयो जो साहेबजमाल<sup>२१</sup> । हुआ है जो विरहे के गम मे निढाल ॥११३४॥  
 बडा कुछ बला<sup>२२</sup> एक यहाँ आयेगा । सो इस बेगुनह<sup>२३</sup> ज्वान कूँ खायेगा ॥  
 पँखा दूसरा सुन बुरा मान कर । दरीगे<sup>२४</sup> अधिक मन मने आनकर ॥  
 लग्या पूछन उसकूँयो "क्या है कना<sup>२५</sup> । कि हम बेगुनहका सो क्या है गुना" ॥११३७॥  
 कह्या वो पंखी खोल इस धात<sup>२६</sup> तब । . . . . . ॥११३८॥  
 "सुन्या हूँ कि कै<sup>२७</sup> बाग यक-रुखवन<sup>२८</sup> । है उस बाग का नाँव औतार वन ॥११४२॥  
 वहां झाड एक अन्नार का । लग्या है उस यक फल जो औतार<sup>२९</sup> का ॥११४३॥  
 सो यक जिन ने उस बाग कूँ पाइया । वो औतार फल जाय कर लाइया ॥११४७॥

१. पहाड़, २. समुद्र, ३. परे, ४. बहाने, ५. इसी समय, ६. धूला, ७. उठाता, ८. छलांग, ९. फेंका (पंजाबी), १०. नीचे, ११. कठिनाई के साथ, १२. भागने (पंजाबी), १३. पानीका, १४. लज्जा, १५. आगे, १६. दिव्य, १७. वहीं, १८. रग-रगमें, १९. सहारा, २०. कलरव, २१. सुंदर, २२. आफत, २३. निरपराध, २४. पछतावा, २५. कहना, २६. भाँति, २७. कहीं, २८. एकतरफा, २९. अद्वितीय, सर्वश्रेष्ठ ।

वले फिरके जाते वक्त नावकार<sup>१</sup>। विसर कर गया था वो औतार अनार ॥  
 उमी फल कूं यो ज्वान साया अहै। वले<sup>३</sup> भेद इसका न पाया अहै ॥११५०॥  
 विसर गया सो वो जिन आग हो। वसाने<sup>१</sup> वला उस प आता है वो ॥  
 अगर अकल कुछ होयगा इसमने<sup>५</sup>। खातम<sup>१</sup> मुलेमान का इस कने ॥  
 वो जिन फिरके जिस वक्त आयेगा। जो अतार ढूँढने के तै घायेगा ॥  
 कना<sup>१</sup> यो गजब सो<sup>१</sup> उमे हाँव कर। कि ऐ जिन कुडगीना<sup>१</sup> जिम नावकर ॥  
 वो औतार वन या मुलेमान का। दगावाज<sup>१</sup> उसके फल उम ठार का।  
 तुजे तोडने हात किम वात<sup>१०</sup> आय। तु नकाम रह रह किया हाय हाय ॥  
 मुलेमान भेजा अछै याँ मुँजे। लेकर आओ वद कर पिछौडे तुजे ॥  
 दिया है निशा<sup>११</sup> आपना मेरे हात। खडे हो न देमू<sup>११</sup> तुजे एक सात<sup>११</sup> ॥  
 ओ जिन ज्यो मुलमान केरा निशान। देवेगा तो उट जायगा वै<sup>११</sup> परान<sup>११</sup> ॥११५९॥  
 मो मैफुन्मलूक ज्यो मुना यो विचार। उडी मार कर जा छिपा एकठार ॥  
 ज्यो आया वो जिन दीड चश्मे कने। यकायक आया निक्ल भार उने ॥  
 अगूठा दिखाया उसे हाक मार। मो हैवतजदा<sup>१४</sup> होके थे-इश्तियार<sup>१४</sup> ॥

#### (ण) प्रेमिका का पता—

जो निकलया वहाते मो सैफुन्मलूक। पडचा जाके होर एक जगल में चूक ॥  
 अकेला जो आगि<sup>१०</sup> हो जाने लग्या। कठिन घाट कू चल घटाने लग्या ॥११७०॥  
 नजर<sup>१०</sup> चार तरफा<sup>१०</sup> जो दीडाइया ॥११७४॥  
 सो बेमिस्ल<sup>१</sup> नकश<sup>१</sup> रैंगारग महल। मफा<sup>११</sup> दार यकायक पडचा दिष्टतल<sup>११</sup> ॥११७५॥  
 जो नज्दीन आया खुशी माय जब। अपसते अप<sup>११</sup> खुल पडे कुफल<sup>११</sup> सब ॥११७६॥  
 दरनी<sup>११</sup> चल्या जीव<sup>११</sup> था रेगुमार। निचा<sup>११</sup> देवता जो वहाँ ठार-ठार ॥११७७॥  
 सँवारे अहै गैव<sup>११</sup> ते सब महल। बिछाने बिछाये है जाँ-ताँ निछल ॥  
 रजे ह तखत होर उसके उपर। सुता है ते मुँह ढाप कोइ वेखवर<sup>११</sup> ॥  
 न हिलता न चलता है उस ठार ते। न धरता खबर कुच्छ मसारते ॥११८०॥  
 चल्या घसके देख्या नजोक जा उमे। सो नारी है मकबूल<sup>११</sup> सोती दिसे ॥११८२॥

१ दुष्ट, २ लेकिन, ३ बैठाने, ४ इसमें, ५ अगूठी, ६ फहना, ७ गुस्सेसे,  
 ८ गदा, ९ आना बिना, १० भाति, ११ चिह्न, १२ नहीं दूगा (पजाबी), १३ साय,  
 १४ वहाँ, १५ भयभीत, १६ वेवस, १७ आगे, १८ दृष्टि, १९ चारो ओर,  
 २० अनुपम, २१ चित्र, २२ स्वच्छ, २३ दृष्टिमें, २४ अपने आप, २५ ताला,  
 २६ भीतर, २७ खुशी, २८ ध्यानकर, २९ देवानुभाव, ३० बेहोश, ३१ पसद,  
 मनोहर ।

न उस सार सूरत मन हूर फाँन पत्ता तजल्ला तता सूर न ॥  
 एके बार बैठा नजीक बेकरार<sup>१</sup>। मगर<sup>२</sup> नीद ते होयगी<sup>३</sup> कर होशियार ॥१९॥  
 सो हरगिज वो हुशियार होती नही। मुझे त्यों च<sup>४</sup> दिसती है सोती नही ॥  
 डरचा होर मँगा<sup>५</sup> फिरके<sup>६</sup> जाने वहीं। सो देख्या पटी एक सिराने वहीं ॥  
 उधार<sup>७</sup> वो पटी देखता है जो पर। सो बाँध्या है नीद कोइ उसके ऊपर ॥  
 सुटचा<sup>८</sup> फाड जों टुकडे कर वो पटी<sup>९</sup>। वह मकबूल<sup>१०</sup> यकायक वही जाग उठी ॥  
 अँगे<sup>११</sup> हो किया शाहजादा सलाम। मुख उसका देखत जौक<sup>१२</sup> पाया तमाम<sup>१३</sup> ॥  
 सो हैरान हो बैठी वो उस घडी। अधर खोल ज्यों फूलकी पाँखुडी<sup>१४</sup> ॥११९०॥  
 कही यों कि “यां आदमीजाद<sup>१५</sup> कौन। . . . . . ॥  
 सही कह कि तू कौन किस ठार का। खबर क्यों<sup>१६</sup> लिया है तु इस ठार का” ॥११९२॥  
 तब उस शाहजादा उठा बोलकर। हककत<sup>१७</sup> सो अपना कह्या खोलकर ॥११९४॥  
 “ऐ नार, किस्ता<sup>१८</sup> है मेरा दर्राज<sup>१९</sup>। कहूँगा सो सुनने कुँ आसे<sup>२०</sup> न बाज ॥  
 हुये वरस तेरह मुझे रात-दिन। जो फिरता हूँ बीताज<sup>२१</sup> सर ले कठिन<sup>२२</sup> ॥  
 बलायाँ<sup>२३</sup> बहुत सोसियाँ<sup>२४</sup> विरह क्या। . . . . . ॥  
 हुआ इश्कते हाल सब पायमाल<sup>२५</sup>। न जानूँ होवनहार है क्यों इताल ॥  
 बदीयुल्-जमाल एक है शहपरी<sup>२६</sup>। वो सूरत पै अपने मुजे यो करी ॥  
 कहूँ क्या तुजे ऐ शाह शक्कर-लबा<sup>२७</sup>। कि यों लटपटाती है मेरी जब ॥१२००॥  
 न वो मिलती है न गुलिस्ताँ-अरम। यों उस ताँई खोता हूँ अपना जनम ॥  
 तले धरतरी<sup>२८</sup> होर उपर आसमाँ। दुखों पीस जाता हूँ म्यानेमियाँ<sup>२९</sup> ॥१२०२॥  
 यकायक अल्ला जो ल्याया मुँजे। सो इस महल में आज पाया तुजे ॥१२०५॥  
 तेरा हाल होर वजा<sup>३०</sup> क्या है सो बोल। छुपा तूँ न मुजते दिल खोल खोल” ॥  
 वो अँमृत के गुन की सगी मेहरबान। फरासत<sup>३१</sup> सोँ उसका जल्यो दिल पिछान ॥  
 कही यों कि “बेटी हूँ मै लाज की। सिरन्दीप<sup>३२</sup> के मुल्क के राज की ॥  
 हमे<sup>३३</sup> दरअसल<sup>३४</sup> तीन भानाँ<sup>३५</sup> अथ्याँ<sup>३६</sup>। सो एक दिन रजा<sup>३७</sup> बाप की ले वत्याँ<sup>३८</sup> ॥  
 गिया बाग में सैर करने केतै। लग्याँ तैरने हौजखाने<sup>३९</sup> में वे<sup>४०</sup> ॥१२१०॥  
 सो दरहाल<sup>४१</sup> वहाँ एक वारा<sup>४२</sup> उठचा। चमन दर चमन<sup>४३</sup> सब धुलाराँ उठचा ॥

- 
१. बैसा, २. रूपसे, ३. कहीं, ४. तेजवाला, ५. अधीर, ६. कि, ७. जागी,  
 ८. बैसी ही, ९. चाहा, १०. लौटकर, ११. उठा, १२. फेंका (पंजाबी), १३. पट्टी,  
 १४. प्यारी, १५. आगे, १६. प्रसन्नता, १७. पूर्ण, १८. पंखुड़ी, १९. मानव, २०. कैसे,  
 २१. वास्तविकता, २२. कथा, २३. लंबी, २४. आवेगी, २५. दुःख, चिन्ता,  
 २६. कठोर, २७. आफतें, २८. सहा, २९. बर्बाद, ३०. परियोंकी रानी, ३१. मीठे  
 ओठवाजी, ३२. धरित्री, ३३. बीचमे, ३४. डंग, ३५. छुट्टी, ३६. लंका, सिंहलद्वीप, ३७. हम  
 सब, ३८. वस्तुतः, ३९. बहिन, ४०. थीं, ४१. अनुमति, ४२. वहाँ, ४३. कुंडगूह,  
 ४४. वहीं, ४५. उसी समय, ४६. तूफान, ४७. चमने-चमन ।



सो उम वूल' मे ते जनावर वडा। उचाकर मुजे ले गया वे उडा ॥  
 हवा पर चल्या दीड पॅन मार-मार। रख्या मंजकूँ ल्याकर सो इम ठार उतार ॥  
 अँगे' हो मेरे आ किया वै' मलाम। कह्या "डर नको ऐ चंचल नेकनाम ॥  
 कि आधिक' हूँ मैं तुज उत्तम माह' का। कि वेटा हूँ परियाँ के मैं शाह का ॥  
 वहन-भनइ जो यक मुँजे आज है। वह दरियाव बुल्लम' केरा राज है ॥  
 इसी महलभ्याने' है मेरा मुकाम'। न मेरा है यो वल्लि तेरा मुकाम ॥  
 रख्या यो लेकर आके इस ठार मुँज। किया यी बला में गिरिफनार' मुँज ॥  
 यो जागा जजीरा है जस्फद वा। फगह्वम्श होर लाग्ग आनन्द वा ॥  
 महीने कुँ यकवार आता है वो। मुँजे देख फिर फिर के जाता है वो ॥१२२०॥  
 मैं उमका बह्या न सुनूँ देखकर' गुसा' बेनिहायत' पकड मुँज उपर ॥  
 मंतर सो मेरी नीद कूँ बाव आय। अवेली मुँज इम महल में छोड जाय ॥  
 सो तू जिम पटी कूँ सुटवा' फोडकर। वेंघ्या या मेरी नीद उसके उपर ॥  
 इमी वजा' मो वरस वाग्ह हुये। मेरे घोम चुपके जवारा' हुये ॥१२२४॥  
 न कै' जा घोस अड' मेरे पास तूँ। न को ल्याव दिलमें बसवार' तूँ ॥१२२७॥  
 वो आसे न अजहूँ न हो धावरा'। अझूँ घोस वाकी है यक सातरा' ॥  
 देशाहजाद कुँ धीर' इस घात' मो। उठी वोल फिर यो मिठी बात सो ॥  
 कि "इस वक्त पर मैं तुजे ऐ जवाँ। तेरी मोहनीकी जो देउंगी निशा' ॥१२३०॥  
 कहूँगी वो आगे अरमकी खबर। तो क्या अँपडेगा' मुँजकुँ इमका समर' ॥  
 वो गुनवत सखी जो कही अपनी बात। खुशी सो फुगी' शाहजादे की जात' ॥  
 अदव की रविग' साथ सिर मुँह पर धर। दुआ' होर मना' उसकूँ लै घात' कर ॥  
 बह्या या कि "ऐ मोहिनी, नेकनाम। फिदा' तुज योने जीव मेरा तमाम" ॥१२३४॥  
 लगी खोल कहनेकूँ "सुन ऐ जवान। कि मुँज पीठवी थी नही एव भान' ॥१२४२॥  
 हमें तीन भानी' में वो सूव' थी। सो बेमिस्ल आलम में' महबूब थी ॥  
 तन उसका निछल' मुख मकाता' अछै'। अँपर मुरक' का वास आता अछै ॥१२४४॥  
 मो ले यक दिन मगात हमनाकुँ भाइ। खुशी साथ यक बाग में लेकर आइ ॥  
 केनेक घोम वहाँ दिभानी' किये। अधिक जदन वाँ सुसरवानी' किये ॥

१ घूल, २ आगे, ३ वहाँ, ४ प्रेमी, ५ चद्रमा, ६ तालसागर, ७ महलमें,  
 ८ निवास, ९ पकड, १० क्रोध, ११ अत्यत, १२ फँका (प०), १३ इसी प्रकार,  
 १४ बर्बाद, १५ नहीं (मराठी), १६ रह, १७ सदेह, १८ घबडाया, १९ थोडा,  
 २० धँपे, २१ भाँति, २२ चिल्ला, पता, २३ मिलेगा, २४ फल, २५ फूली,  
 २६ व्यथित, २७ सम्मानके ढग, २८ आशीर्वाद, २९ प्रशंसा, ३० बहुत भाँति,  
 ३१ नौछावर, ३२ वहन, ३३ वहनें, ३४ सुदर, ३५ दुनिया, ३६ निर्मल, ३७ महकता,  
 ३८ रहे, ३९ अवर-कस्तूरी, ४० हमको, ४१ प्रसन्नता, ४२ राजसी ।

यकाएक औरत इस उस ठार पर। हरे झाड पर ते उतर आयकर ॥  
 अँगे हो मेरी माँ कुँ कीना<sup>१</sup> इलाम। उठी बोल इस धात<sup>२</sup> हो हम-कलाम<sup>३</sup> ॥  
 कि 'परियाँ के राजा की औरत हूँ मैं। देखन आइ हूँ तेरी बेटीके तैं ॥१२५०॥  
 सकल शहपरयाँ<sup>४</sup> में मेरा नाँव है। मेरा गुलस्ताने-अरम ठाँव है ॥  
 जो है मुँज कने एक बेटी नन्ही। सो है वो मेरे नैनकी रोशनी ॥  
 रखा उसका है नाँव बदीयुल्जमाल। है उस साथ मेरा मुहब्बत कमाल<sup>५</sup> ॥  
 बहुत दिन ते अच्छी<sup>६</sup> हूँ इस ठार मैं। अधिक खुश किये हूँ यो गुलजार<sup>७</sup> मैं ॥  
 तुझे देख मैं ज़ौक पर जौक<sup>८</sup> पाइ। अछो<sup>९</sup> क्रायम<sup>१०</sup> यो आजते आनाइ<sup>११</sup> ॥  
 यो बेटी सो तेरी बेटी है मेरी। यो बेटी मेरी सो यो बेटी तेरी ॥  
 पिला प्यारते दूद तेरा इसे। कि मैं देउँगी दूध मेरा उसे ॥  
 कर इस वजा<sup>१२</sup> सो बात एकसकुँ एक। रहे दो जने मिल अपस एकोँ एक ॥  
 बड़ी होगयी वो चैचल आज कूँ। अछैगी<sup>१३</sup> सुरजते निछल<sup>१४</sup> आज कूँ ॥१२६०॥  
 मैं अपने नगर वीच अच्छी जो आज। तो करती हरेका वजाँ तेरा इलाज<sup>१५</sup> ॥१२६२॥  
 सो शाहजादा सुन कर हुआ यों खुशहाल<sup>१६</sup>। कह्या सुन "ऐ रोशन<sup>१७</sup> तँ साहेब-  
 जमाल<sup>१८</sup> ॥१२६४॥

कि मैं अर्ज<sup>१९</sup> करने भी मँगता<sup>२०</sup> हूँ तुज"। . . . . . ॥१२६५॥  
 कही मोहनी "बोल क्या है सो मुँज। कहूँगी मैं उस बात का जाब<sup>२१</sup> तुज" ॥१२६७॥  
 कहा "जब वो देव आवे इस ठार पर। सो तूँ पूछले उसके जिव की खबर ॥  
 मेरा जीव तुज हाथ में है यहाँ। तेरा जीव मालूम नै मुँज कहाँ ॥  
 यो खूब<sup>२२</sup> खबर उसते ले मुजकना<sup>२३</sup>। तो मैं कर सुटूँ उसकुँ तिलमें<sup>२४</sup> फ़ना<sup>२५</sup>" ॥७०॥१२॥  
 यो सुन मोहिनी कइ<sup>२६</sup> शकरलब<sup>२७</sup> कुँ खोल। "लिये हूँ खबर उसते कहती हूँ खोल ॥  
 कि यकूँ घोस मुँजकूँ रख्या सो परा<sup>२८</sup>। लग्या मुँज सों बाताँ करन बहुतेरा ॥  
 कह्या याँ कि तुज बिन नही कोइ मुँज।' . . . . . ॥१२७३॥  
 मैं इस बातकूँ जाव दी यों फिरा। . . . . . ॥१२७५॥  
 'तेरे हाथ में है मेरा जिव तो यहाँ। वले<sup>२९</sup> कह मुँजे है तेरा जीव काँ' ॥१२७७॥  
 सुन्या मुँज जवाँ<sup>३०</sup> ते ओ यो बात ज्यों। उठ्या बोल कर फेर मुँज साथ यों ॥१२८१॥  
 'मैं ऐ मोहिनो तुज ते अब क्या छिपाऊँ। कता हूँ मेरा जीव रहता सो ठाँव ॥१२८२॥  
 कि है एक संदूक शीशे केरा। सो उसके दरनी<sup>३१</sup> अहै जिव मेरा ॥१२८४॥  
 वो संदूक सो है दर्या के भीतर। अंगूठी सुलेमान की कोई अगर ॥

१. किया (पं०), २. भाँति, ३. संभाषण, ४. परियाँ, ५. पूर्ण, ६. रहती,  
 ७. फुलवाड़ी, ८. प्रसन्न पर प्रसन्न, ९. रहो, १०. स्थायी, ११. मित्रता, १२. ढंग,  
 १३. रहेगी, १४. निर्मल, १५. दवा, १६. प्रसन्न, १७. प्रकाशमान, १८. सुंदरी,  
 १९. निवेदन, २०. चाहता, २१. जवाब, २२. अच्छी, २३. मेरे पास, २४. पलमें,  
 २५. नाश, २६. कही, २७. शक्कर जैसे मीठे ओठ, २८. परीका पुरुष, २९. लेकिन,  
 ३०. जीभ, ३१. भीतर।

दर्या के नजदीक जाके दिखलायेगा । निकल ओ सँगाते च' उपर आयेगा" ॥१२८६॥  
 मुन्या शाहजादा जो इस बात कूँ । कहया खुश हो उम पद्मिनीजात' कूँ ॥११२८८॥  
 कि "ऐ मोहिनी पाक दामान' की । अगूठी तो हजरत सुलेमान की ॥  
 मेरे पास हाजिर' है दब मे इताल'" ॥१२९०॥  
 सुलेमान की उम अगूठी कूँ देख । हुये शाद भीतेच' एकस ते एक ॥१२९१॥  
 पकड हाथ वे' वाटमार' हुये । ॥१२९२॥  
 एकस कूँ यकस' जल्द हो पावमार'" । शिताबी सेती'" आय दरिया-किनार ॥१२९३॥  
 दिखाये दरिया कूँ अगूठी निछल'" । सो दरहाल'" मद्दक आया निकल ॥  
 जो एक वारगी पाय दोनो जने । उचा'" कर लेकर आये दोनो जने ॥  
 वो सद्दक ज्यो देखिये खोलकर । जनावर अथा एक उमके भितर ॥  
 सुटे'" उस जानावर की मंडी मरोड । कि चरा मद्दक कूँ तोड-फोड ॥  
 सो दरहाल पैदा हुआ यक गुवार'" । वरसने लगा मेह'" लोहु वेशुमार ॥  
 पहाड मारखा सिर यक उपराल ते'" । पड़या मो हिल्या वरती पाताल ते ॥१३००॥  
 खुदा इस बला ते किया ज्यो खलास । सो चलने कूँ वारें किये फिर खाम'" ॥१३०२॥  
 दोनो वे' न्हनी एक होडी'" किये । अजायब केतक देखते झाडपाड ॥१३०६॥  
 छ महीने तलक टुव जफा'" देय-देव । उरंगते अजायब'" जँजीरे'" बनेक ॥१३०७॥  
 हो माँदे बहुत एक जजीरे मे आय । केतक घोम'" रह (के) वहाँ अमून पाय ॥१३०९॥

(त) अच्छे दिन—

मो यक दिन निकल शाहजादा वहाँ । हलो'" मँर करने लग्या जान थान ॥१३१२॥  
 सो जादम केतक वा पड़े दृष्टितल'" । यकायक खुशी आइ मन में उबल ॥१३१३॥  
 सो नजदीक जा मवकूँ कीता सलाम । ॥१३१४॥

। मिठे यक ठार वैठे मो ना फाँक'" वै ॥१३१५॥

हुये यकजहत'" साथ ज्यो हम-कलाम'" । मो वोल्या उनन घोरे'" दुख अपना  
 तमाम ॥१३१७॥

जो यकवारगी' लोग उस ठार के । सुने किस्से उसके होर उमनार के ॥१३१९॥  
 कहे यो कि "ओ जगमगाते शमे'" । ॥१३२०॥

है बेटो हमन राज के भाइ की । जनी'" भाई जीती उन जाई की ॥

मिरदीप'" के वादशाही सँगात । है उसका जीता बाप हाली-हयता'" ॥१३२२॥

१ साथ ही, २ पद्मिनी की जाति, ३ सती, ४ मौजूद, ५ इस समय,  
 ६ बहुत ही, ७ वहाँ, ८ बटोही, ९ एकके ऊपर एक, १० पाँवसे, ११ जल्दीसे,  
 १२ निमल, १३ इसी समय, १४ उठा, १५ फँके (पजाबी), १६ गर्द, १७ मोघ,  
 १८ ऊपर से, १९ विशेष खयाल, २० वहाँ, २१ नाव, २२ जुल्म, २३ अब्धुत,  
 २४ द्वीप, २५ दिवस, २६ घोरे-घोरे, २७ दृष्टिमें, २८ फरक, २९ एक ढग,  
 ३० सभायण, ३१ उनके पास, ३२ एक ही बार, ३३ मोमवत्ती, ३४ जननी,  
 ३५ सरन्दीप, सिंहलद्वीप, ३६ जिदा ।

चचा उस न्हनी का सो एके च<sup>१</sup> है । वो वासित कते<sup>२</sup> सो नगर बीच है ॥  
नीका नाँव उसका (है) ताजुल्मुलूक । . . . . . ॥  
हमें सब है रैयत<sup>३</sup> उसीके तमाम<sup>४</sup> । यहाँ ते उसीका है आगे मुकाम<sup>५</sup> ॥  
ज्यों ऐसी खबर खल्क<sup>६</sup> ते पाइया । सो दौड़ा सहेली कने आइया ॥  
कहा खोल दर-हाल<sup>७</sup> अहवाल उसे । खबर दे किया भौत खुशहाल उसे ॥  
फरागत<sup>८</sup> के मिल दोनों होडीपै चढ़ । . . . . . ॥  
चले शहर वासित कदना<sup>९</sup> जौक सू<sup>१०</sup> । लगे वाट चलने कूँ अति शौक<sup>११</sup> सूँ ॥१३२९॥  
केतक दिन पछी शहर वासित कूँ पाय । . . . . . ॥१३३१॥  
जो नजदीक उस शहर के खास बाग । अथा<sup>१२</sup> सो रहे वाँ लगे देख चिराग ॥  
रयन जाग रब्बी<sup>१३</sup> के फिरमान<sup>१४</sup> सों । जो आया निकल सूर आसमान सों ॥  
सो उस शहर का बेबदल<sup>१५</sup> शहरयार<sup>१६</sup> । नेकोकार<sup>१७</sup> ताजुल्मुलूक नामदार ॥  
उसी बाग में खुम्रवीदाब<sup>१८</sup> सों । करन सैर आया बड़े लाब<sup>१९</sup> सों ॥  
सो नागह<sup>२०</sup> नजर उसकी उस ठार पर । पड़ी शाहजादे के दीदार<sup>२१</sup> पर ॥  
सो नैना कुँ उसके लगा सुबक<sup>२२</sup> भौत । . . . . . ॥  
बड़ा बख्तबर<sup>२३</sup> कोइ है कर पिछान । नजिक बैसला (करके) उस 'कूँ' कहया ॥  
“कहो काँ ते आया ऐ जवान तूँ । सो मँगता<sup>२४</sup> है जाने कुँ किस ठाँव तू ॥  
क्यों आना हुआ याँ तेरा बोल मुँज । जो कुछ है तेरा माजरा<sup>२५</sup> खोल मुँज” ॥१३४०॥  
. . . . . । लगा बोलने हाल सैफुल्मुलूक ॥  
कि “ऐ शाह गमगी<sup>२६</sup> हो संसार ते । मै आया यहाँ मिस्र के शार<sup>२७</sup> ते ॥१३४२॥  
कि लै<sup>२८</sup> दिनते फिरता हूँ गुर्वत<sup>२९</sup> मने । जनम सब गँवाया हूँ शिद्दत<sup>३०</sup> मने ॥  
कि होसे<sup>३१</sup> न मुजसा दुख्यारा कहीं । . . . . . ॥१३४५॥  
सुन्या यो जो ताजुल्मुलूक शहनवल<sup>३२</sup> । . . . . . ॥१३५२॥  
कि बोलया जबाँ खोल “सुन ऐ जवाँ । नको<sup>३३</sup> डर कि अल्लाह है मेहरबाँ ॥१३५३॥  
कि गमनाक<sup>३४</sup> हूँ मै कि लै सालते । . . . . . ॥  
भतीजी मेरी एक साहेबजमाल<sup>३५</sup> । गँवाई गई सो हुये बारह साल ॥  
दुख उसका करूँ मुँजकूँ छाती नहीं । कि अजा नी वो कै पाई जाती नहीं ॥१३५६॥  
मुई है कि जीती नहीं कुछ खबर । बड़ा दुख है यो मुँज कलेजे भितर” ॥१३५८॥

१. एक ही, २. कहते, ३. प्रजा, ४. सारे, ५. निवास, ६. दुनिया, ७. उसी समय, ८. छुट्टी, ९. के पास, १०. शौकसे, ११. प्रसन्नता, १२. था, १३. भगवान्, १४. हुकम, १५. अनमोल, १६. राजा, १७. सुकर्मा, १८. राजसी ठाट, १९. लाभ, २०. यकायक, २१. दर्शन, २२. हल्का, २३. भाग्यशाली, २४. चाहता, २५. हालत, २६. शोकाकुल, २७. शहर, २८. कई, २९. परदेश, ३०. दुःखों, ३१. होगा, ३२. युवराज, तरुणशाह, ३३. नहीं, ३४. रंजीदा, ३५. सुंदर ।

कहया "दुख न कर ऐ सुखी राज तू । खुशी कर यो दुख छोड दे आज तू ॥१३६१॥  
 कि तेरी भतीजी कुँ ल्याया हूँ मैं । कौ बल ठार ते उमकुँ पाया हूँ मैं ॥  
 सो बयो उसके लेखे सगा भाइ हूँ ।" ॥१३६३॥  
 दरद दुपसो हम-वर्जा गुजरान वात । मिल एकसकुँ एक हात म्याने ले हात ॥१३६७॥  
 चले इक्षितयाकी सो दोनो जने । वही आये उस पाकदामन कने ॥१३६८॥  
 देह्या ज्यो भनीजीकुँ आपे चचा । सो पुतली कर अँसियाँ की लेता उचा ॥  
 गले लाग अडडा के रोने लग्या । फिदा उमके उपराल होने लग्या ॥१३७०॥  
 दिल उमका बहुत घात सो हात ले । कलेजे के टुकडे कुँ सगात ले ॥  
 लेकर आइया घर में ताजीम साथे । ॥१३७२॥  
 दिया भेज कासिद कुँ वी भाइ पाम । मेहगवान उसकी जनी माइ पाम ॥१३७५॥  
 शिराँदील का चादशाह वखवर १ । सुया अपनि बेटो केरा ज्यो खबर ॥१३७७॥  
 एता कुछ हुआ जो कि बोल्या न जाय । ॥  
 लगी झडने अवर ते रहमत १ कि फूह । जलनहार सीने कुँ ठडक हुई ॥१३७५॥

#### ( य ) नये और पुराने मित्रो का समागम—

भया १ बन्ल का बाब चौबेर ते १ । सुया वाग उनका बिल्या सीरते १ ॥१३८०॥  
 हुआ फहं रोजी १ जनी माइकुँ । तमाम उमके भाना १ कुँ और भाइ वू १ ॥१३८१॥  
 अजीब १ अजमद अपनी बेटो के ते । बुला भेजनेका किया फिक्र वै ॥  
 बुला भेजने उस उतम जाइ १ कू । किया मुस्तइद १ उसकेरे भाइ वू १ ॥१३८३॥  
 जो मुश्ताक १ हो भाइ ल्याने चला । सगी भैन केते १ बुलाने चला ॥  
 चचा के नगर बीच ज्यो आइया । सो देख उस चचा जीव कर पाइया ॥१३८७॥  
 हज्जार आरजू साथ १ दोनो मिले । सुशी के कल्याँ हर तरफते गिले ॥  
 बोल्या घरकुँ त्या सो मिले माइ भान । यकम कुँ यकस १ दे लिये जीवदान ॥  
 जो कुछ अया १ अपाने दिलमने १ । मुटे वाड १ सीन्याँ मे ते तिलमने १ ॥१३९०॥  
 लग्या दिलकुँ हम भान हम भाइ वी । चौफिर कर १ जने पेटते भाइ की ॥  
 गम १ एक सातरा ला १ इश्त १ सँगात । हुआ ले चचा होर चचानी के हात ॥  
 निकल वाते सगात ले भान कू १ । चल्या मिलके सँफुलमलूक जान १ सू ॥

१ एकको एक, २ हायमें, ३ उत्कठा से, ४ सतीके पास, ५ ज्यों ही,  
 ६ अररा, ७ नौछावर, ८ भाँतिते, ९ सम्मान-सहित, १० झूत, ११ सिहलद्वीप,  
 १२ भाग्यवान्, १३ दया, १४ हुआ (अव), १५ चारो तरफसे, १६ सिरसे,  
 १७ सुखकी रोजी, १८ वहनें, १९ प्रिय, २० इज्जतदार, २१ तैयार, २२ इच्छुक,  
 २३ वहनको, २४ अभिलाषाओंके साथ, २५ एकको एक, २६ था, २७ दिलमें,  
 २८ निकाल फेंका, २९ पलमें, ३० वहन, ३१ चारो ओरसे, ३२ रज, ३३ एक  
 क्षणको, ३४ आनद, ३५ वहनको, ३६ प्रिय।

पंथे पंथ तीनों कँथे खोलते । गमाते वकत हा किस्से बोलते ॥  
 सिरां दीप के आये ज्यों वो नज़ीक । उमस पा जनी<sup>१</sup> बाप खुश हो अधीक ॥  
 निकल घरते लाख इतिजारी सेती<sup>२</sup> । सो दौड्या वहाँ बेकरारी सेती<sup>३</sup> ॥  
 जिगरगोशा<sup>४</sup> कूँ अपने ज्यों पाइया । छतर कर अपस उसके सिर छाइया ॥  
 सीने सों लिया उस परीचेह<sup>५</sup> कूँ । उने उन लगाया मेहर पर मेहर<sup>६</sup> कूँ ॥  
 ज्यों आया गया सो रतन हातमें । नवाजीव आया त्यो हुआ जात मे ॥१४००॥  
 बड़े दबदवे साथ<sup>७</sup> ल्याया उसे । सो फुलनीर<sup>८</sup> सों मुख धुलाया उसे ॥  
 मिल्या दिलसों सैफुल्मलूक जान सों । हुआ आसमाँ उस जमीं भान<sup>९</sup> कूँ ॥१४०१॥

(द) बिछड़ा मित्र मिला—

कि यक द्योस सैफुल्मलूक शह-सवार<sup>१०</sup> । निकल आइया भार<sup>११</sup> खेलन शिकार ॥१४०७॥  
 यकायकक बाजारमे यक जवान । नजरतल<sup>१२</sup> पड्या जार<sup>१३</sup> होर नातवाँ ॥१४०८॥  
 किया याद साअद कुँ उस देखकर । अँझू<sup>१४</sup> लाइया दुक्खके नैनभर ॥१४१०॥  
 अपसमें अपे भाइया<sup>१५</sup> सर्द उस । किया अपने मन मे गम<sup>१६</sup> बेकयास<sup>१७</sup> ॥१४११॥  
 कहया अपने लोगों कुँ जा उसकुँ लाव । अपे आपे लग घर लेजा बेसलाव ॥  
 उसी घात जा उस बुला लाइये । लेजा एक जागे पे बसलाइये ॥१४१३॥  
 कि ज्यों उस मुबारक सवारी सों फिर<sup>१८</sup> । ज्यों आया शिताबी<sup>१९</sup> सों अपने मँदिर ॥  
 किया याद आते च उस जान<sup>२०</sup> कूँ । बोलाया नजीक उस परेशान कूँ ॥  
 शफ़क्कत<sup>२१</sup> जो उसकी गरीबीपैआइ । कहया “कौन है तूँ सो मुँज बोल भाइ ॥  
 सो वै वो परेशान जल आह भार । उठ्या बोल . . . . . ॥  
 “कहूँ अगर मै मेरे दर्द कूँ । तो ताकत न रहसे<sup>२२</sup> किसी मर्द कूँ ॥  
 भर्या है सिना पूर उस दुख संगत । . . . . . ॥  
 मेरा यार यक शाहजादा अथा<sup>२३</sup> । वो मिलता तो मुँज दुख न होता एता” ॥१४२०॥  
 जो अपनी गरीबी वो बोल्या । सो वो शाहजादा उतम नेक नाम ॥१४३०॥  
 . . . . . । गले ला उसे आँख मे आब<sup>२४</sup> ल्या ॥  
 कहा यों कि “ऐ यार अब छोड़ दुख । तेरा यार सो मै हूँ सैफुल्मलूक’ ॥१४३२॥  
 मिले देख यक जीव के दोइ यार । हुआ खुश सिरांदीप का शहरयार ॥१४३७॥

१. जनक, २. प्रतीक्षा मे, ३. अधीरता मे, ४. कलेजे के टुकड़े, ५. अप्सरा-  
 मुखी, ६. दया, मुहब्बत, ७. सम्मान के साथ, ८. गुलाबजल, ९. बहन, १०. असवार,  
 ११. बाहर, १२. दृष्टि में, १३. दुःखी, १४. आँसू (पं०), १५. डाला (पं०), १६. दुःख,  
 १७. अपरिमित, १८. फिर, १९. जल्दी, २०. प्यारी, २१. मुहब्बत, २२. रहेगा (पं०),  
 २३. था, २४. पानी ।

## (घ) प्रियतमा का दर्शन—

सआदत<sup>१</sup> के ज्यो घोम अगे<sup>२</sup> आय । बखत<sup>३</sup> रोशनाई<sup>४</sup> सो झलकाय ॥१४६५॥  
 मुलकसनवती<sup>५</sup> धन वदीयुलजमाल । यकायक एक दिन गियाले तियाल<sup>६</sup> ॥१४६६॥  
 सिरादीप के राज के घर कुँ आई । मो गुम हुई शाहजादी कुँ पाइ १ ॥१४६८॥  
 सगी माई<sup>७</sup> कर जानती थी अवल<sup>८</sup> । बडी कर उसे मानती थी अवल ॥१४६९॥  
 कही "ऐ सगातिन ऐते घोस तूँ । अयी<sup>९</sup> किम बजा<sup>१०</sup> होर किस भससू<sup>११</sup> ॥ १४७१॥  
 सो वो शाहजादी उठी बोल यो । ॥१४७४॥

कि "ऐ मोहिनी मन की साहेबजमाल<sup>१२</sup> । जो तेरा मुहब्वत है मुजगो कमाल<sup>१३</sup> ॥  
 सदा यो मुहब्वत सो कायम अछो । झमकता तेरा हुस्न<sup>१४</sup> दायम<sup>१५</sup> अछो<sup>१६</sup> ॥  
 जो मैं हात में उस बला के हुलग<sup>१७</sup> । गिरिपतार होकर जो थी आज लग ॥  
 यकायक उस ठार पत्रदगार<sup>१८</sup> । ॥

। दिया भेज एक आदमीजाद<sup>१९</sup> कू ॥

सो आ भार<sup>२०</sup> काइया मुंज उस ठार ते । हूँ शमिदी<sup>२१</sup> मैं उमके उपकारते<sup>२२</sup> ॥१४८०॥  
 सुन इस बात कू कइ<sup>२३</sup> वदीयुलजमाल । कि 'आदम कुँ आना था चा महाल<sup>२४</sup> ॥१४८३॥  
 मो किस घात<sup>२५</sup> उम ठार वो आइया । न थी वाट सो वाट क्यों पाइया<sup>२६</sup> ॥१४८४॥  
 कही शाहजादी कि "ए मोहिनी । बडी बात है यो नहीं कुछ न्हनी ॥१४८६॥  
 दोनो मिलके चल एव गुलशन<sup>२७</sup> में जाँय । दो वार्ता करे बवत अपना गर्माँय<sup>२८</sup> ॥१४८८॥

## (न) उद्यान-घणन—

कर इस घात सेती खबरदार उसे । ले जाने मोंगी<sup>१</sup> बीच गुलजार<sup>२</sup> उसे ॥१४९०॥  
 सो चमने चमन<sup>३</sup> गश्त<sup>४</sup> करने लग्या । कल्याँ चून-चून गोद भरते लग्या ॥१४९४॥  
 कहुँ वाके चमना कुँ, मैं क्यों चमन । कि था हर चमन साफ यकायक गान ॥  
 भर अमृत सो चमनो के म्याने<sup>५</sup> तमाम । जडत<sup>६</sup> के अये<sup>७</sup> होजखाने<sup>८</sup> तमाम ॥  
 वन वन विरर<sup>९</sup> लहलहाते अये । ॥  
 पवन झूले खा फूल की डाल हिल । सो पडते अये फूठ हर शाड तल ॥  
 मगर<sup>१०</sup> आ अँवर के चित्तारे तमाम<sup>११</sup> । चमन में विछाये थे तारे तमाम ॥

१ सुकर्म, २ आगे, ३ भाग्य, ४ प्रकाश, ५ विचार, ६ बहन, ७ प्रथम, ८ यो,  
 ९ डग, १० सुदरी, ११ पूण, १२ सौन्दर्य, १३ सदा, १४ रहो, १५ नजदीक,  
 १६ पालक (भगवान्), १७ मानव, १८ वाहर, १९ लज्जित, २० कहीं, २१ समब,  
 २२ भाँति, २३ फुलवाडी, २४ चाहा, २५ वाग, २६ चमनही, २७ टहलना, २८ बागोंमें,  
 २९ जटित, ३० ये, ३१ फुडगुह, ३२ वृक्ष, ३३ मानो ३४ सारे ।

अथे बूंद शबनम<sup>१</sup> के यो पात मे । रतन खास<sup>२</sup> खूबाँ<sup>३</sup> के ज्यों हात में ॥१५००॥  
 . . . . . । पँखी गुल उचाते<sup>४</sup> थे डाल-डाल ॥१५०१॥  
 वो आशिक सों माशूक<sup>५</sup> के ध्यान सों । मता हो अपस में खुशल्हान<sup>६</sup> सो ॥  
 जम्या ख्याल इस धात<sup>७</sup> गाता अथा<sup>८</sup> । कि हर रुख हर साल आता अथा ॥  
 पँखी<sup>९</sup> गुम<sup>१०</sup> हुये थे वो अल्हान<sup>११</sup> सुन । बहता नीर बहता न था तान सुन ॥  
 सुनी वो गला<sup>१२</sup> ज्यों बदीयुल्जमाल । गली<sup>१३</sup> उस गले के ऊपर रख खियाल ॥  
 कहीं या यों किसका है नादिर<sup>१४</sup> गला । किया है मेरी रुह कूँ मुब्तला ॥  
 गला यो न होय कुछ बला<sup>१५</sup> है गँभीर । कि पानी किया गाल<sup>१६</sup> मेरा सरीर” ॥ १०७ ॥  
 कही शाहजादी कि माँ तब उसे । “यो नादिर उस किसी का दिसै ॥  
 जिनै मेरी बेटी कुँ ल्याया अहै । दे जिवदान सिरते निपजाया<sup>१७</sup> अहै ॥१५१०॥  
 जो देखेगी . . . . . उसकुँ दिखलाउँगी । नजदीक उसके डेरे के ले जाउँगी” ॥  
 सो वै आसरे ते वो चंदरबदन । देखन आइ सैफुल्मलूक के कदन<sup>१८</sup> ॥  
 जो देखी निझा<sup>१९</sup> खूब उसका जमाल । दिवानी हो दरहाल<sup>२०</sup> हुई वै निढाल ॥  
 पड़ी उसके इश्क के दाम में । . . . . . ॥  
 दिल उसका लग्या तिलमिला तनमने । किया ठार इश्क उसके रे मनमेने ॥  
 लगा जीव बातिन<sup>२१</sup> में उस साथ वै<sup>२२</sup> । चली सैर करती हलो<sup>२३</sup> होर कै ॥१५१६॥  
 ज्यों उस साथ वह चुलबुली दिन लगाइ । सो वो शाहजादी उसी वक्त पाइ ॥१५१९॥  
 बुला कै नजीक उस परीजाद<sup>२४</sup> कूँ । . . . . . ॥  
 कही “याद है यक हिकायत<sup>२५</sup> मुझे । सुनेगी अगर तूँ तो करेगी तुजे ॥१५२१॥  
 सुनी हूँ कि कोइ मिस्र में बेनजीर<sup>२६</sup> । है आसिम गुनी नवलशह<sup>२७</sup> गंभीर ॥  
 सबी कुछ खुदा उसकुँ बख्शा अथा<sup>२८</sup> । नजर कर जो फ़र्जद<sup>२९</sup> वक्त पर दिया ॥१५२५ ॥  
 . . . . . । उसे नांव सैफुल्मलूक कर रखा ॥  
 जो था उस कने एक दाना वजीर । हुआ उसकुँ फ़र्जद एक बेनजीर ॥  
 वो साअद कर उसका रख्या नाँव सो । . . . . . ॥  
 केतक घोस कुँ वो जो स्थाने हुये । हरेक इल्म<sup>३०</sup> में खूब दाने<sup>३१</sup> हुये ॥  
 सो दोनों पे वो खुस्रवे<sup>३२</sup> गुननिधान । . . . . . ॥१५३०॥  
 बोला भेज खलअत<sup>३३</sup> दे जर्वफ्त<sup>३४</sup> एक । दिया सो अथी<sup>३५</sup> सूरत एक उसमे नेक ॥

१. ओस, २. विशेष, ३. सुन्दरियों, ४. उठाते, ५. प्रिया, ६. सुस्वर, ७. भ्रांति,  
 ८. था, ९. पक्षी, १०. बेसुध, ११. राग, १२. स्वर, कण्ठ, १३. पिघल गई, १४. दुर्लभ,  
 १५. आफत, १६. गलाकर, १७. उपजाया, १८. के पास, १९. ध्यान (निध्यान) कर,  
 २०. तत्काल २१. बाहर, २२. वहीं, २३. धीरे-धीरे, २४. अप्सरा, २५. कहानी, किस्ता,  
 २६. अनुपम, २७. नया शाह, २८. था, २९. पुत्र, ३०. विद्या, ३१. जानकार, ३२. राजा,  
 ३३. पोशाक, ३४. जरदोजी, ३५. थी ।



कि वो ऐन<sup>१</sup> तेरी च<sup>२</sup> सूरत अथी । ॥१५३२॥  
 देवत शाहजादा यो सूरत वही । सो आशिक हुआ ॥१५३३॥  
 जुदा<sup>३</sup> होयकर अपने घरवारते । निपट तोड ले जीव<sup>४</sup> ससार ते ॥  
 अथे होर साभद सीना सख्त<sup>५</sup> कर । विरहसो कलेजे कूँ सदलस्त<sup>६</sup> कर ॥  
 जहा दर जहाँ<sup>७</sup> फीरता फीरता । दर्या वीच पड डूबता तीरता ॥  
 न चँदना समझता न सूरज की आँच । अधिक बेखबर हो बलायाँ<sup>८</sup> ते बाँच ॥  
 तुजे ढूँड लेता कहाँ ते कहाँ । हलाकी<sup>९</sup> सेती आइया है यहाँ ॥१५३९॥  
 वो आगिक सचा है तेरा झूठ नै । जरा उसके इस्क में तूट<sup>१०</sup> नै ॥१५४१॥  
 जिने जिव दिया उस इलाही<sup>११</sup> की मो । लग्या जीव बाँध्या है वो दिल तु सो<sup>१२</sup> ॥१५४२॥  
 दिखा होर सनद<sup>१३</sup> मूय यकवार उसे । ॥१५४५॥  
 मेरा होर मेरा माइ का रख वजे<sup>१४</sup> । . . . ॥  
 यही अज मेरा बडा आज है । अगर नै तो मुजकूँ बडा लाज है<sup>१५</sup> ॥  
 वा चदरबदन गुनभरी ज्ञान की । वो निमल रतन हुस्न<sup>१६</sup> के खान की ॥  
 खुश इम धात<sup>१७</sup> सेती उठी बोलकर । दिये जाव ऐसी जबाँ खोल कर ॥  
 कि ऐ भागवन्ती मँगतिन मेरी । मेहरवान दुख-सुख की साथिन मेरी ॥१५५०॥  
 जो तू मुज पे इह्हार<sup>१८</sup> यो राज<sup>१९</sup> की । सरअफराज<sup>२०</sup> की मुज सरफराज की ॥  
 बले में परी होर वो है वशर<sup>२१</sup> । ॥  
 यकायक यो अतर सुट<sup>२२</sup> काड क्यो । पडूँ भार<sup>२३</sup> पदकुँ में फाड क्यो ॥  
 अगर यो मुनेंगे मेरे माइ-बाप । गलंगे हयासो<sup>२४</sup> वो आपसमे आप ॥  
 मेरा हाल रहमे न कुठ तारते । गुजरसे<sup>२५</sup> न वो मेरे आजार<sup>२६</sup> ते ॥  
 दूजे वार कुँ भेज देसे न भी । मेरा नाँव रोमो लेंगे न भी ॥  
 नको<sup>२७</sup> हा तुँ इस बात के पैमने<sup>२८</sup> । कि हरगिज न आँसू<sup>२९</sup> तरे कये<sup>३०</sup> मने ॥  
 वो जाहिर तो यो एतराजी अथी । बले<sup>३१</sup> दिल सो बात<sup>३२</sup> में राजी<sup>३३</sup> अथी ॥  
 ममज अकल मो खूब इसका खियाल । मो माँ होर वेंटी लग फिर दुवाल<sup>३४</sup> ॥  
 कि "ऐ शहपरी, काड सुट दगदगा । नको अपने आशिक कुँ दे तू दगा ॥१५६०॥  
 हमन वाज<sup>३५</sup> कोई तुजकुँ हमराज<sup>३६</sup> नै । न करसें हमें फाश<sup>३७</sup> यो राज<sup>३८</sup> के ॥१५६१॥  
 ले जायेंगी तुज ऐसे खलवत<sup>३९</sup> के ठार । जो कोई न अछै वाज पवदगार<sup>४०</sup> ॥  
 देखा यक नजर<sup>४१</sup> टुक दीदार<sup>४२</sup> उसे । बिना धार है वो दे आधार उसे" ॥

१ ठीक, २ तेरी ही, ३ अलग, ४ मन, ५ कडा, ६ सौ टुकडा, ७ देश देश,  
 ८ आफते, ९ नाश, १० टूट (मरा०), ११ भगवान्, १२ तुझसे १३ प्रमाण,  
 १४ तारीफ, १५ सौदर्ध, १६ भाति, १७ प्रकट, १८ रहस्य, १९ भाग्यशाली,  
 २० आदमी, २१ फेकू, २२ बाहर, २३ लज्जा से, २४ गुजरेगी, २५ दुख से, २६ नहीं,  
 २७ पीछे, २८ आऊँगा, २९ कहे, ३० विरोधी, ३१ लेकिन, ३२ भीतर, ३३ सहमत,  
 ३४ पीछे, ३५ हमारे बिना, ३६ रहस्य जाननेवाला, ३७ खोल, ३८ कहाँ, ३९ एकांत,  
 ४० पालक, ४१ एक दृष्टि, ४२ दर्शन।

बहरहाल<sup>१</sup> फुसला के राजी किया । लगा इश्क रीते<sup>२</sup> ताजी किया ॥१५६६॥  
 कि ज्यों वो छबीली चंचल गुलअजार<sup>३</sup> । करार<sup>४</sup> अपना छोड हुई बेकरार ॥  
 उताली<sup>५</sup> हो आशिकके दीदार की । सुटी<sup>६</sup> लाज हुई यारनी यार की ॥  
 यकेली नज़ीक जा आधी रात कूँ । उचा<sup>७</sup> उस सँगातिन उतमजात कूँ ॥१५७०॥  
 कही यों कि मैं तो तेरे बोल पर । जो थी गाँठ दिल में सुटी खौलकर ॥  
 गँवाऊँ ऐते दिनकी क्यों आशनाई । कि बजगी<sup>८</sup> है आलम<sup>९</sup> मैं सब यो शहनाई<sup>१०</sup> ॥१५७२॥  
 जो देखूँ उसे यकनजर आज मैं । कि हूँ उसके दर्शन की मुहताज<sup>११</sup> में ॥१५७४॥  
 न जाने नमन<sup>१२</sup> कोई मिल जायें चल । उसे दूरते देख फिर आँय चल ॥  
 कि तूँ होश टाली<sup>१३</sup> है जबते मुजे । नहीं ज़र्रा<sup>१४</sup> आराम तबते मुजे ॥  
 यो गत क्या छिपाऊँ तुज अगे ऐताल<sup>१५</sup> । . . . . . ॥  
 न जानूँ उसे किस घडी मैं निझाई<sup>१६</sup> । नहीं नींद अँखियाँ कु तेरी दुहाइ ॥  
 तुसों<sup>१७</sup> मिलके मैं गर्चे<sup>१८</sup> बैठी हूँ याँ । बले<sup>१९</sup> दिल मेरा सैर करता है वाँ ॥  
 लगी उसके दुंबाल पड हात पाँव । चली ले उसे ढूँढती ठाँ-ठाँव ॥१५८०॥  
 जो आशिक के डेरे के नज़दीक आइ । खबर हो या ना त्यौ उसे खुश<sup>२०</sup> निझाइ ॥

(प) पुरुष-सौन्दर्य--

सो बैठा देखी मस्त उस ठार उसे । चडया है मदन का सो खुल्हार<sup>२१</sup> उसे ॥  
 तजल्ला<sup>२२</sup> उपर मुख बरसता है खुश । लियाँ अँखियाँ नाजो<sup>२३</sup> हँसता है खुश ॥  
 लगे है शमे<sup>२४</sup> चौदन<sup>२५</sup> नैदके<sup>२६</sup> । झमकते<sup>२७</sup> हे रुखसारे<sup>२८</sup> ज्यों सूर के ॥  
 अपन मनमें झलता<sup>२९</sup> अथा मस्त ख्याल । सो ढलकी है पगडी खुल्या है जमाल<sup>३०</sup> ॥  
 खुले है सफा<sup>३१</sup> के किवाडा तमाम । . . . . . ॥  
 खुले है रँग रंग चमन आसपास । महकता है महकात वाँ बेकयास<sup>३२</sup> ॥  
 डुब्या है सबी बाग खुश-बास<sup>३३</sup> मे । सो दौड्या है महकार आकास में ॥१५८८॥  
 नजर जो पया यो तमाशा महाल । सो उसे चुलबुली का हुआ होर ख्याल ॥  
 देखत यो तमाशा<sup>३४</sup> बदीयुल्जमाल । हो हैरा अपसकूँ न सकसी<sup>३५</sup> संभाल ॥१५९०॥  
 मती<sup>३६</sup> होके वाँ थारके वासते । पडी थी जो फूलों की ज्यों रासते ॥  
 न थी कुछ खबर उसके तन की उसे । जमी से जगी उस चमन की उसे ॥



१. हर तरह से, २. फिर से, ३. फुलवाड़ी, ४. धीरज, ५. उतावली, ६. फेंका (पंजाबी), ७. उठा, ८. बज गई, ९. दुनिया, १०. शहनाई, ११. इच्छुक, १२. जैसा, १३. हटाया, १४. जरा, थोड़ा, १५. इस समय, १६. ध्यान किया, १७. तुझसे, १८. यद्यपि, १९. लेकिन, २०. अच्छी तरह, २१. गर्मी, २२. प्रकाश, २३. नाज से, २४. मोमबत्तियाँ, २५. चारों तरफ, २६. प्रकाश के, २७. चमकते, २८. कपोल, २९. चमकता, ३०. सौन्दर्य, ३१. स्वच्छता, ३२. अपरिमित, ३३. सुगंधित, ३४. दृश्य, ३५. सकेगी (पंजाबी), ३६. मस्त ।

खड़ी थी सी वी सदै भरकर<sup>१</sup> उसास । पड़ी जासमन में हो फूला की रास ॥  
जो सैफुलमलूक आशिके वरुतवर<sup>२</sup> । मदन मद की मस्ती ते पाया खबर<sup>३</sup> ॥  
यकायक सेहरगह<sup>४</sup> वेइरित्तियार<sup>५</sup> । दहनीते<sup>६</sup> डैसे के निकल्या बहार<sup>७</sup> ॥

(फ) स्त्री सौंदर्य—

सुनी देखकर उसकुं आशिक गभीर । लगा रोवने उसपे चौकेर फीर ॥१६१८॥  
दो दीर्वा<sup>१</sup> के अँझुआ<sup>२</sup> सा मसगूल<sup>३</sup> कर । छिनकने<sup>४</sup> लग्या शवनम्<sup>५</sup> उस फूलपर ॥१६२०॥  
जो वो शहपरी वास आदम की पाइ । यकायक उठी नाज सा दी जमाइ<sup>६</sup> ॥  
निशां देखती है जो अँखियां पमार । नजीक आके बैठा है वह दोस्तदार<sup>७</sup> ॥  
धुंगट में छुपा मुँह वही नाज मो । हला<sup>८</sup> साल अघर नम आवाज सो ॥  
कही "था तो वाजिव"<sup>९</sup> नहीं है तुजे । जो नजदीक आकर निशावे<sup>१०</sup> मुझे ॥  
मैं औरत शरभ की हूँ होर मद तू । न मैं तुजकू जानूँ न मुजवू नू ॥  
निपज<sup>११</sup> में तू आदम है होर मैं परी । नहीं मुहरम<sup>१२</sup> आदमसेती कै परी ॥  
सवव क्या अथा आने इम रात कू । कना<sup>१३</sup> मुजकूँ ते गोल यो वात तू ॥  
वफादार<sup>१४</sup> ओ आशिके नामदार<sup>१५</sup> । जो माशूक<sup>१६</sup> ते पाइयां यो अधार ॥  
सो खुश बेनिहामत<sup>१७</sup> हो पाया उमस<sup>१८</sup> । रगो रग में दीइया वा रग रस ॥  
जवा खोल बातों लग्या बोलने । रतन जीव के राज<sup>१९</sup> के रोलने ॥१६३०॥  
कि "ऐ बेवदल<sup>२०</sup> मोहिनी जग-उजाल । जो है नाँव तेरा यदी युल्जमात ॥  
तेरे नाँव परते हूँ बलिहाल में । सुद<sup>२१</sup> जीव कू तुजपर वार<sup>२२</sup> वार मैं ॥  
नजर कर मेरी घेर<sup>२३</sup> जो अमन<sup>२४</sup> पाउँ । देखूँ दीद पर दीद टुक दुख गँवाउँ ॥  
कि घरता हूँ सीने मे दुस कड जमी<sup>२५</sup> । हुआ हूँ परित आग में जल मुड<sup>२६</sup> जमी ॥  
एता कुछ भर्या है मेरे मन मे मोज<sup>२७</sup> । जो सुलगे असू लास भडवेहर रोज ॥  
अँझू मुँज नयनते जो ढलते अहै । तेरे इस्क के वाट<sup>२८</sup> उवलने अहै ॥  
तेरे ल्ये च फिरता हूँ मैं रात-देश<sup>२९</sup> । लिये हूँ तेरे ल्ये च वित्याग नेम<sup>३०</sup> ॥  
यकी<sup>३१</sup> जान में आशिके पाव हूँ । तेरे इस्क का पाक बवाक हूँ ॥  
तेरे ल्ये च एता रज देख्या हूँ मैं । जो देख्या नहीं कोई दुनियामे कै<sup>३२</sup> ॥  
न यो कुछ आया है मुज घोर ते<sup>३३</sup> । कि नाजिल हुआ है या तकदीर ने ॥१६४०॥

१ पा (डाल) कर, २ भाग्यवान, ३ होश, ४ प्रात, ५ बेवस, ६ भीतर से,  
७ बाहर, ८ आँखें, ९ आँसू, १० लगन, ११ छिडकने, १२ ओस, १३ जम्हाई, १४ प्रेमी,  
१५ धीरे-से, १६ उचित, १७ ध्यान करे, १८ उपज, १९ त्रिहित, २० कही, २१ कहना,  
२२ भक्त, २३ यशस्वी, २४ प्रियतमा, २५ अत्यन्त, २६ उस्ताह, २७ रहस्य, २८ अनमोल,  
२९ फेंकू (पजाबी), ३० नौछावर, ३१ मेरी ओर, ३२ शाति, ३३ कड़ी भूमि, ३४ रेत की  
जमीन, ३५ जलन, दर्द, ३६ रास्ता, ३७ रात्रि दिवस, ३८ बुरा भेस, ३९ सच्ची,  
४० सच्चा प्रेम, ४१ कहीं, ४२ मेरी ओर से ।

तेरे वस्ल<sup>१</sup> का देख मुँज मनकूँ आस । दिया है खुदा भेज मुज तेरे पास ॥  
 नको<sup>२</sup> देख अपसंते बेगाना<sup>३</sup> मुँजे । भला है जो अपना कवाना<sup>४</sup> मुँजे ॥  
 वचन बोल ओ आशिक इस धात<sup>५</sup> सो । हुआ उसपे कुर्बानि सब जात<sup>६</sup> सों ॥  
 चतुर चलबली धन बदीयुल्जमाल । छुपा मन में रख यो मुहब्बत कमाल<sup>७</sup> ॥  
 उबलते पेरेम कूँ सो मनमे जिरो<sup>८</sup> । बहाने सैती यों उठी बोव वो ॥  
 कि “ऐ शाहजादे गुनी बख्तवर<sup>९</sup> । अपसमन के सूरति<sup>१०</sup> पर रख नजर ॥१६४६॥  
 यकायक तेरी बात कूँ क्यों पत्याऊँ । यकायक तुज सात क्यों मन लगाऊँ ॥१६४९॥  
 फिरया है बहुत मुल्क तूँ तूट<sup>११</sup> कर । मुबादा<sup>१२</sup> तेरा दिल अछै<sup>१३</sup> झूट पर ॥१६५०॥  
 तु जा याँ ते संभाल ले आपकूँ । कि डरती हूँ मैं अपने माँ-बाप कूँ ॥  
 अगर कोई देखेगे याँ मेरे लोग । तो आजार अँपडाय<sup>१४</sup> दोनों कुँ ठोक ॥१६५२॥  
 लगा राने सैफुलमलुक सुन यो बात । निकल तनते गइ त्यों हुआ उस हयात<sup>१५</sup> ॥  
 गोता खाइया वै मुँडी ढाल पर । सुट्या<sup>१६</sup> विरह अगनसो अपस जाल कर ॥१६५७॥  
 हुआ सिरते<sup>१७</sup> संगीत<sup>१८</sup> दुख उसपे यों । रखे पाँड<sup>१९</sup> कूँ लाके गाड़ी पे ज्यों ॥  
 रह्या जीव होटाँ मने<sup>२०</sup> आ उसे । हो बेसुध अक़ल सिर चढ़ी जा उसे ॥  
 देख ये हाल मोहन बदीयुल्जमाल । हो मन मे मुसल्लम्<sup>२१</sup> परेशानहाल<sup>२२</sup> ॥१६६०॥  
 पिछानी कि यो कुछ तो बाजी<sup>२३</sup> नही । हक़ीक़ी<sup>२४</sup> पिरित है मजाजी<sup>२५</sup> नही ॥  
 उचाई<sup>२६</sup> नज़िक जा उसे हात सो । गले लागती जिवके सूरति<sup>२७</sup> सों ॥  
 देती लाख बज़ा<sup>२८</sup> साथ जिवदान उसे । सो तहकीक़ कर पाई ईमाँ उसे ॥  
 मुहब्बत जो जागह किया दिलमने<sup>२९</sup> । रखी पाँव यारी<sup>३०</sup> के मजिलमने ॥  
 पलू<sup>३१</sup> साथ अँजु<sup>३२</sup> उसके पोंछन लगी । भरोसा दे धीरक<sup>३३</sup> सों बोलन लगी ॥  
 कि “ऐ मेरे मन के सँगाती एताल<sup>३४</sup> । न कर दुख तूँ होर नको हो निढाल ॥  
 तूँ आशिक़ मेरा कर सची पाई मै । . . . . . ॥  
 बले<sup>३५</sup> क्या करूँ नै मुजे इख्तियार<sup>३६</sup> । परयाँ मुँज मुवक्कल<sup>३७</sup> है कइ लखहजार ॥  
 न तदबीर है कुछ जो हीला<sup>३८</sup> करूँ । यकायक तुसुँ क्यों वसीला<sup>३९</sup> करूँ ॥  
 मेरी एक दादी सो है एक ठाँव । शहरवान् उसका अहै नेक नाँव ॥१६७०॥  
 जो सीमीपटन शहर है एक गँभीर । वह करती है वाँ खुस्रवी<sup>४०</sup> बेनजीर<sup>४१</sup> ॥  
 है सारों कुँ उसका बड़ा एतबार । कि है सब कबीले<sup>४२</sup> की वह नामदार<sup>४३</sup> ॥

१. मिलन, २. नहीं, ३. पराया, ४. कहलाना, ५. भाँति, ६. सब तरह, ७. पूर्ण प्रेम,  
 ८. छिपा, ९. भाग्यवान्, १०. रुचि, ११. टूट, १२. शायद, १३. रहै, १४. दुख पहुँचेगा,  
 १५. जीवन, १६. फेंका, १७. फिरते, १८. कठोर, १९. पहाड़, २०. ओठों में, २१. पूर्ण,  
 २२. दुःखी, २३. खेल, २४. सच्ची, २५. बाहरी, २६. उठाई, २७. रुचि, २८. सच्चा,  
 २९. दिल में, ३०. दोस्ती, ३१. अंचल, ३२. आंसू, ३३. धीरज, ३४. इस समय,  
 ३५. लेकिन, ३६. अधिकार, ३७. मुंजाँ पर नियुक्त, ३८. बहाना, ३९. सम्बन्ध, ४०. राजसी,  
 ४१. अनुपम, ४२. जन, जाति, ४३. प्रसिद्ध ।

बले जाँ तलक शहर की वाट है । वहाँ लग अगिन का च<sup>१</sup> एक घाट है ॥१६७३॥  
 वही त्यों करेगा जो ऐ जान<sup>२</sup> तू । त्यों है लाख मुज पै एहसान<sup>३</sup> तू ॥  
 भला है जो वाँ लग<sup>४</sup> अपे जाय तू । ॥  
 कि वो गुनभरी वल्लवर<sup>५</sup> नेकनाम । करेगी तेरा काम हर कयो<sup>६</sup> तमाम ॥१६७९॥  
 कि धरती है ओ दोस्त इसान कू । करेगी बहुत प्यार तुज जान कू ॥१६८०॥  
 मेरी माय होर बाप कू मग ले । मलायक करेगी मुजे होर तुजे ॥१६८२॥  
 बले<sup>७</sup> तुज यकोला केरा नै है काम । ॥  
 सलामत<sup>८</sup> मा अँपडाये तुज भीत कू । देजेंगी मंगात एक अफरीत<sup>९</sup> कू ॥१६८६॥  
 तेरे तँ वो शहजादी होर उसकी माइ । ॥  
 केते बजा<sup>१०</sup> सो कर सिफारिश तेरा । पडे ये गले अन्त<sup>११</sup> लेने मेरा ॥१६९०॥  
 अभी तू नको<sup>१२</sup> बोल कुछ उनके घेर । ॥१६९२॥  
 “बह्या शाहजादा मेरा कया मजाल । जा ठेलू<sup>१३</sup> तेरी वात ऐ जग-उजाल” ॥१६९३॥  
 वचन घट<sup>१४</sup> करे या हुये एक दिल । सुवा लग गमे बाग में दोइ मिल ॥१६९५॥  
 उजाला हुआ जग में ज्यो सुवह का । रहे लेट अपनहार अजान जा ॥१६९५॥  
 अलामत<sup>१५</sup> सो नेक अखरी का जहूर<sup>१६</sup> । किया ज्यो जहाँ में जहाँ वाव सूर<sup>१७</sup> ॥  
 सो उसकी सँगातिन सो मिल उसकी माइ । भितर उस परीजाद<sup>१८</sup> के डेरे आइ ॥१६९७॥  
 कही शत<sup>१९</sup> कालकी बजा ल्यावना । तेरा दस उस आज<sup>२०</sup> दिखलावना ॥१७०१॥  
 नको ठेल दे तू मेरी वात एताल । ॥१७०२॥  
 तू आज उस दुखी प्यारकू माद कर । दिखे दस तेरा उसे शाद<sup>२१</sup> कर ॥१७०५॥  
 ज्यो इस वात परते छुटी गुदगुली<sup>२२</sup> । सो राजी हुई वह चंचल चुलचुली ॥  
 मुहब्बत मने<sup>२३</sup> देख उमका खियाल । कबूली<sup>२४</sup> वो कये<sup>२५</sup> त्यों बदीयुज्जमात ॥१७१०॥  
 जमाकर खुशी<sup>२६</sup> मनके सारात<sup>२७</sup> की । किये गर्म मजलिस यखश उस रात की ॥  
 बद्रत मो ज्यो आरसी पाक<sup>२८</sup> हो । ॥  
 सो चारो मिले खुश होवी एक ठार । सो वँडे लताफत<sup>२९</sup> सो मजलिस सँवार ॥१७१३॥  
 (ब) रात्रि-वर्णन—

डुव्या मूर महताव आया निकल । दरमने लग्या साफ चँदना निछल<sup>३०</sup> ॥१७१५॥  
 सितारे झमकने<sup>३१</sup> लगे ठार-ठार । छुपा जाके जुल्मान में अधकार<sup>३२</sup> ॥  
 उजाला हुआ साफ यो चौकदन<sup>३३</sup> । जमी कू मगर<sup>३४</sup> लाये ये घिस चँदन ॥१६१७॥

१ आज का ही, २ प्यारे, ३ उपकार, ४ वहाँ तक, ५ भाग्यवान्, ६ हर तरह,  
 जैसे भी हो वैसे, ७ लेकिन, ८ खरियत, ९ भूत, १० कार, ११ भेद, १२ नहीं, १३ टालूँ,  
 १४ कम, १५ चिह्न, १६ सौभाग्य का प्रकाश, १७ जगत्-प्रकाश, १८ परियाँ, १९ बात,  
 २० अब, २१ प्रसन, २२ गुदगुदी, २३ प्रेम में, २४ स्वीकार, २५ कहे, २६ रचि,  
 २७ मेल, २८ शुद्ध, २९ मज्जुलता, ३० चाँद, ३१ निमल, ३२ चमकने, ३३ अँधेरा,  
 ३४ चारो ओर, ३५ मानो, ३६ लगाये थे ।

हरेक ठार पर शमा<sup>१</sup> की रोशनाई । जकाजोत<sup>२</sup> सो चौकधन<sup>३</sup> जगमगाइ ॥१७१९॥  
 मँगाये निछल मस्त रंगी<sup>४</sup> शराब । सुराया भरे पाच क्यो बे हिसाब ॥१७२०॥  
 फिराने लगे प्याले याकूत के । सुटे<sup>५</sup> म्याने<sup>६</sup> बादाम<sup>७</sup> ल्या कूत के ॥  
 वो गुणवंत शाहजादि होर उसकी माइ । अधी रात लग वक्त अपना गमाइ ॥  
 रजा<sup>८</sup> ले चल्या वाँ ते अपने मँदिर । हुई यों खुशी ज्यास्त दोनों कुँ फिर ॥  
 असर<sup>९</sup> मंद मनमे हुये मस्त ख्याल । वो सैफुलमलूक होर बदीयुज्जमाल ॥  
 जो देखन लगे खूब एकसकुँ एक । अँख्याँ में रहे खोब एकसकुँ एक ॥  
 कि थे एक ते एक साहेब-जमाल<sup>१०</sup> । मती<sup>११</sup> हो मुहब्बत के ओ जग-उजाल ॥  
 हलौ हात मे हात लेने लगे । चुमै लग मुहब्बत सों देने लगे ॥१७२७॥  
 मदन दो तरफते जो आया उबल । हुये महुव आपसमे आपे पिघल ॥  
 हुये सुध गँवा बेखबर दो जने । सुते मिलके वै यक बिछौने मने ॥  
 वलेकिन<sup>१२</sup> उनन मे न था कुच खियाल<sup>१३</sup> । कि थे पाकदामन<sup>१४</sup> में दोनों कमाल<sup>१५</sup> ॥१७३०॥  
 सुवा जो रयन मे ते पैदा हुआ । जो मशरिक<sup>१६</sup> वन्दन से ते हवेदा<sup>१७</sup> हुआ ॥१७३३॥  
 छुपा चाँद जा सूरकी ताब ते । यकायक उठे जाग वो ख्वाब<sup>१८</sup> ते ॥  
 चले अपने खेमाँ मे झट फांक हो । . . . . . ॥१७३५॥

(भ) अन्तिम संकट—

जो उस वावरे की परीजाद कुँ । लग्या वाव उस साद् आजाद<sup>१९</sup> कुँ ॥१७४२॥  
 हुई ज्यों कि लैला सो इस लाल की । भँवर होके उस फूल की डाल की ॥१७४४॥  
 दिवानी हुई सुध<sup>२०</sup> सुटी<sup>२१</sup> जातकी । लगी खूब सोहबत असर रात की ॥१७४७॥  
 जो पाई खबर फिर केतक बार कुँ । . . . . . ॥  
 सगी<sup>२२</sup> अपनी दादी कुँ तब याद कर । सखी<sup>२३</sup> नामा<sup>२४</sup> ले नामा बुनियाद<sup>२५</sup> कर ॥  
 करी खुश इबारत<sup>२६</sup> सों तहरीर<sup>२७</sup> यों । लिखी इश्क ताजा<sup>२८</sup> की तक्ररीर<sup>२९</sup> यों ॥१७५०॥  
 अदब की रविश सों सदा बेहिसाब । लिखी अपने हाताँ सो<sup>३०</sup> दादी कुँ जाब<sup>३१</sup> ॥१७५॥  
 बुलाकर कही एक अफरीत<sup>३२</sup> कुँ । मेरा मीत<sup>३३</sup> है एक इस मीत कुँ ॥  
 लेजा काड सीभीं पटन लग शिताब<sup>३४</sup> । मिला मेरी दादी सों होर ल्या जवाब ॥१७५५॥  
 वो फरमाइ<sup>३५</sup> थी त्यों च अफरीत<sup>३६</sup> सो । मलिकजादे कन आइया दौ इवो ॥१७६३॥  
 हुआ मँग ले अफरीत की पीठ पर । चड्या जो कह्या ओ अँख्याँ मोच<sup>३७</sup> कर ॥१७६५॥

१. मोमबत्ती, २. अति प्रकाशमान, ३. चारों ओर, ४. लाल, ५. फेंके, ६. बीच, ७. भोजन, ८. सहमति, ९. प्रभाव, १०. सुन्दर, ११. मुग्ध, १२. किन्तु, १३. विचार, १४. सदाचार, १५. पूर्ण, १६. पूर्व की ओर, १७. प्रकट, १८. स्वप्न, १९. स्वतन्त्र, २०. स्मरण, २१. फेंकी, २२. अपनी, २३. तरुणी, २४. पत्र, २५. कारण, २६. सुवाच्य, २७. लेख, २८. नया, २९. कथन, ३०. अपनी ओर से, ३१. पंक्ति, ३२. जादू, ३३. मुहब्बत, ३४. जल्दी, ३५. हुकुम दिया, ३६. भूत, ३७. मीच।

उलंग आग का ममं समदूर घाट । पकड़ रास्त सीमों<sup>१</sup> पटन घेर वाट ॥१७६८॥  
 उतारधा जो उस शहर मे जा उसे । ॥१७७०॥  
 न था शहर आलम<sup>२</sup> मे उस घात कै<sup>३</sup> । हुआ देख शहजादा हैरान वै ॥१७८१॥  
 अखंड पाच का वाँ देख्या एक तखन<sup>४</sup> । उस उपराल<sup>५</sup> ओ मावली नेक-वरात ॥१७८४॥  
 शिगुपता हो<sup>६</sup> वैठी है खुश दाव सो<sup>७</sup> । ॥१७८५॥  
 अंगे हो किया शाहजादा मलाम । सो देती अलकी<sup>८</sup> फिर ओ नेकनाम ॥१७८८॥  
 कही "तू सलाम आ न करता मुंजे । तो करती विला उअ<sup>९</sup> टुकडे तुजे ॥१७८९॥  
 अथा<sup>१०</sup> सस्त<sup>११</sup> तेरा कलेजा बडा । जा आकर मेरे सामने तू राडा" ॥१८११॥  
 सो यो आ कहा शाहजादा उमो<sup>१२</sup> । कि "मुंजते हुआ हे गुनह<sup>१३</sup> वरा<sup>१४</sup> तू" ॥  
 वदीयुज्जमाल उस लिंगी सो जवाब<sup>१५</sup> । दिया हाथ मे जाकर उसके शिताव<sup>१६</sup> ॥  
 पढी सरवस<sup>१७</sup> जवाब वो खोल ज्यो । ॥१७९६॥  
 वो मनलव<sup>१८</sup> उमे खुश मुनाफिक<sup>१९</sup> लंग्या । यो आशिक<sup>२०</sup> ओ माशूव लायक<sup>२१</sup>  
 ग्या ॥१७९६॥  
 देख उसकी कवन<sup>२२</sup> मेहरबानी<sup>२३</sup> मे आय । नजिक वैसला<sup>२४</sup> हम-जवानी<sup>२५</sup> मे आय ॥  
 शकल<sup>२६</sup> सूरत उसके निज्ञाने<sup>२७</sup> लगी । अधिक फह<sup>२८</sup> पर फह पाने लगी ॥१७९८॥  
 कि "तू कौन है होर किधर का अहै । जो इस्क उस सहेली मो वरता अहै ॥  
 तेरी जात आदम दिसे वो परी । तुसा<sup>२९</sup> जुपत क्यो होवै वो गुनभरी ॥१८००॥  
 कि है वह चंचल पदिमनी आतिशी<sup>३०</sup> ॥ ॥१८०१॥  
 सुनी हूँ पर्यां ते मुजे याद है । बडा बेवफा<sup>३१</sup> आदमीजाद<sup>३२</sup> है ॥१८०४॥  
 सुन्या शाहजादा जो इस वात कूँ । उठया बोल उस वक्त इस घात सो ॥१८०७॥  
 कि "ऐ वगतवर<sup>३३</sup> माइ गुनज्ञान की । तु ममूदर<sup>३४</sup> सचली हे उफान<sup>३५</sup> की ॥१८०९॥  
 मैं उम नार का पाक आशिक<sup>३६</sup> हूँ कर । बजा हे डिढोरा नौ आकाम पर ॥१८१४॥  
 मैं वो आदमी हूँ जो सबते अवल<sup>३७</sup> । देखें जीव उस शहपरी के बदल ॥१८१८॥  
 बहुत दून देख्या हूँ मैं उसके तै । जगल घाट कोई नै न देग्या सो मैं ॥१८२०॥  
 फिर्या डूंगरा डूगरा दूर के । किया दौड लै गहन समूदर के ॥१८२१॥  
 तुही त्या सुनंगी मरा दर्द अगर । अजव<sup>३८</sup> क्या जो जावे सीना तडख<sup>३९</sup> कर" ॥१८२९॥  
 देखी शहरवानू की सखती च<sup>४०</sup> यो । हुआ है गुम उसके पिरीत बीच यो ॥१८३०॥  
 समज ली उसे आशिके पाक<sup>४१</sup> कर । ॥१८३१॥

१ सीघा, २ दुनिया, ३ कहीं, ४ पन्ना, ५ ऊपर, ६ खिला, ७ दर्प से, ८ अलक, सलाम,  
 ९ विना ननु नच, १० था, ११ कठोर, १२ उससे, १३ अपराव, १४ क्षमा कर, १५ उत्तर,  
 १६ जल्दी, १७ पूरा, १८ अभिप्राय, १९ पसन्द, २० प्रियतम, २१ योग्य, २२ उसके पास,  
 २३ कृपा, २४ बैठा, २५ सभापण, २६ आकार, २७ ध्यान से देखने, २८ आनन्द, २९ तृप्तसे,  
 ३० मिलन, ३१ आनेय, ३२ बेमुरीवत, ३३ मानव, ३४ भाग्यशाली, ३५ समुद्र, ३६ ज्ञान,  
 ३७ पवित्र प्रेम, ३८ प्रथम, ३९ आश्चर्य, ४० तडक, ४१ फडाई ही, ४२ पवित्र प्रेमी ।

नजीक आपने प्यार, सों वै<sup>१</sup> बुलाइ । बहुत मानदे तख्तपर बेसलाइ ॥१८३३॥  
 कही "गम नको<sup>२</sup> कर तूँ खुशहाल<sup>३</sup> आछ<sup>४</sup> । खिल्या ताजा ज्यों फूल का डाल आछ ॥  
 कि हर क्यो<sup>५</sup> कहुँगी तेरा काम मैं । दिलाऊँगी तुज ओ दिलाराम मैं ॥  
 खिलाऊँगी गुँचा<sup>६</sup> तेरे आस का । दिपाऊँगी तारा तुज-आकास का ॥१८३५॥  
 तलब<sup>७</sup> सारे देवा कुँ कर एक बार । जमा करने फ़रमाई सब एक ठार<sup>८</sup> ॥१८४०॥  
 हवा के उपर दो तरफ बाँध सफ़ । चली वै गुलिस्ताँ अरम की तरफ ॥१८४२॥  
 नजिक गुलिस्ताँने अरम के ज्यों आइ । सो यक ठार शाहजादे कुँ बेसलाइ<sup>९</sup> ॥  
 चली शहर में आप खुशहाल सों । मिली जा के फ़र्जद<sup>१०</sup> शहवाल सों ॥१८००॥  
 कि जिस ठाँव<sup>११</sup> ओ आशिके नेकनाम । यकेला रह्या जो अथा कर मुकाम ॥१८४७॥  
 सो वो ठाँव औतार<sup>१२</sup> कुछ ठार था । जनतके गुलिस्तानके सार<sup>१३</sup> था ॥  
 खिले थे केतक जिन्स<sup>१४</sup> के फूल वाँ । वूके बिन न थी नाँव कूँ धूल वाँ ॥  
 व डुबे थे चमन सरवसर<sup>१५</sup> फूल में । केते जिन्सकी वास हर फूल में ॥१८५०॥  
 पवन बाज<sup>१६</sup> वाँ कोई माली न था । किसी फूल ते वन वो खाली न था ॥  
 कहीं रायचंपा, कही सेवती<sup>१७</sup> । कहीं मोगरा होर कही रेवती ॥  
 कहीं यास्मिन<sup>१८</sup> होर मदनवान कै । कही ताजसुर्ख होर रैहाँ कै ॥  
 कही लाल होर कै रँगीले गुलाल । कहीं फूल सदवर्ग के बेमिसाल<sup>१९</sup> ॥  
 केतक उसमने<sup>२०</sup> फूल केतक कल्याँ । देखे तो नयन कूँ उठे गुदगुल्याँ<sup>२१</sup> ॥  
 कही तख्ते<sup>२२</sup> अंगूर के बेबदल । कै इंजीर व अन्नार शीरी निछल ॥  
 कही सेव होर कै अनन्नास खूब । . . . . . ॥  
 कै अखरोट, बादाम, पिस्ते नफ़ीस । कहीं जोज, चिलगोज, दिसते नफ़ीस ॥  
 खुश ऐसे अचम्बे<sup>२३</sup> गुलिस्तान में । लग्या सैर करने अपन ध्यान मे ॥  
 ठंडी कुछ हवा वाँकी ज्यों उसकुँ भाइ । सो यक झाड़तल खुश<sup>२४</sup> उसे नींद आइ ॥१८६०॥  
 क़जारा ओ अस्फ़द<sup>२५</sup> केरा परा<sup>२६</sup> । जो उस शाहजादी कुँ लेकर उड़ा ॥  
 रखा जो अथा कैद कर बंद सों । . . . . . ॥  
 दुखी उस परे को बड़ा हाइ हो । . . . . . ॥  
 तलब कर परचों कुँ सो कई लख हजार । किया सबकुँ ताकीद<sup>२७</sup> यों वे शुमार ॥  
 कि मारचा जो है भाई कुँ मेरे कोइ । सो वो आदमी बाज<sup>२८</sup> दुसरा न होइ ॥  
 ढूँढो जाओ मशरिक<sup>२९</sup> ते मगरिब<sup>३०</sup> तलक । . . . . . ॥१८६६॥

१. वहीं, २. नहीं, ३. प्रसन्न, ४. रह, ५. हर तरह, ६. कली, ७. बुलावा, ८. पाँती, ९. बैठ, १०. पुत्र, ११. निवास, १२. अद्भुत, १३. सदृश, १४. प्रकार, १५. पूरा, १६. हवा विभा, १७. शतपत्र गेंदा, १८. चमेली, १९. अनुपम, २०. उसमे, २१. गुदगुदी, २२. क्यारी, २३. अनुपम, २४. मीठी, २५. संयोग से, २६. परी पुरुष, २७. फिर-फिर कहना, २८. विना, २९. पूर्व से, ३०. पश्चिम।



तु फर्जद<sup>१</sup> है गर मेरे पेट का । तो यो नेट कर वक्त है नेट का ॥१९५४॥  
 मेरे मन कुँ सन्तास सो पूर कर । यो शर्मिंदगी मुजते तूँ दूर कर ॥१९५६॥  
 कि नादान वाली बदीधुलजमाल । तेरा जाव है होर तेरा मुल्क माल ॥१९५७॥  
 सो शहावल शह-फतह के खग का । दिलावर निपट वाघ के वर्ग का ॥१९६४॥  
 फतह के दमामे पै लकडीकुं लोक । चल्या लाट का थाट संगात लीग ॥  
 गुसा ला हार शमशेर कुं हात ले । सरब दलकुं सब अपने मंगात ले ॥१९६६॥  
 यकायक जागे पीते ज्यो हिल्या । ज्यो अममान बादल के दल सो चल्या ॥१९६८॥  
 मुवादा नवी कर जमी भार मो । हवा पर रह्या आपने भार सो ॥  
 जो देखे दल उस शाह के कोट के । सो बिचके मलक अग के कोट के ॥१९७०॥  
 देखत सिलह मजोत का लकलफाट । गया सूर केरा मीना फाट फाट ॥  
 यकायक नजर ज्यो पड्या वो हजूम । हुए घावरे खलबला सब नजूम ॥  
 उठ्या गुल जहाँ का तहाँ बेकयास<sup>२</sup> । गई यो खबर शाह कुलजम के पास ॥  
 कि शहपाल बिन शाहरख बादशाह । ॥  
 तेरी सब विलायत कुं पामाल कर । वो आता है तेरे उपर जाल कर ॥  
 सुन्या शाह कुलजम जम इस बात कुं । दिया भेज हाजिब कुं इम गत सो ॥  
 कि "आना तुम्हारा हुआ क्या सबव । ॥१९७६॥  
 किमी कुंन था आज लग यो मजाल । जो मुज मुल्क उपराल<sup>३</sup> कर आये चाल ॥  
 खुलासा जा कुछ है सो कह खोल कर । शिताबी<sup>४</sup> सेती भेज देउ धोलकर" ॥१९७९॥  
 वगर इस वजा की ले हाजिब शिताब । ॥१९८१॥  
 मो शहवाल शह खुधवे बेतजीर<sup>५</sup> । दिया जाव कुं यो कर गँभीर ॥  
 कि "तुम जो गु लिस्ता<sup>६</sup> अरम से जिमे । पकड ल्याये है भेज देओ उसे ॥  
 जो वो आदमी है मेरे प्यार का । नही कोई दुनिया मे उस सारका ॥  
 मुरीवत सा देवंगे तो जाऊंगा । वगर नै तो तुमना प चड आऊंगा ॥१९८५॥  
 दिर्य बाज उमे याँ ते हिलसूँ न मै । कि गाड्या है रन थाँभ टलसूँ न मै ॥१९८६॥  
 सुन उ स बातकुं शाह-कुलजम वही । ॥१९९३॥  
 बह्या "जाके इतवार यो बोल उसे । कि आया है तूँ धुड लेता जिमे ॥  
 सलामत सो वो नै है इस ठार पर । कि लै दिन हुए उस जीवन मार कर ॥  
 तूँ अपने सरबदल सा जा याँ ते भाग ? नही तो तुजे मै करूँगा हलाल" ॥१९९६॥  
 गुसे साथ इस धात कह भेज वै । हुआ मुस्तअद<sup>७</sup> वेग लडने के तै ॥२००३॥  
 किस शहवाल बिन-शाहरख बे-नजीर । जो हाजिब ते कडुवे सुन्या वीर फेर ॥२००६॥  
 हुआ तुद होर तेज अधिक आग ते । गुसाला होकर अजदहार्<sup>८</sup> वाघते ॥२००८॥  
 उचा दल-पै-दल खुग चुपा रास्ता । किया हर तगफ ते सफ आरास्ता ॥

१ पून, २ अपरिमित, ३ ऊपर, ४ जल्दी, ५ अनुपम, ६ टलूँगा, ७ तैयार,  
 ८ अजगर ।

(म) युद्ध-वर्णन

हुए जमा जगी हजाराँ तमाम । कबीदस्त खूँख्वार शूराँ तमाम ॥२०१०॥  
 किये रूख दूँदे पर जो हर ठारते । जमी वैस गई थी उसी भार ते ॥२०१२॥  
 गजबनाक हो ज्यों अँगे दल हुए । कलेजे पहाड़ाँ के फट जल हुए ॥२०१३॥  
 सलहपोश पौलाद के कोट ज्यो । बड़ा शोर समूदर की लोट ज्यों ॥२०१५॥  
 उताले हो आफत भरे अज्म सों । खड़े आके मैदान में रज्म सों ॥  
 बह्या बाव जो क़ह्व का शोर साथ । शितत की अगिन सुल्ग उठी जोर साथ ॥  
 उठ्या गुल जहाँ का तहाँ "मार मार" । कयामत जमी पर हुई आशकार ॥  
 झलक देख बिज्ल्याँ सी तरवार के । उड़े फ़ाखते सख्त ससार के ॥  
 जो दो राज दो धेरते<sup>१</sup> बरहम<sup>२</sup> हुये । गगन सातो हैबत ते<sup>३</sup>, दरहम<sup>४</sup> हुये ॥२०२०॥  
 जो दौड़ उसके सफ<sup>५</sup> पर दिलेराँ<sup>६</sup> पड़े । तो बकर्या<sup>७</sup> उपरजा के शेरों पड़े ॥२०२३॥  
 सुटे खास होर आम कूँकाटकाट । जो किसकूँ न समझा अथा बाट घाट ॥  
 दिलेराँ जो शहवाल के पाये बल । सो फौजाँ कूँ एक घेर<sup>८</sup> ते उसके खँडल<sup>९</sup> ॥  
 सुटे<sup>१०</sup> धड़पोते<sup>११</sup> यों मुँड्याँ काट-काट । न थी बाट जाने किसे बाँते न्हाट<sup>१२</sup> ॥  
 जो दरचा लोहू हो उबलने लग्या । गगन इसपै कश्ती हो चलने लग्या ॥  
 सराँ तैरते लोहू के समदूर<sup>१३</sup> ते । जो दिसते अथे बुडबुडे दूर ते ।  
 धड़ाँ सब निपट मौज के लोट भार । थे डुबते निकलते निहंगा के सार<sup>१४</sup> ॥  
 बलायाँ के बानाँ<sup>१५</sup> कूँ ज्यों आंग लाइ । जमीं होर जमाने कूँ बेताग लाइ ॥  
 गजब पर गजब का जो वारा हुआ । सो ऐसा बड़ा कुछ धुलारा हुआ ।  
 दुन्या गैब<sup>१६</sup> हुई उस धुलारे<sup>१७</sup> मने । गँवाता गया देस अँधारे मने ॥  
 लिया गर्द जा ढाँप असमानकूँ । धुआँ साँप हो नीगत्या भानकूँ ॥  
 सो दरिया कुल्जम कूँ हैबत<sup>१८</sup> छुटी । जमीं के तले गाय<sup>१९</sup> अडरा उठी ॥  
 बड़ा रन पड़्या सख्त रगड़ा हुआ । कही नै सों नादिर<sup>२०</sup> यो झगड़ा हुआ ॥  
 हो देवाँ<sup>२१</sup> के हातों के बरहम तमाम । गया औट दरियाय कुल्जम तमाम ॥  
 फ़तह<sup>२२</sup> पाये शहवाल के लोग सब । किये चूर शमशेर सों ठोक सब ॥२०३७॥  
 जो कुदरत के बल सों अधिक फ़तह पाय । पकड़ शाह कुल्जम कूँ दरहाल ल्याय ॥  
 नजर उसपे शहवाल की ज्यों पड़ी । सो<sup>२३</sup> अरवाह<sup>२४</sup> उस राज की ज्यों उड़ी ॥२०४०॥  
 बोला कर नज़ीक उस उठा बोल यों । . . . . . ॥  
 कि "औतार था जग में ओ नेकनाम । वफ़ादार<sup>२५</sup> था आदम्याँ में तमाम ॥

१. तरफ से, २. छिन्न-भिन्न, ३. भय से, ४. छिन्न-भिन्न, ५. पाँती, ६. बहादुरी, ७. बड़े-छोटे, ८. किसी को, ९. एक ओर, १०. तोड़ा, ११. फेके, १२. धड़ पर से, १३. भागा, १४. समुद्र, १५. सदृश, १६. तीर, १७. लुप्त, १८. गर्द, १९. भय, २०. भूमिधारक, २१. दुर्लभ, २२. भगवान्, २३. विजय, २४. त्यों, तत्क्षण, २५. प्राण, २६. भक्त ।

तुजे छोड़ हगगिज न देसूँ इताल<sup>१</sup> । कल्लंगा मिला घूल में पायमाल ॥  
 कि मँपडचा<sup>२</sup> है तू आज मुज हात में । तूं मच बोल झूठी न हो बात में ॥  
 उमे क्या किया भारकर का<sup>३</sup> सुदया<sup>४</sup> । ॥२०४६॥

गठे पट लग्या यो मुसल्लम<sup>५</sup> दुंवाल । सो वा राज है त्यो कहा खोल हाल ॥२०४९॥  
 कि "बो जान तेरा तो भीता अहै । मुवा नै कि अजऊँ वो जीता अहै ॥२०५०॥  
 ठनी के बदल में मँगाया अया । जो भाई को मेरे वो मारघा अया ॥  
 गुना था सो घँद में रह्या मैं न भार । मलामत मो है वो जनन<sup>६</sup> एक ठार ॥  
 जो तुज ते रजा<sup>७</sup> टुक अगर पाऊँ मै । तो न्या उसबुं दरहाल दिखलाऊँ मै" ॥२०५३॥  
 बीला "भेज उन मेरे मन-भीत कूँ । मुह्वत सो कर ताजा फिर रीत कूँ" ॥२०६०॥  
 यकायक खुले बच्चन के ज्यो किवाड । मो ल्याये उमे बद म्याने<sup>८</sup> ते काड ॥२०६२॥  
 देख्या ज्या ओ दीदार<sup>९</sup> सहवाल का । खिल्या सिरते<sup>१०</sup> "बै" फूज ज्यो डाल का ॥  
 पड्या आद के शाह<sup>११</sup> के चन पर । कल्या यो कि "ऐ खुस्तने बहावर ॥  
 बडे बच्चन मेरे देख्या आज तुज । ॥  
 गया मब मेग गुम तेरे घेर<sup>१२</sup> ते । वि जिवदे बँचाया मुजे सीगते<sup>१३</sup>" ॥२०६६॥  
 सह इस बात ते जौक<sup>१४</sup> पा बेशुमार । सो पाया उमे अपने फजंद सार<sup>१५</sup> ॥  
 उचा<sup>१६</sup> लेवे छाती कूँ लग्या वही । कि औतार कुछ है कि पाया वही ॥  
 फजीलत<sup>१७</sup> मैं अजमा<sup>१८</sup> के देखन लग्या । जे कुछ पूठिया मो नो बोलन लग्या ॥२०७०॥  
 हरेक बात पर उसवी हँरां हुआ । . . . ॥  
 केने लग खुश्या दिलमने<sup>१९</sup> आनकर । केनेक देग उन सह कु बहुमान कर ॥  
 दे उमरा मुलन उम रवाना किया । अपे आपने मुल्क जाना किया ॥  
 उश्या फतह के ज्या दमामे कु ठाक । हुये शाद<sup>२०</sup> तिगलाह म्याने<sup>२१</sup> के लो ॥२०७४॥  
 चल्या आपने शहर में नीट सा । ले मैफुलमलूक कू पीट मो ॥२०७६॥  
 खलब<sup>२२</sup> मत्र मुल्मिस्तां अरम का तमाम । हा खुगहाल पाया अनंद खामो-आम ॥२०७८॥  
 बदीयुलमाल आपने तनमने<sup>२३</sup> । खुली ज्या कली फूलनी वनमने ॥

### (य) विवाह-भोज—

उतम<sup>२४</sup> शहवान गुनी हक-गुजार । रोमारोम पाई सुशी बेशुमार ॥२०८०॥  
 बना लन बजा<sup>२५</sup> जौक<sup>२६</sup> व हाल सो । दुआ अपे फजन्द सहवाल कूँ ॥  
 कही यो कि "ऐ शाह, आफाकगीर<sup>२७</sup>" । ॥  
 चो कँवली महली बदीयुलजमाल । पुतली तेरे नैन कां जग उजाल ॥२०८३॥

१ दूंगा, २ अनी, ३ पडा, ४ कहां, ५ फेंका, ६ पूरी तौर से, ७ जतन से,  
 ८ छात्रा, ९ भाग्य, १० बघन के बीच, ११ दर्शन, १२ फिर से, १३ वहीं, १४ जल के  
 राजा, १५ तेरे पास, १६ फिर से, १७ प्रसन्नता, १८ पुत्र-सरोला, १९ उठा, २० बहापन,  
 २१ परीक्षण, २२ दिल में, २३ प्रसन्न, २४ निलोक में, २५ दुनिया, २६ मन में,  
 २७ सच्ची, २८ लाल प्रकार, २९ प्रसन्न, ३० चन्वर्ती।

... .. । सौ सैफुलमलूक सो मिला तू ताल<sup>१</sup> ॥२०८६॥  
 उनों दोनों एक होवना साज है । दुन्या दीन<sup>२</sup> में यम बड़ा काज है ॥२०८९॥  
 सो शहवाल माँ ते सुन्या यो जो बात । कबूल्या<sup>३</sup> वहीं लाख खुशियाँ संगीत ॥२०९०॥  
 खबर यो तुरत जगमे जाने लग्या । जमी का निकल गंज<sup>४</sup> आने लग्या ॥२०९५॥  
 नगर सब गलिस्ताँ अरम का तमाम । हुआ साफ़ ज्यों जामेजम का तमाम<sup>५</sup> ॥२०९९॥  
 परे होर परयाँ जगके सारे मिले । मराये मजालिस<sup>६</sup> बिले-दर-बिले ॥२१००॥  
 परयाँ चुलबुल्याँ का सभा साज सों । लग्याँ नाचने मिलके यों नाज सों ॥२१०१॥  
 पंखे पंख<sup>७</sup> जडत के सदर<sup>८</sup> जगमगाहट । लग्या होवने चौकदन<sup>९</sup> तमतमाट ॥  
 परयाँ बेबदल याँ सों धाइयाँ तमाम । ... .. ॥  
 दहन<sup>१०</sup> तंग कर मांग वारी कतर । शबेकद्र<sup>११</sup> ते बाल बारीकतर ॥  
 हुई मस्त मजलिस खुशावाज<sup>१२</sup> सों । दिवानी कियाँ पातुराँ<sup>१३</sup> नाज सों ॥  
 डुमकन्याँ मिल्याँ डोमनियाँ लोलियाँ । शकर शहद शीरी<sup>१४</sup> ते मिठ<sup>१५</sup> बोलियाँ ॥  
 एकस एकते एक तरन्याँ<sup>१६</sup> अहै । सो कतार कयाँ मोर हरन्याँ अहै ॥  
 सो पुरपे च जुल्फाँ<sup>१७</sup> कुं देख गाल पर । कुँडल घाल बैठा भुजंग भाल पर ॥  
 पड़े लाल काले सो जाँ ताँ<sup>१८</sup> तले । सो ज्यों नाग लड़ने है पावाँ तले ॥  
 न जानूँ कहाँ कूड मंतर सिख्याँ । पदम पाँव ना किसके जंतर सिख्याँ ॥२११०॥  
 लग्याँ नाचने<sup>१९</sup> तै जो सदरे-सदर<sup>२०</sup> । तिरकने लग्याँ खुश जिधर का तिधर ॥  
 जो गत ले उठे मँडले<sup>२१</sup> फिर तमाम । सुटे<sup>२२</sup> होश जागे पोते<sup>२३</sup> धर तमाम ॥  
 मँदल काड मंदल<sup>२४</sup> वजाने लगे । गीताँ<sup>२५</sup> काड<sup>२६</sup> पकर्याँ सो ल्याने लगे ॥  
 जँतर काड सों जाँ उचाये हलों । सो मजलिस<sup>२७</sup> कुं मस्ती में ल्याये हलों ॥  
 जो खेलन लगे नग्मे हर ठार ते । हिल्याँ सुन चतुर पुतलियाँ ठारते ॥  
 केता जो अथीं तान पर तान क्योँ । रहीं डाल पँख सूर असमान क्योँ ॥२११६॥  
 देख उस वज्म का खुश सोहावा वो नूर<sup>२८</sup> । लगे भेजने मरहवा चाँद-सूर ॥  
 जो मजलिस कुं खाना खिलाने प आय । सफा<sup>२९</sup> खुश कँदूरया सो ल्या ल्या बिछाय ॥  
 कँदूरयाँ शहाने<sup>३०</sup> सो लख जिन्स क्योँ<sup>३१</sup> । रँगारँग शीरिनियाँ<sup>३२</sup> हर एक जिन्स क्योँ ॥२१२०॥  
 जो फुलनीर<sup>३३</sup> सों हात सबके धुलाय । कँदूरे खिलाने ले जा वैसलाय ॥२१२२॥  
 सो अस्मान बादल कुं संगीत ले । चँदर-सूर के जाम<sup>३४</sup> दो हात ले ॥

१. अब, २. लोक-वेद, ३. स्वीकार, ४. खजाना, ५. जमशेद का प्याला, ६. सभा, ७. प्रत्येक पंख में, ८. आँगन, ९. चारों ओर, १०. मुख, ११. दूज का चाँद, १२. सुस्वर, १३. नर्तकियाँ, १४. ईरानी, १५. मधुर, १६. तरणियाँ, १७. अलकें, १८. जहाँ-तहाँ, १९. हँसने, २०. आँगन-आँगन, २१. मँडराने, २२. फेंके, २३. जगह पर से, २४. पखावज, २५. करुण रस, २६. राग, २७. सभा, २८. प्रकाश, २९. शाबाश, ३०. अच्छे, ३१. प्रकार की, ३२. मिठाइयाँ, ३३. गुलाबजल, ३४. प्याले ।

कमर बाँध खुश हो अपे आवदार<sup>१</sup> । नजर सारी मजलिस पै रग ठार-ठार ॥  
 जल अमृत त्या त्या पिलाने लगा । पिला प्यास भर-भर चलाने लगा ॥  
 खलायक<sup>२</sup> वले-दर-वले<sup>३</sup> चासो-आम<sup>४</sup> । कँदूरे ते फारिम<sup>५</sup> हुए खुश तमाम ॥  
 जडत<sup>६</sup> के तवक<sup>७</sup> हर एक असमानते । भर उस म्याने<sup>८</sup> तिगटे वट्या<sup>९</sup> पान के ॥  
 अँवर<sup>१०</sup> होर खुशबू कदम फूल-माल । फिराने लगे जान साहेब जमाल ॥  
 जहाँ लग अथ्या<sup>११</sup> जग मे फुलवाडियाँ । जहाँ लग जो गँभीर पनाडियाँ ॥२१३०॥  
 सो या राच तिल शह के आये वही । जो थक पान होर फुल उवर्या नहीं ॥  
 मनध्वर<sup>१२</sup> किये अजुमन<sup>१३</sup> कूँ तमाम । जवरजद<sup>१४</sup> के दीशे जमुरद<sup>१५</sup> के जाम ॥  
 मदनमस्त साकी<sup>१६</sup> छनीले जवान । अधिक उँद भरे सुश-रँगीले जवान ॥  
 मदन मद पियाले भरा साज मो । खडे आके मजलिममने<sup>१७</sup> नाज<sup>१८</sup> सा ॥  
 फिराने लगे दौर-पर-दौर सुश । किये मारी मजलिम केरा तीर<sup>१९</sup> सुश ॥  
 जव वा रँगी मद अमरदार<sup>२०</sup> वा । मता वासते उसके ससाग वा ॥२१३६॥  
 पियाले जवाहर के फिरने लगे । मती<sup>२१</sup> होके जानाँ सा गिरने लगे ॥  
 मो पडते थे जाँ मद के बुँद तूटकर । जमी नाचती थी वहाँ ठठकर ॥  
 हुए थे मती कोई न ये होशियार । जे कोई पीवे वह बयो रहे हाशियार ॥

### (२) सोहागरात—

तजल्ली सो जलवे की ज्यो रात<sup>१</sup> आइ । सो वै गैवते<sup>२</sup> फँज<sup>३</sup> लख वात<sup>४</sup> पाइ ॥२१४३॥  
 मुरादा<sup>५</sup> जो धरते थे जग दिल मने<sup>६</sup> । मो पाये उसी रात थक तिल<sup>७</sup> मने ॥२१४५॥  
 निदल रूप क्याँ चुलबुल्या शहपर्या<sup>८</sup> । उतमजात, उतमजान क्याँ गुनभर्या<sup>९</sup> ॥२१४७॥  
 वदीयुलजमाल अचपली<sup>१०</sup> नाग कू । दुवाया जरीने<sup>११</sup> मे झलवारसो ॥  
 जो जलवा दिलाने होयाँ मुस्तअद<sup>१२</sup> । महल जलवे कारन किया मुस्तअद ॥  
 जवाहर के मँडवे सो छाया तमाम । मुरस्ता<sup>१३</sup> के पदें वैवायाँ तमाम ॥२१५०॥  
 हरेके महल सोफियाँ<sup>१४</sup> मने रग-रग । जडत के रचे ल्या छपर के पत्रग ॥२१५१॥  
 मिल्याँ खुश हो मार्याँ वा बायाँ तमाम । शा<sup>१५</sup> आरस<sup>१६</sup> के पास आर्याँ तमाम ॥  
 दुयाँ उस घडी जाँ हुई सीरते<sup>१७</sup> । खुले वस्त गोतिया<sup>१८</sup> के एक घेरते<sup>१९</sup> ॥  
 उत्तम डोमनियाँ मिल के गाने लग्याँ । सुरेले<sup>२०</sup> अहाने सो गाने लग्याँ ॥

१ चमकदार, २ जनता, ३ भीड़-पर-भीड़, ४ बड़े-छोटे, ५ छुट्टी पा, ६ जडाऊ, ७ चाल, ८ उत्तम, ९ बीडे, १० एक सुगंधित पदार्थ, ११ थी, १२ प्रकाशमान, १३ सभा, १४ एक पत्रा, १५ पत्रा, १६ मधुवाला, १७ सभा में, १८ लीला, १९ ढग, २० प्रभाव-कारी, २१ मस्त, २२ सोहागरात, २३ अदृष्ट से, २४ वरदान, २५ भाँति, २६ अभि-लापाएँ, २७ दिल में, २८ क्षण, २९ पत्नी, ३० चचला, ३१ अनूपण ३२ तैयार, ३३ सुनहरी, ३४ सजावट, ३५ दुलहा, ३६ दुलहन, ३७ फिर से, ३८ भाई-बंदो, ३९ एक ओर से, ४० एक गीत ।

नवलजात सैफुलमलूक बस्तवर<sup>१</sup> । उमस<sup>२</sup> सात आ बैठिया तरुत पर ॥  
 बनी होर बने लोक पलाने<sup>३</sup> लगे । शौ-आरुस के तै सराने लगे ॥  
 असादत के सायत<sup>४</sup> हवैदा<sup>५</sup> हुआ । सो काजी<sup>६</sup> मसीहा<sup>७</sup> हो पैदा हुआ ॥  
 लिया शौ केरा हात अपन हात मे । खुशी सों पढ़या अक्द<sup>८</sup> उस सात<sup>९</sup> में ॥  
 दुआ सर किया<sup>१०</sup> ज्यों खुश-आईन सों<sup>११</sup> । मलायक<sup>१२</sup> किये खत्म<sup>१३</sup> आमीन<sup>१४</sup> सों ॥  
 मिले शहके चौधर<sup>१५</sup> सब गोतियाँ । लगे वारने शौ<sup>१६</sup> उपर मोतियाँ ॥२१६०॥  
 चले जलवे<sup>१७</sup> के महल में शौ कुं ले । किवाड़ा सो अकवाल<sup>१८</sup> करे खुले ॥  
 खडा मुश्तरी<sup>१९</sup> नाज का साज<sup>२०</sup> कर । सुरज जगमगाता सो असमान पर ॥  
 मशाता<sup>२१</sup> हो जोहरा उतर आई वेग । चमक नूर का ल्या के झमकाइ वेग ॥  
 निछल नूर का ल्याके पर्दा बँदाय । शौ-आरुस<sup>२२</sup> दोनों कुं ल्या बेसलाय ॥  
 जो पर्दे मे ते हात हलने लगे । सो लख धात<sup>२३</sup> फूलाँ उछलने लगे ॥  
 देखु जलवा मशाता जो निरवाल<sup>२४</sup> हुई । सो भोगी नवलशाह की वाँ चाल हुई<sup>२५</sup> ॥  
 नवी<sup>२६</sup> पर हजारों दरुद<sup>२७</sup> भेज वै । चल्या लेके आरुस कूँ सेज वै ॥२१६८॥  
 दे मुख ज्यों शौ ने आरुस का । खुल्या सिरते<sup>२८</sup> ज्यों फूल फिरदौस<sup>२९</sup> का ॥२१७१॥  
 चिड़ी खूब महबूब<sup>३०</sup> देख हाथ मे । रिझाने लग्या बातकर बात में ॥२१७२॥

### (ल) बरात-बिदाई—

हुआ जग में मशहूर हर ठाँव यों । बसे लगा दुनिया मे रह्या नाँव यो ॥२१९५॥  
 शिगुफ्ता हो शहवाल शह नेक-नाम । उमस<sup>३१</sup> पा खुलाये खजाने तमाम ॥  
 ..... । लग्या बाँटने माल मन भाये त्यों ॥  
 किसे नौ रतन होर किसे मोतियाँ । किसे हतकडक<sup>३२</sup> होर पदक जोतियाँ ॥  
 किसीकूँ<sup>३३</sup> जडत के उत्तम कण्ठमाल । किसीकूँ जडत की पटी जग उजाल ॥  
 किसे जात तेजी<sup>३४</sup> किसे मस्त हस्त । किसे खूब तोहफे<sup>३५</sup> किसे खूब<sup>३६</sup> बस्त ॥२२००॥  
 किया दान वेमिस्ल यकधेरते<sup>३७</sup> । दिया खिलअताँ<sup>३८</sup> सबकूँ यों सीरते<sup>३९</sup> ॥  
 किस मेहमान सबकूँ किया सरफ़राज । ..... ॥२२०२॥  
 रजा<sup>४०</sup> ले जो मेहमानदाराँ<sup>४१</sup> चले । दुआ शाहकूँ कर हजारों चले ॥२२०४॥  
 डुवी थी सोने मे जमी जाँ-तँहा । कि ऐसा सखी<sup>४२</sup> बेबदल<sup>४३</sup> है कहाँ ॥२२०५॥

१. भाग्यवान्, २. उत्साह, ३. गाने, ४. शुभ मुहूर्त, ५. प्रकट, ६. पुरोहित, ७. प्राणद, ईसा, ८. ब्याह, ९. उसके साथ, १०. शुरू किया, ११. अच्छे ढंग से, १२. फरिश्ते, १३. समाप्त, १४. एवमस्तु, १५. चारों ओर, १६. दुलहा, १७. सोहाग, १८. प्रताप, १९. शुक्र तारा, २०. सज्जा, २१. नायन, २२. दुलहा-दुलहन, २३. भाँति, २४. अदृष्ट, २५. थी, २६. पैगम्बर, २७. प्रशंसा-वाक्य, २८. फिर से, २९. नंदन, ३०. प्रिय, ३१. उत्साह, ३२. हाथ के कटक, ३३. किसी को, ३४. अरबी घोड़े, ३५. भेट, ३६. सुन्दर वस्तु, ३७. एक ओर से, ३८. परिधान, ३९. फिर से, ४०. आज्ञा, ४१. मेहमान, ४२. सुन्दरी, ४३. अनुपम ।

जो गँभीर शहवाल दाना नरेक<sup>१</sup> । केतक दिन शौ-आरुम कूँ रख नजीक ॥२२०७॥  
 मोंया भेजने उसके माँ-बाप पास । दिया खूब वस्ता<sup>२</sup> जो थे अपने पास ॥  
 चँदर-सूरते दर्जका<sup>३</sup> कइ हज़ार । जवाहर भरे मँदुका<sup>४</sup> वेगुमार ॥  
 केतेक जिनम के खूब वाँदी-गुलाम । केतेक पातुराँ जिल्द नादि<sup>५</sup> तमाम ॥२२१०॥  
 मुकल्लल<sup>६</sup> जडित की अमीरी<sup>७</sup> गँभीर । कराया तुरत मुस्तइद<sup>८</sup> वेनजीर<sup>९</sup> ॥  
 दुआ पर दुआ कर गले लाय कर । शौ-आरुम कूँ उममें वसलायकर ॥२२१२॥  
 वडे गलगले सो रवाना किया । ॥२२१३॥

(व) सिंहलद्वीप से अपने देश में—

जो अँपडे सिरदीप के राज पास । महाराज गँभीर सिरताज पाम ॥२२१६॥  
 वडी शान सो लाइया शह में । हुआ आशकारा<sup>१</sup> यो चॉवेर<sup>२</sup> में ॥२२१८॥  
 मिला शाहजादी मो आ भाइ वो । तेखत भाइ कूँ सुश गले लाइ वो ॥२२१९॥  
 नेके यार मायद वफादार<sup>३</sup> सो । मिलाया सुश सीने लाइया प्यार मो ॥२२२०॥  
 केनक दिन वहाँ माँदगो दूर कर । ॥  
 समज खूब सायद दुम्बियारे की घात<sup>४</sup> । चलाया हज़ा<sup>५</sup> स्वास्तगारी<sup>६</sup> की बात ॥  
 मा ओ जगपती राजा राजी हुआ । ॥  
 किया सुश हो शह मेजवानी<sup>७</sup> शुरु । ॥  
 जो जाँ लग कलावन्त ते वाँ भरे । तमाम आपने ताथफाँ मो<sup>८</sup> खडे ॥२२३२॥  
 उचाने लगे इस वजा<sup>९</sup> तमतमाट । जो तिरलोक का वाँ भर्या आके हाट ॥२२३३॥  
 भर्या वास खुरइ<sup>१०</sup> का ठार-ठार । सिरदीप सारा हुआ नौजहार<sup>११</sup> ॥२२३७॥  
 नआदत<sup>१२</sup> की सायन<sup>१३</sup> में खुशहाल यो । पड़्या फूठका अजद उम टाठ सो<sup>१४</sup> ॥२२४०॥  
 मिले ज्यो ओ शहजादी होर यो जवान । हुआ शाद<sup>१५</sup> मैफुलमलूक का परान ॥  
 समेट मालचन बात ते वेहिसाय<sup>१६</sup> । चले मिस्र के मुल्क कूँ फिर शिताव<sup>१७</sup> ॥२२४२॥  
 जो आसिम नवशाह टुपी झूक-झूक । हुआ था जो काडी नमन<sup>१८</sup> मूख-सूर ॥  
 यकायक खुदा होर आनद की । सुन्धा ज्यो<sup>१९</sup> खबर अपने फजंद की ॥  
 फुग्या<sup>२०</sup> होर आया रगे-रग परान । बुढाढाडा था मो हुआ फिर जवान ॥२२४५॥  
 गया सामने होर मित्या पूतवू । गले ला किया पूतकूँ गुल तिमू<sup>२१</sup> ॥२२४८॥  
 सुरयाँ सा बुला शह में लाइया । ॥

१ पुरुष एक, २ अच्छी वस्तुएँ, ३ बराबर का, ४ दुर्लभ, ५ सुनहरो, ६ हीदा,  
 ७ तैयार, ८ अनुपम, ९ प्रकट, १० चारो ओर, ११ भक्त, १२ भाति, १३ धीरे,  
 १४ मँगनी, १५ आतिथ्य, १६ सामाजिको के साथ, १७ प्रकार, १८ सुगधि, १९ नववसात्र,  
 २० शुभ, २१ मुहूर्त, २२ जैते, २३ प्रसन्न, २४ अगन्त, २५ जल्दी, २६ तीव्रो-  
 जैती, २७ जैते ही, २८ प्रफुल्लित हुआ, २९ तिससे ।

दिया आपनी बादशाही उसे । सलामाँ किये सब सिपाही उसे ॥२२५०॥  
 लाया करने सैफुलमलूक राज खुश । .....॥  
 खुदा उसके मन की दिया ज्यों मुराद<sup>१</sup> । देवे हर तलबगार का वों मुराद ॥  
 कहाँ आसमाँ होर कहाँ धरतिरी<sup>२</sup> । कहाँ आदमी होर कहाँ शहपरी<sup>३</sup> ॥२२५३॥  
 खुदा यो मिलाने जो आता, अहै । सो इस धात<sup>४</sup> सों ला मिलाता अहै ॥

(श) कविकी ओरसे—

लिख इस धात सों दास्ताँ बेनजीर<sup>५</sup> । रिसाला<sup>६</sup> लताफ़त<sup>७</sup> भर्या दिलपजीर<sup>८</sup> ॥२२५७॥  
 जो लिखने न सक वो रसन<sup>९</sup> का क़लम । सो माँदा हो पड़ता अथा दम-बदम<sup>१०</sup> ॥  
 निझाँ दिलकी अँखियाँ सों देखी<sup>११</sup> मने । तो हर एक बैत<sup>१२</sup> इस सफ़ीने मने<sup>१३</sup> ॥  
 जगा जोते महबूब<sup>१४</sup> हें वकदार<sup>१५</sup> । मेरे फ़िक्र पर्दे ते<sup>१६</sup> निकली बहार<sup>१७</sup> ॥२२६०॥  
 मलायक<sup>१८</sup> सो बालाय चखें-बरी<sup>१९</sup> । कहें इस सफ़ीने कुँ देख आफ़री<sup>२०</sup> ॥२२६२॥  
 रतन पारखी बेबदल<sup>२१</sup> मुश्तरी<sup>२२</sup> । मेरे जौहराँ<sup>२३</sup> का हुआ मुश्तरी<sup>२४</sup> ॥  
 कि मेरे चतुर शहनवल लालते । वुलँद<sup>२५</sup> उसके गंभीर अकबाल तै ॥  
 न कै ऐसे जौहर<sup>२६</sup> है झलकार के । न किस खान में होये संसार के ॥  
 कि निकले है नादिर<sup>२७</sup> हो जौहर मेरे । ..... ॥२२६६॥  
 हरेकस<sup>२८</sup> कुँ है कुर्व<sup>२९</sup> घनमाल का । मुजे कुर्व इस जौहराँ लाल का ॥ २२६८॥  
 कि चोराँते इस माल कुँ है दगा<sup>३०</sup> । ..... ॥२२६९॥  
 जो सुल्तान अंबदुल्ला इन्साफ<sup>३१</sup> कर । मेरे जौहराँ पोते<sup>३२</sup> दिल साफ<sup>३३</sup> कर ॥२२७१॥  
 देवे दाद मेरा बहुत मान<sup>३४</sup> पाउँ । ..... ॥  
 कि यो शाह मेरा खरीददार होय । तो ताजा मेरा तबा गुलजार होय ॥ \* \* \*  
 कि गमगी<sup>३५</sup> हूँ मै सख्त संसार ते । घरूँ दग़दगे<sup>३६</sup> लाख इस आजार<sup>३७</sup> ते ॥  
 परेशानगी<sup>३८</sup> मे जम्या ख्याल मे । ले ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल मै ॥२२७५॥  
 जो भोगी नवलशाह सेती फर्ह<sup>३९</sup> पाउँ । तो इसते रतन खास घुँड घुँड<sup>४०</sup> ल्याउँ ॥  
 अगर्चे<sup>४१</sup> हूँ शह के वच्चा<sup>४२</sup> मे हक़ीर<sup>४३</sup> । बले शेर के फ़न<sup>४४</sup> मे हूँ बेनजीर ॥

१. मनष्कामना, २. पृथ्वी, ३. परी नारियों की, ४. भौति, प्रकार, ५. अनुपम,  
 ६. पुस्तिका, ७. मंजुलता, ८. मनोहर, ९. रसों का, १०. क्षण-क्षण, ११. ध्यान से देख,  
 १२. शेर, पद, १३. कागज में, १४. प्रिय, १५. सम्माननीय, १६. चिंतन के भीतर से,  
 १७. बाहर, १८. फरिश्ते, १९. ऊपरी स्वर्ग, २०. शाबाश, २१. अनुपम, २२. शुक्रतारा,  
 २३. रत्न, २४. खरीदार, २५. ऊँचा, २६. प्रताप, २७. दुर्लभ, २८. हरेक को, २९. स्नेह,  
 नजीकपन, ३०. धोखा, ३१. न्याय, ३२. रत्नों पर से, ३३. न्याय, ३४. चित्त, ३५. शोकाकुल,  
 ३६. भय, ३७. दुःख, ३८. आनन्द, ३९. ढूँढ-ढूँढ, ४०. यद्यपि, ४१. दासों, ४२. छोटा सा,  
 ४३. कला ।



कि मुँह गोल यो मैं वूँ कया अपें । गवाही देवें शेर<sup>१</sup> अपें ना छुपें ॥  
 बहुरहाल यो नज्म<sup>२</sup> अल्हाम<sup>३</sup> सां । किया मैं नवलशाह के नाम गो ॥  
 बरमयक हजारहोपजतीम<sup>४</sup> (११३५ हि०) में । किया गत्म<sup>५</sup> यो नज्म दिन तीनमें ॥२२८०॥  
 पद्मा वू तो सत्र आने यो कामकू । देवें जौक<sup>६</sup> अधिक ग्याग होर आम<sup>७</sup> के ॥२२८२॥  
 लिखनहारा यो लाभ पर लाभ पाय । . . . . . ॥  
 मुवारक अछो<sup>८</sup> शाहकू यो सुदाम<sup>९</sup> । बहक के मुहम्मद अलैहिस्तलाम<sup>१०</sup> ॥  
 मुवात्रि<sup>११</sup> घडी मे किया मैं तमाम<sup>१२</sup> । मुहम्मद नबी पर हजागं सलाम ॥२२८५॥

## २ तूतीनामा\*

### (१) कया-आरभ

वने<sup>१</sup> है जा था कोइ सीदागर एक । वजाहनमने<sup>२</sup> पावमीरत<sup>३</sup> में नेव ॥१४७॥  
 उनम भाग वा भोगिनी<sup>४</sup> वदनवर<sup>५</sup> । घर उनका सी था ऐन<sup>६</sup> बदर के सार<sup>७</sup> ॥  
 जेते उन जमाने के सीदागरां । ओते उनके अगे थे जो चाकरा ॥  
 किया वा मुदा यो उमे मफराज<sup>८</sup> । जो वे माता दरिया<sup>९</sup> उपर उगवे जहाज ॥१५०॥  
 शर्हापाम<sup>१०</sup> ने कुछ सा उस पाम था । यत्र<sup>११</sup> नीरस्तन गज<sup>१२</sup> नी राम था ॥१५१॥  
 हुआ घग्मने<sup>१३</sup> एक फज्द उसे । सो वंमा हुआ आज लग नै किसे ॥१५४॥  
 घर उनका झमकने<sup>१४</sup> लगा नूर<sup>१५</sup> ते । मितारा चल आया मगर<sup>१६</sup> दूरते ॥१५६॥  
 केतक घोम कू जो हुआ वह जवान । . . . . . ॥१५७॥  
 न्हनी एक महबूब<sup>१७</sup> महताव से । रताफन<sup>१८</sup> में निर्मल निछल आव<sup>१९</sup> से ॥  
 .. . . . . . ॥ किया लाग्य युधिर्पा मती कार रौर<sup>२०</sup> ॥  
 केतक दिनकुं घरमें ते जो वो जवान । निवल भार<sup>२१</sup> आया ॥१६०॥  
 मो वाजार घर मंग करता चला । . . . . . ॥  
 मो रावी<sup>२२</sup> एवम के देगा हात मे । जो मुग्गोत्ता<sup>२३</sup> है वो हर बात में ॥१६२॥  
 हजम<sup>२४</sup> अपने दिलमें वरा<sup>२५</sup> बेशुमार<sup>२६</sup> । लिया मौल रावीकुं दे हुन<sup>२७</sup> हजार ॥  
 सुशी सा जो आया फिर अपने मदिर । उठन बोल रावां कि "ऐ दस्तगीर<sup>२८</sup>" ॥

१ पद्य, २. कविता, पद्य, ३ भगवद्वाणी, ४ ११३५ हिजरी सन्, ५ समाप्त,  
 ६ स्वाद, आनन्द, ७ छोटे-बड़े, ८ रहो, ९ सदा, १० उस पर सलाम, ११ शुभ,  
 १२ समाप्त ।

\* 'तूतीनामा'—सिलसिला यूसुफिया, हैदराबाद, १३५७ हि० ।

१३ कहते, १४ दर्जे में, १५ सदाचार, १६ ऐश्वर्यवाली, १७ भाग्यवान्, १८ ठीक,  
 १९ बदरगाह सदृश, २० भाग्यशाली, बडा, २१ समुद्र, २२ शाही के पास, २३ अकेला, २४  
 खजाना, २५ घरमें, २६ चमकने, २७ प्रकाश, २८ मानो, २९ प्रियतमा, ३० मजलता,  
 ३१ चमक, पानी, ३२ शुभकार्य, ३३ बाहर, ३४ तोता, ३५ कलरव करता, ३६ लालसा,  
 ३७ रता, ३८ अपरिमित, ३९ दक्खिनी स्वर्ण मुद्रा, ४० अबलघ्न देनेवाले ।

नुमाइश मै<sup>१</sup> गरचे<sup>२</sup> मुठी पर<sup>३</sup> हूँ मै । बले<sup>४</sup> इल्म<sup>५</sup> के फ़र्न<sup>६</sup> में बेहतर हूँ मैं ॥  
 जहाँ लग जहाँ<sup>७</sup> में है अहले-कलाम<sup>८</sup> । है हैरान<sup>९</sup> मेरे वचन ते तमाम ॥  
 कमीना<sup>१०</sup> हुनर कुछ जो है मुज में एक । कहूँगा तुसों<sup>११</sup> खोल अजमा के<sup>१२</sup> देख ॥  
 कि जैसा अंगे<sup>१३</sup> होनहार है काम । समत है जो अब खोल बोलूँ तमाम ॥  
 कि दो तीन दिन के पछे देख याँ । कि आता है यक के सेती<sup>१४</sup> कारवाँ<sup>१५</sup> ॥१७०॥  
 जिनन पास अंबर<sup>१६</sup> है इस शह्र बीच । खरीद आ करनहार है सब बहीच ॥  
 वो ना आये लग हो खबरदार तूँ । वो अंबर सो ले मोल यकवार तूँ ॥  
 मेरी बात सुन होवेगा कामयाब<sup>१७</sup> । है इसमे तुझे फ़ायदा बेहिसाब<sup>१८</sup> ॥  
 हो खुशहाल<sup>१९</sup> इस बातते वो जवान । जिनन पास अंबर अथा पा निशान<sup>२०</sup> ॥  
 लिया मोल एक घेर सेती<sup>२१</sup> बेशुमार<sup>२२</sup> । लेजा अपने घरमे भराया अंबर<sup>२३</sup> ॥  
 यकाएक ऐसे मे वो कारवाँ । सो आया वो रावाँ<sup>२४</sup> कहे त्यों च वाँ ॥१८६॥  
 वो अंबर वजा<sup>२५</sup> चौगुने भोलसों । दिया उनकूँ सुन्नेकेरे तोलसों ॥१८८॥  
 जो हर एक छिन दिल मने<sup>२६</sup> शौक आन । चल्या फेर बाजारकूँ वो जवान ॥१९०॥  
 देखा एक मैनाँ कुँ मिठ बोल खूब<sup>२७</sup> । उसे भी लिया होर दिया मोल खूब ॥  
 मुरस्साके खुश एक पिजरे में छोड़ । रख्या ल्याके राँवी के नज़्दीक जोड़ ॥  
 बले अवल राखी में कुछ और था । ..... ॥  
 ..... । कहै हर घड़ी वो हिकायत<sup>२८</sup> नवी ॥  
 जो नागाह बातों में उस ज्वान साथ । कह्या दरिया<sup>२९</sup> की जो तिजारत की बात ॥  
 सो बहुते च आया उमस<sup>३०</sup> उसके ते । दर्या के सफ़र का सो कर अज़म<sup>३१</sup> वै ॥  
 लिया बोल दिलमे जो बेहतर है जाउँ । तमाशा देखूँ माल ले कुछ मै आउँ ॥१८७॥  
 अपस में अपे फ़िक्र<sup>३२</sup> कर इस वजा । ..... ॥  
 ले तोते कुँ मैना कुँ वे हाथ मे । सो औ रतकन आया उसी साथ मे ॥  
 गले ला मुहब्बत सों गुजरान बात । वो दोनों पँख्याँ कूँ सो दे उसके हात ॥  
 हो मुस्तैद<sup>३३</sup> घरमे ते बाहर हुआ । सो वेगी सेती वे मुसाफ़िर हुआ ॥  
 सफ़र में लगा मर्द कूँ जो दरग<sup>३४</sup> । सो औरतके तै घर लग्या सख्त तंग ॥  
 न गमता देखत वक्त हैरान होय । ..... ॥  
 जो थी घर मे म्हाड़ी<sup>३५</sup> सो जा वाँचढी । हलों<sup>३६</sup> खोल खिड़की निझाती<sup>३७</sup> खड़ी ॥  
 सो ऐसे मने<sup>३८</sup> यक छबीला जवान । परी उसकूँ देखे तो देवे परान ॥१९७॥

१. देखने में, २. यद्यपि, ३. पंख, ४. लेकिन, ५. विद्या, ६. कला, ७. दुनिया, ८. वाणीपुत्र, ९. चकित, १०. छोटा-सा, ११. तुझसे, १२. परीक्षा कर, १३. कठिन, १४. कहीं से, १५. सार्थ, १६. एक सुगंधित वस्तु, १७. सफल, १८. अपरिमित, १९. सुखी, २०. पता, २१. एक ओर से, २२. असंख्य, २३. राशि, २४. वैसे ही, २५. प्रकार, २६. दिल मे, २७. सुन्दर, २८. कथा, २९. समुद्र, ३०. उत्साह, ३१. ईरान, ३२. विचार, ३३. तैयार, ३४. भय, ३५. अटारी, ३६. धीरे, ३७. देखती, ३८. इसी समय ।

निह्या हल<sup>१</sup> उमका वह चचल जवान । सो मार्या वही इश्क का तेज वान ॥२००॥  
 जो उस वान की धाव कारी<sup>२</sup> लगी । अतर ते च<sup>३</sup> दोनो में यारी लगी ॥२०१॥  
 वहरहाल<sup>४</sup> उस इश्क फाँदे में भेल<sup>५</sup> । चल्या अपने मदीर ताजी<sup>६</sup> कुँ ठेल ॥  
 वोला एक बुढी मकरजन<sup>७</sup> कूँ गिताव<sup>८</sup> । दिया उम टके सुधा किया बेहिमाव ॥  
 कहा खोल राज<sup>९</sup> आपना उसके घेर<sup>१०</sup> । ॥२०६॥  
 जो वह मकरजन उस मो धन के घरआइ । ॥२०७॥  
 बला ले<sup>११</sup> हलो वे रिज्ञाने लगी । वचन मरु के मो चत्राने लगी ॥२०९॥  
 वहरहाल वाताँ सो उस नर्म की । मुहब्बतमने<sup>१२</sup> जवान के गम की ॥२११॥  
 सो जाँ मोम उसके पिघल ध्यान में । वही उस बुडीकूँ हलो कान में ॥

### (२) नारी-निदा—

‘नारि नरक की खान’ गौवासी के ज्येष्ठ समसामयिक कवि भी वह गये थे, किन्तु इसका दोष हम व्यक्तियों को नहीं दे सकते। पुरुष द्वारा स्त्री के अधिकार-वंचित हों पुरुष की दासी बनने, अर्थात् मातृसत्ताक समाज के स्थान पर पुरुषसत्ताक समाज बनने के साथ ही नारी को मारे अवगुणों की खान बतलाया जाने लगा। गौवासी और तुलसीदास ने सहस्राब्दियों से चली आती इसी धारणा को दुहराया। गौवासीके उद्गार हैं—

गवासी अगर नार घातक पर<sup>१</sup> आय । तो सच चातनूँ झठकरयो हराय ॥९५१॥  
 जो फुट जा नचा<sup>२</sup> का सीना चर होय । दुरी जात है यो अगर हूर<sup>३</sup> होय ॥९५२॥  
 गवासी है औरत वडी ही लागर<sup>४</sup> । कि इल्लीस बँसो<sup>५</sup> का है इसका डर ॥९९९॥  
 जा असमानकूँ ऐसी औरत निज्ञाय<sup>६</sup> । फरिदता<sup>७</sup> उतर भूँइपो हरगिज<sup>८</sup> न आय ॥१०००॥  
 गवासी जती खूब<sup>९</sup> औरत अछे<sup>१०</sup> । रहे ना वगैर कुठ हीला<sup>११</sup> रचै ॥१०४१॥  
 जवान<sup>१२</sup> होर औरत ते डरना भला । कि है जे बला बद<sup>१३</sup> सो है यो बला ॥१०४१॥  
 गवासी सख्या<sup>१४</sup> पर न धर एतवार<sup>१५</sup> । कि है इद्रायन के यो फल के सार<sup>१६</sup> ॥१०७४॥  
 मीठ्या गरचे दिसत्याँ है जो शक बाज । बले दिलमें कुछ नै है कडवाई बाज ॥१०७६॥  
 गवासी जो नार्याँ केरा मरु कोय । लिखे सो क्रितावाँ तो पूरा न होय ॥११५०॥  
 भला होजो तायव इननते छुटे । कलम तोड कर कागजाँ धो सुटे ॥११५१॥  
 गवासी यकी जान औरत है साँप । फने बल तो नलदे बिला उच्च जाप ॥११९२॥  
 न जा उनकी जा हिरकी खूनी पो भूल । कि काँटे ते है तेज यो गर्चे फूल ॥११९३॥

१ चेहरा, २ गहरा, ३ भीतर से ही, ४ हर तरह, ५ डाल, ६ अरबी घोड़े, ७ घोड़ेबाज स्त्री, ८ जल्दी, ९ रहस्य, १० पास, ११ बल्ल्या ले, १२ प्रेम में, १३ घात करने पर, १४ सच्चा का, १५ अप्सरा, १६ बहानेबाज, १७ शैतान-जैसी, १८ देखे, १९ देवदूत, २० कदापि, २१ सुन्दर, २२ है, २३ बहाना, २४ जीभ, २५ दुरी, २६ रिपपो, २७ विश्वास, २८ सदृश।

गवासी जफ़ावर है औरत अगर । खड़ी होय आ मक्र के सीस पर ॥१२३८॥

(३) सेठानी को रोकना—प्रोषितपतिका सेठानी को तोता बार बार रोकता है, इसे गवासी कहता है—

सो ओ सरव्-कद<sup>१</sup> नार सुदर सुधन । जड़ित आभरन<sup>२</sup> साथ सिंगार तन ॥१३२८॥

वही धकधकाते जरीने सेती । चली रावीकन<sup>३</sup> जलते सीने सेती ॥

जबाँ खोल उसों<sup>४</sup> बोल उठी इस तरीक<sup>५</sup> । कि “ऐ मेरे मनके मुवाफ़िक<sup>६</sup> रफ़ीक<sup>७</sup> ॥३३०॥

न जानूँ कि क्यों है मेरे भाग आज । लगी है सीनेकूँ विरह आग आज ॥

जो अक़ल<sup>८</sup> आज लगथी मेरे हात में । किधर गई कि दिसती नहीं जात<sup>९</sup> में ॥

अगर तूँ न कुछ मेहरबानी करै । . . . . . ॥

तुँ इस वक्त ऐ सा हेबे अक़लराय<sup>१०</sup> । न काम आयतो मूँजकूँ क्या काम आय ॥

रजा<sup>११</sup> दे जो में दाँ तलक जाउँ आज । वसाल<sup>१२</sup> उस नवे यार का पाउँ आज ॥३३५॥

—कथा २

शिगुफ़ता<sup>१३</sup> हो तब चलबली ओ निगार<sup>१४</sup> । लटकती<sup>१५</sup> चली छवसों राँवी के ठार ॥४५६॥

मिटे शक्र ऐसे अधर खोल उसों<sup>१६</sup> । लगी बोलने यों मिठे बोल उसों ॥

कि “ऐ मेरे पंखी, खुश-आवाज़<sup>१७</sup> कै । ऐ बुलबुल मेरे गुल्शने-राज<sup>१८</sup> के ॥४६०॥

नहीं ठारता मन मेरा आज कै<sup>१९</sup> । मेरे दर्द ते तुज खबर है कि नैं ॥

तुँ ऐ वक्त ने जो करै कुछ दरंग । रजा दे तुरत मूँजकूँ आई हूँ तंग ॥

नहीं इसते पेलाड<sup>२०</sup> कुछ मुजमे ताब<sup>२१</sup> । कि इश्कॉते<sup>२२</sup> उसके हुई हूँ खराब” ॥

—कथा ३

सुन इस बातकुँ पंखी बेबदल<sup>२३</sup> । कहा यों जो “ऐ मदकी माती चंचल ॥

सबब<sup>२४</sup> आपना मन तुँ लेती है गाल । अपस<sup>२५</sup> के<sup>२६</sup> तु करती है यों पायमाल ॥

. . . . . । बले<sup>२७</sup> वेग जा आज निस पाङ्गंज<sup>२८</sup> ॥

मुबादा<sup>२९</sup> सफरसे तेरा मर्द आय । तेरी हौस<sup>३०</sup> रह यों तेरे मन मे जाय ॥४६७॥

—कथा ४

सो फिर ओ चंचल । जुलेखा<sup>३१</sup> हो राँवी कने आइ चल ॥६०५॥

कही यों कि “ऐ बेबदल<sup>३२</sup> हमजलीस<sup>३३</sup> । . . . . . ॥

न कर नागा<sup>३४</sup> हर रात आ तेरे पास । जो तब्दीद<sup>३५</sup> देती हूँ मै बेकयास<sup>३६</sup> ॥

न मै सोऊँ ना तुजकूँ देऊँ न सोन । बजुज<sup>३७</sup> तूँ जफ़ा<sup>३८</sup> यों सके सोस<sup>३९</sup> कौन ॥

१. सरो जैसे सीधे कदवाली, २. आभूषण से, ३. सुग्गे के पास, ४. उससे, ५. तरह, ६. अनुकूल, ७. साथी, ८. बुद्धि, ९. अपने, १०. बुद्धि-मंत्रणावाले, ११. अनुमति, १२. मिलन, १३. प्रफुल्लित, १४. चित्र-सी १५. झूमती, १६. उससे, १७. सुध्वनि, १८. रहस्यो-द्यान, १९. कहीं, २०. अनुमति, २१. शक्ति, २२. प्रेम से, २३. अनमोल, २४. कारण, २५. अपने, २६. क्यों, २७. लेकिन, २८. छोड़, खजाना, २९. शायद, ३०. लालसा, ३१. मिली, सुन्दरी ३२. अनमोल, ३३. साथी, ३४. चूकना, ३५. दुख, ३६. अपरिमित, ३७. सिवाय, ३८. जुल्म, ३९. सहन ।

अजब कुछ मुरावत है तुज-जात' में । तेरी शरामदी हूँ मैं इस बात में ॥  
वले' फिक्र' बर कुछ मेरे काम का । जो बल होय तुजकूँ भी आराम का ॥६१०॥

—कथा ५

फिर ओ विरहिनी इश्क के ख्याल सो । चली रांवीवन मुस्तखि' हाल सो ॥७७१॥  
कही या कि "ए दर्द होर दुख के यार । पडे मुज कतेजेकुँ रोजन' इजार ॥  
हुआ छीज पिजरा मेरा तन तमाम । गले विरह के अगते जीवन तमाम ॥  
वगैर तू' तो मोहरम' मेरा कोई नै । तेरी आसतां जिउ पकड रही हूँ मैं ॥  
रजा' दै जो घर यार के जाउं आज । जो राहत फरागत' सेटुक पाउं आज" ॥  
सुन ऐ बात हँम पट ओ रांवा" उसे । कह्या यो कि "ऐ नार, मुंज यो दिसे ॥  
अगर इश्क अछता" तेरे दिल में कूड । तो बरती गुपत काम यो किस न पूछ ॥  
कि है सख्त अल्लड होर नादान" तू' । हूँ जाने मैं अपने परेशान" तू' ॥  
न कै तुझते हो यार वो नाउमेद" । ॥७८०॥

। मो फिर गमजदी" हो वां नार ॥८७५॥

दे दुख ममद" कूजोरा मीनेमने" । अँजू" डालनी आई गबी बने ॥  
कही यो कि "ऐ मेरे खिल्वत' के दोन्त । मेरा माम गल जा रह्या तनवोपोस्त" ॥  
सीना कोडता है मुमल्लम" मेरा । कयामत" ले आया है यो गम मेरा ॥  
न जानूँ उसे किस घडी मैं निज्ञाइ" । उमू" किम धुरे वक्तपर जीव लाइ ॥  
कहाँ ते नजर उसपो मेरी पडी । यो कमी बला आ मेरे निर लडी ॥८८०॥  
कधी" सुखमें विरहे जली हुइ न मैं । निपजते च" के अवली हुइ न मैं ॥  
यो दीदे" जो दिन-दिन रमीदे' हुये । सो दद' होकर मुजपो सीवे हुये ॥  
जो इस घात' सो दुख उडले बहार" । ॥८८३॥

—कथा ६

फिर ओ विरहिनी नार रावाकिन आइ । मो दिलगोर" अपसते उमे सख्तपाइ" ॥  
रगेरा में फिर बेकरारी" छुटी । निपट चटपटी" साथ यो बोल उठी ॥१२८०॥  
कि "ऐ मेरे गमगीनके" गमगुमार" । तूँ किम फिक्र" ते आज है बेकरार" ॥  
मैं आई जो तूँ फिक्र मेरी करे । न की" मुज दुखी फिक्र तेरी करे" ॥  
सुन इस बातकूँ ओ पँखी भग उभास । कह्या यो कि "ऐ मोहिनी हकशनास" ॥  
तूँ मद्दूद" है जातवती" गभीर । ॥

१ स्नेह, २ लेकिन, ३ चिन्ता, ४ अघोर, ५ छद, ६ तेरे बिना, ७ नर्म सचिव,  
८ आना, ९ सुख, १० छुट्टी, ११ सुगा, १२ रहता, १३ निर्बुद्धि, १४ हँसान, १५ निराश,  
१६ दुखी, १७ समुद्र, १८ सोने में, १९ आसू, २० एकांत, २१ चमड़ा, २२ पूरा,  
२३ प्रलय, २४ देख, २५ उससे, २६ कमी, २७ उपजते ही, २८ आखें, २९ पाये,  
३० क्षण्डा, ३१ भाति, ३२ बाहर, ३३ दुखी, ३४ कठोर, ३५ अघोरता, ३६ जल्दी,  
३७ शोकाकुल, ३८ सवेदक, ३९ चिन्ता, ४० अघोर, ४१ नहीं की, ४२ सच पारखी,  
४३ प्रियतमा, ४४ बडी चाति का ।

वले<sup>१</sup> यार तेरा है किस घातका<sup>२</sup> । मुजे फाम<sup>३</sup> नै उसकी कुछ जातका ॥  
अगर जात वनता है तुज सारखा । तो यार उस कह्या जाय तुज नार का ॥२२८६॥

—कथा ७

फिर वो नार ज्यों मीन विन नीर की । हृदफ<sup>४</sup> बेकरारी<sup>१</sup> की हो नीर की ॥१३८५॥  
तलब<sup>२</sup> सों जो रखसत<sup>३</sup> की राँवीकन आइ । अँजू विरहके दाट<sup>४</sup> अँखियाँ मै ल्याइ ॥  
कही यों कि “ऐ मस्लहत<sup>५</sup> के अजीज<sup>६</sup> । मेरी जिन्दगानी तो कुछ हुइ न चीज ॥१३६०॥  
कि तंग आइ मै यारके बिरहते । बँचाले मुँजे आज इस गिरहते<sup>७</sup> ॥

—कथा ८

फिर ओ विरहनी नार गजचाल की । “लँबे बाल होर गुद-गुदे गाल की ॥१४५४॥  
उठी बोल तोते सों इस घात<sup>१</sup> आ । केता दुख कहुँ तुजकूँहर रातका ॥  
कि कहने होर जाने ते तुज ठाँव कूँ । घट्टे तो पडे जीभ होर पावकूँ ॥  
जो आऊँ तो बातामें भाता<sup>२</sup> है मुँज । खजल<sup>३</sup> हर रयन कर फिराता है मुँज ॥  
मँगू<sup>४</sup> मै जो तुजधेर<sup>५</sup> ते कुछ पाउं सुख । वलेकिन<sup>६</sup> न देखूँ बगैर<sup>७</sup> दुख यो दुख ॥  
किया जो विरह साँप हो मु जयो कह<sup>८</sup> ॥ उतार आज तुँ मुँजते हरक्यों<sup>९</sup> वो जह ॥

—कथा ९

रजा के बदल<sup>१</sup> आई रावीकने<sup>२</sup> । जबाँ खोलकर यों लगी बोलने ॥१५५०॥  
कि “ऐ दोस्त मुँज दर्द होर दुख के । करनहार फिका<sup>३</sup> मेरे दुख के ॥  
कधाँ लग<sup>४</sup> अछूँ<sup>५</sup> इस जले भाग सों । होऊँ राख जल बिरह की आगसों ॥  
कि दिन-दिन दिल इस विरह के जब्रते<sup>६</sup> । रह्या लो मुआ<sup>७</sup> हो वजर सब्र<sup>८</sup> ते ॥  
नाजक है जो वारा<sup>९</sup> मेरी आहका । सुटे<sup>१०</sup> मुँज उड़ा गर्द<sup>११</sup> कर राह का ॥  
नही कुछ मेरे मनकुँ ताकत एताल<sup>१२</sup> । खुदाताई<sup>१३</sup> दे मुज इजाजत<sup>१४</sup> एताल” ॥१५५५॥

—कथा १०

जो ओ नार दिलगीर<sup>१</sup> राँवीकन<sup>२</sup> आई । सो बोली कि “ऐ भाइ, तेरी दुहाई ॥१६७८॥  
यो किस घातकी<sup>३</sup> आके बाजी<sup>४</sup> खड़ी । किधरकी बला आ मेरे सिर पड़ी ॥  
कि हर सात<sup>५</sup> दिसता है मुँज गम नवा । यो क्या काम की मुँजकूँ (यो) क्या हुआ ॥  
यो क्या इश्क<sup>६</sup> भया मेरी जात<sup>७</sup> में । कि आता नही यार अँजू<sup>८</sup> हातमें ॥

१. लेकिन, २. प्रकार, ३. समझ, ४. प्रलय, ५. अधीरता, ६. लालसा, ७. विदाई,  
८. डाट, ९. सलाह, १०. प्यारे, ११. फंदे से, १२. भाँति, १३. पाता, डालता, १४. लज्जा,  
१५. चाहूँ, १६. तेरे पास, १७. लेकिन, १८. विना, १९. कोप, २०. हर तरह, २१. अनुज्ञा  
के लिए, २२. तोते के पास, २३. चिंताएँ, २४. कब तक, २५. रहूँ, २६. जुल्म से, २७. मरा,  
२८. धीरज, २९. आघात, ३०. फँके, ३१. धूल, ३२. अब, ३३. खुदा के लिए, ३४. आज्ञा,  
३५. दुःखी, ३६. सुगो के पास, ३७. भाँति, ३८. खेल, जुआ, ३९. साथ, ४०. प्रेम, ४१. हृदय,  
४२. आज भी!

न मुंज ब्रेकरारी कुँ है ठीर कुछ । न कोशिश कुँ तेरी है तामीर कुठ ॥  
हुआ फिर तेँ चूर भीना मेरा । यो किस घात का आइ जीना मेरा ॥  
मुजम्मा यो सुलता नही खोल तूँ । मेरी आश्रित कयो है सो बोल तूँ ॥१६८६॥

अबू मेघ अँवियाते वरसावती । चली राँवीकन फेर बुडला बती ॥  
कही यो कि "ऐ तैर गुन ज्ञान के । ऐ थडेक मेरे दिग्गजान के ॥  
हो निर्जीव अछूँ कव तलक इस बजा" । तुरत आज वी रात दे मुंज रजा ॥  
जो निपजी में अछती अगर सगते । तो कर दिलकुँ घट चुप रहती नगते ॥  
बले क्या कर्म है निपज साक ते । इसी वास्ते विरह की धाक ते ॥  
अपस में अपे गल के होती हूँ नीर । तू ऐसे मने गर न होय दस्तगीर ॥  
तो सीना मेरा तडपते वार नै । कि सुलमा रहने जीवकुँ ठार नै ॥  
मिलाया अगर ना अछै यार साथ । तो क्या काम आवै व नायो ह्यात ॥  
रह्या आवे होठा मने जीव आज । भला जो मिले मुंजकुँ वो पीव आज ॥१७५९॥

—कया १२

सो ओ गमभरी नार गम आ सो फेर । निजा देवती है जो राँवी के वेर ॥१८४८॥  
मुंडी शहपरा की तरफ खीच वै । है मदागूल अपस में अँख्या मोच वै ॥  
देस अहवाल बोली कि "ऐ सन्नपोश" । एती फिर क्या है जो है तू समोस ॥१८५०॥  
मै आई जो तुजसो करै वात कुछ । बले देगती हूँ तेरा घात कुछ ॥  
मै आई जो अपना कहूँ दुसकुँ खोल । तु बत्तरी किया मुंजकुँ गमगी न जोल ॥  
मै आई जो तुजमो सफा पाउँ आज । तु लेना च मेरा सुट्या नाव आज ॥  
मै आई जो विरहा करे दूर तूँ । किया सिरत मुज दुसवे समदूर तूँ ॥  
मै आई जो कुछ जमा चित्त होय । किया फिर परेशा न कह मुंजकुँ कोय ॥  
मै आई जो लेवे मेरा भार उतार । सो पूरा उचाया मेरे मिर पो भार ॥  
मै आई जो तुजते खुलै यो नसीव । किया तगाफुल तू यो ऐ हरीन ॥

—कया १३

१ अधीरता, २ ठहरे, ३ प्रभाव, ४ चिन्ता से, ५ भाति, ६ पहेली,  
७ भविष्य, ८ तोते के पास, ९ पक्षी, १० ठडक, ११ इस प्रकार, १२ उपजी,  
१३ रहती, १४ पत्थर से, १५ फम, १६ लेकिन, १७ मिट्टी, १८ ज्वाला, १९ ऐसे  
समय, २० सहायक, २१ वेरी, २२ रहे, २३ जीवन, २४ ओठो में, २५ ध्यान से,  
२६ पास, २७ बडेपखो, २८ लगा, २९ भीत, ३० हरित-परिधान, ३१ चिन्ता, ३२ मौन,  
३३ तुम से, ३४ लेकिन, ३५ सफाई, ३६ लेना ही, ३७ ठोडा, ३८ फिर से,  
३९ समुद्र, ४० खातिर-जमई, ४१ उठाया, ४२ भाग्य, ४३ कयो, ४४. बेपर्वाह,  
४५ मित्र ।

..... । (आई) सो वह नार साहेब-जमाल<sup>१</sup> ॥१९८७॥  
 दर्या इश्क<sup>२</sup> का फिर कीता<sup>३</sup> देख जोश । गरजते बदलसार<sup>४</sup> करती खरोश<sup>५</sup> ॥  
 जो राँवी के आ पास यों बोल उठी । कि "जलती अछूँ<sup>६</sup> कब तलक जों भठी ॥  
 जो है आशिकाँ का नवी आज तूँ । दवा कर मेरी ऐ हबीब आज तूँ ॥  
 कि इल्लत<sup>७</sup> बिरह का लिया वैर मुँज<sup>८</sup> । किया सरते<sup>९</sup> बेताब<sup>१०</sup> दुख फैर<sup>११</sup> मुज ॥  
 पड़ी भार<sup>१२</sup> ताकत निकल जाते<sup>१३</sup> । पुँखी उड़ गया सब्रका हात ते ॥  
 गर ऐसे मे देता है तूँ मुँज रजा<sup>१४</sup> । सँभालूँगी इस जीव कूँ हर वजा<sup>१५</sup> ॥  
 जनम जानते उस घात<sup>१६</sup> सों फ़ौत<sup>१७</sup> होय । न की हर घड़ी यों मेरी मौत होय ॥

—कथा १४

फिर ओ धन परेशान हो बेहिसाब । जो नजदीक रावी<sup>१८</sup> के आई शिताब<sup>१९</sup> ॥२०९१॥  
 कही "ऐ मेरे मन के जूने<sup>२०</sup> अज़ीज<sup>२१</sup> । सुनी हूँ जो संसार में चार चीज ॥  
 छुट्या तीर होर मूँ ते निकली सो बात । हुआ सो क़जा<sup>२२</sup> होर गई सो हयात<sup>२३</sup> ॥  
 फिर आना अजब<sup>२४</sup> यो फिर नहार नोय<sup>२५</sup> । फिरा था<sup>२६</sup> नहीं आज लग<sup>२७</sup> उनकूँ कोय ॥  
 गुजरती है नित गमसों<sup>२८</sup> मेरी हयात । कधालग<sup>२९</sup> अछूँ गमसों लेउँ जोर हात ॥  
 कि दिन-दिन कूँ मेरे उपर घात क्या<sup>३०</sup> । गुजरत्याँ है राताँ बुरी घात क्या ॥  
 जो जीक<sup>३१</sup> आज की रात ते न पाउँ । अजब क्या है जो मर सीना तरख जाउँ ॥  
 न जाया<sup>३२</sup> कर ये उम्र बाकी<sup>३३</sup> तेरी । कि घटती है नित इश्तियाक़ी<sup>३४</sup> मेरी ॥  
 नजर आज कर मुजपो टुक प्यार सों । मिला हर सनद<sup>३५</sup> वेग उल्लयार सों" ॥२०९९॥

—कथा १५

वह विरहे जली दिलर बा<sup>३६</sup> बादअजाँ<sup>३७</sup> । हो पजमुर्दा<sup>३८</sup> जों फूल वक्ते-खज़ाँ<sup>३९</sup> ॥२२१५॥  
 जो राँवीकने आई अधी रातकूँ । चलाई अधर खोल यों बातकूँ ॥  
 कि "ऐ तू जे दाना है हर बाब<sup>४०</sup> आज । मंगनहार<sup>४१</sup> मेरा जो है लाभ आज ॥  
 जो धुँड़ती हूँ हिज यार की जात ते । तो जाता अहै मर्द मुझ हात ते ॥  
 अगर मँगती हूँ हिज<sup>४२</sup> यारकी जात<sup>४३</sup> ते । तो जाता अहै मर्द मुझ हातसे ॥  
 अगर मँगती हूँ मर्दकूँ बेकयाम<sup>४४</sup> । तो होती हूँ उस यारते मै निराश ॥  
 हूँ हैरान इस ठार अपन ज्ञान मे । कि दो खांडे<sup>४५</sup> भायेंगे यक म्यान मे ॥२२२०॥

१. सुन्दरी, २. प्रेम-समुद्र, ३. किया (पंजाबी), ४. बादल-जैसा, ५. शोर,  
 ६. रहूँ, ७. देरी, ८. मेरा वैर, ९. फिर से, १०. अधीर, ११. पुनः, १२. बाहर,  
 १३. भीतर से, १४. आज्ञा, १५. प्रकार, १६. भाँति, १७. मरा, १८. तोते के नजदीक,  
 १९. जल्दी, २०. पुराने, २१. प्रिय, २२. मौत, २३. जीवन, २४. अद्भुत, २५. नहीं,  
 २६. सौदा था, २७. आजतक, २८. दुख-सहित, २९. कब तक, ३०. चोटीली, ३१. सुखी,  
 ३२. बर्बाद, ३३. अवशिष्ट, ३४. लालसा, ३५. प्रमाण, ३६. मनोहर, ३७. इसके पश्चात्,  
 ३८. मुझाया, ३९. पतझड़, ४०. विषय, ४१. चाहनेवाला, ४२. लज्जत, ४३. व्यक्ति,  
 ४४. बिना विचारे, ४५. खड्ग।



यो पर्वी मेरी शुबह<sup>१</sup> का काड तू । नको<sup>२</sup> दगदगे<sup>३</sup> में मजे पाड<sup>४</sup> तू ॥  
 कि इस राज<sup>५</sup> का यार सो तू च<sup>६</sup> है । अजीज<sup>७</sup> ओ वफादार<sup>८</sup> सो तू च है ॥  
 कर ऐसा नसीहत जो खुशहाल<sup>९</sup> हूँ । तरीताज<sup>१०</sup> यो फूल का डाल हूँ ॥२२२३॥

—कया १६

फिर ओ मोहिनी दुखके समदूर<sup>११</sup> हो । बिरह साथ सव देस अधिक चूर हो ॥२३३०॥  
 कही आ को राँवी कुँ "ऐ कारसाज<sup>१२</sup> । हुआ हदते<sup>१३</sup> पेलाड<sup>१४</sup> मेरा नियाज ॥  
 फनर<sup>१५</sup> गम<sup>१६</sup> के ढो ढो यो काँचे गये । मेरा अक्ल के पाँव बाँचे गये ॥  
 जर्घाते<sup>१७</sup> पिरित्त दिलमें खाना<sup>१८</sup> किया । मेरे होश<sup>१९</sup> ते मुंज वेगाना किया ॥  
 न देखी किसी रात मो स्वाव<sup>२०</sup> का । जो टुकडे कलेजा हुआ ताव<sup>२१</sup> का ॥  
 सकत<sup>२२</sup> नै जो कुछ मूँ सो बोलूँ तुझे । अवस<sup>२३</sup> क्या कि वाता में घोलूँ तुजे ॥  
 अगर है तेरे दिलमें मूँ आस पाउँ । रजा<sup>२४</sup> दे जो उस यार लग आज जाउँ ॥  
 अगर नै तो कह मुंज सरीहन्<sup>२५</sup> एताल<sup>२६</sup> । जो उस यार का छोड देऊँ पियाल<sup>२७</sup> ॥

—कया १७

फिर ओ नार मजनूँ केरे शकल<sup>२८</sup> साथ । दे अपमें<sup>२९</sup> निपट वेकरारी के हाय ॥२४३९॥  
 कही आ को राँवी कुँ "ऐ होशमन्द<sup>३०</sup> । शिकजा<sup>३१</sup> किया मुंज बिरह का कमदा ॥२४४०॥  
 अगरचे<sup>३२</sup> मेरा अक्ल जो है चिराग । बले<sup>३३</sup> इमते हो हर घडी दाग-दाग ॥  
 कि जब इस्क का वाव<sup>३४</sup> उसपर वहै । हिला उस बुझावै वगैर<sup>३५</sup> नार है ॥  
 कल्ले<sup>३६</sup> फिन्ना<sup>३७</sup> क्या मै कि मुतलक अडी । कि दिल कूँ मेरे नै करार<sup>३८</sup> एक घडी ॥  
 गुजरता है गम<sup>३९</sup> मुंज पो जेते च यो । न जानूँ मुये पर मेरा भाग पयो ॥  
 रहे ना जनुँ<sup>४०</sup> सिर चढे वाज<sup>४१</sup> मुंज । खुदा ताई ल्या होश में आज मुंज ॥

—कया १८

। फिर ओ निगार<sup>४२</sup> ॥२५७०॥

तफक्कुर<sup>४३</sup> सेती आइ राँवीकने । कही "आज या है मेरे दिलमने<sup>४४</sup> ॥  
 जो तुजसो सरीहन्<sup>४५</sup> कल्ले जग मै । देऊँ छोड पूरा तेरा सग मै ॥  
 कि जिस रात आती हूँ उस रात तू । तगाफुल<sup>४६</sup> में भाता<sup>४७</sup> मेरी वातकुँ ॥

१ सदेह, २ नहीं, ३ सदेह, ४ डाल, ५ रहस्य, ६ तूँही, ७ प्रिय, ८ भक्त,  
 ९ प्रसन्न, १० नया, ११ समुद्र, १२ काम ठीक करनेवाला, १३ सीमा से, १४ आगे,  
 १५ पत्थर, १६ रज, १७ जबसे, १८ स्थान, १९ समझ, २० स्वप्न, २१ शक्ति,  
 २२ शक्ति, २३ व्यर्थ, २४ अनुज्ञा, २५ साफ, इस समय, २६ विचार, २७ रूप,  
 २८ अपने, २९ चतुर, ३० जजोर, ३१ यद्यपि, ३२ लेकिन, ३३ वायु, ३४ बिना,  
 अतिरिक्त, ३५ चित्ता, ३६ धीरज, ३७ रज, ३८ पागलपन, ३९ बिना,  
 ४० तस्वीर, ४१ रूपसी, चित्त, ४२ दिल में, ४३ प्रत्यक्ष, सीधे। ४४ भूल,  
 ४५ पाता, डालता।

रयन टालता नित हिकातां<sup>१</sup> सँगात । मगर<sup>२</sup> दन्द<sup>३</sup> धरता है कुछ मुँज सात॥  
कता<sup>४</sup> है कि हर क्यो<sup>५</sup> मिलैगा वो यार । वले मुँजकुँ लगता नही एतबार<sup>६</sup> ॥

—कथा १९

..... । ... फिर ओ विरहणी सुधन ॥२७०२॥  
जो नज़दीक पिजरे के जाकर खड़ी । सो राँवा<sup>७</sup> वही हँस पड्या उस घड़ी ॥  
लग्या वो हँसा उसकुँ पूरा अजब । सो पूछन लगी उस हँसी का सबब ॥  
उठ्या बोल वो यों कि “ऐ गुलअजार<sup>८</sup> । खतर<sup>९</sup> आज दिन खुश सुबा<sup>१०</sup> की पहार<sup>११</sup> ॥  
अवल का मेरा यार हमजिन्स एक । उड उस बात जाता मुँज इस ठार देख ॥  
मिल्या आइकर होर कह्या एक किसान । मुँज वो याद आया सो आया हँसा<sup>१२</sup>” ॥

—कथा २०

सो विरहे जली ओ दिलाराम फेर । अँख्याँ लाल कर आइ रावी के धेर<sup>१३</sup> ॥२८३७॥  
कही “ऐ जो पिंजरे में खुशहाल तूँ । मेरे गम<sup>१४</sup> ते बैठ्या है निर्वा<sup>१५</sup> तूँ ॥  
जलूँ में तो हर देस अट जों अदीत<sup>१६</sup> । गलूँ रातकूँ चाँद से सार<sup>१७</sup> नीत ॥  
भूकी होऊँ तो खाऊँ गम बेशुमार<sup>१८</sup> । लगे प्यास तो पीऊँ अँझुआँ<sup>१९</sup> की धार ॥२८४०॥  
जो होवे हवस<sup>२०</sup> राग पर जिस घड़ी । तो नाले<sup>२१</sup> सुनूँ दिल के बेसुध पडी ॥  
बादल<sup>२२</sup> सैरके जो करूँ याद बाग । दिसे फूल हो मुजकूँ सीने के दाग ॥  
मेरा हाल इस घात<sup>२३</sup> है सो तो यों । है फ़ारिग<sup>२४</sup> करूँ तुजपो गुस्ता न क्योँ ॥  
भला जो करै आज तूँ कुछ इलाज । कि कोड्या<sup>२५</sup> है पूरा च बिरहा मुँज आज” ॥

—कथा २१

वो मुश्ताक<sup>२६</sup> ताकत<sup>२७</sup> ते हो फेर ताक<sup>२८</sup> । सो रावीकन आ सोस<sup>२९</sup> ना सक फ़िराक<sup>३०</sup> ॥२९१६॥  
कही “मै जो पंजर हुई सूख - सूख । मेरा गम<sup>३१</sup> किया कम न तेरा सलूक<sup>३२</sup> ॥  
मेरा मुद्दा<sup>३३</sup> था जो तूँ हर तरीक<sup>३४</sup> । मेरी बेकरारी पो होगा शफ़ीक<sup>३५</sup> ॥  
हुआ टुकड़े सीना तो बिरहेते फूट । मुकरर<sup>३६</sup> कहूँ क्या तुझे रोज उठ ॥  
कि आती है मुज लाज इस लाजते । तेरा देखसू<sup>३७</sup> मुख न मै आजते ॥२९२०॥  
कि मुज तुजते यक निस बी सुख ना हुआ । क्रयामत<sup>३८</sup> तलग मुज यो झकना<sup>३९</sup> हुआ” ॥

—कथा २२

१. कथाये, २. क्या, ३. द्वेष, द्वंद, ४. कहता, ५. हर तरह, ६. विश्वास, ७. तोता,  
८. गुलाबी गालोंवाली, ९. भय, १०. प्रातः, ११. पहर, १२. हंसी, १३. तोते के पास (धीरे),  
१४. रंज, १५. निर्लेप, १६. आदित्य (सूर्य) १७. सरीखा, १८. अग्नित, १९. आँसू, २०.  
लालसा, २१. क्रंदन, २२. दिलमें, २३. भॉति, २४. छुट्टी, मुक्त, २५. खौला, २६. अभिलाषिणी,  
२७. शक्ति से, २८. हीन, २९. सहते, ३०. वियोग, ३१. रंज, ३२. बर्ताव, ३३. अभिप्राय,  
३४. तरह, ३५. मित्र, ३६. फिर-फिर दुहराके, ३७. देखूंगी, ३८. प्रलय, ३९. झँखना ।

जो ओ फिर सहेली रँगमेज हो । रजा के बदल' गम होर तेज हो ॥२०१४॥  
 कही आको राँवी कुं "ऐ हकगुजार' । पकड जीव जोडी हूँ भा' तुजपो प्यार॥  
 नजिकहै जो विरहा करे मुँज पो जोर' । ले जा मेरा जिउ तुजपो राखे हूँ योर' ॥  
 मेरे दर्द कूँ आज ऐ गमगुसार' । नको' जान दुसर्याँ करे ददसार' ॥  
 कि मारयाँ की यकसार सुगत' नई । दुन्या बीच जइशाक' यक वात' नई ॥  
 सुनायो गया है जो मछली की जात । धरे इश्क' जलसो पतँग आग साथ ॥  
 वले' जल सो मछली कुं राखे सँभाल । अगिन सो पतँगकुं करे भुर्ज जाल' ॥३०२०॥

—कथा २३

फिर ओ हम सी आपने साज' सो । जो राँवीकन आई अधिक नाज' सो ॥३११७॥  
 कही "ऐ पँखी गुन भरे दिलनेवाज' । बुझनहार है तूँ दरूनी' के राज' ॥  
 यो दुख भी किसे न कहा जाय कर । कहूँ तुजसे हमराज' कूँ आय कर ॥  
 कि तदबीर' मे अकल होर राय मे । है वैमिस्ल तूँ कम नही काइमें' ॥३१२०॥  
 मेरी मश्वरत' के तू लायक है कर । कलँ मश्वरत तुजसो कुछ शक न कर ॥  
 अगर तूँ न होता मेरा गमगुसार' । तो मरती सीना फूट वै एक बार ॥

—कथा २४

। वो मदन की मती' ॥३१८९॥

तती हो गुसे' की अगिन साथ फेर । कही आके राँवी कुं इस घात' फेर ॥३१९०॥  
 कि "ऐ वेवफा' दोस्त, सच बोल मुज । तेरे दिलमें क्या है सो कह खोल मुज ॥  
 जो मैं दिलसो मिल देखती हूँ तुजे । निपट सगदिल देखती हूँ तुजे ॥  
 न तुजते मेरा काम होता दिस । मेरे हक' मे तू ऐन सोता दिस' ॥  
 यो तेरी अजीजी' है किन रीत की । वहूँ खोल किस रीत तुज मीत की ॥  
 तूँ दायम' वफादार' मेरा कला' । सबब क्या जो करता है फिर यो गिला' ॥  
 तेरे दिलमें कुछ मेह अछता अगर । तो सूक-सूक' मैं यो न होती पँजर ॥

—कथा २५

जो ले फलफुलाली सँगात ओ सखी । फिर आई ले राँवी के नइदीक रखी ॥३३२०॥  
 कही "नोशे' कर है यह तेरा खोरिश' । है जम' उस खोरिश सो सदा पवरिश' ॥

१ लिए, २ सच बोला, ३ पा डाल, ४ जबर्दस्ती, ५ भरोसा, ६ सबेदक,  
 ७ नहीं, ८ शिरकी पोडा, ९ शवल, १० प्रेमी, ११ भाँति, १२ प्रेम, १३ लेकिन,  
 १४ जलाके, भूना (भूजा), १५ सज्जा, १६ तालित्य, १७ दिलपर, कृपालु, १८ भीतरी,  
 १९ रहस्य, २० रहस्य जाननेवाला, २१ उपाय, २२ किसी में, २३ सलाह, २४ सबेदना  
 रखनेवाला, २५ माती, २६ शोध, २७ भाँति, २८ विद्वत्सघाती, २९ चारों में,  
 ३० बिलकुल, ३१ मित्रता, ३२ सदा, ३३ भक्त, ईमानदार, ३४ कहला, ३५ शिकायत,  
 ३६ सूख सूख ३७ खा ३८ भोजन, ३९ सर्वदा ४० पालन-पोषण ।

ओ राँवी कह्या तब कि “मुँज ऐ सनम<sup>१</sup> । खिला न्यामताँ<sup>२</sup> मुँजकुँ पाली है जम ॥  
 अगर जीभ हर बाल होये मेरा । तो करना सकूँ शुक्र हर्गिज<sup>३</sup> तेरा ॥  
 वले<sup>४</sup> आज मुँज भूक चन्दा<sup>५</sup> नही । कि दिल फिक्रते<sup>६</sup> जरी<sup>७</sup> खन्दा<sup>८</sup> नही ॥  
 बरे<sup>९</sup> खोल कह क्या गरज<sup>१०</sup> है तेरा । जो होये जमाखातिर<sup>११</sup> परेशाँ<sup>१२</sup> मेरा ॥  
 कही वाद्अजाँ<sup>१३</sup> यों कि “ऐ दोस्तदार<sup>१४</sup> । जो सोती थी मै आजके दिन दोपहार<sup>१५</sup> ॥  
 सो यक ज्वान खुशरूप<sup>१६</sup> का दिलफरेब<sup>१७</sup> । ले यक हतमने<sup>१८</sup> अंब यक हत मै सेब ॥  
 नजिक आ मेरे हातमें भा<sup>१९</sup> ओ फल । गया कुच्छ ना वोल सीधा निकल ॥  
 जो देखी हो बेदार<sup>२०</sup> उस सात<sup>२१</sup> मै । न ओ अंब ना सेब था हात मै” ॥  
 ओ राँवाँ कह्य तबकि “ऐ माहरू<sup>२२</sup> । हुआ खुश मै इस ख्वाब<sup>२३</sup> ते मू-ब-मू<sup>२४</sup> ॥३३३०॥  
 कि ओ ज्वान जो था अधिक दिलफरेब । तेरा बख्त<sup>२५</sup> है होर आँब होर सेब ॥  
 यकन मर्द तेरा है यकन सो (है) यार । यो दोनों तुरत तुजसों है मिलनहार ॥  
 अजब<sup>२६</sup> ख्वाब देखी है यो ख्वाब तू । कि पावेगी इस ख्वाब का लाभ तू” ॥

—कथा २६

सो ओ नार तन नौरतन सों सिगार । मुकल्लल<sup>२७</sup> जोहो आइ राँवी<sup>२८</sup> के ठार ॥३५३५॥  
 कही “ऐ फ़रासत<sup>२९</sup> के दरियाके दुर<sup>३०</sup> । जो मिठवोल पँखियाँ मै तू है सुघर ॥  
 जबाँ खोल कर मुझसे करता है बात । तो सुनती हूँ मै तुजते ताजे हिकात<sup>३१</sup> ॥  
 हुआ नै गरज<sup>३२</sup> गरचे<sup>३३</sup> हासिल<sup>३४</sup> मेरा । वले<sup>३५</sup> तुजते पकड्या सफ़ा<sup>३६</sup> दिल मेरा ॥  
 गुजरता<sup>३७</sup> है खातिर मने<sup>३८</sup> यों एताल<sup>३९</sup> । जो उस यारका छोड़ देऊँ खियाल<sup>४०</sup> ॥  
 कि नै फ़ायदा<sup>४१</sup> कुछ हलाकी<sup>४२</sup> बगैर<sup>४३</sup> । न जासे<sup>४४</sup> हलाकी यो पाकी<sup>४५</sup> बगैर ॥  
 यो गर्द<sup>४६</sup> आपने पाक-दामनते झाड़ । भला यो जो सौदा<sup>४७</sup> सुटूँ<sup>४८</sup> दिलते काड” ॥

—कथा २७

फिर ओ नार विरहेते बेताब<sup>४९</sup> हो । परेशान उस यार के बाब<sup>५०</sup> हो ॥२७३१॥  
 जो राँवी कन आई अजू<sup>५१</sup> ढालते । लगी फिक्र राँवी कुँ इस हाल ते ॥  
 मुवादा<sup>५२</sup> मैल्या ताब वेइख्तियार<sup>५३</sup> । सुटे<sup>५४</sup> घरकी दहलीजते पाँव बहार<sup>५५</sup> ॥

१. प्यारी, २. नियामतें, ३. हर्गिज, ४. लेकिन, ५. यो, यद्यपि, ६. चिंता से,  
 ७. थोड़ा, ८. प्रसन्न, ९. अर्थ, १०. अभिप्राय, ११. दिल, १२. विकल, १३. इसके  
 बाद, १४. मित्र, १५. पहाड़, १६. सुरूप, १७. सनोहर, १८. हाथ में, १९. पा, डाल,  
 २०. जागी, २१. उसके, साथ, २२. चन्द्रमुखी, २३. स्वप्न, २४. रोम-रोम २५. भाग्य,  
 २६. अद्भुत, २७. सजी, २८. तोते, २९. समझदार, ३०. मोती, ३१. कहानी,  
 ३२. मतलब, ३३. यद्यपि, ३४. लाभ, ३५. लेकिन, ३६. स्वच्छ, ३७. बीत रहा,  
 ३८. दिल में, ३९. इस समय, ४०. विचार, ४१. लाभ, ४२. मरण, ४३. बिना,  
 ४४. जायेगा (पंजाबी), ४५. पवित्रता, ४६. धूल, ४७. पागलपन, ४८. फेकूँ, ४९. बेबस,  
 ५०. विषय, ५१. आँसू, ५२. शायद, ५३. बेबस, ५४. फेंके, ५५. बाहर।

मुवादा निपट थमं ते हात धोय । मुवादा मेरा कष्ट<sup>१</sup> नाचीज<sup>२</sup> होय ॥  
समज बेकरारी<sup>३</sup> कुं उसकी शिताव<sup>४</sup> । उठ्या बोलकर यो कि "ऐ महताव<sup>५</sup> ॥  
मुवारक<sup>६</sup> है यो रात रेगीसो जा । न कर वात मुंज साथ वेगी सो जा ॥  
कि कोड्या<sup>७</sup> है तेरा मीना विरह आज । तेरे दिलते कर दूर यो गिरह<sup>८</sup> आज ॥

—कथा २८

। निकल घरते ओ विरहनी नार तव ॥३८१८॥

न कर दिष्ट<sup>९</sup> मीरे<sup>१</sup> व वावें कपन<sup>१</sup> । चली फिर<sup>२</sup> सो नेट<sup>३</sup> रावी कधन ॥  
तलें होर ऊपर जो निझाड<sup>४</sup> उमे । सो पूरा च<sup>५</sup> दिलगीर<sup>६</sup> पाई उमे ॥३८२०॥  
वही यो कि "ए बक्टर<sup>७</sup> याग, तूं । अजव कोई पखी है मक्कार<sup>८</sup> तूं ॥  
मवव<sup>९</sup> क्या है जो यो ह दिलगीर आज । कना<sup>१</sup> खोल कर वारे<sup>२</sup> मुजवर<sup>३</sup> आज ॥

( ४ ) चार कहानियों का संक्षेप—

पहिली कथा में मौदागर की स्त्री का एक नागरिक तरुण में प्रेम वह चुके ह, और यह भी कि स्त्री न रातमें आने का वचन दिया था। घर में निकलने से पूर्व अभिसारिका ने मैना और तोता में गाय लेनी चाही—

सो वह बेवदल<sup>१</sup> नार चदरवदन । हली<sup>२</sup> लाजती आइ मैना कधन<sup>३</sup> ॥  
वही यो जो "ऐ तूं हे शीरी-खवान<sup>४</sup> । ॥२१६॥

लग्या दिल मेरा एक नवे यारमो । भुले है नयन उसके दीदार<sup>५</sup> सो ॥२२१॥

कहाते महाडी<sup>६</sup> यो जा मैं चडी । जो आ मुंज उपर ऐसी वाजी<sup>७</sup> खडी ॥

। मिल उस यागमो क्यों गमू मुजकूं बोल<sup>८</sup> ॥

मुनी वो जो मैना न मुनने की बात । बजा<sup>९</sup> यो उठी बोलकर उसके साथ ॥

कि "ए मोहिनी तूं ह नारी अमील<sup>१</sup> । मुट<sup>२</sup> तू नकचा<sup>३</sup> अपने सीने सेडी ल ॥

नेरा मद होय त्यो तुजे कोइ न होय । कि तुज नारकूं ना मजे मद दौय ॥

कि है पाकदामन<sup>४</sup> तु नार्या में आज । बडाई वडी तुज है सारवा<sup>५</sup> में आज ॥

वो शार<sup>६</sup> के मू त मुनी जो यो वैन । नमोहत<sup>७</sup> पर उसकी गजव<sup>८</sup> में हो ऐन<sup>९</sup> ॥

मुटी भुईप वै पस उमके मरोड । सो मैना दिये थरथरा जिवकुं छोट ॥

कि वान बजा<sup>१</sup> जाई तोते के पास । मगर<sup>२</sup> आवे उसके कधी<sup>३</sup> ते वरआस ॥२३०॥

सताल्या<sup>४</sup> पिरित वा जो तपना उसे । कही खोल सब हाल अपना उसे ॥

१ तकलीफ, २ बेकार, ३ अधीरता, ४ जलदी, ५ चंद्रमा, ६ घय, ७ खोला, ८ गाँठ, ९ दृष्टि, १० दाहिने, ११ तरफ, १२ चित्ता, १३ सीधे, १४ ध्यान में देखा, १५ पूरा ही, १६ दुखी, १७ फटीर, १८ घोलेवाज, १९ कारण, २० वान, २१ अर्थ, २२ मेरे पास, २३ अनमोल, २४ धीरे, २५ मैना के पास, २६ मधुरभाषी, २७ दर्शन, २८ अटारी, २९ खेल, ३० कैसे चित्ताऊँ, ३१ इसके बाद, ३२ फुली, ३३ छोड़, ३४ चित्त, विचार, ३५ सती, ३६ सारिका, मैना, ३७ शिक्षा, ३८ जोध, ३९ बिलकुल, ४० फेंको, ४१ इसके बाद (बाद अर्जा), ४२ शायद, ४३ पास, ४४ कोडा ला।

वो तोता पिछान उमके मन का खियाल । नहो गर<sup>१</sup> बुरा, अक्ल अपना संभाल ॥  
 कहां गर इसे मन<sup>२</sup> करता हूँ मैं । तो मैना के नमने च<sup>३</sup> मरता हूँ मैं ॥  
 भला है च अब काल<sup>४</sup> से पेश अ.ऊँ । उसीके च वे ख्याल भें मेल जाऊँ ॥ २३४ ॥  
 कह्या यों कि "ऐ शहपरी<sup>५</sup> नेकनाम<sup>६</sup> । तू आक्रिल<sup>७</sup> हो के यों गलत<sup>८</sup> की तमाम ॥ २३७ ॥  
 वो शारू<sup>९</sup> तुसों<sup>१०</sup> गरचे<sup>११</sup> जिन्स<sup>१२</sup> थी । वलेकिन<sup>१३</sup> कहां अक्ल उसकूँ एती ॥ २३८ ॥  
 कि थी सख्त<sup>१४</sup> कोदन<sup>१५</sup> वो तो, उसके साथ । न कहना अथा<sup>१६</sup> आपने दिलकी बात ॥ २४० ॥  
 छिगा राख तू आजते राज<sup>१७</sup> यो । मुबादा<sup>१८</sup> सुने कोइ आवाज<sup>१९</sup> यो ॥  
 कि हरक्यों<sup>२०</sup> करूंगा तेरा काम मैं । न कर वातिन<sup>२१</sup> अपना परेशानवै ॥ २४२ ॥  
 बजा<sup>२२</sup> होयगा कजिया तेरा बुरा । हुआ था जो उस एक राँवी केरा<sup>२३</sup> ॥ २४४ ॥  
 कता हूँ सुन वो कजिया ऐ धन, तुजे । ..... ॥ २४५ ॥

—कथा १

सुन्या था जो सौदागर यक बेनजीर<sup>२४</sup> । अथा उसकने एक तोता गंभीर<sup>२५</sup> ॥  
 वफ़ादार<sup>२६</sup> खुशफाम<sup>२७</sup> शीरी-कलाम<sup>२८</sup> । हुनर गैव<sup>२९</sup> के था समज मे तमाम ॥  
 करे घरकी. सब दीदबानी<sup>३०</sup> वही । ..... ॥  
 जो एक दिन वो सौदागरे नामदार । चल्या करने सौदागरी एक ठार ॥  
 लगे देस लै<sup>३१</sup> वेग पाया न आन । थी ज्वांसकी औरत लगी तिलमिलान ॥ १२५० ॥  
 जवाँ उसके बाडे<sup>३२</sup> में था एक खूब । लगाई छिप्या इस्क उसे देख खूब ॥  
 मँगे जीव तो घर बुला भेज उसूँ<sup>३३</sup> । करे जौक<sup>३४</sup> फूलाँसों भर सेजकूँ ॥  
 वो तोता जो कुछ उनकरे सो निझाय<sup>३५</sup> । वले मूँपे औरत के हर्गिज<sup>३६</sup> न लाय ॥  
 मुँडी शहपरा<sup>३७</sup> मे वो गरदान<sup>३८</sup> कर । न जाने च त्यों चुप रहे जानकर ॥  
 जो आया वो सौदागरे नेकनाम । खबर घर के राँवी कुँ पूछा तमाम ॥  
 कने<sup>३९</sup> का जो कुछ था कह्या उसके साथ । वले<sup>४०</sup>ने किया पास<sup>४१</sup> औरत की बात ॥  
 कतेक दिनकूँ वो राज<sup>४२</sup> ज्यों भार<sup>४३</sup> ते । हुआ मर्द पर जाहिर<sup>४४</sup> यक तारते ॥  
 दिल उसते वही तोड लेने लग्या । हलों<sup>४५</sup> उसकुँ आजार<sup>४६</sup> देने लग्या ॥  
 ओ नादान<sup>४७</sup> ना जान यों दिलमें ल्याइ । कि राँवी च<sup>४८</sup>ते यो बला मुज पो आइ ॥  
 कह्या है यही राज सब खोल उसे । किया घात मुजपर यही बोल उसे ॥

१. शायद, (गहों पंजाबी), २. वर्जित, ३. मैना के सदृश ही, ४. उपाय, ५. परियों की रानी, ६. सुनास, ७. बुद्धिमान्, ८. भूल, ९. मैना १०. तुझसे, ११. यद्यपि, १२. सजातीय, (स्त्री-जातिकी), १३. लेकिन, १४. भारी, १५. मूर्ख, १६. था, १७. रहस्य, १८. शायद, १९. शब्द, २०. हर तरह, २१. हृदय, अन्त, २२. इसके बाद, २३. तोते का, २४. अनुपम, २५. संजीदा, २६. भक्त, २७. सुसमझ, २८. मधुरभाषी, २९. दैवी विद्या, ३०. देखभाल, ३१. बहुत, ३२. मुहल्ले, ३३. उससे, ३४. प्रेम, ३५. ध्यान से देखा, निध्यान ३६. कदापि, ३७. परों के राजाओं, ३८. छिपा, ३९. कहने, ४०. लेकिन, ४१. प्रकट, ४२. रहस्य, ४३. बाहर से, ४४. प्रकट, ४५. धीरे, ४६. कष्ट, ४७. मूर्ख, ४८. तोता ही ।

जो पक्की बही दद<sup>१</sup> राँवी ऊपर । सो पिजरे में ते काड उपाँइ उसके पर ॥  
छजे तल दिये मँल<sup>२</sup> जाया<sup>३</sup> उसे । ॥  
जो पूछ्या उसे मर्द राँवा कही । ॥  
हुआ क्या वो कह खोल हाली<sup>४</sup> मुँजे । कि दिसता है पिजरा मो खालीमुँज ॥  
जवाँ मरु<sup>५</sup> सो वै वो औरत फिराइ । 'बिली चाइ' कर ल्या के वो पर<sup>६</sup> दिखाइ ॥  
वो पर देख खा लाख अफमोस मर्द । गुमा दिलमें उवत्या मो नामोम<sup>७</sup> मर्द ॥  
कवाहत<sup>८</sup> सी आजार दे वेशुमार । वही घरतँ औरतकुं भाया<sup>९</sup> बहार ॥  
जो वो भार<sup>१०</sup> कद<sup>११</sup> घरते निक्ली न थी । गली होर बाजार चिक्ली<sup>१२</sup> न थी ॥  
भुकी हार प्यासी नेंगे पाँव साय । अकेली निराधार ना कोइ संगत ॥  
निकल शह ते जो एकट<sup>१३</sup> भार आइ । अथा एक रौजा<sup>१४</sup> सो उस ठार आइ ॥ २७० ॥  
कही यो तो नै आदमी का निशान । ॥  
यो रौजा सो है मठ किमी खाम का । कि दिसता है यो ठार इसलास<sup>१५</sup> का ॥  
भला है जो मै इन वली<sup>१६</sup> खास सो । लगा दिल कटँ सिदमत<sup>१७</sup> इसलास सा ॥  
कि शायद मुँज ऊपर मेहरवान होय । ॥  
छिनक<sup>१८</sup> नीर-अँजु<sup>१९</sup> उस सफादार<sup>२०</sup> ठाँव । रही दुखसो गरदान<sup>२१</sup> ले हात-पाँव ॥  
वो रावाँ<sup>२२</sup> जा पिजरे में ते भार<sup>२३</sup> काड । निक्ली जो थी उसके शहपर<sup>२४</sup> उपाड ॥  
न जाया<sup>२५</sup> होके सब बलायाँ ते बाँच । रह्या था वतन<sup>२६</sup> करके अब्वलते वाच ॥  
देखा जा उसे झाड-उपरालते । उतर आइया वै<sup>२७</sup> हरी डालते ॥  
छिप्या जाके रौजे केरा एक ठार । हलो<sup>२८</sup> आसरे ते उठ्या यो पुवार ॥  
कि 'ऐ मोहिनी याँ जो तू आई है । जो इसलास<sup>२९</sup> हमनासेती ल्याई है ॥ २८० ॥  
तेरे सीस पर है सो सब कँस काड । भवाँ होर पलकाँ के ले वाल उपाड ॥  
मुजावर हो याँ बीस चालीस दिन । किसी बाब दिलकूँ न कर ले संगीन ॥  
तेरा मद तुजसो<sup>३०</sup> मिलनहार है । तुजे फतहयावो<sup>३१</sup> इमी ठार है ॥  
सुनी यो जो आवाज दरहाल<sup>३२</sup> ओ । सुटी काड सब तनपो के वाल ओ ॥  
हुआ वेवजा<sup>३३</sup> रूप जाँ का तहाँ । न पलकाँ न मिरकूँ पट्याँ ना भवाँ ॥  
रखी छीज सब तन सो भालूके सार<sup>३४</sup> । निक्ल आइया मूँतँवालू के सार ॥  
बुरी सल्लत दिसने लगी ऐव<sup>३५</sup> ते । हुई मस्तरागी बडी गँव ते ॥  
ओ रावा वजाँ<sup>३६</sup> आसरे ते निक्ल । निज्ञा<sup>३७</sup> उसकुँ याँ-वाँ उपर होर तल ॥

१ झगडा, द्वेष, २ फँक, ३ बर्बाद, ४ तुरत, ५ फरेब, ६ पल, ७ सहन,  
८ परेशानी, ९ पापा (डाला), १० बाहर, ११ कभी, १२ घुमी, १३ अकेली,  
१४ समाधि-मदिर, १५ मुहब्बत, १६ सत, १७ सेवा, १८ छलक, १९ आँसू के जल,  
२० स्वच्छ, २१ परेशान, २२ तोता, २३ बाहर, २४ उड़ने के पल, २५ बर्बाद, २६ घर,  
२७ वहाँ ही, २८ घीरे, २९ स्नेह, भक्ति, ३० पुजारी, ३१ सफलता, ३२ इसी समय,  
३३ बरे डग का, ३४ सरीला, ३५ दोष, ३६ इसके बाद, ३७ ध्यान से देख ।

अधिक तेज काँटे ते भी सस्त बोल । लग्या बोलने ताईं मिन्कार खोल ॥  
 कि "ऐ बेकटर<sup>१</sup> धन ओ राँवाँ हूँ मै । निकाली जो थी बेगुनह मेरे तै ॥२९०॥  
 मेरे हकपो<sup>२</sup> तूँ कुछ भी नेकी न की । खुदा का हुआ खेल कैसा देखी ॥२९१॥  
 सकत है जो अब मर्दसे तुज मिलाउँ । तुजे होर उसे एक दिल कर दिखाउँ ॥२९८॥  
 रंजानी<sup>३</sup> तो तू क्या हुआ मुँजकूँ । अजूँ<sup>४</sup> भी वफादार<sup>५</sup> हूँ तुज्झ सूँ<sup>६</sup> ॥२९५॥  
 दे धीरज<sup>७</sup> उसे इस वजा<sup>८</sup> बेहिसाब<sup>९</sup> । उड्या वाँते दरहाल<sup>१०</sup> राँवा शिताब<sup>११</sup> ॥३००॥  
 सो उतर्या कदीम आपने घरमें जा । वली-न्यामत<sup>१२</sup> अपने कुं देखा निझा<sup>१३</sup> ॥  
 क्या बेनिहायत<sup>१४</sup> दुआ<sup>१५</sup> उसके तै<sup>१६</sup> । कह्या यों ऐ साहेब, औ रावाँ हूँ मै ॥  
 जो पिजरे में ते खींचकर भार<sup>१७</sup> काड । बिली खाई थी मुँजकूँ फाड-फाड" ॥  
 मुन्या जो वली न्यामत उसते यो बात । अजायब<sup>१८</sup> लग्या उसके तै धात धात<sup>१९</sup> ॥  
 सो बोल्या "अझूँ तो कयामत<sup>२०</sup> है दूर । हुआ क्यों कना<sup>२१</sup> फेर तेरा जहूर<sup>२२</sup>" ॥  
 कह्या तव कि "ऐ भोगिनी<sup>२३</sup> नामदार । तेरा नाँव रोशन अछो<sup>२४</sup> ठार-ठार ॥  
 जो अपनी पियारी सुँदर नार कूँ । गजब बेसबब<sup>२५</sup> कर सुट्या भार<sup>२६</sup> तूँ ॥  
 फलाने वली के सो रौजे में आ । रही है पकड गोशा<sup>२७</sup> भी कै न जा ॥  
 मेहरबान हो वो वली उस उपर । मुँज अपनी दुआ<sup>२८</sup> साथ फिर जिदा कर ॥  
 दिये भेज तुजकन<sup>२९</sup> देउँ कर गवाह । कि है पाक<sup>३०</sup> तुहमत ते<sup>३१</sup> ओ बेगुनाह<sup>३२</sup> ॥३१०॥  
 जघाँ लग<sup>३३</sup> तेरे घरमने<sup>३४</sup> मै<sup>३५</sup> अथा । न देख्या कधी कुच्छ उसते खता<sup>३६</sup> ॥३१२॥  
 चल उस पाक-दामन<sup>३६</sup> केरे ठार तूँ । वफादार<sup>३७</sup> हो मिल वफादार सूँ ॥  
 लगी सब उसे दिलकुँ राँवी की बात । उसी तिल<sup>३८</sup> चल्या वै<sup>३९</sup> शिताबी<sup>३९</sup> संगत ॥  
 देखत अपनी औरतकुँ लाया गले ।  
 केते वजासो<sup>४०</sup> उज्रख्वाही<sup>४१</sup> किया । ले जा घर उसे बादशाही दिया ॥  
 ओ रावाँ उसे काम आया है ज्यो<sup>४२</sup> । तुजे काम मै<sup>४३</sup> आनहारा हूँ यो<sup>४४</sup> ॥३१७॥  
 गर ऐ मोहिनी, इश्क सो<sup>४५</sup> तुज है काम । अँदेशा न कर काम कर ले तमाम" ॥३१८॥  
 जो उस बात पर ओ चँचल छँदभरी<sup>४६</sup> । जो रूख<sup>४७</sup> यार के घरकूँ जानेकरी ॥३२१॥  
 यकायक सुबा<sup>४८</sup> का उजाला हुआ । उसे उजाला सौ जाला<sup>४९</sup> हुआ ॥

१. क्रूर, २. मेरे ऊपर, ३. रंजीदा, किया, ४. आज भी, ५. भक्त, ईशानदार,  
 ६. शक्ति, ७. धीरज, ८. इस प्रकार, ९. बहुत, १०. उसी समय, ११. जल्दी, १२. महान् सत्ता,  
 १३. ध्यान से देख, १४. बहुत-बहुत, १५. आशीर्वाद, १६. उसके लिये, १७. बाहर, १८. अच-  
 रज, १९. भाँति-भाँति २०. प्रलय, २१. क्योंकि, २२. प्राकट्य, २३. भोगस्वामी, २४. रही,  
 २५. अकारण निर्दोष, २६. बाहर निकाल फेंका, २७. को पकड़ना, ध्यान-पूजामे रमना,  
 २८. आशीर्वाद, २९. तेरे पास, ३०. निष्पाप, ३१. पास से, ३२. निरपराध, ३३. जब  
 तक, ३४. घर में, ३५. अपराध, ३६. सती, ३७. भक्त, ३८. पल, ३९. वहाँ जल्दी,  
 ४०. कितने ही प्रकार से, ४१. प्रार्थना, ४२. चतुराई भरी, ४३. मुँह, ४४. प्रातः, ४५. ज्वाला ।



परेशान हो फेर चित्त गम' मो लाइ । निवल देम आया सो जाने १ पाइ ॥  
गवासी उतम रैन काली दरज' । यकी' जान है ऐन' आगिकनेवाज' ॥  
रयनते तो है देम रोशन गही । वत्रे' काल' मो आगिका' वा गही ॥

—रथा १९

मुया था जा एक नीरमीदा' जवान । अया' उमवी मूगत पो हैगन' भान' ॥२५९०॥  
मुमल्लम' अया हुस्नमे' वेवदल' । गो अपने गरते यवेला निवल ॥  
किया शह्र बाबुल मने' जा मुवाम । हुआ श्राद यव रातव बाँका तमाम ॥  
सा फूलाँ के हूगाम' मे' एक दिन । गया गैरूँ वाग'गही' मे' उन ॥  
यवायकूँ वाबुल के राजा की जाइ' । उमी वागमे' मँर करनेकुं आइ ॥  
नजर उसनी उस ज्ञान पर जो पडी । लगा जीव, आशिक हुई उम घटी ॥  
जा देख्या वो ज्वाँ उस गुलदाम' कू । दिवाग' हो खोया वहा फाम' कू ॥  
जब आ नार घर आइ उस मँरते । छुवा दिलमे' उम इस्क कूँ गैरने' ॥  
अपममें च वेताय' हानी अछे । अँख्याँ मीच अँदुवा' जे रोनी जछे' ॥  
परेशान' हा वो बेचारा वहार' । लग्या फिगने चीत्रे' वारे के मार' ॥  
न उसकी गवर उस अँपडनी' दिमे । नजर उमवी उमपर न पढती दिमे ॥२६००॥  
जो एक साहिर 'उम शह्र म्याने गँभीर' । अया' सेह्र' के फनमने' वेनजीर' ॥२६०२॥  
लग्या सिदमत' उमवी करन रोज जा ।  
मो यकदिन जवाँ वो सुशी साथ गोल । तह्या "क्या है मारमूद' तेरा सो बोल" ॥  
तब वो ददमद' इश्क के दाग' वा । कह्या गोल विस्मा सब उस वाग ता ॥  
मुन ओ साहिर उसका हकीकत' तमाम । बह्या मुंज अँगे सह्रल' कुछ हँयो वाम ॥  
जा मंगता चँदर सूरँके काइ सार' । तुजे आसमाँ परते दँता उतार ॥  
मिलाना तुज उसमाँ केता काम है । वा सीता तेरी जान तू राम है" ॥  
बह्र इम घात दरहाल वो सेह्रगर' । दिया वाड यक मोहरा कुछ मेह्र कर ॥  
बह्या "नर हा पकडे या मूमे' उसे । दिमे नार हो हर विमीकूँ उमे ॥२६१०॥  
जा नारी हा रख लेवे मूमे' उसे । ता मार्याँ की अँगियाँ मे' तर हँो दिसे ॥

१ डुल, २ लम्बो, ३ विश्वास, ४ बिलकुल, ५ प्रेमी पर दयालु, ६ लेकिन, ७ मौत,  
८ प्रेमियो, ९ नवागत, १० बिलकुल, ११ चकित, १२ सूर्य, १३ धुरा, १४ अनुपम,  
१५ बाबुलमे, १६ बहुतायत, १७ राजोद्यान, १८ पुत्री, १९ फूल जैसे शरीरवाली,  
२० पागल, २१ समस्त, २२ दूसरे से, २३ अघोर, २४ आँसू, २५ रहँ, २६ हैरान,  
२७ बाहर, २८ चारो ओर, २९ सरीखा, ३० पहुँचती, ३१ जादूगर, ३२ शहर के  
बीच, ३३ सजीवा, ३४ था, ३५ जादू, ३६ बिचा में, ३७ अद्वितीय, ३८ सेवा,  
३९ चाह, ४० डुरी, ४१ जलन, ४३ बातें, ४३ आसान, ४४ सरीखा, ४५ जादूगर।

उसी सात<sup>१</sup> ले बरहमन की मिसाल<sup>३</sup> । वो मोहरा सो उस ज्वान के मूंमे<sup>५</sup> घाल ॥  
 चला लेके बाबुल के राजा के थान । कह्या "नांव मेरा है अष्टावधान ॥  
 जो मुज एक बेटा अथा<sup>३</sup> नौजवान । गया है निकल कै सो मेरा परान ॥  
 परेगान है उस बदल<sup>७</sup> रात-दिन । उसी नूरदीदे<sup>९</sup> की औरत है इन ॥  
 है पाँवाँ कुं मेरे यो बेडी के सार<sup>६</sup> । महाराज, अगर तू धरै मुँजपो प्यार ॥  
 रखाये हरम<sup>१०</sup> के दरूनी<sup>८</sup> इसे । तो उपकार बंदे पो लै<sup>९</sup> कुछ दिसे ॥  
 फरागत सेती<sup>१०</sup> वादजाँ<sup>११</sup> ठाँउ-ठाँउ । धुँडूँ होर फ़र्जद कू अपने पाँउ<sup>१२</sup> ॥  
 वो कये त्यो<sup>१३</sup> च<sup>१३</sup> राजा क़बूल<sup>१४</sup> उसकी बात । दिला राहखर्ची<sup>१५</sup> उसे मेह्ल<sup>१६</sup> साथ ॥  
 उस औरत के तै<sup>१७</sup> दी<sup>१७</sup> उसी तिलमने<sup>१७</sup> । हरम<sup>१८</sup> में दिया भेज बेटीकने<sup>१९</sup> ॥  
 जो उस रूपसों जा हरम में वो ज्वान । देख्या उस सखीकुं सो पाया परान ॥  
 हुआ उसकी सेवाकुं मशगूल<sup>२०</sup> यो<sup>१८</sup> । जो सेवा देख उसका खिले फूल ज्यो<sup>१८</sup> ॥  
 बले<sup>२१</sup> राज<sup>२२</sup> दिलका न भा<sup>२३</sup> भार<sup>२४</sup> वो । दुँबाल<sup>२५</sup> उसकी फिरता अछै<sup>२६</sup> झाँव हो ॥  
 मुहब्बत लगा दो मे<sup>२७</sup> इस धात<sup>२७</sup> का । जो पर्वा न था म्याने<sup>२८</sup> किस बात का<sup>२९</sup> ॥  
 सो यक देस पूरा च हो गमगुसार<sup>३०</sup> । कह्या यो<sup>३०</sup> कि "ऐ मोहिनी, गुलअज़ार<sup>३१</sup> ॥  
 लताफ़त<sup>३२</sup> की है डाल की फूल तू । बले जिवते अछती<sup>३३</sup> है मखमूल तू ॥  
 गुलाली तेरे गाल जो जर्द<sup>३४</sup> है । मगर<sup>३५</sup> इश्क का कुछ तुझे दर्द है ॥  
 कि है मुज खबर इश्क के दर्दते । कि सोसी<sup>३६</sup> हूँ मे<sup>३६</sup> आपने मर्द ते ॥  
 कहेगा तेरा राज<sup>३७</sup> मँजकुं न लाज । तो हर क्यो<sup>३८</sup> कखँगी मै उसका इलाज<sup>३९</sup> ॥  
 मुहब्बत की जो गुदगुली<sup>४०</sup> उस छुटी । समाया<sup>४१</sup> सो उस वाग का बोल उठी ॥२६३०॥  
 ..... । कह्या यो<sup>४२</sup> कि "ऐ माहरमाँ<sup>४२</sup> की भान ॥  
 गर उस ज्वानकू तुजकू दिखाउँ एताल<sup>४३</sup> । तो क्या दान दे मुँज करेगी निहाल ॥  
 कही वो जो मेरी नजर में बसे । अगर तू हो दिखलायेगी मुँज उसे ॥  
 तो जीते तलक जिवके मानू तुजे । सदा नैन की पुतली जानू तुजे" ॥  
 सो वो मोहरा<sup>४४</sup> मूं मे ते वै<sup>४५</sup> भार<sup>४५</sup> काड<sup>४६</sup> । दिखाया उसे रूप अव्वल के सार ॥  
 वह आशिक़ सहेली हो हैरान वै<sup>४७</sup> । कर उस रूप पर अपसे<sup>४८</sup> कुर्वान<sup>४९</sup> वै<sup>४९</sup> ॥ ...

१. साथ, २. रूप, ३. था, ४. उसके लिये, ५. आँख की रोशनी, ६. बेड़ी-जैसी, ७. अन्तःपुर, ८. भीतर, ९. बहुत, १०. छुट्टी से, ११. इसके बाद, १२. कहे, १३. वैसे ही, १४. स्वीकार, १५. यात्रा का खर्च, १६. मेहरवानी, १७. क्षण में, १८. अन्तःपुर, १९. बेटी के पास, २०. लगा, व्याप्त, २१. लेकिन, २२. रहस्य, २३. पा (पंजाबी), २४. बाहर, २५. पीछे, २६. साया, २७. भाँति, २८. बीच में, अंदर, २९. किसी बात की, ३०. सहानुभूति रखनेवाला, ३१. फूल से गालोंवाला, ३२. मंजुता, ३३. रहती, ३४. पीला, ३५. क्या, ३६. सही, ३७. रहस्य, ३८. हर तरह, ३९. दवा, ४०. गुदगुदी, ४१. दृश्य, ४२. चंद्रमुखियाँ, ४३. इसी समय, ४४. गुटिका, ४५. बाहर, ४६. सरीखा, ४७. अपने को, ४८. नौछावर, ४९. वहीं।

कही "मुंजकुं जरा<sup>१</sup> न उम्मेद था । बले<sup>२</sup> बोल क्या यो तेरा भेद था" ॥  
 सो खुश हो गुलिस्तान<sup>३</sup> के सार<sup>४</sup> खिल । लगे दोइ हिज<sup>५</sup> करने राता कु मिल ॥  
 सो ओ जवान उस धनके मूते यो बोल । समाया सरासर कह्या खोल-बोल ॥  
 सुवा हुइ तो मोहरा वो मू मे<sup>६</sup> सुटे । यकायक औरत का ले रूप उटे ॥२६४०॥  
 केतक देस चल्या जीक<sup>७</sup> वेदगदगा<sup>८</sup> । दिया नागहाँ<sup>९</sup> यो फटक<sup>१०</sup> ज्यो दगा<sup>११</sup> ॥  
 सो एक देस चल्या न्हावने<sup>१२</sup> कू वो जवा । देखा भाइ उस नार का एक ठाव ॥  
 चुम्या आँख मे<sup>१३</sup> हुस्न<sup>१४</sup> उस अपरूपका । सो आशिर<sup>१५</sup> हुआ उमवे वै<sup>१६</sup> रूप का ॥  
 दिवाना<sup>१७</sup> हो यकवारगी जीभ खोल । दिया भेज यो दाइ के हाथ बोल ॥  
 कि "मुंज आज ऐडुस्न के आफताव । करेगी तेरे वस्ल<sup>१८</sup> सो<sup>१९</sup> वामयाव<sup>२०</sup> ॥२६४५॥  
 । दिया ज्वाव<sup>२१</sup> यो दाइकू ज्ञान साथ ॥

कि मै<sup>२२</sup> आप औरत हूँ यक मर्द की । ॥

कि सुसरा सो मेरा पत्या राजकू । यहा रग गया है शरम-लज सूँ ॥  
 खयानत<sup>२३</sup> करे आँख सेती मुंजे । निज्ञाना<sup>२४</sup> तो वाजिव<sup>२५</sup> न था यो तुजे ॥२६५०॥  
 सुन यो ज्वाव फर्जद<sup>२६</sup> उस राज का । दिया छोड सुघ वाम होर वाजका ॥२६५१॥  
 जो<sup>२७</sup> उस राजकू अँपडी<sup>२८</sup> यो सवर । हो<sup>२९</sup> हूरान अपम मे<sup>३०</sup> अपे मरसवर ॥२६५३॥  
 कह्या "यो तो परमद की नार हूँ । कम्<sup>३१</sup> क्या खयानत<sup>३२</sup> कि नाकार हूँ ॥  
 मै<sup>३३</sup> क हता हूँ यो राज किस घेर<sup>३४</sup> खोल । हो मेरी दियानत<sup>३५</sup> पर आता हूँ बोल ॥  
 अगर चुप रता<sup>३६</sup> हूँ, तो कर दिलवुं चाक<sup>३७</sup> । जिगर-गोशा<sup>३८</sup> होता है मेरा हलक<sup>३९</sup> ॥  
 पशोमान<sup>४०</sup> इस घात<sup>४१</sup> हो आव्रत<sup>४२</sup> ॥

दिया भेज यो<sup>४३</sup> बोल उस नार कू । कि फर्जद मेरेवुं कर प्यार तू" ॥२६५८॥  
 जो<sup>४४</sup> इ स घात की वाजी<sup>४५</sup> उस आई पेश<sup>४६</sup> । फरामत<sup>४७</sup> मो<sup>४८</sup> तव अपने मनमे<sup>४९</sup> अँदेश ॥  
 ले राजा की बेटीकु वो पुस्ताकार<sup>५०</sup> । चत्या सुश<sup>५१</sup> उमी सेहगर<sup>५२</sup> के दयार<sup>५३</sup> ॥२६६६॥  
 सो दरहाल<sup>५४</sup> वो सेहगर वनजीर<sup>५५</sup> । वही मोहरा उस जवान कनेते<sup>५६</sup> ले फीर ॥  
 सुट्या मू<sup>५७</sup> मने<sup>५८</sup> उम सहेली के सो । लगी दिमने सिर पाँव लग मर्द हो ॥  
 । उट्या शहमे<sup>५९</sup> गुल जहा का तहाँ ॥

कि "राजा की बेटी होर ओ नार जो । अमानत थी यकवारगी आजसो ॥२६७०॥

१ जरा, थोडा, २ लेकिन, ३ फुलवाडी ४ सरीखा, ५ आनद, ६ आनद,  
 ७ बिना भय के, ८ यकायक, ९ आकाश, १० घोखा, ११ सुदरता, १२ प्रेमी,  
 १३ पागल, १४ मिलन, १५ सफल, १६ उत्तर, १७ धरोहर मारना, १८ ध्यान  
 से देखना, १९ उचित, २० पुत्र, २१ पहुँची, २२ विश्वासघान, २३ किसी के पास,  
 २४ ईमानदारी, २५ रहता, २६ फाड, २७ कलेजे का टुकडा (पुत्र) २८ मरण,  
 २९ लज्जित, ३० भाँति, ३१ अतमें, ३२ खेल, ३३ सामने, ३४ समझवारी,  
 ३५ चिंता, ३६ सिद्धहस्त, ३७ प्रसन्न, ३८ जादूगर, ३९ जगह, ४० तत्काल, ४१ अनुपम,  
 ४२ जवान के पास, ४३ डाला मुँह में।

हुयाँ है<sup>१</sup> हरम में<sup>२</sup> दोनों च ग़ैब<sup>३</sup> । .....॥  
 किये धूँढ धूँढ शह्र सब तल-उपर । पड़्या नै किसे खोज उनन का नजर ॥२६७२॥  
 केतक दिन पछी<sup>४</sup> कुं जो वो गलबला<sup>५</sup> । हुआ सदर्<sup>६</sup> सो फिर वो साहिर<sup>७</sup> बुला ॥  
 ले उस ज्वानकू पीठ<sup>८</sup> सो साज साथ । मिल्या जायकर तुर्त उस राज साथ ॥  
 कि पहिले दुआ सो जवाब खोलकर । उठा बादजाँ<sup>९</sup> इस वज़ा<sup>१०</sup> बोलकर ॥  
 “जो बेटा मेरा गुम हुआ था सो फेर । मिल्या ..... ॥  
 वो फर्जद<sup>११</sup> सो है यही नौनिहाल<sup>१२</sup> । वो औरत अमानत<sup>१३</sup> है उसकी हलाल<sup>१४</sup> ॥२६८०॥  
 सआदत<sup>१५</sup> भर्या आज का दिन दिसे । मिलाना भला आज उसे होर इसे ॥२६८१॥  
 हुआ वायला<sup>१६</sup> जो वो यो बात बोल । जबाँ<sup>१७</sup> राज तब उज़्रखाही<sup>१८</sup> सो खोल ॥२६८३॥  
 कह्या कैफियत<sup>१९</sup> दोई का उस धरी<sup>२०</sup> । वो सुनत्या च वै चाक<sup>२१</sup> करले सरी ॥  
 सितम<sup>२२</sup> धरतिरी के उपर डाल अपस । दिखाया खलक<sup>२३</sup> बीच बेहाल<sup>२४</sup> अपस ॥  
 कह्या “मै भरोसा तेरे सतपो कर । गया उस-न्इनी ताई इस ठाँव धर ॥  
 जो तू राजा हो यो खयानत<sup>२५</sup> करे । तो क्यो बेनवा<sup>२६</sup> आवे तुज आसरे ॥  
 ..... । हो गमगी<sup>२७</sup> वो राजा उतम जात का ॥  
 बुजुर्गी<sup>२८</sup> कुं इस काम के म्याने सट<sup>२९</sup> । उसे लाख हुन<sup>३०</sup> दे किया दूर झट ॥  
 चडे लाख हून जो वो साहिर<sup>३१</sup> के हाथ । खुशी आन ले मनमें कइ लाख-लाख ॥२६९०॥  
 जो फिर आइया वाँ ते अपने मुकाम । सो बखशा<sup>३२</sup> उसी ज्वान कुं वो तमाम ॥२६९१॥  
 जो वो दोइ मिल यक हुये ए निगार । हो तू बी मिल उस यार सो आज यार ॥२६९५॥  
 न ला वार<sup>३३</sup> उठ वेग जा दोस्त पास । ..... ॥  
 उठी कस्द<sup>३४</sup> कर जावने जो वो धन । उजाला हुआ सुब्ह का चौकधन<sup>३५</sup> ॥  
 न जा सक रही तिलमिलाती वही<sup>३६</sup> । सुटी<sup>३७</sup> गम सो लइ फोड छाती वही ॥  
 गवासी उतम रैन काली दराज<sup>३८</sup> । यकी<sup>३९</sup> जान है ऐन<sup>४०</sup> आशिकनेवाज<sup>४१</sup> ॥  
 रयनते तो है देस रोशन सही । बले काल सो आशिकाँ का यही ॥२७००॥

—कथा २६

..... । “किसा<sup>४२</sup> राय<sup>४३</sup> का क्या है कह मुँज सही” ॥३३३६॥  
 सो बोलन लग्या “राय माचीन<sup>४४</sup> का । जवाँमर्द<sup>४५</sup> भोगी<sup>४६</sup> खुश-आईन<sup>४७</sup> का ॥

१. अन्तःपुर में से, २. अन्तर्धान, लुप्त, ३. हल्ला, ४. ठंडा, ५. जादूगर, ६. पीछे,  
 ७. इसके बाद, ८. इस प्रकार, ९. पुत्र, १०. नया पौधा, ११. धरोहर, १२. विहित,  
 १३. न्यायानुमोदित, शुभ, १४. बावेला, १५. जीभ, १६. माफी, १७. हालत, १८. पास,  
 धीरे, १९. फाड़, २०. अन्याय, २१. दुनिया, लोग, २२. विकल, २३. विश्वासघात,  
 २४. गरीब, २५. दुःखी, २६. फेंक, छोड़, २७. अशर्फी, (दक्खिन की स्वर्णमुद्रा), २८. जादूगर,  
 २९. प्रदान किया, ३०. देर, ३१. इरादा, ३२. चारों ओर, ३३. फेंकी (पंजाबी),  
 ३४. लम्बी, ३५. विश्वास, ३६. बिलकुल, ३७. प्रेमियों पर दयालु, ३८. कहानी, ३९. राजा,  
 ४०. महाचीन, ४१. तरुण, ४२. भोग, ऐश्वर्य-सम्पन्न ४३. सुन्यायी ।

उत्तम उमके औसाफ<sup>१</sup> होर उमके गुन । थे हैरान तिरलोक के राय सुन ॥  
 जो यक देम निक्ल्या ओ खुलन शिबार । चिड्या एक नादिर<sup>२</sup> पँसी नामदार ॥  
 सो नाजुक होर नम ऐसा च था । समूर<sup>३</sup> उसके अगे<sup>४</sup> शमिदा साँ च<sup>५</sup> था ॥३३४०॥  
 लगी रायकुँ उसकी नर्मी अजव<sup>६</sup> । कह्या ॥  
 कि रूपे-जमीन<sup>७</sup> पर कहीं<sup>८</sup> इसके वात<sup>९</sup> । न होमे<sup>१०</sup> ऐती नम आदम की जात ॥  
 जो था पीरमद<sup>११</sup> एक हाजिर<sup>१२</sup> वहाँ । उठा बोल कर यों ॥  
 कि 'ऐ राय, तन आदमीजाद<sup>१३</sup> का । हवा खाइकर मुस्तलिफ<sup>१४</sup> वाद<sup>१५</sup> का ॥  
 पकडता है मस्ती, अगर नै<sup>१६</sup> तो चम । सो डम जानवरते भी अछता<sup>१७</sup> यो नम ॥  
 वले<sup>१८</sup> आज तन एक उत्तम नार का । न नर्मी मे<sup>१९</sup> के<sup>२०</sup> फूल उस सारखा ॥  
 लताफत<sup>२१</sup> के आलम की है राज ओ । उत्तम पदमिन्याँ की है सरताज<sup>२२</sup> ओ<sup>२३</sup> ॥  
 सुन ओ वातकुँ गय बोल्या "ओ धन । है तिम मुल्कमे, काँ है उसका वतन<sup>२४</sup> ॥  
 उसे नाँव क्या है ओ किसकी है जाड<sup>२५</sup> । कह्या तव ओ शस्य<sup>२६</sup> "ऐ जहाँगीर राइ ॥  
 है इस धर्तिरी के तले यक नगर । सो नाँव उस नगर का है दीपकनगर ॥३३५०॥  
 वहाँ एक राजा है गभीर आज । है उम राज का नाँव मो रामराज ॥  
 वो महबूब<sup>२७</sup> साहेब-जमाल<sup>२८</sup> आज की । है वेटी उसी वेवदल<sup>२९</sup> राज की ॥  
 जो रो<sup>३०</sup>- रो<sup>३१</sup> अगर जीभ होवे मेरा । न कर मक्सू<sup>३२</sup> तारीफ<sup>३३</sup> उम धनकेरा ॥  
 जो उस राजकन<sup>३४</sup> था वजीर यक जवान । मुन्या उमकी तारीफ दे खूब कान ॥  
 सो आशिक हो वै<sup>३५</sup> उम उत्तम नार का । रख्या दिल उपर कस्द<sup>३६</sup> उम शह<sup>३७</sup> का ॥  
 जो अब्बल त<sup>३८</sup> जादूगरी ओ वजीर । सिख्या था ॥  
 फिर्वा राज ज्या खेल कर वो शिबार । मो वै सेह सो वनके च्यूंटी के सार<sup>३९</sup> ॥  
 चल्या एक सूराय में पैमकर । उमी नार के जा को पहुँचा नगर ॥  
 वले<sup>४०</sup> रायकुँ कुछ न था फाम<sup>४१</sup> जो । कि ऐया रगी सो किया काम वो ॥  
 जो गये देम दो-नीन म्यान<sup>४२</sup> गुजर<sup>४३</sup> । सरीर आपना खूब सिंगार कर ॥३३६०॥  
 सो दपन मने<sup>४४</sup> औरत उस राय की । निज्ञा देग छव अपनी जेवाइ<sup>४५</sup> की ॥  
 कही "ऐमी सूरत किसी नार मे । न होमी<sup>४६</sup> कही आज ससार में ॥  
 मेरा मर्द जो रायराया<sup>४७</sup> है आज । इम ऐसा भी कोइ जगमें होमे<sup>४८</sup> न राज ॥

१ गुण, २ दुर्लभ, ३ अतिकोमल चमडा (साइबेरिया का), ४ आगे, ५ सा ही, ६ अद्भुत, ७ भूमण्डल, ८ भाँति, ९ होगा (पजाबी), १० बुड्ढा, ११ उपस्थित, १२ मानव, १३ भिन्न, १४ वात, वायु, १५ रहता, १६ लेकिन, १७ मजुता, १८ शिरोमणि, १९ घर, २० आदमी, २१ प्रिया, २२ सुदरी, २३ अनुपम, अनमोल, २४ रोम रोम, २५ सकूँगा, २६ प्रशस्ता, २७ राजा के पास, २८ वहाँ, २९ इरादा, ३० नगर, देश, ३१ पहिले से, ३२ चींटी के सरोखे, ३३ लेकिन ३४ समझ, ३५ बीच में, ३६ बीते, ३७ दर्पण में, ३८ सुदरता, ३९ होगी (पजाबी), ४० राजाधिराज, ४१ होगा (पजाबी) ।

जो नज्दीक था एक रावाँ<sup>१</sup> वहाँ । सुन इस बातकूँ हँस पड्या नागहाँ<sup>२</sup> ॥  
 सो औरत की खातिर<sup>३</sup> कुँ लागा बुरा । कही वो हँसा रायके धरे<sup>४</sup> दौरा<sup>५</sup> ॥  
 जो पूछा उसे राय, सो फेर तब । ओ रावाँ कह्या “मै हँसा इस सबब<sup>६</sup> ॥  
 जो भागीरथी राय की कर मनम्<sup>७</sup> । कही हुस्न<sup>८</sup> में कोइ नै अपने सम ॥  
 न रायाँमने<sup>९</sup> आजकूँ कोइ राय । कहाँ है जो तेरे मुकाबिल<sup>१०</sup> कुँ आय ॥  
 कि जग में नरो नार कूँ जुल्जलाल<sup>११</sup> । तफ़ावत<sup>१२</sup> सों रोजी<sup>१३</sup> किया है जमाल ॥  
 जो अच्छता<sup>१४</sup> है तूँ जिस जमी के उपर । उसीके तले ऐ गुनी बख्तवर<sup>१५</sup> ॥३३७०॥  
 है दीपकनगर कूर नगर यक गँभीर । वहाँ राय है एक रोशन-जमीर<sup>१६</sup> ॥  
 कि जोड़ा नही इस धरति पर उसे । . . . . . ॥  
 निका नाँव उसका है सो रामराज । अजब<sup>१७</sup> एक धरता है बेटी वो आज ॥  
 है उस नार का रूपसमदूर<sup>१८</sup> नाँव । कि थोड़ा दिसे उस, जेता मै सराँव<sup>१९</sup> ॥  
 मेरी जानकूँ<sup>२०</sup> हुस्नो खूबी में देख । उस ऐसी न होसे<sup>२१</sup> कही जग मे येक” ॥  
 सुन्या राय रावीं ते जिस तिल यो वैन । दिलोजाँ<sup>२२</sup> से उसका दिवाना<sup>२३</sup> हो ऐन<sup>२४</sup> ॥  
 जे कोइ खास हो मातमद<sup>२५</sup> था हज़ूर<sup>२६</sup> । हवा लेकर<sup>२७</sup> उस सलतनत का अमूर<sup>२८</sup> ॥  
 यकट<sup>२९</sup> जोगियाँ का लिया भेस वै । चल्या मम्लकत<sup>३०</sup> छोड़ परदेस वै ॥  
 जो नज्दीक<sup>३१</sup> दरिया की कड़की<sup>३२</sup> पो जा । . . . . . ॥  
 न कै बाट जो जाय मारग पकड़ । न होड़ी जो पेलाड<sup>३३</sup> होय उस प चड़ ॥३३८०॥  
 किया उस दरचा कूँ जो हक<sup>३४</sup> मेहबान । वो साचीन का राज है कर पिछान ॥३३८२॥  
 तुरत अपनी सरहदते<sup>३५</sup> उलगाइया<sup>३६</sup> । जों ओ राय दरिया उतर आइया ॥३३९२॥  
 देख्या वाग फिरदौस<sup>३७</sup> के सार<sup>३८</sup> एक । सो उस वाग में जाके बैठा टुक एक ॥  
 यकायक ऐसे में<sup>३९</sup> वहाँ दो जवान । सलाम आ किये . . . . . ॥  
 उठे बोल यों “ऐ गनी<sup>४०</sup> हक-शिनास<sup>४१</sup> । हमे तुजसों धरते है यक इलितमास<sup>४२</sup> ॥  
 कि दोनों हमें सो सगे भाइ है । जो मीरास<sup>४३</sup> कुछ वापते पाये है ॥  
 सो लड़ते हैं उसके बदल<sup>४४</sup> आइ दोइ । बराबर नही बाँट सकता है कोइ ॥  
 हमन के दो म्याने<sup>४५</sup> तूँ हाकिम<sup>४६</sup> हो आज । ओ तकसीम<sup>४७</sup> कर दे . . . . . ” ॥  
 कह्या राय “क्या है सो बोलो वो चीज । . . . . . ॥

१. तोता, २. यकायक, ३. दिल, ४. पास, ५. दुहराना, ६. इसके कारण, ७. मै हूँ, ८. सौन्दर्य, ९. राजाओं में, १०. प्रतिपक्ष में, ११. सुन्दरी, १२. फर्क, १३. सदा, १४. रहता, १५. भाग्यशाली, १६. समझदार, १७. अद्भुत, १८. रूप-समुद्र, १९. सराहूँ, २०. प्राणों को, २१. होगा, २२. मन-प्राण, २३. पागल, २४. बिलकुल, २५. विश्वासी, २६. सम्मुख, २७. सुपुर्द, २८. काम, २९. अकेला, ३०. देश, ३१. पास, ३२. तट, ३३. प्रस्थान, ३४. सत्य-सरीखा, ३५. सीमा से, ३६. उल्लंघन किया, ३७. स्वर्गोद्यान, ३८. सरीखे, ३९. इसी समय, ४०. धनी, ४१. सच के पारखी, ४२. प्रार्थना, ४३. दायभाग, ४४. उसके लिए, ४५. हम दोनों में, ४६. पासक, ४७. विभक्त।

कहा तबकि वह चार चीज है अवल<sup>१</sup> । सो खर्का<sup>२</sup> अहे उसमने<sup>३</sup> वे-वद<sup>४</sup> ॥३४००॥  
 अगर दिलमंगे सोन टके दस हजार । वो झाडे तो उममें ते निकले बहार<sup>५</sup> ॥  
 दूजा एक बचकोल<sup>६</sup> ऐसा है जो । मंगे<sup>७</sup> जैसी न्यामत्<sup>८</sup> तो होइ पूरयो ॥  
 है तिसरा खडावां केरा जोड यक । जो कोइ पाँव अपना उस उपराल रख ॥  
 करे कस्द<sup>९</sup> जिस मुल्क जिस शाह का । अछै<sup>१०</sup> वाँ च<sup>११</sup> हाजिर<sup>१२</sup> हो यकवार का ॥  
 है चौथा असा<sup>१३</sup> एक इस घात का । अगर वक्त होवे जो कै<sup>१४</sup> रात का ॥  
 जो मारे जमी में उसे जैसे ठार । तो दरहाल होय शह वाँ आशकार<sup>१५</sup> ॥  
 यो वार्ता सुन्या कान धर राय ज्यो । अधिक शाद<sup>१६</sup> हो ल्या लिया दिल में यो ॥३४०७॥  
 कहा बादजा<sup>१७</sup> उनकुं "ओ चार चीज । रखे मूँ अंगे<sup>१८</sup> ल्या जो देजेंतमीज<sup>१९</sup> ॥३४०९॥  
 जो यो ल्या के आंगे रखे राय के । समज स्थालकूँ<sup>२०</sup> उस दोनो भाइ के ॥३४१०॥  
 यकमकूँ कहा "गस्त ता धरे<sup>२१</sup> दौड । यकसकूँ कहा यो चपाधरे<sup>२२</sup> दौड ॥  
 जे कोइ तीर के खास<sup>२३</sup> जावेग आय । ओ अव्वल जे कुछ खुश लगे सो उचाय<sup>२४</sup> ॥  
 जो राजी हो करते हैं यो मुंज हजूर<sup>२५</sup> । तो होता है दोनो में का झज<sup>२६</sup> "दूर" ॥  
 चले दौडते बीच<sup>२७</sup> दोनो जने । हुआ राय कूँ फुमत<sup>२८</sup> ऐसे मने ॥  
 सो उस चार वस्ता<sup>२९</sup> कूँ सोरात<sup>३०</sup> कर । ओ बचकोल<sup>३१</sup> खर्का<sup>३२</sup> असा<sup>३३</sup> हायकर ॥  
 बदम उम खडावे के उपराल रख । निपट अपने मकसूद<sup>३४</sup> पर रयाल रख ॥  
 चत्या नेट<sup>३५</sup> दीपकनगर बीच पैस । ॥  
 जो ओ रायके कस<sup>३६</sup> वन आइया । बजीर आपनेकूँ वहाँ पाइया ॥  
 बट्या तूँ क्यो इस ठार आया कना<sup>३७</sup> । घड्या क्यो तुझे यो समाया<sup>३८</sup> कना ॥  
 दिया ज्वाव ओ यो कि ऐ राय, मूँ । देखन आया या के तमाशा के तै ॥३४२०॥  
 अजब कुछ सो रौनक<sup>३९</sup> था इस ठार का । अजब कोइ गजा है इस शहार का ॥  
 जमी का मगर यो है देवेन्द्र आज । पुनम<sup>४०</sup> का यही है मगर चद्र आज ॥  
 जो वेटी अहे एक इम राज कूँ । सो है बेवदल<sup>४१</sup> हुस्न<sup>४२</sup> में आज कूँ ॥  
 नियत<sup>४३</sup> यो है उसका जो तुज राज बाज<sup>४४</sup> । न लोडे<sup>४५</sup> किती मर्द दुसरे कुं आज ॥  
 येते कुछ है औसाफ<sup>४६</sup> तेरे यहाँ । इस यक जीभसो वह सकूँ मै कहाँ ॥  
 इसी गुफ्तगू<sup>४७</sup> में ये मिल दौइ सूँ । वै<sup>४८</sup> ऐमे मी<sup>४९</sup> पा खबर कोइ सूँ ॥

१ प्रथम, २ पोशाक, ३ उसमें, ४ अनमोल, ५ बाहर, ६ दरियाई नारियल  
 का पात्र, ७ चाहे, ८ दुर्लभ भोग, ९ इरादा, सकल्प, १० रहे, ११ वहाँ ही,  
 १२ उपस्थित, १३ डडा, १४ कहीं, १५ प्रकट, १६ प्रसन्न, १७ इसके बाद, १८ मेरे आगे,  
 १९ विवेक, २० विचार को, २१ दाईं ओर, २२ दाईं ओर, २३ विशेष, २४ उठा,  
 २५ मेरे सम्मुख, २६ झझट, २७ बैसे ही, २८ छुट्टी, २९ चस्तुर्ण, ३० पसन्द, ३१ पात्र,  
 ३२ पोशाक, ३३ डडा, ३४ अभिप्राय, ३५ सीधे, ३६ प्रसाद, ३७ कहना, ३८ मतमें  
 आया, ३९ रमणीय, ४० पूर्णमासी, ४१ अनमोल, ४२ सौंदर्य, ४३ इच्छा, ४४ विना,  
 ४५ ब्याह, ४६ गुण, ४७ वातचीत, ४८ वहाँ, ४९ इसी समय ।

कहै वाँ के राजे कुँ जा नागहाँ<sup>१</sup> । कि “माचीन का राय आया यहाँ” ॥  
 वो राजा सुन्या यो खबर जिस घडी । खुशी आपने दिलमें लिया ले बडी ॥  
 चल्या वैं अपे<sup>२</sup> सामने रायके । ..... ॥  
 देखत रायकी शान के धात<sup>३</sup> कूँ । गया भूल कर आपनी जातकूँ ॥३४३०॥  
 मुहब्बत सों मिल बैस<sup>४</sup> यक तरुत पर । खुशी सों गमा<sup>५</sup> वक्त इस बक्त पर ॥  
 दुजे दिन गुना<sup>६</sup> मेजबानी<sup>७</sup> बडी । दिया बेटी उस देख अमृत घडी<sup>८</sup> ॥  
 जों ओ राय खुर्शीद<sup>९</sup> के नूर का । देख्या रूप उस रूपसमूदर का ॥  
 हुआ शाद<sup>१०</sup> यों जो कह्या कुछ न जाये । ..... ॥  
 जो वो चार बस्ता<sup>११</sup> थे उस रायकन<sup>१२</sup> । निज्ञा<sup>१३</sup> देख यक देस वो गुलबदन<sup>१४</sup> ॥  
 कह्या तब कि “ऐ नार, यो चार सो । मेरे जीव के ऐन<sup>१५</sup> है यार सों ॥  
 अगर पूछती है मुँज उसका तू मोल । है तेरी मेरी बादशाही की तोल ॥  
 कि अज़मत<sup>१६</sup> उनों का जो कुछ है तमाम । अंगे<sup>१७</sup> यकबयक होवेगा तुजकुँ फ़ाम<sup>१८</sup> ॥  
 अहानत सेती<sup>१९</sup> तूँ इननकूँ न देख । यो चारों हैं औतार<sup>२०</sup> एकसते एक<sup>२१</sup> ॥  
 कि इस धात<sup>२२</sup> गुजरे<sup>२३</sup> देखत चंद रोज । ..... ॥  
 रुख<sup>२४</sup> अपने नगर होर मुलक धेरे<sup>२५</sup> कर । जो महबूब<sup>२६</sup> कूँ ले चल्या फेरकर ॥  
 वज़ीर अपने दिलमें हुआ तब दुखी । फिरा रूप यकबारगी हो मखी<sup>२७</sup> ॥  
 गुपत राज<sup>२८</sup> अपना छिपा रायपर । लग्या रायके दौर<sup>२९</sup> कूँ जायकर ॥  
 जो अंगे<sup>३०</sup> हो मंजिल यो मंजिल चले । वो दो भाइ आ बाट म्याने<sup>३१</sup> मिले ॥  
 नजर राय की जो उनन पर पडी । सो यक झाड के तल उतर उस घडी ॥  
 कह्या उज़रवाही<sup>३२</sup> सों “ऐ भाइ हो । हुँ माचीन का मै अपे राय सो ॥  
 जरूरत बदल<sup>३३</sup> मै वो बस्ताँ चहार<sup>३४</sup> । गया लेके तुमनासों<sup>३५</sup> कुछ ना विचार ॥  
 इनों सों च<sup>३६</sup> थी सरफ़राजी<sup>३७</sup> मेरी । ..... ॥  
 मेरा चूक<sup>३८</sup> बख़्शो<sup>३९</sup> न मानो बुरा । खुशी सों तुमे<sup>४०</sup> ल्यो यो बस्ताँ फिराँ ॥३४५०॥  
 कहे तब वो दो भाइ “ऐ हक-गुजार<sup>४१</sup> । हमे तुजते खुशनूद<sup>४२</sup> है बेशुमार<sup>४३</sup> ॥३४५२॥  
 कि लै<sup>४४</sup> दिनते इस चार बस्ताँ बदल । हमन दोनोँ भायाँ मेँ था जो खलल<sup>४५</sup> ॥

१. यकायक, २. स्वयं, ३. भाँति, ४. अपने-आप, ५. मिल बैठना, ६. बिता, ७. गिनवाकर, ८. बात, (आतिथ्य), ९. शुभ घड़ी, १०. सूर्य, ११. प्रसन्न, १२. वस्तुएँ, १३. राजा के पास, १४. ध्यान से, १५. पुष्पतनु, १६. बिलकुल, १७. बडप्पन, १८. आगे, १९. समझा, २०. अपमान से, २१. अद्वितीय, दुर्लभ, २२. एकसे एक, २३. भाँति, २४. बीते, २५. मुँह, २६. मुल्क के पास, २७. प्रियतमा, २८. मखी, २९. रहस्य, ३०. द्वार, ३१. आगे, ३२. बाट मे, ३३. क्षमा-प्रार्थना, ३४. जरूरत के लिए, ३५. चार वस्तुएँ, ३६. तुमसे, ३७. इनसे ही, ३८. सौभाग्य। ३९. भूल, ४०. क्षमा करो, ४१. तुम, ४२. सत्यवादी, ४३. सौभाग्यशाली, ४४. अत्यधिक, ४५. बहुत, ४६. बाधा।



जहाँ ते' जो तूँ लेव कर वो गया । तहाँ ते' छलल बरतरफ' हो गया ॥  
 मुबारक' अछो' तुज यो वस्ताँ चहार' । कि ऐसे हमन पास है वेशुमार ॥  
 यो ना हो भँगगातुं भी कुछ फतुह' । तो सिकलायेंगे तुज हमें नक्लरुह' ॥  
 मुह्व्वत के मारग में जो आये ओ । सो वं नक्लरुह उसकूँ सिकलाये ओ ॥  
 मखी हो को जो लग रहा था वजीर । सो वो भी सिख्या वो हुनर'वेनजीर' ॥  
 रजा' तुर्त दे गयकू दोनो भाय । मो भी वो खडावे' उमम' साथ राय ॥  
 किया कस्द' माचीन का दिल मने । सो अँपड्या उमी शह्ल जा तिलमने' ॥  
 हुआ देख नजदीक कई' एक ठार । जो बँट्या वहाँ टुक खडावे' उतार ॥  
 वै' ऐसे में हो आदमी ओ वजीर । बिया रायकू आको तस्लीम' फीर ॥  
 कहा देख राय उसकु कि "इस ठार को । तु आया सो बयो' 'वो दिया ज्वाव'यो' ॥  
 कि "मैं तुजते अगे च' आया हूँ यां । ॥  
 भला जो तूँ खेले हरिन का शिकार । कि है' इम जँगल में हरिन वेशुमार ॥  
 खयानत' सो वै' दिल फिरा तव वजीर । कहा यो कि "ऐ राय गर्दू-सरीर' ॥  
 हुनर एक दीपकनगर बीच मुंज । चड्या हात सो कहने मँगता' हूँ तुज ॥  
 अगर मुंजकु होवे इशारत' तेरा । मखी होउंगा अपनी सूरत फिरा' ॥  
 रजा' जो दिया राय भोगी सखी' । सो दिखलाइया उन अपस कर मखी' ॥३४७०॥  
 देख्या उस हुनरू जो ओ गुननिधान । कहा "यो हुनर सहलकुछ है कि जान ॥३४७२॥  
 मेरे पास ऐसा च' है यक हुनर । चढा जीव मुदें के घडके भितर ॥३४७३॥  
 वरूँ जिन्दा होर फिर अपन घड में आउँ" । ॥  
 सुन्या रायते बात ज्यों ओ वजीर । कहा रायकू फिर कि "ऐ दस्तगीर' ॥  
 मेरी जात म्याने' अथा' जो हुनर । सो दिखलाइया तुजकें ॥  
 अगर लुत्फ' कर ओ हुनर तूँ दिखाय । मेरा जीव भी तुजते टुक अमन' पाय" ॥  
 मो वै' राय हो अपने घडते वहार' । उम आहूँ के प्रडमे' किया जाको' ठार ॥  
 देख्या रायके घडकु खाली उने । सो दरहाल' जा सपड्या' उसमने ॥  
 निकल वाँ ते आ राय के रूप सूँ । ले अपने मँगगत उम उतम जाइ कूँ ॥३४८०॥  
 नमक राय का कर अपस पर' हराम' । ॥  
 कदम शूम' रख उस खडावे उपर । चल्या राय म्हाडी मने' पैसकर ॥३४८२॥

१ जबसे, २ तबसे, ३ अलग, ४ घय, ५ रहो, ६ चार, ७ विजय, ८ शरीरातर में आत्मा का प्रवेश, ९ विद्या, १० अनुपम, ११ अनुज्ञा, १२ उत्साह, १३ इरादा, १४ पलमें, १५ कहीं, १६ अभिवादन, १७ जवाब, १८ आगे ही, १९ विश्वासघात, घरोहर हडपना, २० आकाश-शरीरी, २१ चाहता हूँ, २२ सकेत, इशारा, २३ अनुज्ञा, २४ तहणी, २५ मक्खी, २६ ऐसी ही, २७ हस्तावलबन देनेवाले, २८ । व्यक्तियो में, भीतर, २९ था, ३० कृपा, ३१ शांति, ३२ बाहर, ३३ हरिन, ३४ जाकर, ३५ तत्काल, ३६ घुसा, ३७ अपने ऊपर, ३८ अभोग्य, ३९ मनहूस, ४० अटारी में ।

सब यक धैर ते<sup>१</sup> अरकाने-दौलत<sup>२</sup> मिले । . . . . . ॥  
 धरे कोइ सिर भूईं कये कोइ सलाम । वले<sup>३</sup> राज<sup>४</sup> किसकुं हुआ कुछ न फ़ाम<sup>५</sup> ॥  
 जो दिन जाको<sup>६</sup> संचर<sup>७</sup> हुआ शाम का । हुआ देखकर वक्त आराम का ॥  
 चल्या रूपसमदूर की सेज धीर<sup>८</sup> । अदा परते उसके ओ रोशन-जमीर ॥  
 समझ दिलमने<sup>९</sup> ली जो यो राय नो<sup>१०</sup>य । लिया है उसीका मगर रूप कोय ॥  
 लेती उसके नज्दीक ते<sup>१०</sup> अपसे<sup>१०</sup> काड । उठी बोल यो<sup>१०</sup> उसकुं बातां मे<sup>११</sup> पाड<sup>११</sup> ॥३४९०॥  
 “सही रायका कालबुद<sup>१२</sup> तू तो होय । वले<sup>१३</sup> इस भितर राय का रूह नोय ॥३४९१॥  
 अगर तू वही राय सचला<sup>१४</sup> अछे<sup>१५</sup> । हुं तेरी च कर जान मुंजकुं सचे ॥३४९३॥  
 मेरी बात ना सुन तू जोरी पो<sup>१६</sup> जाय । तो सच जान इस तिल मेरा जीव जाय” ॥  
 सुन यो बात वै<sup>१७</sup> उसकुं लरजा<sup>१८</sup> छुट्या । जरूरत सो उसके नजिकते उठ्या ॥  
 वै<sup>१८</sup> अव्वल की<sup>१८</sup> औरत के घरमे चल्या । सो उन बी रविश<sup>१९</sup> उसकी खातिर<sup>२०</sup> मे<sup>१९</sup> ल्या ॥  
 हो दिलगीर<sup>२१</sup> सख्त उसके आने पोते<sup>२२</sup> । लेई खीच अपस एक भाने सेते<sup>२३</sup> ॥  
 न रोजी<sup>२४</sup> हुआ देख उनन का वसाल<sup>२५</sup> । दिया छोड उस दोइ का ओ खियाल ॥  
 वले देखने रोज आता अछे । यो दोनो<sup>२६</sup> के तै<sup>२६</sup> देक जाता अछे ॥  
 यकायक अंगे<sup>२७</sup> दिन जो खूबी के आय<sup>२८</sup> । हरिन होके जो था जंगल मे<sup>२९</sup> वो राय ॥३५००॥  
 सो रावां देख्या यक मुआ सो कही<sup>३०</sup> । हरिनके निकल जिस्म मे<sup>३०</sup> तो वही<sup>३०</sup> ॥  
 संचर<sup>३१</sup> तनमे<sup>३१</sup> रांवी के पाया करार<sup>३०</sup> । उड्या वां ते खुशहाल<sup>३१</sup> पंख मार-मार ॥  
 उतर आपने कस्र<sup>३२</sup> के वाम<sup>३३</sup> पर । नवी अपनी महबूब कू फ़ाम<sup>३४</sup> कर ॥  
 यकट<sup>३५</sup> देख उसे खोल मिन्कार<sup>३६</sup> वै । किया सब जफ़ा<sup>३७</sup> उसपो इज़हार<sup>३८</sup> वै<sup>३९</sup> ॥  
 कही राव ओ औरत कि “ऐ राय तुज । गवां ले दुखी थी सो फिर पाइ तुज ॥  
 वले<sup>४०</sup> रूप तेरा है रांवाकेरा<sup>४१</sup> । मुलाकात क्यों रोवे तेरा मेरा” ॥  
 कह्या फिर ओ रांवा कि “ऐ हमजलीस । जब आगा महल मे तेरे ओ खबीस<sup>४२</sup> ॥  
 नजिक बैसला<sup>४३</sup> कर मिठी बात तू । ओ खुश होय त्यो बोल इस धात<sup>४४</sup> तू ॥  
 वो मुज दलमे था दगदगा होर गुमान<sup>४५</sup> । हुआ आजते दूर कर तू पिछान<sup>४६</sup> ॥  
 मेरा मर्द तहक्रीक<sup>४७</sup> सों तू च होय । बगैर<sup>४८</sup> तू नही है मुजे गैर<sup>४९</sup> कोय ॥३५१०॥  
 वले रूह के नक़ल<sup>५०</sup> का जो हुनर<sup>५१</sup> । अथा<sup>५२</sup> तुजमे दिखला मुंजे यक नजर ॥३५११॥

१. एक ओर से, २. राजामात्य, ३. लेकिन, ४. रहस्य, ५. समझ, ६. जगह,  
 ७. संचार, ८. रूप-समुद्र की शय्या के पास, ९. दिल मे, १०. स्वयं, ११. डाल, १२. शरीर,  
 १३. लेकिन, १४. सच्चा, १५. है, १६. जबर्दस्ती, १७. कंप, १८. पहिली, १९. चाल-  
 ढाल, २०. दिल, २१. दुःखी, २२. आने पर से, २३. बहाने से, २४. प्राप्त, २५. मिलन,  
 २६. दोनों को, २७. आगे, २८. भले, २९. प्रवेश, ३०. निश्चय, ३१. प्रसन्न, ३२. महल,  
 ३३. कोठे, ३४. समझ, ३५. अकेली, ३६. चौंच, ३७. अत्याचार, ३८. प्रकट, ३९. वहीं,  
 ४०. लेकिन, ४१. तोते का, ४२. दुष्ट, ४३. बैठा, ४४. भाँति, ४५. सन्देह, ४६. पहिचान,  
 ४७. सचमुच, ४८. बिना, ४९. दूसरा, ५०. स्थानान्तरण, ५१. विद्या, ५२. था ।

मुझे यो हुनर जय तुं दिसलायेगा । मेरा रह' तब तुजते सुख पायगा ॥३५१३॥  
छुपा रख मुंज उन आये लग एक ठार' । ॥  
मुन इम रात कूँ ओ मोहागिन मली । वरअप जीव' पिजराँ छुपा उस रवी ॥  
जो मजलिसते' उठ दूसरे देस फिर । जो आया ओ उम पधिनी के मंदिर ॥  
उमी घात वानामने' घाल' कर । अधिक उम सिपहदिल'कुं मुशहाल'करा ॥  
जो बोली तो राजी' हुआ नावकार । उमी तिल'जिवाँ एक गधडे'की मार ॥  
निक्कल राय के तनमने ते' मो फेर । जो गधडे के तनमें गया पैस कर ॥  
मो दरहाल' ओ राय आलीतवार' । निक्कल कालवदमें ते रावी के भार' ॥२५२०॥  
किया आपने तनमें जाकर मुकाम । ॥  
ओ गप्रडा जा था कर कुतव मार उमे । कुत्या हाथ खडडा'मुटे' भार' उम ॥  
कमल के नमन' वादजा' राय विल । लग्या राज करने ॥३५२४॥

—कया २९

मुन्या हूँ जो यक कोइ जाहिद' गंभीर । ॥  
यक औरत थी उम होर बेटा भी एक । बले था ओ न्हनवा ताले' में नेक' ॥३८३०॥  
गुजरता अछे' उसयो फाका' मुदाम । यमैर'ज'हलाल'उन न खावे हराम' ॥  
मुसलम' पडया बेनवाई' मो घर । मो यक रात सुपने में बकने-सहर' ॥  
बशागत' दिये कोइ आ इम वजा' । कि "ऐ जो गुजरता है तुजपर जफा" ॥  
पतर' आज उठ जा मु तुं सहरा के घेर' । अर्क्याँ खोल कर देख चोपेर फेर ॥  
पँखी हपतरगी' ले कोइ नागहा' । शिकारी मिलैया तुझे यक वहाँ ॥  
ले उम पामने ओ पँखी मोल तू । प्रले भी' किसी घेर' नको' बोल तू ॥  
कि जिस घरमत' वो जनावर अछे' । तो न्यामत'से भर दायम ओ घर अछे ॥  
जो कुछ है खवाम' उम पँखी मूँ तमाम' । अंगे दिन वो दिन होयेंगे तुजकुं काम' ॥  
जो इम घात' का स्वाव' उसकुं हुआ । खतर उठ उसी घातओ बेनवा' ॥  
जो महारा कधन' सर करता चला । मो नागाह वाँ यक शिकारी मिला ॥३८४०॥  
नजर जो पडया उस पँखी पर मो वै । लिया मोल, ॥३८४१॥

१ आत्मा, जीव, २ अपने जीव, ३ सभा से, ४ बातों में, ५ डाल (हरियानी),  
६ काले दिल, ७ प्रसन्न, ८ सहमत, ९ पल, १० गबहे, ११ तन में से, १२ तत्काल,  
१३ महामहिम, १४ वाहर, १५ घसीट, १६ फेंके, १७ बाहर, १८ कमल-सदृश,  
१९ इसके बाद, २० पूजापाठ-रत, २१ भाग्य, २२ इच्छा, २३ हैं, २४ निराहार, २५ सदा,  
२६ विहित, २७ नियिद्ध, २८ पूरा, २९ गरीबी, ३० प्रात काल, ३१ खुशखबरी,  
३२ इस प्रकार, ३३ विपत्ति, ३४ सरेरे, ३५ जगल के घोरे, ३६ सप्तरगी,  
३७ यकायक, ३८ लेकिन, तो भी, ३९ किसीके पास, ४० नहीं (मा), ४१ घर में,  
४२ रहँ, ४३ उत्तम भोग, ४४ गुण, ४५ सारे, ४६ समझ, ४७ भाँति, ४८ स्वप्न,  
४९ गरीब, ५० जगल की ओर।

। दिया छोड़ आँगन में उस मुर्ग कूँ ॥३८५०॥  
 लग्या मुर्ग जों फिरने पर झाडकर । झडे दो रतन सों लिया काड कर ॥  
 चल्या ओ उमस साथ बाजार कूँ । जो दिखलाइया जा खरीदार कूँ ॥  
 बड़े मोल के दो रतन देख ओ । दे पैके बहुत उस लिया मोल ओ ॥  
 ओ माया चढ्या हात वैं एक बार । दलदर ते फ़ारिग हो पाया करार ॥  
 फ़रागत सों औक्रात चलने लग्या । घर उसका सो जों दूध उबलने लग्या ॥३८५५॥  
 किया कामयाब आखिर ओ ख्वाव उसे । . . . . . ॥३८६०॥  
 कतेक नौबहार होर केतक खजों । खुशी साथ गुजरान कर वादजों ॥  
 मुराद अपनी हासिल हुई देखकर । नियत हज की ओ जाहिद नेक कर ॥  
 कह्या अपनी औरत के घेर खोल हाल । कि "वाजिब हुआ हज मुँज उपराल एताल ॥  
 जो मक्का के असबाब का सज करूँ । अपस वाँ लग अँपडूँ होर हज करूँ ॥  
 मेरी गैब अछ घरमने तूँ हुशयार । न भा पाँव दहलीज में ते तूँ भार ॥३८६५॥  
 अँगे देख कर खर्च घर का चला । . . . . . ॥३८६८॥  
 चली है रविश पाक बीव्याँ की जों । चला अपने वाडे के लोगों में वों ॥३३६९॥  
 किसे गैर के घेर नको झाँक तूँ । रख अपनी असालत उपर आँख तूँ ॥३८७०॥  
 जे कुछ बोलना था सो बोल्या तमाम । चल्या आप मक्के कुँ ओ नेकनाम ॥३८७१॥  
 कतेक दिन गुजर गये पँछी एक दिन । ओ औरत यकाएक चुप एक छिन ॥३८७३॥  
 निकल घरते दहलीज में आ खड़ी । सो यक ज्वान सराफ़ पर उस घड़ी ॥  
 पड़ी आँख उसकी सो लब्दी वहीं । सो बाँदी कुँ वेग भेज करदी वहीं ॥  
 बुला जा ओ बाँदी जो ल्याई उसे । . . . . . ॥  
 हलों वादजों बोल उठी उसके धिर । "भला जो तूँ रोज आये मेरे मंदिर" ॥३८७७॥  
 सुन्या जो ओ सराफ़ उसते यो बात । घर आने लग्या वों च दिन होर रात ॥३८७९॥  
 अवल मुफ़लिस उन थी, कि था जानता । सो वै बात में बात गुजरानता ॥३८८०॥  
 लग्या पूछने खुश उसे एक दिन । कि "थी मुफ़लिसी तुजकुँ अव्वल कठिन ॥  
 यकायक यो बरकत हो ऐ मुखसिरी । किधर ते तुज आई कि ऐ गुनभरी" ॥३८८२॥

१. उत्साह के साथ, २. पैसे, ३. दारिद्र्य, ४. मुक्त, छूट, ५. धीरज, सन्तोष,  
 ६. आराम से, ७. समय, ८. सफल, ९. अन्त में, १०. स्वप्न, ११. नववसंत, १२. पतझड़,  
 १३. इसके बाद, १४. मनोकामना, १५. प्राप्त, १६. इच्छा, १७. मक्का-यात्रा, १८. भला  
 भगत, १९. स्त्री-के पास, २०. उचित, २१. मेरे ऊपर, २२. इस समय, २३. सामान,  
 २४. अनुपस्थिति में, २५. रह, २६. घर में, २७. पा (पं०), २८. बाहर, २९. आगे,  
 ३०. चाल, व्यवहार, ३१. महल्ले, ३२. दूसरे के पास, ३३. कुलीनता, ३४. सुनाम,  
 ३५. फौसी, खिची, ३६. धीरे, ३७. इसके बाद, ३८. उसके धीरे, ३९. वह भी, ४०. प्रथम,  
 ४१. गरीब, ४२. डालता, करता, ४३. गरीबी, ४४. पहिले, ४५. अभिवृद्धि, ४६. मुखश्री ।

ओ नादान<sup>१</sup> कमअकल<sup>२</sup> यकवारगी<sup>३</sup> । ॥३८८९॥  
 कही "हपतरगी<sup>४</sup> जो है मुगं यो । है उसकी तरफने यो सामान<sup>५</sup> सो" ॥३८९०॥  
 वै<sup>६</sup> ए राज<sup>७</sup> रख दिल में सराफ का । ॥  
 गया अपने घरसो उमू<sup>८</sup> यक हकीम<sup>९</sup> । वरनहार था आशनाई<sup>१०</sup> कदीम<sup>११</sup> ॥  
 कह्या खोल उस मुगं की बात उसे । ओ हिकमत मने<sup>१२</sup> देख उस सात<sup>१३</sup> उसे ॥  
 कह्या इस वजा<sup>१४</sup> मो जवाँ खोलकर । "सिर उस मुगं का कोई चावे अगर ॥  
 तो होय बादशाह इसमें कुछ शक<sup>१५</sup> नहीं । ॥३८९६॥  
 सुन्या उसते सराफ यो<sup>१६</sup> बात जो । ॥३८९९॥  
 न आने पोते<sup>१७</sup> उसके उड जा परान । ओजाहिद<sup>१८</sup> की औरत लगी तिलमिलान ॥३९००॥  
 सीना विरह दाट्या<sup>१९</sup> देखत बेक्यास<sup>२०</sup> । किसीकूं दई भेज सराफ पास ॥३९०१॥  
 क्या तव ओ सराफ "ऐ गुलअजार<sup>२१</sup> । अगर सच मुंज उपराल तेरा है प्यार ॥  
 तो दौड्या है मेरा दिल उस मुगपर । खिलागी तूं उस मुगंकूं काटकर ॥  
 तो तेरे उत्तम दरस कूं आउंगा । अगर नै तो यो शह मुट<sup>२२</sup> जाऊंगा" ॥  
 सुन यो बात पूरा हो दिलगीर<sup>२३</sup> सो । निपट तिलमिलाने लगी फेर ओ ॥  
 जहाँ उस लेखे मव अंधारा हुआ । जनम उस बगैर<sup>२४</sup> उसपो सारा हुआ ॥३९०९॥  
 दई छोडकर मुलक<sup>२५</sup> इसाफ<sup>२६</sup> कूं । जरूरत<sup>२७</sup> सो राजी हो सराफ सूं ॥३९१०॥  
 बोला भेज उस मुगंकूं काट खुश । लगी मेहमानी कुं वै दाट<sup>२८</sup> सुश ॥  
 पका मुगकूं जो रखी देग उतार । सो फर्जद हो भूखते बेकरार ॥  
 लग्या शौर उचा<sup>२९</sup> जोरसो हट करन । लेजा दाइ उसे तुतं उम देगकन ॥  
 सिर उस मुग का काड कर उस खिलाय । धुलवा मूं किनारे ले जा बेसलाइ ॥  
 ओ अपड्या मो हेडा वजा<sup>३०</sup> देग झाड । जे कुछ था सो सब एककासे<sup>३१</sup> मेंकाड ॥  
 रखी आंगे<sup>३२</sup> सराफ के ल्याइ कर । न था उसमने<sup>३३</sup> सिर सो ना खाइ कर ॥  
 वो यो बात सुनता चकासे<sup>३४</sup> कुं फोड । हो दरहम<sup>३५</sup> चल्या वाँते ले मूं मडोड ॥  
 कि जिम ठार अछता अथा<sup>३६</sup> ओ हकीम । ॥  
 कह्या खोल यो कैफियत<sup>३७</sup> उसके घरे<sup>३८</sup> । सो बोल्या हकीम इस वजा<sup>३९</sup> उससो फेर ॥३९२०॥  
 कि "खाया है उस मुगं का सिर जो कोय । सिर उसका जिने<sup>४०</sup> खाय सो राज होय" ॥३९२३॥  
 यो हीला<sup>४१</sup> जो पाया सराफ ने । लिया खीच पूरा न जा उसकने<sup>४२</sup> ॥

१ मूर्ख, २ निर्बुद्धि, ३ सुरत, ४ सप्तरगी, ५ द्रव्य, ६ वहीं, ७ रहस्य,  
 ८ उसका, ९ बैद्य, १० मित्रता, ११ पुराना, १२ बैद्यको, १३ साथ, १४ प्रकार,  
 १५ चिन्ता, १६ भाँति, १७ आने पर से, १८ भगत, १९ जला, २० उत्कठा, २१ गुलाबी  
 गालोवाली, २२ छोटा, २३ दुखी, २४ उसके विना, २५ विलकुल, २६ न्याय,  
 २७ गरज, २८ ठाट, २९ उठा, ३० बाद-अजाँ, इसके बाद, ३१ कटोरे, ३२ आगे  
 ३३ उसमें, ३४ कहना, ३५ कुपित, ३६ था, ३७ बात, माजरा, ३८ उसके पास,  
 ३९ प्रकार ४० जिसने, ४१ उपाय, ४२ उसके पास ।

उस औरत कुँ बतरी<sup>१</sup> लगी छटपटी । बिरह के अँगारा ते जल होय भठी ॥  
 दर्ई भेज पैगाम<sup>२</sup> फिर उसके पास । कि “ऐ संगदिल, तपते हुइ मै निरास ॥  
 तेरे ताँइ उस मुर्ग का सीस काट । कीती<sup>३</sup> अपनी जिंदगी बारावाट ॥  
 सिर उसका जो खाया न्हना कुछ न जान । मुँज उपराल हर्गिज<sup>४</sup> बुरा तू न मान ॥  
 जे कुछ तूँ कह्या था सुनी वो च<sup>५</sup> मै । लिया खीच यों क्या सबब<sup>६</sup> आप तै<sup>७</sup> ॥  
 बहरहाल<sup>८</sup> आ दर्स दिखला तेरा । कि होटों में आ जीव रहया है मेरा<sup>९</sup> ॥३९३०॥  
 दिया भेज सर्राफ यों बोल फिर । जिने मुर्ग का सो जो खाया है सिर ॥  
 सिर उसका अगर काट देगी मुँजे । तूँ माशूका<sup>१०</sup> मेरी कि समझूँ तुझे ॥  
 अगर नै तो बस है तेरी आशनाइ ।” ..... ॥  
 जनी<sup>१०</sup> माँ हो बेटे के सिरते उठी<sup>११</sup> । सों दिलकुँ लगी दाइ के छटपटी ॥  
 अधीरात गफलत<sup>१२</sup> में उस पाडकर<sup>१३</sup> । न्हनेकुँ चली वाँ ते ले काड कर ॥  
 सो परमुल्क में दूर जा की मुकाम<sup>१४</sup> । लगी पालने चावसों सुबहो शाम<sup>१५</sup> ॥  
 जो न्हन वाद केते<sup>१६</sup> ओ शाना<sup>१७</sup> हुआ । अदबगार<sup>१८</sup>, दाना<sup>१९</sup>, तवाना हुआ ॥  
 तिरंदाज<sup>२०</sup> ऐसा हो निकल्या गभीर । जो उस दौर<sup>२१</sup> में कोइ न था उस नजीर<sup>२२</sup> ॥  
 क़जारा ओ यक देस खेलन शिकार । चड्या रक्श<sup>२३</sup> उपराल जो आशकार<sup>२४</sup> ॥  
 जो बेटी थी उस शह्लके शाह की मगर<sup>२५</sup> । जाई<sup>२६</sup> थी मेह्ल<sup>२७</sup> होर माह<sup>२८</sup> की ॥३९४०॥  
 निकल सैर कू उस दिन आइ थी बहार<sup>२९</sup> । देख उस ज्वानका रूप हुइ बेकरार ॥  
 जो देखी नजर<sup>३०</sup> भर सो उस ज्वान कूँ । उतम दिलरुबा<sup>३१</sup> धरति के भान<sup>३२</sup> कूँ ॥  
 मुहब्बत लगा जीवसों बेकयास<sup>३३</sup> । दर्ई भेज मखफ़ी<sup>३४</sup> किसे<sup>३५</sup> इसके पास ॥  
 कि “तू कौन होर काँ है तेरा वतन<sup>३६</sup> । है किस खान का जोतवन्ता<sup>३७</sup> रतन ॥  
 मेरे दिलमें यों है, जो लोडूँ<sup>३८</sup> तुजे । पिरित जिव सों जोडूँ न छोडूँ तुजे ॥  
 वले<sup>३९</sup> शर्त<sup>४०</sup> यों है जो यों एक ठार । फ़लाने<sup>४१</sup> जँगल धेर है कलबे<sup>४२</sup> गार<sup>४३</sup> ॥  
 वहाँ अज्दहा<sup>४४</sup> एक ऐसा गंभीर<sup>४५</sup> । जो ह्ये-जमी पर<sup>४६</sup> नही उस नजीर<sup>४७</sup> ॥  
 निगलता ओ यकदम में दस-पाँच । सके सोस<sup>४८</sup> उसकी न कोइ आँच कूँ ॥  
 येते आदम्याँ खाइया है जो हाड । पहाडाँ हो नीचे है चौधेर<sup>४९</sup> उजाड़ ॥

१. बहुतेरी, २. संदेश, ३. किया (पंजाबी), ४. कदापि, ५. वैसे ही, ६. कारण,  
 ७. अपने को, ८. जैसे भी हो ९. प्रियतमा, १०. प्रेम, ११. जानपर, पड़ी १२. धोखे,  
 १३. डालकर, १४. निवास, १५. प्रातः सायं, १६. धीरे-से, १७. जवान, १८. शिक्षा-  
 सम्पन्नों, १९. चतुर, २०. धनुर्धर, २१. जमाने, युग, २२. उसके जैसा, २३. घोड़े,  
 २४. प्रकट, २५. मानों, २६. बेटी, २७. सूर्य, २८. चंद्र, २९. बाहर, ३०. आँख,  
 ३१. मनोहर, ३२. भानु, सूर्य, ३३. अत्यधिक, ३४. चुपके, ३५. किसी को, ३६. घर,  
 ३७. द्युतिमान्, ३८. ब्याहूँ ३९. लेकिन, ४०. वरदान, ४१. अमुक, ४२. शरीर के भीतर,  
 ४३. गुहा, ४४. अजगर, ४५. भारी ४६. भूमण्डल में, ४७. उस जैसा, ४८. सह,  
 ४९. चारों ओर ।

कता<sup>१</sup> है मेरा बाप जे कोइ उसे । जो मारे जीवां, देउं वेटी उसे ॥३९५०॥  
 अगर तू करैगा कुछ इसका इलाज । तो तेरी हूँ तू मर्द मेरा है आज ॥  
 सुन ए बात उम्मस में आ वो जवान । कह्या मुंज है आसान<sup>२</sup> यो काम जान ॥  
 अगर शतं तेरा है यो बरकरार । तो उस सांपकूँ चूर करता हूँ मार ॥  
 कि है मुंजकुं तीफीक<sup>३</sup> करतार का । ले आता हूँ सिर काट उम मार<sup>४</sup> का ॥  
 कह इम धात<sup>५</sup> दुसरे दिन उस गार पास<sup>६</sup> । चल्या मुस्तइद<sup>७</sup> होको रामीके रास<sup>८</sup> ॥  
 सो ऐसे में उस शाहकेरा वजीर । गया था तफक्कुर<sup>९</sup> कुं सहरा<sup>१०</sup> के धीर<sup>११</sup> ॥  
 गुजरगाह<sup>१२</sup> में उस बहादुर कुं देख । ॥  
 कहया "कौन तू होर जाता है का । कहाँ है बतन होर तेरा ठिडकां ॥  
 कह्या "म सिपाही हूँ मर्द गरीब । सुन्या हूँ जो इस शह के अनकरीब<sup>१३</sup> ॥  
 है यक गार म्याने<sup>१४</sup> वडा अज्दहा । ॥३९६०॥  
 मेरे दिल में आया सो जाता हूँ मैं । सिर उसका ले शहपास आता हूँ मैं ॥  
 कह्या तब वजीर उम कुं "ऐ नौजवां । फिर इस कामते, तू, कि है तुज जियां<sup>१५</sup> ॥३९६२॥  
 मगर<sup>१६</sup> हफतरग मुगका सिर जे कोइ । जो खाया अछे उसते यो काम होय<sup>१७</sup> ॥३९६४॥  
 चढ्या सिरते उम्मस<sup>१८</sup> उसे बेशतर<sup>१९</sup> । न सुन बात उसका हुआ पेशतर<sup>२०</sup> ॥  
 जो अँपडाइया<sup>२१</sup> अपसे<sup>२२</sup> उस गार वन<sup>२३</sup> । देख्या दूरते अज्दहा<sup>२४</sup> के कधन ॥  
 शिकम सीर कर<sup>२५</sup> मुस्त हो बेशुमार<sup>२६</sup> । पड्या है आँख्यां मीच<sup>२७</sup> वेइल्लियार<sup>२८</sup> ॥  
 उतर रकश परते<sup>२९</sup> लिया हय कमान । चलाया बेतक तीर उसकर निशान ॥  
 सो बैठे कलेजे में कारी<sup>३०</sup> ओ तीर । हो निर्जीव ओ अज्दहा बेनजीर<sup>३१</sup> ॥३९७०॥  
 रह्या मुस्त हो जो ओ फिर हिल<sup>३२</sup> न सका । हुआ दमियाने तें<sup>३३</sup> जो दूर शक<sup>३४</sup> ॥  
 मुडी काट उसकी छुपा छोड घड । फिर्या वांते खुशहाल तेजी पी<sup>३५</sup> चड ॥३९७२॥  
 दुजे दिन उठ्या शह में गलबला<sup>३६</sup> । जो कोइ शस्म<sup>३७</sup> कीता दफा<sup>३८</sup> ओ वला<sup>३९</sup> ॥३९७५॥  
 जब उम शाहकुं जो खबर अपडी<sup>४०</sup> । सो नरदीक था ओ वजीर उस घडी ॥  
 कि बोला कि मैं सैर करने कुं बल । गया भार<sup>४१</sup> मो यक जवां वेवदल<sup>४२</sup> ॥  
 मिल्या वाट जकूँ । ॥३९७८॥  
 है अल्वत्ता यो काम उसी ज्वान का । शुजाअत<sup>४३</sup> में रस्तम के था मान का ॥३९८०॥  
 जो गहवूँ हुआ आरजू लख उमे<sup>४४</sup> । धुंड<sup>४५</sup> होर इज्जतसो<sup>४६</sup> त्याये उसे ॥

१ फहता, २ सहल, ३ दया, ४ साँप, ५ भाँति, ६ गुहा के पास, ७ तैयार,  
 ८ सीधे, ९ चिंता, १० जगल, ११ पान, १२ रास्ते, १३ पास, १४ गुहा में, १५ हानि,  
 ज्यानि, १६ हाँ, १७ उत्साह, हिम्मत, १८ बहुत, १९ पहिले, २० पहुँचाया, २१ अपने  
 को, २२ गुहा के पास, २३ अजगर, २४ भर कर, २५ बहुत, २६ मीच, २७ वेवस,  
 २८ घोड़े पर से, २९ गहरा, ३० अद्वितीय, ३१ हिल, ३२ भीतर से, ३३ सदेह,  
 ३४ घोड़े पर, ३५ हल्ला, ३६ आदमी, ३७ खतम, ३८ आफत, ३९ पहुँची, ४० बाहर,  
 ४१ अनुपम, ४२ घोरता, ४३ लालभाग, ४४ डूब, ४५ सम्मान-सहित ।

शिगुफ्ता<sup>१</sup> हो दिलमें... । चल्या देखन उस अज्दहा कुँ वहाँ ॥  
 वो अज्दहा बल्कि था यक पहाड़ । किया था हवेली<sup>२</sup> कुँ चौधेर<sup>३</sup> उजाड़ ॥  
 पड्या है धड़ अम्मा<sup>४</sup> न था उसपो सिर । जो सिर काँ है कर पूछिया शाह फिर ॥  
 छुपाया सो जागे पो ते<sup>५</sup> ओ जवाँ । सिर उसकाले कर आ सुट्या<sup>६</sup> दरमियाँ<sup>७</sup> ॥  
 हजार आफरी<sup>८</sup> भेज शाह उस उपर । फिर्या वाँ ते ले उसकुँ दुंबाल<sup>९</sup> घर ॥३९८७॥  
 दिया उसकुँ बेटी किया सरफ़राज<sup>१०</sup> । ..... ॥३९९३॥  
 ओं उस शाह की उम्र पूरी भरी । उसी ज्वानकुँ अपनी दे सरवरी<sup>११</sup> ॥३९९४॥  
 चढ़ी बादशाही ओ जों उसके हाथ । सो यक दिन सवारी के भाने सँगात ॥३९९६॥  
 ले दुंबाल उस दाइकुँ नागहाँ । चल्या अपना शह्र था जाँ वहाँ ॥  
 जो जाहिद जो अपना जन्या बाप था । ओ माई जो उसते हुआ पाप था ॥  
 बोला भेज दोनों कुँ अपने हजूर<sup>१२</sup> । कह्या बापकुँ ..... ॥  
 कि है घर तुम्हारे सुन्या हूँ जो यक । पँखी हफ़तरंगी<sup>१३</sup> ..... ॥४०००॥  
 अगर मुँजकुँ दिखलायेंगे यक नजर । तो ममनन<sup>१४</sup> हो जाउंगा फेर कर" ॥  
 कह्या जाहिद<sup>१५</sup> "ऐ सर्वरे खुशमक़ाल<sup>१६</sup> । मेरे घर में था सच वले नै<sup>१७</sup> एताल ॥  
 जो मवके गया था बदल हज्ज के<sup>१८</sup> । मुआ है फिर आये तलक घरमें नै ॥  
 जो था यक जिगर-गोशा<sup>१९</sup> होर एक दाइ । मुये वो भी अब मै हूँ होर उसकी माइ ॥  
 जब ओ फूल हुआ गुम<sup>२०</sup> मेरे वाग ते । रयन-देस झकता<sup>२१</sup> हूँ उस दाग<sup>२२</sup> तें" ॥  
 सुन्या बापके मँ ते यो बात जो । कह्या बापकुँ फिर को इस धात<sup>२३</sup> यो ॥  
 "मुये कर को दोनों कहे तुजकुँ किन । जो फ़र्जद<sup>२४</sup> मै हूँ दाई सो इन" ॥  
 देख उस दाइ का मुख वही कर पिछान । गले ला के बटेकुँ पाया परान ॥  
 लग्या हाल पूछन सो फ़र्जदकुँ फेर । कह्या कैफियत<sup>२५</sup> खोल सब बाप धेर" ॥  
 वै उस मादरे-नहस<sup>२६</sup> ग़दार<sup>२७</sup> कुँ । होर उस हीन सराफ़ मुर्दार कुँ ॥४०१०॥  
 सियासत<sup>२८</sup> की तरवार सों पाक<sup>२९</sup> कर । उसी ठार नाबूद<sup>३०</sup> दर खाक<sup>३१</sup> कर ॥  
 फिरचाँ बाँतें वै<sup>३२</sup> बापकुँ ले सँगात । लग्या बादशाही करन जौक<sup>३३</sup> सात ॥  
 ओ रावी<sup>३४</sup> सफ़ा<sup>३५</sup> बोल इस धात सों । जवाँ खोल फिर ..... ॥  
 कह्या यो कि "ऐ नार हर क्यो<sup>३६</sup> तुँ आज । तेरे मनके मकसूद<sup>३७</sup> कुँ दे रवाज<sup>३८</sup> ॥  
 शिताबी<sup>३९</sup> सों जा यारकुँ शाद<sup>४०</sup> कर । येते दिनकी वारी न बर्बाद कर ॥

१. प्रफुल्लित, २. घरके, ३. चारों ओर, ४. लेकिन, ५. जगह पर से, ६. फेंका (पं०), ७. बीचमे, ८. शाबाश, ९. पीछे, १०. भाग्यशाली, ११. सर्दारी, १२. सामने, १३. सप्तरंगी, १४. कृतज्ञ, १५. भगत, १६. सुभाषी सरदार, १७. लेकिन, १८. हज के लिए, १९. दिल के टुकड़े, २०. लुप्त, २१. झँलता, २२. रँज, २३. भाँति, २४. पुत्र, २५. हाल, बात, २६. मनहूस, २७. विश्वासघातिनी, २८. दण्ड, २९. साफ, ३०. नष्ट, ३१. मिट्टी की चीजें, ३२. वहीं, ३३. आनन्द, ३४. तोता, ३५. साफ, ३६. हर तरह, ३७. अभिप्रेत, ३८. पीछे, (छेवट, गुज०), ३९. जल्दी, ४०. खुश।



तुरत दूर कर दिलमें का दगदगा ।<sup>१</sup> ॥  
 जो ओ मोहिनी विरहिनी गुल्वदन<sup>२</sup> । हुई मुस्तइद जावने यारकन ॥  
 गिफक<sup>३</sup> शकंधरते<sup>४</sup> हवेंदा<sup>५</sup> हुआ । मो गीगे मो वै<sup>६</sup> मर्द पैदा<sup>७</sup> हुआ ॥  
 हुये गाद सब घरके बाँदी<sup>८</sup> गुलाम<sup>९</sup> । खुशी ना खुशी सो कर अपमे कुदाम<sup>१०</sup> ॥  
 पड्या मद का घरमने<sup>११</sup> जो कदम । खुशी ना खुशी मो कर अपसे कुदम<sup>१२</sup> ॥  
 रवी मीम जा मद के पाँव पर । ले जा वेमला सेज के ठाँव पर ॥  
 अदव माय<sup>१३</sup> उसके अँगे<sup>१४</sup> हो खडी । खुशामद सो कर गुप्तगू<sup>१५</sup> यक घडी ॥  
 जो कुछ था सो ल्या मेवा उमकूँ गिलाइ । मुहव्वत के प्याले में शवंत पिलाइ ॥  
 हो आमूदा<sup>१६</sup> घर में घडी तीन-चार । चल्या वादजा<sup>१७</sup> मर्द रावी<sup>१८</sup> के ठार ॥  
 उठ्या बोल "ऐ तैर,<sup>१९</sup> शीरी-कलाम<sup>२०</sup>" । किया मर्फ<sup>२१</sup> मुंज वाद कयो मुव्होशाम<sup>२२</sup> ॥  
 तेरा लाड किस घात<sup>२३</sup> खांतू<sup>२४</sup> चलाइ । तुजे वक्त वेवक्त कयो काम आइ ॥  
 रहने होर बडे घर के ये किम तरीक<sup>२५</sup> ॥ ॥  
 ओ रावा कर अब्वल<sup>२६</sup> मना<sup>२७</sup> होर सलाम । ॥  
 कने<sup>२८</sup> का जो कुछ था सो कहा खोलकर । उठ्या मेवट<sup>२९</sup> इस घात मो बोल कर ॥  
 कि "ऐ स्वाजा,<sup>३०</sup> मै तेरी गैवतमने । किया विदमत<sup>३१</sup> ऐमी जो वैसी किने<sup>३२</sup> ॥४०३०॥  
 किया नै है इम दौरम्याने<sup>३३</sup> अजूँ । ॥  
 मुंज आजाद<sup>३४</sup> इम पीजरे ते अगर । करेगा तो काँगा<sup>३५</sup> तुजे सरखसर" ॥  
 किया शर्त<sup>३६</sup> उममो इमी घात उन । सोबोलन लग्या तव कि "ऐ स्वाजा सुन ॥  
 जो है घर में खातून<sup>३७</sup> तेरी हलाल<sup>३८</sup> । तेरे वाद अपसे<sup>३९</sup> न रख सक संभाल ॥  
 जो म्हाडी<sup>४०</sup> पो चड खोल खिडकी निवाई<sup>४१</sup> । नजर कोई पड्या सो उमूँ इस्क ल्याइ ॥  
 यकायक जो हुइ इस्क ते वेकरार<sup>४२</sup> । चली भार<sup>४३</sup> अब्वल<sup>४४</sup> सो शार<sup>४५</sup> के ठार ॥  
 कीती<sup>४६</sup> मध्वरत<sup>४७</sup> भार जाने बदल । तेरा नगोनामस<sup>४८</sup> खाने बदल ॥  
 ओ शारु नमक खाइ थी कर तेरा । न जाने दे माने<sup>४९</sup> हुई बहुतेरा ॥  
 मो मारी जिवा<sup>५०</sup> पख उमके मडोड । वजा<sup>५१</sup> आइ मेरी तरफ उमकुँ छोड ॥  
 कही, दे रजा<sup>५२</sup> मुंज जो टुक भार<sup>५३</sup> जाउँ । नवे यार सो यक घडी गमके<sup>५४</sup> आउँ ॥४०४०॥

१ फूल-जैसे शरीरवाली, २ आकाशीय लालिमा, ३ पूर्व ओर, ४ प्रकट,  
 ५ वहीँ, ६ प्रकट, ७ दामी, ८ दास ९ बोलिलाहट, १० घर में, ११ देखो,  
 १२ सम्मानपूर्वक १३ आगे, १४ वातचीत, १५ विश्रात, १६ उसके वाद, १७ तोता,  
 १८ पक्षी, १९ मधुरभाषी, २० व्यतीत, २१ प्रात-साय, २२ प्रकार, २३ वेगम,  
 २४ तरह, २५ प्रयम, २६ प्रशसा, २७ कहने, २८ तुरत, २९ स्वामी, ३० पीठ पीछे,  
 ३१ सेवा, ३२ की, ३३ समय के, ३४ मुवत, ३५ कहूँगा, ३६ समय, प्रतिज्ञा,  
 ३७ वेगम, ३८ विहित, ३९ अपने को, ४० चौवारा, ४१ प्रेम, ४२ अघोर,  
 ४३ बाहर, ४४ प्रयम, ४५ मना, ४६ किया, ४७ सलाह, ४८ इज्जत, ४९ बायक,  
 ५० जोवित, ५१ इसके वाद, ५२ अनुज्ञा दे, ५३ बाहर, ५४ कविता के ।

तब इस बातमें दूर अंदेश<sup>१</sup> कर । ..... ॥  
 हिकाताँमने<sup>२</sup> कर गिरिफतार<sup>३</sup> उसे । दिया घरते जाने न मै भार<sup>४</sup> उसे ॥४०४२॥  
 है तूँ मर्द उसका ओ तेरी हलाल<sup>५</sup> । तुजे भाये त्यों राख उसकूँ एताल ॥  
 खुदा तै रिहाकर जो मै याँ ते जाउँ । जो इसगमतेफ़ारिग<sup>६</sup> हो कुछ अमन<sup>७</sup> पाउँ ॥  
 कि इस औरताँ सों न जीता कोई ।” ..... ॥  
 सुन ऐ किस्सा ओ ख्वाजा<sup>८</sup> दिल सबते तोड । दिया उस कफस मेंते<sup>९</sup> रावी कुँ छोड ॥  
 जो गैरत की आग उसके सीने लगी । सुट्या<sup>१०</sup> तोड औरतकुँ एकबारगी ॥  
 लुटा घर फकीराँ<sup>११</sup> कुँ सब एक बार । गले घाल<sup>१२</sup> ले खर्का<sup>१३</sup> सूफ़ी के सार<sup>१४</sup> ॥४०५०॥

५. अपनी सफलता के बारे में—

जो तूती मेरे तबा<sup>१५</sup> का बेनजीर<sup>१६</sup> । है शक्करफ़शानी मने<sup>१७</sup> दिलपजीर<sup>१८</sup> ॥४०५४॥  
 किया शक्कर अफ़शान<sup>१९</sup> इस धातसों<sup>२०</sup> । कि दम कोइ उचावे<sup>२१</sup> न याँ बात सों ॥४०५५॥  
 जो अफ़साना<sup>२२</sup> इसमें जो है रस भर्या । सो जों शहद होर दूधका है दर्चा ॥४०५७॥  
 न अफ़साना है बल्कि अफ़सू<sup>२३</sup> है यो । हलावत<sup>२४</sup> में हलवेते अफ़जू<sup>२५</sup> है यो ॥  
 कि जिस वक्त पर यो अया नातमाम<sup>२६</sup> । उसी वक्त ख्वाहां<sup>२७</sup> थे सब खासो-आम<sup>२८</sup> ॥  
 जो सबका किया आरजू<sup>२९</sup> मुँजपे जोर<sup>३०</sup> । जरूरत बदल<sup>३१</sup> मै लिया सरपो शोर<sup>३२</sup> ॥४०६०॥  
 जो यो दास्ताँ<sup>३३</sup> बेबदल<sup>३४</sup> फ़ारसी । मेरे इम्तिहाँ<sup>३५</sup> का हुआ आरसी ॥  
 हिकायत केतक इसमें के खूब देख । सरस होर रसदार मरगूब<sup>३६</sup> देख ॥  
 परागंदा<sup>३७</sup> खातिर<sup>३८</sup> न कर इस बदल<sup>३९</sup> । किया तर्जुमा मुख्तसर इस बदल ॥४०६३॥  
 हवस होय अगला पढनहारकूँ । न होये कदूरत<sup>४०</sup> लिखनहारकूँ ॥४०६५॥  
 कि थोडे में लज़जत अहे होर स्वाद । कि करता अहे इश्तिह<sup>४१</sup> कूँ जियाद ॥  
 यो गुलदस्ता खासा मेरे बाग का । दवा दर्दमदाँ के है दाग का ॥४०६७॥  
 कहाँ आज है यो सकत हर किसे<sup>४२</sup> । जो इस धात सों देवे जीनत<sup>४३</sup> इसे ॥  
 यो अफ़साने जब दिलते करते थे जोश । तो कहते अये मर्हबा<sup>४४</sup> अक्लो-होश<sup>४५</sup> ॥४०७०॥  
 यो नामा<sup>४६</sup> रँगारंग निर्मल निछल । हुआ इस जमाने मे सब बेबदल ॥  
 मेरे फ़िक्रम्याने<sup>४७</sup> ते बे-इख्तियार<sup>४८</sup> । निकल आइया है यो नक्शोनिगार<sup>४९</sup> ॥४०७२॥

१. दूर तक, २. कथाओं में, ३. फँसा कर, ४. बाहर, ५. धर्मानुमोदित, ६. मुक्त, ७. शांति, ८. स्वामी, ९. पिंजड़े मे से, १०. छोड़ा, ११. गरीबों, १२. डाल (हरियानी), १३. गुदड़ी, १४. कलंदर-जैसा, १५. मन, १६. अनुपम, १७. चीनी बरसाने में, १८. मनभाती, १९. शक्कर बरसाना, २०. भाँति, २१. उठावे, २२. कथा, २३. जादू, २४. मिठास, २५. बढ़कर, २६. अपूर्ण, २७. डच्छुक, २८. बड़े-छोटे, २९. आकांक्षा, ३०. दबाव, ३१. के लिए, ३२. भार, ३३. कथा, ३४. अनमोल, ३५. परीक्षा, ३६. स्वादिष्ट, ३७. बिखरे, ३८. दिल, ३९. इसके लिए, ४०. कष्ट, ४१. भूख, ४२. हर किसी को, ४३. शोभा, ४४. शाबाश, ४५. बुद्धि, ४६. पुस्तक, ४७. चिन्तन मे से, ४८. स्वतः, ४९. चित्रण।

अगर यो चढे नुक्तादाने<sup>१</sup> के हात । गीनेने पर मुने के लिले नीर सात ॥४०७४॥  
 हुये हज़रते नपशमी मुज मदद । दिया मैं उने तो र्वाज<sup>२</sup> इम सनद<sup>३</sup> ॥  
 वरस यक हज़ार हो चालीग पर नी<sup>४</sup> । हुये ये यो मोतियाँ पिरोंये हूँ मैं तो ॥  
 लताफत<sup>५</sup> भरी मन्नी यो जज<sup>६</sup> । मुल्त<sup>७</sup> बिया खुगो पहिरी र्जव<sup>८</sup> ॥४०७५॥

जो अबयात<sup>९</sup> हैं इममने अल्फ़ार<sup>१०</sup> । बराबर है लता वन के हर चहार<sup>११</sup> ॥

अजीजा कने<sup>१२</sup> जम<sup>१३</sup> यो मक्नू<sup>१४</sup> है ।

॥

जवाहर जो है इममने जिम-जिन्ना<sup>१५</sup> ।

॥४०८०॥

कि इम घात<sup>१६</sup> के गी रतन रोलिया<sup>१७</sup> । होर ऐमी तवी मन्नी<sup>१८</sup> बोलिया ॥

मेरा काम है इम जमा ने मैं आज । कि गाजे न यो काम तिम<sup>१९</sup> मुंज राज<sup>२०</sup> ॥

जो मुल्तान अबुल्ला इम दौर का । है राजा तुठेमान के तीर का ॥

गिगुफता<sup>२१</sup> त्रिया देव इममा करम<sup>२२</sup> । मो जमना<sup>२३</sup> मेरी तवा<sup>२४</sup> का जामेजम<sup>२५</sup> ॥

कठे कयो न मैं मुकु हर दम हज़ार । जा गुन गुग टुआ या शहे-गोतगार<sup>२६</sup> ॥

जो उम शहबी खातिर<sup>२७</sup> पडचा<sup>२८</sup> यो बजूल । गान त हुआ मुंजो गृहम<sup>२९</sup> नजूल<sup>३०</sup> ॥

जब यो नज्म मेरा अरुमी<sup>३१</sup> बिया । गूरज मुजो आ दस्तपोनी<sup>३२</sup> त्रिया ॥

बह्या "ऐ मनुनमज, माह्रतमीज<sup>३३</sup> । बचन के गो है मिस ता तू अजीज<sup>३४</sup> ॥

तरी तवा<sup>३५</sup> पर मदहज़ार<sup>३६</sup> महवा<sup>३७</sup> ।

॥

बोई इम बातकू लाफ<sup>३८</sup> जाना नरी । गुरे होर मुगदिल मानो नरी ॥४०९०॥

कि जिमके मदफ<sup>३९</sup> में रलन माफ है । करे लाफ अगर उन तो इन्नाफ<sup>४०</sup> है ॥

छिपाऊँ बेना अपने<sup>४१</sup> कोड<sup>४२</sup> मैं । कि छुपती तही फूल की वाग के ॥

जेता चाँद बादल तें अपने छिपाय । रहे जीत उमका न तिन भार<sup>४३</sup> आय ॥

सखुन-भर्वंग यचने हूँ यक त्रियाद । वल<sup>४४</sup> और है मुंज जवाँ का तवाद ॥

यो अफमाना<sup>४५</sup> जो एव<sup>४६</sup> त दूर है । मलामत<sup>४७</sup> के जम्मान का नूर<sup>४८</sup> है ॥४०९५॥

६ गीवासी के अन्तिम काल के विचार\*—

गवासी अगर तू है सचला गवाम<sup>४९</sup> । लगा इस्तर अपने खुदा मात साम ॥४०९७॥

तेरे दद का तू अपे हो तबीर<sup>५०</sup> ।

॥

१ समंतों, २ प्रचार, ३ प्रमाण, ४ १०४९ हि० (सन् १६३९ ई०), ५ मजुता, ६ अबुभुत, ७ पूर्ण तैयार, ८ अबतुबर, ९ अर्पालियाँ, १० शेर, १० चार हज़ार, ११ चार, १२ प्यारों के पास, १३ सदा, १४ पसन्द, १५ इसमें जाति-जाति का, १६ भाँति, १७ रीला, १८ कथा-काव्य, प्रबन्ध-काव्य, १९ किसी की, २० मेरे बिना, २१ प्रफुल्लित, २२ अनुग्रह, २३ चमका, २४ मन, २५ जनशब्द का प्याला, २६ दुनिया के राजा, २७ दिल, लिए, २८ पडा, २९ कृपा, ३० उतरे, आवे, ३१ दुलहिन का काम, ३२ हस्तचुबन, ३३ विवेकी, ३४ वजीर, ३५ मन, ३६ लात, ३७ शाबाशी, ३८ डोंग, ३९ सीपी, ४० याय, उचित, ४१ स्वयं, ४२ बदकर, ४३ बाहर, ४४ लेकिन, ४५ कथा, ४६ बोय, ४७ लालित्य, ४८ तारा, प्रकाश, \*तूतीनामा। ४९ गीता लगानेवाला, ५० बँध ।

चलेगा केता नपस<sup>१</sup> के कैमने<sup>२</sup> । केता होयगा नाँवके पै मने<sup>३</sup> ॥  
 केता शायरी<sup>४</sup> पर धरैगा खियाल<sup>५</sup> । केता होगा दरपये<sup>६</sup> खत्तोखाल<sup>७</sup> ॥४१००॥  
 न दिनकूँ समजे होर ना रातकूँ । धुँडेगा केता इस्त आरात<sup>८</sup> कूँ ॥  
 के ता होयगा यों तूँ दूदे-चराग<sup>९</sup> । केता खुशक अपना करेगा दिमाग<sup>१०</sup> ॥  
 केता फ़िक्र<sup>११</sup> सों हर शबे-तार<sup>१२</sup> तूँ । करैगा सुका तन्कूँ जीं तार तूँ ॥  
 अछैगा<sup>१३</sup> केता दर रियाई<sup>१४</sup> हनोज । करेगा केता खुशनुमाई<sup>१५</sup> हनोज ॥  
 हो बेदार<sup>१६</sup> यक बार इस ख्वाव<sup>१७</sup> ते । निकलभार<sup>१८</sup> इस ग़म के गर्दाब<sup>१९</sup> ते ॥४१०५॥  
 मगर नै<sup>२०</sup> सुना है जो ईसा नबी<sup>२१</sup> । वजिद<sup>२२</sup> एक दिन हो कहे "ऐ रबी<sup>२३</sup> ॥४१०९॥  
 दुन्या किस वजा<sup>२४</sup> की है दिखला मुँजे । है उस देखने का तमन्ना<sup>२५</sup> मुँजे" ॥४११०॥  
 निदा<sup>२६</sup> गैवते<sup>२७</sup> आइया इस वजा । "नजर<sup>२८</sup> कर फलाने<sup>२९</sup> जंगलघेर<sup>३०</sup> जा ॥  
 कि निपजे<sup>३१</sup> खलक में जिस जात<sup>३२</sup> सों । ओ दिखलाई देगी इसी घात सों<sup>३३</sup> ॥  
 जो ईसा गये उस जंगल घेर गुजर । पडी एक बुर्का<sup>३४</sup> सों औरत नज़र ॥  
 कहे "कुन<sup>३५</sup> है तू होर तेरा नाँव क्या । यकेली तूँ करती है इस ठाँव क्या" ॥  
 सो दरहाल<sup>३६</sup> ओ रुख नबीघेर<sup>३७</sup> कर । दई ज्वाब इस घातसों<sup>३८</sup> फेर कर ॥  
 "दुन्या जिस कते है सो मेरा है नाँव" । कहे "काड बुर्का<sup>३९</sup> जो तुजकूँ निझाउँ" ॥  
 जो बुर्का सुटी<sup>४०</sup> काडकर उस घडी । वुरी शकलसों<sup>४१</sup> तब नजर तल<sup>४२</sup> पडी ॥  
 डुबाई है खुश लहुमने<sup>४३</sup> एक हाथ । दुजा हाथ रंगी है मेंहदी सँगात ॥  
 जो ईसा नबी कूँ लग्या यो अजब<sup>४४</sup> । कही खोल ईसाकूँ इस घात तब ॥  
 "जोयो हाथ लहुसे भर्या है मेरा । सो करखून आई हूँ यक शी<sup>४५</sup> केरा<sup>४६</sup> ॥४१२०॥  
 जो मेंहदी दुजे हाथकूँ ल्याइ हूँ । नवा यक मनुस लोड<sup>४७</sup> कर आइ हूँ ॥  
 इसे भी न खुश कर जीवाँ<sup>४८</sup> मार मै । होर एकस के होती हूँ मल्हार मै ॥  
 मेरा काम है लोडना<sup>४९</sup> छोडना । मेरा रस्म है जोडना तोडना ॥  
 ऐते मनुस क्ये अदद<sup>५०</sup> फ़ाम नै । किसी का मुँजे याद भी नाम नै ॥  
 उनो सात मिल कर तो सोती हूँ मै । वले बकर सों वोंच अछूती हूँ मै ॥४१२५॥  
 मेरी आरजू<sup>५१</sup> में जे कोइ उम्र खोय । थे नामर्द उनमें न था मर्द कोय ॥४१२८॥

१. लालच, २. कहे में, ३. नाँव के पीछे, ४. कविता, ५. ध्यान, ६. पीछे पड़नेवाला, ७. रंगरूप, ८. उपमा, उत्प्रेक्षा, ९. दीपक के धूम, १०. चिंतन, ११. अंधेरी रात, १२. रहेगा, १३. पाखंड में, १४. आत्म-दर्शन, १५. जागृत, १६. स्वप्न, १७. बाहर, १८. भँवर, १९. लेकिन, २०. ईसा पैगंबर, २१. हठ करके, २२. मेरे भगवान्, २३. प्रकार, २४. लालसा, २५. शब्द, २६. परीक्ष से, २७. देख, २८. अमुक, २९. जंगल के पास, ३०. उपजे, ३१. व्यक्ति, ३२. भाँति से, ३३. घूँघट, ३४. कौन, ३५. तत्काल, ३६. पैगम्बर की तरफ, ३७. भाँति से, ३८. घूँघट, ३९. फेंकी, ४०. रूप से, ४१. दृष्टि में, ४२. खून में, ४३. विचित्र, ४४. वर, पति, ४५. का, ४६. ब्याह, ४७. जीते को, ४८. ब्याहना, छोड़कर, ४९. संख्या, ५०. लालसा।

न कर एतमाद' इस गुजरगाह' का । यो फादा है दक्केश' होर शाह का ॥४१४९॥  
 सँभाल अपसे ऐ यार इस दामते' । नको' गाफिल' अठ' आपने कामते' ॥४१५०॥  
 इलाही' जो दाना है इसरार' का । देवे तुज असर' मेरी गुफ्तार' का ॥४१५३॥  
 सर-अफराज' दोनो जहा पर करे । जो रहे आरजू कुछ न दिल में भरे ॥  
 दुआ सो किया खत्म' मैं यो किताव । इलाही दुआ यो करे मुस्तजाव' ॥४१५५॥

### § १३ तुकाराम (१६०८-४९ ई०)

तुकाराम महाराष्ट्र के बहुत प्रसिद्ध सत है । इनकी वाणी कयीर और नानक की तरह वहाँ प्रचलित है । इनका जन्म १६०९ ई० (शक १५३०) में पूना के पास इन्द्राइन नदी के किनारे वसे देहुग्राम में हुआ था । इनके जीवन का बहुत-सा समय लोहगाँव में बीता । उसी साल महाराष्ट्र के दूसरे सन्त समय रामदास का भी जन्म हुआ था । तुकाराम व्यापार करके जीविका चलानी चाही, लेकिन उसमें उन्हें हानि उठानी पड़ी और साथ ही अपमानित होना पडा । किसी समय देश में भयकर अकाल पडा, जिसमें अन्न के बिना उनकी पहली पत्नी रख्मूमाई मर गई । धीरे-धीरे भाभी, पुत्र तथा परिवार के दूसरे लोग भी अन्न विना तडप-तडप कर मरे । दूसरी पत्नी जिजाई जीवित रही, जिनका स्वभाव बहुत कठोर था । तुकाराम के लिए कविता और भजन आत्मशान्ति के लिए बड़े साधन थे । इन्होंने हिन्दी में भी कुछ पद लिखे हैं —

१ मग्न तन्न नहिं मानत साखी ।  
 प्रेम भाव नहिं अन्तर राखी ॥  
 राम कहे त्याके पग हौं लागूँ ।  
 देवत कपट अमिमान दूर भागूँ ॥  
 अधिक-ज्राति कुल-हीन नहिं जानूँ ।  
 जाने नारायन सो प्राणी मानूँ ॥  
 कहे तुका जीव तन डारुँ वारी ।  
 राम उपासिहूँ बलियारी ॥

२ आपें तरे त्याकी कोण बराई ।  
 औरत कूँ भलो नाम घराई ॥  
 वाहे भूमि इतना भार राखे ।  
 दुमत धेनु नहिं दुय चाखे ॥  
 बरस मेघ भलने हि विरखा ।

१ विद्वांस, २ रासो, ३ साधु, ४ फदे से, ५ नहीं, ६ प्रमादी, ७ रह, ८ भगवान्, ९ रहस्यो, १० प्रभाव, ११ बातचीत, १२ सम्मानित, सफल, १३ समाप्त, १४ स्वीकृत ।

कोन काम आपनी उन्होते रखा ॥  
 काहे चंदा सुरज खावे फेरा ॥  
 खिन एक वैठण पावत घेरा ॥  
 काहे पारस कंचन करे धातु ।  
 नहिं भमोल तुटत पावत धातु ॥  
 कहे तुका उपकार हि काज ।

× × ×

३. सब कर, कर रहिया रघुराज ॥  
 वैकुण्ठ-नायक काल कौ सासुर का ।  
 देत डुबाय सब मँगाय गोपिका ।  
 स्तंभ फोड़ पेट चिरिया कश्यप का ।  
 प्रह्लाद के लिये कहे भाई तुका याक ।  
 लोभी के चित धन बैठे कामिनी चित काम ।  
 माता के चित पूत बैठे तुका के मन राम ॥  
 तुका राम बहुत मीठा रे ! भर राखो शरीर ।

× × ×

४. तन की करूँ नावरी उतारूँ पैले तीर ॥  
 सन्त जन पन्हियां ले खडा राहूँ ठाकुर-द्वार ।  
 चलत पाछे हूँ फिरों रज उड़त लेउं सीर ॥  
 राम कहे सो मुख भला रे, खाये खीर खांड ।  
 हरि बिन मुख पो धूल परी रे क्या जनी उस रांड ?  
 राम कहे सो मुख भला रे बिना राम से बीख ।  
 अब न जानूँ राम ते जब काल लगावे सीख ।  
 कहे तुका मै सौदा लेवे केनन हार ।

× × ×

५. मीठा साधु संत जन रे मूरख के सिर मार ॥  
 कहे तुका भला भया हम हुआ सत का दास ।  
 क्या जानूँ केते मरते न मिटतीं मन की आस ॥  
 तुका और मिठाई क्या करूँ पाले विकार पिड ।  
 राम कहावे सो भली सखी माखन खीर खांड ॥

## §१४ मीराँ हुसेनी (१६२३ ई०)

कवि सुल्तान मुहम्मदकुल्ली कुतुबशाह (१६८२-१७११ ई०) के समय सैयद मीराँ हुसेनी गोलकुण्डा में आकर सौ फकीरो के माय एक मस्जिद में रहने लगे। इनके सन्त-पत्न्य की ख्याति झोपडी से लेकर बादशाह के महल तक थी। इनका अधिक समय मलकापुर गाँव में बीता। मरने पर गोलकुण्डा के नजदीक लगरहौज में इनकी कब्र बनी। इनकी काव्य-वृत्ति 'मरनवी बशीरतुल् मनवर' है, जिसके कुछ पद्य हैं\*—

जिव का वी ओ जिवाला, रूपो में रूप आला।  
 सब के ऊपर है वाला, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 अकुलाय रूप सब सूँ, ओ रूप देक जब तूँ।  
 वेरूप के तूँ तव सूँ, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 वच्चा बगल में होकर, डुटते नगर में रोकर।  
 सारी उमर यो खो कर, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 कोई नाक के ऊपर ज्यो, नित बादते नज़र क्यो।  
 दिसते ही जोत कर यो, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 उम नूर<sup>१</sup> कूँ फना<sup>२</sup> है, सूरत जिसमें<sup>३</sup> बना है।  
 नूर ऐन कूँ भाग है, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 सो नूर खास होर, रग रूप कुछ न आया।  
 सूरत-शकल न माया, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 ओ नूर खास आला, सब सूँ ऊपर है वाला।  
 काला न लाल-पीला, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 जिसमें नूरा यो सारे, जिसे है चाँद-तारे।  
 कुन्दन सूँ ज्यो चितारे, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 सब गज का धनी है, धरता वो सब धनी है।  
 कादर<sup>४</sup> उसे मने है, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 ऐ नूर खास तूँ है, दिसने में आये सो है।  
 पैदा हुआ सो वो है, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 की ठाँव नाँव नै है, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 कोइ देखत हवा में, दिखते ज़र्राँ सफा में।  
 बहते है जात उसमें, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 सूरत दिसे हवा में, साया किते खुदा में।  
 फिर गँव<sup>५</sup> होइ सफा में, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥

\* 'दक्खिनी का गद्य और पद्य' (श्रीराम शर्मा, हुंदराबाद १६५४ ई०)

१ प्रकाश, २ नाश, ३ शरीर, ४ शक्तिमान्, ५ गुप्त।

दिसते कूँ क्या तू देखे, दिसते कूँ देख देखे ।  
 फिर देक अपकूँ लेखे, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 पैदा जो कोइ हुआ है, वो सब उनों किया है ।  
 ना के अपै आ है, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 कोई जोत देक सारे, उस देक अपको हारे ।  
 रह-रास्ता<sup>१</sup> फिर निहारे, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 वो जोत जीव कहते, उस देक अमन<sup>२</sup> सूँ रहते ।  
 कइ लोग याँह बैठे, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 मुशद<sup>३</sup> बगैर कामिल,<sup>४</sup> कर खूब रह सूँ शामिल ।  
 तब होएगा तु आमिल,<sup>५</sup> नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 जब रूह को तूँ पाया, है नूर का वो माया ।  
 वो नूर जात पाया, नित हँसत रह तूँ मीराँ ॥  
 नै उसको आना जाना, अला न कमा काना ॥  
 उस नूर का निशाना, नित हसत रह तूँ 'मीराँ' ॥  
 है जात वो इलाही, उसकूँ है बादशाही ।  
 सब चीज पर गवाही, नित हसत रह तूँ मीराँ' ॥  
 तुज...देक ओ देखे, दिसता सो तूँ न तेखे ।  
 बेजान हो तूँ देखे, नित हसत रह तूँ मीराँ ॥  
 जैसे दरिया व मौजां<sup>६</sup>, झलते है लाख तूफाँ ।  
 वो ही समन्द के सूरु, नित हसत रह तूँ 'मीराँ' ॥  
 मौजां कूँ अन्त नै है, रहने के अन्त नै है ।  
 दिसने कूँ अन्त नै है, नित हसत रह तूँ मीराँ ॥

### § १५. अफजल (१६२६ ई०)

अफजल उत्तर का कवि है या दक्खिन का, इसका निर्णय मुश्किल है; क्योंकि उसने अपने वारे में कुछ नहीं लिखा है। भाषा देखने से वह दक्खिनका अधिक मालूम होता है। अफजल ने अपना वारहमासा गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त के तीन वर्ष बाद लिखा। उसकी कविता में बहुत कम अरबी-फारसी के शब्द मिलते हैं। उसके कुछ अंश देखिए:\*—

सखी री चैत रुत आई सोहाई । अजहुँ उमेद मेरी वर न आई ॥  
 वआलम<sup>१</sup> फूल्या फुवारियां सब । करें सैरां पिया संग नारियां सब ।  
 रहे है भँवर फूलों के गले लग । मेरे सीना जुदाईका लगा आग ॥

१. सन्मार्ग, २. शान्ति, ३. गुरु, ४. सिद्ध, ५. अभ्यासी, ६. तरंग।\* उ० श० पृ० २००।  
 ७. दुनियामें।



निहायत दर्द-दुख हमने सही री । गम-हिजरा<sup>१</sup> मुझे हर दम रहे री ॥  
 मन्वी दिन-रैन मुज नागन डमत है । फिन्हूरी<sup>२</sup> तमामी जग हँमत है ॥  
 मेरे गलमो पडो है परेम फानी । भया<sup>३</sup> मरना मुझे और लोग हासी ॥  
 अरे यह इश्क मा डरनी फिन्हूरी । नमीहत<sup>४</sup> अपने कू आपे कू री ॥  
 कि पजी<sup>५</sup> मो लगन हगिज<sup>६</sup> न कीजे । अरी दिल दे हजारा गम न लीजे ॥  
 वरस दिन भी पहर चलता रहेगा । मदा गममो<sup>७</sup> जिगर<sup>८</sup> जलता रहेगा ॥  
 जिहोने दिल मुसाफिर मो लगाया । उन्होने सब जनम रोते गँवाया ॥  
 अरी ए नैन वरजें ना रहे री । मुझे सग ले पराई वम पडे री ॥  
 अगर मैं जानती यह बेवफाई । खुदा की सो न करती आगनाई<sup>९</sup> ॥  
 अरे इस आग ने रुमवा<sup>१०</sup> किया री । पियाके इश्क में यह जिव दिया री ॥  
 बर्बा हालमू<sup>११</sup> सवा<sup>१२</sup> बहरे खुदा<sup>१३</sup> री । पियाकू जा सुना वाते हमारी ॥  
 कि तुजकू लाज जग की कुठ न आई । करो दिलन हमनसे बेवफाई ।  
 अरे अनजान खाई में दगा रे । कि तुजसे सगदिलकू<sup>१४</sup> दिल दिया रे ॥  
 मजन अब गर कहीं<sup>१५</sup> की लाज वारे । मरूँ हूँ दर गमत<sup>१६</sup> दुख आव घर रे ॥  
 जरे बल-युद्धि तनमा ना रहे रे । तमामी देह ग्यास्तर<sup>१७</sup> भवे रे ॥  
 मेरे जिव वा भरोसा दम<sup>१८</sup> नैकीजो । मरेरे आय कर दीदार<sup>१९</sup> दीजो ॥  
 अरे यह चैत रूत चलती रहेगी । तुमन विन विरह ते जलती रहेगी ॥  
 अरे भादा कहा सावन कहा रे । मिलो दुख आप के फानी<sup>२०</sup> जहा मे ॥  
 देखू अब जेठमा धूयाँ पडत है । हमें हैरा वसरगदा<sup>२१</sup> फिरत ॥  
 जिन्हो के है सखी इस रूत पिया घर । उन्हो कू सर्दखाने<sup>२२</sup> है मुयस्सर ॥  
 हमारे पांव नगे धूप मर<sup>२३</sup> पर । फिहें हूँ दौडते पिड वाज<sup>२४</sup> घर-घर ॥  
 भमोले<sup>२५</sup> सर उपर छाले पगन मो । फफोले हो चले सारे वदनमें ॥  
 उठन-बैठन की ताकत ना रही है । न जानूँ जाँ-ब-तन<sup>२६</sup> कव लग रही है ॥  
 सखी री कोई कहे जा दिल-रुवा<sup>२७</sup> सो । सितमगर पुरजफा<sup>२८</sup> व बेवफा<sup>२९</sup> सा ॥  
 वि वारह मास भी तुम विन निभाये । अरे जालिम कहो तुम क्या न आये ॥  
 तेरे गम<sup>३०</sup> ने निपट मुजकू दहा रे । यह मुय से जीव रवा पर आ रह रे ॥  
 गमत<sup>३१</sup> मा जा जे तन<sup>३२</sup> बाहर पडैगा । वही यह खून किसके पर पडैया ॥  
 जो अपनी आववत<sup>३३</sup> का मर चाहो । रुवे जाँ वरज<sup>३४</sup> कू अपने दिताजो ॥

१ वियोग-नुत्, २ हुआ, ३ उपदेश, ४ पसी, उडतू, ५ कदापि, ६ दुख में, ७ दिल, ८ प्रेम, ९ बदनाम, १० देख मेरी हालत, ११ प्रात समीर, १२ भगवान के लिए, १३ कठोर हृदय को, १४ कही बात, १५ तेरे गम में, १६ राख, १७ क्षण भर, १८ दर्शन, १९ नाशवान्, २० ठंडे घर, २१ प्राप्य सुलभ, २२ प्रिय विना, २३ लूह, २४ शरीरमें प्राण, २५ मनोहर, २६ जालिम, २७ विश्वासघाती, निर्मोही, २८ दुख, २९ तेरे गम, ३० शरीर से, ३१ भविष्य, ३२ प्राणप्रद।

## § १६. मुकीमी (१६२७ ई०)

मिर्जा मुहम्मद मुकीम मुकीमी ने अपने कथा-काव्य 'चन्द्रबदन व महियार' को गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) के चार वर्ष बाद पूरा किया। मुकीमी ईरान का निवासी फ़ारसी का बड़ा शायर था, किन्तु सत्रहवीं सदीके आरंभ होने तक हिन्दी की महिमा दक्खिन के दरबारों में बढ़ गई थी, इसलिए अपने दूसरे स्वदेशी शायर तथा बीजापुर के सरकारी (फ़ातूहात आदिलशाही) इतिहासकार की तरह मुकीमी ने भी हिन्दी में काव्य लिखना शुरू किया। इस कवि के बारे में इतना ही मालूम हुआ, कि वह असमाबाद (उत्तरी ईरान) में एक सैयदवंश में पैदा हुआ था। अपने बाप के साथ अरब के तीर्थों की यात्रा करता शीराज (दक्षिणी ईरान) में पहुँचा। पिता के मरने पर अनाथ हो गया। दक्खिन के दरबारों में फ़ारसी और ईरानियों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। मुकीमी बीजापुर चला आया। यही वह पढ़-लिखकर एक अच्छा कवि हो गया। उसके फ़ारसी-कविता-संग्रह (दीवान) की प्रशंसा समकालीन इतिहासकारों ने की है, किन्तु हिन्दी-कविताका उन्होंने जिक्र नहीं किया। फ़ारसी के लेखक अभी हिन्दी को इस योग्य नहीं समझते थे, कि उसका जिक्र अपने ग्रंथों में करते। गौवासी ने अपने काव्य 'सैफुलमुलूक' को गोलकुंडा में चन्द्रबदन से दो ही साल पहले समाप्त किया था। इसलिए शायद मुकीमी ने उसे देखा हो। ऐसा अनुमान किया जाता है, कि 'चन्द्रबदन' के कवि के समकालीन आतिशी ने फ़ारसी में अनुवाद किया था, जिसे बीजापुर के दूसरे कवि बुलबुल ने हिन्दी में किया। बुलबुल ने अपनी पुस्तक में यह स्पष्ट जिक्र किया है\*—

हरीरे-हिन्दवी<sup>१</sup> पर कर तूँ तस्वीर । लिबासे-पारसी<sup>२</sup> है पाय-ज़ंजीर<sup>३</sup> ॥  
तु हो मुज-बाग में टुक नग्मा-परवाज<sup>४</sup> । सितारे-हिन्दवी<sup>५</sup> दो दम नवा साज ॥  
पढा था इश्क का हिन्दी रिसाला<sup>६</sup> । पिया नै<sup>७</sup> फ़ारसी का मै<sup>८</sup> दो साला ॥  
हुआ बुलबुल उपर उसने जरूरत<sup>९</sup> । दिखाना फ़र्स की हिन्दी में सूरत ॥

उसने 'चन्द्रबदन व महियार' को १६८८ ई० ( ११०० हि० ) से पहले लिखा था।

१. मुकीमी ने मंगलाचरण करते हुए लिखा है—

मुझे फ़ैज<sup>१०</sup> कुछ बख़्श<sup>११</sup> तुझ-ध्यान का । इलाही<sup>१२</sup> तु हाफ़िज<sup>१३</sup> कहै ईमान का ॥  
मेरा दीनो-ईमान<sup>१४</sup> सारा सो तूँ । मेरे जीव में कीता है ठारा सौ तूँ ॥

कविने अपने उपनाम मुकीमी को कई जगह इस्तेमाल करते लिखा है—

दुन्या तो फ़र्ना<sup>१५</sup> है मुकीमी सभी । रहेगी वचन की निशानी यही ॥

\*त० उ० पृ० ४० ।

१. हिन्द रेशम, २. फ़ारसी पोशाक, ३. पैर की बेड़ी, ४. संगीत की उड़ान, ५. हिन्दी सितार, ६. पुस्तक, ७. नहीं, ८. मदिरा, ९. उससे कम।

†त० उ० स० पृ० ३८ । ††वहीं, पृ० ३७ ।

१०. अनुग्रह, ११. प्रदान कर, १२. भगवान्, १३. रक्षक, १४. दीन-धर्म, १५. नाशवान् ।

मुकीमी पिरित्त-बीच अपड्या<sup>१</sup> हूँ मै । पिरिति के कर्मदे<sup>२</sup> बीच संपड्या हूँ मै ॥  
मुकीमी वचन का तरंग साज तूँ । हविस का<sup>३</sup> चल्या है तूँ महियार कूँ ॥

मुकीमी की कविता एक प्रेम-कथा है । एक हिन्दू-राजकुमारी, चन्द्रवदन पर एक मुसलमान व्यापारी महियार (मुहीउद्दीन) आशिक हो जाता है। सामाजिक रुठिनाइया के कारण ब्याह नहीं होता और दोनों तडपकर मर जाते हैं। मुकीमी समय के शिष्टाचार के अनुसार किमी बादशाह की प्रशंसा नहीं करता, न वजही और गौवासो की भाँति आत्मप्रशंसा करता है। वह कहता है—

किसना मुँज पिरित्त का कहा एक उन । जो विसरे तु लैला-मजनूँ कां सुन ॥  
हुआ दिलपे यो कर तफत्रकुर<sup>४</sup> करीव । ॥

वचन दुर<sup>५</sup> हो दिलते उवलने लगी । नबी तर्ज-खुश<sup>६</sup> तव निकलने लगी ॥  
जुबाँ काँ एता<sup>७</sup> हूँ सचा जीहरी । कल्ले नित जवाँ सो<sup>८</sup> गुहर-किसरवी<sup>९</sup> ॥  
किसा यह कहूँ मै गुहरवार<sup>१०</sup> का । सो चदरवदन होर महियार का ॥  
मुने कोइ मुज को हुआ याद कर । रहेंगे तअज्जुव सो दिल शाद<sup>११</sup> कर ॥  
ततिव्वा<sup>१२</sup> गवासी का बाँघ्या हूँ मै । सखुन मुख्तसर<sup>१३</sup> त्याके माघ्या हूँ मै ॥  
वले<sup>१४</sup> मै अपसकू सराया<sup>१५</sup> नहीं । शेर<sup>१६</sup> मै किमी को फिराया नहीं ॥  
सराना-फिराना<sup>१७</sup> नहा काम है । करे उन अमल<sup>१८</sup> यो कि जो साम<sup>१९</sup> है ॥

२ कविता के कुछ नमूने<sup>२</sup> —

सुना हूँ यक शह्र सुन्दर पटन । अथा<sup>२०</sup> राच वहाँ ए हिन्दू धरन ॥  
करे राज पूजा सो उस देवका । तमाशा अजायब<sup>२१</sup> दिसे सेवका ॥  
वि राजो मे ओ राज जग-राज था ।

प्रथम प्रेम में पागल महियार को देखकर किसीने कहा—

कया<sup>२२</sup> जा उमे "ए दिवाने वशर<sup>२३</sup> । कहा मूँ तु आया चत्या हूँ किधर" ॥  
उने जाव<sup>२४</sup> फिरकर दिया शाहकूँ तूँ । चेत चल पकड अपनी वात कू" ॥  
"तु आशिक हुआ है सो किम हूर<sup>२५</sup> का । हुआ मुन्नला<sup>२६</sup> कहतूँ किस नूर का ॥  
तेरा मन लग्या है सो कह तूँ मुझे । जो माशर<sup>२७</sup> तेरा मिलाऊँ तुजे" ॥  
प्रेमी के देश-देश में धूमों का वर्णन—

हरेक शहरमें जो वा जाने लग्या । वहाँ क्या जोजो ब्या<sup>२८</sup> देखाने लग्या ॥

१ पहुँचाया, २ फदे, ३ कहाँ, ४ चिंतन, ५ मोती, ६ नये अच्छे ढग, ७ इतना,  
८ वाणोसे, ९ राजमोती, १० मोतीकी बर्षा, ११ प्रसन्न, १२ ततिम्मा, परिशिष्ट,  
१३ सक्षिप्त, १४ लेकिन, १५ सराहा, १६ कविता, पद्य, १७ सराहना, चुराना, १८ काम,  
१९ कच्चा ।

\*मु० द० म० पृष्ठ, १४ ।

२० था, २१ अदभुत, २२ जहा, २३ आदमी, २४ उसने जवाब, २५ अप्सरा,  
२६ फँसा, २७ प्रियतमा, २८ बयान ।

देखा रोम होर शाम संजाम हम<sup>१</sup> । देखा गजनवी होर दखिन दमबदम<sup>२</sup> ॥  
 अरब होर अजम<sup>३</sup> वो बुखारा बलख । कि मुत्तान लाहोर हवश<sup>४</sup> हिंद बदख<sup>५</sup> ॥  
 दिल्ली होर बंगाला देखाय उसे । ..... ॥  
 बिजापुर सितारा व अहमदनगर । बुरहानपुर गोलकुंडा बीजेनगर ॥  
 न किस्सू ओ बोली न देखी किधर । ..... ॥

चन्द्रबदन और महियार के वात्तिलाप में कवि का चमत्कार\*—

नजिक<sup>६</sup> जाको बोलया कि “सुन ए परी । मुजै तुझ लताफत<sup>७</sup> दिवाना करी ॥  
 दिवाना हूँ तेरा दिवानै के तै<sup>८</sup> । अपसते न कर दूर जाने के तै ॥  
 धर्या आस तेरी निरासी न कर । जफा पर मुझे तूँ कि आसी न कर ॥  
 सो तुझ-बिन मूँजे कोइ होना नहीं । कि बिन जल मछी का सो जीना नही ॥  
 कता हूँ तुझे मै “कि ए गुनभरी । तूँ करना एता कुछ मेरी दिलबरी” ॥  
 सो यों कह अदब सों निवलकर उने । धर्या सीस उसके कदम पर उने ॥  
 मगद मार उसकूँ उठी बोल यों । “समझ कुछ अपसकूँ रे बेडौल तूँ ॥  
 हिन्दु मे कहा और तुरग मे तूँ कहाँ । कहाँ राम-सीता मुख तूँ कहाँ ॥  
 कहाँ मै चंदरमा कहाँ तूँ देवा । कता क्या मुये तूँ दिवाना हुआ ॥

महियार निराश होकर प्राण दे देता है, उसकी अरथी चंदरबदन के द्वार पर रुकती है और मृत प्रेमी का प्रेमिका से मिलन होता है—

रवाना हुआ शह जनाजा कुँ ले । सो मंजिल कु ले आ उतारी तले ॥  
 मिले लोक सारे सो यकबारगी । सँवार खूब तुर्बत सो महियार की ॥  
 हुआ जो अमल कब्र का सब तमाम । उठा दफन करने कुँ शह नैकनाम ॥  
 मँगा जों कबरसो उतारूँ उसे । दफन कर दुन्या ते बिसारूँ उसे ॥  
 जो देखे जनाजा मे महियार कूँ । ओ है जुफ्त मिलकर उसी नार सौ ॥  
 कफन बीच आकर ओ चंदरबदन । गले लग सोती है सो जों एक तन ॥  
 गले उस गले लग पिरित प्यार सों । पिरित मद-मुहब्बत की महियार सौउ ॥  
 जुदा उनकूँ हरचद करने मंगे । कि दोनों कुँ दो ठोर धरने लगे ॥  
 तो यों लग अपसमे ओ सोते अथे । जुदाई किये तो न होते अथे ॥  
 देखत हैरां हों इस हाल कूँ कन्या दफन करना उसी । ..... ॥

१. भी, २. तुरंत, ३. ईरान, ४. अबीसीनिया, ५. बदखशाँ । \*उ० श० पृष्ठ २०० और त० उ० म० पृष्ठ ३९। ६. पास, ७. मंजुता, ८. पागल को।

## § १७ कुतुबी (१६३४ ई०)

कुतुबी गोलकुडा का कवि था। इसने दिल्ली के प्रसिद्ध सत ख्वाजा नसीरुद्दीन के शिष्य शेख युसुफ देहलवी की धार्मिक 'पुस्तक तोहफतुनुनसाहय' (सीखा की भेंट) का उसी नाम से दक्खिनी में पद्यबद्ध अनुवाद किया।

बीबी के चुनाव के बारे में सीख है—

जो लख सभाल्या जाय तुझ भीयत में सौ मिलने सत्र कर ॥  
 आफन बला गम कर खूबसूरत पारसा । ॥  
 साथी हो तुझ- भाई चले खिदमत करे शामो-सेहर ॥  
 ना ल्याय दुखका आँज, उनके गम दुख में ले जाये सब ।  
 ऐसे न होसे<sup>१</sup> ना रचे देना तिलाक उस जूदतर<sup>२</sup> ॥  
 जो तु नारी करे घूँड<sup>३</sup> चार चीज अपने से कम ।  
 मिन<sup>४</sup> जात<sup>५</sup> कद<sup>६</sup> तुजते तलें चौथा सो क्या<sup>७</sup> धन-मालोजर<sup>८</sup> ॥  
 करता च<sup>९</sup> नारी तू अगर हगिज न कर ऐसे बगैर<sup>१०</sup> ।  
 कर खोफ<sup>११</sup> हूँस मत बोलरे दीदार ऐसे जो खर ॥  
 करते हो मोटी जन नको<sup>१२</sup> पतली हो ऊँची खोफ न ।  
 होर काली जन हगिज न कर फजंद<sup>१३</sup> जनेंगी बद-बतर<sup>१४</sup> ।  
 महिने देवनहारी न कर होर बाल जिस पदड्या<sup>१५</sup> पै है ।  
 होर मालवति भी नको होय ढीठ मुखडी जश्तर<sup>१६</sup> ॥  
 इस घात<sup>१७</sup> की भरी, समझ वारकें जो पदर वात धरे ।  
 मूपर जो वारी ज्वाव दे दायम रहे सर बाँधकर ॥  
 जो तू बुलावे सेजपर भाना<sup>१८</sup> मलोल<sup>१९</sup> होकर करे ।  
 हर वात मे उज्रा करे मकराँ भरी करती उजर ॥  
 आहिस्ता जो तू घात कै फिर जाव<sup>२०</sup> दे उठ्ठी तडक ।  
 होर भार<sup>२१</sup> आवे वे रजामन्दी यकेले दरबदर<sup>२२</sup> ॥  
 जेते आये उसके सामने करती शिकायत होर गिला ।  
 कहै हँ दुखिया हूँ मदते ओ अगचें खूबतर<sup>२३</sup> ॥  
 ओढे न अचल सोस पर मुख<sup>२४</sup> न धोये हायो पा<sup>२५</sup> ।  
 ना नैन में वाजल करे बदना<sup>२६</sup> रखे पटियासो सर ॥  
 तुझते छिपाकर राखे सजन मेहमान कूँ दुश्मन धरे ।  
 तुजते अब्वला<sup>२७</sup> स्याये जब भर पेट तुजते बेशतर<sup>२८</sup> ॥

१ होगा, २ जल्दी, ३ डूढ़, ४ आयु, ५ जाति, ६ आकार प्रकार ७ कहा, ८ सम्पत्ति, ९ करता ही, १० ऐसे के बिना, ११ भय, १२ नहीं, १३ पुन पुनी, १४ अधिक बुरे, १५ पैरो पर, १६ फूहड़, भोड़ी, १७ भाँति, १८ बहाना, १९ रज, २० उत्तर, २१ बाहर, २२ जगह-जगह, २३ सुदरी, २४ हाथ-पैर, २५ फनी नहीं, २६ पहिले, २७ अधिक।

ऐसी जिस औरत अछै<sup>१</sup> दोजख<sup>२</sup> यकीं सीना-बसे ।  
 कर नेक होवे नार तो जों होर पाय मुश्कतर ॥  
 राहत<sup>३</sup> जो लोडे<sup>४</sup> अपस जा मोल ले सीरत परी<sup>५</sup> ।  
 महताव जों चंदा-पुनम<sup>६</sup> मीठी वचन की सीमतर ॥  
 कि होवेगी वो पारसा<sup>७</sup> काने<sup>८</sup> अछै खिदमत<sup>९</sup> करे ।  
 उस साथ मिल जैतर करे नै तो खरीद यक होर कर ॥  
 बेगाना<sup>१०</sup> नार्या पर कधी<sup>११</sup> ना देख शहवत<sup>१२</sup> की नजर ।  
 ना देख भी अमरद<sup>१३</sup> तरफ नज्दीक ते रह दूरतर ॥

### §१८. अब्दुल्ला कुतुब ( १६३९ ई० )

महाकवि सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब ( १५८०-१६१२ ई० ) की कन्या हयात बख्शी बेगम प्रसिद्ध नर्तकी हैदरमहल (भागमती) से पैदा हुई थी, जिसका ब्याह उसने अपने भतीजे तथा उत्तराधिकारी मुहम्मद कुतुब ( १६२६-३६ ई० ) से किया था। सुल्तान अब्दुल्ला हयात बख्शी का पुत्र तथा कवि मुहम्मद कुल्ली का नाती, नाना की मृत्यु के दो वर्ष बाद, १ दिसंबर ( १६१४ ई० ) को पैदा हुआ था। फरवरी, १६२६ ई० को बारह वर्ष की उम्र में मुहम्मदी महल में वह गद्दी पर बैठा। नाबालिगी के समय राजकाज का प्रबन्ध उसकी माँ हयात बख्शी बेगम करती थीं। अब्दुल्ला कुतुब बारह साल की आयु तक पीरों और सन्तों के घर में पला। उसका बाप नाना की तरह स्वतन्त्र चिन्तक न हो इस्लाम का बड़ा पक्षपाती था। ससुर ने दाढ़ी मुँड़ा डाली थी, किन्तु दामाद ने उसे रखी थी। नाना मुहम्मद कुल्ली ने सुन्नी धर्म को छोड़ शिया-मत स्वीकार किया था। संभव है, बाप ने अन्तःपुर से हटकर मुस्लिम सन्तों के घर में इसीलिए अपने पुत्र को रखा हो, कि वह इस्लाम, विशेष कर सुन्नत जमात का अधिक पक्षपाती हो। किन्तु अब्दुल्ला ने अपने नाना को ही अपना आदर्श चुना और दाढ़ी के स्थान पर गलगुच्छा और मोँछ रखी। उसके चेहरे को देखने से कोई उसे मुसल्मान नहीं कह सकता था। अब्दुल्ला की तमाम आयु ऐशो-इश्रत सैरो-तफ्तीह में गुजरी। हर बरसात के मौसम में वह तफ्तीह के लिए दाहस्सलतनत के बाहर जाता था। तख्तनशीनी के पहले साल बाग-लिंगमपल्ली की सैर हुई, वहाँ ऐशो-इश्रत के तमाम सामान मुहैया किये गये थे। दूसरे साल सालगिरह की रस्म बड़े शान से मनाई गई, जिसमें हजारों रुपये खर्च हुए। रक्सो-सरूद और आराइशो-जेबाइस का पूरा इंतजाम हुआ। तमाम इमारत और बागान में रोशनी की गई। दो साल के बाद, सन् १६२७ ई० में कोहनूर की सैर हुई। यहाँ एक महीना बसर हुआ। अब अब्दुल्ला पन्द्रह वर्ष का था। सन् १६२८ में बरसात का मौसिम शुरू हुआ, तो फिर बाग की तफ्तीह शुरू हुई और उसमें भी कई महीने सरफ हुए। १६३० ई० में

१. रहे, २. नर्क, ३. सुख, ४. चाहे (पंजाबी), ५. अप्सरा स्वभाव की,  
 ६. पूर्णिमा का चन्द्रमा, ७. सती, ८. कहने में, ९. सेवा, १०. पराई, ११. कभी,  
 १२. कामुकता, १३. छोकरा।

(१६ वर्ष की आयु में) एक और बहुत बड़ी रस्म (सत्कार) मूय-तराणी (मूँछ-दाढ़ी बनवाने) बगैरह की रचाई गई, जिमका इतिजाम और त्वर्च ह्यात बम्पी बेगम ने वर्दस्त किया था। इसका इतिजाम ह्यात प्राद में हुआ। हैदरावाद में ह्यातवाद को जलूस गया और वहाँ कई महीने दरबार जलूम रक्स और सरुद की महफिलें हुईं।

लेकिन अब दक्खिन की रियासतो के दिन खतम हो चुके थे। शाहजहाँ ने दक्खिन को अपने अधीन करना चाहा था। वह स्वयं इसके लिए दक्खिन गया और जरा-में हीले-हवाले के बाद, १६३६ ई० में अब्दुल्ला कुतुब ने दिल्ली की अधीनता स्वीकार की। फिर ३२ साल का दीर्घ शासन मुगल-सामन्त के तौर पर बीता। उसके उत्तराधिकारी तथा दामाद कुतुबशाही वंश के आठवें एव अन्तिम शासक अब्दुल हसन तानाशाह (१६७२-८७ ई०) के शासन के माथ राज्य-वश का उच्छेद औरगजेव द्वारा हुआ।

नाना की भाँति अब्दुल्ला के कोई पुत्र नहीं था। उसके केवल तीन पुत्रियाँ थी, जिनमें से जेठी का व्याह हजाज (अरब) के एक कुलीन तरुण तथा दरबारी के साथ हुआ था। दूसरी पुत्री का व्याह औरगजेव के बड़े बेटे मुहम्मद मुल्तान से हुआ था, जो गादी के बाद ही उत्तर चली गई। तीसरी बेटी बादशाह वीवो का व्याह कुतुबवशी तरुण अबुलहसन के साथ हुआ था, जो अब्दुल्ला का उत्तराधिकारी बनने में सफल हुआ।

अब्दुल्ला अपने नाना के भाँति फार्मी और हिन्दी में कविता करता था, यद्यपि उतनी सफलता के साथ नहीं। वह कवियों और कलाकारों (मगीतज्ञों) का मरदाक और प्रेमी था। वजही, गौवामी, कुतुबी, निगाती, तबई, सनअती जैसे महाकवि इसके दरबार के रत्न थे। दरबार में मुशायरे (कवि-सम्मेलन) तो रात-रात चलते थे।

अब्दुल्ला की कविता के नमूने—

जगयार' ना पासे' उसे आशिक मो अपने यागवा ।  
जो जन्नत' होर दाजख' कूँ तुज तालिव' है दीदा का ॥

और

गुफ्तम' कि ऐ परी तूँ है फिननये जमाना' ।  
गुफ्ता' कि रास्ता गुफ्ती' ऐ गुन भये सजाना ॥  
गुफ्तम कि दरजहा'' या लैला ही आई है तूँ ।  
गुफ्ता कि मन् जूँ मजनू'' पाई हूँ तुज दिवाना ॥  
गुफ्तम् कि खाली जुलून'' क्या है सो बोल मुँजकूँ ।  
गुफ्ता कि जुल्फ राहत'' होर खाल'' सो है दाना ॥  
गुफ्तम् की दर-बहान-त'' अमरीत का है चश्मा ।  
गुफ्ता कि गिञ्ज हो तू इस चश्मेपो रघाना'' ॥

१ पराया, २ पायेगा, ३ स्वर्ग, ४ नर्क, ५ इच्छुक, ६ दर्शन, ७ मंने कहा, ८ दुनिया का फसाद, ९ बोली, १० सच कहा, ११ दुनिया में, १२ मैं मजनूँ-जैसी, १३ अलक, १४ तेरा राह, १५ काला तिल, १६ तेरे मुँज में, १७ बीडना।

गुफ्तम् की कीस्त ई जा<sup>१</sup> तेरा परान प्यारा ।  
गुफ्ता कि शाह अब्दुल-ला है तेरा पुराना ॥

इश्रतमहल (प्रासाद) के सम्बन्ध में—

बोल दिलकुशा<sup>३</sup> इश्रत-महल मत्वूअ<sup>३</sup> औ तारा<sup>१</sup> हुआ ।  
जोती जमीं की पठिसों ज्यों मुश्तरी भारा हुआ ॥  
हर ताक<sup>४</sup> याँ खुश तरह<sup>५</sup> का दिसता दरीचा फर्ह<sup>६</sup> का ।  
आजिज हो इसकी शरहका<sup>७</sup> है वान से न्यारा हुआ ॥  
अँखिया सों चंदर-सूरके देख आस्माना<sup>८</sup> दूरके ।  
आशिक है इसके नूर के क्या खूब यो ठौरा हुआ ॥  
देवें सफा दीवार सों लख नकश<sup>९</sup> ठारेठार सो ।  
खुश मान याँ अत्तार<sup>११</sup> सो फिरदौस<sup>१२</sup> का हारा हुआ ॥  
नाजुक अचंभा बेवदल लिक्खे भर्या ऐसा-महल ।  
बाँध्या न कोई आखिर अवल जमशीद या दारा हुआ ॥  
ज्यों फूल ताजा वनमने<sup>१३</sup> ज्यों पूतली पूजनमने<sup>१४</sup> ।  
त्योँ आज इस दखिनमने यो महल उत्तम सारा हुआ ॥  
सदके नबी<sup>१५</sup> के पा अमाँ<sup>१६</sup> इस महल म्याने<sup>१७</sup> हर जमाँ<sup>१८</sup> ।  
जम<sup>१९</sup> अब्दुला शाह तुर्कमाँ<sup>२०</sup> भोगी<sup>२१</sup> गमनहारा<sup>२२</sup> हुआ ॥

### § १९ सनअती (१६४५ ई०)

इस कवि ने अपना परिचय नहीं दिया है। पर अपने संरक्षक सुल्तान इब्राहिम आदिल-पुत्र मुहम्मद आदिल की प्रशंसा की है। इससे जान पड़ता है कि वह आदिलशाही (बीजापुर) वंश के सातवें सुल्तान का कृपापात्र था, जिसने १६२७-५७ ई० तक शासन किया और शाहजहाँ के चरणों में नत हो १६३६ ई० में दिल्ली की आज्ञानुवृत्ति स्वीकार की। प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मुहम्मद कासीम फरिश्ता इसके पिता इब्राहिम आदिल द्वितीय (१५८०-१६२७ ई०) का दरबारी था, लेकिन उसने सनअती के बारे में कुछ नहीं लिखा है। शायद अभी वह प्रसिद्धि नहीं पा सका था। हाँ, बीजापुर के इतिहास 'विसातीनुस्सलातीन' में सबई उपनामधारी इब्राहिम का वर्णन किया गया है, जो अक्षरों में गलती से सनअती का सबई पढ़ लिया गया। यह कहकर लोग सबई और सनअती को एक सिद्ध करना चाहते हैं। सबई की कोई कृति अभी नहीं मिली है और सनअती की भी यही एक कृति 'किस्सा बेनजीर' उपलब्ध है। सनअती ने यह कथा-काव्य (मस्नवी)

१. कौन है यहाँ, २. दिल खोलनेवाली, ३. उचित, ४. शुकृतारा, ५. कमरे, ६. अच्छे ढंग से, ७. आनन्द, ८. बखान, ९. आकाश, १०. चित्र, ११. गंधी, १२. स्वर्गोद्यान, १३. वन में, १४. मूर्तिपूजा में, १५. बलिहारी, १६. त्राण, १७. महल में, १८. हर समय, १९. सदा, २०. मुसलमान, २१. ऐश्वर्यशाली, २२. मौजी।



नो किन विरह की आजग सुलगा गिताव<sup>१</sup> । कन्हें मैं फिराकी<sup>२</sup> दिलाकू कवाव ॥  
 नो किन वस्ल कि मैं खिलाऊँ गुलाँ<sup>३</sup> । . . . . . ॥३४५॥  
 मो इतने में मुलहिम<sup>४</sup> ने ने मुज दिल भितर । कहा . . . . . ॥३५३॥  
 कि प्यारे नवी<sup>५</sup> की खायत है यो । . . . . . ॥  
 यो किमा अजव<sup>६</sup> पाक है दिलपजीर<sup>७</sup> । जो पाका<sup>८</sup> कहै है जिसे बेनजीर<sup>९</sup> ॥

इम प्रकार सनअती दूसरे फजूल के पुरुषों को छोड़कर हजरत मुहम्मद के समकालीन तथा अनुयायी तमीम अन्मारी को अपने काव्य का नायक बनाया।

### १. कथा-संक्षेप

'किस्सा बेनजीर' के शब्दा में कथा-संक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह आकषक नहीं है। मारा किस्सा—यदि देव-परिया तथा पीरो-फरिस्तों की रूखी बातें छोड़ दें—तो यही है, कि मदीने में एक पुरुष तमीम अन्मारी था। एक दिन जाड़े में उमने अपनी बीबी को पानी गरम करने के लिए कहा। बेचारी ने झुंझलाकर कहा—पानी गरम करती हूँ, थोड़ा ठहरो, तुम्हें देव (भूत) नहीं उठा ले जा रहा है। सचमुच ही बेचारे तमीम को देव उठा ले गया। चार वर्ष तक पता न लगा। औरत ने खलीफा उमर मे कहा कि मेरा कोई अवलम्ब नहीं, मुझे दूसरे के माथ व्याह करने की अनुमति दें। उमर ने खर्च देकर पहिले तीन साल, फिर चार महीने और रखवाया। अन्त में व्याह एक तरुण से करवा दिया। सांहागरात की जगह दोनों ने उम रात को व्रत-प्रार्थना में विताना चाहा और उमी रात देवा-परियों के देश से घूमता-भागता सात वष चार महीने बाद तमीम आ धमका। झगडा होना ही ठहरा। अन्त में मामला फिर खलीफा के पाम पहुँचा। तमीम का किस्सा सुनकर जोरू उसे लीटा दी गई। सारी कथा १६१५ शेरों में है।

सनअती के कविकर्म के उदाहरण के तौर पर यहाँ कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं। भाषा अरबी-फारसीके शब्दा से बेहद लदी है —

### २ रचयिता की रंगीन प्रकृति

पलकमें बेनी नकावदी<sup>१</sup> करे । हरेक नका<sup>२</sup> सारे अदम<sup>३</sup> में घरे ॥६३॥  
 रंगादे<sup>४</sup> जो नव रग बना ल्याय है । तेरे रगते रग सब पाये है ॥६८॥  
 तुज तुजे बेगगी का जो एक रग है । जो उम रगकू ऐम रगते रग है ॥  
 न तुस सारखा रग कोई रग मके । जो रगरेज उस रगकू ना पा सके ॥६८॥  
 हरेक रा में है रंग उस शहा का । अजव रग है सिनअतुल्लाह<sup>५</sup> का ॥७१॥

१ जन्दी, २ वियोगी, ३ फूल, ४ अजर अन्तर्वाणीवाले, ५ पैगम्बर मुहम्मद, ६ अदभूत, ७ चित्रप्रसादक, ८ पुष्पात्मा, ९ अनुपम, १० चित्रण, ११ चित्र, १२ अभाव, १३ रग, १४ अत्ला की कारीगरी ।

### ३. वाणी की महिमा

सखुन<sup>१</sup> वादशाहे जहांगीर<sup>२</sup> है । ..... ॥  
 सखुन अतिमिठाई में हलवा अहै । ..... ॥  
 इजाना है हक<sup>३</sup> का सखुनका बयाँ । कि है जिस खजानेकुं कीली<sup>४</sup> जबाँ<sup>५</sup> ॥२१८॥  
 सखुन<sup>६</sup> एक का सदा सब्ज<sup>७</sup> गुल्जार<sup>८</sup> है । सखुन का सदा गर्म बाजार है ॥  
 जो कुछ है शहादत<sup>९</sup> मे होर गैब<sup>१०</sup> मे । सखुन के समाता है आ जेब मै ॥२२०॥  
 रखनहार सरसब्ज दिलका चमन । सखुन है सखुन है सखुन है ॥२२४॥  
 न हर कोइ<sup>११</sup> सखुन का सजावार<sup>१२</sup> है । न हर कतरा<sup>१३</sup> लूलूय<sup>१४</sup> शहवार<sup>१५</sup> है ॥२२७॥  
 सखुनमे का भी को काडे रतन । सखुनदों<sup>१६</sup> समझते है कद्रे-सखुन ॥२३६॥

### ४. जिन्नों का बीभत्स रूप

सखुन का सदा सूरपर नूर<sup>१७</sup> है । ..... ॥  
 अँख्याँ खोलकर देखता हूँ तो वाँ । न था आदमीजाद<sup>१८</sup> का वाँ निशाँ<sup>१९</sup> ॥५०५॥  
 मगर देव होर जिन वा शैतान थे । ..... ॥  
 ..... । कलेजा तो उसका दिसे पेटवार ॥५०७॥  
 मी देख्या कतेक खल्क<sup>२०</sup> कै धात<sup>२१</sup> के । सौ कै शकल के भाँत के जात के ॥५०९॥  
 केत्याँ की अँखँ सरपो मूँ पेटसम । केत्याके नगे हाथ उलटे कदम<sup>२२</sup> ॥५१०॥  
 केतेक रग होर रूपमें भीलसे । केत्याके बडे कान जों फ्रील<sup>२३</sup> के ॥  
 केतक शकल मे खूक<sup>२४</sup> से नावकार<sup>२५</sup> । केत्याँकी बडी जीभ सीने तलार ॥  
 केत्याँक्याँ अथ्याँ<sup>२६</sup> सूरता मार क्याँ<sup>२७</sup> । केत्याँ क्याँ दुमाँ<sup>२८</sup> कज्दुमाँ<sup>२९</sup> सारक्याँ ॥  
 केतक सूरताँ<sup>३०</sup> का कहुँ क्या विचार । सिराँ दो अँख्याँ तीन हो हात चार ॥  
 केतक फ्रील<sup>३१</sup> सी शल्को सूरत धरें । कतेक ऊटसी काट गर्दन फिरें ॥  
 कतेक शकल मे गाव<sup>३२</sup> सिरमे तुरग । कतेक रूपमे रीछ तनमें पलंग<sup>३३</sup> ॥५१६॥  
 केताके सिराँ हरिनसार<sup>३४</sup> पो साख । ..... ॥५१९॥

### ५. युद्ध-वर्णन

अथा लश्कर उस देव का भाँत-भाँत । कुदाल्या सी नक होर तैशाँ<sup>३५</sup> से दाँत ॥५८१॥  
 सो करवे<sup>३६</sup> कुँ देवा उपर मारमार । चल्या दल पर्याँ का हजारँ हजार ॥५९०॥

१. वाणी, कविता, २. चक्रवर्ती, ३. सत्य, ४. कुंजी, ५. वाणी, ६. वाणी,  
 ७. हरा, ८. फुलवाड़ी, ९. प्रकट, १०. परोक्ष, ११. सभी, १२. पात्र, १३. बूंद,  
 १४. मोती, १५. राजोपयोगी, महार्घ, १६. काव्य, १७. सूर्य के ऊपर प्रकाश, १८. मानव,  
 १९. पता, २०. लोग, २१. कई प्रकार, २२. पैर उलटे, २३. हाथी, २४. सूअर,  
 २५. बदमाश, २६. थीं, २७. मारनेवाली, २८. पूंछ, २९. बिच्छू, ३०. रूप, ३१. हाथी,  
 ३२. गाय-बैल, ३३. शेर, ३४. हरिन-सरीखा, ३५. सींग, ३६. बसूले।

पर्या के तरंग जब हवाते उठे । कहे तूँ गगनते शहावाँ छुटे ॥५९२॥  
 चल्याँ स तरफते भी परियाँ खन<sup>१</sup> । कतेक भार<sup>२</sup> तेवाँ का वादल नमन<sup>३</sup> ॥५९३॥  
 वजे जब घमाघम तुरगान तल । सुरग लोग देखे जो यो क्या है गुल<sup>४</sup> ॥  
 सो देवा पर्याँ मिल जमी पर दो रँग । ॥  
 होया त्वरु<sup>५</sup> जब शफाँ बेशुमार । हृत्यारा सँभाले सो मारे हहकार ॥  
 उचाये<sup>६</sup> तुरगाकुँ ओ वेफसूस । गगन हो रहया गदसा आवनूस<sup>७</sup> ॥  
 गुसेसो पडे यक यक सरवसर<sup>८</sup> । परे देव परदेव पर्याँ उपर ॥  
 जो सीनेते कीना अपस मारने । लगे यक पो यक वैजिगर<sup>९</sup> मारने ॥  
 चलाये जो तीरा अपस मानपर<sup>१०</sup> । पहाडाकुँ फोडे तुये जानकर ॥६००॥  
 हुये कुछ हवा पर येते तीर डाट<sup>११</sup> । जो पडने कु रई धूप पर तग वाट ॥  
 दिसेँ ल्होसो या लाल<sup>१२</sup> तीराँ के भाल । कि तबूल<sup>१३</sup> खाये है जो जीभ लाल ॥  
 अपसमें अपे सस्त रज सो लडे । ॥  
 हमाहमसो ओ यक घमाघम हुआ । हवापर धुलारे<sup>१४</sup> का यक खम<sup>१५</sup> हुआ ॥  
 ओ घमसान था एस वजा<sup>१६</sup> सरवसर । कि भिमसेन सा वाँ पड्या वेखवर ॥  
 नजर ताव ना ल्या ओ भार<sup>१७</sup> देख । अजल<sup>१८</sup> वेवजल<sup>१९</sup> हुई ओ मार देख ॥  
 दसासुर<sup>२०</sup> से इरु देव उसमें पडे । कघो राम-लछमन भी यो नै लडे ॥  
 कतेक वक्त ऐसा कडाकड हुआ । जो सीना मगलवा धडाधड हुआ ॥  
 ओ देवा अगचेँ जबदस्त थे । बलेकिन<sup>२१</sup> पर्याकेअगे पस्त थे ॥  
 इधरते उधर होर उधरते इधर । पर्या जायें दो सफ<sup>२२</sup> चीरकर ॥  
 पर्या योचला देवमें हर रुखन<sup>२३</sup> । कि टुक अन्न<sup>२४</sup> में जल्द विजल्या नमन ॥६१३॥  
 घसी सब पर्या पीर देवाँमें यो । सितारे रथनके अँधेरेमें ज्यो ॥  
 सो कइ देव हरयक परी वेदरग<sup>२५</sup> । करेँ कल्ल यक शमा जो कइ पतग ॥  
 यकायक पके पानसे सब झाडे । जेते सरकशा<sup>२६</sup> सर-कुशा<sup>२७</sup> हो पडे ॥  
 पडे यकपो-यक रनमें कँ ठाट-ठाट । तूँ बोले सुटे ताडके झाड काट ॥  
 अथ्या<sup>२८</sup> सब पर्याँ जो अगिन-सूर-ताप । कियो राख उस कौलसियाँ<sup>२९</sup> कू शिताब<sup>३०</sup> ॥  
 लहूसा उननके हुआ वेदरग<sup>३१</sup> । जेता दस्त<sup>३२</sup> मखमल नमन<sup>३३</sup> सुख रग ॥६२०॥  
 हुआ जब अधिक लहुके दरियाकुँ जोश<sup>३४</sup> । मुये सो चले जो अछयाँ जिरापोश<sup>३५</sup> ॥६२३॥

१ तारे, २ अप्तरा-जैसे मुखवाली, ३ बाहर, ४ बावल-जैसा, ५ शोर,  
 ६ आमने-सामने, ७ उठाये, ८ आवनूस की लकड़ी-जैसा, ९ बिलकुल, १० हृदयहीन,  
 ११ जोर से, १२ घने, १३ मोती, १४ पान, १५ धूल, १६ खम्भा, १७ इस प्रकार,  
 १८ बाहर, १९ मृत्यु, २० शोर, २१ रावण, २२ किन्तु, २३ पक्ति, २४ हर तरफ,  
 २५ वादल, २६ निर्भय, २७ अभिमानी, २८ सिर तोड़नेवाला, २९ थीं, ३० कोयले  
 से, ३१ जल्दी, ३२ निर्भय, ३३ जगला, ३४ मखमल-जैसा, ३५ उवाल,  
 ३६. कवचधारी ।

लगाया जब पर्या इस वजा<sup>१</sup> मारने । तो आजिज<sup>२</sup> हो देवा के सरदार ने ॥६२४॥  
 चल्या न्हाट<sup>३</sup> परियाके मूँते निकल । ..... ॥६२५॥  
 हुआ फतेह<sup>४</sup> परिया देवा पो यों । रयन पर अछे<sup>५</sup> सुन्हकूँ फतेह ज्यों ॥६२७॥

### ६. परियों का सौन्दर्य

हरयक नूर<sup>६</sup> में हूर<sup>७</sup> पर तानाजन<sup>८</sup> । हरेक चांदते साफ निर्मल बदन ॥६८२॥  
 दिसे शोलेमें नूरस्यां<sup>९</sup> ओ पर्यां । ..... ॥  
 ओ नार्यां अगर नूर में नार थ्यां<sup>१०</sup> । वलेकिन<sup>११</sup> बराहिम का गुल्जार<sup>१२</sup> थ्या ॥  
 अधर पौ दौर<sup>१३</sup> हरेक बरगंगुल<sup>१४</sup> धरे । वले काँ<sup>१५</sup> है गुल-वर्ग<sup>१६</sup> शक्करभरे ॥  
 दसन मस्त उनके हरे जायेपात<sup>१७</sup> । वले काँ है हर्यां<sup>१८</sup> में यों आबताब<sup>१९</sup> ॥  
 दिसे जुल्फ<sup>२०</sup> उनकी हरेक गालपर । तूँ बोले कि संबूल है गुललाल<sup>२१</sup> पर ॥  
 देखत चख चंचल शोख<sup>२२</sup> उनके चरण । भुली ऐसी सब चंचला ईके फ़न<sup>२३</sup> ॥  
 दिसें यों जवानीसो जोबन नवल । उमंग आये जो जलते कँवले कँवल ॥  
 कमर उनकी शेरजे<sup>२४</sup> ने देख्या मगर । जो शर्मो रिलया हात अपस मूँडपर ॥६९०॥  
 अथ्या<sup>२५</sup> नूरमे सोसियां<sup>२६</sup> ओ पर्या । सकल सीतते नखलो सीसते नखलो छदो भरयां ॥  
 जे ल्यां बोल्ल्यां थ्यां मिठ्या बोलियां । मिठ्यां बोल्यां होर शकर-घोलियां ॥६९२॥

### ७. वनशोभा

अथां<sup>२७</sup> वां अजव सब्ज यक मुर्गजार<sup>२८</sup> । दरख्तां थे कै भाँतके बारदार ॥७८६॥  
 दिसे सब्ज रंग आसमासा ज़मीन । सितारयाँसे उसमें गुले यास्मीन<sup>२९</sup> ॥  
 हरेक कालवाँ जो कि जल सीम का । ..... ॥  
 दिसे जल्यों बारेत इस धात मौज । कि चंचल की जों चखमें गमूज्या की फ़ौज ॥  
 दिसे पेच सुँबुल के लाले में यों । अरुसां के रुखासार पर जुल्फ जों ॥७९०॥  
 हरेक पात पर वूँद बरसात के । हरेक शाख पर मुर्ग कै भाँतके ॥  
 वचन आये हर मुर्ग के सीनेत साफ । सफ़ाई में फकनूस पर उनके लाफ़ ॥७९३॥

### ८. उद्यानशोभा

( १ )

..... । दिस्या वाग सेहरा<sup>३०</sup> मे यक सब्जतार ॥१४२॥  
 हरेक झाड तो सब्ज जों नौवहार<sup>३१</sup> । हरेक शाख तूवानमन<sup>३२</sup> बारदार<sup>३३</sup> ॥

१. इस प्रकार, २. हार मान, ३. भाग, ४. विजय, ५. रहे, ६. प्रकाश, ७. अप्सरा,  
 ८. व्यंग्य करनेवाला, ९. ज्वाला में प्रकाश-सी, १०. थीं, ११. लेकिन, १२. फुलवाड़ी,  
 १३. चक्कर, १४. पत्र-पुष्प, १५. कहाँ, १६. पुष्प-पत्र, १७. उगे पत्र, १८. हरोँ, १९. चमक,  
 २०. अलक, २१. लाल के फूल, २२. तीक्ष्ण, २३. कला, २४. शेर-बच्चा, २५. थीं,  
 २६. सराबोर, २७. था, २८. चरागाह, २९. चमेली, ३०. मरुभूमि, ३१. नववसंत,  
 ३२. कल्पतरु-जैसा, ३३. फलदार ।

दरस्तो जो पातासो वाधे नवाव<sup>१</sup> । न देखी जमी ओ कधी आफनाव<sup>२</sup> ॥  
 सुरगवन जो थी धूपकूँ वाट तग । अया अशंते<sup>३</sup> फर्श लग सब्ज रग ॥  
 सो लालेके याकूत<sup>४</sup> जैसे चमन । सो नीलम-नमन<sup>५</sup> सव यो नवशेके<sup>६</sup> वचन ॥  
 दिसे नगिम उस यो चमन खूब<sup>७</sup> के । जो झलके<sup>८</sup> नयन सूब महबूब<sup>९</sup> के ॥  
 लटक मुवुल यो थे गुले लाल पर । कि जो जुल्फ महबूब के गालपर ॥  
 पियाले सो लालेके भरते मदन । ॥१४२८॥  
 चमन में रहे खिल को सारे गुला<sup>१०</sup> । सुशावाज<sup>११</sup> यथ उस पर बुलबुला ॥१४३०॥  
 पुकारे किते फाखते सरसरी<sup>१२</sup> । ॥  
 अये खुशनुमा<sup>१३</sup> उसमें शमशाद घो सब । ॥  
 अनारा थे जो बेबदल कूत<sup>१४</sup> के । मो हुक्का<sup>१५</sup> अये लाल याकूत के ॥  
 पर्ष्यां सुमरका<sup>१६</sup> यो दिसे तावदार<sup>१७</sup> । सो कचकने जो हेकला तावदार ॥  
 धरे खोश<sup>१८</sup> अगूरके मञ्ज वेले<sup>१९</sup> । गगन सब्ज मे जो सुरैया<sup>२०</sup> की छैल ॥  
 सो मेवे थे इस भाति (के) हर रूपन<sup>२१</sup> । ना वाना सुने कोई न देये नयन ॥  
 दरस्ता हजारी जिनस<sup>२२</sup> के थे वार<sup>२३</sup> । सो मेवे<sup>२४</sup> ये यो शाखपर कई हजार ॥  
 सकल कालुवे<sup>२५</sup> जो खां थे सो वां । मो परे लगे जो कि उम्ररवा ॥  
 दिसे सब्ज सब्जी<sup>२६</sup> में साफ<sup>२७</sup> जल । रुपेके जमुर्द<sup>२८</sup> के तस्ते पो जल ॥  
 दिसे झाड चश्मापो यो सरखसर<sup>२९</sup> । कि जो खिज<sup>३०</sup> अमृतके चश्मे उपर ॥१४४०॥  
 अजब खुशनुमा<sup>३१</sup> सब्ज ओ वाग था । अरम<sup>३२</sup> दिलमें जिस वागका दाग था ॥१४४१॥

( २ )

यकायक दिव्या एक सेहरा<sup>३३</sup> उपर । यो एक वाग फिरदीस<sup>३४</sup> सम जलवागर<sup>३५</sup> ॥१४५८॥  
 अगर होर चदन हवो सदल के झाड । ॥  
 नजर जाँ तलक जाय वाँ जिस रुखत । जमी मय दिसे सब्जजूती नमन<sup>३६</sup> ॥१४६०॥  
 दिसे उस लहलहे सन्जे<sup>३७</sup> उपर । हरे पाँच<sup>३८</sup> के ये जो यो रूपेगुहर<sup>३९</sup> ॥१४६१॥  
 अये वृंद शवनम<sup>४०</sup> लाते पा यो । झलकते सितारे शिफक<sup>४१</sup> में ते जो ॥  
 थके सब्जसब्जे मे उस देख हरिण । मदन के जमन मे जो आहूनमन<sup>४२</sup> ॥

१ घूँघट, २ सूर्य, ३ स्वर्ग से, ४ लाल, ५ नीलम-जंमा, ६ चित्र के, ७ सौंदर्य,  
 ८ चमके, ९ प्रियतमा १० फूल, ११ मधुरभाषी, १२ मामूली, १३ सुदर्शन, १४ अमृत,  
 १५ दिविया, १६ किमरिल, १७ चमकदार, १८ गुच्छे, १९ हरी लता, २० सप्तपि,  
 २१ बक्ष, २२ जाति २३ फल-बाहर, २४ फल, २५ नहरें, २६ हरे, २७ हरियाली,  
 २८ पन्ना, २९ बिलकुल, ३० अमृतरक्षक देवता, ३१ सुदर्शन, ३२ स्वर्गोद्यान, ३३ जगल,  
 ३४ स्वर्गोद्यान, ३५ प्रकाशमान, ३६ हरे तोते-जैसी, ३७ पन्ना, ३८ मोती के मुख,  
 ३९ ओस, ४० आकाश की लालिमा, ४१ हरिण-जंसा।

गुलाँसों जमीं सब्ज<sup>१</sup> सब बेगुमाँ । दिसे जों सितारयाँ सों सब्ज आसमाँ ॥  
 अथे लाल हर एक गुल शाखपर । छके<sup>२</sup> नैन नगिस के पीपी शराक ॥  
 मये नाब<sup>३</sup> शबनम<sup>४</sup> अथी जों गुलाब । सुराही मये लाल<sup>५</sup> की सरबसर ॥  
 डुले वावसों गुलके कै शाखभार । मदन पी को जों नाजनी<sup>६</sup> गुलअजार<sup>७</sup> ॥  
 दिसे सुख गुल सब्ज डालीमने<sup>८</sup> । रखे खूब<sup>९</sup> जों सब्जवाली मने<sup>१०</sup> ॥  
 अथे सुख गुलनार के पात सब । कि जों पान खाये सो खूवाँके लब<sup>११</sup> ॥१४७०॥  
 कँवल पर दिसें पर पसारे भँवर । कि जोस्याम अबरू<sup>१२</sup>का मलन नैन पर ॥१४७२॥  
 अथे खुशनुमा<sup>१३</sup> गुल हर एक डाल के । जमीराँ होर सुँबुल होर गुललाल के ॥१४७६॥  
 गुलाबी गुलाँके खिले कै चमन । फुले यास<sup>१४</sup> में हो खिले यास्मन<sup>१५</sup> ॥  
 बनाँ क्योडयाँ के जो थे आसपास । किये थे अपस धामना<sup>१६</sup> का लिबास ॥  
 दिसें झाड चंपा के यों पसों । कि जो लाजवर्दी<sup>१७</sup> तिला धूपसों ॥  
 खुले मुख पो अरगंदसों<sup>१८</sup> सेवती । फुले जाइ जूई सो मिल रेवती ॥१४८०॥  
 खुले कै वजा<sup>१९</sup> के गुलां चावसा । झडे कै वजा के पते वावसों ॥  
 रंगारंग फूलाँ के झडझड पते । जमी रही जमी रही सुरंग दामिनी<sup>२०</sup> मुद्दते<sup>२१</sup> ॥  
 गुलाँपर सो चू-चूके शबनम<sup>२२</sup> की नम । . . . . . ॥१४८३॥  
 येते हर तरफ़ झाडके वारदार<sup>२३</sup> । जो ना कर सके कोइ उनका शुमार<sup>२४</sup> ॥  
 येते डाट झाडा सों झाडा<sup>२५</sup> डुले । जो बिछुडे सों जों मिलके लगते गले ॥  
 सौ के झाड मेवेके थे मायादार<sup>२६</sup> । जेते मायादाराँ वेते सायादार<sup>२७</sup> ॥  
 सआदात<sup>२८</sup> मेवे अधिक वार थे । सो अमृत के चश्मे हरेक ठार थे ॥१४८९॥  
 दिसें कालवे सब्ज-सब्जमें यों । पट्यामे अरूसा कै है मांग ज्यों ॥१४९४॥  
 फिरै जल जो कर मौज सों गलगला । चलावे हरेक इश्क का सिलसिला ॥१४९६॥  
 मछ्या रक्स करतँ थयाँ जों मिल सकल । कते जन वजावे जो ताल हो मंदल ॥१४९८॥  
 घरे हर मझछी वाँ कि ऐसा हुनर । कुलाटी करै क्या कुलाट उस उपर ॥  
 देखतँ खुश-अदा इस मछा का सकल । गगनकी मछी हो गई है पिघल ॥१५००॥  
 तिरे जलमें खुशहाल गर्दन फ़राज । बगूले वतक ओ लिया होर काज ॥  
 अथे कै परिदा जो वां सरबसर । कि जो हल्ला-पोशाँ है कौसर उपर ॥  
 क हे तो दरस्ताकु इस जल संगत । कि ओ खिज्र होर यो है आबेहयात ॥  
 अजब खुश लगे झाड चश्मे उपर । सो आवाज मुर्गा का शाखाँ उपर ॥  
 जेते मुर्ग रगासों खुशरग थे । अदामे गले सबके जो चग थे ॥

१. हरा, २. अत्यधिक, ३. अंगूरी शराब, ४. ओस, ५. लाल शरबत, ६. सुंदरी.  
 ७. गुलाबी गालों की, ८. डाली में, ९. सुंदरमुख, १०. हरियाली में, ११. सुंदरियों के अधर,  
 १२. भौं, १३. सुदर्शन, १४. निराशा में, १५. चमेली, १६. धामिन साँप, १७. पुष्पराग,  
 १८. सुवर्ण, १९. कई प्रकार, २०. विजली, २१. चिरकाल, २२. ओस, २३. फलदार,  
 २४. गिनती, २५. घने, २६. घनी, २७. छायावाले, २८. अच्छे-अच्छे ।

हरे लाल मुर्गा मो मव शाखसार । दिसे सज्ज होर सुखे जो नौ बहार ॥१५०६॥  
 सो मंना टिटोरो व कुक्के दरी । भी नूरीसो मिल फाखते सर्गरी ॥१५०९॥  
 बरे गुल पो बुल्लुल सना बेसुमार । अजारा पढे दास्ताँ के हजार ॥१४१०॥  
 सो मोरा लगी नाचने देख मोर । पपीहा करे पीव-पीव उस समोर ॥  
 खुशावाज कुमर्या किर्या आगकार । रह्या कूक त्याँ कोइलाँ ठार ठार ॥  
 खुश्याँ कर अपस दिलमें हर यारका । हसी हस हमा देख गुलजार का ॥

### ९ निशा-आगमन

जो ऐसेमें अफनाव जरी-धरन । बिया मुर्ग के आशियामें वतन ॥ ८०६ ॥  
 गया रोज का वाज जब छोड वाग । बिया तब वतन रातका आ को जाग ॥  
 चल्या जगते खुर्शाद साहेबजमाल । हुआ खम पो रोगन चदरका हलाल ॥  
 फुली जब खन सब जो नक्षे नमन । खुटे तब गगनके चमकने समन ॥  
 गगन पर निकल यो सितारे फिरे । हरे वाग में जो चिरागा घरे ॥ ८१० ॥  
 कि आपिर को अँपड्याँ वहाँ रोज सब । उतार्या गगन पदये शामँ जब ॥ १०२ ॥  
 पडी जिस बबत शाहनुर्को की घालँ । ॥१०२२॥  
 जो मूरज वा कचन हुआ बेनिशान । दिस्या तब शिफकँलाल रूम्या के खान ॥१०२४॥  
 कचन शमाँ जब गइ ठडी हो निकल । रपेरीँ शमादानँ मुलगे सकल ॥  
 छुपा गवँ में जो गुहर-आफताबँ । भरी दज म्यानेँ ओ दुर्रे खुशावँ ॥  
 जवाहर का दर जगँ हुआ जब गगन । खन नार गीहार का पेनीँ भरनँ ॥  
 मियाही भरी आयगे चार जामँ । जजमी अवरीँ आसमाँ मुश्कफामँ ॥

### १०. जहाज तूफान में

कहे देख कश्तीँ कुँ तूँ सरखसरँ । कि यरु शह चलता है पानी उपर ॥ ९७९ ॥  
 अगर वेग जाने वा हमँ आपडे । वहम सात कश्ती ओ कश्ती बरे ॥ ९०८ ॥  
 मुटी ओ मुजेत्यावा कर्के उपर । निकल पलमें गई यो सियाँ सर्ववसर ॥  
 फिरे जहाज ओजो जनेँ वारदारँ । सो एक पेट में उस तिफिलँ के हजार ॥  
 बरे पाव यो पेटमें लेको घाँव । कि जो पेट में सापिनी लेको पाँव ॥ ९८३ ॥  
 सुरज के दिमे तावगोँ मौज तो । रपेरी टिक्टँ साफ चदनी में जो ॥ ९८६ ॥  
 खन में जमी यी दिगँ तावदारँ । दिमँ जल पो दीपक हजारा हजार ॥ ९८७ ॥  
 सो लहरो मुसीकी जादिव फौज-फौज । चली दिलपो मुज जा के दरियाकी मौज ॥ ९८९ ॥

१ पहुँचा, २ पदों में, ३ तुर्कों का वादशाह, ४ चोट, ५ उपा, ६ दीप, ७ रुपहली,  
 ८ दीपघाती, ९ पश्चिम, १० सूर्य-मौली, ११ में, १२ सुजल, १३ जँसा, १४ पहिना,  
 १५ आभरण, १६ प्याला, १७ पीली, १८ कस्तूरी रंग की, १९ नाव, २० बिलकुल,  
 २१ भी, २२ मारता, २३ भारवाला, २४ बच्चा, २५ जोर से, २६ गोल, २७ चमकीली ।

यकायक एक रोज दरिया भितर । दिस्या एक डूंगर अजब सखततर ॥१९२॥  
 सकल कूहकूँ<sup>१</sup> देख रोने लगे । उमेदाँ अपस दिल सों धोने लगे ॥१९४॥  
 दिलाकूँ लगी आग उस कलमने<sup>२</sup> । चल्या दिल हरेक का उस पलमने ॥१९६॥  
 हरेक दिलपो बेशक हुआ यो अयाँ<sup>३</sup> । कि कश्ती फुटेगी एताँ जा को वाँ ॥१९७॥  
 हुआ वादे शफाँ<sup>४</sup> समुंदर कूँ जोश । यो देखत गया अहलेकश्ती<sup>५</sup> सों होश ॥  
 टुटे बंध कश्तीके लग और खाम<sup>६</sup> । तफ़र्का<sup>७</sup> हुये अहलेकश्ती तमाम ॥

## § २०. खुशनूद (१६४६ ई०)

### १. कवि

मलिक खुशनूद ने अपने कथा-काव्य (मस्नवी) 'हश्त बहिश्त' को गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु से २३ वर्ष बाद लिखा था। इससे पहले यूसुफ जुलेखा लिख चुका था, जो कि अब अप्राप्य है। खुशनूद पहिले गोलकुण्डा में शाही गुलाम के तौर पर रहा और बढ़ा। किन्तु इन गुलाम छोकरोँ के बारे में यह खयाल करना गलत होगा, कि वह साधारण गुलाम थे। मध्य-एसिया में दसवी सदी से पहिले भी इस अनोखी गुलामी प्रथा को देखते हैं, जिसमें होनहार बच्चों को लेकर दरबार में उनकी शिक्षा-दीक्षा इस प्रकार दी जाती थी, कि आगे चलकर वह सैनिक-असैनिक बड़े-बड़े दर्जों को संभाल सकें। किसी शाही वंश से संबद्ध न होनेके कारण इनसे शाह को कम खतरा रहता था। दिल्ली का प्रथम राजवंश इसी प्रकार के गुलाम का था। मलिक खुशनूद उस वक्त जवान था, जब कवि सुल्तान मुहम्मद कुतुब (१६१२-२६ ई०) की लड़की खदीजा सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह (१६२६-५६) के साथ ब्याह होने पर इसे भी दहेज में दिया गया। खदीजा सुल्तान स्वयं भी साहित्य से प्रेम रखती थी। खुशनूद अपनी योग्यता के कारण दरवार का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गया, और १६३५ ई० (१०४५ हि०) में इसे राजदूत बनाकर मुहम्मद आदिल ने अपने महा मंत्री खवासखों की स्वैरिता से मुक्त होने के लिए सहायता माँगने को गोलकुण्डा भेजा। गोलकुण्डा में इसका अभूतपूर्व स्वागत हुआ और एक बेदीन हिन्दू सामन्त के महल में ठहराया गया। अब्दुल्ला कुतुब ने इस कवि-राजदूत को हर मुलाकात में बहुमूल्य भेंट-इनाम दिये। खुशनूद ने कुतुबशाह की प्रशंसा में कसीदे (कविताएँ) पढ़े होंगे, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। खुशनूद अपने उद्देश्य में सफल हुआ। जब वह बीजापुर लौटने लगा, तब गोलकुण्डा का दरबारी कवि उसके साथ भेजा गया।

### २. हश्त बहिश्त

हश्त-बहिश्त (अष्ट सर्ग) को मूलतः अमीर खुसरो (१२५४-१३२५ ई०) ने फारसी में लिखा था, जिसका हिन्दी-अनुवाद खुशनूद ने सुल्तान मुहम्मद आदिल की

१. पहाड़, २. समयमें, ३. प्रकट, ४. अब, ५. आँधी, ६. नौकारोही, ७. कच्चा, ८. भेद।



प्रेरणा से किया। उपलब्ध पुस्तक में १०००शेर (अर्वालियाँ) पाये जाते हैं, यद्यपि उनके ३२२५ होने का उल्लेख मिलता है। खुगनुद फारसी का भी जवदस्त शायर था। ईरान के सासानी वंश (२२८-६४२ ई०) में वहगम गौर (४२१-३८ ई०) और सुसरो नोगेरवा (५३१-७९ ई०) कृष्ण-क-हैया बने, जो अनेक प्रेमकथाओं के नायक हैं। द्यत-बहिश्त का नायक वहराम गौर है, जिसकी और हुस्नवानू की प्रेमगाथा को अमीन ने पद्यरूप दिया, इसे हम बतला आये हैं।

### (१) मगलाचरण—

मगलाचरण में गुदा और रसूल की स्तुति करते कवि कहता है\*—  
 मराऊँ तुझ जातूँ है पाक मावूद<sup>१</sup> । हुआ ममव खरको-आलम<sup>२</sup> तुझमो मौजूद<sup>३</sup> ॥  
 सँवार्या घनउपर तूँ चाँद-तारे । बिया पैदा अरस-कुर्मी-चमारै<sup>४</sup> ॥  
 जमी पैदा किया होर कौह जलवद<sup>५</sup> । फलव<sup>६</sup> मव छद<sup>७</sup> मो कीता<sup>८</sup> तूँ पैवद<sup>९</sup> ॥  
 मुहम्मद मुस्तफा महनूज खवा<sup>१०</sup> । कहे सारे नबी<sup>११</sup> तूँ ताज<sup>१२</sup> सववा ॥  
 मुहम्मद सब नजयोंके सीसका ताज । ॥

### (२) सरक्षक मुल्तान—

अपने सरक्षक मुल्तान मुहम्मद आदिलशाह के बारे में लिखता है—  
 तु मुन्ता (है) मुहम्मद शाह गाजी<sup>१</sup> । जहाँ कू शाहमो है मरफराजी<sup>२</sup> ॥  
 बहू सानी सिक्दर<sup>३</sup> या कि जम<sup>४</sup> है । नही शार्हा कि जिसके दरमो तुम है ॥  
 कहया यक रोज मुँज शाहे जहागीर<sup>५</sup> । ॥  
 "अमोलक तुज्ज घरता है सवाती<sup>६</sup> । कलम है तेज करता मूनिगाफी<sup>७</sup> ॥  
 हुनर नादिर<sup>८</sup> जो करता जिवकु ताजा ।" ॥  
 किये जब हुकम आदिलशाह मुझकू । अबवे खुस्रवी<sup>९</sup> का माह<sup>१०</sup> मुँजकु ॥  
 सजीना<sup>११</sup> कर ररया हूँ ध्यान में सब । निज्यो मोति है जिवकी खान में मव ॥  
 लगे दरिया उवलने शौक<sup>१२</sup> के तो । ॥  
 कहानी आठ बोत्या सुन सपुनवर<sup>१३</sup> । कि जो है आठ जन्नत<sup>१४</sup> आठ कीसर<sup>१५</sup> ॥

जिस समय खुगनुद इन पवित्रियों को लिख रहा था, उसने दस साल पहले बीजापुर शाहजहाँ का करद बन चुका था, किन्तु उससे क्या? कविता की झूठी चाटुकारिता को उनके आश्रय-दाता खूब पसंद करते थे।

\* पु० द० म०, पृष्ठ २२५। वही, पृष्ठ २२६।

१ सराहूँ, २ पवित्र देवता, ३ लोक, ४ विद्यमान, ५ स्वर्ग-सिंहासन, ६ अलवद गिरि (ईरान), ७ आकाश, ८ युक्ति, ९ किया (पजाबी), १० जोड़, ११ भगवान का, १२ पैगंबर, १३ मुकुट।

† पु० द० म०, पृ० २२६।

१४ घमंवीर, १५ दाता, १६ द्वितीय सिक्दर, १७ जमशेद, १८ चक्रवर्ती, १९ स्थिरता, २० बाल की प्याल उतारना, २१ दुर्लभ, २२ राजसी, २३ चद्र, २४ विधि, २५ आनंद, २६ कवि-वाणी, भवत, २७ स्वर्ग, २८ स्वर्ग निक्षेप।

(३) आत्मइलाघी—

खुशनूदने अपने और अपनी कविताओं के बारे में लिखा है—  
 दिला<sup>१</sup> तुज लुत्फ<sup>२</sup> का दाहू<sup>३</sup> नबी पाक<sup>४</sup> । बंदे<sup>५</sup> खुशनूदका जिव है दरदनाक<sup>६</sup> ॥  
 बंदे खुशनूद पर शहका नजर है । मेरा जन्नत नगर<sup>७</sup> के वजीच घर है ॥  
 बंदे खुशनूद का नादिर<sup>८</sup> वचन है । जो कोई समझे उसे सब नौरतन है ॥  
 उननके<sup>९</sup> जीवके तोतेका चारा । किया खुशनूद ने अतमाम<sup>१०</sup> सारां ॥  
 खुदा मुंज फाम<sup>११</sup> कूँ अति बल दिया (है) । कलम तो अबर<sup>१२</sup>फशानी<sup>१३</sup> किया है ॥  
 बका<sup>१४</sup> का सत्त देख बुनियाद कमजोर । बंध्या में यो इमायरत भौत बरजोर ॥  
 लिख्या हूँ अकलसों नादिर बहुत खूब । हुआ है तो किताब यों आज महबूब<sup>१५</sup> ॥  
 किया मैं तो किताब यों जगमे मशहूर । रहया दुनियाँमे जों धन-उपर सूर ॥  
 लिख्या कातिब<sup>१६</sup> अजब खुशखत<sup>१७</sup> जेबा । मुहम्मद शाह इब्ने<sup>१८</sup> हाजी बाबा\* ॥

(४) कथारंभ—

कवि कथा का आरम्भ करते कहता है‡—  
 अथा<sup>१९</sup> यक बादशाह संसार म्याने<sup>२०</sup> । सोरनका फूल जो गुलजार<sup>२१</sup> म्याने ॥  
 किया था अद्लसों<sup>२२</sup> (रोशन) जहाँकूँ । कि जों रोशन किया सूर आस्माकूँ : ॥  
 अथा ओ खुशखराम<sup>२३</sup> होर नेक फ़रजाम<sup>२४</sup> । अचम्बा नाँव उसका शाह बहराम ॥  
 करे मज्लिस - शराबे - अगवानी<sup>२५</sup> । पिबे निसदिन करे जरें<sup>२६</sup>फशानी<sup>२७</sup> ॥  
 फलातूँ बू-अली<sup>२८</sup> से थे हकीमा<sup>२९</sup> । चतुर शायर गुनी नादिर नदीमा<sup>३०</sup> ॥  
 रतन-धन-माल-लश्कर कुछ न कम था । नही उसके शहर में मिलता गम था ॥

(क) नायक-नायिका × --

छत्रीली बेदिले नाजुक<sup>३१</sup> गुलन्दाम<sup>३२</sup> । अजब या नाव उस धनका दिलाराम ॥  
 अथा ओ रोज शंवाका नूरानी<sup>३३</sup> । अपें मुश्की<sup>३४</sup> किया अंबर-फशानी<sup>३५</sup> ॥  
 दिखाया ताले<sup>३६</sup> अपनी शाह यक रोज । किया उस रो जमें बहराम नौरोज<sup>३७</sup> ॥  
 किया मुश्की इमारत से नवलशाह । कि जो नादिर अचंभा बुर्ज में माह<sup>३८</sup> ॥

१. हे हृदय, २. कृपा, ३. दवा, ४. पवित्र पैगम्बर, ५. दास, ६. दुःखी, ७. स्वर्गनगर  
 ८. दुर्लभ, ९ उनके, १०. समाप्ति । † यु० द० म०, पृ० २२३ । ११. समझ, १२. अंबर  
 (सुगन्ध)बरसाना, १३. जीवन, १४. प्रियतमा, १५. लेखक, १६. सु-अक्षर, १७. पुत्र । \* वही,  
 पृ० २२७ । ‡ वही, पृ० २२९ । १८. था, १९. संसार में, २०. फुलवाड़ी, २१. त्याग से,  
 २२. सुन्दर गमन, २३. दबदबा, २४. लाल मदिरा, २५. सुवर्णवर्षा, २६. दार्शनिक सीना,  
 २७. दार्शनिक, २८. गायक । × वही, पृष्ठ २२७ । २९. कोमल. ३०. पुष्पतनु, ३१. प्रकाशमान,  
 ३२. कस्तूरी-जैसा, ३३. अंबर बरसाना, ३४. भाग्य, ३५. अर्ध, ३६. नक्षत्र में चन्द्र ।

अप सूरज किया किम्वत जरी<sup>१</sup> का । दिया तरतीव<sup>२</sup> मव साकी<sup>३</sup> सेतीका ॥  
सिके<sup>४</sup> हिन्दी नही गोमी परीवा । कमर जो वाल नाजुक इस्तरी का ॥

(ख) स्वार्थो ससार<sup>५</sup>—

जजब<sup>६</sup> वेमेह<sup>७</sup> दुनिया वेवफा<sup>८</sup> है । मुट्पत ऐन<sup>९</sup> इसका मव जफा<sup>१०</sup> है ॥  
जेते है दोस्ता फर्जद<sup>११</sup> साती<sup>१२</sup> । सकल है गारलग<sup>१३</sup> जो सब सगाती ॥  
निछल<sup>१४</sup> नेकीके घरका डाल दुनियाद । तेरे वाद जज<sup>१५</sup> करे सब पलफ<sup>१६</sup> तुज याद ॥  
न कर एमा वदी जो मिर घुनाये । मुय पीठे तेरा कोटे गम न र्नाये ॥  
मिले है वाप भाई सब मिरामी<sup>१७</sup> । वले कोई गार<sup>१८</sup> में हगिज न आमी<sup>१९</sup> ॥  
कहा दारा मिकदर शाह ग्यानी । गकहा जमशीद जम हातिम दुरानी ॥  
कहा घुमरा<sup>२०</sup> वहाँ आ रस्तमेजाल<sup>२१</sup> । मुग्या नीगोरवाँ का क्या हुआ हाल ॥  
जदालग<sup>२२</sup> है मवत<sup>२३</sup> हातामने<sup>२४</sup> जार । तदा लग<sup>२५</sup> उवाते<sup>२६</sup> मत्र दाम्ता शार ॥  
चले जा नेकमर्दा चल तु मुशनूदा । खुदा हामिल करेगा दिल का मवमूद<sup>२७</sup> ॥

(५) कथाएँ—

हस्त वहिस्त<sup>१</sup> की आठो कहानिया में में कुछ के उद्ग्रण है †—

जवत्रके<sup>२</sup> दीर में यव वादशहा था । अया मदाहूर जो सूर-महे<sup>३</sup> था ॥  
अया आकिल चतुर परचीन ज्ञानी । न था दुनिया में उमवा कोई सानी<sup>४</sup> ॥  
गुन एक जिममें दिमे दानिश्चरी<sup>५</sup> का । उम मगव दिग्यावे मर्वरी<sup>६</sup> का ॥  
अजत्र खूवी<sup>७</sup> का दिलमें रग रस था । जुजुर्गी माथ मिलने का ह्वम<sup>८</sup> था ॥  
अथे उम शाहकूँ मव फर्जद<sup>९</sup> । यकमत एक आकिल होर तिरदमन्द ॥  
तवगर<sup>१०</sup> इत्म हार थे माल-प्रनमें । न थे आजिजे<sup>११</sup> हरेवट्टिफमतकेफनमें<sup>१२</sup> ॥  
सकल आकिल उनत कि जना कुली<sup>१३</sup> थे । कि ज्या दाना<sup>१४</sup> फलातै न्यू अली थ ॥  
न जाना क्या नवलशह दिल मे अया । जुदा हर यव जवानूँ सह बुलाया ॥  
कहया हर एव जवाकूँ आजमाना । जो है बलजुग का यो साटा जमाना ॥  
घरु में) कौन करता है मियाही । कटगा कॉन करता वादशाही ॥  
वडे फर्जदकूँ वाल्या तिरदमद । वितू जाकिल मसी<sup>१५</sup> आदिल<sup>१६</sup> हुनरमद ॥

१ पोशाक, २ क्रमबद्धता, ३ भवदायक से, ४ सीले । \* उ० श०, पृ० २०२ ।  
५ विचित्र, ६ बेमुरीवत, ७ विश्वासघाती, ८ बिलकुल, ९ जुल्म, १० पुत्र, ११ साथी,  
१२ कन्न तक, १३ निर्मल, १४ अनतर, १५ दुनिया, १६ दायभागी, १७ कन्न, १८ आयेगा,  
१९ नीशेरवाँ, २० रुस्तम और जाल २१ जव तक, २२ शक्ति, २३ हाथोंमें, २४ तबतक,  
२५ उठाते, २६ कामना, † उ० श०, पृ० २०३ । २७ पुराने जमाने, २८ सूर्य-चर्चाद,  
२९ बुद्धिमान्, ३० समान, ३१ बुद्धिमानी, ३२ सर्दारी, ३३ सौंदर्य, ३४ लोभ,  
३५ पुत्र, ३६ एक से एक, ३७ घनी, ३८ अशक्त, ३९ कलामें, ४० दास, ४१ ज्ञानो,  
४२ दाता, ४३ ग्यायी ।

जवानी से दिया हक मुँजक पीरी । खुदा तुजकूँ किया है दस्तगीरी ॥  
 बहुत आकिल है तूँ कर बादशाही । सकल खुबी सों रख तँ मुर्गो माही<sup>१</sup> ॥  
 जो राजी जम<sup>२</sup> अछै माबूद<sup>३</sup> तुझसों । जहांका इल्क सब खुशनूद<sup>४</sup> तुझसों ॥  
 जईफा कूँ बहुतकर दस्तगीरी । जे कोई दाना है उसकूँ वजीरी ॥  
 धर्या सिर के न क्या दाना खिदरमंद । बहादुर पादशहाका नेक फ़र्जद ॥  
 जदाँ लग है गगनपर चाँद तारे । जदाँ ग है अयश-कुरसी<sup>५</sup> चमारे ॥  
 तदाँ लग करतूँ जगमे बादशाही । अछै तुज शहाका आलम हिपाही ॥  
 अजव यो तख्त अफसर-वख्त हुशियार । बगैरज तुज<sup>६</sup> नहीं किसकूँ सजावार<sup>७</sup> ॥  
 तवंगर कोई कहे (गर) बेनवाकूँ<sup>८</sup> । न देसे<sup>९</sup> बादशाही कोई गदा<sup>१०</sup> कूँ ॥  
 अगर नादान<sup>११</sup> कूँ जीनेसों काम है । बगैर दाना<sup>१२</sup> उसे जीना हराम है ॥  
 झलकता<sup>१३</sup> है जहां तुज सारका<sup>१४</sup> सूर<sup>१५</sup> । सितारे जिसमें दिसते त्यों है बेनूर<sup>१६</sup> ॥  
 बहुत जग राजकर होर शादमानी<sup>१७</sup> । खिजर<sup>१८</sup> का तुझ अछो<sup>१९</sup> जम<sup>२०</sup> जिन्दगानी ॥  
 सरासर<sup>२१</sup> आजमाया<sup>२२</sup> शाह गुफ्तार<sup>२३</sup> । किया दिल में कि है यो नेकवर्दार<sup>२४</sup> ॥  
 किया दिलमे खुशी जब आजमाया । वले<sup>२५</sup> जाहिर<sup>२६</sup> गजब<sup>२७</sup> कर भार<sup>२८</sup> आया ॥

(क) द्वितीय राजपुत्र से—

अथा फ़र्जद दूजा तिस बुलाया । कनक-दिल<sup>२९</sup> का खुशीसो आजमाया ॥  
 बहुत अफसूंगरी<sup>३०</sup> सों दिल फुलाया । वले जर<sup>३१</sup> खता उसमें न पाया ॥  
 सवालों जो किया शाहे-खिरदमंद<sup>३२</sup> । जवाबोंसो किया फ़र्जद जबाबंद<sup>३३</sup> ॥  
 कहया "जो तूँ कहे सो मै करूंगा । तेरा फ़रमान<sup>३४</sup> मै सिर पर धरूंगा ॥  
 वले यो बादशाही तुझ<sup>३५</sup> रवा<sup>३६</sup> है । जे कोई दूजा मंगे<sup>३७</sup> ओ नासजा<sup>३८</sup> है ॥  
 एता काँ<sup>३९</sup> जोर है बंदेके दमकूँ । घरेगा तख्त पर जिव<sup>४०</sup> के दम कूँ ॥  
 फलक<sup>४१</sup> बेमेह<sup>४२</sup> गर तुजसों फिरेगा । किया दुसर्यासों वों तुजसो गरैगा ॥  
 किया नै कोई अदब<sup>४३</sup> लग जिन्दगानी<sup>४४</sup> । वफा<sup>४५</sup> किसकूँ किया दुनियाय-फानी<sup>४६</sup> ॥  
 अगर होये कधों शाह राजी<sup>४७</sup> । करे दे तख्त<sup>४८</sup> जगमे सरफ़राजी<sup>४९</sup> ॥  
 बडे फ़र्जदकूँ दे तख्त क्यानी<sup>५०</sup> । तेरे बादज<sup>५१</sup> करेगा जग नुरानी<sup>५२</sup> ॥

१. पक्षी मीन, २. सदा, ३. भगवान्, ४. प्रसन्न, ५. स्वर्गसिंहासन, ६. तेरे विना,  
 ७. योग्य, ८. गरीब, ९. देगा (पंजाबी), १०. फकीर, ११. मूर्ख, १२. ज्ञानी, १३. चमकता,  
 १४. तेरे सरीखा, १५. सूर्य, १६. आभाहीन, १७. प्रसन्नता, १८. अमृत के देवता,  
 १९. रहो, २०. सदा, २१. बिलकुल, २२. परीक्षा की, २३. कथन, २४. सुकर्मी,  
 २५. लेकिन, २६. प्रकट, २७. क्रोध, २८. बाहर, २९. सुवर्ण-हृदय, ३०. जादूगरवे,  
 ३१. जरा कुछ। ३२. बुद्धिमान् राजा, ३३. बोलना बंद, ३४. आज्ञा, ३५. तुझे,  
 ३६. उचित, ३७. चाहे, ३८. अयोग्य, ३९. कहाँ, ४०. मन, ४१. आकाश, ४२. निर्दयी,  
 ४३. अनंत काल, ४४. जीवन, ४५. साथ देना, ४६. नाशवान्, ४७. पसंद, ४८. सिंहासन,  
 ४९. भाग्यशाली, ५०. ईरानी, ५१. अनंतर, ५२. प्रकाशमान।

(ख) तृतीय राजपुत्रसे\*—

किया शह हरव' जिधर था सुद' दाना । किया जिन अकलमें जगकूं पिवाना ॥  
 लग्या शह मौत छद' सो आजमाने । कनक जिवका बसोटी पर लगाने ॥  
 दिया ज्वाव (उनने) "ए शाहे सुहानी" । कि तिफला' सोन होमे' वा रवानी ॥  
 जब इस फजन्द कूं शाह आजमाया । बहुत कुछ शादमानी' दिलमें यारा ॥

(ग) पुत्रो का निर्वास्तन—

कह या शह तीन गौहर' है शरफनाक' ।  
 हुआ खुशहाल अपने वस्त' परमो । किया निजदा' सुदा तख्त परसो ॥  
 वले' फरमा' दिया तीनों रतनकू । निवर जाओ तुमें हर यक पटनकूं ॥  
 जहा लग है भेरा सब मुर्गो-माही' । जहा फिरता है मुंज गटक दोहाई' ॥  
 रहेंगे वां तो मारें ख्वार' वर में । सयासत' कर घरुगा दार' वपर में ॥

(घ) निर्वासित राजकुमार और हन्शी—

कहें जब बात उस शहकी पियादे । सियाहपोश' हो चले ओ शाहजादे ॥  
 वधे तोशा' चले सुट' तमा' घरका । तमाशा देखने सब बहोवरका ॥  
 गये जब शाहजादे शहमो भार' । वगैर जगल-पहाड उन कोइ न था ठार ॥  
 जे शुक हर शहरमें आवे मो लेते । खरावे' मे कधी शेर सोते ॥  
 अथा सब मग्न' सिरमे सर्वरी' । का वले पकडे हुनर सौदागिरीका ॥  
 हुआ एक दिन क जमए आसमानी' । चले एक ठार मिल यो यारजानी' ॥  
 जो मिल सहरके नज्दीक आये एक । वधे घोडे वहाँ आराम पाये ॥  
 अथा उस सहरके नज्दीक जगल । रहे उस वनमें यो जो मस्तमगल' ॥  
 यकायक एक जगी' दौड आया । कि जो शैतान अपना सुख दिलाया ॥  
 हटे सब थासने सुन उसके हाँकाँ । रतन' जगीके जो गाडीके चाका ॥  
 ल्योयेकी वानमें यव वावली थी । मुसल' हँसी पेटपर रोमावली थी ॥  
 वँध्या था झाडके जो गिद पाताँ । हती'के दात सो कुछ कम थे दाँताँ ॥  
 अथा बदसकल काला जो हिपाही । देखत शैतान डरे होर मुर्गो-माही' ॥  
 क्या' "ऐ सूर बेटे सूरजादे" । हरेक जा चाँद है या शाहजादे ॥

\* उर्दू शहपारे (१), पृष्ठ २०५-२०६ । १ मुंह, २ छोटा, ३ युवित,  
 ४ भला, ५ बच्चो, ६ होगा, ७ हृषित, ८ रत्न, ९ बडे, १० भाग्य, ११ दडबल,  
 १२ लेकिन, १३ पक्षी मीन, प्रजा, १४ शासन, १५ बर्बाद, १६ शासन, १७ सूली,  
 १८ काला कपडा पहने, १९ पाथेय २० छोड, २१ लालच, २२ बाहर, २३ वीरान  
 स्थान, २४ विभाग, २५ सर्दारी, २६ भवितव्यता, २७ प्राणप्रिय, २८ मस्तमीला,  
 २९ हन्शी, ३० नयने, ३१ मूसल, ३२ हाथ, ३३ पक्षी-मीन, ३४ कहा, ३५ सूर्यपुत्र ।

मेरा यक ऊँट इस बाटों गया है । निशाँ देओ तो मुँजपर लख मया<sup>१</sup> है ॥  
 गया है . काँ . अगर बोले तो जानूँ । महीने का खबर एक पल में लाऊँ ॥  
 क्या उस तीनमे का यक खिरदमंद<sup>२</sup> । जो थे आदिल<sup>३</sup> हुनरमंद शहके फ़र्जद ॥  
 “क्या दाना शतुर<sup>४</sup> वरजोर है ओ । क्या एक आँख उसका कूर<sup>५</sup> है ओ ॥  
 क्या दुसरा चतुर कहना धरम है । जो उसके मूमने<sup>६</sup> यक दाँत काम है” ॥  
 क्या तिसरा जो आरिफ<sup>७</sup> रंग-रंग है । “वले उस ऊँट का यक पाँव लंग है” ॥  
 हर एक आरिफ वचन जब यो सुनाया । ढूँढन हारेकुं जानों जीव आया ॥  
 पवन त्यों मैं व कीता<sup>८</sup> कामकूँ ओ । चल्या जो शातिर<sup>९</sup> अपने कामकूँ ओ ॥  
 चरन के ओ तरग करते नथे गर्म । कदम पर धर कदम चलते अथे नर्म ॥  
 चले आपे वहाँ यों तीन ज्ञानी । अथा एक बाग नादिर<sup>१०</sup> साफ पानी ॥  
 दिसा यक झाडु ऊँचा जो गगन था । हा हवा होर झछाँव चांधर फुलवन था ॥  
 बयक तुवा मगर था नाम उसका । जो यक यक कोस दौड्या छाँव उसका ॥  
 कुछ यक खाये-पिये मुख हात धोये । बंधे घोडे वहाँ टुक सुखसों सोये ॥  
 हुये हुशियारसो सों भी बात करते । खुशीकुं याद कर गमकूँ विसरते ॥

×

×

×

गया सो सारखा फिरफिरकर आया । बहुत कुछ शोर होर गांगा उचाया<sup>११</sup> ॥  
 गजब<sup>१२</sup> की आगकूँ रोशन कराकय । जबाँकी तेगकूँ पानी दिलाकर ॥  
 क्या<sup>१३</sup> दो कोस दौड्या हूँ इधर में । जहाँबोले तुमे देखा उधर मैं ॥  
 नहीं देख्या हूँ बीछू सांप झाडाँ । नहीं देख्या हूँ काँटै सख्त ठारा ॥  
 वले देख्या नहीं मैं गर्द उसका । मर्या हर बाल में सब दर्द उसका ॥  
 पवन त्यों मैं बहुत जल्दी सों धाया । उड्या क्या धन-उपर या भुँइ छिपाया ॥  
 क्या “जाना मैं का एक ज्वान दाना<sup>१४</sup> । जे कुछ समछया हूँ मैं सो ना छिपाना ॥  
 घडा हाउका भर्या है इस तरफ जान । शहद का उस तरफ लाद्या मरतबान” ॥  
 क्या दूजा कि उसपर इस्तरी है । चतुर बागे अरम<sup>१५</sup> की शहपरी<sup>१६</sup> है” ॥  
 क्या तीसरा “जो है वो पेटसों नार । शिकम<sup>१७</sup> के भारसों होता है आजार<sup>१८</sup>” ॥

### ( ड ) चोरी का अपराध—

निशान्याँ थे जेते पाया ओ जंगी<sup>१९</sup> । क्या तावत<sup>२०</sup> उननपर ओ करन की ॥  
 नहीं समजा उननमे है अमीरी । . . . . . ॥  
 क्या “यो चोर है दिसते भले यो । बशर<sup>२१</sup> के काटते फिरते गले यो ॥

१. लाख दया, २. बुद्धिमान्, ३. न्यायी, ४. ऊँट, ५. अंधा, ६. मुँह मे, ७. ज्ञानी, ८. किया (पंजाबी), ९. चालाक, १०. दुर्लभ, ११. उठाया, १२. क्रोध, १३. कहा, १४. ज्ञानी, १५. स्वर्गोद्यान, १६. परियों की रानी, १७. पेट, १८. दुःख, १९. हब्शी, २०. तकलीफ, २१. मनुष्य ।

तुरग-भानिव-रतन जिसका जो पावें । ओ जो सुरमा नयनम्याने<sup>१</sup> छुपावें ॥  
 मिठे धातो मो वरने दिल-नवाजी<sup>२</sup> । ॥  
 हरा कान फाटे हो मयामी । जगलमें खल<sup>३</sup> कूं देते है फामी ॥  
 बडे माहिर<sup>४</sup> बुरे है चोर सहजोर । चुरा मुदा बफन माली तरें गीरे ॥  
 जवा का कर बढोरा शोर उचाया<sup>५</sup> । तमाशा देगने सज खल्व<sup>६</sup> धाया ॥  
 मिले हाले नमन<sup>७</sup> सब खलक सारे । अये जा चाद म्याने<sup>८</sup> ओ वेचारे ॥  
 केतक कहते एते है शाहजादे । केतक कहते है चोर पयादे ॥  
 कहे मव मिल वि तीनों कूं जकडवर । ले जा तूं शहवने<sup>९</sup> मप्रकूं पवटवर ॥  
 जब आये शाहगकन तीनों जवाना । नजर कर खून देख्या शाह दाना ॥  
 क्या<sup>१०</sup> तो मारखा<sup>११</sup> सब गिमनवे धाता<sup>१२</sup> । निशाया टूटकर वोंगे मो वाता ॥  
 सकल वाता बल शह<sup>१३</sup>न क्या ओ । जिता कटना अया नह चुप रहया ओ ॥  
 क्या तीनोंकूं शह<sup>१४</sup>यो हाल क्या है । कहां इम वात का अटवाल क्या है ॥

### (च) मुक्ति का रास्ता—

दुआ अचल विये उन तीन यारा । जो अपने मुबल के ये ताजदारा ॥  
 "जदालग<sup>१</sup>" गतदिन है मुग-माही<sup>२</sup> । तदा लग करतुं जग में वादशाही ॥  
 जदा लग है धरत होर सूरखा नूर । अछो<sup>३</sup> तुज ग्राह वायो मुल्य मामूर<sup>४</sup> ॥  
 हमें तीनों मुसाफिर है गरीबां । जहांके फंड<sup>५</sup> सो है त्रेनमीरां ॥  
 बहुत बरसां के फिरते है उदासी । रियाजत<sup>६</sup> की गठमें घाल फांसी ॥  
 हम देखे तमाशा मव नगरना । अजायब होर गरायब<sup>७</sup> बहो-वर<sup>८</sup> का ॥  
 नहीं हमनाकुं भाता शह<sup>९</sup>पोशा<sup>१०</sup> । तमा<sup>११</sup> का न हमारे पास तोशा<sup>१२</sup> ॥  
 खुदावा है बहुत हमनाप<sup>१३</sup> साया । जो शहके शहके नज्दीक लाया ॥  
 अबल आया यो जगी<sup>१४</sup> जो निपाही । उरे जगल के सारे मुगामानही ॥  
 क्या देखे तो मेरा उट बोलो । दरीचे रास्तीके<sup>१५</sup> खूब खोलो ॥  
 जराफन<sup>१६</sup> का उडाये मान मे जाग । कहे हंसते लग्या वदनाम का दाग ॥  
 गुनहवा ता लगी हमनाकुं ज्ञात्री । नहीं देखे मो वार्ता झूठ बोली<sup>१७</sup> ॥  
 गजब में आ क्या<sup>१८</sup> तो शाह ज्ञानी । "नहीं देये मो पोत्रे क्या निशानी ॥  
 कहां यक वार किस्सा ध्यानमा मै । सुनूगा जीवके दो वानसा मै ॥  
 जा कोई मूरत नहीं देये हरिनका । निशानी कयो कहे उमके वरन का" ॥

+

+

+

१ नेत्र में, २ दिल पर दया, ३ लोगो, ४ जाहूगर, ५ कद, ६ उठाया, ७ लोक,  
 ८ कुडलाकार, ९ चांद में, १० शाह के पास, ११ कहा, १२ ऊँटवान, १३ भाँति, प्रकार,  
 १४ जब तक, १५ प्राणी, १६ रहो, १७ समूह, १८ दया, १९ तपस्या, २० अद्भुत,  
 २१ जल-थल, २२ शहर का कोना, २३ लोभ, २४ पायेय, २५ हमारे पर, २६ हब्दी,  
 २७ सत्य के, २८ दिल्ली, २९ कौआ, ३० कोय, ३१ कहा ।

किये सिज्दे<sup>१</sup> दिखाये खास खइलास<sup>२</sup> । कहे “बंदे हमे है शाह के खास” ॥  
 उननमें का चतुर यक मर्द हुशियार । क्या मीठे वचनसों नेक गुफ्तार ॥  
 “बहुत जग राजकर छत्तर सुटे<sup>३</sup> सो । तुरंग जम<sup>४</sup> दान गरमाते हटे तें ॥  
 क्या “एक वात फिर अंधला सो मै हूँ । समज उस ऊँटके इस धात<sup>५</sup> परसों ॥  
 जेता ओ गश्त<sup>६</sup> जंगलमें कर्या है । जहाँ ताँ यक तरफ अक्सर<sup>७</sup> चर्या है ॥  
 बँध्या मै नकश<sup>८</sup> अकसर<sup>९</sup> ऊँट है कूर<sup>१०</sup> । जो चरता एक तरफ का सख्त है जोर ॥  
 क्या दूजा कि “सुन ऐ नेक फरहंग । किया मै ऊँटका यक पाँव है लंग<sup>११</sup> ॥  
 चल्या था पाव खर्राता सुवहानी । दिसा मुज रेत पर उसकी निशानी ॥  
 समज इस बात परसो मै जो बोल्या । कि ज्यों शायब चतुर शतरंज<sup>१२</sup> खोल्या ॥  
 जो था सितारा चतुर आकिल खिरदमंद<sup>१३</sup> । क्या था दांत यक कम है हुनरमंद ॥  
 क्या ओ शाहका सुन खुशजबानी । ..... ॥  
 दिस्सा मुँज एक ठार ओ ऊँट आया । वहाँ के शाख-पात ओ तोड खाया ॥  
 जुगाल उसका पड्या था एक किनारे । बहुत पाता झडे थे उसमे सारे ॥  
 क्या मै यो समज तूँ शाह जम है । जो इसके मूँ मने<sup>१४</sup> यक दांत कम है ॥  
 सून्या सब बात बोल्या शाह दिलदार । “कहे है यो समझ यो तीन गुफ्तार<sup>१५</sup> ॥  
 क्या अन्वल जो किस्सा<sup>१६</sup> शहद-घिउका । समज बोल्या छिपासो राज जिउ का ॥  
 अथा यों जमीके खाक ऊपर । पड्या था कज शकल<sup>१७</sup> खाशाक<sup>१८</sup> ऊपर ॥  
 मख्या भी यक तरफते शोर उचाये । जरापोशाँ-निमन जों दिलदिलपने धाये ॥  
 अथ्या दूजे तरफ चिमट्याँ<sup>१९</sup> का तूँदल<sup>२०</sup> । पवनकूँ तिल न था जाने वहाँ वल ॥  
 जिधर चिमट्याँ अथ्याँ समझा कि घिउ है । जो अकसर<sup>२१</sup> घिउ चिमटियाँका सो जिउहै ॥  
 क्या दूजा जो बोल्या महपरी<sup>२२</sup> है । चतुर असवार उँसपर इस्तिरी है ॥  
 जिधर मख्याँ अये बोल्या शहद जो... । जो मख्याँ तिफ्ल<sup>२३</sup> शहद उसका सो जिउहै ॥  
 दिस्सा मुँज यो जो बैठाऊँ कनानी । धर्या करका फिर पायाँ के निशानी ॥  
 जहाँ बैठा अथा संद<sup>२४</sup> ऊँट भारी । अराफ्त<sup>२५</sup> वाँ कमर किये थी ओ नारी ॥  
 परन ना सक मै उसका बास लाया । मेरे रोम्-रोम्मे सब शौक<sup>२६</sup> ढाया ॥  
 क्या मै हुक्म उसमें शहतिरी<sup>२७</sup> है । नही असवार मर्द ओ इस्तिरी है ॥  
 क्या तिसरा जो बोल्या पेटसो नार । हुआ मालूम यो सुन शाह गुफ्तार<sup>२८</sup> ॥  
 उठी भुँइ परसों जब असवार होने । लगी तब फिक्र<sup>२९</sup> के मोती पिरोने ॥

१. दंडवत्, २. मुहब्बत, ३. फेके, ४. सदा, ५. इस भाँति, ६. घूमना, ७. प्रायः,  
 ८. चित्र, खयाल, ९. प्रायः, १०. अंधा, ११. लँगड़ा। १२. शतरंज (खेल), १३. बुद्धिमान्,  
 १४. मुँह मे, १५. बात, १६. दिल का रहस्य, १७. टोड़े आकार, १८. तृण, १९. चीटियाँ,  
 २०. झुंड, २१. प्रायः, २२. चंद्रपुरी, २३. बच्चा, २४. संघाकर, २५. ऊँचाई, २६. आनन्द,  
 २७. राजस्त्री, २८. बातचीत, २९. चिन्ता।



जहाँ था नक्श दो पग सुदहानी<sup>१</sup> । अगे दो हायके थे नक्श कयानी ॥  
चरन देख चार उसके राज<sup>२</sup> खोल्या । अहे सों पेटसों कर वात बोल्या ॥

### § २१ रुस्तमी (१६४९ ई०)

कमालखाने दबीर उपनाम रुस्तमी बीजापुर के एक प्रसिद्ध सत्तात (सुलेखक) बग से मत्रव ग्यता था। इम खानदान को सत्तात की उपाधि प्राप्त थी। इसका पिता इस्माइलखाने सत्तात पाँच पुस्त से बीजापुर दरबार में खुशनवीमी (सुलेखक) का काम करता आया था। रुस्तमी दूमरो की पुस्तको को उतारने की जगह स्वय एक सिद्धहस्त कवि हो गया। उसने और भी कितनी ही गजलें और कसोदे लिखे होंगे, किन्तु वह जीवित है अपने महान् कथा-काव्य (मस्नवी) 'खावरनामा' में, जो पच्चीस हजार शेरों (अर्धालियों—बाल्मीकिरामायण से थोडा ही छोटा) में समाप्त हुआ। 'खावरनामा' का एक हस्तलेख इटिया-ऑफिम-लाइब्रेरी (लंदन) में है, जिममें प्राय प्रत्येक पृष्ठ पर रंगीन तस्वीरें हैं, यद्यपि वह उतनी सुन्दर नहीं है। रुस्तमी का खावरनामा इमी नाम की फारसी मस्नवी का अनुवाद है, जिमे इम्रहमाम ने इससे मवा दो सौ बप पूर्व १४२६ ई० (८३० हि०) में लिखा था। खावरनामा में फिरदौसी के शाहनामे की नकल में हजरत अश्री की काल्पनिक विजया का वर्णन है। मुल्तान इम्राहिम कुतुबशाह के तर्षण पुत्र मिर्जा मुहम्मद अमीन की पुत्री खदीजा मुल्तान गह्ल बानू (बडे साह्य की) प्रेरणा से रुस्तमी ने अपनी पुस्तक को डेढ वर्षों में लिखकर १६४९ ई० (१०५९ हि०) में समाप्त किया।

रुस्तमी ने अपने और अपने काव्य के बारे में लिखा है\*—

किया तर्जुमा<sup>१</sup> दखिनी दिलपजीर<sup>२</sup> । बोल्या मोजजा<sup>३</sup> यो कमालखा दबीर ॥  
खलक<sup>४</sup> कहती है मुज कमाल खा दबीर । तपल्लुस<sup>५</sup> मो है रुस्तमी बेनजीर<sup>६</sup> ॥  
नबी<sup>७</sup> की जो हिजरत<sup>८</sup> थी किता खयाल । हजार पर पचास और नी की थी माल<sup>९</sup> ॥  
कहा रुस्तमी उस वक्त यो किताव । बँव्या बानकी गीहरा<sup>१०</sup> बे हिसाव ॥

और भी †—

फलक<sup>११</sup> कू वफादारी<sup>१२</sup> अँदेशा<sup>१३</sup> नें । बगैर अज जफा<sup>१४</sup> उसको कुछ पेशा नें ॥  
अथी खूब यो जिदगी होर ह्वस<sup>१५</sup> । अगर मग<sup>१६</sup> का डर न होता जपस<sup>१७</sup> ॥  
अजल साथ<sup>१८</sup> कोई जिव छुपाया नहीं । अपस ददकू<sup>१९</sup> दाह<sup>२०</sup> खाया नहीं ॥  
जो हस्तीके<sup>२१</sup> कूचे रख्या है कदम । बाहर जाबना है ज-राहे-अरम<sup>२२</sup> ॥

१ शुभ, २ रहस्य। \* यु० द० म०, पृ० २४१, उ० श०, पृ० २२१। ३ अनुवाद, ४ मनोहर, ५ चमत्कार, ६ दुनिया, ७ उपनाम, ८ अनुपम, ९ पंगवर, १० नगर त्याग, ११ १०५९ हि० (१६४९ ई०), १२ रत्न मोती। † उ० श०, पृष्ठ २२०। १३ आकाशदेव, १४ विद्वासापन्नता, १५ सवेह, विचार, १६ जुलम, १७ लोभ, १८ मृत्यु, १९ पीछे, २० मृत्यु के पास, २१ दवा, २२ हाथों के, २३ नेस्ती की राह।

जो खुशीद<sup>१</sup> है तो भी पागा ज्वाल<sup>२</sup> । जो रुस्तम है तो भी उसे मर्ग-जाल<sup>३</sup> ॥  
 बिछाना भी कोइ यों तख्त होर जौक नाज<sup>४</sup> । पड्या एक तख्ते पे करता निमाज<sup>५</sup> ॥  
 दोनों ओंच<sup>६</sup> आखिरकूँ माटी होवें । मरें होर दुनिया कूँ भी छोड देवें ॥  
 जो बेहतर वही है कि जों भार<sup>७</sup> में । दुन्यामें छोडूँ इसकूँ यादगार में ॥  
 जो इस देखनेमे बुढा होय जवां । अकलकूँ भी होय इसते ताजां रवाँ<sup>८</sup> ॥  
 इसी नाम<sup>९</sup> सो नाम मुज होय बुलंद । होवे खल्क भी इस सेती बहरामंद<sup>१०</sup> ॥  
 जो भर जर्ग मारी<sup>११</sup> ते मुज होय गुबार<sup>१२</sup> । दुन्यामें अछे<sup>१३</sup> मुजकूँ यो यादगार ॥  
 जो-शायर था फिरदोशियाँ पाक जाद<sup>१४</sup> । अछो हककी रहमत<sup>१५</sup> सों आ भौत शाद<sup>१६</sup> ॥  
 दुन्यामें हुई बात उससे बुलंद । हुआ शेरते<sup>१७</sup> भी उने बहरामद ॥<sup>१७</sup>  
 हुआ शेर उसे खूब आवे रवाँ<sup>१८</sup> । ..... ॥  
 कि या नामां ओ खल्क मे नामदार । रह्या जगमें उसते च<sup>१९</sup> यो यादगार<sup>२०</sup> ॥  
 बुलंद-मर्तबा<sup>२१</sup> उसते है बातकूँ<sup>२२</sup> । किया शेर<sup>२३</sup> जगमे ओ इस घात<sup>२४</sup> सों ॥  
 हुआ खत्म उस मस्नवी बोलना<sup>२५</sup> । मोती बातके रासकर<sup>२६</sup> रोलना ॥  
 बोल्या जगमें तोहीद<sup>२७</sup> ओ होर पंद<sup>२८</sup> । ..... ॥  
 छोड्या जों कि ओ काबिले-खाक<sup>२९</sup> कूँ । खुदा बख्श्या<sup>३०</sup> फिदौ पै पाक कूँ ॥  
 दुन्या कूँ बुलंदी वां पस्ती<sup>३१</sup> तुई । सभी नेस्त<sup>३२</sup> है आंच<sup>३३</sup> हस्ती<sup>३४</sup> तुई ॥  
 इस एक बेत<sup>३५</sup> पर भिश्त<sup>३६</sup> उसकूँ दिया । ..... ॥  
 क्या बोलूँ जो मै बोले सो नै रह्या । विधे नै सो मोती कहीं नै रह्या ॥  
 अबल शायरो<sup>३७</sup> कुछ नही छोडे है । जो कुछ बोलना सो सभी बोले हैं ॥  
 नै अब रया है बुस्ता<sup>३८</sup> में एक फूल । जो उस पर नही बोले बुलबुल बोल ॥  
 अकल यार<sup>३९</sup> इस बात मे होये ह्य । करे लुप्फसों मुजकूँ तालीम ओ ॥  
 कि ऐ वातके ख्यालके नक़्शबंद<sup>४०</sup> । जो तुज बातते इल्क होय बहरामंद<sup>४०</sup> ॥  
 कुये ते तबीयत<sup>४१</sup> के उपराल आ । जों हास्त<sup>४२</sup> जाद्गरी कर दिखा ॥  
 तू भी बातकूँ बातसों सांघकर<sup>४३</sup> । ..... ॥

१. सूर्य, २. पायेगा अवनति, ३. घोखा-फरेब, ४. आनंद-मौज, ५. दया, ६. वैसे ही, ७. बाहर, ८. प्रस्थान, ९. पुस्तक, १०. लाभोचित, ११. मिट्टी के कण से, १२. धूल, १३. रहे, १४. सुजात, १५. कृपा, १६. अतिप्रसन्न, १७. पद्य, काव्य, १८. बहता पानी, १९. उससे ही, २०. कीर्ति-स्मारक, २१. दर्जा, पद, २२. वाणी को, २३. पद्य, कविता, २४. भौति, २५. प्रबंध-काव्य-रचना, २६. राशि, २७. अद्वैत (इस्लामी), २८. शिक्षा, २९. मिट्टी का शरीर, ३०. प्रदान किया, ३१. उन्नति और अवनति, ३२. अभाव, ३३. गर्मी, ३४. अस्तित्व, ३४. शेर, पद्य, ३५. स्वर्ग । \* यु० द० म०, पृ० २३९ ।

३६. कविगण, ३७. फुलवाड़ी, ३८. बुद्धि का दोस्त, ३९. चित्रकार, ४०. लाभान्वित, ४१. मन, ४२. हास्त-मास्त, ४३. साध ।

तु भी मार ला गज' वीरानाते' ।  
 किया तू नियत काममें जिम दुस्त' । न को डर कि अबलो खिरद' वारतुस्त' ॥  
 सखुन' की अगर तवा तुज' है रवा' । तो यारी करेगे वनत' तुज निहा' ॥  
 हुआ ताजा दिल अबलवे ज्वावते । जो प्यामा होये गुदा दिवे आवते' ॥  
 न देखा किमी मद इम सातमें । जो इम दास्ता' के वधे वात में ॥  
 मखुनवे' घोडे-पर हुआ हँ मवार । जो इम वाटकूँ तँ कहे एव वार\* ॥

रात्रि-चर्चणा—

आया था जमी पर वी जागाहजग' । जमी' होर जमां कूँ लिया था ॥  
 सफेदी की गिच्ची थी मुसपर नकाव' । परिन्दा' सफेद फेंक्या था आफनाव' ॥  
 जमीपर अवर' ता मडप था तमाम ।  
 जमी पर तो मुम्बुल था न था सुमन ।  
 गया था मट्ठे भितर शाहचीन' । सवाही' का था मुगं भी ह्वावमें ॥  
 जमी होर जमा' में भी वाजल भर्या । अंगार जावे जगमें घुआ भर रह्या ॥  
 जेतें मुग माही' कुं था भीन प्नाव । जमीकूँ दरग' आसमा वाशिताव' ॥  
 फलय नी तत्र' गीहरा' ह्या सवार ।

। युद्धकाल में दो अपरिचित मवारा को मामा के भीतर देगकर दुगपालो की घबराहट का चित्र है—

पुकार्या कि "ए नामपर महतरा' । बोलो नाव अपना व-नाम-आत्रा' ॥  
 वोगे अबल-आखिर' भी अपना तमाम । के' आये है इस मुल्क में क्या है काम ॥  
 कहा जाते हैं और कहाँ आये है । क्या झगडे पर है या खुगी ल्याये है ॥  
 हमें भी कमर बाँध आये है या । निशानी तुमारा जो पाये है या ॥  
 अगर थगडेकूँ आये है ता कहो । वगर' सुलह' मो आये है तो कहो ॥  
 दिया ज्वाव भी यो उसे याद शेर । धुरे दिल का डरता है देखकर दिलेर ॥  
 दिलावर' न डरता है देव मदे-जग' । जो डरता है देख छाव अपनी पलग' ॥

१ खजाना, २ उजडते, ३ ठीक, ४ घी, बुद्धि, ५ तेरा फल है, ६ वाणी, काव्य,  
 ७ तेरी तबियत, ८ जारी, ९ भाग्य, १०. गुप्त, ११ पानीसे, १२ क्या, १३ वाणी ।

\* उ० श०, पृ० २२२ । पृ० ६० म० के (सपादक, श्रीनसीरुद्दीन हाशमी दक्षिणी हिन्दी  
 में साय लगाने के लिए सबसे अयोग्य व्यक्ति हो सकते थे । उन्होंने पाठो की हत्या कर  
 डाली है) पृष्ठ २३९, उ० श०, पृष्ठ २१९ ।

१४ युद्ध का राजा, १५ भूमि और काल, १६ घूँघट, १७ पत्नी, १८ सूर्य,  
 १९ आकाश, २० चीनराज, २१ प्रात, २२ नींद, २३ प्राणी, २४ भय, २५ जल्दी  
 में, २६ नवी लोक, २७ मोती, २८ नामियों के साथी, २९ आदि-अन्त, ३० क्यों,  
 ३१ और यदि, ३२ शान्ति, ३३ वीर, ३४ युद्ध के आदमी को, ३५ शेर ।

किसीकी बुराईसों हमन का मने<sup>१</sup> । इस अंगे<sup>२</sup> भी कुछ बोलना नामने ॥  
चले हैं भी मग़िब-जमी<sup>३</sup> कूँ हमें । हमन पर नको<sup>४</sup> बदगुमां<sup>५</sup> हो तुमें ॥

+

+

+

बोला ले चल्या दीनोंकूँ शाहकन । सितारे निमान<sup>६</sup> गये दोनों माहकन<sup>७</sup> ॥  
जिसे भेजा था शह सौ अंगे हुआ । दोनोंकूँ भी दरबारकूँ ले गया ॥  
देखे उसके दरबार-मैदानकूँ । महलों गये हैं कि असमानकूँ ॥  
महलकूँ रंगाया है सबजर सगात<sup>८</sup> । महल उसके असमानसो बोलो बात ॥  
देखे भौत घरकूँ संवार्या अहै । उसे चार सफ़्फा<sup>९</sup> बनाया अहै ॥  
किया था फ़र्श भी सात रंग । सातों रंगके भी बिछाया था सग ॥

### § २२. निशाती (१६५६ ई०)

उत्तर मे खड़ी (हिन्दी) बोली की कविता १९वीं सदी के अन्त में नाममात्र और सो भी बेमन से हुई । वस्तुतः उसका आरंभ २०वीं सदी के आरम्भ से होता है, जिसमें पहली दो दशाब्दियाँ अभ्यास करने की थीं । लेकिन, अलाउद्दीन और मुहम्मद तुगलक की दक्षिण-विजय के साथ जो लाखों मुसलमान सामन्त, सैनिक, शिल्पकार आदि के रूप में दक्षिण गये, उनके ही कारण दक्षिण मे गुलबर्गा, गोलकुंडा और बीजापुर मे खड़ी हिन्दी की कविता उस वक्त शुरू हुई, जिस वक्त मैथिलकोकिल विद्यापति अपने मधुर गीतों से प्राची को मुखरित कर रहे थे । किन्तु उसकी प्रौढता का जमाना वही है, जब कि सूर और तुलसी की कविताओं के रूप में ब्रजभाषा और अवधी की कविताएँ उन्नति के शिखर पर पहुँची । इस दक्षिणी खड़ी हिन्दी-कविता के सूर और तुलसी, वजही, सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५६५-१६१२ ई०) और गौवासी (१६२५ ई०) थे । यह कविता-प्रवाह तबतक विकसित होता चला गया, जबतक कि औरंगजेब ने दक्खिन की इन मुसलमानी रियासतों को १६८६-१६८७ ई० मे खत्म नहीं कर दिया । दक्खिनी का अन्तिम महाकवि वली (१७०० ई०) उर्दू-कविता का आरंभ भी करता है ।

निशाती या इन्न-निशाती १७वीं सदी के मध्य में गोलकुंडा में हुआ था । वह समय सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब (१६२४-७२ ई०) का था, जो कि स्वयं ऊँचा कवि न होते भी कविता-प्रेमी था । निशाती सुल्तान अब्दुल्ला के दरबार मे एक उच्च पदाधिकारी था । इसकी एक ही मस्नवी (कथाकाव्य) मिली है, जिसका नाम 'फूलवन' (फुलवाड़ी) है । कवि ने इसे फारसी की मस्नवी 'बिसाते' के आधार पर लिखा है । अप्रैल, १६५६ ई० (रजब १०६६ हि०) में आरम्भ करके तीन महीने बाद ईद के दिन (२३ जुलाई, १६५६ ई०) को उसे समाप्त करते लिखा है—

१. दिल मे, २. आगे, ३. पश्चिम के देश, ४. नहीं, ५. बुरे विचारवाला, ६. सितारे-जैसा, ७. चाँद के पास, ८. सोने-सहित, ९. साफ ।

अथा तारीस लाया तो यो गुलजार,  
इग्यारह सां कु कम थे तीस-पर-चार।

निशाती अपने बारे में लिखता है कि मैं गजलें (प्रशमात्मक पद्य) नहीं कहता, लेकिन इससे मेरे सिद्धहस्त होने में कोई बाधा नहीं, क्यों कि निजामी और सादी जैसे (फारसी के महा-कविया ने) भी गजले नहीं कही। मैं भी उन्हीं की तरह मसूनवी ही के द्वारा प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करूँगा। यदि मैं बादशाह के दरवारियों और शायरा में होता, या जीविबाजन के झमेलों से पूरी तौर से मुक्त होता, तो निश्चय ही कोई अत्यन्त महान् कृति अपनी कीर्ति के लिए छोड़ जाता।

## १ फूलवन

दक्खिन के वजही और गोवामी जैसे कवि अभिमान में चूर थे, किन्तु निशाती एक निर-भिमान कवि था। उमे इतने ही से सन्तोष था, कि वह बड़ा आदमी नहीं है, तो भी लोग उमका सम्मान करते हैं। वह अपने ममसामयिक कवियों—वजही, गोवासी, नखती, सनजती—से प्रशंसा की आशा नहीं रखता, न अपने ग्रय में उनका नाम ही लेता है, लेकिन अपने ने पहिले के कवियों फिराज, महमूद, खलील अहमद और शौकी के लिए सम्मान प्रदर्शित करता है। 'फूलवन' लिखने का खयाल उसे कैसे आया, इसके बारे में वह लिखता है\*—

'विसाते' जो हिवायत<sup>१</sup> फारसी है।  
मुहब्बत<sup>२</sup> देखने की आरमी है।  
इवारत<sup>३</sup> सब किसी के ने समझता।  
तुझे है फारसी में दस्तका<sup>४</sup> आज।  
न वरमी<sup>५</sup> तरजुमा भी कोई तुझ वार्ज।  
इसे हरक्स बे तै<sup>६</sup> समझा कुं तुं धोल।  
इसे हरक्स कै तै समझा कु तुं धोल।  
दखिन की बातसो सारया हूंत खोल।  
खुदा के पास मंग हिम्मत वुलन्दी।  
नजावन मा कराय मैं नकशवन्दी।  
जहै ताजा चमन पैवस्ता<sup>७</sup> मेरा।  
दागुफ्ता<sup>८</sup> है मदा गुलदस्ता मेरा।  
लताफत<sup>९</sup> में है ज्यो खूवा<sup>१०</sup> की अवह<sup>११</sup>।  
हरेक मिसरा<sup>१२</sup> जो है वर्जुस्ता<sup>१३</sup> मेरा।

\* पृ० २० म०, पृ० ८४।

१ कया, २ प्रेम, ३ वाक्य, ४ अधिकतर, ५ करेगा (पजावी), ६ तेरे बिना।  
७ हरेक के लिए, ८ सुबद्ध, ९ प्रफुल्लित, १० मजुलता, ११ सुदरियो, १२ भों,  
१३ वाक्य, १४ धोर्निमित।

दिया है जगकुँ-रीनक यकतरफसे<sup>१</sup>।  
 है यो बाज जो वो रास्ता मेरा।  
 करम<sup>२</sup> सों हक के<sup>३</sup> पाया आज राहत<sup>४</sup>।  
 फ़लकसों<sup>५</sup> था जो खातिर<sup>६</sup> खस्ता<sup>७</sup> मेरा।

‘फूलवन’ की रचना में कवि सफल हुआ है, इसमें शक नहीं। १६-१७वीं सदी की दूसरी दक्खिनी कविताओं की तरह फूलवन में भी अरबी-फारसी के शब्दों का अगाध प्रयोग हुआ है, लेकिन साथ ही हिन्दी-शब्दों का भी खुलकर उपयोग किया गया है, जैसा कि ‘फूलवन’ नाम से मालूम होता है। प्रोफेसर जोर (हैदराबाद) ने निशाती और उसकी कविता के बारे में लिखा है—‘फूलवन’ निस्संदेह उन थोड़े से पद्यों में से है, जो सच्चे अर्थों में गम्भीर छानबीन के परिणाम है। इसके लेखक का वास्तविक उद्देश्य था, एक सुन्दर साहित्यिक तथा मनोरंजक पुस्तक लिखना, न कि फारसी कहानी का सूखा अनुवाद करना। . . . भाषा और वणन-शैली के अनुसार यह दक्खिन के सर्वश्रेष्ठ मसनवियों में से है। इसका छन्द भी खास और चित्ताकर्षक है। कवि अपने मन की कल्पना और वास्तविक भावोद्ब्रेक को पग-पग पर प्रकट करने का इच्छुक दिखलाई पड़ता है। रीति-रिवाजों और विवाह-प्रथाओं के जो वर्णन उसमें आये हैं, वे बिलकुल स्वाभाविक तथा मानव-जीवन के अनुकूल हैं। वहाँ कुतुबशाही शासनकालीन जीवन और रीति-रिवाजों के बढ़िया चित्र हैं\*।

कवि के सौ बरस बाद सिघोट (कड़पा, आन्ध्र) की एक जागीरदारनी की प्रेरणा से मुहम्मद हैदर जाफर-पुत्र ने ‘फूलवन’ में समनवर और हुमायूँ का ब्याह और जोड़ दिया। जागीरदारनी ने अपने हस्तलेखों को सुन्दर चित्रों से अलंकृत कराया। यह मूल सचित्र हस्तलेख लन्दन की इंडिया ऑफिस-पुस्तकालय (संख्या १०३) में अब भी मौजूद है।

अपने समकालीन दूसरे दरबारी कवियों की तरह निशाती ने भी सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब की प्रशंसा में कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं, जैसा कि—

करूँ तारीफ में उस ताजवर का।  
 समझता है जिने कीमत गुहर का।  
 शाहों का शाह अब्दुल्लाह गाजी।  
 अच्छे जम हक्सों उसके पेशवाजी।  
 सबादत के नयन का नूर है तूँ।  
 शुजाअत के गगन का सूर है तूँ।  
 अजब नैं देख तेरी नौशेरवानी।  
 करैं बकर्याँ की गुरगाँ पासवानी।

१. सर्वत्र, २. कृपा, ३. सत्य, भगवान् की, ४. आराम, शान्ति, ५. आकाशसे, भाग्यसे, ६. दिल, ७. श्रान्त। \*उर्दू शहपारे, पृ० १०९।

अगर देगा जो तेरे मदुल हृद बांध।  
 रखेगा कर जतन केतनाकुं (तू) चाँद।  
 जघाँ लग मेहर चरखे अस्तरी है।  
 जघाँ लग धन पे जीहरा-मुस्तरी है है।

(१) कथा—

कचन पटन नगर का बादशाह एक फकीर को स्वप्न में देखकर उसका भक्त बन गया। बड़ी खोजके बाद उसे फकीरका साक्षात्कार हुआ। फकीर ने उसे कितनी ही कहानियाँ सुनाई—जिनमें से एक को फूलवन का विषय बनाया गया है। कश्मीर के बादशाह के वाग में एक फूल का पौधा था, जिमपर मुग्ध हो एक बुलबुल रोज आकर उमे छेड़ती थी। बेचारा फूल कुम्हला जाता था। इस अपराध के लिए बुलबुल को पकड़कर बादशाह के सामने लाया गया। बुलबुल ने अपनी रामकहानी कही—मैं खुतन के एक सेठ का लडका हूँ। वहाँ एक भगत की कन्या पर मुग्ध हो गया। दोनो एक दूसरे से मिलने में सफल हुए। जब यह बात भगत को मालूम हुई, तो उसने शाप दे दिया, जिससे लडकी फूल बन गई, और मैं बुलबुल। बादशाह ने इस्म-आजम (महामन) की अगूठी का पानी छिड़क दिया, और दोनो असली रूप में हो गये। बादशाह के कहने पर वह और भी कितनी ही कथाएँ सुनाता रहा। अन्तिम कथा अजम (ईरान) की राजकुमारी समनवर और मिस्र के राजकुमार हुमायू के व्याह की है।

कविता के नमूने देखिए (प्रियतमा का नल-शिल वणन)\*—

मेरा बाप था सौदागर खुतन का । न था पर्वा उमे कुछ मालो-धन का ॥  
 बड़ा था भीत मव मौदागरोंमें । अथा मशहूर सालम<sup>१</sup> बदर<sup>२</sup> में ॥  
 होकर मशहूर था सौदागरी सू । कते<sup>३</sup> थे कारवाँ-सालार<sup>४</sup> उसकूँ ॥  
 वडे थे उसनके<sup>५</sup> मोहराके अवार<sup>६</sup> । देगा सो थे रुपय्ये हीर दीनार<sup>७</sup> ॥  
 तिजारत<sup>८</sup> की बहुत सोरात<sup>९</sup> सा वो । गया इक मतवा गुजरात कूँ सो ॥  
 अथा मैं उस सफर में उसके सगात । घड्या<sup>१०</sup> सो क्या कहूँ उस ठार पर घात<sup>११</sup> ॥  
 मेरी उस वक्त थी अब्बल जवानी । तवी औपडी<sup>१२</sup> थी मुजकूँ शामदानी<sup>१३</sup> ॥  
 अथी उम ठार यक जाहिद<sup>१४</sup> कूँ बेटो । फरिस्ताखूय<sup>१५</sup> तिस आबिद<sup>१६</sup> कूँ बेटो ॥  
 चतुर, चचल, सरगकठल<sup>१७</sup> सुहानी । न उसका कोई था सूरत में सानी<sup>१८</sup> ॥  
 चँदर आधा कहूँ मैं क्या पेशानी<sup>१९</sup> । चँदर आधा नही वैसा नुसानी ॥  
 मँवाके क्या कहूँ मोहराव<sup>२०</sup> थे कर । कहाँ वो नूर<sup>२१</sup> मेहरावा के ऊपर ॥  
 नयनकूँ नरगिसाँ कहना है नासाज<sup>२२</sup> । चमकने नरगिसाँ में हाँ है वो नाज<sup>२३</sup> ॥

\* उ० श०, पृष्ठ २२७-२८। १ सारे, २ बन्दरगाहो, ३ कहते, ४ सार्थवाह, ५ उसके पास, ६ राशि, ७ अशर्फी, ८ व्यापार, ९ रुचि, १० घटित हुआ, ११ घटना, १२ मिली, १३ हर्ष, १४ भक्त, १५ देव-स्वभावा, १६ पुजारी, १७ स्वगकठो, १८ समान, १९ ललाट, २० धनुषाकार द्वार, २१ प्रकाश, २२ अनुचित, २३ लालित्य, कटाक्ष।

कहूँ रखसार कूँ क्यों उसके लाला । हरेक लाले के है दरम्यान<sup>१</sup> काला ॥  
 मैं सिरते पाँव लग उस मोहिनी का । कि था त्यों, क्या सिफत<sup>२</sup> करने सकूँगा ॥  
 हवस<sup>३</sup> उस देखने का मुजकूँ आया । तमाशे कुँ मेरा दिल सिर उचाया<sup>४</sup> ॥  
 अवल था हार कुछ आखिर हुआ होर । पिरित की चटपटी मुजकूँ लगी जोर ॥  
 जो याद आती अथी<sup>५</sup> वो चुलबुली<sup>६</sup> मुज । तो होती थी सीने में गुदगुली<sup>७</sup> मुज ॥  
 पियारीका पिरित प्यारा लग्या सो । पिरितका थंड होर बारा<sup>८</sup> लग्या सो ॥  
 लगे च मा होर नयनाँ उबलने । लग्या जो शमा होकर जीव जलने ॥  
 धुआँ आहाँका सिरपर हो बदल छाया । गरम भायाँ हसों होंटों पर छले<sup>९</sup> आय ॥  
 कली नमने<sup>१०</sup> हुआ दिल तंगो-नाशाद<sup>११</sup> । हुआ टुकडे गरे-बाँ<sup>१२</sup> फूलकी नाद<sup>१३</sup> ॥  
 पिरितकी आग सो दिल जल हुआ राख । सबूरी<sup>१४</sup> का जो था दामन<sup>१५</sup> हुआ चाक ॥  
 जो उसकूँ देखने का मुज हुआ जौक<sup>१६</sup> । जो आया दिलमने मेरे अपन<sup>१७</sup> शौक ॥  
 हरेक निस जाउँ चंचल की गली कूँ । हलो<sup>१८</sup> छुपकर देखन उस चुलबुली कूँ ॥  
 यकेला उस गली में कोइ न दूजा । जलूँ मैं चाँदनीकी धूपमे जा ॥  
 कर उस चदरबदनके घर तरफ मूँ । हरेक निस नैनके तारे बिखेरूँ ॥  
 हरेक शब<sup>१९</sup> गम सों मैं वो न अछै<sup>२०</sup> जाँ । धुये सों आह के बाँधूँ खुला वाँ ॥  
 करूँ हर शब नयन सों आबपाशी<sup>२१</sup> । उसासोकी करूँ दमसों फराशी<sup>२२</sup> ॥  
 केतक दिनके पछी उम्मेद<sup>२३</sup> का सूर । मेरे बख्ताँ<sup>२४</sup> के नैनाकूँ दिया नूर ॥  
 यकायक झाँक कर देखी मुजे नार । मेरे होर उसके दो दीदे<sup>२५</sup> हुये चार ॥

पुस्तक को समाप्त करते हुए निशाती लिखता है\*—

किया यो इब्तिदा<sup>२६</sup> देख माहरज्जब । कमालत कूँ पऊँच्या ईदकूँ सब ॥  
 यो 'फूलवन' तीन महीने तक लिकाया । पुनम का चाँद हो पूरा तो आया ॥  
 गनितमे आली सो यकबार बेताँ<sup>२७</sup> । है सत्रासोपो दोबीस आर(१७४४)बेताँ ॥  
 अछो<sup>२८</sup> शह कूँ मुबारक<sup>२९</sup> 'फूलवन' यो । नजर मे जम<sup>३०</sup> अछो शहकी चमन यो ॥  
 उनो पर भी अछो दायम<sup>३१</sup> मुबारक । जो को इस बातका धरता है पारक ॥  
 लिखना रेकूँ जम<sup>३२</sup> बख्शो<sup>३३</sup> सआदत<sup>३४</sup> । देवे दायम<sup>३५</sup> पढ़नहार कूँ राहत ॥  
 मुसलमानों सों उम्मेद है मुज । सखुनदानाँ<sup>३६</sup> सो यो उम्मेद है मुज ॥  
 करेगे तो मेरा यो 'फूलवन' सैर । कहो यक बार अछो कर आकबत<sup>३७</sup> खैर<sup>३८</sup> ॥  
 किया मैं खत्म<sup>३९</sup> खातिम<sup>४०</sup> के इसम<sup>४१</sup> सों । मुहम्मद मुस्तफ़ा मौलल्-अजम<sup>४२</sup> सो ॥

१. बीच में, २. गुण, ३. लालसा, ४. उठाया, ५. थी, ६. चंचल, ७. गुदगुदी, ८. वर्षा, ९. छाले, १०. फूल-जैसी, ११. दुःखी, १२. अंचल, १३. फूल की भाँति, १४. संतोष, १५. किनारा, १६. लालसा, १७. अपने को, १८. धीरे, १९. रात, २०. है, २१. जल सींचना, २२. फर्श बिछाना, २३. आशा, २४. भाग्य, २५. आँखे । \* यु० द० म०, पृ० ८६-८७ । २६. आरम्भ, २७. शेर, २८. रहो, २९. मंगल, ३०. सदा, ३१. सदा, ३२. सदा, ३३. प्रदान करो, ३४. सौभाग्य, सदाचार, ३५. सदा, ३६. वाणी-मर्मज्ञों, ३७. भविष्य, ३८. शुभ, ३९. समाप्त, ४०. दिल, ४१. नाम, ४२. मुहम्मद, सिफारिश करनेवाले दुनिया के स्वामी (गुँगों का स्वामी) ।





भाग ३  
उत्तरकाल (१६५७-१८४० ई०)



## § २३. नस्रती (१६५७ ई०)

### १. जीवनी

(मुल्ला मियाँ) नस्रती (पृ० १६७१ ई०) बीजापुर के ही नहीं, सारे दक्खिन के कवियों में बहुत ऊँचा स्थान रखता था। वह उस समय मौजूद था, जब औरंगजेब दक्षिण-विजयमें लगा हुआ था। इसने अपने 'अलीनामा' में मुगलों के साथ हुए युद्ध का भी वर्णन दिया है। यद्यपि १६३६ ई० तक शाहजहाँ ने बीजापुर और गोलकुंडा को अपना करद बना लिया था, किन्तु जब औरंगजेब ने दक्खिनी रियासतों के अस्तित्व को मिटाना चाहा, तब 'मरता क्या न करता' के अनुसार बीजापुर और गोलकुंडा ने तलवार उठाई। नस्रती जहाँ 'मनोहर-मधुमालती' के वृत्तांत को 'गुल्शनेइश्क' के नामसे लिखकर शृंगारी कविता का सफल रचयिता है, वहाँ 'अलीनामा' तथा 'नौ कसीदे' (प्रशस्ति-काव्य) उसे वीर रस का कवि सिद्ध करते हैं।

नस्रती को गारसाँ-द-तासी ने ब्राम्हण बतलाया है, किन्तु उसके अपने वाक्यों से वह और उसके कई पीढ़ी के पूर्वज नौमुस्लिम नहीं मालूम होते। उसका परिवार दक्षिण के महान् सन्त ख्वाजा बंदानेवाज गेसूदराज का अनुयायी था\*—

ब-हम्दुल्ला<sup>१</sup> कुरसी-ब-कुरसी<sup>२</sup> मेरी। चली आई है बंदगी में तेरी ॥  
जो हूँ मैं भी बंदा असीरा<sup>३</sup> हुआ। जो आया हूँ तुज बंदगी में सदा ॥

नस्रती का खानदानी पेशा सैनिक का था। उसके सैनिक पिता ने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया था—

जो मैं असल मे सिपाही अथा। फ़िदाचर<sup>४</sup> दर्गहे-पादशाही<sup>५</sup> अथा ॥  
जो था मुँज पिदर<sup>६</sup> यक शुजाअत-मआब<sup>७</sup>। कदीम<sup>८</sup> यक सलहदार<sup>९</sup> जमए-रिकाब<sup>१०</sup> ॥  
ओ शह-कामपर जिन्दगानी मने<sup>११</sup>। कमरबस्ता<sup>१२</sup> था जाँफशानी मने<sup>१३</sup> ॥  
बनाने जनम अपना नेक काम। अपस-जिन्दगी<sup>१४</sup> मे किया खूब काम ॥  
नजर धरके मज तबियत<sup>१५</sup> में सदा। रख्या नै मुँजे अपसते कर जुदा ॥  
.....। फिरे ले बुजुर्गों<sup>१६</sup> के मजिलसमने<sup>१७</sup> ॥  
मुअतिलम<sup>१८</sup> जो मेरे जिते खास थे। धरनहार ओ मुँज सों इख्लास<sup>१९</sup> थे ॥

\* उ० श० पृष्ठ ५२, ५३।

१. अली की स्तुति के साथ, २. पीढ़ी-दर-पीढ़ी, ३. बंधा, ४. नौछावर, ५. शाही दरबार, ६. पिता, ७. वीरतास्रोत, ८. प्राचीन, ९. शस्त्रधारी, १०. असवार, ११. जीवन में, १२. कटिबद्ध, १३. प्राण नौछावर करने में, १४. अपनी जिंदगी। १५. हृदय, मन, १६. वृद्ध, बड़े, १७. सभा में, १८. अध्यापक, १९. स्नेह।

नम्रती दक्खिनी हिन्दी का महान् अन्तिम कवि है। यह प्रसन्नता की बात है, कि जहाँ हमारे हिन्दी (दक्खिनी या उत्तरी) कवियों की वैयक्तिक बातों का पता लगाना मुश्किल है, वहाँ नम्रती ने अपने बारे में काफी सामग्री जमा कर दी है। नम्रती स्वाभाविक कवि था। उसका मन कमे सैनिक जीवन में लगता? कविता की ओर अपने रुझान के बारे में उसने लिखा है\*—

कुछ एक जब सँभाला मैं अपना शऊर<sup>१</sup>। गया कर कितावा पे अकसर अवूर<sup>२</sup>॥  
निझाया<sup>३</sup> हरेक तरहका फूलवन<sup>४</sup>। रख्या दिलमें तिस बागवानी के फन<sup>५</sup>॥  
देख्या जो जो हर वज्म<sup>६</sup> में कर गियाल। हरीफाँ<sup>७</sup> क्यों है मो सरमस्न<sup>८</sup> हाल॥  
(सो) भी मुँजपे मासूक हो शोक था। अपमके नजारे<sup>९</sup> में नित जौक<sup>१०</sup> था॥

नम्रती को एक और मौभाग्य प्राप्त हुआ। वह और युवराज अली प्राय एक ही आयु के थे। ऐसे प्रतिभाशाली तरुणा को साथ रखना शिक्षा के लिए उपयोगी समझ उसे युवराज के माय रख दिया गया। अली को नम्रती ने अपना गुरु कहा है, जिसमें कितनी सम्मता और कितना दरबारी शिष्टाचार है, यह कहा नहीं जा सकता। अली १९ वर्ष की आयु (१६५६ ई०) में औरंगजेब के वादशाह बनने के दो साल पहले अली आदिल शाह द्वितीय के नामसे गद्दी पर बैठा। अली आदिल के मरने (१६७२ ई०) पर सिकन्दर आदिल (१६७२-८६ ई०) बीजापुर का अन्तिम वादशाह हुआ। इसी के समय औरंगजेब ने बीजापुर विजय कर आदिल-शाही राजवंश को सतम किया।

नम्रती ने अली आदिल को गुरु मानने कहा है—

सुरजवाज<sup>११</sup> ना पकडे रग रतन। चदर बिन न खुगवू धरे फूलवन॥  
किये वाज<sup>१२</sup> उस्ताद कोई तवियत<sup>१३</sup>। न कोई हो सके बाबिले-हूसियत<sup>१४</sup>॥  
ब-हम्दुरला<sup>१५</sup> यह क्या बडे वस्त<sup>१६</sup> आज। न उस्ताद कोई मुझअलीशाह वाज॥  
कि सह मुज तवीयत की तेजीकुँ पाऊ। सिखाया है जवते बडे दीड चाल॥

अली आदिल न गद्दी पर बैठते ही अपने वयस्क कवि की ओर विशेष ध्यान दिया और वह उसे बराबर सरक्षण-प्रोत्साहन देता रहा—

तिलक तरन<sup>१७</sup> शहकू मुबारक हुआ। अपन सायमें-हक वतवारक हुआ॥  
तो था ऐन<sup>१८</sup> सह कामरानी मने<sup>१९</sup>। जहाँ बानी की शायदमानी<sup>२०</sup> मने॥  
बुला भेजे बदेबु तिस हालमें। नजर हर मेरे रेवहा<sup>२१</sup> माल में॥  
परखता चल्या या रतन सरबसर।  
वही जगमें बदा रहे बेनियाज<sup>२२</sup>। रख्या अपनी खिदमत मने<sup>२३</sup> सरफराज<sup>२४</sup>॥

\*वही, पृ० ५४। १ होश, २ पारगमन, ३ ध्यान से देखा, ४ फुलवाडी, ५ कला, ६ सभा, ७ शत्रु, ८ सतवाला, ९ दृश्य, १० शोक।

† यु० ब० म०, पृष्ठ ५६। ११ सूर्य बिना, १२ किये बिना, १३ शिक्षा, १४ पद में योग्य, १५ अला की प्रशंसा से, १६ नाग्य, ‡ वही, पृष्ठ ५८। १७ तिलक-सिंहासन, १८ बिलकुल, १९ प्रताप में, २० जगपालन, २१ अनमोल, २२ अभागा, वचित, २३ सेवा में, २४ भाग्यशाली।

फिर लिखता है—

जनम खाम<sup>१</sup> था सो दखिनका कलाम<sup>२</sup> । हुआ पुस्ता<sup>३</sup> तुज-तर्बियत ते तमाम ॥  
बडे शासरां शेर नाजुक<sup>४</sup> बनाये । कि जिस वस्फ<sup>५</sup> कालिब<sup>६</sup> में खूबा<sup>७</sup> के जाय ॥  
समझना है बारिक दुनिया का फन<sup>८</sup> । जो अक्वल<sup>९</sup> अथा<sup>१०</sup> क्या सो शेरे-दक्खिन<sup>११</sup> ॥  
इताके जो कै शेर सो सरसरी<sup>१२</sup> । सुने तो कहे महबा<sup>१३</sup> अनवरी<sup>१४</sup> ॥

तथा—

लगाया तेरा तूँ च<sup>१५</sup> अपस<sup>१६</sup> हितसों पाल । जोजो जौहरी जगकुं होय हर निहाल<sup>१७</sup> ॥  
शहा<sup>१८</sup>, गच्चे<sup>१९</sup> एक जूना पाता<sup>२०</sup> हूँ मै । वले<sup>२१</sup> नांव सो तुज विकाता हूँ मै ॥  
न तूँ जानता है कि हर हाल मे । जो तेरेच<sup>२२</sup> खासा<sup>२३</sup> का हूँ माल मै ॥  
मुझे तर्बियत<sup>२४</sup> तूँ किया है कि कर<sup>२५</sup> । दिखाया हूँ कर आज ऐसा हुनर<sup>२६</sup> ॥  
जो तारिफ़ सुन जिसकी घर इस्तियाक<sup>२७</sup> । ज़गावें समझ तुहफ़ा<sup>२८</sup> अहले-इराक<sup>२९</sup> ॥  
तेरे दौर<sup>३०</sup> में बेहुनर<sup>३१</sup> बाद<sup>३२</sup> है । हुनरमद है सो जिते शाद<sup>३३</sup> है ॥

और भी\*—

अँगे<sup>३४</sup> तब निकल मुँज उपरते चली । सुसूखी शाख जब बार<sup>३५</sup> धरते चली ॥  
मेरा मन दिस्या साफ़ गौहरका खन<sup>३६</sup> । अँगे देनहारा अमोलक रतन ॥  
रतन खनते ते निकले जो अक्वल सुनो । ले जावें शहाके अँगे राहरो<sup>३७</sup> ॥  
मेरा शाह यो जोकि अहै जौहरी । वो शहजादगी में अथा मुश्तरी<sup>३८</sup> ॥  
नवे जाँद सा शह जो बाला<sup>३९</sup> अथा । चरंत बद्र<sup>४०</sup> दिन-दिन उजाला अथा ॥  
मेरी तब्यकी खन<sup>४१</sup> ककुं काबिल<sup>४२</sup> पिछान । “न कोइ खन है” कह इस मुकाबिल<sup>४३</sup> पिछान ॥  
धरतहार अक्सर<sup>४४</sup> असर-मेह<sup>४५</sup> की । रख्या मुँज तरफ़ नित नजर मेह<sup>४६</sup> की ॥  
जो बखशा<sup>४७</sup> जम<sup>४८</sup> उस मेहने आबो-ताब<sup>४९</sup> । हरेक फ़ेले<sup>५०</sup> रंगी हुआ आफताब<sup>५१</sup> ॥

मुँजे यो सखुन<sup>५२</sup>-बादशाह याद है । पछे पीर<sup>५३</sup> के वस्फ उस्ताद<sup>५४</sup> है ॥  
मुज-उस्ताद उस्तद-आलम<sup>५५</sup> अछै<sup>५६</sup> । किया इल्म<sup>५७</sup> अज्वर<sup>५८</sup> जिसे जम<sup>५९</sup> अछै ॥

१. कच्चा, २. वाणी, ३. परिपक्व, ४. कोमल, ५. जिसका गुण, ६. हृदय,  
७. सुन्दरियों, ८. कला, ९. प्रथम, १०. था, ११. दक्खिनी कविता, १२. साधारण,  
१३. शाबाश, १४. फारसी का कवि । वही, पृष्ठ ५९ । १५. तू ही, १६. अपने, १७. सफल-  
मनोरथ, १८. ऐ बादशाह, १९. पुराना पत्ता, २०. लेकिन, २१. तेरे ही, २२. निजी खेती,  
२३. शिक्षा, २४. कैसे करके, २५. शिल्प, २६. शौक, २७. भेट, २८. इराकवाले,  
२९. शासन-काल, ३०. शिल्पविहीन, ३१. नहीं, ३२. प्रसन्नता । \* वही, पृष्ठ ५४, ५५ ।  
३३. आगे, ३४. फल, ३५. खान, ३६. बटोही, ३७. खरीदार, ३८. युवा, ३९. पूर्णचंद्र,  
४०. खान, ४१. योग्य, ४२. समान, ४३. प्रायः, ४४. कृपा का प्रभाव, ४५. कृपा,  
४६. प्रदान किया, ४७. सदा, ४८. चमक, ४९. कार्य, ५०. सूर्य, ५१. वाणी, ५२. गुरु,  
५३. गुरु का गुण, ५४. जगद्गुरु, ५५. है, ५६. विद्या, ५७. याद, ५८. सदा ।

मुंजे तबियत<sup>१</sup> तं किया है अगर । देखाया हूँ कर आज ऐसा हुनर ॥  
मेरा तवा यक बागें-महकबूब है । जिसे बार-फल-फूल अपरूप है ॥  
लगाया तेरा तूँच पस तपसो पाल । जोजो जीहरी जगकुँ होय हर निहाल ॥  
मुजे तबियत कर तुं जाहिर किया । शऊर<sup>२</sup> इस हुनर का देस शायर किया ॥  
वगनी<sup>३</sup> न था मुज यो कस्वे कमाल<sup>४</sup> । कता<sup>५</sup> हूँ एता में सखुन<sup>६</sup> हस्वे हाल<sup>७</sup> ॥  
खसूसन<sup>८</sup> अलोशाह आदिल अली । तेरा नाव कारी जो है अतिवली ॥  
आ मुंज मनकुँ पवर्दा<sup>९</sup> वेहतर किया । सुबासासा सब जग मुअत्तर<sup>१०</sup> किया ॥

नसरती दरबार का महाकवि, सुल्तान का कृपापान ही नहीं लगीटीयार था, तो भी ज्ञान पढता, शिवाजी और औरंगजेब से लोहा लेने के कारण अलीआदिल उदारता-पूवक आर्थिक सहायता कवि की नहीं कर पाता था, अथवा कजूस था या नसरती स्वयं फजूल-खर्च था, क्याकि नसरती घर की अवस्था से अमत्तुष्ट था। ऊपर से असस्कृत पास-पडोमी उसके मन को चैन नहीं लेने देते थे\*—

ऐ शह रतनका छन<sup>११</sup> हुआ मुज-मन सो तेरा फंज<sup>१२</sup> है ।  
कुछ कस्व<sup>१३</sup> मौरूमो<sup>१४</sup> न होय हक्का<sup>१५</sup> कि तुज यो शायरी ॥  
चुन चुनके आज या काफिया<sup>१६</sup> किन्मा कमीदे<sup>१७</sup> मे किया ।  
या बार<sup>१८</sup> ना हल्का लगे पन तवा<sup>१९</sup> की जोरावरी<sup>२०</sup> ॥  
हक्का कि जाहिर<sup>२१</sup> या कस्<sup>२२</sup> सेह्ले<sup>२३</sup> हलाल इम वानमे ।  
जो मुज कलम हो अज्दहा<sup>२४</sup> विसराये सेह्ले - सामरी<sup>२५</sup> ॥  
पन क्या वस्ते ऐ शाह, मैं कै बात बे - सामान<sup>२६</sup> हूँ ।  
अन्बल तो ऐसा घर नहीं जहँ छार हो राहत<sup>२७</sup> भरी ॥  
घर भी नन्हा यक<sup>२८</sup> हँ वले<sup>२९</sup> दायम<sup>३०</sup> है कइ इल्लत<sup>३१</sup> उसे ।  
लडका नू हम्साया<sup>३२</sup> बद वंसी च भुइंकी बदतरी ॥  
मुतलक<sup>३३</sup> अगजल<sup>३४</sup> कौम वो है गिद<sup>३५</sup> ऐसे वेहया<sup>३६</sup> ।  
समझे वो गाळी खावकूँ ममझे गमत<sup>३७</sup> होर मस्सरी ॥  
जिनकी जवान लाम-काफ<sup>३८</sup> आता है शैतां मोखने ।  
माँचो वने जय (वो) कर तालीम<sup>३९</sup> जगे-जगंगी<sup>४०</sup> ॥

१ शिक्षा, २ हाश, ज्ञान, ३ नहीं तो, ४ काम की पूर्णता, ५ कहता, ६ वाणी, ७ वस्तुस्थिति के अनुसार, ८ विशेषत, ९ पालन कर, १० सुगंधित। \* वही, पृष्ठ ६१-६२। ११ खान, १२ कृपा, १३ पेशा, १४ पैतृक, १५ सचमुच, १६ सुकबदी, १७ प्रशंसात्मक काव्य, १८ भार, १९ तबियत, २० जबर्दस्ती २१ प्रकट, २२ जादू, २३ अजगर, २४ सामरी का जादू, २५ साधनहीन, २६ आराम २७ लेकिन, २८ सदा, २९ कई कठिनाइयाँ, ३० नालायक, ३१ पडोसी, ३२ बिलकुल, ३३ नीच, ३४ चारो ओर, ३५ निर्लज्ज, ३६ मौज, ३७ उच्चारण, ३८ शिक्षा, ३९ सोनारी युद्ध।

सोने मँगे<sup>१</sup> तो घरम टुक ना-तनमें उपरी ल्हो छिटक।

हो जोंक लगता हर मकन करता है हर पिउ नशतरी॥

अपनी कविता के सम्बन्ध में काव्य-मर्मज्ञ मित्र इब्न अब्दुस्समद की बात उद्धृत करता है\*—

दखिनमें तु है आज नस्रत<sup>२</sup> करी<sup>३</sup> । वुलंद<sup>४</sup> शेरके फ़न<sup>५</sup> का सेहफरी<sup>६</sup> ॥  
जो जिस ठार परगट तेरा छंद होय । वहाँ हासिदाँ<sup>७</sup> की जबाँ बंद होय ॥  
ग़नम<sup>८</sup> का गनीमाँ<sup>९</sup> मे तुझ फ़न<sup>१०</sup> अछै<sup>११</sup> । तेरे सामने तानाजन<sup>१२</sup> जन<sup>१३</sup> अछ ॥  
ददे<sup>१४</sup> तेरी शोहरत<sup>१५</sup> सो बूटे रहें । देजें आंखिया रूप फूरें<sup>१६</sup> रहे ॥  
रखेगा तु जिस ठार पर आक्रदम । सकत किस जो वाँ आ सके मार दम<sup>१७</sup> ॥

‘अलीनामा’ में अपनी कविता के बारे में खुद कहता है—

मेरी बातमे लाफ<sup>१८</sup> नही बेखिलाफ़<sup>१९</sup> । कि नादान<sup>२०</sup> का है हुनर ऐन<sup>२१</sup> लाफ़ ॥  
कि यो शेर में आज इस धात सात<sup>२२</sup> । कहया सो बड़े दबदबेके संगत ॥  
किया मैं तो कित्ता-नजर<sup>२३</sup> लाफ़सों । वले<sup>२४</sup> दाद<sup>२५</sup> है अह्ले-इन्साफ़<sup>२६</sup> सो ॥  
कि क्यों मैं पकड़ आज बात यकनबी । जबू<sup>२७</sup> बातकू कर दिखाया कबी<sup>२८</sup> ॥  
अवल के अगर लोग बरनाव पीर<sup>२९</sup> । कते<sup>३०</sup> थे कि है शेर-दखिनी हक़ीर<sup>३१</sup> ॥  
हक़ीक़त में उनकी तरफ हक़<sup>३२</sup> अथा<sup>३३</sup> । कि तब शेर बेमाया<sup>३४</sup> मुत्लक़<sup>३५</sup> अथा ॥  
हुआ जबते उस्ताद-आले<sup>३६</sup> अलीं । सखुन कू सकत दे किया महबली ॥  
सज़ावार<sup>३७</sup> तहसीन<sup>३८</sup> है ये शेर आज । न कोइ रख सके बात हासिदके बाज<sup>३९</sup> ॥  
पसँद शेर करना है बस-आक़िलों<sup>४०</sup> । अपसठार अछो<sup>४१</sup> हासिदाँ<sup>४२</sup> जाहिलाँ<sup>४३</sup> ॥

नस्रती की योग्यता को उसके समकालीन फारसी ‘तारीख अहवाल सलातीन बीजापुर’ का लेखक खानी खान एवं ‘बिसातीनुस्सलातीन’ के लेखक जुबेरी ने भी माना था।

२. कृतियाँ—नस्रती की तीन कृतियाँ मिलती हैं—

(१) ‘गुलशाने-इश्क’, सन् १६५७ ई० (१०६८ हि०) में लिखी।

(२) ‘अलीनामा’, सन् १६६५ ई० (१०७६ हि०) में लिखी।

१. सोना चाहे। \* वही, पृष्ठ ६२। २. विजय, ३. नजदीक, ४. ऊँचा, ५. कवि-कर्म, ६. आलाधारी, ७. ईर्ष्यालु, ८. धन, ९. शत्रु, १०. कला, ११. है, १२. ताना मारनेवाला, १३. औरत, १४. द्वंद्वी, शत्रु, १५. प्रसिद्धि, १६. फूहड़, १७. साँस। † वही, पृ० ५८। १८. डोंग, १९. विरोधी, २०. मूर्ख, २१. बिलकुल, २२. इस ढंग से, २३. अलगाव, २४. लेकिन, २५. न्याय, २६. न्यायियों, २७. बुरी, २८. कभी, २९. गुरु, ३०. कहते, ३१. हीन, ३२. सच्चाई, ३३. था, ३४. प्रतिष्ठाहीन, ३५. बिलकुल, ३६. जगद्गुरु, ३७. पात्र, ३८. प्रशंसा, ३९. ईर्ष्यालु के विना, ४०. बुद्धिमानों के बस, ४१. रहो, ४२. ईर्ष्यालु, ४३. मूर्ख।



३ 'कसीदे', (युद्ध-वर्णन), की सख्या नौ है।

## २ गुलशाने-इश्क (प्रेमवाटिका)

### (१) कथा का उद्गम—

यद्यपि पुस्तकका नाम फारसी है, किन्तु है यह मनोहर और मधुमालती की प्रसिद्ध प्रेमकथा। भूवभूति के 'मालतीमाधव' (मानव-मालती) का प्रभाव इस प्रेम-कथा पर किमी समय अवश्य कुछ रहा, किन्तु आगे कथा बहुत बदल गई है। हिन्दी में ऐसी प्रेमकायाका के लिरानेवाले सबप्रथम कुतुबन, मझन, जायसी जैसे मुसलमान कवि थे, जिनके सामने फारसी में लिखी मस्नवियाँ (कथाकाव्य) मौजूद थी। कुतुबन ने अपनी 'मृगावती' जोनपुर के बादशाह हुमेनशाह के आश्रित रह १५०१ ई० (९०९ हि०) में लिखा था, उससे १८ वर्ष बाद १५१९ ई० (९२७ हि०) में जायसी ने अपनी 'पद्मावत' लिखनी शुरू की, जिनकी समाप्ति शेरशाह के शासनारम्भ (१५४० ई०) के बाद हुई। १५१९ ई० में जायसी के सामने 'मृगावती', "मधुमालती" मौजूद थीं—

राजकुँवर कचनपुर गयऊ । मिरगावति कहँ जोगी भयऊ ॥

साधे कुँवर खडावत जोगू । मधुमालति कर कीन्ह विमोगू ॥

'मिरगावती' और 'पद्मावती' की भाँति मधुमालती भी अवधो भाषा में लिखी गई थी और जोनपुरकाल में—मधुमालतीके कवि(मझन)के बारे में विशेष मालूम नहीं है, और अब, सम्पूर्ण मधुमालती भी उपलब्ध है। उसके कई फारसी अनुवाद तथा नख्खती का यह काव्य बतलाते हैं, कि मझन की कविता का बहुत आदर हुआ था\* ।

(१) मझन की 'मधुमालती' का प्रथम फारसी पद्यद्व अनुवाद शाहजहाँ के समय १६८९ ई० (१०५९ हि०) में किमी अज्ञात व्यक्ति ने 'कुवर मनोहर व मधुमालत' के नाम से किया था, जिसके दो हस्तलेख ब्रिटिश म्यूजियम (लन्दन) में मौजूद हैं। यह ग्रन्थ शेष मझन के ग्रन्थ का अनुवाद है, यह स्नय बतलाया है—

तुफैले हजने औलादे आदम । व-य-मनो हिम्भते असहाव अकरम् ॥

चुनाँ अन्देसा वरमन् गरत रोदान । कि मधुमालत जवा हिदीउज्ज-मझन ॥

वगोधम् फारसी दर शैर-अवयात । . . . . ॥

हजारों आफरी वर-शेख मझन । जे-शेरे हिदवी वूदास्त पुर-फन ॥

(२) मझन की कृति का दूसरा फारसी अनुवाद आकिल खा राजी ने १६५४ ई० (१०५६ हि०) में 'मिहो माह' (सूर्य-चन्द्र) के नाम से किया। इसके हस्तलेख लन्दन में इंडिया ऑफिस और ब्रिटिश म्यूजियम के अतिरिक्त बोडलियन पुस्तकालय (ऑक्सफोर्ड) तथा पेरिस के विन्डोथिक नाइयोनल में मौजूद हैं।

(३) तीसरा फारसी अनुवाद माधोदास गुजराती ने सन् १६८६ ई० (१०९८ हि०) में किया, जिसकी एक प्रति इंडिया ऑफिस-पुस्तकालय में मौजूद है।

\* पदमावत ।\* देखिए 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' भी (रामचन्द्र शुक्ल, बनारस, २००५ संवत्, पृष्ठ ९८) । † यु० द० म०, पृ० २७४ ।

(४) चौथा गद्य-अनुवाद किसी अज्ञात लेखक ने 'मेह्लो माह' के नाम से किया, जिसकी एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम में है।

मञ्जन की कृति के फारसी अनुवाद नखती के ग्रंथ के पहिले हो चुके थे। नखती ने यह नहीं लिखा है, कि उसने मञ्जन की 'मधुमालती' या उसके अनुवाद के सहारे अपने ग्रंथ को लिखा। किन्तु, उसके सामने फारसी और हिन्दी की 'मधुमालती' थी\*—

मआनी<sup>१</sup> की सूरतकी है आरसी । कह्या शोरे दक्खिनकूँ जों फारसी ॥  
फसाहत<sup>२</sup> में कर फारसी खुशकलाम<sup>३</sup> । धरे फ़ख्र<sup>४</sup> हिन्दीवचनपर मुदाम ॥  
वगर शोरे हिन्दीकी बाजी-हुनर<sup>५</sup> । न सकती है तथा फारसीमे सँवर ॥  
मै इस दो हुनर<sup>६</sup> के खुलासा<sup>७</sup> कुँ पा । कह्या शोर ऐसा दोनो फ़न मिला ॥  
देवे दाद<sup>८</sup> सुन फ़ारसी-शोरदाँ<sup>९</sup> । जो हिन्दी सुनें भी कहे दिलसों ताँ ॥  
आ देखा अगर हो हसद सों कबाब । रखी बोल तना जो बखिनी किताब ॥

## (२) कथा-संक्षेप—

पंडित रामचन्द्र शुक्ल ने मञ्जन के काव्य पर लिखा है—

“मृगावती के समान मधु मालतीमे भी पाँच चौपाइयों (अर्धालियों) के उपरांत एक दोहेका क्रम रखा गया है। पर मृगावती की अपेक्षा इसकी कल्पना विशद है और वर्णन भी अधिक विस्तृत और हृदयग्राही। आध्यात्मिक प्रेमभाव की व्यंजना के लिए प्रकृति के भी अधिक दृश्यों का समावेश मञ्जन ने किया है। कहानी . . . संक्षेप मे . . . है। कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर . . . को अप्सराएँ रातोंरात महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की चित्रसारी में रख आईं। वहाँ जागने पर दोनों . . . एक दूसरे पर मोहित हो गये। पूछने पर मनोहर ने अपना परिचय दिया। . . . बातचीत करते-करते दोनों एक साथ सो गये। अप्सराएँ राजकुमार को उठा कर फिर उसके घर पर रख आईं। . . . राजकुमार वियोग से विकल होकर घर से निकल पड़ा और उसने समुद्र के मार्ग से यात्रा की। मार्ग में तूफान आया, जिसमें इष्टमित्र इधर-उधर बह गये। राजकुमार एक पट्टे पर बहता हुआ एक जंगल में जा लगा, जहाँ एक स्थान पर एक सुंदरी स्त्री पलंग पर लेटी दिखाई पड़ी। पूछने पर जान पड़ा कि वह चित्तविसरामपुर के राजा चित्रसेन की कुमारी प्रेमा थी, जिसे एक राक्षस उठा लाया था। मनोहर कुमार ने उस राक्षस को मारकर प्रेमा का उद्धार किया। प्रेमा ने मधुमालती का पता बताकर कहा कि मेरी वह सखी है, मैं उसे तुझसे मिला दूँगी। मनोहर को लिये हुए प्रेमा अपने पिता के नगर में आईं। दूसरे दिन मधुमालती अपनी माता रूपमजरी के साथ प्रेमा के घर आईं और प्रेमा ने उसके साथ मनोहर कुमार का मिलाप करा दिया। सबेरे रूपमजरी ने चित्रसारी में जाकर मधुमालती को मनोहर के साथ पाया। . . . रूपमजरी अपनी कन्या को भला-बुरा कहकर मनोहर का प्रेम छोड़ने को कहने लगी। जब उसने न

\* यु० द० म०, पृष्ठ २७७-७८।

१. अर्थ, २. लालित्य, ३. सूक्ति, ४. गर्व, ५. कला का खेल, ६. विद्या, ७. संक्षेप, ८. न्याय, गुणग्रहण, ९. फारसी पद्यज्ञात।

† 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास', पृष्ठ ९५-९६।

माना तब माता ने शाप दिया, कि तू पक्षी हा जा। वह पक्षी होकर उड़ गई। कुँवर ताराचन्द ने उसे एक साने के पिंजरे में रखा। एक दिन पक्षी मधुमालती ने प्रेम की सारी कहानी कह सुनाई। अन्त में वह पिंजरे को लेकर महारम नगर पहुँचा। वह फिर पक्षी में मगुप्य हो गई। मधुमालती की माता सारा हाल लिखकर प्रेमा के पास भजती है। मधुमालती भी उसे अपने चित्त की दशा लिखती है। राजकुमार मनोहर योगी के वेश में जा पहुँचा। मधुमालती का पिता अपनी रानी सहित दलबल के साथ राजा चित्रसेन (प्रेमा के पिता) के नगर में जाता है और वहाँ मधुमालती और मनोहर का विवाह हा जाता है। एक दिन ताराचन्द प्रेमा और मधुमालती का एक साथ झूला झूलते देख प्रेमा पर मोहित होकर मूर्छित हा जाता है। मधुमालती और उसकी ममिया उपचार में लग जाती है।”

शुक्लजी आगे लिखते हैं—“इसके आगे प्रति गड़ित है, पर क्या के शुकव्य में अनुमान होता है, कि प्रेमा और ताराचन्द का भी विवाह हा गया होगा।”

नमीरहीन हागिमी ने नसनी के ‘गुल्गने-इश्क’ के अनुमार क्या का सशेष जो किया है, वह अरबी-फारसी शब्दा के हिन्दी रूपान्तर के साथ निम्न प्रकार है\*—

“पुराने समय में एक राजा विनम था। उसकी राजधानी बनकगिर थी। राजा शूरवीर भी था। दान-दक्षिणा म उमकी ख्याति थी। बड़े-बड़े राजा उमकी मना के सर्दार थे। मुल्क और खजाने की कमी न थी। सब कुछ था, मगर कोई सत्तान न थी। एक दिन खाने का थाल—एक मानु के पास ल गया। फकीर ने जवाब दिया—‘वास्तव में पर का खाना विहित नहीं है।’

“किर कितने समय तक शाक-शु स करते राजा (ने) जोगी के भेस में परदेश की राह ली। गजा का मानु के पास पहुँचाया गया। फकीर ने कहा—“ तेरे मिर पर जो फल है, उम फल को खानी के साथ खा। नी माम बाद एक सुन्दर राजकुमार पैदा हुआ, कुवर मनाहर नाम रखा गया। जब (वह) चौदह साल का हुआ, तो एक रात बाठे पर आराम कर रहा था। परियो ने उमे मधुमालती की वगर में सुला दिया। वह जागे। चकित हुए। उसके बाद दोनों का वियोग हुआ। मनोहर योगी बनकर खोज में चला। सैकड़ो कष्ट सहते अन्त में अपने अभिलषित अव की पाया। सफलतापूर्वक लौटा और राज करने लगा।”

### (३) काव्य का उद्देश्य

नसनी ने काव्य लिखने का उद्देश्य बतलाते हुए लिखा है—

यके इश्क की बात कते<sup>१</sup> सो नक़ल<sup>२</sup>।

वलेकिन<sup>३</sup> दखिन यो रह्या (है) बुहन<sup>४</sup>। न काङ्गूब किरसा कहा नेव-फन<sup>५</sup>॥

वरे कुछ गवामी<sup>६</sup> पतीवर खयाल<sup>७</sup>। किया ताजा<sup>८</sup> वागे, वदीयुजमाल ॥

\* मु० ६० म०, पृष्ठ २६३—६४। † मु० ६० म०, पृ० २६६।

१ कहते, २ अनुकरण, ३ लेकिन, ४ पुराना, ५ सुन्दर कला, ६ एक कवि, ७ विचार, ८ नया।

दक्खिनी साहित्य में इस कमी को देखकर इब्न-अब्दुस्समद ने इस काव्य के लिखने के लिए प्रेरण और प्रोत्साहन दिया।

(४) प्रेमारंभ—

मनोहर कुंवर को जब मधुमालती ने अपनी गय्यापर देखा, तब उसने उससे पूछा\*—

कहे “कौन है तूँ सो इजहार<sup>१</sup> कर । परा<sup>२</sup> है कि देव या है बशर<sup>३</sup> ॥  
गुप्त रूप ल्याया है भी कुछ बला । मँतरते मुँज आया है कर मुब्तला” ॥  
कहा बात यो सुन मनोहर कुंवर । कि “तूँ कौन अपे (है) देखाती सो डर ॥  
मेरा वाप विकरम करे राज याँ । कवाता है राज्याँका सरताज याँ ॥”  
कही “बेहोश क्या तूँ खाया अहै । हो दिवाना चुपमें गँवाया अहै ॥  
महारस नगर इस नगरका है नाँव । अहै इस महल मे सो मेरा चँ ठाँव ॥  
धरमराज मुँज बाप है जगपती । अहै नाँव मेरा भी मधुमालती ॥

मंझन ने इस सवाद को और चामत्कारिक रूप में वर्णित किया है—

देखत ही पहिचानेउ तोही । एक रूप जेहि छंद-यो मोही ॥  
एही रूप बुत<sup>४</sup> अहै छिपाना । एही रूप सव सृष्टि समाना ॥  
एही रूप सकती और सीऊ । एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ ॥  
एही रूप प्रकटे बहुभेसा । एही रूप जग रंक नरेसा ॥

मनोहर ने राजकुमारी चंपावती (मंझन की प्रेमा) को शत्रु के चंगुल से मुक्त किया था। इस उपकार का प्रतिशोध करने के लिए चंपावती और उसकी माँ मधुमालती और उसकी माँ को अपने यहाँ निमंत्रित करती हैं, जिसमें मनोहर और मधुमालती का परिचय हो सके। गवासी की मस्नवी ‘बदीयुज्जमाल’ में भी सिरन्दीप की कुमारी के उद्धारक के सैफुलमुलूक को बदीयुज्जमाल से मिलाया जाता है—

उधर साथ थी माँके मधुमालती । इधर माँके संगत चंपावती ॥  
बहुत दिनकु जिस वक्त विछुड़े मिले । यकस यक<sup>५</sup> लगाये चिकल<sup>६</sup> कर गलै ॥  
उनौ क्याँ सख्याँ चूँकि सौ साथ थ्याँ । इनोंके कने भी इसी घात<sup>७</sup> थ्याँ ॥  
चल्याँ जब वो रुनञ्जुन लटक नाज<sup>८</sup> सों । निहालों<sup>९</sup> धरे हाल आवाज सों ॥  
दोनों घेर<sup>१०</sup> बीव्याँ जो थ्याँ मुख्तसर<sup>११</sup> । बुजुर्गी<sup>१२</sup> सो वैठ्याँ वो जा सद्र<sup>१३</sup> पर ॥  
दोनों घेर किर्याँ<sup>१४</sup> खुश सहेल्याँ तमाम । खड़्याँ खिदमती घर अपसका मुकाम ॥  
यो चपावती होर मधुमालती । वैठ्याँ मिलके ना फरक घर एक रती ॥

\* यु० द० म०, पृ० २६६। १. प्रकटन, २. परी पुरुष, ३. मनुष्य, ४. मेरा ही।  
† ‘हिन्दी-साहित्य का इतिहास’, पृ० ९७। ५. मूर्ति। † उ० श०, पृष्ठ २२९-३२। ६. एक से एक, ७. चिपक, ८. उनकी, ९. भाँति, १०. लीला, ११. पौधों १२. दोनों पास, १३. संक्षिप्त, १४. बड़प्पन, १५. मुख्य स्थान, १६. दोनों ओर की।

दोना कियौ सो मावाँ भी एक ठार मिल । सो यो रग उसमें लगा दिलसा दिल ॥  
अचभा न हो बयो चँदर-सूरकू । मिल यक ठार देख्या है किन नूरकू ॥

खुश इखलास<sup>१</sup> सो आ वो पाला बेगन<sup>२</sup> । लगी गोदमें बस वार्ता करन ॥  
उने सिरते तिस पीठ लग हाथ उतार । बला लेके कुबानि जा वार-वार ॥  
मुह्दयत की वार्तामें त्याई उसे । अपमके बहे मै फिराई समे ॥  
निसँक तव कही जायँ चल सर तँ । "वो सब सुन ले किम्मा कहूँगी जो मै ॥  
जो हर वात सुन दिल तेरा ताजा होय । अधिब इन्क का तुझमे अदाजा<sup>३</sup> होय ॥  
करे फूल-राहत<sup>४</sup> सो दिल वाग-वाग<sup>५</sup> । भले होय विछडनके पुरमाज<sup>६</sup> दाग ॥  
अपस दिलकी विमराट कूँ याद दे । हरेब ठार इन्साफ सो दाद<sup>७</sup> दे ॥  
छुपी छद सो यो बशारत<sup>८</sup> करे । अपस साय चलने इगारत<sup>९</sup> करे" ॥  
उठी बातें तिस साथ ऋते च वात । चली लेके छप मो पबड हतमें हात<sup>१०</sup> ॥  
सहेली जो काई साथ आने मँगी<sup>११</sup> । फिगई<sup>१२</sup> उमे नँ ले चाने मँगी ॥  
गइयाँ मिलवे दोनो यकल्याँ गवन । तमाग मा फिरत्या चमन-दर-चमन<sup>१३</sup> ॥  
यकन<sup>१४</sup> ठार यातिर<sup>१५</sup> मेचेल्या यक तरफ । बट्याँ मिलके दोना अधिक घर शरफ ॥  
तव उन पाके फुमंत<sup>१६</sup> यो करनेकी वात । लगी धोलन यो कि "ऐ धन सुजात ॥  
जो बटोका दशन हुआ सा हमन । यो सब फज-बदिशदा<sup>१७</sup> है तेरे चरन ॥  
न होता ते तुज-पगते यो फँज अगर । वो बी<sup>१८</sup> फिरके पडती हमारी नजर<sup>१९</sup> ॥  
हमन सिर तेरा यो है उपकार जाज । जो हाइ तुज-अँग<sup>२०</sup> वात करनेकी लाज ॥  
यो सुन वात मधु-मालती वह अजब<sup>२१</sup> । कही "उजस्वाही<sup>२२</sup> ऐती क्या सबव ॥  
कि मेरे सवालकू दे पेच-ताब<sup>२३</sup> । अजो लग<sup>२४</sup> भी देती है होर कुछ जवाब ॥  
मगर वातका मुँज में नँ कर ममझ । हिकायत<sup>२५</sup> वो कहने तुज आई है रज<sup>२६</sup> ॥  
लगी फिर यो कहने कूँ "ऐ धन सची । समज वात पुस्ती<sup>२७</sup> है कि होय ककी ॥  
कनी हूँ जो यो वात अछ<sup>२८</sup> बूट कर । तो सौगद खाती हूँ तुज हुस्न<sup>२९</sup> पर" ॥  
सुनी जो वो मधुमालती फिर यो वात । विचारों मो तजवीज<sup>३०</sup> कर लाख धात<sup>३१</sup> ॥  
अपसमें अपस<sup>३२</sup> सब्त हैरान हो । लगी पूछने 'फर परेगान हो ॥  
कि "अब चुप न रह तू मुअम्मा<sup>३३</sup> च बोल । कि मुन्बिल<sup>३४</sup> दिसे गर न दिखलाय खोल" ॥  
तव इस वात पर धनवे जा मुप पे बल । कही "मै तो करती हूँ मुश्किल यो हल ॥

१ सुखभाव, २ मौसी के पास, ३ अनुमान, ४ आराम का फूल, ५ प्रसन्न, ६ जलन-भरा, ७ न्याय, ८ सुसमाचार, ९ इशारा, सकेत, १० हाथ में हाथ, ११ चाही, १२ लौटाई, १३ वागे-वाग, १४ अकेला, १५ दिल, १६ छुट्टी, १७ कृपा, बया, १८ वह कहत, १९ दृष्टि, २० तेरे आगे, २१ अद्भुत, २२ क्षमा माँगना, २३ टंडा-भेडा, २४ आजतक, २५ क्या, २६ चाहकर, २७ पक्की, २८ रहे, २९ सौंदर्य, ३० विचार कर, ३१ भाति, ३२ अपने-आप, ३३ पहले, ३४ कठिन ।

वले<sup>१</sup> पूछती हूँ अवल<sup>२</sup> तुज सों बात । खुदाके बदल<sup>३</sup> कह तु सचमुच सगात<sup>४</sup> ॥  
 कि तुजसों हमें जिव<sup>५</sup> सों हमराज<sup>६</sup> है । होर अकसर<sup>७</sup> तो दुसरयाँ सों कम-राज हैं ॥  
 हम पर तुमन लुत्फ<sup>८</sup> जों पेश<sup>९</sup> अछै<sup>१०</sup> । हमे जिव भी तुम-काजपर पेश अछै ॥  
 कवाना<sup>११</sup> तुमन खैर-अदेश<sup>१२</sup> हम । तुमन-काजपर जिवसों है पेश हमे ॥  
 यो सब सच कतीहूँ, नको<sup>१३</sup> जान झूट । न कै जाय हमनाते यो बात फूट<sup>१४</sup> ॥  
 सुनी उस दुलखन<sup>१५</sup> न यो बात जब । अधिक ताबिया<sup>१६</sup> हों बुरा मान तब ॥  
 कही “यों तु इस धात<sup>१७</sup> वाजिब<sup>१८</sup> न था । बड़ेपनका तेरे मुनासिब<sup>१९</sup> न था ॥  
 कि ले हीला<sup>२०</sup> मूँजपर जब इस धात सौ । न्हने जिव पे<sup>२१</sup> करने मँगी<sup>२२</sup> धात तूँ ॥  
 मुज-ऐसी तुजे जाइ वाली<sup>२३</sup> अहै । होर इतने पे तूँ बद-खियाली<sup>२४</sup> अहै ॥  
 न कह फिर तूँ ऐसी वचन आजते । कि मैं पलमें जिव देउंगी लाजते” ॥  
 यो सुन बात खाला<sup>२५</sup> कही फिर वचन । कि “ऐ पाकदामन<sup>२६</sup>, सुजाती सुधन ॥  
 उतमपन<sup>२७</sup> मे यक घाल<sup>२८</sup> मोती है तूँ । निछल चाल<sup>२९</sup> मे चाँद-जोती है तूँ ॥  
 म गर मुँज दो तन कर तूँ जानी अहै । मुँज-इखलास<sup>३०</sup> झूटा पिछानी अहै ॥  
 तूँ समजी है शायद मुँजे यों यकी<sup>३१</sup> । कलकलाजोतुजमह<sup>३२</sup> कुँहोउँऐबचीन<sup>३३</sup> ॥  
 कि है अस्ल<sup>३४</sup> गौहर सों ना हो खता<sup>३५</sup> । नको हो सुटूँ<sup>३६</sup> अस्लपन<sup>३७</sup> का वफ़ा<sup>३८</sup> ॥  
 सची बातकूँ चुप न कर झूट तूँ । खुदा वास्ते मुँजते मत टूट तूँ” ॥  
 यो खाला ने सब बात कही च में । अधिक आके मधुमालती बीचमें ॥  
 छुपा उससों दिल गर्चे राजी<sup>३९</sup> घरी । वले मुँपे कै एतराजी<sup>४०</sup> घरी” ॥

मौसी को तब मधुमालती ने अपने मन की बात कही—

किसे दुख यो कहना न देखी दवा । लगी मनमे जलने च हो ला-दवा<sup>४१</sup> ॥  
 यकत<sup>४२</sup> नित रहूँ गम<sup>४३</sup> से गर सर तलार<sup>४४</sup> । न कोइ बाँट लेवे मेरे दिलका बार<sup>४५</sup> ॥  
 टले दिन तो हर क्यों<sup>४६</sup> सहेलियाँ के साथ । पड़े पन<sup>४७</sup> बजरसिल<sup>४८</sup> हो सीने पे रात ॥  
 जरीना<sup>४९</sup> अगिन तन पे सारे लग । गुल्लूँ<sup>५०</sup> सेज के सब अँगारे लग ॥  
 चँदर मुँज उपर जह्ल<sup>५१</sup> का हूआ बाग । देवे हर सितारा मेरे दिल पे दाग ॥  
 अछै<sup>५२</sup> निस तो दोजख<sup>५३</sup> ने काली कठिन । दिसे दिन तो रोजे-क्रयामत<sup>५४</sup> का दिन ॥

१. लेकिन, २. पहिले, ३. खुदा के वास्ते, ४. साथ, ५. दिल से, ६. रहस्य जानकर, ७. प्रायः, ८. कृपा, ९. पहिले-जैसी, १०. रहे, ११. कहलाना, १२. भलाई चाहनेवाला, १३. नहीं, १४. दुर्लक्षणा, १५. चित्त, १६. भाँति, १७. उचित, १८. उचित, १९. बहाना, २०. छोटे से प्राण पर, २१. चाहा, २२. पुत्री, बाला, २३. बुरा विचार होना, २४. मौसी, २५. सती, २६. उत्तमता, २७. बढ़िया, २८. निर्मल गति, २९. मेरी मुहब्बत, ३०. विश्वास, ३१. चाँद, ३२. दोषदर्शी, ३३. सच्चे, ३४. दोष, ३५. छोड़ूँ, ३६. सच्चापन, ३७. भक्ति, अनुरक्ति, ३८. सहमति ३९. असम्मति, ४०. वे-इलाज, ४१. अकेला, ४२. रंज, ४३. सिर तक, ४४. भार, बोझ, ४५. जैसे-तैसे, ४६. किन्तु, ४७. वज्रशिला, ४८. आभूषण, ४९. फूलों, ५०. विष, ५१. है, ५२. नर्क, ५३. प्रलय-दिन ।

मेरे सिर टले<sup>१</sup> यो कठिन माहने-साल<sup>२</sup> । मुदा विनकहूँ किममो मुंज-दिलका हाल ॥  
 न बोले कि मुंज-तनपे हू पोम्त<sup>३</sup> जम<sup>४</sup> । कि जलते अँगारे पे वह है भसम ॥  
 हुआ रग मुंज जाफरानी<sup>५</sup> करार<sup>६</sup> । सुरज हों पडे देख वे-इस्तिनियार<sup>७</sup> ॥  
 जो देगू निझा<sup>८</sup> तो दिमे नैन में । जो बोलू वचन तो प्रमे वैनमें<sup>९</sup> ॥

कथा पुरानी है, जिस पर पहिंठे के कवियों का प्रभाव हो सकता है, किन्तु उसमें नसती का अपना कवि-कौशल कम नहीं है। उमने ऋतुओं का भी सुन्दर वर्णन किया है। जैसे—

#### (५) ग्रीष्म ऋतु\*—

न वह सूर<sup>१</sup> बल<sup>२</sup> आग-वादल अथा । न वा घृष यक आतगी जल<sup>३</sup> अया<sup>४</sup> ॥  
 मगर खीच दोजख के दरियाते वीर । वरसता अछे जग में जलता च<sup>५</sup> नीर ॥  
 किरन है सो सज जलकी धारां दिसै । हरेक जरी कतराने<sup>६</sup> बदगा<sup>७</sup> दिसै ॥  
 जमी<sup>८</sup> ते फलक<sup>९</sup> लग सब यक घात<sup>१०</sup> मो । भरी मद आतिस<sup>११</sup> की वरमात मो ॥  
 लये मारने जब सुरावा<sup>१२</sup> के मौज । चले चौकधन तव ह्यारत की फौज ॥  
 बले इस अवर में है यक-नफा घात । लजाता है फिर तीज खीच अपने साथ ॥  
 न धरता तो यो नीर-आलम त फक । तो होती जहा तव ह्यारत स गक<sup>१३</sup> ॥  
 गगनके अँगन पर न तारे दिमे । उठ जीके लीगां मो सारे दिसै ॥  
 वह अम्ल में क्या यो मीमाव<sup>१४</sup> है । रूपा गलके तिमने हुआ आव है ॥  
 खत कोह होली निरागी हुई । जमी देख हैरां दिवात्री हुई ।  
 भरे लाल खोरी देस<sup>१५</sup> आई है यो । हयां में अगिन घक्कवाती है जयो ॥  
 यमी आफताव आफने आव था । तां हर चाह<sup>१६</sup> पर आफने-नाव या ॥  
 देवा बहि न था रुये गीती<sup>१७</sup> पर आव । मगर थी नद्यां जा हवापर सुगन ॥  
 अजब नेज गरमी जला मगो-खाव । करे सग का चूना माटीकुं जाव ॥  
 अथी गमं कँकरी अँगारा ते तेज । दिसै तप्त बालू हो चिगियां<sup>१८</sup> की रेज ॥

### ३ अलीनामा

यह सुलतान अली आदिल का चरित-नाम है, जिसमें १६५६ से १६६६ ई० तक की घटनाएँ वर्णित हैं। इस मस्नवी (कथाकाव्य) में (युद्ध-वर्णन) और गजेव, शिवाजी और मलावार के राजा के साथ के महत्त्वपूर्ण युद्ध-मन्त्रवी सात कसीदे सम्मिलित हैं। 'गुल्शनने इस्क' से अलीनामा बड़ा है। माता कमीदे निम्नलिखित है—

१ गुजरे, २ महीना-वर्ष, ३ चमडा, ४ सदा, ५ केसर-जैसी, ६ निश्चय, ७ वेवस, ८ ध्यान से। \* उ० श० पृ० २३३, ९ सूर्य, १० बल्कि, ११ अग्नि-ज्वाला, १२ था, १३ जलता ही, १४ छोटी बंद, १५ वर्षा, १६ पृथिवी, १७ आकाश, १८ एक-मा, १९ आग, २० बालू, २१ डूबना, २२ पारा, २३ दिवस, २४ कुआँ, २५ सप्ताह, २६ चिनगारियाँ।

- (१) पनाला-विजय, १६६१ ई० (१०७२ हि०) में लिखा गया; १५७ शेर।  
 (२) आदिलशाही विश्वासघाती सेनापति सलाबतख़ाँ का पतन, यह १६६४ ई० (१०७५ हि०) में लिखा गया; ५५ शेर।  
 (३) युद्ध से विजयी बादशाह की वापसी १६६३ ई० (१०७४ हि०) में लिखित; २८ शेर।  
 (४) शरद का सुंदर वर्णन, १६७४ ई० में लिखित; २४ शेर।  
 (५) विजयोत्सव-वर्णन : यह तीसरे कसीदे का अंश है; ६ शेर।  
 (६) मुहर्रम की मजलिस के संबन्ध में मसिया, १६६४ ई० (१०७५ हि०) में लिखित; १४८ शेर।  
 (७) मलनाड-विजय, १६६४ ई० में लिखित; २२० शेर।

इस काव्य का आरम्भ करते कवि कहता है—

मुझे खूब कामाँकी तौफ़ीक<sup>१</sup> दे । अछै<sup>२</sup> हक़<sup>३</sup> सो कर मुझपे तहक़ीक़ा<sup>४</sup> दे ।  
 मेरे शेर<sup>५</sup> सों जिन्दा घर हर शऊर<sup>६</sup> । तबीयत<sup>७</sup> कुँ दरिया<sup>८</sup> की नित मौज<sup>९</sup> दे ॥

### (१) आरंभ—

मेरे मुखते काड इस असर<sup>१०</sup> का कलाम<sup>११</sup> । कि हर हफ़<sup>१२</sup> होय मै-पस्ताँ<sup>१३</sup> कुँ जाम<sup>१४</sup> ॥  
 धरनहार असर-हाल<sup>१५</sup> का क़ाल<sup>१६</sup> दे । दिलाँकुँ जम इस कालते हालदे ॥  
 मेरे कौल<sup>१७</sup> अँ वहस<sup>१८</sup> कर सबकी रद । सखुन<sup>१९</sup> कर मेरा आरिफ़ाँ<sup>२०</sup> में सनद<sup>२१</sup> ॥

अलीनामा लिखने के लिए सुल्तान की आज्ञा के वारे में नखती ने लिखा है —

वले<sup>२२</sup> इस बडे फन<sup>२३</sup> के डुंगर<sup>२४</sup> अँगे । खडा आ अटक कस्द<sup>२५</sup> नाकर अँगे<sup>२६</sup> ॥  
 मेरे पर (तो) यो फ़िक्र<sup>२७</sup> मुश्किल पडी । तबीयत<sup>२८</sup> चलानेकुँ अवकल<sup>२९</sup> खडी ॥  
 अब्यासो उसी अडके हैरत<sup>३०</sup> में जाँव । करन मुश्किल आसों मग्या हकते<sup>३१</sup> यों ॥  
 टलीरात बाद अज<sup>३२</sup> हुआ सुब्ह<sup>३३</sup> वे । अथा तब तलक शहकी दर्गह<sup>३४</sup> में मै ॥  
 देखत मुझ रुखन<sup>३५</sup> शाह आलमनेवाज<sup>३६</sup> । बडे लेके खिदमत करना सर्फराज<sup>३७</sup> ॥  
 मुअम्मे<sup>३८</sup> सों नै हर इशारत<sup>३९</sup> किये । दिले दिलसो दिलकुँ वशारत<sup>४०</sup> किये ॥

१. शक्ति, २. रहे, ३. सच, ४. सच्चा, ५. पद्य, छन्द, ६. ज्ञान, ७. विचारों, ८. वायु, ९. गति, १०. प्रभाव, ११. वचन, कविता, १२. अक्षर, १३. मद्यपुजकों, १४. प्याला, १५. प्रभावशाली, १६. कथन, १७. वचन, १८. विवाद, १९. वाणी, २०. ज्ञानियों, २१. प्रमाण, २२. लेकिन, २३. कला, २४. पहाड़, २५. संकल्प, २६. आगे, २७. चिन्ता, २८. मन, २९. कठिनाई, ३०. आश्चर्य, ३१. सत्य भगवान्, ३२. उसके बाद, ३३. प्रातः, ३४. राजद्वार, ३५. मुंह, ३६. जगत्कृपालु, ३७. भाग्यवान्, ३८. गूढ़, ३९. इशारा, संकेत, ४०. सुसमाचार, कहना ।



कह्या मैं कि वदेमें यो काँ<sup>१</sup> हँ हद<sup>२</sup> । कहुँ तव जो उस्ताद का होय मदद ॥  
 देस्या मे जो मुज-दिल-तरफ का खयाल । लगा मुज तवीयत<sup>३</sup> की चढने उवाल ॥  
 समुदरते शह-फैज<sup>४</sup> की होके सोर<sup>५</sup> । हुनरका लग्या मेह बरसन अबीर<sup>६</sup> ॥  
 गई थी चले<sup>७</sup> ते मेरे हाथते । तवीयत जमानेके अतिघातते<sup>८</sup> ॥  
 दो वाजू<sup>९</sup> मेरे दीनो-दुनियाके जाँर । टुटे थे सो या जीव-मुँज ऐन<sup>१०</sup> शोर ॥

(२) शरद का वर्णन\*—

दी है जमिस्ता<sup>११</sup> नो गजी<sup>१२</sup> दूगा उचा<sup>१३</sup> दुँवकार आज ।  
 सर्दार हो वादेखजाँ<sup>१४</sup> थँड<sup>१५</sup> का रच्या है भार<sup>१६</sup> आज ॥  
 उपट्या हवाका फौज यो शबनम् के गोल्या छाँटता ।  
 डरसूँ<sup>१७</sup> अगिनमा झापले डर राही है ठारेठार आज ॥  
 ओ आग कोइ मारे तो दम उठती थी हो सब तन जवाँ ।  
 वैसी भी सरकश<sup>१८</sup> सर नवा पीली दिने सद हार आज ॥  
 बेशक<sup>१९</sup> बतन इस जगते मिटजाती आगिन हो वेनिशाँ<sup>२०</sup> ।  
 गर दिलमें अपते आशिकाँ<sup>२१</sup> देते न उसकू ठार आज ॥  
 हीज<sup>२२</sup> यक हवाका या दिसै मशरिक<sup>२३</sup> ते मगरिव<sup>२४</sup> लग भरया ।  
 कापे फलक<sup>२५</sup> जो धुडवुडा<sup>२६</sup> बँठे तो तिसके ल्हार<sup>२७</sup> आज ॥  
 शबनम्<sup>२८</sup> जो उजला छाचसा आ शीरसे<sup>२९</sup> जलमें पड्या ।  
 हर बाइँ होइ है वही हडी जमनीर सब यक बार आज ॥  
 जल ते च हरयक जा-बजा विल्लोर<sup>३०</sup> का दरपन दिसै ।  
 ऐ चाँद बेगी देखले तिस वीच अपस दीदार<sup>३१</sup> आज ॥  
 हर वग<sup>३२</sup> कुँ बारा मारने पीले हुये है पात सब ।  
 हर यक नगर वाग-जहाँ<sup>३३</sup> है थडसे वीमार आज ॥  
 ना सरफराजी<sup>३४</sup> पा सके दौलत<sup>३५</sup> ते थडकी कोपली ।  
 ना बेल अपनी गोदते लवा करे हय भार<sup>३६</sup> आज ॥  
 गुलशान<sup>३७</sup> के आईने उपर पडता चल्या सर्दाँ सो जग ।  
 हर खारो-खस<sup>३८</sup> शबनम् मेती होता है जीहरदार आज ॥  
 देखे न जा-जो थडते किस यक<sup>३९</sup> कलीकुँ खन्दार<sup>४०</sup> ।

१ कहीं, २ सामर्थ्य, ३ मन, ४ शाह की कृपा, ५ भरा, ६ जल, ७ लेकिन,  
 ८ प्रहार से, ९ बाँह, १० विलकुल ।

\* उ० श०, पृ० २३४ ।

११ सर्दाँ, १२ नौगजी, १३ उठा, १४ पतझड की हवा, १५ ठंड, १६ बहार,  
 १७ डरँगा, १८ बागी, गर्वाँ, १९ निस्सदेह, २० ब्रेपना, २१ प्रेमियो, २२ कुड, २३ पूर्व,  
 २४ पश्चिम, २५ आकाश, २६ बुलबुला, २७ लहर, २८ जीस, २९ दूध से, ३०  
 स्फटिक, ३१ दर्शन, ३२ पत्ता, ३३ दुनिया का बाग, ३४ भाग्यशालिता, ३५ सरकार,  
 ३६ बाहर, ३७ फूलवाडी, ३८ काँटा घास, ३९ किसी एक, ४० हँसते हुए ।

नगमे<sup>१</sup> बिसर जा बुलबुला हर बनमें है बेकार आज ।  
 सूरजके चश्मेका रवाँ<sup>२</sup> आब-आतशी<sup>३</sup> यों जम रह्या ।  
 क्यों सेंकने बस आंयगा इतन्याँ कुँ यक अंगार आज ॥  
 हूँ मैं तो बेसामाँ<sup>४</sup> अधिक दुश्मन तो है भारी अटल ।  
 पाते सिला<sup>५</sup> इस बाव<sup>६</sup> का शह का धरूँ दरबार आज ॥  
 जिस मेहबाके फ़ैज ते सब नौबहार इस दौर<sup>७</sup> में ।  
 जिसकी इनायत<sup>८</sup> ते अधिक आलम दिसै गुलज़ार आज ॥  
 सुल्तान आलमबख्श<sup>९</sup> ओ शाहंशाहे आदिल अली ।  
 हैं यो जहाँ पर्वर<sup>१०</sup> अधिक निराधारकुँ अधार आज ॥  
 तिस जरअफ़शाँ<sup>११</sup> के हथते पुर है नजरकी गोद यों ।  
 पाताँसों पीले बागका दामन<sup>१२</sup> है जो जरदार<sup>१३</sup> आज ॥  
 सूरज जनमका तन नंगा शह-हथते खलअत<sup>१४</sup> पाय तू ।  
 काँटा न आ तिसतन उपर काँपे न फिर यकवार आज ॥  
 मैं इस कसीदे<sup>१५</sup> मैं सनत<sup>१६</sup> कहता हवाकी कै वले<sup>१७</sup> ।  
 तिस थंडसों मुखमें ते फुट निकली निछक गुफ्तार<sup>१८</sup> आज ॥  
 ऐ नस्रती बेहतर है तुज पहलेही दिल गर्मी ऐतीं ।  
 कह मतला<sup>१९</sup> ताजा<sup>२०</sup> सों फिर वही शेर<sup>२१</sup> शक्करवार<sup>२२</sup> आज ॥

### (३) शिवाजी के साथ युद्ध--

भूषण ने यदि शिवाजी की वीरता का वर्णन किया है, तो उसके प्रतिद्वंद्वी अली आदिल के पनाला में १६६१ ई० में शिवाजी पर विजय प्राप्त करने का वर्णन नस्रती ने 'अलीनामा' के प्रथम कसीदे में किया है। पूना और बीजापुर की सीमा पर पनाला एक पहाड़ी किला था। बीजापुर के सेनापति अफ़ज़ल खाँ को धोखे से जब शिवाजी ने मार डाला, तो जोहर के सेनापतित्व में दूसरी सेना भेजी गई। जोहर हाल ही में विद्रोही बनकर क्षमा-पात्र तथा सलाबत खाँ की उपाधि से विभूषित किया गया था। शिवाजी ने पहिले पनाला के दुर्गका आश्रय लिया फिर सलाबत खाँ को अपनी ओर फोड़ लिया। इस पर अली आदिल स्वयं सेना लेकर चला। शिवाजी ने किला छोड़ दिया और पनाला पर बीजापुर की विजय हुई। नस्रती ने अपने इस कसीदे में बादशाह की प्रशंसा शिवाजी की निंदा करते सलाबतजंग के युद्ध का वर्णन और धोखा देना, फिर बादशाह के अभियान और विजय का वर्णन किया है। इसके कुछ अंश हैं—\*

१. गीत, २. जारी, ३. अग्नि-जल, ४. साधनहीन, ५. पारितोषिक, ६. विषय, ७. युग, ८. कृपा, ९. दुनिया पर दयालु, १०. जगत्पालक, ११. सुवर्णवर्षक १२. किनारा, १३. सुवर्णबाले, १४. दरबारी पोशाक, १५. प्रशंसात्मक पद्य, १६. अलंकार, १७. लेकिन, १८. बातचीत, वाणी, १९. दो आदिम चरण, २०. नया, २१. पद्य, छंद, २२. शक्कर बरसानेवाला ।

[\* उ० श०, पृ० २३५।]

जवते झलक' देख्या अधिव' सूरज तेरी तरवारका ।  
 तवते लग्या थर वाँपने हों पुर-अरक' यक वार का ॥  
 कोइ बुँद जो तेरे खगके पानीते दरियामें पडे ।  
 सा जोश अधिक यक नीर होय तस्ना अगँड यक गारका ॥  
 किसमें तु-ताला' के कवी' चमते अधिक जम जम' दिमें ।  
 जिममें तु आलमगीर' हो आया निकदर सारका" ॥  
 कोइ मुहरये-सर' तुज-अ' जाँवाज' नहि ले जा सके ।  
 जा' रज्म" के तस्ते पो तूँ शशदर" वैध्या फुल भारका ॥  
 हर फुल" शहके वस्फ" की लिखता तो हाँते कइ वरक" ।  
 पढता हु सिरनामा बडी यव फनह की तूमार" वा ॥  
 अब खम्" ते इम मज्मून" के मतला" नवल पैदा कहेँ ।  
 हर हर्फ" के माने ते ता निकले सुरज झलकार का ॥

## (क) शिवाजी की निंदा\*—

ऐ शाह आदिल तूँ अग्नी साहेव है सब ससारका ।  
 कुफ्फार-मजन जग तुम्हें नहि सूर" कोइ तुज सारका ॥  
 यकसाल ओ बागी सिवा" जगमें शितत" पैदा किया ।  
 है तिफुल-मक्तव" मरु" में शैतान जिस मक्कार" का ॥  
 कोइ खेल उस मक्कारने खेल्या न कजवाजी" के बिन ।  
 गोया फलक" कजकाल" है माध्या उमी ऐयार" का ॥  
 मरता सो देख उस खिज" अगर लेवे बचा अमृत पिला ।  
 वै जाम भर दे जहसा फेरे" उघार उपकार का ॥  
 था यक्क-यक" जो जगमें सब आ गढ पनालाकूँ बुलद ।  
 थमने धरति लगरमे होर अवर्कूँ थाँव अघार का ॥  
 वेतुल्-शरफ" सो सूरका धरता है नित हम-सायगी ।  
 मरीख" सो उसका धनी दावा धरे हुकदार का ॥

१ चमक, २ पसीन-पसीने, ३ तेरे भाग्य, ४ बलिष्ठ, ५ सदा, ६ चक्रवर्त्ती, ७ सरीखा, ८ बडी गोटी, ९ जान पर खेलनेवाला, १० जहाँ, ११ धुड, १२ द्वारोका । १३ अध्याय खड, १४ गुण, १५ पत्रे, १६ डेर, १७ खम्भे, खुम (घडे), १८ विषय, १९ गजल की आदि पक्ति, २० अक्षर, \* उ० श० प० २३५, २१ सूर्य, २२ विद्रोही शिवाजी, २३ गडबडी, २४ पाठशाला का बच्चा, २५ फरेव, २६ घोखेबाज, २७ टेढा खेल, २८ आकाश देव, २९ गोल-यात्र, ३० चालाक । ३१ अमृत का देवता, ३२ लौटाये, ३३ पकायक, ३४ उच्चतम घर नक्षत्र, ३५ मगल ।

जिसके हशम<sup>१</sup> का शवनवीस<sup>२</sup> अकसर अतारद<sup>३</sup> का सगा ।

जिसका अलंगी नित धरे जबरसों<sup>४</sup> ताता थार का ॥  
पौचे पवन पीरी<sup>५</sup> में जाकर गर जवानीमें चढ़े ।

अपड़े<sup>६</sup> न दूजी उम्र लग तिसपर क्यास<sup>७</sup> यक बारका ॥  
नै बात कें लग मुख नै क ठार पर पहले जवाँ ।

गर नाँव कोइ लेने मँगे तिस राह नाहमवार<sup>८</sup> का ॥  
दामन<sup>९</sup> मे तिस ऐसा हके पाले गया है बर्ग<sup>१०</sup> एक ।

दुनियामें कोइ राज आज लग उस गढ़कुँ नै लड़ने सक्या ॥  
तिरजुग<sup>११</sup> का दल<sup>१२</sup> ले वो जनम खोये ते यक बार का ।

जब हाथ उस मक्कारके भेदों<sup>१३</sup> से ऐसा गढ़ चढ़्या ॥  
होर यक दगाका हो अमल<sup>१४</sup> जाने इसी बदकार<sup>१५</sup> का ।

गढ़ देखकर जान्या कि गढ़ ज्यों काडने आवे मलक<sup>१६</sup> ॥  
तो मुँज तरफ देखे न यों हो लखधनी उस ठारका ॥

सामा सों हरयक जिन्स<sup>१७</sup> के गढ़पर जखीरों<sup>१८</sup> यों भरया ।  
नै नित पड़्या सो गढ़ अजब ओ जाहो भारी भार का ॥

मुतलक<sup>१९</sup> तजावुज<sup>२०</sup> हदते कर भी शर<sup>२१</sup> सों पेश आता<sup>२२</sup> चल्या ।  
शहनेस्त<sup>२३</sup> तब करने मंगे पाया<sup>२४</sup> वो नाहंजार<sup>२५</sup> का ॥

### (ख) युद्ध का दृश्य\*—

खडगाँ खनाखन सूर धर सूरों के यों बजने लगे ।

जोहरा का जोहरा गुल रह्या आवाज सुन झलकारका ॥

खडगाँ खडगाँ लग अधिक चौधेर ते यों चिगियाँ उडियाँ ।

ज्यों आगकियाँ बिजलियाँ चमक बरस्याँ बदल अंगार का ॥

गुर्जासों मुहरे मान यों कीते परा गंदा<sup>२६</sup> दिसन ।

गोफनके जों लगते फतर<sup>२७</sup> फटता है हुक्का<sup>२८</sup> नारका ॥

लागी तबर<sup>२९</sup> के जर्ब<sup>३०</sup> सों तफराख अजलके हाथकी ।

जमके मखी<sup>३१</sup> ते कम न था धबका गुरज<sup>३२</sup> के मारका ॥

१. दबदबे नौकर, २. रात्रि-लेखक, ३. बुध, ४. जबर्दस्तों, ५. बुढ़ापे, ६. पहुँचे, ७. खयाल, ८. विषम, ९. किनारे, १०. पत्ता, ११. गढ़, १२. सेना, १३. रहस्यों, युक्तियों, १४. शासन, १५. दुष्कर्मी, १६. फरिश्ते, देवता, १७. प्रकार, १८. भंडार, ढेर, १९. बिलकुल, २०. गुजरना २१. शरारत, २२. के साथ आता, २३. नष्ट, २४. जज, २५. दुश्चरित्र । \* उ० श०, पृ० २३६ । २६. बिखरे, २७. पत्थर, २८. डब्बा, २९. कुल्हाड़ा, ३०. चोट, ३१. मक्खी, ३२. गदा ।

हर घटमें दिलका धाक सो रहे थे रखट की कीच हो ।  
 हर रगके गुलने था अर्था<sup>१</sup> फब्बारा लहुके धारका ॥  
 मर्त्या के लहुके बह्ल<sup>२</sup> ते धरती पो जब लहरती धरयाँ ।  
 जीत्याँ पो तुट<sup>३</sup> पडने लग्या डूंगर पो डूंगर ल्हार<sup>४</sup> का ॥  
 लोटा के मछल्याँ पर जर जाले दिसेँ हर दूहमे ।  
 थागल<sup>५</sup> के दीडे के नमन<sup>६</sup> तागा सो हर जुनार<sup>७</sup> का ॥  
 चकत्याँ सिराँक्याँ तरते दिस्त्याँ कँवलके फूलस्याँ ।  
 पजा झड्या सो दड था हर तिस दँडलके सार का ॥  
 दीदे विखरे जा जगल मुहेर-सुलेमानी बर्या ।  
 सगे - यहूदी हो दिलाँ दामन भरया कुहसार<sup>८</sup> का ॥  
 चोला गननका अक्स<sup>९</sup> पर साग कुसुंवा हो रह्या ।  
 जब लाल मखमल सब जमी ओडे जो लख विस्तार<sup>१०</sup> का ॥  
 लहुमे रंगे जब सब कँकर याकूत-रेजे हो रहे ।  
 जो माँगियाँ दिसते लग्या रगी हो चूरा गारका ॥  
 छिटक्याँ न ध्याँ लहुक्या भगरयो फनह<sup>११</sup> लिखते शाहका ।  
 पाताँ पो बनके आस्माँ अफशाँ<sup>१२</sup> किया छिडकार का ॥  
 हो रहे मूयाँ रँड मूँड नावूद<sup>१३</sup> सब खँडलाट सो ।  
 जीते हो बेसूरत<sup>१४</sup> भुले बोझ आपनी दीदारका ॥  
 लश्करके जमते कम नही शहके वजीराँ का बटक ।  
 आसफ<sup>१५</sup> के सफ<sup>१६</sup> दे है अधिक हम्ला<sup>१७</sup> हरेके सरदार का ॥  
 बीनी<sup>१८</sup> पो शहकी फौजके जिमके मलायक<sup>१९</sup> पेशरी<sup>२०</sup> ।  
 दमदार पुश्तेवान<sup>२१</sup> है जम-जम<sup>२२</sup> मदद करतार की ॥  
 इस फौज तागेदारकूँ देखे फलक<sup>२३</sup> के जब तलक ।  
 बोले कि आलमगीर हाय बेशक यो भार अतवार<sup>२४</sup> का ॥  
 निकले जिधर शह बाँध रुख फिलहाल<sup>२५</sup> उधरते फतह<sup>२६</sup> भी ।  
 आवे अँगे होने<sup>२७</sup> अपे हदिया<sup>२८</sup> सो मुल्क आयारका ॥  
 यल्गार<sup>२९</sup> शहकी पेशरी है अक्ल<sup>३०</sup> की भी दौडते ।  
 ना ज्ञाक सकसे<sup>३१</sup> बहम जहाँ हो शहघनी तिस ठारका ॥

१ प्रकट, २ समुद्र, ३ दूत ४ लहर, ५ पेवद, ६ सूत-सदृश, ७, ८ पहाड, ९ प्रतिबिम्ब, १० लम्बाई-चौडाई, ११ विजय, १२ वर्षा, १३ १४ बेहूप, १५ नाम, १६ पवित्र, १७. आक्रमण, १८. बेन बाजा, १९ फरिश्ते, दे २० अग्रगामी, २१ पृष्ठपोषक, २२ सदा, २३ आकाश, २४. विश्वास, २५ २६ विजय, २७ आगे होने, २८ भेंट, २९ धावा, ३० बुद्धि, ३१ सकेगा ।

अँपड्याँ<sup>१</sup> जो शह आदिल अली जब मुर्तजा-आवादकूँ ।  
 जेरोजंबर<sup>२</sup> जगकूँ किया आवाज<sup>३</sup> उस-हुंकार का ॥  
 सफ़पर गुनहगाराँ<sup>४</sup> की तब कायम<sup>५</sup> कयामत<sup>६</sup> हो रही ।  
 बिसरे यकस यककी मदद पेशआ<sup>७</sup> सबब<sup>८</sup> दुश्वार<sup>९</sup> का ॥  
 जो जाँ<sup>१०</sup> अथे सो त्यों च वाँ<sup>११</sup> हैरत सों सारे दँग रहे ।  
 सूरत में हरं तन यों दिस्या जों नकश<sup>१२</sup> है दीवार का ॥  
 शहके राजब<sup>१३</sup> की त अगिन नहिं सरकशी पर आप लगा ।  
 शह शोर में दिल जा पड्या हर मायमे-अशरार<sup>१४</sup> का ॥  
 तहकीक<sup>१५</sup> सब जाने कि अब आखिर तुटे पर आसमाँ ।  
 हरगिज<sup>१६</sup> थमा सकसे<sup>१७</sup> न कोइ बल हथके दे आधार का ।  
 यों अल्-अमाँ<sup>१८</sup> की हाँक सब चौधेर<sup>१९</sup> ते गढ़ परते<sup>२०</sup> उठी ।  
 आजिज<sup>२१</sup> हो काडे मुख पकड़ सुट<sup>२२</sup> दे धंदा हथियार का ॥  
 जब शह चढ़े घोड़े उपर यों फ़तह गढ़ ऐसा किये ।  
 तब मुखमें शायी<sup>२३</sup> के हुआ नित दर्द इस गुफ्तार<sup>२४</sup> का ।  
 कहना है धन<sup>२५</sup> उस माहकूँ है जिसकूँ ऐसा शह खलफ़<sup>२६</sup> ।  
 सो ओ बड़े-साहेब<sup>२७</sup> है जम<sup>२८</sup> पाकर करम<sup>२९</sup> करतार का ॥  
 जिस घरकी न्यामत<sup>३०</sup> ते जमन पाली गई है सब जमी ।  
 ते आबे-दरिया<sup>३१</sup> मे असर है तिसकी...खारका ॥  
 जिस दिलकूँ करहुब्बुल-वतन<sup>३२</sup> गमती<sup>३३</sup> है निस-दिन रास्ते ।  
 होर घर करामत<sup>३४</sup> सों जखम है तिस-जबाँ में प्यारका ॥  
 तिस-मेह<sup>३५</sup> की नित छांवमें पाती है आसाइश<sup>३६</sup> जहाँ ।  
 तिसका करम तो जगकुँ जम<sup>३७</sup> आधार है निरधार<sup>३८</sup> का ॥  
 जिस कौल साबित<sup>३९</sup> कूँ पत्या सीमुर्ग<sup>४०</sup> आवे काफ़<sup>४१</sup> ते ।  
 रखवाल हो रहे सग-तमन<sup>४२</sup> शेरजा<sup>४३</sup> भी तिस दरबारका ॥

१. पहुँचा, २. उलट-पुलट, ३. शब्द, ४. पापियों, ५. मौजूद, ६. प्रलय,  
 ७. सामने आया, ८. कारण, ९. कठिन, १०. जहाँ, ११. वहाँ, १२. चित्र, १३. कोप,  
 १४. शरारत की जड़, १५. सचमुच, १६. कदापि, १७. सकेगा, १८. त्राहि-त्राहि, १९. चारों  
 ओर, २०. गढ़ पर से, २१. लाचार, २२. फेंक, २३. शाहजी, २४. बात, २५. धन्य,  
 २६. उत्तराधिकारी, २७. अली आदिल द्वितीय की माँ खदीजा सुल्तान, जो कि  
 गोलकुंडा के सुल्तान मुहम्मद कुतुब की लड़की और अब्दुल्ला कुतुब की बहिन तथा साहित्यप्रेमी  
 थी, २८. सदा, २९. दया, ३०. उत्तम भोग, ३१. समुद्र के जल, ३२. देशप्रेम, ३३. पसन्द,  
 ३४. ईश्वरी चमत्कार या दया, ३५. उसकी मुहब्बत, ३६. शोभा, ३७. सदा,  
 ३८. निस्सहाय, ३९. पक्के वादे, ४०. गरुड़, ४१. काकेशस पर्वत, ४२. कुत्ते-सदृश,  
 ४३. शेर-बच्चा ।

दुनिया कशाकश<sup>१</sup> कर अगर फाडे फलक<sup>२</sup> के दौर<sup>३</sup> कूँ।  
 सरिस्ता<sup>४</sup> फिर साँवे उसे तिस-अहद<sup>५</sup> के यक ताग्का ॥  
 सहवन्<sup>६</sup> भी तिमकी वातमें ना फेर<sup>७</sup> होय जाहिर<sup>८</sup> कधी।  
 गर याद गुजरे दिलमें टुक जिसके सचे इकरार<sup>९</sup> का ॥  
 है गर शुजाअत<sup>१०</sup> की फलक उनका खलफ<sup>११</sup> यो सूर<sup>१२</sup> है।  
 जिस-नेश-रोशनते<sup>१३</sup> छिप्या बल<sup>१४</sup> कुफ<sup>१५</sup> की रिदकार<sup>१६</sup> का ॥  
 जा शवके खुश-नक्काश<sup>१७</sup> ने दाने सफेदी के भर्या।  
 कासा<sup>१८</sup> सोनेके जलने जब खाली दिस्त्या जगार<sup>१९</sup> का ॥  
 होनेमें निस खुदा जल्वागर<sup>२०</sup> शह शह गश्त<sup>२१</sup> अति शोकतो।  
 करने हवस ल्या दिलमने<sup>२२</sup> किसवत<sup>२३</sup> किया जरतार<sup>२४</sup> का ॥  
 जिममें अजब शह सूर सा निकल्या झलकता नूरसो।  
 चदर-उपर काले कलैक नहि रह सक्या अंधकारका ॥  
 चँदना न था बल<sup>२५</sup> शरमते गल-नाल को पडता था चँदर।  
 ना देख सक सक शबशाआ<sup>२६</sup> उस मारकी झलकारका ॥  
 चौंवर<sup>२७</sup> हलाली<sup>२८</sup> मशअली<sup>२९</sup> यो भर रह्या मव ठारमें।  
 जो नूर भार<sup>३०</sup> आता है चल गुलनारो-खालाजार वा ॥  
 चारो खलन<sup>३१</sup> रग-रसभरे हर भात वाजे यो वजे।  
 काजी फलक<sup>३२</sup> का हाल घर पग्वा सुट्या<sup>३३</sup> दस्तार<sup>३४</sup> का ॥  
 हर हर बदम चलते अंगे<sup>३५</sup> चदर हो गह्वे पाँव तल।  
 मुँह पर विछाता था अपें उजला निगट<sup>३६</sup> शमकार का ॥  
 उस-शह तुरग कूँ देखने निबल्या सो गुलशन<sup>३७</sup> ते पवन।  
 हर दम किया तोहफा<sup>३८</sup> अ<sup>३९</sup> खुशबूइके महकारका ॥  
 "ऐ शहसवार<sup>४०</sup> इम वक्तपर पडने सहावा<sup>४१</sup> सो अथे।  
 करते थे निम हर डगपे तुज वारी<sup>४२</sup> गुहर ईसार<sup>४३</sup> का" ॥

१ खींचाखींची, २ आकाश, ३ चक्कर, ४ सिलसिला, सबष, ५ उसके शासन-  
 काल, ६ भूल से, ७ उलटापन, ८ प्रकट, ९ सच्ची कौल, १० वीरता, ११ उत्तराधिकारी,  
 १२ सूर्य, १३ जिसकी चमकदार तलवारसे, १४ शक्ति, सेवा, १५ अन्-इस्लाम,  
 १६ अधार्मिकता, १७ अच्छे चित्रकार, १८ बडा पियाला, कटोरा, १९ तृप्तिया,  
 २० प्रकाशमान, २१ गया, २२ दिलमें, २३ पोशाक, २४ जरी, २५ बन्कि,  
 २६ किरणें, २७ चारों ओर, २८ अर्ध चन्द्र-सी, हजारो, २९ मशालें, दीप-पण्डियाँ,  
 ३० बाहर, ३१ तरफ, ३२ आकाश, ३३ फँका (पजाबी), ३४ दर्शन, ३५ आगे,  
 ३६ बिल्कुल, ३७ फुलवाडी, ३८ भेंट, ३९ असवार, ४० ज्वालाएँ, ४१ वर्षा,  
 ४२ त्याग की मोती।

शह शह पास आये वही ले हदिया अमृतके खड़े।

अक्रबाल<sup>१</sup> पेश आया<sup>२</sup> अपे बंदा जो था सरकारका ॥

चंदना न था बल<sup>३</sup> चांद अपस किसवत<sup>४</sup> दिया था शहकूं।

ता मनकूं साफ़ी-बख्श<sup>५</sup> होय नज्जारा<sup>६</sup> तिस सिंगारका ॥

जों शमा<sup>७</sup> की फानूसते होती है खूबी<sup>८</sup> जल्वागर<sup>९</sup>।

यों शह कूं रोशन किया शहका दरस अनवार का<sup>१०</sup> ॥

अल्हक<sup>११</sup> कि हक<sup>१२</sup> में जगकी जो तौफ़ीक<sup>१३</sup> तुजते आइ है।

आलम<sup>१४</sup> बिसरते<sup>१५</sup> ना कधीं यो शुक्र तुज उपकारका ॥

तेरे क<sup>१६</sup> ताले<sup>१७</sup> की अब सौगंद होय आलममने<sup>१८</sup>।

हक्का<sup>१९</sup> कि तुज हरदम मदद है हैदरे-करार<sup>२०</sup> का ॥

तुज हुक्म मान्या सो ओही मकबूल<sup>२१</sup> ओ दारैन<sup>२२</sup> में।

मर्दूद-आलम<sup>२३</sup> है रख्या जिन तुजसों रख इन्कारका ॥

फ़हमो<sup>२४</sup> शुजाअत<sup>२५</sup> अक्लो-दिलशह तुज खुदा बख्शिश किया।

बख्तो<sup>२६</sup> जवानी का अवल दे बल अपसके प्यारका ॥

तेरी सिफ़त<sup>२७</sup> सब वाकई<sup>२८</sup> बोल्या हुं आपें जोड<sup>२९</sup> में।

कंचन की उत्तम वस्तकूं क्या काम टंक निखार का ॥

हीहर<sup>३०</sup> हुनरका बेबहा<sup>३१</sup> तुज-दौरमें क्रीमत धरया।

दौलत<sup>३२</sup> ते तुज तज्जार<sup>३३</sup> होय जिस लगह इस बैहार<sup>३४</sup> का ॥

मुफ़लिस<sup>३५</sup> अथा पन यो रतन पाते हुआ तज्जार में।

तूं शाह आरिफ़<sup>३६</sup> मुश्तरी<sup>३७</sup> है हर दुरे-शहवार<sup>३८</sup> का ॥

गर तुज-नज़रते यक रतन कुछ बेबहा पावे तो होय।

तारयाँ का खुर्दा<sup>३९</sup> ले गगन सर्राफ़<sup>४०</sup> मुँज बाज़ार का ॥

दह-पाँच त<sup>४१</sup> इस भांत में किये है तो शौकों क्या हुआ।

मालूम होता शेर अगर कहते सो स विस्तारका ॥

सेवट<sup>४२</sup> हुनरमंदी के फ़न<sup>४३</sup> कहते कसीदा<sup>४४</sup> होय अयाँ<sup>४५</sup>।

करना है ठारेठार अदा<sup>४६</sup> क्यों लाज़िमा<sup>४७</sup> अशआर<sup>४८</sup> का ॥

१. प्रताप, २. आगे आया, ३. बल्कि, ४. पोशाक, ५. सफाई देनेवाला, ६. दृश्य, ७. मोमबत्ती, दीप, ८. सुन्दरता, ९. प्रकाशमान, १०. प्रकाशों, ११. सचमुच, १२. पक्ष, १३. भलाई, १४. दुनिया, १५. बिसरेंगी, १६. शक्तिशाली, १७. भाग्य, १८. दुनिया में, १९. सचमुच, २०. आक्रमक अली, २१. स्वीकृत २२. उभयलोक, २३. दुनिया का अभागा, २४. समझ, २५. वीरता, २६. भाग्य, २७. गुण, २८. ध्यार्थ, २९. जोड़जाड़, ३०. मोती, ३१. अनमोल, ३२. धन, राज्य, ३३. व्यापारी, ३४. अ-पराजय, ३५. निर्धन, ३६. ज्ञानी, ३७. खरीदार, ३८. राजमोती, ३९. खुदरा पैसा, ४०. सर्राफी करनेवाला, ४१. शेर, छंद, ४२. अंतिम (गुं छेवट), ४३. कला, ४४. प्रशंसात्मक पद्य, ४५. प्रकट, ४६. प्रकट करना ४७. औचित्य, ४८. शेरों।



उम्तादे-आलम<sup>१</sup> का जो में शागिर्द था कर<sup>२</sup> कमतरी<sup>३</sup> ।  
 बोल्या हूँ यो ज्यो त्यो बरी मेरे सकत-मिकदार<sup>४</sup> का ॥  
 कै मूशिगाफी<sup>५</sup> का हुनर मूँज हतमें है पन वस नहीं ।  
 तुरी<sup>६</sup> न भाता चीर अधिक जैसे भी नाजुक<sup>७</sup> तारका ॥  
 यह हर्फ कहते गह तुझे होते हैं लख मानी<sup>८</sup> समझ ।  
 ऐ शाह आरिफ<sup>९</sup> इस उपर वाकिफ<sup>१०</sup> हो सब इसरार<sup>११</sup> का ।  
 ऐ नसनी मशगूल<sup>१२</sup> हो शहकी दुआके विद<sup>१३</sup> में ।  
 काफी है दो जगमें तुजे तिल फँज<sup>१४</sup> तिस आसार<sup>१५</sup> का ॥  
 है आसमां या ख<sup>१६</sup> तलक धरती के सरपर सायवां<sup>१७</sup> ।  
 कायम तलक यो छत्र अछो<sup>१८</sup> शह जग के पालनहार का ॥

#### (४) औरगजेब से युद्ध\*—

औरगजेब की सेना से अली आदिल को लोहा लेना पडा था, जिसका वर्णन नस्रती निम्न प्रकार से करता है—

उसी रात अरस्तूय-दोरी<sup>१</sup> के घाँ । दखिनके सब ऐयान<sup>२</sup> थे मेहमाँ ॥  
 सँवारे थे कइ अजुमन<sup>३</sup> दिलनशी ॥  
 हरेक नामवर<sup>४</sup> ते दिलेरी<sup>५</sup> की सफ<sup>६</sup> । अया यक गमतमे हो बैठ यक तरफ ॥  
 न थी बिन-खडग कुछ गमतकुँ रवाज । न बाजी<sup>७</sup> की मजकूर<sup>८</sup> जाँवाजी-वाज<sup>९</sup> ॥  
 कही लेके शहनामा<sup>१०</sup> शहनामा-रुवाँ<sup>११</sup> । दिलेरी<sup>१२</sup> में रुस्तम की खोत्रे जवाँ ॥  
 कतेक ले सफीना<sup>१३</sup> निजामी<sup>१४</sup> का हाय । सिकदरकी मर्दी<sup>१५</sup> के बोलें नुवात<sup>१६</sup> ॥  
 दिलेरी हरेक भात रज्मीय<sup>१७</sup> सुन । शुजाअतते होते चलेँ अति वो गुन ॥  
 फुगें<sup>१८</sup> यो तहव्वर<sup>१९</sup> सो मर्दके रग । खोलें हो जिरह<sup>२०</sup> क्या कडियाँ तनपे तग ॥  
 जेतें शेर शम्शेर<sup>२१</sup> म्यांना ते काड । देखें तौल हाथा सो धाराँ के बाड<sup>२२</sup> ॥  
 दिया शीक<sup>२३</sup> या सबकुँ जल्दी तमाम । कि गो आ पडेगा मुगल-माथ काम ॥  
 तलक<sup>२४</sup> या कहे आके जासूस<sup>२५</sup> भेद । जो धरता है यो दुशमने बद-उमेद<sup>२६</sup> ॥  
 बदअदेश<sup>२७</sup> के दिलका जब भेद पाय । सबे शेरमर्दा<sup>२८</sup> ने गुस्से मे आय ॥

१ जगद्गुरु, २ इति, ३ अघम, ४ शक्ति के अनुसार, ५ कई बाल की खाल खींचने, ६ फलंगी, ७ कोमल, ८ अर्थ, ९ ज्ञानी, १० जानकार, ११ भेदो, १२ सलग्न, लगा, १३ जप, १४ कृपा, १५ प्रभाव, १६ हे भगवान्, १७ छाया करनेवाला, १८ रहो ।

[\*उ० श०, पृ० २३९।

[१९ युग का अरस्तू, २० सामन्त २१ सभी, २२ नामी २३ चीरो २४ पानी, २५ खेल, २६ वर्ण २७ प्राण के खेल के बिना २८ पुस्तक २९ शाहनामा पढ़नेवाला, ३० बीरता, ३१ पुस्तक, ३२ गजा(म)का फारसी कवि, (११३९-१२०० ई०), ३३ बीरता, ३४ बातें, रहस्य, ३५ युद्ध-सबधी, ३६ फूलें, ३७ आश्चर्य, ३८ कवच, ३९ तलवार, ४० तेजी, ४१ उत्साह, ४२ जबतक, ४३ गुप्तचर, ४४ दुष्ट शत्रु ४५ बुरा सोची, ४६. नरसिंह।

“करें तेगसों पेशहस्ती<sup>१</sup> हमे<sup>२</sup> । उतारें उनन सिरते मस्ती हमें ॥  
दिलेरौ उठे बोलते ‘दीन-दीन’<sup>३</sup> । कहै म्हालदारा<sup>४</sup> कि है जीन-जीन’ ॥  
घड़ी भरमें हो मुस्तअद<sup>५</sup> बेदरंग<sup>६</sup> । सलह<sup>७</sup> बाँध सब रावताँ<sup>८</sup> होर तुरंग ॥  
कवी बस्तराँ<sup>९</sup> कोइ सो जोशन<sup>१०</sup> बँधे । केते चार आईना<sup>११</sup> रोशन बँधे ॥  
जिरा वा कुला<sup>१२</sup> ने केतक चहल<sup>१३</sup> कद । कवायाँ<sup>१४</sup> व कवच्याँ<sup>१५</sup> तो थ्याँ बेअदद<sup>१६</sup> ॥  
हुई फौज यों मुस्तअद जिस घड़ी । दमाम्याँ<sup>१७</sup> पे चौधरते<sup>१८</sup> लकड़ी पड़ी ॥  
गगनपर सितारे हुये हाल<sup>१९</sup> में । हदरता<sup>२०</sup> है सीमाब<sup>२१</sup> जों थालमें ॥  
जेती भेर वो बरसाम<sup>२२</sup> जो बजनें लगे । सवालाख पर्वत गरजने लगे ॥  
सवाराँ चले मस्त हो तावमे । रखे तेज ताजी<sup>२३</sup> नज़र बाद<sup>२४</sup> में ॥  
दिसे फौज दरियानमन<sup>२५</sup> हर तरफ़ । लगे रस्ते<sup>२६</sup> छत्रयाँ के मौजाँ<sup>२७</sup> पे कफ़ ॥  
जो पीसी गई भारतल सब ज़मीं । वो गर्द आ गगनके तबक<sup>२८</sup> मे जमी ॥

(क) दिल्ली की सेना\*—

कता<sup>१</sup> हूँ एता<sup>२</sup> फौज देहलीकी बात । चली थी दखिन दलते किस धात<sup>३</sup> साथ ॥  
कि जिस फौजकूँ देखनेमें समझ । दिसे ना किसे<sup>४</sup> इत्तहा<sup>५</sup> होर उपज<sup>६</sup> ॥  
हथ्याँ का अराबा<sup>७</sup> चले मेल-मेल । न्हना जिसमे सरदार असहाब-फ़ील<sup>८</sup> ॥  
सरासर<sup>९</sup> अगर भार सारा दिसे । तो यक फौजदार<sup>१०</sup> उसमे दारा<sup>११</sup> दिसे ॥  
सुबुकमन्सवी<sup>१२</sup> होर भारी केते । अथे कै सदी<sup>१३</sup> होर हजारी<sup>१४</sup> केते ॥  
यकेक मुल्कके नामआवर जबाँ । दो अस्या<sup>१५</sup> सेहास्या<sup>१६</sup> सिपह<sup>१७</sup> बेगुमाँ<sup>१८</sup> ॥  
मोगोलाँ केते मुल्को कइ शहके । केते हिन्दु कइ मावरन-नह<sup>१९</sup> के ॥  
जगत्तइ<sup>२०</sup> फ़िज़लबाश<sup>२१</sup> उज्वक<sup>२२</sup> बली । फ़ंधारी केते बल्खी व काबुली ॥  
मुरव्वत के मुफ़िलस<sup>२३</sup> मुहब्बतके शूम<sup>२४</sup> । फ़रासत<sup>२५</sup> कुँ तूती नहूसत<sup>२६</sup> में बूम<sup>२७</sup> ॥  
फ़रेव<sup>२८</sup> उनके फन<sup>२९</sup> में बड़ा बुर्द<sup>३०</sup> है । जनम जिनका इब्लीस<sup>३१</sup> शागिर्द<sup>३२</sup> है ॥

१. हाथ मिलाना, २. हम, ३. धर्म-धर्म, ४. महलदार, ५. चारजामा ६. तैयार,  
७. निर्भय ८. हथियार ९. सर्दार, १०. मजबूत, ११. कवच, १२. वर्म, १३. कुलाह,  
टोप, १४. चालीस, १५. जामा, १६. बकबकी, १७. असंख्य, १८. नगाड़े, १९. चारों  
तरफ से, २०. तन्मयता, २१. नाचता, २२. पारा, २३. बाजे, २४. अरबी घोड़ा,  
२५. हवा, २६. समुद्र-सदृश, २७. मार्ग, २८. लहरों, २९. थाल।

\* उ० श० पृ० २४०।

३०. कहता है, ३१. इतनी, ३२. भाँति, ३३. किसीको, ३४. अंत, ३५. आदि,  
३६. पाँती, ३७. हाथीवाले, ३८. बिलकुल, ३९. सेनानायक, ४०. दारा बादशाह, ४१. छोटे दर्जे-  
वाले, ४२. सौ के नायक, ४३. हजार के नायक, ४४. दो घोड़ेवाले, ४५. तीन घोड़ेवाले, ४६. सेना,  
४७. अनंत, ४८. गंगा-जमुनाका अंतर्वेद, ४९. जगताई (मुगल), ५०. नगम कबीला, ५१. लाल  
बाल (ईरानी), तुर्क, ५२. बेमुरीवत, ५३. बेमुहब्बत, ५४. विशालता, ५५. अशुभता,  
५६. उल्लू, ५७. घोखा, ५८. कला, शिल्प, ५९. लाभ, ६०. शैतान, ६१. शिष्य।

न छे' जिनमें असला<sup>१</sup> मुरख्वत की बोय<sup>१</sup> । करें उससो बढ जिसते नेक उनपे होय ॥  
 वदी वापमो अपनी मीरास<sup>१</sup> जान । विरादरका खून शीरे-मादर<sup>१</sup> पिछान ॥  
 देखें कुछ है जहाँ फायदा आपकू<sup>१</sup> । न छोडे सगे भाइ होर वापकू<sup>१</sup> ॥  
 अथे मीरजा<sup>१</sup> मीर कश्मीरके । गरायव<sup>१</sup> सिपाही भी चौघरके ॥  
 खुरासानियाँ अस्फहानी<sup>१</sup> वेते । दमावदी वो दामगानी वेते ॥  
 कर्मादार कोइ गुजवाजी<sup>१</sup> में चुस्त<sup>१</sup> । तिरदाज<sup>१</sup> कोइ नेजावाजी<sup>१</sup> दुस्त<sup>१</sup> ॥  
 मुखे होके झगडेकुं फिरते दिलेर<sup>१</sup> । लोहे चांभते दिल न होय उनके सीर<sup>१</sup> ॥  
 खलाल<sup>१</sup> उनके ताँदाँ वा भाला दिसे । गिरा<sup>१</sup> गुर्ज<sup>१</sup> मुखवा नेवाला दिसे ॥  
 केतेक जातके धे रहेले ओवट । जवदस्त पजाविर्जा<sup>१</sup> दिलके घट<sup>१</sup> ॥  
 दिलेरीके विन कुछ न उनमें ओवार<sup>१</sup> । जनम रहके शहगमें ऐमे गँवार ॥  
 मुगल हर हुनरमें बडा कारसाज<sup>१</sup> । लडाईके फन<sup>१</sup> परतो अतिहीलावाज<sup>१</sup> ॥  
 सब इस घात<sup>१</sup> फीजा<sup>१</sup> खुगारास्ता<sup>१</sup> । चल्या<sup>१</sup> घ्याँ अरसा<sup>१</sup> हो नीस्वास्ता<sup>१</sup> ॥  
 हरेक मर्दका शौक ताजा हुआ । लटापट व-दिल<sup>१</sup> जीक<sup>१</sup> ताजा हुआ ॥  
 अजब फौज रगी दिल-फरोज<sup>१</sup> थी । बले<sup>१</sup> सक्त खूरेज<sup>१</sup> जाँ-मोज<sup>१</sup> थी ॥

### (ख) युद्ध-वर्णन\*—

गनीमा<sup>१</sup> के भेज्याँ<sup>१</sup> कुंखाने शिताब<sup>१</sup> । खुश<sup>१</sup> आने लग्या मूमें गुर्गा<sup>१</sup> के आव<sup>१</sup> ॥  
 कमानी रख्याँ दिल कुशाकुश मने<sup>१</sup> । उबलने लगे तीर तकशमने ॥  
 फुक्याँ तेज या सक्त भाल्याँ में रग । कि फुकता<sup>१</sup> है जो वाव लेकर नुजग ॥  
 भडकते तुरगाँ हो आगाँ दिसे । सवारों मुखे रनके बाघाँ दिसे ॥  
 निकलते हैं जो बाघ नवचीर<sup>१</sup> कूँ । निकल यो म्हराटे दोनो घेर<sup>१</sup> सूँ ॥  
 रकन मुँइपे पड-पड के पामाल<sup>१</sup> हा । लडतका हगामा रख्या लाल हो ॥  
 हजाराँ तुरगाराँ कालख तल<sup>१</sup> बजा । जमी के घमकते फलक<sup>१</sup> हिल बजा ॥  
 जवाँ<sup>१</sup> लहुकी प्यासी खडगकी अपार । निकल आई जो म्या<sup>१</sup> के लवते<sup>१</sup> बहार<sup>१</sup> ॥  
 हरेक मुखते आवाज सुन 'मार-मार' । किया जिव<sup>१</sup> ने दुस्मनके होठोंमें ठार ॥

१ है, २ बिलकुल, ३ मुरख्वतकी गध, ४ दाघभाग, ५ माँ का दूध, ६ मिर्जा, ७ चित्र विचित्र, ८ गदा चलाने, ९ चालाक, १० तीर चलानेवाला, ११ भालावाज, १२ ठीक, १३ वीर, १४ तृप्त, १५ दत-खोदनी, १६ पडा, १७ गदा, १८ छोटे, १९ उवार, २० कार्यकर, २१ कला, २२ चालाक, २३ भाँति, २४ सुसज्जित, २५ दुल्हन, २६ नई माँग, २७ दिल से, २८ उत्साह, २९ उत्साहवर्धक, ३० लेकिन, ३१ सूनी, ३२ प्राणदायक।

\* उ० श० पृ० २४२।

३३ शत्रुओ, ३४ प्रेषितों, ३५ जल्दी, ३६ प्रसन्न, ३७ भेडिया, ३८ पानी, ३९ काटाकाटी में, ४० फुँफकारता, ४१ शिकार, ४२ दोनो ओर, ४३ सर्वाद, ४४ घरती, ४५ आकाश, ४६ जीभ, ४७ मियान, ४८ ओठ से, ४९ बाहर, ५० जीव, प्राण।

शरंगेज<sup>१</sup> वाना<sup>२</sup> ते शर-शोर उठ्या । कड़ाकड़ जबूरयाँ ते पुरजोर<sup>३</sup> उठ्या ॥  
जो यक दम छुटी पोप हर फ़र्द<sup>४</sup> फ़र्द । उचाया<sup>५</sup> धुआँ बाद<sup>६</sup> हो यक की गर्द ॥  
दिसे निसमें तरवार झलके जेती । पकड़ गर्द में उड़ रही है बती ॥  
कहे देख हैरान<sup>७</sup> हो अहले-अर्श<sup>८</sup> । मुअल्लक<sup>९</sup> हवापर बैध्या कौन फ़र्श<sup>१०</sup> ॥  
मुगल का जो हादी<sup>११</sup> सेव्ता पेस्तदस्त<sup>१२</sup> । अगले के था फीज हाथ्या के मस्त ॥  
अवल उसपे शेरजे<sup>१३</sup> का पंजा पड्या । सलहपोश<sup>१४</sup> दिलपर कड़ाकड़ घड्या ॥  
दिलेरा करें नारा<sup>१५</sup> यों होके आग । नेस्तान<sup>१६</sup> में जों गरजते हैं बाघ ॥  
झलकने<sup>१७</sup> लगे गुर्ग भाल्याँ में यों । लगी है नेस्तान कूँ आग जों ॥  
भुसाँध्याँ ते लहु यों भूसाँधे पिले । चलें जोशसों आहनी<sup>१८</sup> जों नले<sup>१९</sup> ॥  
कमाना<sup>२०</sup> की रत<sup>२१</sup> जब कशाकश हुई । हवा भरके तीराँ यो तर्कश<sup>२२</sup> हुई ॥  
छुटी सफते<sup>२३</sup> यों तीर यक मुठ दिलेर । उड़े घेत ते जों हजाराँ तिलेर<sup>२४</sup> ॥  
हुआ लाल गीती<sup>२५</sup> पकड़ तीर ओज<sup>२६</sup> । कहे तूकि टोलाँ की निकली है फौज ॥  
लग्या तीर हर तनपे जब बाले-बाल । दिस्या लहु उछलते फवारे<sup>२७</sup> का जाल ॥  
दिस्या ज़र्रपोशाँ<sup>२८</sup> का तीराँ सों हाल । फुगाया<sup>२९</sup> है गुस्से सों जों रीछ बाल ॥  
चुबे पाखराँ<sup>३०</sup> पर जो तीराँ अपार । हुआ हर तुरँग ऐन<sup>३१</sup> अफ्रीत-सार<sup>३२</sup> ॥  
हथ्याँ का हुआ हल्का<sup>३३</sup> यों सरबसर<sup>३४</sup> । मकोड्याँ<sup>३५</sup> के जों फील<sup>३६</sup> कूँ आये पर ॥  
दमे-तेग<sup>३७</sup> ते यों उठे शोला<sup>३८</sup> जाग । लगे जाके सूरजके कपड्याँ कूँ आग ॥  
करे क्रीमा<sup>३९</sup> तनकूँ तिरे बेकमाँ<sup>४०</sup> । किये कोफ़ता<sup>४१</sup> सिरकूँ गुर्जे गिराँ<sup>४२</sup> ॥  
कियाँ जब कटार्याँ ने सीन्याँ कु रेश<sup>४३</sup> । दिलाँ फांच छोड़े जो खंजरकूँ पेश ॥  
म्हरा होय सब लहुके शर्वत<sup>४४</sup> में मिल । मुरब्बा<sup>४५</sup> रह्या होके सीन्याँ में दिल ॥  
हरेक तीर एक मार जोहहाक था । करे मग्जख्वारी<sup>४६</sup> तो दिल चाक<sup>४७</sup> था ॥  
शपाशप जो बरछ्यों मुठ्याँ ते खुल्याँ । दियाँ कइ सवारा कूँ उलट्याँ सूल्याँ ॥  
पड़ा बार हो जिस गले आ कमंद । निकल भार<sup>४८</sup> दीदे<sup>४९</sup> पड़े होके मंद ॥  
न कोइ किस मदद कर सके तिस घड़ी । हरेक सिरपे आ फेंच अपसैं पड़ी ॥  
किये मुगल सों कूँ दखिनियाँ ने पाँच । यो पाँचों के गालिब<sup>५०</sup> हजारों पे आँच ॥  
मिल्याँ बारकूँ यक-ब-यक आके जो । यकेला च आकर भिड्या होके दो ॥

१. चिंगारी फेंकनेवाला, २. बाण, ३. जबर्दस्त, ४. अलग-अलग, ५. उठाया, ६. हवा, ७. चकित, ८. स्वर्गवाले, ९. लटके, १०. जाजम, ११. हिदायत देनेवाला, १२ आगे, १३. शेरबच्चे, १४. कवचधारी, १५. घोष, १६. बाँस के जंगल, १७. चमकने, १८. लोहे, १९. नल, २०. घनुष, २१. समय, २२. तूणीर, २३. पंक्ति से, २४. तीतर, २५. दुनिया, २६. उन्नति, २७. फवारे, २८. कवचधारी, २९. फुलाया, ३०. ढालों, ३१. बिलकुल, ३२. भूत-सरीखा, ३३. घेरा, ३४. निरंतर, ३५. कीड़ों, ३६. हाथी, ३७. तलवार की धार, ३८. ज्वाला, ३९. मांसपिष्ट, ४०. बेघनुष, ४१. मांस का, ४२. गदावाले, ४३. विदीर्ण, ४४. रस, ४५. अचार, ४६. बर्बादी, ४७. फटा, ४८. बाहर, ४९. आँख, ५०. विजयी ।

दमे-नैग कायम<sup>१</sup> कयामत<sup>२</sup> करे । अजल<sup>३</sup> नाजिल<sup>४</sup> यकबारा आफत<sup>५</sup> करे ॥  
 अजल का जो जिस मर्द पर जोक<sup>६</sup> होय । जरा<sup>७</sup> की कडी मू-ब-मू<sup>८</sup> तौख<sup>९</sup> होय ॥  
 मुगल आयकर घरकूं मेहमान जान । गये कर यो ताजीम<sup>१०</sup> खातिर निशान<sup>११</sup> ॥  
 जमी सद्र<sup>१२</sup> गी बना खेदरग<sup>१३</sup> । करे मक-ब-यक तनकु यो रग-ब-रग ॥  
 किते म-अजल<sup>१४</sup> का च पी होके मस्त । हुये दग सर धो नटे<sup>१५</sup> वैठ मस्त ॥  
 केतक गाके पीने लगे गमके अबक<sup>१६</sup> । अपस सिरके<sup>१७</sup> कास्यां में भेज्यां<sup>१८</sup> के कदक<sup>१९</sup> ॥  
 सुरज सन्त<sup>२०</sup> तूफान का एक उवाल । मग्था चढते चदर की कश्ती<sup>२१</sup> निकाल ॥  
 हिलावे जो पुरजोर<sup>२२</sup> आने लगे । तही तोल में डुलमुलाने लगे ॥  
 हुआ मव यो अरवाह<sup>२३</sup> सों भर रहे । पवन पर अधिक मारते पर रहे ॥

### §२४. मीरांजी खुदानुमा (मृ० १६५९ ई०)

सैयद मीरांजी हुसैनी पहिले गोलकुडा के सुल्तान अन्दुल्ला कुतुवशाह (१६२४-७२ ई०) के दरबार में नौकर थे। एक वार किसी वाम से बीजापुर गये, जहाँ उन्हें शाह अमीनुद्दीन आला की सगत में आने का मौका मिला। वह शाहजी के शिष्य हो गये और भागनगर (हैदराबाद) लौटकर सूफियो-जैसा जीवन व्यतीत करते १६५९ ई० (१०७० हि०) में मरे। यही मुहल्ला कारवां में इनकी समाधि आज भी पूजी जाती है। इन्होंने दक्खिनी हिन्दी में गद्य-पद्य की कई पुस्तकें लिखी हैं। 'चक्कीनामा उफान' (ज्ञानचक्की) की छोटी-सी पुस्तिका में उन्होंने चक्की के गीत लिखे हैं, जिनके नमूने\* —

विम्बिल्लाह<sup>१</sup> जाती<sup>२</sup> नाँव । कुरान ऊपर लिया ठाँव । कुल्ले<sup>३</sup> दायन<sup>४</sup> उसकी छाँव ॥  
 लाइलाहा<sup>५</sup> कहना इल्लल्लाह<sup>६</sup> में रहना । नबीरसूलसे मनलाना अल्ला अल्ला कहना ।  
 अब्वल अल्ला नाँव सिफत<sup>७</sup> जिसका ठाँव । याद है मेरे जी में हरदम तेरा नाँव ॥  
 ला इलाहा कहना० ॥

मीर अन्त में —

उफा का चक्कीनामा । वोले सैयद खुदावन्द<sup>१</sup> । पीर ले<sup>२</sup> मुरीद<sup>३</sup> यो समझाना ॥  
 अल्ला अल्ला कहना इल्लल्लाहमें रहना । नबीरसूलसे मन लाना अल्ला अल्ला कहना ॥

सैयद मीरांजी खुदावन्द खुदानुमा, अर्थात् ब्रह्म और ब्रह्मस्वरूप थे, इसलिए अद्वैतवाद (सूफी-मत, वेदान्त) के विचार रखनेवाले थे। ऐसा विचार इस्लाम में कुफ्र (नास्तिकता) कहे

१ स्थापित, २ प्रलय, ३ मृत्यु, ४ उत्तरकर, ५ सफ्ट, ६ शौक, ७ कवच, ८ रोम-रोम, ९ तख्ती, १० सम्मान, ११ हृदय-चिह्न, १२ मुख्य, १३ बदरग, १४ मृत्यु-भविष्य, १५ भाग्य, १६ आँसू, १७ कटोरे, १८ भेजा, १९ कश्कोल, २० अडे, २१ नाव, २२ जबर्बस्त, २३ आत्मा ।

\* त० उ० म०, पृ० ६४-६५ ।

२४ भगवान् के नाम से, २५ व्यक्तिगत, २६ सरि, २७ चीजें, २८ नहीं भगवन्, २९ तियाय अल्लाह के, ३० ज्ञान, ३१ भगवत्स्वरूप, ३२ गुह-द्वार, ३३ शिष्य ।

जाते हैं, इसलिए वह अपने विचारों को अधिकारि-भेद से ही प्रचार कर सकते थे। 'वजूदिया' (सत्तावाला) उनका ऐसा ही लघु-ग्रंथ (रिसाला) है, जिसमें वह लिखते हैं\*—

“विस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम<sup>१</sup>। ई रिसलिये वजूदिया<sup>२</sup>-अल्लाह मुहम्मद के राज-रमज<sup>३</sup> की बातों किसी ना-महरम<sup>४</sup> के अंगे ना बोलना। बोलंगे सो काफ़िर होय<sup>५</sup> व सुनेंगे सो दीवाने होयंगे। उनकू दीवाने भी न करना अपे काफ़िर भी न होना। जबान सों जिक्र करना अल्ला-अल्ला। जो जबान से कहते हैं, तो दम आवते-जाते अल्ला अल्ला कहना। सारा दिन सारी रात क्या काम करते हैं, सो अल्ला की याद सों करना। यो संभाल कर बरते तो जिक्र<sup>६</sup> अलल्ला<sup>६</sup> की यादसों किया। तिसका फ़ायदा क्या? और अल्लाकी याद सों न किया जाया<sup>७</sup> गया। जों शरा<sup>८</sup> पीच में किया सो हराम<sup>९</sup> है और दुरुस्त<sup>१०</sup> रखे सो हलाल<sup>११</sup> है। . . . अल्ला हमारे नज्दीक है तनके फ़ेल<sup>१२</sup> करते हैं, सो देखता है। बोलते हैं सो सुनता है। बुरा खतरात<sup>१३</sup> लाव ना, बुरी बात न बोलना, बुरे फेल न करना। . . . .”

### § २५. तबई (१६७० ई०)

तबई गोलकुंडा में उस समय अपनी प्रतिभा के जौहर दिखला रहा था, जब कि उत्तर में मतिराम और बिहारी सहृदयों को चकित कर रहे थे। इसका संरक्षक अबुलहसन कुतुबशाह— जो तानाशाह के नाम से अधिक प्रसिद्ध है—गोलकुंडा का अन्तिम बादशाह (१६७२-८७ ई०) था। २१ सितम्बर १६८७ ई० को आठ महीनेकी सख्त लड़ाई के बाद विजय कर औरंगजेब के पुत्र शाहजादा आजम ने तानाशाह को बंदी बनाया। १४ साल दौलताबाद (देवगिरि) में नजरबन्द रह १७०० ई० में वही उसका देहान्त हुआ। तबई इसी अन्तिम कुतुबशाह का दरबारी था। शाह राजूहसेनी, जो सुल्तान के गुरु थे, तबई के भी भक्तिभाजन थे। एक तरह कह सकते हैं, तबई दक्खिनी-हिन्दी का अन्तिम महाकवि था। आगे होनेवाले वली (औरंगाबादी) को दक्खिनी ही नहीं, उर्दूवाले भी अपना कवि मानते हैं।

तबई की केवल एक पुस्तक 'बहरामो-गुलन्दाम' उपलब्ध है, जिसके १३४० शेरों में कोई भरती का नही मालूम होता। इस पुस्तक को तबई ने ४० दिनों में लिखा था†—

किया हूं मैं चालीस दिसवमें किताब । बहुत फिक्र<sup>१४</sup> कर रात-दिन बेहिसाब ॥  
यों नामा पढ़ेंगे तो बहरे खुदा<sup>१५</sup> । पढ़ो फ़ातिहा<sup>१६</sup> नाम लेकर मेरा ॥  
गिना बैत-बैतां कु मैं एक जो दिल । हजार और हैं तीन सौ पर चहल ॥  
अथा साल तारीख का खूब नेक । सनयक हजार और हस्ताद एक (१०८१) ॥  
यो नामे कु तबई किया है तमाम । बहक्क्रे मुहम्मद<sup>१७</sup> अलेहिस्सलाम<sup>१८</sup> ॥

\* त० उ० म०, पृष्ठ २५०-५१।

१. कृपालु दयालु अल्लाह, नाम से, २. यह वजूदिया नामक पुस्तक है, ३. रहस्य, भेद, ४. अ-पात्र, ५. स्मरण, ६. अल्लाह के प्रकाश, ७. बर्बाद, ८. धर्मशास्त्र, ९. धर्म-प्रतिषिद्ध, १०. ठीक, ११. धर्मानुमोदित, १२. कर्म, १३. संकट।

† उर्दू-शशपारे, पृ० १११। १४. चिन्ता, १५. खुदा के लिए, १६. कुरान-सूक्त, १७. मुहम्मद के लिए, १८. उसके ऊपर नमस्कार।

बहराम की बया को लेकर अमीन और दौलत ने भी दक्षिणी में मस्तबियाँ लियी हैं। किन्तु तबई की मन्मवी उनसे बही अच्छी है। तबई ने फारसी किस्से की अन्वुाधुन्ध नवल नहीं की है, न केवल बया सुनाने का खयाल किया है। वस्तुतः उनमें उसे एक सुगठित वाच्य का रूप दिया है।

तबई के काव्य के नमूने देंगे—

### (१) मगलाचरण—

इलाही<sup>१</sup> यो तबई तेरा दाम है । दे ईमान<sup>२</sup> इसका तेरा आस है ॥  
इलाही वचन वा मुंजे ताव दे । मेरी जीभकी तेगकूं आव दे ॥

### (२) गुरु (शाहराजू)—बन्दना\*—

बगी तू बडा है कि बर शाह राजू । चल आया है गृह तेरे घर शाहराजू ॥  
फलक<sup>३</sup> पर तू उडता है शहवाज नमने<sup>४</sup> । बरामत<sup>५</sup> की लाशाह-उपर शाहराजू ॥  
खबर तेरी मालूम नै खबरकूं । खबरदार जाने खबर शाहराजू ॥  
तुं मजदूम<sup>६</sup> मयद मुहम्मदके धनवा । बहुत बेबदल है गीहर<sup>७</sup> शाहराजू ॥  
बरामत हुआ सबकूं मालूम या जाहिर<sup>८</sup> । तु वातिन<sup>९</sup> में बर यकनजर<sup>१०</sup> शाहराजू ॥  
दखिन वा किया बादशाह बुल्हसनकूं । तेरा तख्त देबर छतर शाहराजू ॥  
खडा होके सिदमतने<sup>११</sup> तेरी सूरज । उडाता बखन की चेंबर शाहराजू ॥  
किमी का नहीं ऐव चिन्ता<sup>१२</sup> तुं हगिज । बडा तुयमें हंयो हुनर शाहराजू ॥  
बदम तेरे पकड्या हूं उम्मेद लेबर । मेरे वस्त<sup>१३</sup> तेरी नजर शाहराजू ॥  
मुदा पाम उचा<sup>१४</sup> हाय बरता है तबई । दुआ तुजबू शामो-सेहर<sup>१५</sup> शाहराजू ॥

### (३) वजही स्वप्न मों—

लग्या में जो यो मन्मवी बोलने । यो मातिया निछल घाल<sup>१६</sup> यो रोलने ॥  
यो वजही मेरे ख्वाब में आयबर । कुछ अपना सुरजनार<sup>१७</sup> दिग्लायबर ॥  
सरारसर<sup>१८</sup> सुन्या जो मेरी मस्तवी । कया<sup>१९</sup> "वात तबई तेरी है नवी ॥"  
हो खुशहाल<sup>२०</sup> मुनकर यो वातां मेरी । अपसके ले हायामें हायां मेरी ॥  
बडे प्यारसा अपना यो दे मिसल<sup>२१</sup> । सुन्या सो पड्या म्बाव<sup>२२</sup> में में उडल ॥

१ भगवान्, २ धर्म-विश्वास ।

\* उ० श० पृ० ११५ ।

३ आकाश, ४ वाज-जैसे, ५ चमत्कार, ६ स्वामी, ७ अनमोल, ८ मोती, ९ बाहरी,  
१० भीतरी, ११ एक वृष्टि, १२ सेवा में, १३ वीथ निकालना, १४ बारी, १५ उठा,  
१६ प्रात-साय ।

† उ० श०, पृ० १११ ।

१७ निर्मल जाति, १८ सूर्य-सदृश, १९ जैसे ही, २० कहा, २१ प्रसन्न, २२ राय,  
२३ स्वप्न ।

(४) काव्य-निर्माण का उद्देश्य\*—

कता<sup>१</sup> हूँ सुनो कान धर लोग हो । कहावत मने<sup>२</sup> बात हो आप यो ॥  
अगर शेर<sup>३</sup> कोइ खूब कहकर जो लाय । तो खूबाँकूँ<sup>४</sup> सुन रस्क<sup>५</sup> अल्बत्ता<sup>६</sup> आय ॥  
यक सकूँ<sup>७</sup> सो यक<sup>८</sup> देख-सकते नही । यकसकूँ<sup>९</sup> यो यक मान रखते नही ॥  
अगर खूब जो बोले जो तो वो अहै । अगर जो बुरा बोले तो यों अहै ॥  
तबई तूँ ओ काम कर अखितयार<sup>१०</sup> । कि रहे ता कयामत<sup>११</sup> तेरा यादगार<sup>१०</sup> ॥

(५) तानाशाह की प्रशस्तिं—

शह अबुलहसन सच तूँ शाहे दिखिन । तुजे शाहराजू मदद बुल्हसन ॥  
दिया है खुदा पादशाही तुझे । सोहाता है जल्ले-इलाही तुझे ॥  
शहंशाह तूँ आज दिन सूर<sup>१२</sup> है । तेरे परते शाहा बला-दूर है ॥  
मलाहत<sup>१३</sup> मे ज्यों सूर चंदर है तूँ । सलाबत<sup>१३</sup> मने ज्यों सिकन्दर है तूँ ॥  
तेरा नामका कुल्ब<sup>१४</sup> तारा दिसे । तेरा पर्दा मादी<sup>१५</sup> फरारा दिसे ॥  
दिलोजानते अपने ऐ बादशाह । यो आलम<sup>१६</sup> कते<sup>१७</sup> तुजकूँ आलमपनाह ॥  
रतन है सखाबत<sup>१८</sup> की तू खानका । भिखारी है हातम तेरे कानका ॥  
अदालत<sup>१९</sup> में फ़ाजिल<sup>२०</sup> है तूँ शहजवाँ । बराबर नही तेरे नौशेरवाँ ॥  
तु मर्दी<sup>२१</sup> के मैदान का बाघ है । तेरे घरमें दिन रात रंगराग है ॥  
शहैशः तूँ राजा अहै छत्रपती । गगन तेरे दरबार का है हती ॥

(६) राजा को आशीर्वादः—

तेरे हाथमे शाह-जम<sup>२२</sup> जाम<sup>२३</sup> अछो<sup>२४</sup> । हमेशा बगल<sup>२५</sup> में दिलाराम<sup>२६</sup> अछो ॥  
जगतके शहाँ मे तुअ-च<sup>२७</sup> नेकनाम । कि दुश्मन तेरा है सो बदनाम अछो ॥  
चंदर-सूरके जाम ते आसमाँ । तुजे गुस्ल<sup>२८</sup> करनेकुँ हस्माम<sup>२९</sup> अछो ॥  
अछो सब सलामत<sup>३०</sup> अज़ीजा तेरे । जहाँ लग अदू<sup>३१</sup> है सो गुमनाम अछो ॥

(७) कथारंभः—

रवायत<sup>३२</sup> किया राविये<sup>३३</sup> नेकनाम<sup>३४</sup> । बहुत फिक्र<sup>३५</sup> सोंयो हिकायत<sup>३६</sup> तमाम<sup>३७</sup> ॥  
अथा रूम के शह्र में बादशाह । . . . . . ॥

\*उ० श०, पृ० ११२।

१. कहता, २. कहानी में, ३. छन्द, ४. सुन्दरियों को, ५. ईर्ष्या, ६. जरूर, ७. एक को एक, ८. स्वीकार, ९. प्रलय, १०. स्मृति-कीर्ति।

† यु० द० म० पृ० ९७।

११. सूर्य, १२. लावण्य, १३. दृढ़ता, १४. ध्रुव, १५. सदा, १६. दुर्लभ, १७. कहते, १८. दानशीलता, १९. न्याय, २०. पूर्ण, २१. बहादुरी।

‡ उ. श. पृष्ठ ११२।

२२. जमशेद का, २३. प्याला, २४. रहो, २५. पाइवं-क्रोड, २६. प्रेमिका, २७. तेरा ही, २८. स्नान, २९. स्नानशाला, ३०. सानंद, ३१. शत्रु।

‡‡ यु० द० म०, पृ० ९४।

३२. कथा, ३३. कहनेवाला, ३४. सुनाम, ३५. चिंतन, ३६. कथा, ३७. समाप्त।



ओ शाह भीत मकजूल<sup>१</sup> आकिल<sup>२</sup> अया । सखी<sup>३</sup> हीर फाजिल ओ वामिल अया ॥  
 सवा लाखये उसकुं तुकी गुलाम । जो अल्मास था रग उनका तमाम ॥  
 जो हव्सी गुलामा सवा लाख थे । ओ नीलम<sup>४</sup> की त्यो हुस्न<sup>५</sup> में पाक थे ॥  
 अगचें ओ दाहे-जहाँगीर<sup>६</sup> था । नहीं हैं कि फजन्द<sup>७</sup> दिलगीर<sup>८</sup> था ॥  
 इसी गमनो दिनरात रोता अछें<sup>९</sup> ।

(८) नल-शिल-वर्णन\*—

(१)

अजव मीन पर उस लेंगे वाल थे । भुजंग धान-मदल<sup>१</sup> पर रखवाल थे ॥  
 जवी<sup>२</sup> देख उसको छुपे आफनाव<sup>३</sup> ॥ ले मुस पर अपमके रयनवा नकाव<sup>४</sup> ॥  
 भवा पर उमीके नञ्जर कार हलाल । बिया तनकुं लागिर<sup>५</sup> रयना नकाव ॥  
 नयन देख आहू<sup>६</sup> परेगान ही । चमन-बीच नगिस ही हैरान ही ॥  
 अजव उसकी आंखामें डोरे थे लाल । कि जिन नयन वारा बनाई जा चाल ॥  
 दो गालां सफानी<sup>७</sup> सना<sup>८</sup> की ना जाय । देखत आशाना उसके रशवत<sup>९</sup> लियाय ॥  
 सिपह नाल<sup>१०</sup> नादिर<sup>११</sup> था उम गालपर । भेंवर होंके वंठा है गुललाल<sup>१२</sup> पर ॥  
 दो ल<sup>१३</sup> आवे-हैवा<sup>१४</sup> से लत्रेज<sup>१५</sup> थे । बिया शहद<sup>१६</sup> शवरमा आमेज<sup>१७</sup> थे ॥  
 अये दांत मुख बीच हीरे जडे । दहन<sup>१८</sup> के सदफ<sup>१९</sup> बीच मीनी जडे ॥  
 जहाँ वो खुसी साय हँस वालती । गुलां और मोतियां कई रोलती ॥  
 सीनापर दो पिस्तान<sup>२०</sup> अतार थे । यो दो वुजमुश्कीन<sup>२१</sup> तातार थे ॥  
 शिकम<sup>२२</sup> मौज-दरियाय-मीमाव<sup>२३</sup> हैं । अगे नाफ<sup>२४</sup> तिस बीच गर्दान<sup>२५</sup> हैं ॥  
 चरन देख चपा पिला बाग-बाग । वह रूप देख लाला हुआ दाग-दाग<sup>२६</sup> ॥

(२)

ओ जुल्फा<sup>१</sup> दिलेंके हिडोले अहैं । गलत में क्या<sup>२</sup> दो सेंपोले अहैं ॥  
 भवा वागनख हीर आंखियां हरिन । कि ओ मोहनी है अजव मनहरन ॥

१ बभ्रुत पसद, २ बुद्धिमान्, ३ दाता, ४ हीरा, ५ सौन्दर्य, ६ चक्रवर्ती राजा,  
 ७ पुत्र, ८ डुखी, ९ रहे ।

\*उ श पृ० ११३ ।

१० चदनशाखा, ११ ललाट, १२ सूर्य, १३ घूँघट, १४ कृश, १५ हरिण, १६ स्वच्छ,  
 १७ प्रशासा, उपमा, १८ ईर्ष्या, १९ तिल, २० कुल्लुभ, २१ लालफूल, २२ अयर, २३ अमृत,  
 २४ भरा, २५ मधु, २६ मिश्रित, २७ मुल, २८ मोती, २९ स्तन, ३० काले, ३१ उबर,  
 ३२ पारद-समुद्र-तरंग, ३३ नाभि, ३४ भेंवर, ३५ दागवाला, ३६ अलक, ३७ कहा ।

ओ गालाँ की सुखीँ सो लालेमें नै । ओ बालों की खुशबोइ बालेमे नै ॥  
दिसे फूल दो सेवतीके दो कान । चँपेकी कली नाक है दर्मियान ॥  
अजायब<sup>१</sup> यो चाहे-जनखदान<sup>२</sup> है । कि गर्क<sup>३</sup> उसमने दीन - ईमान है ॥  
दो जोबन सो चोलीके दो हाथ में । जो अम्नीतफल छुप रहे पातमें ॥  
अथा पेट जों आरसीनाद<sup>४</sup> साफ । कहूँ क्या शमकता अथा ज्यों शफ़ाफ़<sup>५</sup> ॥

(९) नायक-नायिका का प्रेमालाप \*--

वहराम--हुआ मजनूँ बिरहते सुध गँवा मैं । अथा दाना<sup>६</sup> सो दीवाना<sup>७</sup> हुआ मैं ॥  
तुझे दिलमें छुपाया हूँ अपसके । खराबेमे<sup>८</sup> लगाया हूँ दिवा मैं ॥  
उचाया<sup>९</sup> हूँ तेरे गमके<sup>१०</sup> पहाड़ाँ । अजब है नै सीना फटकार मुवा मैं ॥  
सनम<sup>११</sup> तेरे बदल<sup>१२</sup> होकर बरहमन । गलेमे अपने भाया<sup>१३</sup> जानेवा<sup>१४</sup> मैं ॥  
मुझे क्या देखती अजमा<sup>१५</sup> गुलन्दाम । पुराना हूँ नही आशिक<sup>१६</sup> नवा मैं ॥  
गुलन्दाम--तुझे हासिल नही है विन गम । नको<sup>१७</sup> कर गममे अपना पाँव मुहकम<sup>१८</sup> ॥  
तेरा दिल हो गया फोड़ा दुखों ते । नही इस जखमका मुँज पास मरहम ॥  
मेरे पावों पो सिर तेरा न अँपड़े<sup>१९</sup> । करे धनुकी नमन<sup>२०</sup> गर तूकमर खम<sup>२१</sup> ॥  
कधाँ लग गम तु खायगा<sup>२२</sup> बोल बारे<sup>२३</sup> । मुँजे तू छोड़ दे आज भौत खुरम ॥  
न पायगा इस मनमें ते तू मेवा । . . . . . ॥

(१०) स्वदेश-प्रेम †--

जे कोइ याद करता न अपना वतन<sup>२४</sup> । ओ मर्द है पेरन<sup>२५</sup> असलका कफन ॥  
अगर कोइ गुर्बत<sup>२६</sup> मे शाही करे । अगर माल होर मिलक<sup>२७</sup> लाखाँ धरे ॥  
अपसकूँ देखे खोलकर जों अँखियाँ । देवे खाक<sup>२८</sup> तनका वतन का निशान<sup>२९</sup> ॥  
वतन सबकूँ दुनिया में प्यारा अहै । सफ़र<sup>३०</sup> है सो जो बादेबाराँ<sup>३१</sup> अहै ॥

§ २६. गुलामली (१६८० ई०)

गुलामली गोलकुंडा के अन्तिम कवियों में से था, और अबुल्हसन कुतुब तानाशाह के समय में हुआ था। इसने जायसी की 'पद्मावत' का दक्खिनी में अनुवाद उसके किसी फारसी

१. अद्भुत, २. नाभि, ३. मज्जित, ४. ठुड्डी (ठोड़ी), ५. आकाश की लालिमा,  
\*उ०श०, पृ० २४६।

६. बुद्धिमान्, ७. पागल, ८. खंडहर मे, ९. उठाया, १०. दुःख के, ११. प्रियतमे,  
१२. तेरे लिए, १३. पाया, डाला, १४. जनेऊ, १५. परीक्षा ले, १६. प्रेमी, १७. नहीं,  
१८. दूढ़, १९. पहुँचे, २०. धनुष की तरह, २१. टेढ़ी, २२. खायगा, २३. बाले।  
†उ० श०, पृष्ठ २४६।

२४. घर, २५. परिधान, २६. परदेश, २७. सम्पत्ति, २८. मिट्टी,  
२९. पता, ३०. यात्रा, ३१. वर्षा की हवा।

भलाई सेती तू भला पायेगा । बुराई सो सिरपर बला' त्यायगा ॥  
 होवे कोइ बुरा तु भलाई न छोड । बुरा बोल किमकूँ अपम-मू न तोड ॥

गुलामली जिसमा दिल लाइये । विटुडने मा वेहतर जो जिउ जाइये॥  
 वते' खून-दिलमा मो दिल लावना । ता एक तिलमने' ताडवर जावना ॥  
 जनावर के जाने मे दुग पाइया । तो इन्मान-नतिर' न गम पाइया ॥

### § २७ इश्रती (१६८२ ई०)

संयद मुहम्मद खाँ 'इश्रती' के पिता संयद युसुफ हुमेनी और पितामह संयद हुमेन ये । संयद युसुफ भाग्य-परीक्षा करने बसरा (मेमोपातामिया) से दक्षिण (गीजापुर) पहुँचे । इश्रती अभी १२ साल का ही था, कि उनके पिता का देहात हा गया, किन्तु वह पूज्य संयद (मुस-ल्माना के ब्राह्मण) वश की मन्तान था, इसलिए उनकी शिक्षा-दीक्षा में वापस नहीं पडी । गीजा-पुर-द्वार में इश्रती का काफी सम्मान हुआ । जब १६८६ ई० में गीजापुर की औरगजेब ने अपने राज्य में मिला लिया, तब उनके दरवार में भी इश्रती की बहुत इज्जत हुई । इश्रती दक्षिण का अतिम महाकवि हैं । उनका तरण समकालीन बली आँगवावादी ता दक्षिणी और उर्दू का सम्मिलित कवि था । इश्रती की कब्र हैदराबाद गाजीबडा दरवाजा के बाहर शहराजू हुमनी की समाधि के उत्तर में है । इसके सान्दान के लोग अब भी हैदराबाद में मौजूद हैं ।

इसकी कृतिया में 'चितलगन', 'दीपक-पतग' और 'नेहदर्पन' अश्व महत्त्व रखती हैं, यहाँ उसकी कविता के नमूने दिये जाते हैं—

#### १ पुत्र वियोग में माता (दीपक-पतग) \*—

बेचारी हो रही तब बेचारी वा माई । बेचार्या नमन' वो बमू रा' हाय हाय ॥  
 लहू घट ले भरके सीनेमें सार' । बलीक' नमन दिल रखी नहुँ तलार ॥  
 चँदरघरके घनकी हठीली वो नार । निक्ल' राजके गममा आई बहार' ॥  
 सुना मार सिर पीट के हाय-वाय । चँदर में पिरा हर अँजू' जल-हवाय' ॥  
 कि 'एगुल' मुजे आग तुज विन है वन । कि घर तुज मजन विन दिसे ज्या सजन ॥  
 जगत्तर' में तुजसा मेरा नाम है । कि तुज सूर' विन दिन मेरा शाम है ॥  
 तुमा' साय हसत' मेरे लालाजार' । वगर तुज है मुँज सेज में फूल खार ॥

१ आफत, २ कितने, ३ क्षण में, ४ मनुष्य के लिए ।  
 \* उ श, पृष्ठ २८२ ।

५ गरीब-से,

६ रोवे, ७ काँटा, ८ बुड्मल के, ९ नल-तलवार, १० बाहर,  
 ११ आँसू, १२ नहाय, १३ फूल, १४ जगत्, १५ सूय, १६ तुझसे, १७ अफसोस,  
 १८ फुलवाड़ी ।

ए तुजसों मेरे हौज<sup>१</sup> मे नीर है । तेरे बाज<sup>२</sup> नित खाक<sup>३</sup> मुँज सीर है ॥  
 ए तुजसों मेरा हासिल<sup>४</sup> हर मुद्दा<sup>५</sup> । अगिन तुज बिना मुजकुं बादेसबा<sup>६</sup> ॥  
 तुसों बख्त<sup>७</sup> है जेर<sup>८</sup> मुज जोर<sup>९</sup> मे । है तुजवाज आराम मुज गोर<sup>१०</sup> मे ॥  
 ए तुज-शमाते बज्म<sup>११</sup> अनवार<sup>१२</sup> है । बगैर तुज मेरे दिलमने नार<sup>१३</sup> है ॥  
 ए तुजसों है मुँजकुं राज होरनियाज<sup>१४</sup> । न तुज विन बगैरसोज दिसताहै साज ॥  
 नहोबेकटर<sup>१५</sup> सुट<sup>१६</sup> के मुज दिलपो खार । जुदाई के पर्देका ना छोड़ तार ॥  
 न कर बेवफ़ाई<sup>१७</sup> वफ़ादार हो । मेरी देख जारी न बेजार<sup>१८</sup> हो ॥  
 हवस<sup>१९</sup> इस सफ़रकी तू सुट दे एताल<sup>२०</sup> । नही तो, ले चल मुजकुं अपने दुँबाल<sup>२१</sup> ॥  
 मुँजे जबह कर नै तो कै मूँद कर । अगर्चे न होय तन लहु बूँद भर ॥  
 कया राज" ए छँदभरी नाजनी<sup>२२</sup> । डुबाया अजू-जलमे अब घर केती ॥

—दीपक-पतग

## २. प्रेम-पत्र\*—

लिख्या दिलके लहू सों यो नामा<sup>२३</sup> तुजे । जो तुज विन दिस्या दिन कयामत<sup>२४</sup> मुजे ॥  
 तेरी जुल्फ़े-मुश्की<sup>२५</sup> की सौगंद है । खबेखब मे जिस जिवका एक बंद है ॥  
 कि जबते अँख्याँ लहू भर्याँ ना सबूर<sup>२६</sup> । रह्या है तेरे मुखके फुलवनसो दूर ॥  
 तधांते डुब्या लहु मे लाले नमन<sup>२७</sup> । जो अजबस<sup>२८</sup> सुटी लहुकी अँजुआँ<sup>२९</sup> नमन ॥  
 लग्या इस रविश बहने लहुका नई । कि गैरत<sup>३०</sup> ले जाता है इस पर कही ॥  
 पवन शाहिद<sup>३१</sup> है होर सितारे गवाह । कि मुँज दिलकी तंगीपे कर यह निगाह ॥  
 समज सच तु दो दिन के बिछड़ेका रोग । मुँज आशिक उपर जिन सुट्या<sup>३२</sup> प्यास भूक ॥  
 जो दिसता है सुरज अगिनका कुवाँ । है मेरे कलेजेकी आगका धुवाँ ॥  
 पिरितकू खलल<sup>३३</sup> क्या है इस बात सों । जो मुँज-दिलकी दर्पन में सो रातसो ॥  
 सुट्या जानो तेरी पिरित<sup>३४</sup> का खियाल । भी किस हूब<sup>३५</sup> का नक्श<sup>३६</sup> उसमे पड़ना महाल<sup>३७</sup> ॥  
 मुलुक-दिलका तुजसों च पाया है रुच<sup>३८</sup> । किसीका हुकुम ना चले इसमे कुछ ॥  
 तेरा विरह नै सर्सरी होर निबल । कि जावे मेरे सिरसो भी के निकल ॥  
 बिना आजिजी<sup>३९</sup> नै जो आशिककुं लाभ । तो अब वातकुं ना बढ़ा बेहिसाव ॥  
 न चूक्या जो उसकुं भी चक है कि जान । पशेमाँ<sup>४०</sup> हूँ मेरा उजर<sup>४१</sup> टुक मान ॥

१. कुंड, २. तेरे बिना, ३. मिट्टी, ४. प्राप्त, ५. अभीष्ट, ६. प्रातःसमीर,  
 ७. भाग्य, ८. नीचा, ९. जबरदस्ती, १०. कब्र, ११. सभा, १२. प्रकाश, १३. आग,  
 १४. कृपा, १५. क्रूर, १६. छोड़, १७. विश्वासघात, १८. आजिज, १९. लालच, २०. इस  
 समय, २१. पीछे, २२. सुन्दरी ।

\*उ. श., पृष्ठ २८० ।

२३. पत्र, २४. प्रलय, २५. कालीअलके, २६. धैर्य, २७. लाला की भौति, २८. अत्यन्त,  
 २९. आँसू-सा, ३०. लज्जा, ३१. गवाह, ३२. फेंका, छोड़ा, ३३. वाधा, ३४. प्रेम, ३५. किसी के  
 प्रेम, ३६. प्रतिविम्ब, ३७. असम्भव, ३८. कामना, ३९. नम्रता, ४०. लज्जित, ४१. प्रार्थना ।

जवस की गता होर खुदी<sup>१</sup> का हरफ । नयनजल मो धोकर किया बरतरफ<sup>२</sup> ॥  
 भला है जो अब पढयो नामेकुं वेग । कि ज्यो पर पतिगे लग हर्फाकुं वेग ॥  
 सपद<sup>३</sup> हो जठे मुंज-अगिन मो नुकन<sup>४</sup> । घुआ<sup>५</sup> ऊद<sup>६</sup> वा त्या निकलता फकत ॥  
 चंदर त्यो यो सूरज सो ना मुख फिरा । न वर जीभ पर बुठ भला होर बुरा ॥  
 गिले होर झगडेकु मव छोड कर । मरोकद<sup>७</sup> अपसवा डघर मोड कर ॥  
 तमाग्या मेरे चपके चयमेवा देख । कि क्याकर व्हता है तेरा बिरह मेव ॥  
 तेरा मुख देखें मूस अजुवा<sup>८</sup> मा धो । हुआ तांत तन क्या निपट चे-हूमो ॥  
 अगर मकडी मुंज तनपे जाला तने । मयी त्या मै ना हिल मकू उममने<sup>९</sup> ॥  
 जठे चिमटी<sup>१०</sup> मुंज वद-पावो ऊपर । छुटा ना सकू हिल अपन ठावगा ॥  
 वचन बिन पराम मा मेरा तन एता । न पावे कवी कोइ डूडे जेता ॥  
 मेरी बडकु हिलने वजुज<sup>११</sup> पाक<sup>१२</sup> सा । नकोइ फाम<sup>१३</sup> मक्ता है इदराक<sup>१४</sup> सा ॥  
 इलाही नरम कर तुं वह भगदिल<sup>१५</sup> । देवे मोमियाई<sup>१६</sup> मया<sup>१७</sup> की वो मिल ॥  
 भर उमके गुमेकी अगिन की बला । कि जाली है जिन मेरे जिवना घुला ॥  
 बुया वम्ल<sup>१८</sup> का जठ ठिनक<sup>१९</sup> आमपाम । वजुज इसके नै वूठ मुंज दिलवा जास ॥  
 बलम दो जवा<sup>२०</sup> हाय घावा मेती । मू उसवा मेरे दुबकी आहीं मेती ॥  
 हुआ काला ज्यो नेरी मुष्की अलव । तो यो टुग जेमे लग मवे वां तलक ॥

—चिनलगन

### ३ सहेलियो द्वारा स्नान-निमंत्रण\*—

अवल सब जत्यां जाके पदिमनके धिर<sup>१</sup> । अदव<sup>२</sup> सो रख्या उमके पावा पोमिर ॥  
 जोवनके मेहर<sup>३</sup> मा थी मनमें उमग । दर्या जोगदिल का जवागी तरेंग ॥  
 क्या "तुजते ऐ गहपरी<sup>४</sup> नेकनाम । मिक्या हैम चलन होर मनोउर कथाम<sup>५</sup> ॥  
 यो दो दिनकी दुनियामें दुप सत्र विमार । अनंदकरले सुट<sup>६</sup> फिरगमते वहार<sup>७</sup> ॥  
 कि कल परमा की जान चुप हवस । खुशी जग में हमना यही दम है वम ॥  
 किसे क्या खबर है कि यो आसमां । रच्या क्या है पदे में वाजी निहा<sup>८</sup> ॥  
 हो गमते मुन्त कर लेवें कुछ आज । सुवाकिन देख्या है धरे रच आज ॥  
 मुवा साभुरे जायगी नेह जाड । चले सत्र सगे होर मा-वाप छोड ॥  
 हमें तो पिछे गममें रहन च है । बदल गुलके<sup>९</sup> सो खार<sup>१०</sup> खाना च<sup>११</sup> है ॥

१ अभिमान, २ अलग, ३ एक घूप, ४ बिंदु, ५ घूप का घुआ, ६ अगर, ७ सरो-सा सीधा शरीरवाला, ८ आंसू, ९ उसमें, १० चींटी, ११ सिबाय, १२ मिट्टी, १३ समझ, १४ दर्यापत, १५ कठोरदिल, १६ मोम-सी, १७ माया, १८ मिलन, १९ छिडक, २० काली ।

\*उ न, पृष्ठ २८४ ।

२१ पद्मिनीके पास, २२ सम्मान-सहित, २३ यौवन की कृपा, २४ परियों की रानी, २५ ठहरना, २६ छोड, २७ बाहर, २८ खेल, २९ छिपा, ३० कामना, सुल, ३१ फूल के, ३२ कांटा, ३३ खाना ही ।

वह अछ वल चंचल नार सुध ज्ञान धर । सहेलियों की सुन वो वचन कान धर ॥  
नजाकत' सों दिल नैनका नीर कर । कदम सर्व का चखपो पानी के धर ॥  
सुरजके नमन<sup>२</sup> जलमें डूब गहपरी । सदफ त्यो<sup>३</sup> च जल्द मोतियाँ सो भरी ॥  
डुव्याँ जलमे कमके सकल हूरजाद<sup>४</sup> । हुयाँ शाद<sup>५</sup> पायाँ जो अपनी मुराद ॥  
डुब उस हौजमे शौक सो खेल्तियाँ । अगिन तनपो पानी टँडा मेल्तियाँ<sup>६</sup> ॥  
कल्लौ उचा जल यकस यक पो मेल<sup>७</sup> । अपस-दिलकी अतिश पो सुट्याँ थ्याँ तेल ॥

—दीपक-पतंग

#### ४. विवाह-भोज\*—

विछाये चाँदनीका फ़र्श निर्मल । कि जैसा चाँदनी म्याने सफ़ा जल ॥  
विछाये सुजनियाँ जरबाफ़<sup>८</sup> के साफ़ । है उस गुलपर सुरज बुलबुलकु इन्साफ ॥  
रुपेरी और सुनेरी मस्तदाँ पर । सदरमुहरी<sup>९</sup> रखे ज्यों सूर-चंद्र ॥  
अथे वरदार तकिये बर्नियाँ बाफ़<sup>१०</sup> । परयाँके गाल जैसे नाजुक<sup>११</sup> होर साफ ॥  
सुरँग असमानगीर्याँ थी गफ़क<sup>१२</sup> सी । अथे गुलदार<sup>१३</sup> ज्यों घनके तबक<sup>१४</sup> सी ।  
लताफ़त<sup>१५</sup> का हुआ गुल्शन वो मंदिर । दिवारगिरियाँके खीचे वाड़ ज्यों फिर ॥  
रखे फूलों सो भर उस ठार गुलदान<sup>१६</sup> । रखे थे पान सेती भर तँवूलदान ॥  
जडितके शमादाँमे शमा<sup>१७</sup> का नूर<sup>१८</sup> । नवे चँद त्यो लगनमे धनके पुरनूर ॥  
महाफ़ी<sup>१९</sup> थे चिरागाँ सात पुरनूर । दिसे थे नयनमें हो रैन के सूर ॥  
कँदीलाँके देखत झोंके सोहाने । अँगूराँके झड़े खुशियाँके दाने ॥  
दीव्याँसों कटघराँ ऐसे सँवारे । कि ज्यों कौसेकजा म्याने<sup>२०</sup> सितारे ॥  
दिसे हौजाँ मे उड़ते सो फँवारे । मुकट माकाँसों वाल्याँ<sup>२१</sup> कूँ सँवारे ॥  
जो आ याकूत<sup>२२</sup> की प्याल्याँ मे घाले । सुरँग रँग सों दिसे पानद लाले ॥  
तवक बिल्लोर<sup>२३</sup> की खुश्वूय सो भर । हजाराँ चाँद थे ज्यों भुईँके ऊपर ॥  
दिये थे मंडपाँ चौधेर<sup>२४</sup> यों रात । कि घन उस चहल ज्यो वादल किया भात ॥  
क्रमरका<sup>२५</sup> दौर जो दिसनेमे ना आये । वह प्याले वदर<sup>२६</sup> से भर-भर को दिखाये ॥  
हरीफ़ाँ<sup>२७</sup> झेलते जो जाम अधन तर । करै चौगान वाजी ज्यो हवा पर ॥  
हवस<sup>२८</sup> के जो तुरँगकूँ खूब दौड़ाये । गरम हो लालकर मू-खूय<sup>२९</sup> भर लाये ॥  
दिसे रुख<sup>३०</sup> लाल पर बुँद-खुय<sup>३१</sup> के सारे । शफ़क<sup>३२</sup> है चाँदपर तिसपर सितारे ॥

१. कोमलता, २. सूरज-समान, ३. सीय-सी। ४. अप्सरा-पुत्र, ५. प्रसन्न,  
६. डालतीं, ७. डाल,

\*उ. श., पृष्ठ २८६, नेहदर्पण ।

८. सोने की बुनी, ९. गिलाफ, १०. वरनी के बुने, ११. कोमल, १२. आकाश-  
चुम्बी लाली, १३. फूलदार, १४. थाल, १५. लालित्य, १६. फूलदान, १७. सोनबत्ती,  
१८. प्रकाश, १९. चलते, २०. इन्द्रधनु में, २१. वालों, २२. लाल, २३. स्फटिक, २४. चारों  
ओर, २५. चाँद का, २६. पूर्ण चन्द्र, २७. शत्रु, २८. लाभ-लालसा, २९. रोम में पसीना,  
३०. मुख, ३१. पसीने की बुँद, ३२. आकाशी लालिमा ।

हुई जब मैं सो दिलकू शादमानी<sup>१</sup> । तमाशेकी मोंगे दिल कामरानी<sup>१</sup> ॥  
 शबद शीरी सेनी होवे बहुत सुग । परीरत्न<sup>२</sup> दिलखवा<sup>३</sup> मो होइ भँजन सुग ॥  
 तरबसाजी<sup>४</sup> के मुतरिव<sup>५</sup> ताँ लगाये । बहुत कुछ खूब गाये होर वजाये ॥  
 उनन-आवाज के गोल<sup>६</sup> पे रख दिल । पतग होइ घनपो जोहरा<sup>७</sup> वनमें बोयल ॥  
 बुलद आवाज पर उनके रख्या ध्यान । चँदर हार सूरमो घाके गुले वान ॥  
 वजतर ता पडाँ जब नाचने आये । आजायब<sup>८</sup> दिलरमाई के गताँ लाये ॥  
 वो जुल्फाँ मुग्य उपर अपने जाँ रोलो । ये दिल उदशाक<sup>९</sup> के उसने मँपल्ले ॥  
 नयन मटकाई जो हरयक मदनमस्त । सितारे घनते उस देवत हुये पस्त ॥  
 उचल गरदान<sup>१०</sup> कर जब भाव वतलाय । तलबदारा<sup>११</sup> के दिल चादी दे ले जाय ॥  
 छत्रेल्याँ छतसेती जब चरं गे आये । भँवर तिस झल मो गोने जलमें साये ॥  
 ढलकत्याँ रकस<sup>१२</sup> में आकर सलब<sup>१३</sup> जायें । गताँ मीमाव<sup>१४</sup> के छदो मा दियलायें ॥  
 करयाँ रक्काम<sup>१५</sup> हाआशिक दिलेवाग<sup>१६</sup> । घरयाँ मोराँ के तनपर ररक<sup>१७</sup> वादाग ॥  
 तमाशा देग जब नैनाँ अवाये । कँदूरी<sup>१८</sup> वार<sup>१९</sup> वर गाना गिलायें ॥  
 जो कुछ खाने की होवे चीज बेहतर । चुनी थी सब चतुर-जानी-विचित्र ॥  
 रिवात्याँ भर रये ये सो कजूली । तमीयत<sup>२०</sup> ने उम अव्वल<sup>२१</sup> कजूली<sup>२२</sup> ॥  
 तसजन<sup>२३</sup> का अया ले खूब महकार<sup>२४</sup> । खुल्या था वनमें गोया हारसिंगार<sup>२५</sup> ॥  
 ज। जिनन्याँ गीच खुश्का<sup>२६</sup> साफ भरलाय । हँगुलर्चानीवो अचली<sup>२७</sup> काकह्या जाय ॥  
 मसलादार सिजडी थी सोहानी । खिली दिल देल तिस रँग जाफरानी ॥  
 थी नाना बीच किसमीसी जरूमो<sup>२८</sup> । वरन मेहमान के तँ दस्तमोमी<sup>२९</sup> ॥  
 खुल्या था मू हरेक वर्की<sup>३०</sup> मँपोसा<sup>३१</sup> । देवन मेहमानके लबताई पोसा<sup>३२</sup> ॥  
 वमाचाँ मो हई महे-मुवाविल<sup>३३</sup> । करन यो बहस<sup>३४</sup> जो है वोन फाजिल<sup>३५</sup> ॥  
 सुलह कारन<sup>३६</sup> उनन सीने पो रख हात । मलाई मूमें मेहमानाँ वर यक वात ॥  
 रख रगीन कलई<sup>३७</sup> नादिर<sup>३८</sup> हँ उार । अचाराँ होर मुरब्बे ले मजादार ॥  
 दिसें यो तैरते धिउमें चुक्दर । वचे मुरखात्र<sup>३९</sup> के ज्या नीर-अन्दर ॥  
 सफाई सो करम<sup>४०</sup> रखते करामात<sup>४१</sup> । उननकी गमाजोशी<sup>४२</sup> थी हरेक साय ॥

१ मदिरा, २ प्रसन्नता, ३ सफलता, ४ अप्सरामुखी, ५ मनोहर, ६ सगीत,  
 ७ गायक, ८ ज्वाला, ९ ब्रह्मस्पति, १० अद्भुत, ११ प्रेमी, १२ दुहराना, १३ इच्छुको,  
 १४ नृत्य, १५ सबद्ध, १६ पारे, १७ नर्तकी, १८ हृदयोद्यान, १९ ईर्ष्या, २० पक्वान्न,  
 २१ बाहर, फँला, २२ मन, २३ प्रथम, २४ स्वीकारा, २५ एक भोजन, २६ सुगन्धित,  
 २७ हरसिंगार, २८ सूखा भात, २९ एक भोजन, ३० दुलहावाली, ३१ हस्तचुम्बन,  
 ३२ पत्नीवाला, ३३ समोसा, ३४ चुम्बन, ३५ सामने, ३६ विवाद, ३७ पडित,  
 ३८ के लिए, ३९ रांगे के, ४० दुर्लभ, ४१ जलपक्षी, हस, ४२ दया, ४३ चमत्कार,  
 ४४ सोत्साह।

कढ़की हुइ थी गर्दन-फ़राजी<sup>१</sup> । न थी रगवत<sup>२</sup> कुं उसते बेनियाजी<sup>३</sup> ॥  
 करेली होर चँचोड़ी<sup>४</sup> जो रखे ला । कँदूरी<sup>५</sup> का हुआ सर-सब्ज<sup>६</sup> मँडवा ॥  
 दिस्स्या खुशरग नजराँ तल<sup>७</sup> निचला । जल इस झल<sup>८</sup> सों हुआ रैहान<sup>९</sup> काला ॥  
 देखत तिस सब्ज<sup>१०</sup> रंग महबूब जाना<sup>११</sup> । हुआ मेथी उपर दोना दिवानां ॥  
 कली दिलकी गिरह कुफ्त्याँ<sup>१२</sup> ने खोले । अँगूराँ खाय तिस झल<sup>१३</sup> के गलोले ॥  
 जो प्याला दालका सफ़रे<sup>१४</sup> पो आया । सँदल<sup>१५</sup> तिस-रस्क<sup>१६</sup> सों अपसो घिसाया ॥  
 चमन<sup>१७</sup> न्यामत<sup>१८</sup> के ऐसे देख सुथरे । जनावर सीख<sup>१९</sup> के झाड्याँ सों उतरे ॥  
 दराजाँ मस्त थे अपनी सदा<sup>२०</sup> सों । न थी सुध जों फकड लेते उनन कूँ ॥  
 बटेराँ, बुलबुलाँ, सफ़रा<sup>२१</sup> था . . . . . । थे कलई नर्गिसी उनतें नशेमन<sup>२२</sup> ॥  
 रिकाव्याँ हौजखाने<sup>२३</sup> घीव ज्यों नीर । लवे, मुर्गावियाँ<sup>२४</sup> त्यों उसमें रह तै ॥  
 कवावाँ मुर्ग के याकूत<sup>२५</sup> के रग । हुआ ताजे-खरूस उन-रंगपरं दगाँर ॥  
 थे मोतीचूर लडुवाँके अंबाराँ । उनन रस्को सों लहु घोंटते अनाराँ ॥  
 शकरपारे नज़ाकत<sup>२६</sup> सों संवारे । थे सुँदर<sup>२७</sup> के अधर-शीरी<sup>२८</sup> ते प्यारे ॥  
 जलेब्याँ के निछल शीरीपो रख आँख । झजरसे पट्टियाँके शहद<sup>२९</sup> रहे झाँक ॥  
 न कूजे कन्द<sup>३०</sup> के थे साफ कन्दील । बनाये चाँदके बिल्लोर<sup>३१</sup> सों झील<sup>३२</sup> ॥  
 देखत फिरनी की प्याली धीर चंदर । गले ज्यों यख्न<sup>३३</sup> न हो सक उस बराबर ॥  
 जो कोइ देख्या है वो फालूदा रँगदार । नज़र उसकी गा रँग होय गुलजार<sup>३४</sup> ॥  
 कर ऐसी धात<sup>३५</sup> के न्यामत मुहैया । बैठाये मेहमाँ ताई<sup>३६</sup> ले आ आ ॥  
 कँदूरी के सफ़ा<sup>३७</sup> मैदाँमें जब आय । तुरँगकूँ इस्तहा के अस्त्र बतलाय ॥  
 मलीदे की कधी टेकाँ पो लाये । कभी हलवेके दल-दलमें फँसाये ॥  
 अडाई जिभ-नमन पंखेकी दे झाल । पड्या तिस पगमने सेवियाँ केरा जाल ॥  
 लगा सिरके की उसकूँ तेज महमेज<sup>३८</sup> । चलायेवाँते कर बेगी जिलव-रेज<sup>३९</sup> ॥  
 वो फुलवनका करे सब<sup>४०</sup> सैर यकवार । लिये चुनक रजो कुछ था उनकुँ दरकार ॥  
 मजअफ़र के लिये थे जो नवाले<sup>४१</sup> । दिसें सदवर्ग<sup>४२</sup> के फूलाँमें आले ॥  
 मिलाकर दालकूँ खुश्के<sup>४३</sup> के संगत । करे खड़ी गुलव्वासी<sup>४४</sup> अपस हाथ ॥  
 जो थे खुशरंग<sup>४५</sup> ज्यों याकूत-दाने<sup>४६</sup> । गुले औरंग<sup>४७</sup> कर कुफ्त्याँकुँ जाने ॥

१. सिर उठाना, २. रुचि, ३. बेमुरौवती, ४. चिंचिडा, ५. पक्वान्न, ६. हरा, ७. आँखों में, ८. चमक, ९. बालंगू, १०. हरा, ११. प्राणप्रिय, १२. कुपता, १३. चमक, १४. आहार-विहार, १५. चंदन, १६. तिसकी ईर्ष्या, १७. फुलवाड़ी, १८. सुभोग, १९. कवाव की सीख, २०. शब्द, २१. दस्तरखान, २२. घोंसला, २३. कुंडगूह, २४. पनचिरई, लाल, २५. कुक्कुट, शिखंड, २६. कोमलताएँ, २७. सुन्दरियों, २८. मधुर ओठ, २९. मधु, ३०. मिसरी के कूजे, ३१. स्फटिक, ३२. पिघला, ३३. कृत्तिका (तारे), ३४. फुलवाड़ी, ३५. भाँति, ३६. एकत्रित, ३७. दस्तरखान, ३८. गंध, ३९. प्रकाश-प्रसार, ४०. केसरिया चावल, ४१. घास, ४२. शतपत्र (गेंदा) ४३. फीके चावल, ४४. एक मिठाई, ४५. सुन्दर रंग, ४६. लाल के दाने, ४७. एक भोजन।



कर्माँर्चा जिसके हाथा वीच आये । गुले-चदर के नमने<sup>१</sup> वो सोहाये ॥  
 कवावाँ आतिशी-गुल<sup>३</sup> के सो भित्तर । लिये दूग इश्तहा<sup>१</sup> का उनसेती भर ॥  
 गरज जिसकूँ हुआ जिन घात<sup>१</sup> रगवत<sup>१</sup> । मिले वैसे च वाँ उसताई न्यामत ॥  
 मिठे खाने के जो मैं वस्फ<sup>१</sup> वोळूँ । कलममेती झडी शर्वतकी सोळूँ ॥  
 जा खारे<sup>१</sup> की सिफत<sup>१</sup> का मैं कहूँ काम । सलोण्या<sup>१</sup> मुजसेती लेवें नमक-दाम<sup>१०</sup> ॥  
 कौदूरी खच कर जब सब अघाने । लगे हर एक्के हाथा धुलाने ॥  
 धुलाकर हाथ दी उनताई ले मान<sup>११</sup> । दिये जजतसेती हर एक् कूँ पान ॥

—नेहदपन

## ५ युद्धक्षेत्र\*—

तवल बजते थे होर नरसिंग पुरगम<sup>१</sup> । दमामे हर कचन बजते थे धम-धम ॥  
 घत्तर<sup>१</sup> होवे तलक दोधेर<sup>१</sup> के रनसूर । उबलते थे गजव<sup>११</sup> सा ज्यो कि समदूर<sup>११</sup> ॥  
 अथे यो मुन्तजिर<sup>१</sup> जो हीन घत्तर । निवाले म्यान मो कीने<sup>१६</sup> का खजर ॥  
 खडग ले हाथ म्याने<sup>११</sup> एक वारा । करें जीहर<sup>१</sup> अपसवा आशिकारा<sup>११</sup> ॥  
 बडे हर हाल वो आखिर टूई रैन । छिप्या कोने में जा आराम होर चैन ॥  
 दिवाया सूर अपस खजर का झलकाट । सितार्यो का सकल लडकर<sup>११</sup> गया न्हाट<sup>११</sup> ॥  
 हुये दोधेर<sup>१</sup> सेती मुस्तंद<sup>१</sup> दो दल । दिमें ज्यो भुइ पोप्लाडहोर घन<sup>११</sup> पो वादल ॥  
 दिलेराँ<sup>१</sup> ने सफा<sup>१६</sup> आरास्ता कर । दिये थे मर्दुमी<sup>१</sup> की दाद<sup>१</sup> यकसर<sup>११</sup> ॥  
 पडे हरतन उपर वारा<sup>११</sup> सेती गार<sup>१</sup> । बदल पानीके निबल्या ल्हीका अगार ॥  
 लगा छानीसो छानी होके गल<sup>१६</sup> जोड । सुटे<sup>११</sup> मिर होर सीना हाथ-पग तोड ॥  
 करे गुरजाँ<sup>१</sup> के ऐसे घात<sup>१</sup> सो मार । पडे ये धरति कूँ पाताल लगगार<sup>११</sup> ॥  
 जिरहपोशाँ<sup>१</sup> पडे हो रनमें पामाल । पडे ज्यो मीन भुई उपराल वेहाल ॥  
 कर्या यो फोड हरयक हाथ कातीर । कि चूम्या हात हर एकस का रहगीर<sup>११</sup> ॥  
 घमुख जब खीचता हर यक कर्माँदार<sup>११</sup> । चला कहता जेहा-जेह<sup>११</sup> उसकूँ सी वार ॥  
 दिसे या पाखरी<sup>११</sup> सा हस्तिवा दल । कि जैसा नीर भर वादल दिया चल ॥  
 दिमे जखम्याँ का अक्स<sup>११</sup> उममें रवतसो । दिवाया ज्यो शफक<sup>११</sup> वादलमने<sup>१६</sup> मू ॥  
 लडे दिलसोज<sup>११</sup> गिर-पड होके इस घात । दिवायाँ कूँ हुआ जैसा कि मनपात<sup>१६</sup> ॥

१ चंद्र-पुष्प की भाति, २ अग्नि-पुष्प, ३ भूज, ४ प्रकार ५ पसदी, ६ गुण,  
 ७ नमकीन, ८ गुण, ९ सलोनियाँ, १० नमक का मोल, ११ सम्मान।

\*उ श, पृष्ठ २८५।

१२ कर्णापूर्वक, १३ प्रात, १४ दोनो ओर, १५ क्रोध, १६ समुद्र, १७ प्रतीक्षा में,  
 १८ डाह, १९ हाथ में, २० गुण, २१ प्रकट, २२ सेना, २३ भाग, २४ दो तरफ,  
 २५ तैयार, २६ आकाश, २७ वीर, २८ पक्षियाँ, २९ बहादुरी, ३० प्रमाण,  
 ३१ अकेले, ३२ प्रहारो, ३३ घाव, दरार, ३४. गले, ३५ फेंके, ३६ गदाएँ, ३७ ढग,  
 प्रकार, ३८ दरार, गुहा, ३९ कवचधारी, ४०. राही, ४१ धनुर्धर, ४२ शाबाश,  
 ४३ दाल, ४४ छाया, ४५ आकाश की लाली, ४६ बादल में, ४७ दिल जलते ४८ सन्निपात।

## § २७. जईफ़ी (१६८९ ई०)

शेख दाऊद 'जईफ़ी' गोलकुडा के अन्तिम दिनों का कवि है। इसके दो पद्य-ग्रंथ 'हिदायात हिंदी' १६८९ ई० (११०० हि०) और 'इश्क-सादिक' (मस्नवी) उपलभ्य हैं, जिन पर कविता से अधिक धार्मिकता की छाप है। इन ग्रंथों के लिखते समय दक्खिन के मुसल्मानी राज्य मुगल-साम्राज्य में हजम हो चुके थे। ३६३८ शेरों की पुस्तक 'हिदायात-हिंदी' के अन्त में जईफ़ी लिखता है —

यह दौरे<sup>१</sup> जहाँदार<sup>२</sup> औरंगजेब । कि जिसते हुआ इस जमाने को जेब<sup>३</sup> ॥  
 शहंशाह आदिल<sup>४</sup> अहै दर-अमूर<sup>५</sup> । कि बद्अत<sup>६</sup> जलालत<sup>७</sup> हुआ जिसते दूर ॥  
 दिया हक-तआला<sup>८</sup> ने यो जिसकू जस । जो दुश्मन हुआ उस-अंगे ख्वारो-खस<sup>९</sup> ॥  
 धरया सिरपो जो पन शहीफा वो ताज<sup>१०</sup> । दिली होर दखिन का हुआ एक राज ॥  
 अजब<sup>११</sup> फ़तहो-नस्रत<sup>१२</sup> है उसके सँगात । जो कोइ नै किया उससों दावा की बात ॥  
 कि शाहाँ भी अव्वल<sup>१३</sup> हुये है तो क्या । न कोइ जोहदो-तक्रबा<sup>१४</sup> में ऐसा दिसा ॥  
 अहै उसमने<sup>१५</sup> भी वली<sup>१६</sup> की सिफ़ात<sup>१७</sup> । कि हो आये जो मूसों काड़ै सो बात ॥  
 बड़ा दीन-इस्लाम<sup>१८</sup> का कारसाज<sup>१९</sup> । इलाही तूँ कर उम्र उसकी दराज ॥

और पुस्तक की समाप्ति २२ सितम्बर, १६८९, बृहस्पतिवार को हुई—

शरज<sup>२०</sup> उस जमानेमने<sup>२१</sup> शाहके । मसायल<sup>२२</sup> किया दीनके राहके ॥  
 जो तारीख हिज्रत हजार एक सौ (११००) । 'हिदायात हिन्दी' हुआ यो तो बीच ॥  
 इग्यारा सो उसमे भरे थे तमाम । उसी बीच तम्मत<sup>२३</sup> का देख्या मुकाम ॥  
 सदी बारवी का लग्या था बरस । उसी बीच बाजा यो दखिनी जरस<sup>२४</sup> ॥  
 बलेकिन<sup>२५</sup> शाहंशाह दह्ल<sup>२६</sup> में । मुबारक<sup>२७</sup> ओ जुल्हज्जके शह<sup>२८</sup> में ॥  
 अथी सात तारीख दिन मुश्तरी<sup>२९</sup> । यो नुस्खा<sup>३०</sup> मुरत्तब हुआ खुश्तरी<sup>३१</sup> ॥

इस प्रकार जईफ़ी ने ११०० हिज्री (१६८८ ई०) में इस पुस्तक को लिखना आरम्भ किया, और ७ जिल्हजा, ११०१ हि० बृहस्पति के दिन समाप्त किया, (किन्तु ११ सितम्बर, १६९० ई० को बृहस्पति नहीं, सोमवार था) ।

अपने और पुस्तक के बारे में जईफ़ी ने लिखा है —

मसायल<sup>३२</sup> यो फ़िक्रहाँ<sup>३३</sup> के असनाद<sup>३४</sup> सों । निकाले किया पढ़के उस्ताद सों ॥  
 कि अकसर जबाँ हिन्दकी इस तरफ । लगे खुश जो प ते है दखिनी हरफ<sup>३५</sup> ॥

१. युग, काल, २. चक्रवर्ती, ३. शोभा, ४. न्यायी, ५. काम में, ६. कुघर्म, ७. पथभ्रष्ट, ८. भगवान्, महासत्य, ९. तबाह-बर्बाद, १०. मुकुट, ११. अद्भुत, १२. विजय, १३. पहिले, १४. संयम-नियम, १५. उसमें, १६. सन्त, १७. गुण, १८. इस्लाम-धर्म, १९. काम करनेवाला, २०. अथ, निदान, २१. समय में, २२. विषय, बातें, २३. समाप्ति, २४. घंटा, २५. लेकिन, २६. समय, २७. शुभ, २८. अरबी, बारहवाँ महीना, २९. बृहस्पति, ३०. पुस्तक, ३१. अधिक अच्छा, ३२. विषय, ३३. अर्थशास्त्र, ३४. प्रमाण, ३५. दक्खिनी भाषा ।

इसी वाम्ने हृदिया' यो हिंदू कुं । जो ल्याया दग्नि नालके सन्द मो ॥  
हिदायात-हिन्दी फिकर इसका नाव । रस्या हार ल्याया हूँ हिंदियाँ के ठाँव ॥  
कि हिन्दी केरे हूँ हिदायात में पो । ॥

शिफाआत' रवैयत वा जो वाज है । जईफी इमांका च' मुहताज है ॥  
यही इह्नियाज' अपने दिलमें पकड । पिरोया हूँ मैं इस गिमाठे' की लड ॥  
लकव उस हुआ गय दाऊद नाँव । जईफी है उसके तामल्लुस' वा ठाँव ॥  
अरबीमें होर फारसीमें । बंतेका मसायल जरूर लिह्या देख-देन ॥  
अरब होर अजम' वा सगुन' पाइया । सो दखिन्यां कुं दखिनी सो समझाइया ॥

हिदायात-हिन्दी वा यो सब कलाम" । बर्यावार बोलूँ अंगे भी तमाम ॥  
हजार तीन परही जवह (३०१८) हिंदी वैत" । कि इल्मे-मलूक" होर गरीअत" ममेत ॥  
मुरत्तब" करे जब यो नुम्ता तमाम । दुआ मयिये शेख दाउद नाम ॥  
छमा के उपर वीस बतियाँ नवी । जा मकमूद" के वं न था मो हुई ॥

मस्नवी 'इस्के-सादिक' (सच्चा प्रेम) में इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद पर एक अरब स्त्री क मच्चे प्रेम की कथा कही गई है, कहने का ढग कुछ रूचा-सूजा सा है, जैसे\*—  
जया मुन कहूँ नकल" उस नारका । जो सगवेत-कदम" नार-अवतार" वा ॥  
सुन्या हूँ नवी (के) जमानेमें एक । अया जा मुसल्मां कोई मर्द नेक ॥  
नवा आ नवीके मो इस्लाममें । अया नेक नेकी केरे काममें ॥  
मा बस्ता" सा होय देख यारी" उम । मिली एक अजब नेक नारी उसे ॥  
निछल पाक-पैवर" परी-सारपी । परी बल्कि अच्छी न उम सारपी ॥

### § २८ मुहम्मद अमीन (१६६७ ई०)

यह भी गोलकुडा के अन्तिम समय में पैदा हुआ । इमने अपने काव्य 'युमुफ-जुलेवा' को औरंगजेब के शासन-काल १६९७ ई० (११०९ हि०) में समाप्त किया । युमुफ-जुलेवा भारतीय और भारत से बाहर के भी बहुत-से मुस्लिम कवियों के काव्य का विषय रहा है । भारत में सर्व-प्रथम सुन्नो देहली ने अपना काव्य 'युमुफ जुलेवा' लिखा । सभवत अमीन ने उसी के आवार पर अपना काव्य रचा । पुस्तक की समाप्ति के वारे में कवि ने लिखा है—

१ भेट, २ सिफारिश, ३ इसी का ही, ४ ध्यान, ५ पुस्तक, ६ पदवी,  
७ उपनाम, ८ अरब भिन (ईरान) देश, ९ वाणी, साहित्य, १०. वाणी, साहित्य,  
११ हिन्दी-छंद, १२ बर्ताव की विद्या, १३ इस्लामी धर्मशास्त्र, १४ तैयार, १५ अभिप्राय ।

\*यु द म, पृष्ठ २३५ ।

१६ कहीं-कहीं, १७ दूढ़ पग, १८ अद्वितीय नारी, १९ भाग्य, २० दोस्ती,  
२१ पवित्र शरीर की ।

यु द म, पृष्ठ ३३८ ।

इग्यारा सौ उपर जब नौ गुजरे (११०९) । बरस हिज्रते मुहम्मद मुस्तफ़ा के ॥  
वना चालीस सौ फिर चारद और सौ (४११४) । मै लिक्खा गौधरी के बीच सुन लो ॥  
जमादील अवलमें इतवारके रोज । अथी तारीख दूजी दे दिल-अफ़रोज ॥

जमीदिउल्-अव्वल ११०९ हिजरी को १७ नवम्बर, १६९७ तारीख और रविवार का दिन था, जबकि यह पुस्तक समाप्त हुई।

अमीन ने अपने ग्रथ की भाषा गोधरी या गूजरी लिखी है, जिसका अर्थ यही है, कि गुजरात में भी बहुत-से मुसलमान-परिवार थे, जिनकी भाषा हिन्दी थी और जिस तरह दक्खिनी मुसलमान अपनी हिन्दी को दक्खिनी कहते थे, उसी तरह गुजराती मुसलमान उसे गूजरी कहते थे। अमीन ने लिखा है—

आरम्भ में\*—

अवल तारीफ<sup>१</sup> सुन खालिक<sup>२</sup> की ऐ यार । कि वह दोनों जग का है करनहार ॥  
सुनो मत्लब<sup>३</sup> रही अब यो अमीका । लिखे गूजरि मने<sup>४</sup> युसुफ-जुलीखा ॥

अन्त में†—

जमाने शाह औरगजेब के में । लिखी युसुफ-जुलेखा कू अमी मै ॥  
इलाही<sup>५</sup> तू ऐसा आदिल<sup>६</sup> शहशाह । रखे जब लग रहे कायम मेहर-माह<sup>७</sup> ॥  
अमी ने गूजरी की सो यों कर । कि अपने तै रहे दुनियाँ के भीतर ॥  
वजूदी<sup>८</sup> है सो हो जायेगा खाक<sup>९</sup> । नही पावे सो धौदा जीवन पाक ॥  
निशानी तब रहेगी ए सखुन<sup>१०</sup> है । जो कुछ बोला अमी मीठी वचन रे ॥  
अमी कू है उमीद इतनी ऐ यारो । पढो सो फ़ातिहा<sup>११</sup> सो ना विसारो ॥  
बरकत तो तुमारीसों खलासी<sup>१२</sup> । कछु पावे अमी बेचारा आसी<sup>१३</sup> ॥

(क) जुलेखा का प्रेम‡—

देखी सूरत अजीजे-मिस्र<sup>१४</sup> की जब । पड़ी धरती उपर पिछडाय<sup>१५</sup> कर तब ॥  
कि वावेल्ला कि वावेल्ला<sup>१६</sup> कर दाई । बखत<sup>१७</sup> रबने मेरे औधे लिखाई ॥  
वे तो कुछ और था एतो है कुछ और । एतो दुश्मन रहे उस दोस्तके ठौर ॥  
हमे वे कब मिले गम मुझ नयन दरस । अरे है-हात<sup>१८</sup> और अफसोस अफसोस ॥  
हमे क्योंकर मिलेगा मुजसों बे शाह । हजार अफसोस और सद<sup>१९</sup> आह सद आह ॥  
गया वह गंज<sup>२०</sup> और यह रह गया साँप । (कि) सूरत देख चढ़ी मुँज धोज और काँप ॥

\* यु० द० म०, पृ० ३३९।

१. प्रशंसा, २. स्रष्टा, ३. अभिप्राय, ४. गुजराती में।

† वही, पृष्ठ ३४१।

५. भगवान्, ६. न्यायी, ७. सूर्य-चाँद, ८. होनेवाला, ९. मिट्टी, १०. वाणी,  
११. कुरान का एक सूक्त, १२. मुक्ति, १३. पापी।

‡ वही, पृष्ठ ३४०-४२।

१४. मिस्र का मन्त्री, १५. पछाड़ खा, १६. हल्ला, १७. भाग्य, १८. हाय-हाय,  
१९. सौ (शत), २०. खजाना।

जुलेखा की हकीकत<sup>१</sup> अब सुनावे । जुलेखा फिरके युसुफ कौन पावे ॥  
 जुलेखा बेखबर<sup>२</sup> फिरती रती थी । इशक<sup>३</sup> का धाव वो ऊपर सती<sup>४</sup> थी ॥  
 कधू<sup>५</sup> घरमें कधू जगलमें जाती । वे मेहनत<sup>६</sup> के दिनों को या गँवाती ॥  
 गई थी एक दिन जाल के भीतर । चली थी उस जगे सो आपने घर ॥  
 अया जब राह युसुफ का बाजार । जुलेखा ने सुया तब शोर बसियार ॥  
 लगी पूछन कि "ए क्या शोर है रे । कहाँ मुझ क्या ऐ दौरा दौर" है रे ॥"  
 जुलेखा ने सो तब पर्दा उठाकर । सूरत<sup>७</sup> युसुफकी नजरो बीच ल्याकर ॥  
 पिछाना है वही दिलियार जानी । कि जिसकागन हूँ फिरती थी दिवानी ॥  
 युसुफ (का) देखकर रोई पुकारी । पडी हो बेखबर कर करके जारी<sup>८</sup> ॥  
 सवारीकू सताबी<sup>९</sup> लेके भागे । जुलेखाकू ले आये घरके आगे ॥  
 उतारे घरमने<sup>१०</sup> जब हुइ खबरदार<sup>११</sup> । पूछी तब दाईने उसको गुप्तार ॥  
 "तेरी फिर अबल और सुबका<sup>१२</sup> गई थी । ऐसीतू बेखबर क्यूं हो रही थी ॥"  
 कहा तब "वो गुलाम है यार मेरा । उसी ऊपर हूँ दिल्का प्यार मेरा ॥

### § २९ वज्दी (१७०३ ई०)

शेख वजीहुद्दीन 'वज्दी' करनूल के निवासी औरगजेब के अन्तिम समय का कवि था ।  
 इसने तीन कथा-काव्य (मस्नवियाँ) लिखी—'तोहफये-आशिका' (१७०३ ई०), 'बागे-  
 जा-फंजा' (१७३२ प्रमोद-उद्यान) और 'पछीनामा' या 'पछीवाचा' (१७३२) । इनमें  
 पहिले और तीसरी प्रसिद्ध सूफी सन्त फरीदुद्दीन अत्तार की फारसी मस्नवियों के अनुवाद  
 हैं । वज्दी का दीवान (कविता-संग्रह) भी सुना जाता है । इनके कुछ पद्य इस प्रकार हैं\*—

चचलका आज बिछुड़ा<sup>१</sup> मुज उपर भागी हुआ याराँ ।  
 तो में इम दो जगतसेती निराधारी हुआ याराँ ॥  
 हमारी बुत-परस्ती<sup>२</sup> कू नही समझे अझूँ<sup>३</sup> जाहिद<sup>४</sup> ।  
 बराये-कुफ सत दी क् तु पुजारी हुआ याराँ ॥  
 नको<sup>५</sup> बह वज्दिमा अपन्याँ निपट शब-बस्ल<sup>६</sup>—क्याँ वाताँ ।  
 कते है लोग सब तुजकू कि जुधारी<sup>७</sup> हुआ याराँ ॥  
 गई है उग्र सब मेरी सदा सूत-परस्ती में<sup>८</sup> ।  
 सुट्या है हुस्न<sup>९</sup> का मद मुज सो हुशियारी<sup>१०</sup> ते मस्ती में ॥  
 निकल जा वज्दिमा शेखीके शेब्याँ<sup>११</sup> के झज<sup>१२</sup> सेती ।  
 अगर मकसूद-खुद<sup>१३</sup> हामिल<sup>१४</sup> किया है बुत-परस्ती मे ॥

१ बशा, २ बेहोश, ३ प्रेम, ४ सहती, ५ कभी, ६ परिश्रम, ७ दौडा-दौडी,  
 ८ रूप, ९ रोदन, १० जल्दी, ११ घरमें, १२ होना में, १३ कहाँ ।

\*त उ म, पृष्ठ ६०-६१ ।

१४ वियोग, १५ मूर्ति-पूजा, १६ आज भी, १७ भक्त पुजारी, १८ नहीं ही,  
 १९ मिलन-पामिनी, २० जन्तुधारी, २१ दफ-पूजा, २२ सौ-दर्प, २३ होना में होना,  
 २४ तरीके, २५ झझट, २६ अपना लक्ष्य, २७ प्राप्त ।

‘पंछीवाचा’ वज्दी की लोकप्रिय पुस्तक है। इसके लिखने की प्रेरणा के बारे में वह लिखता है\*—

था वले<sup>१</sup> जो फारसीमें ओ कलाम<sup>२</sup>। कम समज सकते है उसकूँ खल्केआम<sup>३</sup> ॥  
गर्चे मै यो कुछ नही मानी शिनास<sup>४</sup>। काँ मुँजे उसकूँ समझनेका कयास<sup>५</sup> ॥  
लेकिन इसकूँ देखकर दिल चुप-न-बोल<sup>६</sup>। यक-ब-यक यों दिल्लमें आया कलोल ॥  
जी मुवाफिक<sup>७</sup> फ़हम<sup>८</sup> अपनेके जईफ़<sup>९</sup>। इस किताबे खासा<sup>१०</sup> का नज़्मेशरीफ<sup>११</sup> ॥  
क़स्द<sup>१२</sup> कर दखिनी जबाँमें लेके आउँ। ता रहे दुनियाँ में मेरा भी (तो) नाँव ॥  
पस मदद मँग शेख<sup>१३</sup> की अरवाह<sup>१४</sup> सों। ... .. ॥  
मै कलम जारी किया औराक़<sup>१५</sup> पर। जब हुआ पूरा यो नज़्मे मुस्तसर<sup>१६</sup> ॥  
नाँव इसका पंछीवाचा मै किया। यादगारी खल्के-आलम<sup>१७</sup> पर<sup>१८</sup> किया ॥

समाप्त करते हुए—

इसमें आरब मेरा होता है यो काम। शुक्र है जो हुई पंछीवाचा तमाम<sup>१९</sup> ॥

कथारम्भ करते कहा गया है †—

एक दिन सब जगके पंछी जानपर। मिलके भइ<sup>२०</sup> जमा हो यक ठार पर ॥  
शौक सों दिलकी लगे मुर्गोलने<sup>२१</sup>। यक-यकसते राज दिलका बोलने ॥  
नागहाँ<sup>२२</sup> बातों में निकली बात यों। जे पँख्याँ मे बादशा कोई न क्यों ॥  
है हरेक फिके<sup>२३</sup> में हर यक बादशाह। नहिं हसनकूँ बादशाह सो क्या गुनाह ॥  
स वजा<sup>२४</sup> पछी लगे करने विचार। बोल उट्ठा उसमे हुदहुद नामदार ॥  
“ऐ अजीजों<sup>२५</sup> बात यों करते थे क्या। दिलमें चुप विसवास यों धरते थे क्या ॥  
के पड़े है इस वजा गफलतमने। कुफ़ है यो मुल्क होर मिल्लत मने<sup>२६</sup> ॥  
कुफ़<sup>२७</sup> सों तोबा<sup>२८</sup> करो तोबा करो। वादशा की जातमे<sup>२९</sup> शक ना धरो ॥

‘छीवाचा’ के कुछ नमूने ‡—

हिंदुआँ में कोई राजा था गभीर। के हुआ महमूद सुल्ताँका असीर<sup>३०</sup> ॥  
लेके आये ज्यों उसे महमूद-पास। दीनसो कीते नबी<sup>३१</sup> के रू-शिनास<sup>३२</sup> ॥

\* यु. द. म., पृष्ठ ३६८-६९।

१. लेकिन, २. कृति, काव्य, ३. साधारण लोक, ४. समझ, ५. सामर्थ्य, विचार,  
६. मौन, नीरव, ७. अनुसार, ८. समझ, ९. निर्बल, १०. विशेष, ११. उत्तम छंद,  
१२. इरादा, १३. स्थायी गुरु, १४. आत्मा, १५. पृष्ठों, १६. संक्षिप्त पत्र, १७. दुनिया,  
१८. हे भगवन्, १९. समाप्त।

† यु. द. म., पृष्ठ ३६८।

२०. हुए, २१. कलरव, २२. संयोग से, २३. वर्ग, २४. प्रकार, २५. प्यारो,  
२६. जाति में, २७. इस्लाम-विरोध, २८. क्षमापन, २९. व्यक्ति में।

‡ उ. श., पृष्ठ २६६-६७।

३०. बंदी, ३१. पैगम्बर मुहम्मद, ३२. परिचित।

जब हुआ इस्लाम सो जो आशना<sup>१</sup> । दिल दो आलम<sup>२</sup> सो किया अपने जुदा ॥  
 एकला जा वैस गोशब के मझार<sup>३</sup> । रात दिन रोने लग्या जब जार-जार<sup>४</sup> ॥  
 कुछ न था काम उरसकुं र-अज<sup>५</sup> भोजो-आह<sup>६</sup> । रोज उसका रातमो बदतर<sup>७</sup> मियाह ॥  
 सोजो-जारी जब गये हृदमा गुजर । हुइ बजा<sup>८</sup> महमूद सुल्तां कूं सवर ॥  
 बस बुला राजाकुं शाहे-नामदार<sup>९</sup> । मेहबानीसा कया<sup>१०</sup> "तूं कयो है जार ॥  
 मैं तुजे देऊंगा एता कुछ मुल्को-माल । जे तूं यक सायत<sup>११</sup> मैं हो जाये निहाल ॥  
 ऊन को इस घात ऐ राजा गैभीर । दुपमने<sup>१२</sup> अपना नको गालो सरीर" ॥  
 बस लग्या कहने कूं राजा शाह सो । "मैं रोता नै जो मुल्को-माल मो ॥  
 सोजो-जागी है मुजे इसके सबव । जे कयामत<sup>१३</sup> मैं करेगा या च ख<sup>१४</sup> ॥  
 ऐ मेरे बदअहद<sup>१५</sup> वदे बे-वफा<sup>१६</sup> । किस बजा<sup>१७</sup> कीता है तूं ऐमा जफा<sup>१८</sup> ॥  
 नै किया तूं याद मेरा तो लगूं । तुझमने सुल्तान आया जो लगूं ॥  
 जब किया लश्करकशी<sup>१९</sup> तेरे पे ओ । आसरा मेरा लिया ऐ जिब्त-ख<sup>२०</sup> ॥  
 नै किया तूं याद लश्कर में मुंजे । दोस्त नमझूं या कि दुश्मन कर तुझे ॥  
 गर लगूं तुजसो जफा मुजमो वफा<sup>२१</sup> । या वफादारीमने<sup>२२</sup> है कया रवा ॥  
 शमसारी<sup>२३</sup> है मुंजे इस बातकी । सोज<sup>२४</sup> दिनका होर जारी<sup>२५</sup> रातकी ॥

(क) बनावटी आशिक\*—

एक आशिक<sup>१</sup> था दिवाना बेखबर<sup>२</sup> । सो रह्या था नीदमें यक गौर<sup>३</sup> पर ॥  
 अज-कजा<sup>४</sup> माशूक<sup>५</sup> निबल्या एक वहाँ । नीद मे आशिक कूं देख्या नागही<sup>६</sup> ॥  
 पस (बहुरत) यव लिखको उमके बदमो । वाँधकर जाता रह्या आनदमा ॥  
 आशिक उठकर ओ चिठी देख्या जा खोल । यारके पतसो दिमे उसमें यो वोल ॥  
 "ऐ दिवाने इस बजा<sup>७</sup> सोता है कया । उठ जो सीदागर है तूदूका पे जो ॥  
 होर अगर जाहिद<sup>८</sup> है तो बेदार रह । बदगीमे सब अपस हुशियार रह ॥  
 भी जो आशिक है तो मोता है गजब । नीद चसमे आशिकके आये कब ॥  
 मर्द आशिक तो सदा बेदार<sup>९</sup> अछै<sup>१०</sup> । दिनकूं हँरी<sup>११</sup> रातकूं हुशियार अछै ॥  
 इश्क में मोना तुजे सर महूल<sup>१२</sup> है । आशिकी के बस्व<sup>१३</sup> में ना-अहल<sup>१४</sup> है ॥

१ परिचित, २ उभय लोक, ३ कोने, एकांगत, ४ फट-फट, ५ सिवाय, ६ जलन-  
 हाय, ७ अधिक बुरा, ८ अनतर, ९ नाम, १० कहा, ११ घडी, १२ डुल में, १३ प्रलय,  
 १४ भगवान्, १५ असत्यसध, १६ नमकहराम, १७ प्रकार, १८ जुल्म, १९ सैनिक  
 आक्रमण, २० बदचलन, २१ भक्ति २२ अनुरक्ति में, २३ सज्जित होना, २४ जलन,  
 २५ रोना।

\* उ० श०, पृ० २६७।

२६ प्रेमी, २७ पागल, बेहोश, २८ विचार, २९ देव से, ३० प्रियतमा,  
 ३१ एकाएक, ३२ प्रकार, ३३ भवत ३४ जाग्रत, ३५ रहे, ३६ परेशान, ३७ आसान,  
 ३८ पेशा ३९ अयोग्य।





चाहते थे, अपने आपको सूफी प्रकट करते हैं। उन लोगों को दैनिक धार्मिक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं रहती।\*

“इससे हमारा अभिप्राय यह नहीं कि बली नास्तिक था। मुसलमानों के दोनों बड़े सम्प्रदाय, अर्थात् सुन्नी और शिया दोनों में से हरेक बली को अपने सम्प्रदाय का गिनता है। बली की योग्यता के सम्बन्ध में पक्ष-विपक्ष में बितने ही विचित्र तर्क किये गये हैं। यह विचार आता है कि उसका अरबी-फारसी का ज्ञान बहुत ही सीमित था और इसी कारण से उसकी कविता में अशुद्ध अरबी और फारसी शब्द पाये जाते हैं। वस्तुतः यह दोषारोपण ठीक नहीं है। बली अपने समय का सच्चा प्रतिनिधि था। उससे यह आशा रखनी कि वह शब्दा का प्रयोग उम्मी तरह करेगा, जैसा आज किया जाता है, अनुचित है। लखनऊ के कविया ने उर्दू-कविता में अरबी और फारसी के शब्दों के प्रयोग करने के लिए जो अविद्वत्ता-पूर्ण नियम बनाये थे, बली के समय वह प्रचलित नहीं थे। बली से पहिले के और उसके समकालीन कवि स्वाभाविक कवि थे, जो केवल कविता के रस से आप्लावित होने के लिए पद्य कहा करते थे। उनका उद्देश्य शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करके अपनी कविता को अरबी और फारसी भाषा के ज्ञान की चिन्ता से बचाना या कोश तैयार करना कदापि नहीं था। और भी, कि वह जिम भाषा का प्रयोग करते थे, वह उनके समकालीनों की बोलचाल की भाषा थी। वह अरबी और फारसी-भाषा में शब्द नहीं लेते थे, बल्कि दिन प्रतिदिन माध्याह्न तीर पर बोलचाल में जो शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, उन्हीं को इस्तेमाल करते थे। बली के दीवान में कई प्रकार की कविता के नमूने हैं—८५० गजले, भिन्न-भिन्न प्रकार के उद, ६ कमीदे, २ मन्मवियाँ, (कथा-काव्य) और २५ रूमाइयाँ (चौपदे) हैं। लेकिन, मीर और गालिब की तरह उसकी प्रसिद्धि निभर करती है गजला ही पर। उनमें कविता के उत्कृष्ट गुण विद्यमान हैं। प्रेम और शृंगार में उसकी गजले मीर और दद से, स्वतन्त्र विचार में गालिब और हाफिज से और सौन्दर्य चित्रण में नजीर की गजलों से मिलती-जुलती हैं।”

बली के दीवान (काव्य-संग्रह) में ४००० के करीब अर्थालियाँ हैं।

## २ कविता

### (१) गुजरात-विषयों—

गुजरातके फिराक' सा है खार-खार' दिल । यताव' है सुनेमने' आतिलवहार' दिल ॥  
मरहम नहीं है इसने जलमवा जहाँमने । शम्शोरे-हिज्र' मो जो हुआ है फिगार' दिल ॥  
अव्वल' सा था जईफ' यह पावस्ता' मौज' में । ज्यो वात है अगिनके उपर बेकरार' दिल ॥  
इम सँरवे नगे सो अवल तर दिमाग था । जादिरकुँ इसफिराक मे सीचा खुमार' दिल ॥  
मेरे सुनेमे आके चमन देख इस्क वा । है जोश-ख' सो तनमें मेरे लालाजार दिल ॥

\* उर्दू शहपारे, पृ० १५०, (शब्दों में रूपान्तर करके) ।

† उ० श०, पृष्ठ २७० ।

१. विषय, २ काँटा-काँटा, ३ अधीर, ४ शूय में, ५ आग बरसता, ६ विषय के लड़ग, ७ घामल, ८ प्रथम, ९ निर्बल, १० पादनिगडित, ११ जलन, १२ मदालसता, १३ खून के उबाल ।

हासिल<sup>१</sup> किया हूँ जगमें सरापा<sup>२</sup> शिकस्तगी<sup>३</sup> । देखा है मुझ शकीबे<sup>४</sup> हों सुब्हेबहार<sup>५</sup> दिल ॥  
हिजरत सों दोस्ताँके हुआ जी मेरा गुजर । इश्रत<sup>६</sup>के पैरहन<sup>७</sup>कुं दिया तार-तार दिल ॥  
हर आशाना<sup>८</sup>की याद<sup>९</sup>की गर्मीसों तनमने<sup>१०</sup> । हरदममें बेकरार<sup>११</sup>है मिस्ले-शरार<sup>१२</sup>दिल ॥  
सब आशिकाँ<sup>१३</sup>हजूर अच्छे पाक सुखरू<sup>१४</sup> । अपना अपस लहूसों किया है फ़िगार दिल ॥  
हासिल हुआ है मुजकुं समर<sup>१५</sup>मुज-शिकस्त<sup>१६</sup>सों । पाया है चाक-चाक<sup>१७</sup>हो शकले-अनार<sup>१८</sup>दिल ॥  
अफसोस है तमाम कि आखिरकुं<sup>१९</sup>दोस्ताँ । इस मैकदे<sup>२०</sup>सो उसके चला सुध बिसार दिल ॥  
लेकिन हजार शुक्र वली हकके फ़ैज<sup>२१</sup>सों । फिर उसके देखनेका है उम्मेदवार दिल ॥

(२) सूरत शहर—\*

अजब<sup>२२</sup>शहरोंमे है पुरनूर<sup>२३</sup>यक शह्र । विला शक<sup>२४</sup>वह है जगमें मक़सदे-दह्ल<sup>२५</sup>॥  
अहै मशहूर उसका नाम सूरत । कि जावे जिसके देखे सब कदूरत<sup>२६</sup>॥  
जगतकी आँखका गोया<sup>२७</sup>है यह नूर । अच्छे<sup>२८</sup>इस नूरसो हर चश्म-बद<sup>२९</sup>दूर ॥  
शहर ज्यों मुन्तखिब<sup>३०</sup>दीवान<sup>३१</sup>है सब । मलाहत<sup>३२</sup>की वह गोयाखान है सब ॥  
सुरज सुन आग उसकी जगमे काँपा । समुंदर मौज जन<sup>३३</sup>रग-रगमे काँपा ॥  
किनारे उसके यक दरियाय-तपती<sup>३४</sup> । कि दुनियाँ देखने कुं उसके टपती ॥  
किया सब तनखलालत<sup>३५</sup>सो यह ज्यों अर्क । हुआ दरिया<sup>३६</sup>अपसके अर्कमें गर्क ॥  
शहरसों है वह हम-वाजू<sup>३७</sup>हमेशा । दरयाँसो है वह हम पहलू<sup>३८</sup>हमेशा ॥  
कि आबे-खिज़्र<sup>३९</sup>की है उसमे तासीर<sup>४०</sup> । हवा देती है उसकी याद कश्मीर ॥  
अजब किल्ला है वहाँ यक बाकरीना<sup>४१</sup> । अंगूठीमें दुन्याके ज्यों नगीना ॥  
नजिक किल्लेके बाडाघाट है वाँ । कि दायम गुलरुखाँ<sup>४२</sup>की हाट है वाँ ॥  
अहै इस हाशिये<sup>४३</sup>पर जाय-आराम<sup>४४</sup> । तिलस्मी<sup>४५</sup>बागवाँ होता है हरशाम ॥  
ऐ बुलबुल, पाकबीनी<sup>४६</sup>सों नजर<sup>४७</sup>कर । कसाफत<sup>४८</sup>की नजरसो बसहज़र<sup>४९</sup>कर ॥  
खुले है हर तरफ रुखसार<sup>५०</sup>के गुल । हरेक गुल के नजिक वाँ पर है सुंबुल<sup>५१</sup>॥  
जो कोई देखा है उनका बाग-रुखसार<sup>५२</sup> । हुआ यक दीद<sup>५३</sup>में वह मह्व<sup>५४</sup>दीदार<sup>५५</sup>॥  
जो है वह महज तस्वीराते-इख्लास<sup>५६</sup> । सो आशिकपर्वरी में हैच<sup>५७</sup>है खास ॥

१ प्राप्त, २. सिर से पैर तक, ३. परास्तता, ४. सन्तोष, ५. वसन्त का प्रातः,  
६. प्रमोद, ७. परिधान, ८. मित्र, ९. स्मृति, १०. शरीर में, ११. अधीर, १२. अंगारे की तरह,  
१३. प्रेमी, १४. भाग्यशाली, १५. फल, १६. मेरी हार, १७. टुकड़े-टुकड़े, १८. अनार-जैसी,  
१९. अन्त में, २०. मद्यशाला, २१. सत्य (भगवान्) की दया ।

\*उ० श०, पृ० २७० ।

२२. अद्भुत, २३. प्रकाशपूर्ण २४. निस्तंदेह, २५. जग की अभिलाषा, २६. मलिनता,  
पाप, २७. मानो, २८. रहो, २९. कुदृष्टि, ३०. चुना, ३१. संग्रह ३२. मधुरता, ३३. तरंगायित,  
३४. तापती, नदी, ३५. लज्जा, ३६. समुद्र में, ३७. पास में, ३८. पार्श्व, ३९. अमृत,  
४०. प्रभाव, गुण, ४१. नियमपूर्वक ४२. गुलाबमुखियाँ, ४३. किनारी, ४४. सुखस्थान,  
४५. जादू का, ४६. पवित्र दृष्टि, ४७. देख, ४८. मालिन्य, पाप, ४९. संयम, ५०. भाल,  
५१. तमाल-जैसा पौधा, ५२. गाल, ५३. दृष्टि, ५४. विभोर, तन्मय, ५५. दर्शन,  
५६. प्रेम-मूर्ति, ५७. प्रेमी पर दया में प्रत्येक ।

वहाँ है साकिये<sup>१</sup> इक्ष्वाकु - अगेज<sup>२</sup> । मुहूर्ध्वत की करे मे<sup>३</sup> मुझ उपर रेज<sup>४</sup> ॥  
 सफाईसो खिले मुझ-जीवना बाग । कलें उस दद-मैकूँ मरहमे-दाग<sup>५</sup> ॥  
 अहँ सूरत हकीकत<sup>६</sup> की निगानो । कि है मामूर<sup>७</sup> वाँ अहठे-मथानी<sup>८</sup> ॥  
 शराफत<sup>९</sup> में यह है ज्यो बाये-मक्का<sup>१०</sup> । तो है सब मुल्क पर उमका जो मिवका ॥  
 अगर देखे मुलूकवाँ शामो - तवरेज । न देखा को ऐमा मुन्व जयोज<sup>११</sup> ॥  
 कि इस भीतर कते ऐमे है तुज्जार<sup>१२</sup> । कि वालें कूँ नही उनके नजिक वार ॥  
 एते आतिशपरस्ती<sup>१३</sup> की है बम्नो । गिगये नमरुद वाँ आतिशपरस्ती<sup>१४</sup> ॥  
 फिरगी<sup>१५</sup> इममें इत्ते है कुलहपोरा<sup>१६</sup> । अदद<sup>१७</sup> वा जिनकी गिनतीमें है वैहोय ॥  
 वहाँ साकिन<sup>१८</sup> एते है अहले - मजहब<sup>१९</sup> । कि गिनती में न आवें उनके मुश्रिव ॥  
 अगचें सब है वह इन्नाय-आदम<sup>२०</sup> । बले वीनम<sup>२१</sup> में रगारग आलम<sup>२२</sup> ॥  
 भरी है मीगनो<sup>२३</sup>-सूरत<sup>२४</sup> सो सूरत । हरेय सूरत है वाँ तम्बीर मूरत ॥  
 खतम<sup>२५</sup> है अमूरदा<sup>२६</sup> पर ओ मफाई । वठे है वेदतर<sup>२७</sup> हुस्ने-निमाई<sup>२८</sup> ॥  
 मभा इन्दरकी है हरयव वदममें । छुपा इन्दरमभाको ले अदम<sup>२९</sup> में ॥  
 किशन की गोपियाँ की नै हैयह नस्ल<sup>३०</sup> । रहें सब गोपियाँ वह नकल<sup>३१</sup> यह अस्ल ॥  
 हजारा इम मवव<sup>३२</sup> शैदा<sup>३३</sup> है बुलुल । कि है वाँ गुंचेलव<sup>३४</sup> दायमा<sup>३५</sup> गुल<sup>३६</sup> ॥  
 नकइ एक रकुकन सो सीवे शीत<sup>३७</sup> चचल । वह मुखके वाग कन<sup>३८</sup> दीवार जचल ॥  
 नजर भरकर दखो हर गुलजदनकूँ । कि है पदये मे वेपर्दा उनकूँ ॥  
 रहे वाँ जाशिका<sup>३९</sup> कूँ आम<sup>४०</sup> आवाज । कि नै पदावगैरअज - पदवै - नाज<sup>४१</sup> ॥  
 किसीकूँ नै नजरवाजी<sup>४२</sup> विना चैन । खुठे है रात - दिन सब गकये-नैन<sup>४३</sup> ॥  
 शहर भीतर जो आवे मेहना<sup>४४</sup> का दिन । तिदू की कौम<sup>४५</sup> के अटनान<sup>४६</sup> का दिन ॥  
 हरेक जानिअ<sup>४७</sup> देखू मै फोज - दर - फोज । तजल्ली<sup>४८</sup> के ममुदर की उठे मौज ॥

(३) एक पयिक का प्रेम<sup>४९</sup>—

लागी है लगन तुममों छुडा कौन सकेगा । है चिममें यह कुदरत<sup>५०</sup> ॥

अजब मुजकु वतन अपने ले जा कौन मकेगा । वर दिउसो रफाकत<sup>५१</sup> ॥

१ मद्यवितरक, २ प्रेममय, ३ मद्य, ४ छिडक, ५ जले पर मतहम, ६ सत्यता,  
 ७ भरे, ८ तत्त्वज्ञ, ९ भद्रता, १० मक्के का द्वार, ११ उर्वर, १२ महासेठ,  
 १३ अग्निपूजक पारसी, १४ अग्नि-पूजा, १५ युरोपियन, १६ टोपधारी, १७ सत्या,  
 १८ निवासी, १९ घर्मवाले, २० मनु-सतान, मानव, २१ देखने में, २२ जगत्, २३ आचरण,  
 २४ रूप, २५ समाप्त, २६ छोकरे, २७ अधिकतर, २८ स्त्रैण सौन्दर्य, २९ प्रलय,  
 ३० जाति, ३१ कृत्रिम, ३२ कारण, ३३ सुगव, ३४ अधर-कलिका, ३५ सदा, ३६ गुलाब,  
 फूल, ३७ ढोठ, ३८ पास ३९ प्रेमी, ४० सामाय, ४१ लीला के पदों से, ४२ दृष्टिपात,  
 ४३ नयन में मग्न, ४४ त्यौहार ४५ जाति, ४६ स्नान, ४७ और, ४८ सौन्दर्य।

\*उ श, पृष्ठ २७५।

४९ सामर्थ्य, ५० मित्रता।

है नकश किनारी का तेरे जामेके ऊपर । ऐ हिन्द के बाँके ॥  
 दामन<sup>१</sup> कुँ तेरे हाथ लगा कौन सकेगा । नै जोर नै ताकत ॥  
 हूँ खाक तुम्हारी ही गली का ऐ सिरीजन । नै काम कफ़न सों ॥  
 अब मुझकूँ जनाजे<sup>२</sup> में उठा कौन सकेगा । यों गर<sup>३</sup> है हकीकत<sup>४</sup> ॥  
 मत मारो वली कूँ मैं यह कहता हूँ कहाकर । सुन बात हमारी ॥  
 इस हिज़्र<sup>५</sup> के तूमार<sup>६</sup> कूँ पा कौन सकेगा । विन गम्जा - जराफ़त<sup>७</sup> ॥

(४) अभिलाषा\*--

नको<sup>१</sup> कर आशनाई<sup>२</sup> गैर सों ऐ सीम-तन<sup>३</sup> हर्गिज ।  
 न हो ऐ शमारू<sup>४</sup> हर अजुमन<sup>५</sup> में शोलाजन<sup>६</sup> हर्गिज ॥  
 न मिल नायल हो हर तूती<sup>७</sup> सो ऐ शक्करशिकन<sup>८</sup> हर्गिज ।  
 न मिल हर बुलबुले-मुस्ताक<sup>९</sup> हों ऐ गुलबदन<sup>१०</sup> हर्गिज ॥  
 हरेक गुलशन<sup>११</sup> में ज्यों नर्गिस न खोरे अपने नयन हर्गिज ॥  
 फसीहाँ<sup>१२</sup> खल्क<sup>१३</sup> के सारे तुजे शीरी-वचन<sup>१४</sup> कहते ।  
 पेशानी<sup>१५</sup> रोज-रोशन<sup>१६</sup> और जुलफ़<sup>१७</sup> काली-रयन कहते ॥  
 मुबस्सिर<sup>१८</sup> हो जवाहरके तुजे (सब) दर अदन<sup>१९</sup> कहते ॥  
 जहाँके गुलरुखाँ<sup>२०</sup> सारे तुझे नाजुक - बदन<sup>२१</sup> कहते ॥  
 तु हर पलकाँके काँटाँपर न रख अपने चरन हर्गिज ॥  
 सदा मुस्ताक<sup>२२</sup> है तूबा<sup>२३</sup> तेरे क़द<sup>२४</sup> ज्यों सनोवर<sup>२५</sup> का ॥  
 तजल्ली<sup>२६</sup> में तेरा यह मुख अहै खुर्शीद<sup>२७</sup> महशर का ॥  
 दहन<sup>२८</sup> तेरा सो खैर-अंजाम<sup>२९</sup> है यह जामे - कौसर<sup>३०</sup> का ।  
 तु बेशक रूह<sup>३१</sup> हक जगमें खुलासा<sup>३२</sup> चार अंसर<sup>३३</sup> का ॥  
 बजुज<sup>३४</sup> तुज रूह के कायम<sup>३५</sup> न हो जगका बदन<sup>३६</sup> हर्गिज ॥३॥  
 दो रुखसार<sup>३७</sup> ते रोशन यह दो अनवर<sup>३८</sup> सितारे है ।  
 तेरे चंचल नयन आगे चिका<sup>३९</sup> क्या चेकारे<sup>४०</sup> है ॥  
 अजीजाँ<sup>४१</sup> मिस्रके सारे तेरी खातिर सँवारे है ॥

१. अंचल, २. अरथी, ३. यदि, ४. सत्य ५. वियोग, ६. राशि, ७. कटाक्ष-लालित्य ।

\*उ० श० पृ०, २७६ ।

८. नहीं, ९. मित्रता, १०. रुपहला शरीर, ११. दीपमुख, १२. सभा, १३. ज्वलित, १४. तोता, १५. शक्कर तोड़नेवाला, मधुर, १६. प्रेमी बुलबुल, १७. गुलाब-मुख, १८. फुल-वाड़ी, १९. वाणी-लिपुण, २०. दुनिया, २१. मधुरवचन, २२. ललाट, २३. प्रकाशमान दिन, २४. अलक, २५. प्रभाववाला, २६. स्वर्ग में, २७. गुलाबमुखियाँ, २८. कोमलांगी, २९. प्रेमी, मुग्ध, ३०. कल्पवृक्ष, ३१. आकृति, ३२. पद्मवृक्ष, ३३. सौन्दर्य, ३४. प्रलय, ३५. मुख, ३६. परिणाम, फल, ३७. स्वर्ग-निर्झर का प्याला, ३८. आत्मा, ३९. सार, ४०. महाभूत, ४१. विना, ४२. मौजूद, स्थायी, ४३. शरीर, ४४. गाल, ४५. प्रकाशमान, ४६. किस काम के, ४७. मंत्री, सुन्दर ।

जुलैवा से केते आशिक<sup>१</sup> ते पर जीव वारे है ॥  
 न कर मसक्त<sup>२</sup> हरेक युसुफका यह चाहेजकन<sup>३</sup> हगिज ॥  
 तु है महवूव<sup>४</sup> आलमका वले<sup>५</sup> आलम<sup>६</sup> सो हो मकसू<sup>७</sup> ।  
 तु महवूवा<sup>८</sup> में उन्का<sup>९</sup> है नको<sup>१०</sup> दिखला किसी को ॥  
 जो आतिशदा<sup>११</sup> किया दिलकू<sup>१२</sup> वी लेजा वा<sup>१३</sup> जुन्फ अवर<sup>१४</sup> तू ॥  
 वगैर-अज<sup>१५</sup> ईद मत दिखला किसीकू<sup>१६</sup> मह हलाल<sup>१७</sup> अवम्<sup>१८</sup> ॥  
 न मिल महताव<sup>१९</sup> में भी किससा ऐ चदरवदन हगिज ॥

## (५) सुन्दर से\*—

मत तुस्के शोले<sup>१</sup> सा जटतेकू<sup>२</sup> जलाती जा ।  
 टुक मेह<sup>३</sup> के पानी सो यह जाग बुझाती जा ॥  
 तुज चाल की कीमतमी नै दिल है मेरा वाकिफ<sup>४</sup> ॥  
 ऐ नाज-भरी<sup>५</sup> चचल टुक भाव बताती जा ॥  
 इस रैन अंधेरी मे मत भूल परा निस सो ।  
 टुक पाँवके विछुओकी आवाज मुनाती जा ॥  
 मुज दिलके कव्तर कू फकडा है तेरी तट ने ।  
 यह काम धरम का है टुक इसकू छुडाती जा ॥  
 तुज मुखकी परस्तिश<sup>१</sup> में गइ उम्र मेरी सारी ।  
 ऐ वुतकी वचन हारी इस वुतकू वचाती जा ॥  
 तुज इश्कमे दिल चलकर जोगी की लिया सूरत ॥  
 मक्वार अरे मोहन छाती सा लगाती जा ॥  
 तुज धरकी तरफ सुदर आता है वली दायम्<sup>३</sup> ।  
 मुस्ताक<sup>४</sup> है दर्शन का टुक दरम दिखाती जा ॥

## (६) विरह की नारी—

यह विरहकी तार क्यों के जावे । चलने की पुकार क्या के जावे ॥  
 जादार की पार क्यों के जावे । दिले यार<sup>१</sup> को छी<sup>२</sup> क्यों के जावे ॥  
 जल्मी<sup>३</sup> है, शिकार क्यों के जावे ॥  
 भरता हूँ जहाँ वो जग मो हजार । इम वदम<sup>४</sup> आ हुआ हूँ लाचार<sup>५</sup> ॥  
 क्याकर हो विरहमें मस्तहुशियार<sup>६</sup> । जब लग न मिले शराबे-दीदार<sup>७</sup> ॥

१ प्रेमी, २ निवासी, ३ छोड़ी का गड्ढा, ४ प्रियतम, ५ लेकिन, ६ दुनिया, ७ एक ओर, ८ दिव्य, ९ नहीं, १० मख, ११ अग्निधारी, १२ सुगन्धित रत्न, १३ बिना, १४ खण्ड-शशि, १५ झू, १६ चाँद ।

\*उ० श०, पृष्ठ २७७ ।

१७ ज्वाला, १८ दया, १९ जानकार, २० लीलामयी, २१ पूजा, २२ सदा, २३ सुगंध ।

१४ यु व म, पृष्ठ ४८८ । २४ प्रियतमा के हृदय, २५ छाया, २६ घायल, २७ बेघा, २८ बेबस, २९ होश में, ३० दर्शन-मदिरा ।

अंखियाँका खुमार<sup>१</sup> क्यों के<sup>२</sup> जावे ॥

जब इश्ककी फौजने आइ घेरा । हैरां हुआ ह्वास<sup>३</sup> मेरा ॥  
उस दिनसों हुआ हुं तेरा चेरा । यकसाँ<sup>४</sup> है हमेशा हुस्न<sup>५</sup> तेरा ॥  
जन्नतसों बहार<sup>६</sup> क्योंके जावे ॥

यह दिल ते<sup>७</sup> देखने को रोवै । हर शामो- सुबह में तिल<sup>८</sup> न सोवै ॥  
यह उम्र<sup>९</sup> अजीज<sup>१०</sup> गम<sup>१०</sup> में खोवै । आँखों की अगर मदद न होवै ॥  
मुझ दिलका गुवार<sup>११</sup> क्यों के जावे ॥

आशिक की यही है जगमे वानाँ<sup>१२</sup> । माशूक<sup>१३</sup> के नाँव पर बिकानाँ ॥  
नै काम हरेक का इसमें आना । मुमकिन<sup>१४</sup> नही अब वली का आना ॥  
है आशिके - जार<sup>१५</sup> क्योंके जावे ॥

(७) प्रियतम से\* ---

ऐ यारे मन बहला हैगा । बीच उसके बहुत जफ़ा<sup>१६</sup> हैगा ॥  
जाने-मन<sup>१७</sup> उस परउ फ़िदा<sup>१८</sup> हैगा । . . . . . मुव्तला<sup>१९</sup> हैगा ॥  
इश्कवाजों<sup>२०</sup> बी शका<sup>२१</sup> हैगा ॥

जाने-मन इस तरफ<sup>२२</sup> तूँ आया कर । एक दो बात खुश<sup>२३</sup> सुनाया कर ॥  
हर किसीकूँ गले न लाया कर । बात कह कर सभी भुलाया कर ॥  
इसमो<sup>२४</sup> तेरा बहुत भला हैगा ॥

जाने-मन हरकहुँ<sup>२५</sup> फिरा मत कर । सुखन - वन<sup>२६</sup> कहुँ सुना मत कर ॥  
वाँका<sup>२७</sup> वो गुंडा<sup>२८</sup> सों मिला मत कर । इन दखलवाज<sup>२९</sup> कूँलिया मत कर ॥  
जाँकि<sup>३०</sup> वसियार<sup>३१</sup> वेहुदा हैगा ॥

तुहमताँ<sup>३२</sup> लोग करते है मुझपर । सब तेरे वास्ते सुने दिलबर<sup>३३</sup> ॥  
तू मेरा यार (है) किसी सों न डर । लाख तलवार गिर पड़े सिरपर ॥  
सिर तेरे राहपर फ़िदा हैगा ॥

वर्ना<sup>३४</sup> खीचूँ (कभू) जो मै तलवार । मुल्क हिन्दोस्ताँ कहुँ गुलजार<sup>३५</sup> ॥  
जिसके सिरपर लगाके माहुँ वार । एकसो दो कहुँ वो दो सों चार ॥



१. मदालसता, २. कैसे, ३. चेतना, ४. एक समान, ५. सौन्दर्य, ६. बाहर, ७. पल, ८. आयु, ९. प्रिय, १०. रंज, ११. धूल, १२. भेस, १३. प्रियतम, १४. संभव, १५. दुःखी प्रेमी ।

\*यु. द. म., पृष्ठ ४८९-९० ।

१६. अत्याचार, १७. मेरे प्राण, १८. नौछावर, १९. फँसो, २०. प्रेम-जुआड़ियों, २१. चतुर २२. इस ओर, २३. अच्छी, २४. इसमें, २५. सर्वत्र, २६. बुरी बात, २७. बदमाश, २८. गुंडा, २९. बीच में दखल देनेवालों, ३०. जहाँ पर कि, ३१. बहुत, ३२. बदनामी, ३३. मनोहर, ३४. नहीं तो, ३५. फुलवाड़ी ।

तेग मेरी सा ला-फना<sup>१</sup> हंगा ॥

दर-कफेयार<sup>२</sup> काफिया तग<sup>३</sup> अस्त<sup>४</sup> । यारे-मन दीदन श्-<sup>५</sup> वमे<sup>६</sup> रगज्जन्<sup>७</sup> ॥

शुक अल्ला<sup>८</sup> कि यार हमरग<sup>९</sup> अस्त । यारेमन दर-अर्हा<sup>१०</sup> अजव रगज्जन्त ॥

रग-वा-रग<sup>११</sup> आयना<sup>१२</sup> हंगा ॥

याद मेरा है हमचु<sup>१३</sup> शीरी<sup>१४</sup> घर<sup>१५</sup> । सारे सुशसूरता मे हंगा नर<sup>१६</sup> ॥

नाम रक्मा हूँ मैं जिसवा अजवर<sup>१७</sup> । मददे-आ<sup>१८</sup> अस्त<sup>१९</sup> मुतजा<sup>२०</sup> हैदर<sup>२१</sup> ॥

दिलरुजा<sup>२२</sup> बूय-दिलरवा<sup>२३</sup> हंगा ॥

ऐ वली तूँ मिसाल<sup>२४</sup> सीमी वर<sup>२५</sup> । हमचु<sup>२६</sup> जोगी हो गश्तअम्<sup>२७</sup> दर-दर ॥

यार मेरा जो हंगा जादूगर । सेह्ल<sup>२८</sup> आँखो भेती किया मुक्षपर ॥

निगह<sup>२९</sup> उसकी में क्या बला हंगा ॥

### § ३१ वली वेल्लोरी (१७२४ ई०)

#### १ कवि

वली औरगावादी के समकालीन इस वली का नाम मयद मुहम्मद फयाज था। इमवे वारे में प्रोफेसर जोर ने लिखा है\*—

“दखिन में दो कवि हुए हैं, जिनका उपनाम वली था। जिससे प्रायः भ्रम पैदा हो जाया करता है। इसमें सन्देह नहीं कि दखिन में एक ही समय दो कवि ऐसे हुए, जिनका उपनाम वली था, किन्तु एक कवि पश्चिमोत्तर भाग, अर्थात् सूना औरगावाद (मराठवाड, हैदरावाद) का निवासी था और दूसरा दक्षिण पू<sup>१</sup> (आन्ध्र) में रहता था, जो अब मद्रास प्रदेश में सम्मिलित है। यद्यपि एक ही समय में दोनों की उन्नति हुई, किन्तु वह स्वयं एक दूसरे के अस्तित्व का जानते नहीं थे। वेल्लोर का वली बहुत धार्मिक आदमी था और अपने जीवन में कवि के रूप में उसे कोई यश नहीं मिला। इसके विरुद्ध औरगावाद का वली अपने समय में मद्रास और हैदरावाद से गुजरात और उत्तरी हिन्द तक में मशहूर था। यह औरगावाद का ही वली है, जिसने दिल्ली तक सफर किया और जो एक उर्दू-शायर के रूप में बहुत मशहूर है।”

वली वेल्लोरी पेशेवर कवि नहीं था। इसका जन्म वेल्लोर के इलाके में हुआ था, और पहिले सातगढ (मद्रास) के सूवेदार हिरासतखा के अधीन सैनिक नौकरी करता था। उसके

१ अविनाशी, २ प्रियतम की हथेली में, ३ बेबसी, ४. है, ५ उसके दाँतों में, ६ बहुत, ७ रग है, ८ भगवान् को धय्यवाद, ९ समान रगवाला, १० ससार में, ११ एक-एक रग से, १२ परिचित, १३ ऐसा, १४ माघुय, १५ लानेवाला, १६ बढ-बढकर, १७ नाम, १८ उसकी सहायता, १९ है, २० इष्ट, अभिलषित, २१ विदारक सिंह (हजरत अली), २२ मनोहर, २३ मनोहर (प्रियतम) की सुगंध, २४ उपमा, २५ चाँदी-जैसा, २६ मानो, यथा, २७ गया हूँ, २८ जादू, २९ दृष्टि।

\*उ श, पृष्ठ १४४। (कठिन शब्दों के हि दी-पर्याय हमारे हैं।—ले०)

वाद वह कड़पा चला गया और वहाँ के सूबेदार (प्रान्तपाल) नवाब अब्दुल् मजीदख़ाँ का बड़ा ही मित्र बन गया, जिसने बहुत सम्मान करते हुए उसे सिघोट में एक ऊँचे पद पर नियुक्त किया। सिघोट वही शहर है, जहाँ इब्ननिशाती के 'फूलवन' का सुन्दर हस्तलेख लिखा गया। वली की मृत्यु १७३७ ई० (११५० हि०) से पहिले अरकाट मे हुई। वही मुहल्ला असदपुर मे उसकी कब्र है। इसने अपना अन्तिम जीवन जागीर चटपेट्टा मे बिताया।

## २. कृतियाँ

वली वेल्लोरी के दो काव्य-ग्रंथों का पता लगा है—

### (१) 'रतन व पदम'—

यह उसी रतनसेन और पद्मिनी की कथा पर आधारित है, जिसे जायसी ने अपनी पद्मावत के लिए लिया, और शायद वली को जायसी के प्रसिद्ध काव्य से भी प्रेरणा मिली। स्प्रिंगर ने इस काव्य की एक प्रति नवाब मैसूर (टीपो सुल्तान) के पुस्तकालय में सौ वर्ष पहिले देखी थी, किन्तु अब वह उपलभ्य नहीं है। यह ४००० अर्धालियों का एक अच्छा बड़ा काव्य था। इसकी कुछ पंक्तियाँ है \*—

- खुदाया<sup>१</sup> तु है पाक<sup>२</sup> पर्वर्दगार<sup>३</sup>। निरंकार वो आघारो अच्छे उतार<sup>४</sup> ॥

अपने आश्रयदाता के बारे में लिखा है †—

हिरासतखां अमीर यक नामवर था। सकूनतगाह<sup>५</sup> उसकूँ सात गढ़ था ॥  
अथा ओ अहल-दर्द<sup>६</sup> वो नेक-आमाल<sup>७</sup>। रफाक़र्त<sup>८</sup> मे अथा मैउसकेखुशहार ॥  
कजार<sup>९</sup> दाँसों हों किस्मतसों बखास्ति<sup>१०</sup>। सो आया मै तरफ कड़पाके घर ख्वास्त ॥  
नवाव अब्दुल्मजीद इब्न<sup>११</sup> अब्दुल्हमीद<sup>१२</sup> एक। अथा वाँ नामवर सूबा सईद<sup>१३</sup> एक ॥  
सो ओ बहरे-शुजा<sup>१४</sup> पर्वाना लिखकर। सलुक (दे) नौकराँ में मन्सबत<sup>१५</sup> कर ॥  
तऐयन<sup>१६</sup> कर मुज सिघवट रवाना। किया वह साहेबे - शीरी जमाना<sup>१७</sup> ॥  
सो हस्बुल्हुकम<sup>१८</sup> मै सिघवट को आया। रंगारग वाँ तमाशे मैने पाया ॥

### (२) 'रौज तुश्शुहदा'—

रौजतुश्शुहदा (धर्मवीरों की कहानी) वली की दूसरी कृति ५५०० अर्धालियों की विशाल मस्नवी (कथा-काव्य) है। मुल्ला हुसेन वायज काशफी ने इसी नाम से एक पद्य-ग्रंथ लिखा था,

\*'दकन में उर्दू', नसीख्दीन हाशमी, हैदराबाद, १९३६ ई०, पृष्ठ २३०-३१।

१. हे भगवान्, २. पवित्र, ३. पालक, ४. अवतार, अद्वितीय।

†त० श० म०, पृ० १४६।

५. निवास-स्थान, ६. पीडित जन, ७. सु-कर्म, ८. मित्रता, ९. संयोग से,  
१०. बहिष्कृत, ११. इच्छा, १२. अब्दुल हमीद का सूत्र, १३. सूबा अधिकारी,  
१४. वीरतापूर्वक, १५. संबंधित, १६. नियुक्त, १७. मधुर समयवाला, १८. आज्ञानुसार।



वली ने उम्मीके आधार पर अपना काव्य लिखा। मूल फारसी और इस किताब में दस अध्याय हैं। इसलिए उसे 'दह-मज्लिस' भी कहा जाता है। इसके दस अध्याय हैं\*—

- १ मुहम्मद की मृत्यु।
- २ मुहम्मद-पुत्री फातिमा की मृत्यु।
- ३ मुहम्मद-जामाता अली की वीरगति।
- ४ फातिमा-पुत्र हुसेन की वीरगति।
- ५ हुसेन के चचेरे भाई अकील-पुत्र मुस्लिम हानी और उमपुत्र मुहम्मद की वीरगति।
- ६ मुस्लिम के लड़कों की वीरगति।
- ७ हुसेन की मक्का से कर्नाला तक की यात्रा और वीरगति।
- ८ हुसेन के साथियों की वीरगति।
- ९ हुसेन के पुत्र और सम्बन्धियों की वीरगति।
- १० कर्नाला-युद्ध-सम्बन्धी कुछ घटनाएँ।

कुछ लेखकों के खयाल में यह पुस्तक मसियो (शोकाजलियों) का मग्रह है, किन्तु इसके शीर्षको को देखने से पता चलता है, कि यह किताब रसूल-बगजा के युद्ध और वीरगतियों का इतिहास है। दूसरी दक्खिनी मन्विदों की भाँति यद्यपि यह पुस्तक बिल्कुल धार्मिक रंग में लिखी गई है, तो भी काव्य के गुण और विशेषताओं का इसमें अभाव नहीं है।

इस ग्रंथ की प्राचीनतम प्रति पुस्तक लिखने के दो वष बाद १७६६ ई० (११३९ हि०) में लिखी गई, जो हैदराबाद के नवाब मालारजग के पुस्तकालय में मौजूद है। पुष्पिका में लिखा है—

“सन ११३७ हिजरी किताब दक्खिनी 'रीजा' दरखयान इमाम हुमेन तस्नीफ मोर वली फैयाज साहब मज्जाद मनु हर कदऽअद। कातिबुल् हुम्क सैयद बजहुल्ला हैदरी वल्द सैयद बडे मनु चौहरी दर-मुकाम एल्लोर रोज यकशवा ववक्त मेहपहर वातारीख इज्जा ज़ाहेजा सन ११३९ हिजरी मुताविक ११३६ फमली।”

मगलाचरण करते कवि ने लिखा है—

कहूँ नामे कौ विस्मिल्ला<sup>१</sup> मा आगाज<sup>२</sup> । अठू<sup>३</sup> ता मै फमाहत मा सरफराज<sup>४</sup> ॥  
सराऊ<sup>५</sup> क्या उमे जिन यक मखनु<sup>६</sup> में । बँदया जीव दमके रिश्ते<sup>७</sup> सो बदनमें ॥  
और अत्त में—

किया हूँ खरम<sup>८</sup> जय यो ददवा काल<sup>९</sup> । इग्यारा मी पै था संतीसवाँ साल<sup>१०</sup> ॥

\* त० उ० म०, पृष्ठ ५८-५९। † वही।

१ रविवार, २० जुलाई, १९२७ ई०, २ पुस्तक, ३ नगवान् के नाम से, ४ आरभ, ५ रहूँ, ६ भाग्यशाली, उन्नतशिर, ७ सराहना कर्त, ८ वाणी, ९ श्वास के सम्बन्ध में, १० समाप्त, ११ दुख-भरी कथा, १२ सन् १७२४ ई०।

जमाना<sup>१</sup> मेहदिया<sup>२</sup> आखिर-जमा<sup>३</sup> का । अथा उस बाइस<sup>४</sup> अम्नो-अमा<sup>५</sup> का ॥  
वली अब रख रकम<sup>६</sup> होर खत्म करवात । . . . . . ॥

(१) द्वितीय अध्याय में फातिमा के बारे में लिखा है\*—

करूँ मैं मज्लिस-दोयम<sup>७</sup> (कुँ) पुरगम<sup>८</sup> । वफाते-फातिमा<sup>९</sup> कर कर मुरक्कम<sup>१०</sup> ॥  
तवल्लुद<sup>११</sup> बोलना लाजिम<sup>१२</sup> (है) अब्वल । मुनाकिब<sup>१३</sup> तिस लगा करना मुसल्सल ॥  
खदीजा<sup>१४</sup> सों जो औलादे-पयम्बर<sup>१५</sup> । अथे सब दो पिसर<sup>१६</sup> होर चार दुख्तर<sup>१७</sup> ॥  
न्हनी थी फातिमा सब दुख्तराँ मे । व अच्छता<sup>१८</sup> चाँद यो सब अख्तरा<sup>१९</sup> में ॥  
शिकम मे माँ के थी जों उनकुँ आराम । रखे हजरत ने उनकुँ फातिमा नाम ॥  
नबूवत<sup>२०</sup> सौंपनेके पाँचवी साल । वलादत<sup>२१</sup> का हुआ नज्दीक ज्यों साल ॥  
खदीजा ने बशारत<sup>२२</sup> यों सुनाये । कबीले की जनाँकुँ सब बुलाये ॥

(२) हुसेन के जन्म का वर्णना—

वली हो रौजतुश्शुहदा<sup>२३</sup> का माली । न यकदम फ़िक्र कर मज्लिस सों खाली<sup>२४</sup> ॥  
नवा गुल<sup>२५</sup> मदह<sup>२६</sup> के गुलशन<sup>२७</sup> सों लाकर । करे भी शाहकी मज्लिस मुअत्तर<sup>२८</sup> ॥  
शिकारी था अक्रीदे<sup>२९</sup> का सचा एक । नबीकुँ ला दिया आहू-बचा<sup>३०</sup> यक ॥  
कबूल<sup>३१</sup> उसकुँ शहे-आलम<sup>३२</sup> ने फ़रमाय<sup>३३</sup> । जो इतने मे हसन<sup>३४</sup> मज्लिसमें आय ॥  
देखे आहूबचा हजरत कने<sup>३५</sup> दो । हसनकुँ खुश किया है दिलमने<sup>३६</sup> वो ॥  
उसी साअत<sup>३७</sup> नबीने उस हरिनकै । करम फ़रमा<sup>३८</sup> के बख़ो है हसन कुँ ॥  
यकायक आ हुसेन जुल्करामात<sup>३९</sup> । हसनकुँ खेलने देखे हरिन साथ ॥  
पूछे “ऐ भाइ, यह तुम काँसो<sup>४०</sup> लाये । हरिनका यो बचा तुम कासों लाये” ॥  
हसन ने कह “हरिन कर प्यार मुजकुँ । दिये है जद्दुजुर्गवार<sup>४१</sup> मुँजकुँ” ॥  
नबी सों कय हुसेन आ दौड़ करनै । “हरिन उनकुँ दिये तुम मजकू को नै” ॥  
यही छद<sup>४२</sup> ले करें तक़रार<sup>४३</sup> फिर फिर । नबी<sup>४४</sup> के साथ ऊपर पाँवों पो पड़कर ॥  
तसल्ली<sup>४५</sup> शाहजादे कुँ कई धात । करे हजरत रख उसके सिर उपर हात ॥  
हुए नज्दीक जो शहजादा रोये । “हरिन नै हात कि दीगर . . . होये” ॥

१. युग, २. पैगम्बर मेहदी, ३. अन्तिम युग, ४. कारण, ५. शान्ति, ६. लेख ।

\* यु० द० म०, पृष्ठ ३५६ ।

७. द्वितीय सभा ८. शोक-पूर्ण, ९. मुहम्मद-पुत्री फातिमा की मृत्यु, १०. लिखित, ११. जन्म, १२. उचित, १३. सगुण, १४. लगातार, १५. पैगम्बर की सन्तान, १६. पुत्र, १७. कन्या, १८. रहता, १९. तार, २०. पैगम्बरी, ऋषित्व, २१. जन्म, २२. सुसमाचार ।

† उ० श०, पृष्ठ २७८-७९ ।

२३. धर्मवीरों की समाधि, २४. रिक्त, २५. फूल, २६. प्रशंसा, २७. फुलवाड़ी, २८. सुगन्धित, २९. श्रद्धा, ३०. हरिण-शिशु, ३१. स्वीकार, ३२. जगराज, ३३. श्रीमुख से वचन कहा, ३४. मुहम्मद-नाती, ३५. हजरत के पास, ३६. दिल में, ३७. घड़ी, ३८. कृपा करके, ३९. चमत्कारी, ४०. कहाँ से, ४१. मान्य पुरखा, ४२. बहाना, ४३. झगड़ा, ४४. पैगम्बर, ४५. धीरज ।

जो यक हरिनी ने बच्चा लेके हमराह<sup>१</sup> । पुकारी (आपकर) मस्जिदपो नागाह ॥  
 दे लेने बच्चाकूँ उनकी डाल । दिपाने लाड हजरत - पास फिलहाल<sup>२</sup> ॥  
 सलाम आकर फमाहत<sup>३</sup> की जवाँसो । लगी कहने रसूले-उस जाँ सो<sup>४</sup> ॥  
 "बचे ते थे उनमें एक धरकर । शिकारी छीन ले या बँद कर कर ॥  
 रहा था उनमें एक खुशनूद<sup>५</sup> । जगलमें मैं पिलाती थी उमे दूब ॥  
 निदा<sup>६</sup> इतने मे आया आसमाँ सो । पैगवर पास ले जा इम बचेक ॥  
 कि शहजादा हरिन भगता सडा है । हरिन के साथ शीक<sup>७</sup> उसकूँ बडा है ॥  
 मुवादा<sup>८</sup> गर होयें उसके नयन नम<sup>९</sup> । फरिश्त्याँ पर होयेगा अश के गम ॥  
 निदा (सुन) इज्तरावी<sup>१०</sup> इज्तरावी । वजा लाई हूँ खिदमत में शितामी ॥  
 न होर उसके आर्याँ सो हम्द-अल्ला । अँज<sup>११</sup> "रुखसार"<sup>१२</sup> पाया है नही राह ॥"  
 यो सुन सब दिलमें गम का बीज बोये । जेते हज्जा<sup>१३</sup> " - मजलिम थे मो रोये ॥  
 दुआ हरिनी कूँ हजरत ने बिये तो । बचा ले शाहजादेकूँ दि<sup>१४</sup> तो ॥  
 अजीजा<sup>१५</sup> " सब फरिश्ते हो पैगवर । न चाहें जिस अजूँ वहनेकूँ मुख पर ॥  
 जे कोई कर उसके सिर पर जटमकांरी<sup>१६</sup> । किने है लहू कूँ रुखसारो<sup>१७</sup> पी जारी ॥  
 वो रोशन<sup>१८</sup> मू जिनोंके बरके सर<sup>१९</sup> रू । रगे-रुर्शाद<sup>२०</sup> कूँ बहते है गुलरू<sup>२१</sup> ॥  
 उनोपर क्या अछे रुख रुसियाही<sup>२२</sup> । अठैगा किस वजा<sup>२३</sup> "कहरा"<sup>२४</sup> इलाही<sup>२५</sup> ॥  
 रवा<sup>२६</sup> है यो पियारा मुस्तफा<sup>२७</sup> । हुये हैरान दस्ते - करवला<sup>२८</sup> बा ॥  
 कि जिसका वाप अछे<sup>२९</sup> साकीये-कीसर<sup>३०</sup> । रवा है वह तपे पानी न पाकर ॥  
 सिफन<sup>३१</sup> उसका है सब आलम<sup>३२</sup> पे मालूम । जमाने के है वो दफनर<sup>३३</sup> पो मालूम ॥  
 (३) हुसेन घायल\*—

वलेकिन<sup>३४</sup> शाहवा वो दबदबा देग । सलावत<sup>३५</sup> हार आली<sup>३६</sup> मर्तवा देग ॥  
 कदम शोन्वी<sup>३७</sup> सो आगे ना रखे कोई । न जँथियाँ खोलकर मुखपर देखे कोई ॥  
 सो हो नाचार तब सब नाबकारा<sup>३८</sup> । लगे करने कूँ शहपर तीरवारा<sup>३९</sup> ॥  
 तुरग उपर सा उतरे शाह शब्वीर<sup>४०</sup> । कि ना तेजी<sup>४१</sup> कूँ नाहा ना ले तीर ॥  
 ओ था जहो-पिदर<sup>४२</sup> की यादगारी<sup>४३</sup> । कलर<sup>४४</sup> कूँ कूँ कहँ चुप उसकी ख्वारी<sup>४५</sup> ॥

१ साथ, २ तत्काल, ३ लालित्य, ४ प्राणो से प्यारे, ५ राजी, प्रसन्न, ६ वाणी,  
 ७ प्रेम, ८ शायद, ९ गौली, १० जल्दी, ११ आँसू, १२ गाल, १३ उपस्थित, १४ प्यारे,  
 १५ गहरा घाव, १६ गालो, १७ प्रकाशित, १८ सिर का खून, १९ सूर्य, २० मुख  
 कातिना, २१ प्रकार, २२ कोप, २३ भगवान, २४ उचित, २५ अभिलषित, चरण  
 बिये गये, मुहम्मद, २६ कर्बला की मरुभूमि, २७ रहे, २८ स्वर्ग-निर्झर-जल को पिलाने-  
 वाला, २९ प्रशंसा, गुण-गान, ३० दुनिया, ३१ इतिहास ।

\*पु द न, पृष्ठ ३६३ ।

३२ कितु, ३३ दृढता, ३४ उच्च, ३५ चचलता, ढिठाई, ३६ दुष्ट,  
 ३७ वाणवर्षा, ३८ सुदर इमाम हुसेन, ३९ घोड़े, ४० पुरखा (नाना) पिता, ४१ स्मृति,  
 ४२ व्यर्थ, ४३ विनाश ।

देखे जबे काफिराँ<sup>१</sup> ने शाहजादा । तुरंगकुं सुट<sup>२</sup> हुआ है यक पियादा ॥  
दिलावर हो लगे भाने<sup>३</sup> कुं तीराँ । लगे शह चुप खड़े खानेकुं तीराँ ॥  
पेशानीपर<sup>४</sup> लग्या यक तीर कारी<sup>५</sup> । उखाड़े सो हुआ लहु वाँसे जारी ॥  
भरा<sup>६</sup> लहूकने<sup>७</sup> उस हात सर्वर<sup>८</sup> । भलै उस लहुकुं ले मुख सात सर्<sup>९</sup> ॥  
रकतमें चेहरेये - पुरनूर<sup>१०</sup> पेशानी । हुआ था ज्यो शफ़र<sup>११</sup> मे सूरपानी ॥  
कहते थे यों चमै<sup>१२</sup> उस लाल मुख सात । कहुँगा जद<sup>१३</sup> सों अपने जामुलाक़ात ॥

(४) हुसेन की मृत्यु\*—

चरिदे सब जंगलके हो दुखारे । खड़े रोते थे चरना छोड़ सा<sup>१</sup> ॥  
पहाड़ाँ शोरसों फोड़े थे सीना । खड़े थे सिरसों कर पग-लग पसीना ॥  
दर्याँ मे के घराँ सब छोड़ अपने । लगे खुरकी पो आ मछल्याँ(सो)तपने ॥  
किसीपर शाहकी था प्यास का शम । किसीपर शहके था मरनेका मातम<sup>२</sup> ॥  
दुन्याँमें भर रह्या था शोर सारा । हुआ था दर्दों - गम<sup>३</sup> हर शै<sup>४</sup> पो न्यारा ॥  
खियाई<sup>५</sup> क्यों हमामे - बा - वफ़ा<sup>६</sup> कूँ । बुझाई क्यों चिरागे - मुस्तफ़ा<sup>७</sup> कूँ ॥  
गया क्यों आज ओ सुल्ताने-आलम<sup>८</sup> । बलुकहजरतसों मिला था जाने आलम<sup>९</sup> ॥  
पड्या क्यों आज औधा तख्तेशाही<sup>१०</sup> । हुआ क्यों आज आलम पर तबाही<sup>११</sup> ॥  
जहाँमें सब क़यामत<sup>१२</sup> का बजा सूर<sup>१३</sup> । लगे मौजाँ सो खलबलने कूँ समदूर<sup>१४</sup> ॥  
गुबारे - सुख<sup>१५</sup> होकर आशकारा<sup>१६</sup> । जगतपर छा गया था सब अँधारा ॥  
जमीं सब लाल थी होरआसमाँलाल । मँग्या<sup>१७</sup> होने कुं सब कुदरत<sup>१८</sup>पो जंजाल<sup>१९</sup> ॥  
फरिस्ते हाथमें लें गुर्जे - आहन<sup>२०</sup> । खड़े थे फ़ोड़ने धनकूँ खना खन ॥

(५) हुसेन के सगे-सम्बन्धियों का कतल †—

वजाँ<sup>१</sup> तारिक़ का बेटा एक उमर था । जदीके<sup>२</sup> फ़न<sup>३</sup> मे खरसा<sup>४</sup> बेखबर था ॥  
उनेँ अकबरका आतींवार खाया । जहन्नुम<sup>५</sup> में पिदर<sup>६</sup> कूँ जाँ मिलाया ॥  
दुजा था तलहा कर तारिक़का फ़र्जन्द<sup>७</sup> । अथा मलऊन<sup>८</sup> हाथी सा तनोमन्द<sup>९</sup> ॥  
जल अपने बाप होर भाई के गमसों । तुरत शहजादे पर धाया मनम्<sup>१०</sup> कूँ ॥

१. विधमियों, २. छोड़ (पंजाबी), ३. पाने (पंजाबी), डाले, ४. ललाट घर,  
५. गहरा, ६. रुधिर से, ७. सरदार, ८. प्रकाशमय, प्रभास्वर, ९. प्रातः समय, संध्या-  
लालिमा, १०. इसी बीच, ११. नाना (सुहम्मद) ।

\*यु. द. स., पृष्ठ ३५७ ।

१२. शोक, १३. दुःख, १४. बातचीत, १५. गँवाया, १६. सत्यनिष्ठ, १७. पैगम्बर  
सुहम्मद (का दीपक), १८. विश्व के राजा, १९. विश्व के प्राण, २०. राजसिंहासन,  
२१. बरबादी, २२. प्रलय, २३. नरसिंहा, २४. समुद्र, २५. लाल धूलि, २६. प्रकट,  
२७. चाहा, २८. प्रकृति, शक्ति, २९. झगड़ा, ३०. लौह-गदा ।

†यु. द. स., पृष्ठ ३५७ ।

३१. इसके पश्चात्, ३२. पैतृक, ३३. कला, ३४. गदहे-सा, ३५. नर्क,  
३६. पिता, ३७. पुत्र, ३८. पातकी, ३९. हट्टा-कट्टा, ४०. प्रहार ।

सो अकबर का गरेवा<sup>१</sup> हातसो धर। मंग्या<sup>२</sup> था खीचकर सुटने<sup>३</sup> जमी पर ॥  
 तलक<sup>४</sup> अकबर जलाली वर हुन साथ। सुटे मलऊन के 'गर्दन' उपर हाथ ॥  
 पकड कूवतसेती ऐसा मरोडा। जो गर्दन की रंगा होर हाड तोडी ॥  
 पछी उन जीनमो ने खीच वाडी। उचा<sup>५</sup> कर जोरसो भुईपर पछाडी ॥  
 देपत अकबरकी मर्दी होर वरजोर। लईना<sup>६</sup> के पड्या सब दिलमने शोर ॥  
 मंग्या मिस्र<sup>७</sup> ने तो शम्शोर<sup>८</sup> वाडी। तलक अकबर ने भी शम्शोर झाडी ॥  
 खड्ग ओ सामे उमके जा लग्या सो। बट्या काफिर कमर लग हो गया दो ॥  
 उपत यो दोहजारो सार यकवार। कये अकबरपो हमला उरके हवार ॥  
 इधरकू भी बिये अकबर ने हम्ला। कुत्यापर ज्यो कि गेरे नर ने हम्ला ॥  
 जब अकबर यो वगारत<sup>९</sup> वापमो पाइ। सो फिर गुणवन्त हो मैदानपर धाइ ॥  
 तलग ये रहम मूज्या<sup>१०</sup> का सरबदल। गये तन्हा जली अकबर उपर चल ॥  
 सगा<sup>११</sup> उस गेरू<sup>१२</sup> दरम्यानमे घेर। लगे भाने<sup>१३</sup> मना होर गुजो गमगेर ॥

## § ३२ हाशिम अली (१७३७ ई०)

### १ कवि

इम कवि के जन्मस्थान के बारे में विवाद है। कुछ लोग इमे तुरहानपुर (मध्यप्रदेश) का कहते हैं। भीतररी गवाहो गुजरात का भी बतलाती है। हाशिम अली मसिया (शोकाजलि) कहनेवाला कवि है, इसने मसिया छाड दूमरे विषयो पर कलम नहीं उठाई। इमाम हुमेन के शहीद हाने पर शोक के आसू बहाना मुसलमानो में, विरोधकर गिया लोगो में, बहुत पुरानी परिपाटी है। ईरान मे सद्यो पहिले ऐसे काव्य बने। भारत (उर्दू) में अनीम मसिया के सप्रश्रेष्ठ उस्ताद माने गये हैं। दमिधन के गोलकुडा, बीजापुर दोनो राजवश शिया थे। इसलिए ताजियादारी का वहाँ बहुत स्वाज था। मसिया पढना ताजियादारी वा एक आवश्यक अंग था। हाशिम अली ने जीवन भर मसिया लिखे। इसके २३८ मसियो का संग्रह 'दीवान हुमेनी' के नाम से मिला है। भीतररी साक्षियो से मालूम होता है, कि हाशिम अली १७३५ ई० (११४९ हि०) और १७५५ ई० (११६९ हि०) में मौजूद था और इस प्रकार डूल्ह, गिरिधर कविराय का मम-कालीन था।

हाशिम अली की जीवनी के बारे में कोई बात मालूम नहीं—उमके निम्नांकित पद्यो से मालूम होता है, कि जीवन के बडेवे तजुबो से उसे काफी पाला पडा था\*—

१ कठावल, २ चाहा, ३ फेंकने, (पजाबी), ४ जयतक, ५ उठा, ६ पापियो, धिक्कतो, ७ पद, ८ तलवार, ९ सुसमाचार, १० आततायियो, ११ कुत्ते, १२ पाने (पजाबी), डालने।

\*उ श, पृष्ठ १६६।

हाशिम अली जमाना में मेह्लो-वफ़ा<sup>१</sup> यहीं । दिल हाय<sup>२</sup> पुर-नफ़ाक<sup>३</sup> में सिदक़ो-सफ़ा<sup>४</sup> नहीं ॥  
हर्गिज<sup>५</sup> नहीं मुरौवत व शर्म व हया<sup>६</sup> नहीं । इस दर्द की दवा कुं बग़ैरज<sup>७</sup> खुदा नहीं ॥

फरियाद<sup>८</sup> या मुहम्मद व या मुर्तजा अली ।  
जिन्दगी दुनियाको है होशिम अली ख्वाब-ओ ख़ियाल<sup>९</sup> ।  
जा रह्या सोयां वो चूका जागना हैगा कमाल<sup>१०</sup> ॥  
हे लहद<sup>११</sup> की नीद भारी आज तूँ उसकूँ सम्हल ।  
ता जगापें सुबहे-महशर<sup>१२</sup> तुजको आसांनीद सों ॥

कवि की अभिलाषाएँ\*—

या हुसेन, ऐ ख़ामस<sup>१३</sup> आले अबा । अर्ज<sup>१४</sup> हैगे पाँच मतलब<sup>१५</sup> ऐ शहा ॥  
अव्वल है हा आरजू दिलमें मुदाम<sup>१६</sup> । लुत्फ<sup>१७</sup> सों अपनी जियारत<sup>१८</sup> कूँ बुला ॥  
दूसरा जब तई<sup>१९</sup> हयाते इस्तआर<sup>२०</sup> । रख मुझे बे मिन्नते<sup>२१</sup> खल्के-खुदा<sup>२२</sup> ॥  
तीसरा होना कबूली<sup>२३</sup> वरगहत<sup>२४</sup> । यो सखुन<sup>२५</sup> लिखना मेरी तेरी सना<sup>२६</sup> ॥  
चारमीं यह हाजिराँ<sup>२७</sup> वह जाकिराँ<sup>२८</sup> । तुमसो पावें अपने दिलकी मुद्आ<sup>२९</sup> ॥  
है तुजे मन्सब<sup>३०</sup> शफाअत का नसीब<sup>३१</sup> । पांचवाँ मुजकूँ कयामत में छुड़ा ॥

और भीं—

हश्र<sup>३२</sup> के दीवान<sup>३३</sup> से जब नूरचश्मे-मुस्तफ़ा<sup>३४</sup> ।  
रौजये-रिज्वाँ<sup>३५</sup> कुं भेजेंगे मुहिब्बाँ<sup>३६</sup> कु छुड़ा ॥  
यादकर हाशिम अली तुझकूँ कहीं रोजे-जजा<sup>३७</sup> ।  
वह हमारा कमतरी<sup>३८</sup> मद्दाह<sup>३९</sup> शायर काँ गया ॥

कवि हरसाल मर्सिया लिखता था और भावावेश के साथ‡—

तुझकूँ हाशिम अली हुसेन सरूर<sup>४०</sup> । हर बरस मर्सिया लिखाते है ॥४९॥  
लिखूँ कहाँ तलक मैं बयाने-सितम<sup>४१</sup> । मुजे हर बरस लेके तीरे-क़लम<sup>४२</sup> ॥१६३॥  
कहाँ तक मैं लिखूँ इस गम की बातों । कि दिलके जोशसों पुर-खॉ<sup>४३</sup> है आँखॉ ॥१३७॥  
आज हाशिम अली लिखा गमसों । भरके अँझू<sup>४४</sup> लोहू सों सारे नयन ॥

१. प्रेम, सत्यनिष्ठा, २. मनो (बहुवचन), ३. द्वेषपूर्ण, ४. सत्य, शुद्धता, ५. कदापि,  
६. लज्जा, ७. विना, ८. पुकार, ९. स्वप्न और कल्पना, १०. निषुणता, ११. कन्न, १२. प्रलय  
की सुबह ।

\*उ. श., पृष्ठ १६४ । १३. पंचम, १४. निवेदन, १५. अभिप्रेत, १६. सदा, १७. कृपा,  
१८. दर्शन, १९. लिए, २०. प्रकट, २१. प्रार्थना, २२. ईश्वर-पूजा, २३. स्वीकार, २४. तेरे  
सम्मुख, २५. वाणी, २६. प्रशंसा, २७. उपस्थित, २८. जपी, २९. उद्देश्य, ३०. पदवी, ३१. प्राप्त ।

‡उ. श., पृष्ठ १६५-६६ । ३२. प्रलय, ३३. न्यायालय, कार्यालय, ३४. मुहम्मद की  
ज्योति, ३५. स्वर्गोद्धान, ३६. मित्रों, ३७. न्याय-दिन, प्रलय-दिन, ३८. अधम, ३९. प्रशंसक ।

‡वही, पृष्ठ १६५-६६ । ४०. हर्ष, ४१. अत्याचारी की कथा, ४२. लेखनी के बाण ।  
४३. रुधिराक्त, ४४. आँसू ।

प्रोफेसर जोर ने हाशिम अली के मसिया के बारे में लिखा है\*--

“हाशिम अली ने केवल वेदी पर बँठकर पढ़ने ही के लिए मसिये नहीं लिखे, बल्कि उसे गृहम मास के साधारण रीति-रिवाज का भी मयाल रखना पडा। दशन, चालीसवाँ के अतिरिक्त ताजिया ले जाते समय रास्ते में पढ़ते हुए जाने के लिए भी उसने पृथक् मसिये लिखे। हाशिम अली एक अच्छा मसियागी (शोकाजलि-रचयिता) था। यद्यपि मिर्जा, गुलामी और कादिर के कुछ मसियों के सामने दीवान-हुसेनी में कोई मसिया मौजूद नहीं है, तथापि हाशिम अली की सिद्धहस्तता और उच्चकोटि के शायर होने में सन्देह नहीं किया जा सकता और उसके कथनानुसार--

शेरे-हाशिम अली हुये मशहूर । नै है दीवानकी किताब हनोज' ॥

कोई आश्चर्य नहीं, अगर वह दीवान हुसेनी के सगृहीत होने से पहिले ही सुप्रसिद्ध हो चुका हो।

## २ कविता के नमूने

### (१) कासिम की वीरगति—

(क) हसन के पुत्र कासिम की वीवी सकीना से अभी-अभी शादी हुई थी। मृत्यु के मुख म जाते पति के साथ सकीना का वार्त्तालाप प्रहृत ही करणापूर्ण है।—

जलवा<sup>१</sup> से उठके रनकू चला तव कही दुल्हन । दामन<sup>२</sup> पकड कर लाजसो अँझुर्बा<sup>३</sup> भरे नथन ॥  
 “कँसी यो वदखुदाई<sup>४</sup> वो कँमी है यो बरात । आता फिराक<sup>५</sup> तुमगो यह जलवा की आज रात ॥  
 धरकू न ले गये हो न बोले हो हमसा वात । देखा नहीं जमाल<sup>६</sup> कू भरके नयन नयन मेरा ॥  
 इम चर्चलाके चमने अकेली में क्यों रहें । तुम वाज<sup>७</sup> में जहाँ में फिर उमेद क्या धरें ॥  
 जदे<sup>८</sup> के मदीना कपो जि<sup>९</sup> में इस ठार से फिटें । तुज अपने साथ लेके दिवाजो वतन मेरा ॥  
 जाते हो ठोड रनकी तरफ मुझकू तुम रखा । नै शमका हनोज यह सरसो<sup>१०</sup> घूँघट खुला ॥  
 करते नहीं मुहव्रत व जाते मया<sup>११</sup> भुला । इस जिदगीसो आज भला है मरन मेरा ॥  
 शोला<sup>१२</sup> लगा है दिलमने इस गमका क्या कहें । मुजकू रवा<sup>१३</sup> हुआ है अगर जहर खा मरूँ ॥  
 दूरी<sup>१४</sup> में हाय तेरी में दिन-रैन क्यों भरूँ<sup>१५</sup> । फुकत<sup>१६</sup> की आगसेती जलेगा बदन मेरा ॥”  
 कासिम पडा था रोने नैन सो दुरहनके सात । गमनाक<sup>१७</sup> अपना देखके दामन दुल्हनके हात ॥  
 तम आहे-बदनाक<sup>१८</sup> सो बोला दुल्हनके सात । “हुँ वोस्ताने-राहन<sup>१९</sup> वो सर्वे चमन<sup>२०</sup> मेरा ॥  
 मजकू नहीं है तेरी जुदाई<sup>२१</sup> का इरितयार<sup>२२</sup> । तेरे फिराक सात में जाता हुँ अरकवार<sup>२३</sup> ॥

\*उ श, पृष्ठ १६५। १ आज भी।

विही। पृष्ठ २९६। २ सोहागरात, ३ अचल ४ आँसू, ५ विवाह, ६ वियोग, ७ सौंदर्य, ८ तेरे बिना, ९ नाना, १० कंसे, ११ सिर से, १२ भाया, स्नेह, १३ ज्वाला, १४ विहित, उचित, १५ वियोग, दूरस्थिति, १६ कैसे काटूँ, १७ वियोग, १८ दुःखपूर्ण, १९ पीडा पूर्ण हाय-हाय, २० सुखोद्यान, २१ उद्यान के सरोवृक्ष, २२ वियोग, २३ शक्ति, २४ प्रकट।

क्या करूँ सलाह<sup>१</sup> नहीं हुक्म-कदर्गार<sup>२</sup>। हकने<sup>३</sup> किया है रनमें मुकरर<sup>४</sup> रहन मेरा  
दाग<sup>५</sup> दिलमें तेरी जुदाई का क्या करूँ। नै है उमेद रनसे फिर आकर तुझे मिलूँ ॥  
तो कुछ हुआ है मुकदरों<sup>६</sup> में रास्ती<sup>७</sup> कहीं। वादा<sup>८</sup> हुआ है हश्र<sup>९</sup> में तुमसे मिलन मेरा ॥

(ख) कासिम और सकीना की इसी विदाई का वर्णन गुलामी की लेखनी से भी सुनिए\*—

हीहरा गम आके घरेगा शाहे-जमनकू<sup>१०</sup> आज। जलवा<sup>११</sup>में क्यों बिठाये है इब्नेहसन<sup>१२</sup> कू आज ॥  
घट नें सोग आन पड़ेगा दुल्हनकू आज। “कासिम खुदाके वास्ते मत जा तू रनकू आज ॥  
लता<sup>१३</sup> वखूँ<sup>१४</sup> हुये है सब अहबाब-ओ-अकरबा<sup>१५</sup>। वाँधे कमर जे-वह्ले<sup>१६</sup> शहादत<sup>१७</sup> वह मुक्तदा<sup>१८</sup> ॥  
कासिमने इज्ने-हर्व<sup>१९</sup> तलब<sup>२०</sup> करके यों कहा। “अमूँ<sup>२१</sup> न जाओ रन को रजा<sup>२२</sup> दो हमनकू आज ॥  
हलत<sup>२३</sup> के दिन पिदर<sup>२४</sup> यो वसीयत किया हजे। तुजपर निसार<sup>२५</sup> होने नसीहत किया मुजे ॥  
कीद<sup>२६</sup> करके कामकी रखसत<sup>२७</sup> किया मुजे।” यह सुन अँझूँ<sup>२८</sup> से शह<sup>२९</sup> ने किये पुर-नयनकू आज ॥  
बोले अगर तुजे यों वसीयत किया पिदर। हकमें तेरे मुजे भी जो कै<sup>३०</sup> वह नामवर ॥  
गँज वजा<sup>३१</sup> मै हुक्मे-बिरादर<sup>३२</sup> तू सब्र<sup>३३</sup> कर। यो वात कह तलब किये<sup>३४</sup> सर्वर<sup>३५</sup> वहनकू आज ॥  
मेमा<sup>३६</sup> में अपने लाया वह दुल्हनकू नौजवाँ। हल मनमुवारिज<sup>३७</sup> अहले-सितम<sup>३८</sup> बोले नागहाँ ॥  
स्ते अरूस<sup>३९</sup> छोड़के कासिम हुये रवाँ<sup>४०</sup>। बोले “खुदाकू सौप चला हूँ तुमनकू आज ॥  
गामन<sup>४१</sup> पकड़ अरूस<sup>४२</sup> लगी रोने गम सेती। कहती मया<sup>४३</sup> अभी से उठाते हो हम सेती ॥  
बोले कि “शोखी<sup>४४</sup> करते है आदा<sup>४५</sup> सितम<sup>४६</sup> सेती। जाकर हटाऊँ फिकरये-दोजख-वतन<sup>४७</sup> कू आज” ॥  
हने लगी कि “होते हो या इब्ने-अम<sup>४८</sup> जुदा। बेकस अकेली छोड़ मुझे दुख में मुब्तला<sup>४९</sup> ॥  
मकू करे शहीद मुवादा<sup>५०</sup> यह इश्तिया। बेवा हो तरसती रहूँ फिर मै मिलनकू आज” ॥  
शैशा<sup>५१</sup> कहै कि जीते फिरेंगे नहीं हमन। दुनिया के बीच फिरके मिलेंगे नहीं अपन ॥  
हशर<sup>५२</sup> उपर है वादये-दीदार<sup>५३</sup> जाने-मन<sup>५४</sup>। होना है पारा-पारा हमारे बदनकू आज ॥  
छी कि रोजे-हश्रमें पाऊँ तुम्हें कहाँ। दिल भरके मुख तुमारा नहीं देखा दरजहाँ<sup>५५</sup> ॥  
योंकर पिछानूँ मुझकू वता जाओ कुछ निशाँ। टुक बैठो ना कि सुन लो यह मीठे वचनकू आज ॥

१. मर्जी, २. कर्ता (भगवान्) की आज्ञा, ३. सत्य (भगवान्) ने, ४. निश्चित,

५. जलन, ६. भाग्य, ७. सच, ८. वचन, ९. प्रलय-दिन।

\* उ. श., पृष्ठ २९७।

१०. युग के राजा, ११. सोहागरात, १२. हसन-पुत्र कासिम, १३. छटपटाना,  
नदफद, १४. रुधिर में, १५. सगे-सम्बन्धी, १६-१७. वीरगति-प्राप्ति के लिए, १८. नायक,  
इमाम, १९. युद्ध-कष्ट, २०. इच्छा, २१. चचा, २२. अनुमति, २३. कूच, मृत्यु, २४. पिता  
(हसन), २५. निछावर, २६. जोर देकर कहना, २७. विदा, २८. आँसू, २९. राजा  
(हुसेन), ३०. कहा, ३१. पूरा, ३२. भाई (हसन) की आज्ञा, ३३. धीरज, ३४. बुलाया,  
३५. सरदार, हुसेन, ३६. तम्बू ३७. लड़ाका, ३८. जालिम, ३९. दुल्हन का हाथ,  
४०. प्रस्थित, ४१. अंचल, ४२. दुल्हन, ४३. स्नेह, ४४. दिठाई, ४५. शत्रुगण, ४६. जुल्म,  
४७. नरकवाले पन्थ, ४८. चचा का पुत्र, ४९. फँसे, ५०. शायद, ५१. दुल्हा, ५२. प्रलय-दिन,  
५३. दर्शन-चषक, ५४. मेरे प्राण, ५५. दुनिया में।



मारों वयाँ यह गमका निपट वेशुमार है । बेहतर जे-नूल किम्सा' गमे - इख्तियार' है ॥  
लानत' वो जालिमा'कूँ हजाराँ हजार है । जो दुख दिये है इश्ते' शाहेजमन' कूँ आज ॥  
है शश जहत'मे गम अहे - बेकस'का बरमला' । रोते है उन्सो -जिन मलायक दरी अजा' ॥  
हार्गज न रख तूँ खोफ' गुलामी जे-हामिदा' ॥ आले-अजाम' ते तू मदद माँग हर जमा ॥  
दिसलावे कबला तुजे आखिर दो सर्वरा' ॥ जो आरजू' है कह तू हुसेन-ओ हसनसो आज ॥

### (२) असगर की वीरगति\*—

कर्वला की निर्भम हत्याओ मे हुसेन के छोटे बच्चे असगर को हत्या भी है । वनी-उमेया के लिए अली और फातिमा की औलाद सबसे रातरे की चीज थी, इसलिए वह उनका नामो-निशान नहीं छोडना चाहते थे । हुसेन की लडकी मकीना (कासिम की वीवी) विधवा हुई, हुसेन का बेटा असगर यजौद के जरलादो के हाथ मारा गया । हुसेन की वीवी शहवानू— जो माथ ही ईरान के अन्तिम सासानी शाह यज्दगिद' तृतीय की लडकी थी—असगर की मृत्यु पर विलाप करती है—

(क) वाले असगर केतं बुलाती रही । सुना यह पालना बुलाती रही ॥  
झूला तेरा पडाँ रहा खाली । डोरी मूज हातमें हिलाती रही ॥  
हाय क्यों रूठकर गया मुजसो । मेरे प्यारे के ते मनाती रही ॥  
भूल क्यों तूँ चला गया' मेरी । 'आ रे असगर' तुजे बुलाती रही ॥  
मे सुलाती थी जब लगा छाती । आँचल अपना तुजे उढाती रही ॥  
रात - दिन में कभू न दी रोने । करके वातो तुजे हँमाती रही ॥  
था बरसगाठ का तुजे अरमान' । लाल जामाँ तेरा मिलाती रही ॥  
कासिम आया है जब मियाने' कूँ । मे तमाशा तुझे दिखाती रही ॥  
लहो मरा क्यों तेरा चँदरमुप है । जिसकूँ हाथो से मे बुलाती रही ॥  
दूध पीता मेरा गया वाले । गमसो छाती मेरी भर आती रही ॥  
तुजकूँ भाती न थी अघारी रात । तेरो खातिर दिवा जलाती रही ॥  
करके ताबीज' दिल ऊपर रखती । बदनजर' से तुजे छिपाती रही ॥  
क्यों न आखिर हुई उमर मेरी । तुज बिना हँफ' मुज हयाती' रही ॥  
आज पुरखू' कफन तेरा असगर । आज सुखा दहन' तेरा असगर ॥  
लाल है गुलबदन' तेरा असगर । हँफ यो ग़ालापन तेरा असगर ॥  
क्या है जुल्फा'के वाल तारो-तार' । क्यों गले से लोहू के जारी धार ॥

१ लम्बी कथा मे, २ सक्षिप्त दुख, ३ धिक्कार, ४ आनन्द, ५ युग के राजा, ६ छोटी दिशाएँ, ७ बेबस राजा, ८ प्रकट, ९ इस दुख में आदमी जिन और फारिक्ते, १० भय, ११ ईर्ष्यालुओ, १२ फातिमा-अली हसन-हुसेन, १३ सरदार, १४ अभिलाषा ।

\*उ श, पृष्ठ २९४ ।

१५ स्नेह, १६ अभिलाषा, १७ व्याहने, १८ जतर, १९ कुदृष्टि, २० समाप्त, २१ शोक, २२ जीवन, २३ खिराकत, २४ मुँह, २५ पुष्पतनु, गुलाबी शरीरवाला, २६ अलकें, २७ बिलारे ।

तुजकूँ सोते कभू न लगती वार । हैफ़ यो बालपन तेरा असगर ॥  
 उठ गलेका लोहू धुलाऊँ मै । नींद आती तुजे सुलाऊँ मै ॥  
 चल तेरा पालना झुलाऊँ मे । हैफ़०॥  
 क्यों जुदा मुज सेती किये तुजकूँ । फिर मै गोदी लिये फिरूँ किसकूँ ॥  
 क्यों न लागी बला तेरी मुजकूँ । हैफ़०॥  
 अल्ला - अल्ला किया तुजे पाला । मनमें यों था करूँगी विस्मिल्ला ॥  
 हाय तेरा गया जिया वाला । हैफ़०॥  
 किसका अब पालना झुलाऊँगी । लोली<sup>१</sup> देके किसे सुलाऊँगी ॥  
 किसकूँ छाती सेती लगाऊँगी । हैफ़०॥

(ख) कवि गुलामी ने भी शहबानू के विलाप पर लेखनी चलाई है\*—

जुलम किया है कठिन है-है फ़लक<sup>२</sup> क्या किया । शहसों छुड़ाया वतन है-है फ़लक क्या किया ॥  
 अब मै झुलाऊँ किसे छाती लगाऊँ किसे । दूध पिलाऊँ किसे है-है०॥  
 निकली मै जब अज-वतन<sup>३</sup> कैसी हुई थी सगुन । गुम हुये सारे रतन है-है० ॥  
 लोहू मे अकबर<sup>४</sup> मेरा जखमी-वदन है पड़ा । तन हुआ सिरसों जुदा है-है० ॥  
 हात मेरा जार<sup>५</sup> है जीवना दुश्वार<sup>६</sup> है । आबदीन बीमार है, है-है० ॥  
 आई तो आई कहाँ बेटी ब्याही कहाँ । मेरा जँवाई<sup>७</sup> कहाँ है-है० ॥  
 मेरी सकीना निढाल प्यास सों है खस्ता-हाल<sup>८</sup> । क्या करूँ ऐ जुल्जलाल<sup>९</sup> है-है० ॥  
 शह मेरा मारा पड़ा कोइ नै वाली मेरा । बेवा हुई ऐ खुदा फ़लक क्या किया ॥

गुलामी ने और भी लिखा है †—

बानू पे कर्बलामें कैसा यह दुख पड़ा है । गोदों मै प्यारा असगर बिन दूद मर चला है ॥  
 होर राँड़ बैठी बेटी दामाद<sup>१०</sup> मर चुका है । सिरका चतर<sup>११</sup> भी ढलना कोइ दमको आ रहा है ॥  
 समझाना उस बची<sup>१२</sup> का इस वक्त क्या मुसीबत । बाबा<sup>१३</sup> बिना तड़पता और तश्नगी<sup>१४</sup> की शहूत<sup>१५</sup> ।  
 "ऐ बेटी तेरे बाबा खाने गये जियाफ़त" । मासूम<sup>१६</sup> का यह सुनकर दहचद<sup>१७</sup> जी जला है ॥  
 कहने लगी कि "अम्मा, है-है यह क्या गजब है । मरती हूँ भूख सेती प्यासोंसे जाँबलब है ॥  
 ज्याफ़त<sup>१८</sup> मे गये बाबा मुज बिन सोक्या सबब है । बाबाने मुजपे शायद शफ़कत कुँकम किये है ॥  
 मुजसे कभू न करते बाबा मेरी जुदाई । असगर कुँ ले गये है मुझसे मया उठाई ॥  
 बावर<sup>१९</sup> न हाइ जो तुमकूँ बतलाऊँ काँ है भाई । असगरका पालना भी खाली देखा पड़ा है ॥  
 रो-रो हरम मियाँसे उस तिल्फ<sup>२०</sup> कूँ मनाते । हर यकले भरके उसकूँ छाती सेती लगाते ॥

१. लोरी। \*उ. श., पृष्ठ २९९। २. आकाश, भाग्य, ३. घर से, ४. हुसेन का बड़ा पुत्र, ५. बुरा, ६. कठिन, ७. जैतुल आबदीन हुसेन का लड़का, और फातिमा का एक मात्र नामलेवा, ८. अति पीड़ित, ९. सुन्दर।

†वही, पृष्ठ २९९-३००। १०. जामाता, ११. छत्र, १२. बच्ची, १३. पिता, १४. प्यास, १५. कड़ी, १६. बेगुनाह, १७. दसगुना, १८ बड़ी दावत, १९. विश्वास, २०. शिशु।

कहते थे "तेरे बाबा अब कोई घड़ीमें आते । बरलाह<sup>१</sup> माय दहके असगर नहीं गया है ॥  
समजा कने है हारे पन<sup>२</sup> करते नै वह बाजर । कहते "जो ले गये नै दिस्ता नहीं क्यों असगर ॥  
लाचार हो कहे तब अहने-हरम<sup>३</sup> ने यकमर । असगरकी लाश लाकर उमको दिसा दिया है ॥  
भाई को देख रोने दौड़े है भर<sup>४</sup> में लेने । हर रोज की तरह से लागे है बोमा<sup>५</sup> देने ॥  
कहते "क्या आज भाई, नै उठता दूद पीने । क्यों उमके परहन<sup>६</sup> कू ताजा लहु लगा है" ॥  
यह मर्मिया लिवा अब ऐ दोजहाँके मौला<sup>७</sup> । मौने भेती धडककर गमवा उठा है शोत्र ॥  
सब जाकिरा<sup>८</sup> में कमतर<sup>९</sup> है खस्तादिल<sup>१०</sup> गुलामी । दो दाद<sup>११</sup> जल्द हरचद<sup>१२</sup> है आमिया<sup>१३</sup> में नामी ॥

(ग) हाशिम अली ने इमी विषय पर कहा है\*—

"जाऊँ बिघर मैं क्या करूँ यह गोद खात्री ले फिरे ।

फिर 'अम्मार अम्मार' मैं कहुँ किसका झुलाऊँ पालना ॥

यह देय मेरा हाल तू तोड़ी है मिरके बाल तू ।

मैं दिरकी हालत क्या कहुँ बिमवा झुलाऊँ पालना ॥

ये गोलने के दिन तरे क्या उम्र क्या थी मिन<sup>१४</sup> तेरी ।

नै चैन मुजकू मिन तेरे जिसा झुलाऊँ पालना ॥

यह वहन तेरी गमगुमार<sup>१५</sup> बँटी है राने जागजार ।

तू उठ सवीना पर पुगार किम० ॥

(३) कब्रला—

इस्लाम के पैगम्बर की सन्ताना पर यह जुलम मुगल्मान कब्रला में ढा रहे थे, उमका वार्न हाशिम अली के मुँह में सुनें—

फिर घटा हुइ गमके चादल की गगनपर आनागर<sup>१६</sup> । कब्रलामें मेघ परमे लोहूके धारा बेशुमार ॥

नेग चमके सिर उपर विजली के मानिन<sup>१७</sup> बारवार । क्या मर्दाहै-हू पडा सारा जहाँ म्याने-जघार<sup>१८</sup> ॥

नाराहा<sup>१९</sup> बडके गरजकर आज नगमे-मूर है । चीतरफ घनघोर है लहुकी बरसती है फुहार ॥

नै निकलता है सुरज सोये नहीं मुगके भजन । गून दिलमा जहाँ तलक देगे टपकते है नयन ॥

तग हुये है अशकवारी<sup>२०</sup> मा लजने है पदन । जाह का हर दम हुआ हैंगा दिलोमेनी पुवार ॥

(४) फातिमा विलाप—

पगम्बर की प्यारी जेदी तथा हमन-मेन की मा फातिमा का पुत्र-शोक पर विलापी—

आया मुहरम<sup>२१</sup> उडता धुलारा । होना है आलम इस गममें सारा ॥

सैकनिमा<sup>२२</sup> ने तब या पुकारा । मेरा हुमेना नाहकक<sup>२३</sup> मारा ॥

१ भगवान्, २ लेकिन, ३ अतः पुरिकाएँ, ४ गोद में, ५ चुम्बन, ६ परिधान, ७ स्वामी, ८ जपी, ९ छोटा, १० अक्चिन, दिल टूटा, ११ दावादी, १२ चाहे कितना ही, १३ पापियों।

\*पृ ६ म, पृष्ठ ६४७। १४ आय, १५ हमदर्द। †उ श, पृष्ठ २९६। १६ प्रकट, १७ भाति, १८ अवकार में, १९ शक, २० प्रलय के नरसिंह की आवाज, २१ अश्रुपूर्ण।

‡उ श, पृष्ठ २९६। २२ मुहरम का महीना, जिनमें इमाम हुसेन मारे गये। २३ नारीश्रेष्ठ, २४ अयायपुर्वक।

है-है हुसेना तेरी जबानी । था कुत्ब<sup>१</sup> तारा तेरी पेशानी ॥  
 दूजा नहीं था कोई जगमें सानीं । मेरा हुसेना० ॥  
 तब तश्नगीसों तू तिलमिलाया । सातो समुन्दर तब खलबलाया ॥  
 नै जालिमों ने पानी पिलाया । मेरा हुसेना० ॥  
 तू अर्श<sup>२</sup> का था रोशन सितारा । तेरा शरफ<sup>३</sup> था सब आशकारा<sup>४</sup> ॥  
 है आज तेरा सिर तनसों न्यारा । मेरा हुसेना० ॥

(५) हुसेन के परिवार की दुर्गति—

हुसेन और उनके साथियों के हत्याकांड के बाद आततायियों ने उनके परिवार के साथ जो जुल्म किया, उसे भी सुनिए\*—

ले गये, आज किधर ताजे-शहीदाँ<sup>५</sup> कहाँ । रनमें तन सों जुदा कर सरे-सुल्ताँ<sup>६</sup> कहाँ ॥  
 काँ किये जुल्फे-मुअंबर<sup>७</sup> कुं परेशान कहाँ । नेजा-ऊपर किवा जालिमने नुमार्याँ<sup>८</sup> कहाँ ॥  
 जो शफ़क<sup>९</sup> बीच हवेदा<sup>१०</sup> देखो खुशीदाँ<sup>११</sup> मुदाम्<sup>१२</sup> । लहूभरा नेजा<sup>१३</sup>-उपर था सरेपुरनूरे-इमाम्<sup>१४</sup> ॥  
 सरखोलेजाते यतीमां केते जारी<sup>१५</sup> सों तमाम । यह क्रयामत<sup>१६</sup> है सर-ऊपर वह शफ़ीआन<sup>१७</sup> कहाँ ॥  
 शामियां शामक<sup>१८</sup> जाते थे लिये अहले-हरम<sup>१९</sup> । सर-उपर रहमें करते थे सभी जोरो-सितम<sup>२०</sup> ॥  
 हाय कैसे थे मुसलमान न मुहम्मदसों गरम । कुफ<sup>२१</sup> के काम किया जो, उसे ईमान कहाँ ॥  
 जलती धूपाँ में यतीमाँकूँ दिये रजे-सफर । न खोरिश है न पोसिश न कोई लेता खवर ॥  
 राह-मंजिल<sup>२२</sup> में न था तोशा मगर खूने-जिगर<sup>२३</sup> । शहक़ाम<sup>२४</sup> उनका रफीक<sup>२५</sup> हो रहा सामान यहाँ ॥  
 एक दिन शाम<sup>२६</sup> तलक देखी न वस्ती का निशाँ । वह यजीदाँ<sup>२७</sup> रहे हैराँ कि हुई रात अयाँ<sup>२८</sup> ॥  
 सब हरम<sup>२९</sup> रोते कहे “हाय नहीं हमकूँ मकाँ । काँ रहा जदाँ<sup>३०</sup> का मदीना यो बयाबान<sup>३१</sup> कहाँ ॥  
 चौतरफ देख जंगल में कि मिल जाय पनाह<sup>३२</sup> । जाँरहें-अहले-हरम<sup>३३</sup> और सरे-सुस्ताँ<sup>३४</sup> केसिपह<sup>३५</sup> ॥  
 केते सायत<sup>३६</sup> वह फिरे हाल हुआ सबका तवाह । पाये एक किलये-यहुदी<sup>३७</sup> का मुसलमान कहाँ ॥  
 तब खड़े रहके पुकारे वहाँ सदरि-हिसार<sup>३८</sup> । “है यजीदी सभी लश्कर यों खड़ा खोल किवाड़ ॥  
 यक रात हम कूँ तेरे किलामेंलाके उतार । सुवह में लेके चलेंगे तेरा इहसान<sup>३९</sup> कहाँ ॥

१. ध्रुव, २. स्वर्ग, ३. कृपा, ४. प्रकट ।

\*यु. द. म., पृष्ठ ६४९ ।

५. वीरों का मुकुट, ६. राजाओं का सरदार, ७. अंबर-गंधी अलकें, ८. प्रकट, ९. आकाश की लाली, १०. प्रकट, ११. सूर्य, १२. सदा, १३. भाला, १४. इमाम का प्रकाश, १५. रोदन, १६. प्रलय, १७. पाप क्षमा करनेवाला, १८. शाम (सिरिया) के निवासी, १९. अन्तःपुरिकाएँ, २०. जोर-जुल्म, २१. अधर्म, २२. रास्ते के पड़ाव, २३. हृदय-रक्त, २४. दुःख, २५. साथी, २६. सिरिया, २७. हुसेन के शत्रु म्वाविया-पुत्र यजीद के आदमी, २८. प्रकट, २९. अन्तःपुरिकाएँ, ३०. नाना, ३१. मरुकान्तार, ३२. शरण, ३३. अन्तःपुर की स्त्रियाँ, ३४. सुस्तान (हुसेन) का मुंड, ३५. सेना, ३६. घड़ी, ३७. यहूदी का दुर्ग, ३८. दुर्गपाल, ३९. उपकार ।

## समकालीन कवि

हामिम अली ने अपने समकालीन मर्मियाभाषी शायरो का स्मरण करते कहा है\*—  
 हजार हैफ' न शायराने-दखिन । सो रूही व मिर्जाओ कादिर नहीं ॥  
 इनमें कुछ के मसिये हैं —

## (क) रूही—

जाज गमनाक' है नमनके गुल' । बल्कि दिल चाक है समन के' गुल ॥  
 गमजदा सीनये-दाग' हैरां है । नागिस-ओ-लाला यास्मन' के गुल ॥  
 यो न लाले शिफक' के दिसने है । लहूमें डूबे हैं सब गगन के गुल ॥  
 जय मुने शह की बात मजिलसमें । जल जुझे शमा' अजुमन'' के गुल ॥  
 नक़्शे -पा' देव दिल हवस राता । मिरये रखनेकूं तुज चरन के गुल ॥  
 खुश लगे तुज-तत्रा'' से एं रूही । दिलके प्रागांमने मयून'' के गुल ॥

## (ख) मिर्जा (१७३७ ई०)††—

मिर्जा के अनुमाग' मिर्जा अनुरवासिम मुल्तान अबुल हमन कुतुब (तानाशाह) वा दरगारी था । जय उसके स्वामी कंद वर लिये गये, तब यह अब्दुल्लागज के करीब हैदराबाद में फकीरी की जिन्दगी प्रसर करने लगा । उसकी कुछ शोनाजलियाँ—

शह' पर या निम दिन बिरया मानम'' रह्या जगमें यो सोज''\* ॥  
 तय मुहरंम'' की दहम' पारील वा होर जुमा' रोज ॥  
 गहकने' चालीस प्यागे तीस होर दो ये सवार ॥  
 जालिमा के दरमने तब ये सवारा वीम हजार ॥

○ ○ ○ ○

## (६) हुसेन की वीरगति†††—

जसम ताऊपर जब लगे त्रहिस्तान । परे सर्वर 'उम रनमे जो आफताव'' ॥  
 उठ्या शोग हुर शै सो उम वक्तपर । गया हाक यो अश'' के तस्त'' पर ॥  
 घुर्जा आहका उम गगन लग गया । मुरज गमसो शोला'' हो सब जल गया ॥

\*उ दा, पृष्ठ १६१ । १ शोक, २ दक्खिन के कवि ।

†उ ज, पृष्ठ ३१४ ।

‡ शोरपूर्वा, ४ उद्यान के फूल, ५ चमेली, ६ दिल के घाव, ७ चमेली,  
 ८ रक्तिमा, ९ हुसेन, १० दोपक, ११ सभा, १२ पद-चिह्न, १३ तेरे मन, १४ वाणी ।

††वु द म, पृष्ठ १८९ ।

१५ हुसेन, १६ शोक, १७ जलन, सताप, १८ महीना, १९ दसवों, २० शुक,  
 २१ हुसेन के पास, २२-अत्याचारी ।

†††वही, पृष्ठ १९० ।

२३ घाव, २४ सरदार, २५ सूर्य, २६ प्रत्येक वस्तु, २७ स्वर्ग, २८ सिंहासन,  
 २९ ज्वाला ।

न कुलसून, जेनबकूँ ताकत रह्या । न कुछ शहबानू के राहत<sup>१</sup> रह्या ॥  
जेते अहले - मासूम<sup>२</sup> हो रहे यतीम<sup>३</sup> । खडयाँ सब ऊपर या जफ़ा<sup>४</sup> होर अजीम<sup>५</sup> ॥

वाद - ज<sup>७</sup> उमर साद सराँ<sup>६</sup> रनते लिया है । सब सर वो सवाराँके हवाले<sup>८</sup> सो किया है ॥  
तब शामकी जानिव ले चले अहले-हरम<sup>९</sup> कूँ । बदबख्त<sup>१०</sup> यजीद पासकने जुल्मों-वफा सों ॥  
यों सब वो सिराँ हो हरम सात लिया है । मंजिल<sup>११</sup> ओ-मुकामाँ केते उस रहमें किया है ॥

(ग) कादिर (१७३६ ई०)\*--

हुआ शोहरत<sup>१३</sup> मुहर्रममें यो गम<sup>१४</sup> है शाहअली<sup>१५</sup> का ।  
कि है फर्जन्द<sup>१६</sup> प्यारा वह दोनों आलम<sup>१७</sup> के वाली<sup>१८</sup> का ॥  
छुपा है दीन<sup>१९</sup> का चंदर कि जिसके सोगसों जगपर ।  
फ़लक<sup>२०</sup> हर मुल्क में ताने शम्याना<sup>२१</sup> रात काली का ॥  
सितारे सब यह कुदस्याँ<sup>२२</sup> ने मिलाकर गगन ऊपर ।  
हुसेनके उर्स<sup>२३</sup> कूँ बांधे मँडप मोतियाँकी जाली का ॥  
नही यो अश्के<sup>२४</sup>-शन्नम<sup>२५</sup> सों खुले है आहके गुल हो ।  
देखो गमके चमन म्याने<sup>२६</sup> लताफत<sup>२७</sup> गमके मानी<sup>२८</sup> का ॥  
क्रयामत<sup>२९</sup> काँपना कादिर तजुल्जुल<sup>३०</sup> अब करे जाहिर ।  
मुजे तकवा<sup>३१</sup> तब आखिर है हुसेन सर्वर से वाली<sup>३२</sup> का ॥

मुहर्रम यो गम है कहल<sup>३३</sup> हाय-हाय । हुआ शोर मातम<sup>३४</sup> सकल हाय-हाय ॥  
शफ़क<sup>३५</sup> में रँग्या सूरका पैरहन<sup>३६</sup> । भिगाकर गगनमे अँचल हाय-हाय ॥  
हुसेनाकूँ कहाँ दे पोसलाय नबी । क<sup>३७</sup> प्यार सबते अबल हाय-हाय ॥  
हुसेनाकी खिदमतकूँ सुरज खवास<sup>३८</sup> । किरन का करे मोरछल हाय-हाय ॥  
उननपर जुलुमके सितारे गि<sup>३९</sup> । किमिरीख<sup>४०</sup> जेहरा<sup>४१</sup> जौहल<sup>४२</sup> हाय-हाय ॥  
रो<sup>४३</sup> फ़ातिमा होर खदीजा नबी । यो तक्रदीर उनकी अजल<sup>४४</sup> हाय-हाय ॥  
नबीके घराँका दिया गुल हुआ । खुदाया<sup>४५</sup> तुँ कर यो अदल<sup>४६</sup> हाय-हाय ॥

१. सुख, २. निरपराध, ३. अनाथ, ४. पड़ा, ५. अत्याचार, ६. महान्, ७. इसके बाद,  
८. शिरों, ९. सपुर्द, १०. अन्तःपुर की, ११. अत्याचार, १२. पड़ाव ।

\*उ. श., पृष्ठ ३१६ । १३. प्रसिद्ध, १४. शोक, १५. महाराजा, १६. संतान, १७. शोक,  
१८. स्वामी, १९. धर्म, २०. आकाश, भाग्य, २१. तम्बू, २२. फरिश्ते, २३. उत्सव, २४. आँसू,  
२५. ओस, २६. उद्यान में, २७. लालित्य, २८. अर्थ, २९. प्रलय-दिन, ३०. कम्पन, ३१. धीरज,  
३२. स्वामी, ३३. कठिन, ३४. शोक, ३५. रक्तिमा, ३६. परिधान, ३७. सेवक, ३८. मंगल,  
३९. शुक, ४०. सनीचर, ४१. मृत्यु, ४२. हे भगवान्, ४३. न्याय ।

कि सह-उपर जुलम नाहक' वेगुनाह । तो महनार' के सफ' में सजल' हाय-हाय ॥  
सदा गमसो रोता खडा कादिरा । दुन्या स्वाव झूठा सहल' हाय-हाय ॥\*

## § ३३ कयासी (१७५१ ई०)

### १ कवि

मैयद अब्दुल्ला उपनाम कयामी अठारहवीं सदी के मध्य का दक्षिणी कवि है। इसका कया-काव्य 'सौदागर की वीवी' पलानी के अंगरेजी-महाविजय के मात माल पहिले लिखा गया—

हुये मात नौ बँत चोदा पे मात' । मुस्तम हुआ है यो नजल' वात ॥  
अया सन इग्यारा मौ चौमठ साल । व तारीग ग्यारा ओ माहे दवाल' ॥  
मैयद अब्दुल्ला करके मेरा है नाँव । तखल्लुस' कयामी विकर डाल नाँव ॥

### २ कविता

'सौदागर की वीवी' (जोजये-ताजिर) का कया-मक्षेप है—एक सौदागर था। उसकी वीवी अत्यन्त मुन्दरी थी। सौदागर परदेस गया। बहुत समय तक नहीं लौटा। जीवन-यात्रा चलाना बठिन हुआ। अन्तमें वीवी ने एक मोम का पुतला बनाया और उसके द्वारा जौहरियों को ठगकर अपने प्राणों और सतीत्व की रक्षा की—

रहती नित इथत' में जो मनहरन । मरद जाके गुजरे' सो केते करन' ॥  
मुस्तव' हुई घरकी खर्ची तमाम' ॥ हुआ भाग' का बल्कि कुछ एक दाम' ॥  
न आया है तव लग भी ग्वाबिन्द' ओ । मा उन घनमें वेहद फिरमद हो ॥  
अयी दाई घरमें सो उमकूँ बुलाइ । वही "कया फिर भव करे बोल दाइ ॥  
घनी जाको घरका हुये भीत रोज । न आया है अब लग खबर नै हनोज' ॥  
न खानेकी वाकी' रह्या है यहाँ । करे फिर कया कुछ तरदुत' बना' ॥  
वही दाइ "वीवी, करे कया इलाज । न कुछ फिर चलनी है अल्ला के वाज' ॥  
किमी तीर अब जिन्दगी काटना । वही पीमना - कूटना - कातना' ॥  
वही सुनको उस-वातकूँ मोहनी । "अछी वात बोली अरी माजनी ॥  
बडा खर्च घरका एती जान यो । हावे कयो मजूरीमें गुजरान' यो ॥

१ अयाय से, २ प्रलय, ३ पांती, ४ लज्जा, ५ विप। \*दक्कन में उर्दू (नसीरुद्दीन हाशिमि, हैदराबाद, १९३६, पृ० २९५)।

वि द म, पृष्ठ ५१०, ११ शंका, ११६४ हिज्री को २ सितंबर १७५१ था। ६ ७२१, ७ लेख, ८ बुध, २ सितम्बर १७५१ ई०, ९ उपनाम।

† उ श, पृष्ठ २९०-९२। १० आनन्द, मौज, ११ बीते, १२ युग, १३ समाप्त, १४ सारो, १५ बाहर, १६ कज, १७ पति, १८ अबतक, १९ वचा, २० चिता, २१ उपाय, २२ विना, २३ निर्वाह।

करे फिर ऐसी कि दरहाल<sup>१</sup> कुछ । होवे घरका गुजरान हर हाल कुछ<sup>२</sup> ॥  
 कही दाई "बीबी, मेरी बात सुन । न होता है कुछ अब मेरे हात सुन ॥  
 जो कुछ फिर करना सो अब तूच कर<sup>३</sup> । एता बोल रही चुपके मूँ मोच<sup>४</sup> कर ॥  
 सुन इस बातकूँ नार उस तिलमने<sup>५</sup> । करी यक अँदेशा<sup>६</sup> अपस दिल मने ॥  
 बजाँ मोम दो तीन पेका मँगाइ । सो उस मोमका एक पुतला बनाइ ॥  
 कि ऐसा बनाई ओ नादिर<sup>७</sup> बचा । जे कोइ देख बोले है आदमी सचा ॥  
 अजब<sup>८</sup> सनअती सो बनाई उसे । कि कपड़े ओ बस्ताँ पिनाई उसे ॥  
 कही "जाँ अहै जौहरीकी दुकान । ऐ दाई लेजा मुजकूँ वाही ठिकान ॥"  
 बचेकूँ लेकर आपने गोद बीच । सवार सिर उपर ऊपर बुर्केकूँ वै च<sup>९</sup> ॥  
 लेकर दाइ कूँ साथ निकली बहार<sup>१०</sup> । चली डोलती ठुमके सोँ गुलअजार<sup>११</sup> ॥  
 चली पेशखिदमत<sup>१२</sup> अँगे होके दाइ । जहाँ जौहरी थे वहाँ लेको आइ ॥  
 सो आ छवि सोँ दुकानमें बैठ नार । कही जौहरी कूँ "ऐ दुकानदार ॥  
 तेरे पास मोती बड़े मोल के । है कुछ बेबहा<sup>१३</sup> कीमती तोलके ॥  
 देखा" जौहरी सो वहीं सुघ विसार । तअज्जुब<sup>१४</sup> हो दिलमे किया यो विचार ॥  
 अजब नूर बख्या<sup>१५</sup> है इसकूँ खुदा । है किस घरकी बीबी या शहकी दवा ॥  
 ओ बे-उज्र होकर रख्या दर<sup>१६</sup> जरूरी<sup>१७</sup> । केतक वजा<sup>१८</sup> के लाको मोती हजूर<sup>१९</sup> ॥  
 ओ मोती सर्वोमे अथे नामदार । रखी मोल उनका चुका तीन हजार ॥  
 पूछा "लाल-हीरे है तेरेकने<sup>२०</sup> । कहया नै हीरे लाल-मेरेकने" ॥  
 केतक धातके ओ जवाहर ले आय । बहुत बेबहा बेश<sup>२१</sup> नादिर<sup>२२</sup> ले आय ॥  
 हीरा उनमेंते यक हजार चारका । लिये लाल आठ हज्जार का ॥  
 हुये पैसे तीनों के पन्द्रह हजार । बजाँ जौहर्याँ कूँ कही यों ओ नार ॥  
 "जवाहर मे देती हूँ दाई के हात । तुमे तीन आदमियो देउ इसके सँगात ॥  
 जवाहर लेकर घरकूँजाती है दाइ । तुमारे जो पैसे दिलातीहै दाइ ॥  
 कि मै बैठती हूँ ओ फिर आये लग । तुमारे जो पैसे यहाँ ल्याय लग" ॥  
 कबूले<sup>२३</sup> सुन इस बातकूँ जौहर्याँ । अपसके दे साथ तीन आदमियाँ ॥  
 चली दाइ लेकर ओ तीनों के तै । शहरके गली होर कूच्याँ मै ॥  
 केतक वक्त लाग शह सारा फिराइ । मौत करके माँदे सो यक ठार लाइ ॥  
 बड़ा एक कूचे मे भडकल<sup>२४</sup> अथा<sup>२५</sup> । वो तीनो कूँ उस जाय ऊपर बिठा ॥  
 कही "यो अछो घरमे जाती हूँ मै । तुमारे ये पैसे ले आती हूँ मै ॥"  
 बिठा उनकूँ होर आप भडकल के पार । ओ भडकल-अँदर राह थे तीन-चार ॥

१. तत्काल, २. मीच, मूँद, ३. क्षण मे, ४. विचार, ५. अद्भुत, ६. विचित्र,  
 ७. वहाँ ही, ८. बाहर, ९. गुलाबी गालवाली, १०. शोभा-सहित, ११. अनमोल,  
 १२. अद्भुत, १३. प्रदान किया, १४. द्वार, १५. जरूरी, १६. प्रकार, १७. सम्मुख,  
 १८. तेरे पास, १९. बढ़िया, २०. दुर्लभ, २१. स्वीकार, २२. महल, २३. था (हता) ।



मो यक वाटते जाँक<sup>१</sup> सो घरको गइ । जवाहर रख आरामसो बैठ रही ॥  
 केतेक बेर लग बैठकर हो हलाक<sup>२</sup> । लगे मारने बावरे होके वाँग ॥  
 न ओ दाइ है नाँ जवाहर न माल । लगे पीटने<sup>३</sup> सर-उपर टाक<sup>४</sup> डाल ॥  
 तव औरो कुं पूछे यो किसका है घर<sup>५</sup> । कहेलोग "सब वाटका है ये दर" ॥  
 वहे "गइ दगा दे को हमना ओ राँड । हमे<sup>६</sup> काँसो राबिन्द<sup>७</sup> कुं देले वाँड" ॥  
 चलो जाय जल्दी सो दूकान लग । जो वीवी ओ मक्कार की है तलक ॥  
 हो हैवतजदा<sup>८</sup> दाइ की आम छोड । लगे आने दूकानकुं अपने दौड ॥  
 वजा<sup>९</sup> इस वजा<sup>१०</sup> सो हुआ वाँ सबव<sup>११</sup> । वरे<sup>१२</sup> याँ हुआ सो सुनो हाल अब ॥  
 सुला नार उस रर वच्चे के तें । कही "इस्तजा कर को आती हूँ मैं" ॥  
 वचा सो रह्या है मो पुरनीद<sup>१३</sup> हो । न बैठे मयी त्यो उडाते रहो ॥  
 एता बोलकर वाँमे ज्यो आइ भार<sup>१४</sup> । चली ना पछी फिरको देख एक्वार ॥  
 निसक वेगसो आपने घरकुं आइ । हुई जमा - खातिर अपें होर दाइ ॥

### §३४. वाकर आगाह (१७४५-१८०५ ई०)

#### १ कवि

आगाह का नाम मुहम्मद वाकर था। इनके पू ज अरबी सौदागर थे, जो व्यापार के सम्बन्ध से कारोमडल (चोलमडल) के समुद्र-तट पर बस गये। इस्लाम के आरम्भ से ही जहाँ एक ओर गाजी तलवार की सहायता से इस्लामी राज्य और धर्म का प्रसार करते थे, वहाँ मुस्लिम फकीर ज्ञान-भक्ति, अद्वैतवाद, मयम द्वारा इस्लाम धर्म में काफ़िरो को दीक्षित कर रहे थे। सौदागर (व्यापारी) भी व्यापार के साथ धर्म-विस्तार में हाथ बँटा रहे थे। मलाया, जावा, सुमाना में इस्लाम का प्रचार मुस्लिम व्यापारियों ने किया। यही काम आगाह के पूर्वजा ने कारोमडल तट पर किया। पीछे इनके पूर्वज बीजापुर में आकर बस गये। १६८२ ई० में बीजापुर के पता के बाद इनके पिता मुहम्मद मुत्तुजा वेल्लोर में आ गये, जहाँ १७४५ ई० (११५८ हि०) में आगाह का जन्म हुआ। इन्होंने विद्याध्ययन वेल्लोर और त्रिचिनापल्ली में किया और अरबी, फारसी, उर्दू में खासी विद्वत्ता प्राप्त की। अरबी और फारसी की इनकी कविताओं के दीवान मौजूद हैं। अरबी, फारसी और दक्खिनी मिलाकर कुल ३०३ ग्रंथ इन्होंने रचे। ६२ साल की उम्र में १८०५ ई० (१२२० हि०) में इनका देहांत हुआ। इनकी कन्न मद्रास में है। मुशी सदासुखलाल, पण्डित लल्लूलाल, मुशी इशावरला और मदल मिश्र जिन समय अपनी रचनाएँ कर रहे थे, उसी समय आगाह सुदूर दक्षिण में लेखनी चला रहे थे। १५ साल की उम्र से कविता शुरू की। २६ वय की उम्र में १७७१ ई० (११८४ हि०) से उन्होंने दक्खिनी में लिखना शुरु किया।

१ हर्ष, २ पन्शान, ३ डालने, ४ मिट्टी, ५ हम लोग, ६ स्वामी, ७ उधार, ८ भयभीत, ९ इसके बाद, १० प्रकार, ११ कारण, १२ अथ, १३ निद्रापूर्ण, १४ बाहर।

## २. कृतियाँ

दक्खिनी में इन्होंने १७ पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'हस्त-बहिस्त' (आ स्वर्ग) मुख्य है।

इनकी सत्रह पुस्तकें हैं—

- |  |                       |
|--|-----------------------|
| १. अक्रायदनामा                               | १०. गुल्जारे-इस्क     |
| २. तोहफतुन्निसा                              | ११. रूपसिंगार         |
| ३. हस्त-बहिस्त (८ भाग)                       | १२. दीवान-आगाह        |
| ४. रियाजुल्जनाँ (मुहम्मद-परिवार) ३०९९ बैत    | १३. रौजतु-ल्-इस्लाम   |
| ५. महबूबुल्कुलुब (गौस पीर की जीवनी) ४०६३ बैत | १४. फ़रायद-दर-अक्रायद |
| ६. हाशिया मनदर्पन (मनदर्पनसार)               | १५. रियाजु-स्-सैर     |
| ७. तोहफ़ये-अहवाब                             | १६. खम्सा मुत्वहरा    |
| ८. मेराजनामा                                 | १७. फ़िक्रहाय-इस्लाम  |
| ९. हिदायतनामा                                |                       |

'अक्रायदनामा' (सिद्धान्तिका) शायद आगाह की पहिली १५०० बैतों की दक्खिनी पुस्तक है, जिसमें आगाह ने लिखा है\*—

कहा नै मै कभी दक्खिनीमे अशआर<sup>१</sup> । मुँजे है शेर कहनेसे बहुत आर<sup>२</sup> ॥

वले<sup>३</sup> यह नज्म बोल्या विज्जरुरत<sup>४</sup> । पड़े<sup>५</sup> ता उसको हर उम्मी<sup>६</sup> व औरत ॥

आगाह की दक्खिनी में उपनाम बाकर था† —

तु रख बाकर उपर नित प्यार अपना । इनायत कर उसे दीदार<sup>७</sup> ॥

अरबी में उनका उपनाम आगाह बतलाया जाता है, किन्तु आगाह न अरबी भाषा का शब्द है, न गाफ (ग) के अभाव के कारण उसे अरबी में लिखा जा सकता है। अपनी फारसी कविताओं में उन्होंने जरूर यही उपनाम रखा है—

'हस्त-बहिस्त' आगाह की सबसे बड़ी पुस्तक है, जिसमें प्रायः ८६५० बैत (अर्धालियाँ) हैं। हस्त-बहिस्त वस्तुतः आठ ग्रंथों का संग्रह है, जिसका विषय है पैगम्बर मुहम्मद का वृत्तान्त —

\*त. उ. म., पृष्ठ ७७। १. पद्य, २. संकोच, ३. तंज़िन, ४. आवश्यकता के कारण, ५. पड़े, ६. अनपढ़।

†त. उ. म. पृष्ठ ८९, "पंद्रहवें साल से शेर के साथ उल्फत (प्रेम) रखता है, अगर्चे शेर कम कहता है, इसकी वास्ते तखल्लुस (उपनाम) मुद्दत लग मुकर्रर नै किया था। जब ११८४-८५ हि० (१७७०-७१ ई०) में बाज़ रसायल हस्त-बहिस्त के मंज़म (पद्यबद्ध) किया, . . . बाकर . . . तखल्लुस रखा। . . . ११९४ हि० (१७८० ई०) . . . दीवान अरबी के समय तखल्लुस अपना आगाह मुकर्रर किया। इस तखल्लुस को अशआर अरबी व फारसी में लाया।"

- १ मनदीपक—मुहम्मद का प्रकाश।
- २ मनहरन—मुहम्मद के लिए भविष्यद्वाणियाँ।
- ३ मनमोहन—मुहम्मद का जन्म।
- ४ जगमोहन—मुहम्मद के वम-स्वभाव, आठ वष से मृत्यु तक की जीवनी।
- ५ आगमदिल—मुन्दर जाचरण।
- ६ राहतजान—मुहम्मद के गुण।
- ७ मनदर्पन—मुहम्मद के चमत्कार।
- ८ मनजीवन—मुहम्मद-भवत।

वाकर ने 'हस्त-वहित्त' के हर भाग पर गद्य में बड़ी भूमिकाएँ लिखी, जो इशाअल्ला, लल्लूलाल के समय की दक्षिणी गद्य के अच्छे नमूने हैं, यद्यपि उनमें कवित्व लाने की कोशिश नहीं की गई है। इनके कुछ उदाहरण हैं\* —

"उ रिसाले' ११८५ और ११८६ (१७७१-७२ ई०) में बने हैं। पीछे उसके बहुत ढील हुई। क्या वास्ते कि यन रफीक' कि इन रिसालाका तालिब' था, सो रहलत' क्या। आखिर इख्तदा' सन एक हजार और दा मी और छ' (१७९१ ई०) में रिमाला 'मनदपन' और रिसाला 'मनजीवा' बनाने का इतिफाक' हुआ। इन आठ रमायल' में तग-मीतन' आठ हजार और छ मी और पचाम वैंत हैं। सुयियो' के साथ नी हचार वैंत होगे। इन सब रिसाला में शायरी नै किया हूँ, बल्कि साफ-ब-मादा' बहा हूँ और उर्दूकी भाका में नहीं बहा, किस वास्त कि रहनेवाले यहाँ के उम भाका मे वाकिफ' नही है। ऐ भाई, यह रिमाते दखिनी जवान में है करकर' सहल और मग्मरी न जाने, क्या वास्ते कि बडे मातबर' कुतुब' से तहकीब' करके लिखा हूँ।"

१ मनदीपक—"रिसाला अब्वल'" का नाम मनदीपक है। इस रिमाला में हजरत मुहम्मद के नूर-मुक्द्स'" का जिक्र है।

२ मनमोहन—"इम रिसालेमें हजरत के हालात'" का बयान है, यानी" जो माजिजात'" के मुद्ते-टमल'" और बलादत'" जीर दूध छुडाई और खुदसाली'" में हजरत से जाहिर'" हुये, उस हद'" तब कि हजरत ती आठ बरसकी उम्र हुई है।"

मनदपन मे कवि के सम्बन्ध में निम्न सूचनाएँ मिलती हैं ††† —

\*त उ म, पृष्ठ ७९-८६।

१ पुस्तकें, २ मित्र, ३ इच्छुक, ४ मौत, ५ आरभ, ६ सयोग, ७ पुस्तकें, ८ प्राय, ९ शीर्षक, १० स्पष्ट, सरल, ११ परिचित, १२ इति, १३ विश्वसनीय, १४ ध्रुव, १५ प्रथम, १६ पवित्र आकाश।

† बही, पृष्ठ ८०।

१७ अवस्थाओ, १८ अर्थात्, १९ चमत्कार, २० गर्भकाल, २१ जन्म, २२ छुटपन, शैशव, २३ प्रकट, २४ सोभा।

†† बही, पृष्ठ ८२।

††† त उ म, पृष्ठ ८६।

थे वारा सो के उपर छे बरस जब<sup>१</sup> । हुआ यह नुस्खये<sup>२</sup>-दिलकश<sup>३</sup> मुरत्तब<sup>४</sup> ॥  
 मैं हूँ किस हालमें तू जानता है । मैं हूँ किस जंजालमें पहिचानता है ॥  
 है मेरी मुश्किलाँ सब तुजकूँ मालूम । है मेरी कुल्फताँ<sup>५</sup> सब तुजकूँ मफ़हूम<sup>६</sup> ॥  
 हुआ हूँ सब तरफसे मैं उदासी । न कर ऐसे निरासे कुँ निरासी ॥  
 हुआ हूँ जोफ<sup>७</sup> व बीमारी से हैराँ । तबीबाँ<sup>८</sup> पास नै है मेरे दरमाँ<sup>९</sup> ॥  
 हुई आजिज<sup>१०</sup> दवा मेरी दुआ भी । हुई आजिज मेरी ताकत गिजा<sup>११</sup> भी ॥  
 मेरा खातिर<sup>१२</sup> परागंदा<sup>१३</sup> हुआ है । निपट दुनियासेती गंदा हुआ है ॥  
 जईफी<sup>१४</sup> से हुआ हूँ मैं जमींगीर<sup>१५</sup> । नही कुछ सूझती है मुजकूँ तदबीर ॥  
 मुदाम<sup>१६</sup> इस फिक्र<sup>१७</sup> में ह यह कमीना<sup>१८</sup> । कि चलता सिरसे जावे ता-मदीना<sup>१९</sup> ॥  
 हूँ रहनेसों यहाँ के भौत बेजार<sup>२०</sup> । बहुत इस बातसे पाता हूँ आजार<sup>२१</sup> ॥  
 हुआ है कुफ़<sup>२२</sup> का याँ गर्म बाजार<sup>२३</sup> । मुसल्मानाँ उपर है सख्त दुश्वार<sup>२४</sup> ॥  
 समाँ<sup>२५</sup> याँ मुश्किल उनपर आ खड़ा है । पहाड़ उनके सिर ऊपर आ पड़ा है ॥  
 किधर जावें कि यह लश्कर है तेरे । अगर है नेक-हो-बद चाकर है तेरे ॥  
 अगर्चो है बद्याँ<sup>२६</sup> इनके घनेरे । वले<sup>२७</sup> बेशुबहा<sup>२८</sup> कहलाते है तेरे ॥  
 मेरी औलाद<sup>२९</sup> कूँ सरसब्ज<sup>३०</sup> कर तू । रख अपने दीन<sup>३१</sup> पर साबित<sup>३२</sup> उनोकू ॥  
 दे उनको खूबियाँ<sup>३३</sup> दोनों जहाँ<sup>३४</sup> की । दे उनकूँ न्यामताँ सिर<sup>३५</sup> ओ अयाँ की ॥  
 मेरे भायाँ के तें वा यकसर औलाद<sup>३६</sup> । हमेशा दीन होर दुनियाँमें रख शाद<sup>३७</sup> ॥

‘हस्त-बहिस्त’ को समाप्त करते हुए मनजीवन मे लिखते है \* —

तमत<sup>३८</sup> विल्-खेर<sup>३९</sup>. रसायल ‘हस्त-बहिस्त’ . . . मिन्-तस्नीफ़<sup>४०</sup> मौलवी मुहम्मद बाकर आगाह शाफ़ई<sup>४१</sup> वीजापुरी एलोरी . . . वतारीख<sup>४२</sup> दोयम शहर रबीउ-स्-सानी रोज दोशंबा सन् १२०९ हि०।”

१. १२०६ हिजरी, (१७९१ ई०), २. ग्रंथ, निबन्ध, ३. मनोहर, ४. निर्मित, ५. कष्ट  
 ६. मालूम ७. निर्बल, ८. चिकित्सक, ९. चिकित्सा करनेवाले, १०. निराश, बेकार, ११. भोजन,  
 १२. दिल, १३. परेशान, १४. निर्बलता, बुढ़ापा, १५. धरती पकड़ना, १६. सदा, १७. चिन्ता,  
 १८. अधम, १९. मदीना, अरब तक, २०. दुःख, २१. दुःख, २२. अधर्म, २३. बहुप्रचार,  
 २४. कठिन, २५. स्थिति, २६. बुराइयाँ, २७. किन्तु, २८. निस्सन्देह, २९. सन्तान, ३०. हरा-  
 भरा, समृद्ध, ३१. धर्म, ३२. दृढ़, ३३. गुण, २४. उभयलोक, ३५. गुप्त, ३६. अकेली  
 संतान, ३७. प्रसन्न, सुखी ।

\*वही, पृष्ठ ८६। ३८. समाप्ति, ३९. निर्विघ्न, ४०. अष्ट स्वर्ग की पुस्तकें, कृति,  
 ४१. एक सुन्नी सम्प्रदाय, ४२. तारीख, अक्टूबर, १७९४ ई०, दिन रविवार ।

†‘हस्त-बहिस्त’ सन् १२६२ हि० (१८४५ ई०) में राजकिशन प्रेस में तथा सन् १२७०  
 हि० (१८५३ ई०) में अजीजिया प्रेस (हैदराबाद) में छप चुका है ।

## ३ कवित्व

वाकर ने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं, उनकी कृतियों में कवित्व का अभाव है, इन्हें वह स्वयं स्वीकार करते थे। किन्तु, दक्खिनी कविता के अन्तिम कवि होने के कारण उनका महत्त्व भी है। दृष्ट-व्यहित पैगम्बर मुहम्मद पर लिखी गई है, और इसके लिखने में लेखक ने इस्लाम के बहुत-से प्रामाणिक प्रथा स सहायता ली है। पैगम्बर मुहम्मद के जो चित्र वाकर ने गीचे हैं, उनमें से कुछ के नमूने देविए \*—

## (१) प्रथम अनुयायी—

जबल जे' खदीजा खानू<sup>१</sup> । लाई ईमान<sup>२</sup> मुयाह्म<sup>३</sup> सवर्नू<sup>४</sup> ॥  
 भी' उसी राज बठ बचकने' जमर<sup>५</sup> । लाये ईमान हँदर<sup>६</sup> सफदर ॥  
 वाद<sup>७</sup> जँद-ते-अजजर वो बलाल । लाये तरतीर<sup>८</sup> म ईमान फिन्हाल<sup>९</sup> ॥

## (२) मुहम्मद और युद्ध—

इस्लाम के पैगम्बर स्वयं शान्तिप्रिय थे, यद्यपि वह चरम अहिंसा के अनुयायी नहीं थे—  
 और उसी साल हुआ फज<sup>१</sup> जहाद<sup>२</sup> । उस शहशाहके ऊपर रण तूयाद ॥  
 उसके गजवान<sup>३</sup> थ सब मत्तावीम । कि अया उमो शह<sup>४</sup> नफमे-नफास<sup>५</sup> ॥  
 हुई दम जगमे ऐ यार लडाई । बानी जगामे नही हुई ऐ भाई ॥  
 जो लडायी में गया, नही वह रईस<sup>६</sup> । हुये दस सालमें वावे<sup>७</sup> सब ॥

## (३) मुहम्मद की शरीरावृत्ति—

मिधान जये शाह के मिर के बाल । सम<sup>१</sup>-ते-मीने पन<sup>२</sup> बीच ऐ जग-उजाल ॥  
 दराजी<sup>३</sup> में पीचे थे वादे रने<sup>४</sup> । यो आय है अक्सर<sup>५</sup> हदीसां मने<sup>६</sup> ॥  
 कभी मिर मुँडाया नै ओ नामदार<sup>७</sup> । मगर<sup>८</sup> हजके अय्याम<sup>९</sup> में एर वार ॥  
 दिया वाँट अमहाव<sup>१०</sup> कू सबके बाल । रये सब उसे अपने जीके मिसाल<sup>११</sup> ॥  
 ओ सखर के सीम भर बाल थे । दिला मैद<sup>१२</sup> करने के जाल थे ॥  
 निहायत<sup>१३</sup> थे मुशर<sup>१४</sup> ओ मये-निगाह<sup>१५</sup> । है बहना उसे मुशर-ते-अवर<sup>१६</sup> गुनाह<sup>१७</sup> ॥  
 भी ह यव चापत<sup>१८</sup> में इम घात<sup>१९</sup> स । कि घोता या सिर पे के पात से ॥  
 भी मुन्नत<sup>२०</sup> अहै वाउ रयना तमाम<sup>२१</sup> । निगाह<sup>२२</sup> उमकी करना यह सुवह-ते-शाम<sup>२३</sup> ॥

\*यु द म, पृष्ठ ४३८।

१ पैगम्बर होने के प्रथम दिन, २ खदीजा मुहम्मद की प्रथम पत्नी, ३ धर्म-स्वीकार, ४ प्रथम, ५ और, ६ समय, ७ अपराह्न, ८ अनी, ९ पकित-भेदक, १० अनतर, ११ कमा, १२ तन्काल।

विही, पृष्ठ ४३९। १३ कर्त्तव्य, १४ धर्मयुद्ध, १५ लडाइयाँ, १६ मुहम्मद, १७ स्वयं, १८ सखदार, १९ घटित, २० मसोलें, २१ बक़िम, २२ कितु, २३ लवाई, २४ कथे के पास, २५ प्राय, २६ स्मृतियों में, २७ कीर्तिशाली, २८ कितु, २९ समय, ३० निर-मडली, ३१ प्राणसम, ३२ शिकार, ३३ अत्यंत, ३४ सुगंधित, ३५ काले बाल, ३६ कस्तूरी और जवर, ३७ पाप, ३८ परम्परा, ३९ भाँति, ४० धर्मानुगत, ४१ सारा, ४२ दृष्टि, ४३ प्रात-साय।

(४) मुहम्मद के उदार गुण---

सखायत<sup>१</sup> में कोई उसके सानी<sup>२</sup> नहीं । न था जूद कूँ उसके कडका<sup>३</sup> कही ॥  
 सवासो दिया ऊँट रोजे-हनी<sup>४</sup> । गरीबाँकुँ ओ खल्क का नूर - ऐन<sup>५</sup> ॥  
 बकौले - हवाज़न<sup>६</sup> दिया छे हजार । दिरम<sup>७</sup> ओ शहंशाह आली तबार ॥  
 नवे यक<sup>८</sup> मुसल्मानकूँ ओ बे-बदल<sup>९</sup> । दिया यक जँगल भरकू बकरी सकल ॥  
 कहा "क्रौम<sup>१०</sup> कूँ जाको ऐ गुमरहां<sup>११</sup> । मुहम्मद उपर लाओ ईमान जान ॥  
 सखावत<sup>१२</sup> कूँ उसकी नहीं इन्तिहा<sup>१३</sup> । यो ज़ाहिर सखावत है मुद्दा<sup>१४</sup> ॥  
 मैरहमत<sup>१५</sup> का उसकी कश क्या बयान । सराया<sup>१६</sup> है उसकूँ खुदा और कुरान . . . ॥  
 भी जाता अथा शह मरीजाँ<sup>१७</sup> के घर । भी होता था हाज़िर<sup>१८</sup> जनाजे<sup>१९</sup> उपर ॥  
 बुलाता अगर कोई ज्याफ़त<sup>२०</sup> लिये । तो जाता शहंशाह घर उसके चल ॥  
 कोई असहाब<sup>२१</sup> सों गर न आता नजर<sup>२२</sup> । बहुत पूछता था उसे जिद्द<sup>२३</sup> कर ॥  
 मुसाफ़िर कूँ पौचाने जाता था ओ । कोई आया तो लेता अथा आगे हो ॥  
 मन<sup>२४</sup> ऐ भाइ, स<sup>२५</sup> र<sup>२६</sup> कूँ शाम-सेहर<sup>२६</sup> । तक्रैयद<sup>२७</sup> न था कोई खाने उपर ॥  
 तकल्लुफ़<sup>२८</sup> में उसके न था गर्मजोश<sup>२९</sup> । जो पाता अथा उसकूँ करता था नोश<sup>३०</sup> ॥  
 जो खाते थे अहलेमदीना<sup>३१</sup> सकल । वही नोश करता अथा शह नवल<sup>३२</sup> ॥

(५) मुहम्मद का पहनावा\*---

अथा<sup>३३</sup> पैरहन<sup>३४</sup> शहकने<sup>३५</sup> दो सतर । भी कपड़े सफेद ए गरामी गुहर<sup>३६</sup> ॥  
 यही कहता था अकसर<sup>३७</sup> वह गुल-उमेद<sup>३८</sup> । "करो लाजिम अपने पो कपड़े सफेद ॥  
 है पाकीजा<sup>३९</sup> वो खूब तर<sup>४०</sup> वह लिबास । पैनो तुम शामो-सेहर<sup>४१</sup> वह लिबास<sup>४२</sup> ॥  
 पिनाओ उसे अपने अह्या<sup>४३</sup> केतै । भी तकफ़ी<sup>४४</sup> करो उसमे मूये के तै ॥

१. दानशीलता, २. समान, द्वितीय, ३. कभी, ४. एक दिन, ५. दुनिया की सच्ची  
 आँख, ६. हवाज़िन के कथनानुसार, ७. यूनानी सिक्का (द्राख्म, द्रम्य, द.म), ८. उच्च कुलीन,  
 ९. अनुपम, अनमोल, १०. जाति, ११. पथभ्रष्टों, १२. दानशीलता, १३. अन्त, १४. उद्देश्य,  
 प्रयोजन, १५. दया, १६. सराहा, १७. रोगियों, १८. उपस्थित, १९. अन्त्येष्टि, २०. भोज,  
 २१. मित्र-मंडली, २२. दृष्टि, २३. आग्रह, २४. ऐ मेरे भाई, २५. सदाँर, मुहम्मद,  
 २६. प्रातः-सायं, २७. बंधन, २८. बनावट, २९. बहुमान, ३०. भोजन, ३१. मदीनावाले,  
 ३२. राजा ।

\*वही, पृष्ठ ४४१ । ३३. था (हता), ३४. परिधान, ३५. शाह के पास, ३६. मोती,  
 ३७. प्रायः, ३८. आशा-पुष्प, ३९. उचित, ४०. अच्छा-अच्छा, ४१. सायं-प्रातः, ४२. पोशाक,  
 ४३. जीवन, ४४. मृतक-संस्कार ।

## § ३५ तुराव दखनी (१८४० ई०) :

‘मसनवी तुराव दखनी’, ‘रिमाला वारा वहार’ आदि काव्य-ग्रथों को तुराव ने लिखा। अब भी हूंदगवाद में इनके गीतों को गाते फकीर भीष मांगते हैं। इनकी कविताओं में लोकगीत का रस आता है। १८४० ई० में लिखी ‘वारावहार’ के नमूने हैं—

सुना हूँ गुलशनाबाद<sup>१</sup> एक नगर था।  
 वहाँ एक महजवी गुलस्<sup>२</sup> का घर था ॥  
 निहायत हुस्<sup>३</sup> में औतार<sup>४</sup> थी ओ।  
 कुल पचार में खूवार<sup>५</sup> थी जो ॥  
 जयी यो पाकदामन पारमा नार।  
 नमाज<sup>६</sup> पच वकर्ता होर जिऊ चार ॥  
 कभी नागा नहीं बगती थी अकमर।  
 चतुर मव औरता<sup>७</sup> में थी विचित्तर ॥  
 खमम राजी रजामन्द सब कपीला।  
 न जाने अीगता<sup>८</sup> का मर<sup>९</sup> व हीला ॥  
 अछं हिलमिल टमेशा ओ खमम सू।  
 के ज्यूं है आगना<sup>१०</sup> साजित-कदम<sup>११</sup> मूं ॥  
 कभी कोई नई हुआ आजुदा-खातिर<sup>१२</sup>।  
 अयो खुश-खल्क ओ दिलवर बजाहर<sup>१३</sup> ॥  
 जहाँ आवाज ना-महरम<sup>१४</sup> का आवे।  
 वो तावा कर वहाँ मूं अटनी जावे ॥  
 उँचा घूघट न मारा मुँह को खात्रे।  
 न बात<sup>१५</sup> शोषमिल शोषिया मूं बोले ॥  
 वलेकिन मरोफद नाजुक बदन थी।  
 मवल खूवा<sup>१६</sup> मने जाहु-नयन थी ॥  
 कमान - अरू निगह खजर पलक तीर।  
 अदा मैफे<sup>१७</sup> दुवारा जुल्फ जजीर ॥  
 सरोपा नाजनी दिलदार दिलवर।  
 बला थी, जुल्म थी, जालिम, मितमगर ॥  
 वहाँ लग उम परी-रू<sup>१८</sup> को मै सराऊँ।  
 दिने आशिव मिग कर कयो जलाऊँ ॥

१ फूलनगर, २ चन्द्रमुखी, गुलाबमुखी, ३ सौंदर्य, ४ अनुपम, ५ छल, ६ जानकार, ७ दूढ़ पग, ८ घ्याकुलचित्त, ९ प्रकट, १० देखने के अयोग्य, ११ सुन्दरियाँ, १२ दुषारी ततवार, १३ अम्सरामुखी।

गया था नौकरी को उसका खाविन्द ।  
 अकेली घर में थी दिलदार दिलबन्द ॥  
 हुये थे दिन जो कोई शातिर<sup>१</sup> न आया ।  
 खबर भी खैरियत की कोई न लाया ॥  
 पर उस नगर में ओ गुलबदन नार ।  
 कहीं मारे गया या ओ बीमार ॥  
 कहे फिर दाइ को ओ यों बुला कर ।  
 “बुला मुल्ला को दाई जल्द जाकर ॥  
 भौत दिन सों नही आई खबर है ।  
 न जाने क्या सबब उनके उपर है ॥  
 ओ अब लग नौकरी किसकी किये नै ।  
 जो घर की कुछ खबर हरगिज लिये नै ॥  
 या कइँ लश्कर में जा सँपड़े<sup>२</sup> हैं रन में ।  
 या कइँ अटके है शौक्रे-रागो-रँग मे ॥  
 या कोई सौकन ने दिल उनका बहलाई ।  
 या किसके जा हुये हैं घर-जँवाई ॥  
 भौत जादूगराँ राँडाँ वहाँ है ।  
 उनों जाकर रहे चाकर वहाँ है ॥  
 मेरे बिन यक घड़ी रहता नही था ।  
 मेरे बिन बात कइँ करता नही था ॥  
 अता भेजा नई झूटी किताबत ।  
 किया है जाके शायद वाँ की औरत ॥  
 किया तो खूब है जीता रहे ओ ।  
 खबर आई तो उसकी बस है देखो ॥”  
 सुनी यो बात सो दाई चली भार<sup>३</sup> ।  
 बेचारी नार कुँ करने गिरफ्तार ॥  
 जहाँ पड़ते थे लड़के भौत से मिल ।  
 वहाँ बैठा था मुल्ला एक फाजिल<sup>४</sup> ॥  
 ले तसवीह हात मे करता जिकर<sup>५</sup> था ।  
 लगन के दर्द सँ ओ वेखवर था ॥  
 रखे शमला चीरा बाँधे मद्दूर ।  
 करे सानी शरीअत काम अक्सर ॥  
 सुनावे सब कतों मसला - मसाअल ।

१. चालाक, २. पहुँचे, ३. बाहर, ४. विद्वान्, ५. सुमिरन ।



करी तमलीम जाकर उसको दाई ।  
 हकीकत बोल खत लिखने बुलाई ॥  
 मुना सो दाई सूं मुल्ता ने यो बात ।  
 चला ठेकर कलम दावात मगात ॥  
 खबर बीबी को दे आया है मुल्ला ।  
 कह बीबी "उसे घर में बुला ल्या" ॥  
 उन्हें बुत घर<sup>१</sup> में गोशा<sup>२</sup> कर बुलाई ।  
 विछीना करके परदे कन बिठाई ॥  
 अपी बँठी सुंदर परदे के अन्दर ।  
 बुला मुल्ला कूं अपने घर के भीतर ॥  
 बिठा परदे कने मुल्ला बिचाग ।  
 मुनो बारी लगन का यव नजारा ॥  
 गँवाया पारसा की पारसाई ।  
 बिया जुहद<sup>३</sup>-बो-रिया<sup>४</sup> की जग-हँसाई ॥  
 पूछा ले हाथ में मुल्ला वो खामा<sup>५</sup> ।  
 "हकीकत क्या लिखूं तो वो नामा<sup>६</sup> ॥"  
 देखा तो ओ परी-र साँकती थी ।  
 गरुरे हुस्न में ज्यो मदमती थी ॥  
 हुये एक बार जो चक्<sup>७</sup>-चार दोनों ।  
 रहे हँरत नूं हो लाचार दोनों ॥  
 यकायक देन दीवाना हुआ तब ।  
 लगा कहने को "बोली क्या लिखूं अब" ?  
 कहे ओ नाजनी सब अपना बहवाल ।  
 न समजी ओ हुआ सो देख येहाल ॥  
 हकीकत सब मुना बोली मो सुन्दर ।  
 कहा, भी क्या लिखूं गर ॥  
 कहे भी ओ परी मो करके तकरार ।  
 "खो फिर क्या लिखूं" बोला गिरिफ्तार ॥  
 कही दो चार बार उस कने तब ।  
 ममज के दिल मने दीवाना है तब ॥  
 देखी तो कुछ भी पडता है न लिखता ।  
 चुपी चुप "क्या लिखूं" कह कर विलखता ॥

कलम एक हात और एक हात किरतास<sup>१</sup> ।  
 बैठा हैरतजंदा<sup>२</sup> परदे के है पास ॥  
 कही तब दाई कुं गुस्से में आकर ।  
 “तू दीवाने कू क्यों लाई बुला कर ॥  
 गया था काँ तेरा तब होश दाई ।  
 जो ऐसे मस्त दीवाने कू लाई” ॥  
 कही तब दाई “मै लाई थी सयाना ।  
 इता दिसता हुआ उजड़ा दिवाना ॥  
 भला-चंगा सो मुल्ला ओ दिस्या तब ।  
 बिसर सब होश दीवाना हुआ अब ॥  
 लगा अब के अभी मै उसको शैतान ।  
 हुआ एक बारगी बदबस्त मस्तान ॥  
 हमारे गह्व में था ओ ई च नामी ।  
 भौत आलम तो करता है गुलामी ॥  
 मुआ सब फ़ाजिलों मे ओ बड़ा है ।  
 न जानो क्या सबब उस पर खड़ा है ॥  
 है सारे मुल्क में उसका पुकारा ।  
 जो करता खूब है सदका<sup>३</sup>-उतारा ॥  
 जहाँ लग भौत शैतानाँ खबीसाँ<sup>४</sup> ।  
 उतरते उसके ताबीजाँ सों एक साँ ॥  
 मुए तलपट की सब सुन कर भलाई ।  
 मुँडीकाटे को मै लिखने बुलाई ॥  
 मुए के जिव<sup>५</sup> के गुन मै जानती क्या ?  
 करेगा यो किकर मै पछानती क्या ?”  
 कहा तब दाई को “दे उसको जाने ।  
 भौत आलम में है स्याने - दिवाने” ॥  
 कही तब दाई “मियाँ तुम भार जाओ ।  
 नको चुप क्या लिखूँ कर गुल मचाओ ॥  
 बुला लेउँ तुम तो तब नईं थे दिवाने ।  
 भले चंगे दिसे तब मुजको स्याने ॥  
 यकायक क्या हुआ मै तुम पो वारी ।  
 बिसर कर अक़ल क्याँ गइ है तुमारी ॥  
 बड़े फ़ाज़िल तुमे मुल्ला कला<sup>६</sup> कर ।

भई किस अछर का पकड़ा तुमको छर ॥  
 भला अब जाओ अपने घर को प्यारे।  
 हुआ क्या तुमको मैं वारी तुमारे" ॥  
 विसर दामला उठे कुमला के मुल्ला।  
 रहा नई याद तसवी' औ मुमल्ला' ॥  
 कलम - दावात मुर उसी जागे सारा।  
 उठा सो 'क्या लिखूँ' कर हाँक मारा ॥  
 चल्या ओ 'क्या लिखूँ' करता विचारा।  
 लगा जब इश्क का सँके' दुधारा ॥  
 पड़्या आलम में उसका 'क्या लिखूँ' नाम ?  
 रहा होकर खाक गोई गुलफाम ॥  
 नहीं हरगिज कही खाता था खाना।  
 था फिरता 'क्या लिखूँ' कहता दिवाना ॥  
 मुने यो बात जो शागिद सारे।  
 नंगे पावा च दौडे सब विचारे ॥  
 देखे उस्ताद बते कर कदम बोस।  
 लगे मलने को सारे दस्ते अफमोस ॥  
 के ऐ साहेब-करम, फय्याजे - आलम्।  
 येता किस पास जाना दर्म को हम ॥  
 तुमे काँ गये थे खत लिखने की खातिर।  
 यकायक क्या गिरा है तुमने पर ॥  
 —मन्मवी तुराव दखनी

## शब्दानुक्रमणिका

अ

अकबर—८०  
 अकस—९८  
 अकायदनामा—३३१  
 अचंवा—३९, ५८  
 अचपली—१७८  
 अच्छराँ—१०६  
 अच्छ—५७, ६१, ६७, ७३, ९५, १००, १६१,  
 २०९, २१८, २९५  
 अच्छता—३२, ३४, ४५, ५४, ६२, ६८,  
 १४३, १५२, १८६, १९२, २०२, २०३,  
 २१०, ३१५  
 अच्छती—१५६, १८८, १९९  
 अच्छते—५७  
 अच्छना—४५, ४६, ५५, ६५, ७३  
 अच्छयाँ—२३४  
 अच्छर—३४०  
 अच्छरी—९३  
 अच्छसे—१२५, १२६  
 अच्छा—६६  
 अच्छाय—१३  
 अच्छाये—२१  
 अच्छी—१३०, ३२८  
 अच्छू (छूँ)—२२, २४, ७३, १४४, १८७,  
 १८९, ३१४  
 अच्छूँगी—६८  
 अच्छे—१९, २३, २५, २७, ४६, ५३, ६८, ११६,  
 १८४, २१२, २३५, २४९, ३०७, ३१६  
 अच्छै—२६, ३२, ३७, ४९, ५६, ६३, ६९,  
 ७५, १३६, १३९, १४१, १५०, १५४,  
 १५६, १६४, १६७, १८८, १९८, २०४,  
 २०७, २०८, २२७, २३०, २४३, २५५,  
 २६१, २६३, २६८, २६९, २७०, २७१,  
 २८८, ३०४, ३१६, ३३६  
 अच्छै (छै) गा—२०, ३५, ५४, ५५, ६२, ६८,  
 ७५, ११५, २१७, ३१६

अछैगी—१४९, १५६  
 अछैगीबी—५९  
 अछैगे—१४७  
 अछो—७, २१, ३७, ४५, ४६, ४७, ८४, ८७,  
 १३३, १३६, १३७, १४१, १५६, १६२,  
 १८२, १९७, २०६, २३०, २४३, २४६,  
 २४९, २५३, २५५, २६३, २८०, २८७,  
 २९०, ३०७, ३२९  
 अजऊलगा—१२२  
 अजकूँ—६७  
 अजहुँ—४७, ९६, २२१  
 अट—१९१  
 अडडाय—१४३  
 अडरा—१७५  
 अथा—२१, २६, १३५, १४२, १४६, १५०,  
 १५३, १५९, १६१, १६३, १६५, १७१,  
 १७३, १७६, १८३, १९५, १९६, १९७,  
 १९८, १९९, २०६, २०७, २१०, २१५,  
 २२४, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५,  
 २४६, २४७, २५२, २५४, २५९, २६१,  
 २६३, २७०, २७९, २८०, २८५, २८८,  
 २९०, ३००, ३१३, ३२९, ३३४, ३३५  
 अथी (थीं)—१६२, १६३, १६४, १७३,  
 १७७, २३७, २५४, २५५, २९९, ३२८,  
 ३३६  
 अथे—२४, १३६, १३८, १४०, १४५, १४६,  
 १४८, १५०, १६२, १६४, १७५, २३६,  
 २३७, २४२, २४५, २४६, २७७, २७८,  
 २८१, २८२, २८८, २९१, २९५, २९८,  
 ३१५, ३३४  
 अथ्याँ—१५५, १७८, २३३, २३४, २३५,  
 २४७  
 अदीत—१९१  
 अद्वैतवाद—२८४  
 अघान—२७  
 अनभौ—८

अनीस—३१८  
 अप—२०, १०३, १०७, ११४, ११७, ११८,  
 १२३, १२४, १४०, २०८  
 अपक—२२१  
 अपचौली—१०१  
 अपछरी—४२  
 अपते—२७२  
 अपन—१४०, १७९, १८९  
 अपनिय्या—६३  
 अपम—१३, २१, ५५, ५७, ५९, ६८, ७३,  
 ९०, ११२, १२१, १२२, १२३, १२९,  
 १३०, १३५, १५७, १८५, १८८, १९८,  
 २०१, २०६, २०७, २०९, २२५, २२७,  
 २३०, २३६, २३५, २३७, २३८, २३९,  
 २४८, २५९, २६१, २६३, २६८, २७२,  
 २७९, २८४, २८६, २८८, २८९, २९४,  
 २९५, २९७, २९८, ३२९  
 अपसकू—६, १२, ३१, ५०, ५५, ५७, ६०,  
 ६२, ६३, ६४, ६५, ७१, ९४, १११,  
 १६५, २२४, २२५, २८९  
 अपमके—१९  
 अपमते—६८ १६७, १८६, २२५, २५९,  
 २६०  
 अपस ने अपी—१४३  
 अपम ने जपे—६, १५४  
 अपस पेन्ज—२६  
 अपम मन—१६७  
 अपम मं—२९१  
 अपस मं—५७, ७४  
 अपम में अपस—६६, २६८  
 अपस में अपे (पें)—७५, २७, ५१, ६६, ६८,  
 ६९, ७४, १६१, १७२, १८३, १८८,  
 २००, २३८  
 अपमी—१३५, १८८  
 अपसे (सें)—१९०, २०७, २१२, २१८,  
 २१६, २१७, २८३  
 अपसे आपस—१०  
 अपमों—२९७  
 अपी—३३८  
 अपे (पें)—२२, २३, ४४, ४९, ५७, ६२, ६३,  
 ६६, ६७, ६९, ९३, ९५, १६८, १७३,  
 १७६, १७८, १८२, २०५, २१६, २६७,  
 २७६, २७९

अपे आपे लग—१६१  
 अपे च—५५  
 अपे वी—५७  
 अपे—२२१  
 अफजल—२२१  
 अफजल खॉ—२७३  
 अवलो च—७०  
 अवुल कादिर सर्वरी—२३० टि०  
 अवुलहमन—२२८  
 अवुलहसन कुतुब (ताना) शाह—२८५, २८९  
 अवुलहमन तानाशाह—२२८  
 अबूशहमा—१२८  
 अब्दुल—१२७  
 अब्दुलगनी—१२७  
 अब्दुल्ला—२२७, २२८  
 अब्दुल्ला कुतुब—१२८, २२७, २२८  
 अब्दुल्ला कुतुबशाह—१८  
 अब्दुल्लागज—३२६  
 अमाल—१४४  
 अमान—१२८, २८६, ३०१  
 अमीर खुसरो—७३९  
 अरकाट—३१३  
 अररा—२९१  
 अराई—१९  
 अलाउद्दीन—२५१  
 अलिफउल्ला—१३३  
 अली आदिल—२६२, २७३, २८०  
 अली आदिलशाह द्वितीय—२६०  
 अलीनामा—२५९, २६३, २७०, २७१, २७३  
 अल्जोरिया प्रेस (हैदगावाद)—३३२ टि०  
 अल्मास—१३८  
 अंगरफ—६, ८, ७९  
 अष्टावधान—१९९  
 अस—८, १२०  
 असदपुर—३१३  
 अममावाद—२२३  
 अमील—१९४  
 अस्तुत—९, ११६  
 अहमदनगर—८०  
 अहमदावाद—११, ३०५  
 अहरपनवाली—१३  
 अहे—२४८  
 अहै (है)—१९, २१, २३, २६, ५३, ६७,

९४, १०३, १०७, १११, ११३, ११८,  
 ११९, १३५, १६३, १६६, १७०, १७६,  
 १८१, १८९, २०४, २१५, २३२, २५१,  
 २६१, २६७, २८७, २८८, २९९, ३०७,  
 ३०८  
 अँखी—३४  
 अँ(अ)ग—५७, २७१  
 अगन मने—३६  
 अँग्या—४८  
 अँ(अ)गे—२१, ३३, ३६, ३८, ४८, ५०, ६२,  
 ६७, ९९, १०७, ११४, ११७, १३६,  
 १३७, १३८, १४२, १५३, १५५, १५६,  
 १५७, १६२, १७५, १८२, १८३, १९८,  
 २०२, २०४, २०५, २०७, २०९, २१४,  
 २३४, २४८, २५१, २६१, २६८, २७१,  
 २७६, २७८, २९४, २९९, ३२९  
 अँजुमन तरक्की-ए-उर्दू—२९  
 अँजुवाँ—५८, २९३, २९४  
 अँजू—५८, १६७, १८६, १८७, १९३, १९६,  
 १९७, २९१, २९२, ३१६  
 अँजो लग—२६८  
 अँझुवाँ—१२२, १२७, १६६, १९१, १९८,  
 ३२०  
 अँझू—२३, २५, २८, ५८, ६१, ६९, ९६,  
 १४०, १५२, १५६, १६१, १६६, १८८,  
 १९७, ३०२, ३१९, ३२१  
 अँपड—४  
 अँपडना—३६, ६२  
 अँपडने—३२  
 अँपडवै—५४  
 अँपडती—१९७  
 अँपडाइया—२१२  
 अँपडाता—४९  
 अँपडाये—१६८  
 अँपडावै—३९  
 अँपडी—१३९, २००, २५४  
 अँपडू—२०९  
 अँपडे—४, ४५, ७५, १८०, २७५,  
 २८९  
 अँपडेगा—१५६  
 अँपडो—७५  
 अँपडया—५४, ५५, १२१, २०६, २१०,  
 २२४, २३८, २७७

आ

आइया—२०३, २०४  
 आकिलखाँ राजी—२६४, २९०  
 आको—१९२, २०६  
 आख्या—८  
 आगा—११५  
 आछ—१७१  
 आछर—९९  
 आटा अट—५१  
 आतियाँ—६२  
 आतिशी—२२३  
 आतेच—१६१  
 आदिलशाही (बीजापुर)—२२९, २७१  
 आने भाने—१२२  
 आन्ध्र—३१२  
 आप च—२२  
 आपन आपस—१२  
 आपस आप—९  
 आपस के तौ—११६  
 आपस में आप—१६४  
 आपी—१२, ८२  
 आपी आपस—१२  
 आरामदिल—३३२  
 आरे—९  
 आला—५२  
 आले—४९  
 आस—१०९  
 आसता—१४९  
 आसते—८२  
 आसै (से)—९८, १४७, १६१  
 आस्ताँ—८४  
 आहू—२०६, २३६, २८८  
 आहू-बचा—३१५  
 आहूँ—२२१  
 आँचे च ते—५२

इ

इच—३३९  
 इत—६१  
 इता—६, ३३९  
 इताल—६०, ६५, ६६, ७०, ७२, ७३, ७४,  
 ७५, १५८, १७३, १७६  
 इते—६५

- कर्घा—५३, १८७, १८९  
 कर्घा लग—२८९  
 कर्घी—१८, २३, २७, ४६, ५५, ६१, ६२,  
 ९९, ११०, ११२, ११४, ११६, १५२,  
 १८६, १९७, २२७, २३४, २३६, २४४,  
 २७८, २७९, २९१, २९४, २९७  
 कर्घू—३०२  
 कर्घी—२४३  
 कन—८२, १०६, ११४, १२२, १७३, १९३,  
 १९७, २०२, २०४, २०५, २१३, २४६,  
 २५१, ३०८, ३३८  
 कना—२०, १५३, १५४, १९४, १९७, २०४  
 कने—७, २१, २६, ३५, ३७, ३८, ४२, ४३,  
 ४४, ४७, ५०, ५३, ५४, ५७, ६०, ६१,  
 ६२, ६३, ६५, ७१, १२५, १४३, १४५,  
 १४७, १४९, १५४, १५९, १६०, १६३,  
 १८५, १८७, १९५, २१०, २१४, २१६,  
 २६७, ३१५, ३१७, ३२९, ३३४,  
 ३३५  
 कनेते—२००  
 कवीर—२१८  
 कम् (भूँ)—३१०, ३२२, ३२३  
 कमालखीं दवीर—२४८  
 कया (याँ)—१९, ८३, २२४, २८८, २९१,  
 २९३  
 कयासी—३२८  
 कयें—१६४  
 कयेगे—५४  
 करलयाँ—१२२  
 करन—८५, १०९, २१०, ३२८  
 करनहार—१२९, १४४  
 करनूल—३०२  
 कन—११०  
 करमी—२५०  
 करसूँ—५६, १२१  
 करसे (से)—२१, १२६, १६४  
 करी—८७, १०८, १०९, १७३  
 कलावर—३३९  
 कलोल—२३  
 कल्मनूल-टकायक—९  
 कसन—९३  
 कसीदे—२६४  
 कस्या—३५  
 काँ—५९, ६५, २६८, ३०२, ३१९, ३२५, ३४०  
 काँका—६५, ६६  
 काँकी—६६  
 काँद—२९१  
 काँसो—३१५, ३३०  
 काइ में—१९२  
 काड—४०, ६८, ७३, १४४, १५३, १६४,  
 १७३, १७६, १७७, १९०, १९३, १९६,  
 १९७, १९८, १९९, २०७, २०९, २१०,  
 २३४, २७१  
 काडकर—२११  
 काडती—६४  
 काडने—२७५  
 काडा—५३, १४७  
 काडी—६६, ६८, ११०, १८०, ३१८  
 काडे—२३३, २७७  
 काड्या—४७  
 कादर—२२०  
 कादिर—३२७  
 काने—२२७  
 कारवाँ—२८४  
 कारी—१८४, २१२, २६२, ३१७  
 कारोमडल (चोलमडल)—३३०  
 कासा—२७८  
 कासे—२१०  
 कास्याँ—२८४  
 किवर—३३९  
 किडे—१०  
 कित्त—१२  
 किता—२४८  
 किते—२१, ४०, ९७, २२०, २३६  
 कितै काँ—२५  
 कित्ता—१०३  
 किन—८२, १४३  
 किनकाँ—१२४  
 किने (नेँ)—१४१, १४३, २१४  
 किस—१०८, ११४  
 किसते—११७  
 किसना—२२४  
 किसे—१४७, २८१  
 किस्सा बेनजीर—२२९, २३०, २३२  
 कीता—९, २८, १०२, १५८, १७२, १८९,  
 २१२, २२३, २४०, २४५, ३०४

कीती—९५, १७३, २११, २१४  
 कीति—१००, २७५, ३०३  
 कीना—६, ९, १५७  
 कीनी—१३०  
 कीली—२३३  
 कुँवर मनोहर व मद्रमाक्तत—२६४, २६७  
 कुच(ज)—२०, २१, २२, २३, २४, २५,  
 २६, २७, २८, ४६, ६८, ८२, ८४, १०८,  
 ११०, ११४, ११८, १२२, १२३, १२६,  
 १३२, १५०, १६९  
 कुच्च—२५  
 कुतुब—९०  
 कुतुबन—२६४  
 कुतुब-मुश्तरी—७, १७, १८, २६, २९, २३०  
 कुतुबशाह—२३९  
 कुतुबशाही—२५३  
 कुतुबी—२२६  
 कुमला—३४०  
 कुलाट—२३७  
 कुलाटी—२३७  
 कुलांदर्या—१५२  
 कुल्लियात—८३ टि०, ८३ टि०, ८४ टि०,  
 ८६ टि०, ८७ टि०, ८८ टि०  
 कुल्ली कुतुब—७९  
 कुच—९४  
 कुड़-कपट—११५  
 केकन—२६८  
 केतक—१४४, १७१, १७२, १८२, २००,  
 २०१, २१५, २३३, २४६, २५५, ३२९  
 केतना कुँ—२५४  
 केता—१११, १३२, १७७, २१६, २१७,  
 २३३  
 केताँ कुँ—७३  
 केती (तीं)—१३, २३२, २९३  
 केते—१६८, १९७, २११, २८१, २८२,  
 ३१०, ३२५, ३२८, ३४०  
 केतेक—५७, १३६, १४२, १४४, १४७,  
 १५१, १५८, २३३  
 केतेके—४३  
 केते (तेँ)—१०४, १३९, १५०, १५२, १५३,  
 १६०, १७४, ३२२, ३२९, ३३५  
 केता—१११  
 केत्यां—

केरा—१४४, १४५, १४७, १५४, १५६,  
 १५७, १६८, १७४ १७८, १९५, २०२,  
 २०४, २१७  
 केरे—१०१, १९५, १९७  
 कै(कै)—३१, ४३, १०७, १०८, १२५, १२६,  
 १३७, १४३, १४६, १६३, १६६, १७०,  
 १७१, १७३, १८१, १८५, १८८, १९७,  
 २०२, २०४, २६९  
 कैके—१२२  
 कैमने—२१७  
 कौड्या—१९१, १९४  
 कौड-कपट—७४  
 कौड-कपट मूँ—३८  
 कोण—२१८  
 कोना—९  
 कोप्लियाँ—८८  
 कोहनूर—२२७  
 कौ—१४४  
 कौगा—२१४  
 क्याँ(क्या)—१३५, २२६

ख

खडियाँ—५९  
 खडैगा—४५  
 खड्या—३५, ५४, १५०  
 खड्याँ—१३०  
 खत्तात (सुलेखक)-वंश—२४८  
 खदीजा सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह—२३९  
 खदीजा सुल्तान शाह् बानू—२४८  
 खन—२६२  
 खबमूरत—१२९  
 खम्सा मुत्वहरा—३३१  
 खलीफा—३, ५  
 खलीफा उमर—२३२  
 खलील अहमद—२५२  
 खवास खाँ—२३९  
 खावरनामा—२४८  
 खासै—५४  
 खिलात्याँ—१२१  
 खुतन—२५४  
 खुरासान—३०  
 खुल्दावाद—३  
 खुशनब्ज—५



- खुशनामा—५  
 खुशनुद—२३९, २४०, २४१  
 खुमरो—६  
 खुसरो नौशेरवाँ—२४०  
 खुस्रो देहलवी—३००  
 खैलतिर्याँ—६३  
 खोप—९०  
 खो (खा) पा—१००, १०९  
 ख्वाजा कमालुद्दीन वयावानी—५  
 ख्वाजा नमीरुद्दीन—२२६  
 ख्वाजा नमीरुद्दीन चिराग दिल्ली—३  
 ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया—३  
 ख्वाजा वदानेवाज (स्वामी भक्तवत्सल)—३  
 ५, १७, ७९  
 ख्वाजा वदानेवाज गेसूदराज—३, २५९  
 ख्वाजा मुईनुद्दीन चिन्नी (जजमेर)—३

## ग

- गजेमने—२५  
 गड देना—६५  
 गडवी—१४६  
 गडव्याँ—१४६  
 गघडे—२०८  
 गमते-गमते—३५  
 गल—१११  
 गलगले—१४४, १८०  
 गलवाल—६७  
 गहली—१०५, १२६  
 गाँवघनी—११  
 गार—२१०, २९८  
 गामाँ द तामाँ—२५९  
 गिरिनर कविगय—३१८  
 गुजरात—३, ८०, २५४, ३०१, ३०५, ३१२,  
 ३१८  
 गुडो—१०७  
 गुदगुदे—१८७  
 गुदगुलो—१६८, १९९  
 गुदगुल्याँ—१७१  
 गुलगुली—०३  
 गुलुग्याँ—३, २५१  
 गुलुगाने इम—०५९, ०६३, २६४, ०६६,  
 २७०  
 गुलुगाने जदनदिल (मनमहोत्सवोद्यान)—३१

- गुलामली—२८९, २९०  
 गुलामी (मली)—३२३  
 गुल्जारेइश्क—३३१  
 गुँदकर—२५  
 गुजरी—९, ३०१  
 गुोत्याँ—१७८, १७९  
 गुोघरी—३०१  
 गुोनीकेरा—१४६  
 गुोफन—२७५  
 गुोयाँ च—२१  
 गुोलुगुडा—७, १७, १८, १९, ७९, ८०, ८१,  
 १२८, १३१, १३०, २२०, २२३, २२६,  
 २३९, २५१, २५९, २८४, २८५, २८९  
 २९९, ३००, ३१८  
 गुोशव—३०४  
 गुोवासी—१७, १८, १२८, १३१, १३२,  
 १३३, १८४, १८५, २२३, २२४, २२८  
 २३०, २५१, २५२, २६६, २६७

## घ

- घट—४५, ५३, ५६, ६१, १०६, २७६, २८२  
 घड—६२  
 घनातन्द—३०५  
 घरदार—७४  
 घरें-घर—३६  
 घात—२५४  
 घाल—२०८, २१५, २४६  
 घालतिर्याँ—५७  
 घटी—६  
 घूगरवाली—३९

## च

- चचलम्—८०  
 च—५, २४, २७, ३२, ३६, ३८, ४०, ४२,  
 ४५, ४८, ५१, ५२, ५७, ५८, ५९, ६०,  
 ६३, ६५, ६६, ६७, ७०, १६४, १६७,  
 १७०, १८३, १८८, १९१, १९४, १९८,  
 १९९, २०१, २०६, २०७, २५५, २६७,  
 २६८, २७७, २८३, २८४, २९४, २९८,  
 ३००  
 चकलकर—५८  
 चकल-चकल—५३  
 चककोनामा—३, ४, ७९

चक्कीनामा उफानि ज्ञानचक्की—२८४

चख—८, ९, २४, २७, ३३८

चडी—७२

चडे—६०

चतर—३२३

चत्र—११५, १२१

'चन्द्रवदन व महियार'—२२३

चपाघेर—२०४

चम्पावती—२६७

चह—१२५

चहार—२०५, २०६, २१६

चहारमीनार—८१

चाँद वीवी—८०

चाई-माई—६३

चाक—२०

चाडीखोर—६२

चापनावु—९८

चाल—६८

चाला (लाँ)—६२, ६५, ९२, ११४

चाली—५१

चाले—४९

चिकलकर—२६७

चिकलना—६५

चिकली—१९६

चितर—४४

चितरता—४४

चितरुं—४४

चितलगन—२९२, २९४

चित्तिनी—९८

चित्तिरेना—४४

चिमटी—५०, २९४

चिरफडते—६३

चुनडियाँ—८३

चुननहार—२५

चेकारे—३०९

चोधेर—२०८

चीकवन—१५०, १६८, १७७

चीकदा—१५१

चीकवन—१३८, १६९, २०१, २७०

चीदन—१६५

ची (ची) घर—८४, ८८, १३४, १७९, २४५

ची (ची) घेर—१४८, १६०, १८१, १९८, २११,

२१३, २७५, २७७, २७८, २८२, २९५

चीफिरकर—१६०

चीफेर—२१, १६६

चीसार—५४, ६०, ६२, ६५, ६८, १०१

छ

छं (छँ) द—९०, ९७, ९९, १०५, १०६,

११३, ११४, १२०, १२२, १२३, १२५,

१३६, १९७, २४०, २४४, २६८, ३१५

छके—२३७

छत्र (व)—८५, ९९, १०१, १०५, १०७,

१०८, ११८, १२०, १८५, २०२, २६८

छर—३४०

छिनक—१९६, २९४

छिनकने—१६६

छुपगे—१३८

छँ—२८१

ज

जईफी—२९९

जकू—२१२

जगत (त्त) र—९, २९०, २९२

जगमोहन—३३२

जगा—५७

जगह—५२

जदाँ लग—८४, २४२, २४३, २४६

जद्याँ लग—१९७

जधाँ ते—६८, १९०, २०६

जधाँ लग—१३३, २५४

जनदिसे—१२

जना—५३

जनार्दन स्वामी—१०

जनियाँ—६१

जनी—६१, १५८, १६०, १६१

जनीमाँ—२११

जनूँ—१९०

जनै—३७, ६६, ६८, १४७, १४८, १६०,

१६९, २०४

जलमुड—१६६

जवाहर-उल्-इस्तारे-अल्ला—११, १३

जहाँगोर—८१, २९०

जाँ—२०, ३६, ५१, ६२, ७३, १६८, २५५,

२७७

जाँ लग—१८०

जाई—१५८  
 जाको—२०७  
 जागा—४७, ४९, ५४, ५५, ५७, ५८, ५९,  
 ६१, ६५, ७२, ७३  
 जागा-जाग—७४  
 जागा—३७  
 जागीर चटपेटा—३१३  
 जात—१४५, १५६, १५८, १६१, १६५,  
 १६७, १८५, १८६, १८७, १८९, २०२,  
 २०५, २१७, २२०, २२१, २२६  
 जातियाँ—६१  
 जाते च—५७  
 जानवरी—१९७  
 जायसी—२६४, २८९, २९०, ३१३  
 जाये—२३५  
 जाला—१९७  
 जासे—१४७  
 जिजाई—२१८  
 जिता—२३, २४, २४६  
 जिते—१९  
 जिने—२९, १४६  
 जोतियाँ—६७  
 जीव—१२८, १५३, १९५  
 जुवेरी—२६३  
 जता—५३, १३७, १४८, १५२, २०३  
 जते—११४, १४०, १५०, १८२, २२६,  
 २४५, ३२७  
 जते च—१९०  
 जमियाँ—३६, ५८  
 जोहर—२७३  
 जोकी (शाह हुसेन बटल उर्फ ज्ञानसागर)—  
 ३१  
 जोजये ताजिर—३२८  
 जोनपुर—२६४

झ

झज—३०२  
 चनों वे—२६७  
 चमकता—२८९  
 झमकती—१४३  
 झमकते—१६५  
 झमकने—१६८, १८२  
 झल—६९, २९६

झलता—१६५  
 झलते—२२१  
 चाड—४०, ४६, ५५, ६९, १४६, १४७,  
 १५२, १५३, १५७, १६२, १९६, २०५,  
 २३०, २३४, २३५, २३७, २४४, २४५  
 झाडाँ—४, ४०, ५८  
 झाडाँ-झालियाँ—३९  
 झाडाँ पे—२९१  
 झाडे—११७  
 झा (झाँ) प—१५३  
 झा (झाँ) प घाली—१२७  
 झाल—२८  
 झुकी—१२  
 झुडरी—१२७  
 झोलने—१४६

ट

टडा—२९५  
 टलमुँ—१७४

ठ

ठार—२१, २२, २३, २८, ४०, ४१, ४९, ५६,  
 ५९, ६१, ६३, ६४, ६७, ६८, १०६, ११९,  
 १३०, १३४, १३८, १३९, १४४, १४६,  
 १४८, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६,  
 १६०, १६२, १६५, १६९, १७१, १७२,  
 १७४, १७६, १७७, १८५, १८८, १८९,  
 १९३, १९५, १९६, १९७, २०४, २०६,  
 २०८, २१०, २११, २४४, २५४, २६२,  
 २६३, २६८, २७२, २७५, २७६, २७८,  
 २८२, २९५, २९६, ३०३  
 ठार-ठार—१३५ १८० १४१ १४२, १४३,  
 १४५, १४७, १४८, १४९, १५१, १५२,  
 १५४, १७८, १८०, १९७, २३८

ठारता—१८५

ठारते—१७५

ठारा—१५, १२२, १२६, २२३

ठारे (रें)-ठार—३६, ४२, ४७, ५३, ५८,  
 ७१, ७३, ७४, ११९, १७२, २२९,  
 २७२

ठिडकाँ—२१२

ठैर—८५

ठौग—२२९

ड

डंख—१०  
डट—४५  
डरसूँ—२७२  
डागरै—१४५  
डाल्याँ—४, ५  
डमकन्याँ—१७७  
डूंगर—३४, ७१, २३९, २७१, २७६  
डूंगरा—१७०

ढ

ढोंडा—१८०

त

तइं (ईं)—१२, ८९  
तगाद्याँ—६३  
तज्किरा उद्दू-मख्तूतात्—६ टि०  
तडखिया—१४०  
तती—१९२  
तदाँ लग—२४२, २४३, २४६  
तधाँते—२०६, २९३  
तवई—१९, २२८, २८५, २८६  
तबले—१३६  
तमीम अंसारी—२३० टि०, २३२  
ताई (ईं)—८६, २११, २९७, २३८  
ता धेर—२०४  
तानाशाह—२८५, २९०  
ताराचन्द—२६६  
'तारीख अहवाल सलातीन बीजापुर'—२६३  
तिनों कूँ—२४६  
तिरजुग—२७५  
तिस—१२, ८३, २६०, २६८, २७५, २७६,  
२७९, २८३, २९७, ३१५  
तिसकूँ—९  
तिसते—२७०  
तिसुँ—१८०  
तिल—४५  
तिलकूँ—१०९  
तिलमने—२९२, ३२९  
तुँजमाने—८२  
तुअ च—२८७  
तुकाराम—२१८  
तु (तुँ) ज—५४, ७०, ८२, ९२, ९८, १०१,

१०३, १०५, १०६, १०७, १०९, ११०  
१११, ११३, ११५, ११७, १४१, १९७,  
२०६, २४३, २६८, २९१, २९२, २९३  
तुज अँगो—२७४  
तुजकन—१७२  
तुजते—१८८, २२६  
तुजते अँगो च—२०६  
तुज तैँ—९४  
तुजधेर—१८७  
तुजपो—१९२  
तुजबाज—२९३  
तुज्जबाज—९३  
तुजसेरी—११२  
तुज सों—१९०, २९२, २९३  
तुज सों च—२९३  
तुजे—४२, ५९, ६८, १३१, १७६, १९८,  
३०९, ३२२  
तुट—२७६  
तुटे—३५, २७७  
तुटै—१००  
तुतै—११५  
तुमन—८२, १०९, १२४  
तुमन कन—११४  
तुमन कूँ—११४, ३२१  
तुमनासों—२०५  
तुराब दखनी—३३६  
तुलसीदास (गो०)—१०, १७, २९, ८०, ८१,  
१२७, १३१, १८४, २२१, २२३, २३९,  
२५१  
तुसूँ—१६७  
तुसों—१६५, १७०, १८३, १९५, २९२, २९३  
तू च—१९०, २६१, २६२, ३२९  
तूट—१६४, १६७, १७८  
तूतीनामा—१३१, १३२, १८२, १८२ टि०,  
२३०  
ते (तैँ)—५, ८, १९, २१, २६, ३१, ३४, ४०,  
५१, ५४, ६५, ८२, ८४, ८९, ९०, ९४,  
१०६, १०७, १०८, ११०, ११२, ११४,  
१२२, १२४, १२६, १४७, १८०, १९०,  
१९४, १९८, २०१, २०४, २७३, ३३०  
तेच—६८, १८४  
तेरे च—२६१  
तै (तैँ)—११४, १३९, १४८, १५७, १७०

- १७७, १८३, १९७, १९९, २२५, २९०,  
 ३२९  
 तैमूर—३०, ८१  
 तैमूरलग—३  
 तो च—७१  
 तोसकियाँ—९८  
 तोहफ तुनिमा—३३१  
 तोहफत्रे जहवाव—३३१  
 तोहफये आशियाँ—३०२  
 तीभीफनामा—७, ७९  
 त्या (त्याँ)—२३८  
 त्याकी—२१८  
 त्याके—२०४  
 त्यो च—८०, ४३, ८९, १७०, १८३  
 निचनापल्ली—३३०
- य
- य (यँ) ट—००, २५५, २७०  
 यडक—१८८  
 यटत—८७  
 यड ते—२७२  
 यट सो—२७३  
 याट—१७४  
 युडी—१४६  
 युडडी—१०१  
 यो बडा—१४६  
 योबडे—१४५  
 य्याँ—९२, १२९, २३५, २३७, २६७, २८१,  
 २८२, २९५
- व
- 'दक्कन में उर्दू'—३१३ टि०, ३०८ टि०  
 'दक्खिनी का पद्य और गद्य'—१० टि०, ८१  
 टि०, २०० टि०  
 दडे—१०  
 दरपनी—२३१  
 दलिदर—२०९  
 दन्नूर-उरगाक—३०  
 दह—२७९  
 दह-मजिलम—३१४  
 दाट—१४४, १८७, २१०  
 दाटया—२१०  
 दादमहल—८१
- दायम—२९  
 दाख्वा—३८  
 दाखे—६०  
 दाखस्तानत—२२७  
 दाखू—५२, ७१, ९४, २४८  
 दिगर—१९  
 दिपे—९७  
 दिलने च—२४  
 दिल्ली—३, २२६, २२८, ३११  
 दिवा—१३८  
 दिष्ट—२६, ११४, १५४  
 दिम—७३, १०१  
 दिमना—२८, ३९, ४०, ४५, ९३, ९४,  
 १००, १४९, १७२, १७३, १८७, १९६,  
 २२१, २९३, ३३९  
 दिसती—५६, १२०, १२२, १५१, १८५  
 दिसते—४, ११७, १७१, १७५, २२०, २२१,  
 २४५, २७६, ३२६  
 दिमत्याँ—९६, १८४  
 दिसन—२७५  
 दिसना—७३  
 दिमनं—१९६, २००  
 दिमव—२८५  
 दिमा—२४५, २४७, २९९  
 दिनो—३८  
 दिनुं—१०  
 दिसे (में)—२३, ५२, ८३, ११४, १२२, १५४,  
 १७०, १८६, १९२, १९८, १९९, २०३,  
 २२४, २३३, २३५, २३६, २३७, २६९,  
 २७०, २८१, २८२, २८३, २८७, २९१,  
 २९५, २९६, २९७, ३०४, ३३९  
 दिसे—९१, १००, १३६, १४६, १६३,  
 २७२, २७३  
 दिसेगा—६९  
 दिस्ट—१११  
 दिस्ती—१०८  
 दिस्त्याँ—२७६  
 दिम्या—६४, १४८, १४९, २३५, २३९,  
 २४७, २६१, २७७, २७८, २८०, २९३,  
 २९७, ३३९  
 दीना—८०  
 दीया—१०  
 दीदाँ—१६६

दीदियाँ—३९  
 दीघाँ—६३, ६८  
 दीनी—१२७  
 दीप—२९०  
 दीपक-पतंग—२९२, २९५  
 दीपै—१०४  
 दीवा—५९  
 दीवान—८१, ८२ टि०, २२३, ३०२, ३०५,  
 ३०६, ३३०  
 दीवान-आगाह—३३१  
 दीवान-हुसेनी—३१८, ३२०  
 दीवा-बती—१३५  
 दीवे कूँ—६६  
 दीसे—१०६, ११७  
 दीसै—८४, ९६, १०७  
 दुँबाल—४६, ६२, २१३  
 दुँबाला—३५  
 दुभत—२१८  
 दुर—२२४  
 दूद—१५७, ३२४  
 दूलह—३१८  
 देक—२०, २१, २६, १४७, २२०, २२१  
 देखसँ—१९१  
 देवगिरि (दौलताबाद)—३, १०  
 देस—२५, २९, ३१, ३२, ३४, ३५, ३७, ४१,  
 ४४, ४६, ४७, ५१, ५६, ५७, ६०, ६१,  
 ६४, ७३, ७४, ९५, १०२, १०३, ११६,  
 १२१, १२२, १६६, १७५, १९१, १९५,  
 १९८, १९९, २०१, २०२, २०५, २०७,  
 २७०  
 देसाँ—४१, ४३, ५७  
 देसँ—१५४, १७६  
 देसे—२४३  
 देहुग्राम—२१८  
 दौलत—१२८  
 दौलताबाद (देवगिरि)—२८५  
 द्योस—१३४, १३५, १३९, १४१, १४२,  
 १४४, १४६, १४७, १५०, १५२, १५६,  
 १५८, १६१, १६२, १६३, १८२

घ

घँगाना-अछना—७३  
 घंगड—६५

घंदा—५  
 घग—१३७  
 घड़ पो ते—१७५  
 घन—२६, १०६, ११८, ११९, १२०, १२४,  
 १२५, १९५  
 घनि—२६, २७  
 घरतरी—१५५  
 घरतिरी—१४३, १८१, २०१, २०२  
 घर ते—१३५, १३८, २६१  
 घरी—२०१  
 घलाती—१०१  
 घात—१८, २४, २५, २६, २७, ३२, ४२,  
 ४९, ५३, ५५, ९४, १२८, १३६, १३७,  
 १३९, १४२, १४३, १४८, १५१, १५२,  
 १५३, १५६, १५७, १६१, १६२, १६३,  
 १६४, १६७, १७०, १७२, १७३, १७४,  
 १७८, १७९, १८०, १८१, १८६, १८७,  
 १८८, १८९, १९१, १९२, १९८, १९९,  
 २००, २०२, २०४, २०५, २०८, २१२,  
 २१३, २१४, २१५, २१७, २२६, २३१,  
 २३३, २३५, २४७, २४९, २६३, २६७,  
 २६८, २६९, २७०, २८१, २८२, २९०,  
 २९१, २९७, २९८, ३०४, ३१५, ३२९,  
 ३३४  
 घात-घात—२२, १३६, १४४, १४८, १७३,  
 १९७  
 घातसाँ—२१५  
 घाताँ—९४  
 घिर—२०९, २९४  
 घीट—८५, २९१  
 घीरक—१६७  
 घुँड—११९, १७४, २१२  
 घुँडती—१८९  
 घुँड-घुँड—१८१  
 घुँडला—१८८  
 घुँडू—१९९  
 घुँडेगा—२१७  
 घुलारा—१५३, १५५, १७५  
 घुलारे—२३४  
 घुडया—१३०  
 घुँड—३३, २२६  
 घुँडता—३४  
 घुँडते-घुँडते—६३, ६६

- घूढ-घूढ—२०१  
 घुटे—३८  
 घेर—१६६, १७२, १७५, १७६, १८२,  
 १८४, १८८, १९१, २००, २०३, २०८,  
 २०९, २१०, २११, २१६, २६७, २८२,  
 २९८  
 घेरते—१७५, १७८, २०७, २१४  
 घेरे—२०५  
 घोज—३०१  
 घोर ते—१६६, २८१  
 घौदा—३०१
- न
- नई—९०, ३३९ ३४०  
 नई (ई)—७०, २९३  
 नको (की)—५, ६, २३, २६, ३३, ८०,  
 ४६, ४७, ५१ ५३, ६६, ६७, ७१, ७२,  
 ७३, ११९ १५९, १६४, १६७, १६८,  
 १९०, १९२, २०८, २०९, २१६, २१८,  
 २२६, २५१, २६९, ३०२, ३०८, ३०९,  
 ३१०, ३३९  
 नजिक—१५९, १६७, १७०, १७१, १९२,  
 २०७, २२५, ३०७, ३०८  
 नजिक ते—२०७  
 नजीक—१६१, १६६, १७१, १७५, १८०  
 नटियाँ—८९  
 नटे—२८४  
 नमन—८६, १०७, १२८, १२५, १२६,  
 १६५, १८०, २०८, २३०, २३४, २३५,  
 २३६, २३८, २४६, २७६, २८१, २८९,  
 २९१, २९२, २९३, २९५  
 नमने—८५, १२२, २५५, २८६ २९८  
 नमने च—१९५  
 नमने—११४  
 नरम तार—१४६  
 नवाव अब्दुल् मजीद साँ—३१३  
 नवाव मैसूर (टीपो मुल्तान)—३१३  
 नवाव सालारजग—३१४  
 नमोस्वीन हासिमो—२२, २५० टि०, २६६,  
 ३१३ टि०, ३२८ टि०  
 नस्तालोक—८१  
 नस्रती—२५२, २५९, २६०, २६२, २६४,  
 २६५, २६६, २७०, २७१, २७३, २८०
- नहार—२६  
 नागरीदाम—३०५  
 नानक—६, २१८  
 निका—२९०  
 निगट—२७८  
 निछर—२७३  
 निछर—१९, १०७, १३७, १३८, १३९,  
 १४८, १५१, १५६, १५७, १५८, १६८,  
 १६९, १७१, १७३, १७८, १७९, १८२,  
 २४२, २६९, २८६, ३००  
 निजामी—२५२, २८०  
 निजा (जाँ)—१०४, १४५, १५४, १६६,  
 १९६, १९७, २०२, २०५, २७०  
 निजाइ (ई)—१८६, १९४  
 नियाती—१८३  
 नियाना—२००  
 निज्ञाने—१७०  
 निज्ञाय—१८५, १६५, १८४, १९५  
 निज्ञाया—२६०  
 निज्ञावे—१६६  
 निज्ञ्या—१८४  
 निपज—२३, १६६, १८८  
 निपजते—८४  
 निपजाया—१६३  
 निपजी—१८८  
 निपजे—९७  
 नमन—१००, १०१  
 निमने—९३, ९८  
 निमान—२५१  
 निगाती—७, २२८, २५१, २५२, २५३,  
 २५५  
 नूरजहाँ—८१  
 ने च—२६  
 नेट—१७४, १९४, २०४  
 नेगापुर (खुरामान)—३०  
 नेहदपन—२९२, २९८  
 ने (नेँ)—२०, २१, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५,  
 ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ९३,  
 ११०, ११९, १३५, १४०, १४१, १४४,  
 १५१, १५२, १६४, १६८, १७२, १७४,  
 १७५, १८२, १८५, १८७, १८८, १९६,  
 २०२, २०३, २१०, २११, २१७, २२३,  
 २२६, २३४, २४६, २४९, २६८, २७१,

२८६, २८९, ३०९, ३१०, ३१५, ३२०,  
३२१, ३२३, ३२४, ३२५, ३३१, ३३३,  
३३४, ३३७

नैसानी—८७

नोय (यें)—१८९, २०७

नौ—१०७

नौकसीदे—२५९

नौमुस्लिम—२५९

नौसिरहार—६, ८, ७९

न्हनपन—४१, १२२

न्हनवा—२०८

न्हना—२११, २८१

न्हनी—१५८, १५९, १६२, १८२, २०१, ३१५

न्हनियाँ—५४

न्हने—२११, २१४, २६९

न्हनेकूँ—२११

न्हने तै—५४

न्हन्ना—५३, ६१, ७१, २६२

न्हन्नी—४६, ६७, ९०, ९१

न्ह्नाट—२५, ५४, ६४, ६६, १७५, २३५, २९८

न्ह्नाटता—१४९

न्ह्नाटना च—५१

न्ह्नाटा—५५

न्ह्नाटे—५१

न्ह्नाट्या—४८, ५३, ५४

न्ह्नानपन—४०, ४१

न्ह्नास—१४६, १४७, १४८

न्ह्नासता—१५०

न्ह्नासता-न्ह्नासता—१४९

न्ह्नासने—१४८, १५२, १५३

न्ह्नीजी—८६

प

पं (पँ) खी—९५, ९९, १२१, १२४, १४८,  
१५२, १५३, १६३, १८५, १८६, १८९,  
१९२, २०२, २०८, २१३

पंछीनामा—३०२

पंछीवा चा—३०२, ३०३

पंजतीस—१८२

पंजी—२२२

पंद—११२

पछानो—१२

पछी (छीं)—४१, ४५, ५०, ५२, ५५, ५६,

५९, ६१, ६२, ६५, ७२, ७४, १५९, २०१,  
२५५, ३३०

पछे—१८३, २६१

पडन—१२१

पत—४६

पतियाता—६४

पतियाना—५७

पतियाये—३७

पतियार—७०

पतियावै—६९

पत्याता—११०

पत्यारा—१२३

पदड्या पै—२२६

पद्मावत—२६४, २६४ टि०, २८९ २९०,  
३१३

पन—१२, १९, १२९, १६९, २७९, २८०  
३२४, ३३४

पनाला—२७३

पनाला-विजय—२७०

पन्हियाँ—२१८

पयो पै—१४४

पयों—१९

परस—१११

पवांगी—१११

पागा—२४९

पाच—२०, ९३, १३४, १६९

पाटों—७४

पाड—१९०

पाडकर—२११

पाडती—६४

पाडी—६६

पातियाँ—६१

पादशाह—३१, ३३, ३४, ३५, ४२, ४३, ४४,  
४५, ४८, ४९, ५०, ७०, ७१, ७२, ७३, ७५

पादशाही—१५२

पाया—११४

पार—१५३

पार चा—१४१, १४२

पास—१९५

पिगलावै—९४

पिछडाय—३०१

पिछडी—८३

पिछाडे—१४८



पिछान—४०, ४४, ४५, ७०, १५९, १९५,  
 २०३, २०७, २१३, २६१  
 पिछानता—५६, ५९  
 पिछानती—६२, ६३, ३३९  
 पिछानते—५७  
 पिछानना—७३  
 पिछाना—३०२  
 पिछानी—२६९  
 पिछानू—३२१  
 पिछानै—४१, ६०, १२२  
 पिछानेगा—७५  
 पिछानै—४४  
 पिछान्या (न्याँ)—४१, ६४, १०५, १७२  
 पिछी—५९  
 पिछीडे—१५४  
 पिनाई—३२९  
 पिनाओ—३३५  
 पिन्हानी—८७  
 पिरित्त—१२२, १२३, १४४, २२४  
 पीरित्त—१२१, १२३  
 'पुस्तक तोहफनुन्नमाहय'—२२६  
 पूना—२७३  
 पेछान—२०  
 पेने—१४८  
 पेम—११३  
 पेम-माता—११८  
 पेरिस—२६४  
 पेरेम—९१, ९७, ९९, १२०, १२१, २३०  
 पेलाट—४०, १५२, १८५, १९०, २०३  
 पैके—२०९  
 पैठन (प्राचीन प्रतिष्ठान)—१०  
 पैते—१७४  
 पैन—१०६  
 पैनी—३३५  
 पैमने—१६४  
 पैरहन—३०७, ३२४, ३२७, ३३५  
 पैले—२१८  
 पैस—२०४  
 पैसकर—२०२, २०६  
 पो—१९६, १९७, २०३, २०७, २०८, २१०,  
 २१२, २३३, २९५, २९६, २९८,  
 ३००, ३१६, ३३९  
 पोते—१३२, १७७, १८१, २०७, २१०

पों (पों) चाने—३३५  
 पों (पो) चे—२७५, ३३४  
 प्रबोध चन्द्रोदय—३०  
 प्रेमा—२६६

## फ

फेंकुडियाँ—३९, ५८, ८८  
 फडके—११५  
 फनर—१२२, १९०, २७५  
 फत्तर—७१  
 फत्ताही (मुहम्मद यहिया)—३०  
 फराख—१४५  
 फरायद-दर-अकायद—३३१  
 फरिश्ता—८०  
 फरोदुद्दीन अत्तार—३०२  
 फलफलाल—१५०  
 फलफुलाली—१९२  
 फातूहात आदिलशाही—२२३  
 फास—९६  
 फिर त्याँ—२६८  
 फिरदीसी—८०, २४८  
 फिकहाय-इस्लाम—३३१  
 फीरोज—७, १७, २१, ७९, २५२  
 फीरोजशाह—३  
 फुग्या—१८०  
 फुट्या—१३९  
 फुलदल—१२७  
 फुसलातियाँ—६१  
 फूलरी—१३  
 'फूलवन'—७, २५१, २५२, २५३, २५४  
 २५५, २६०, ३१३

## ब

बँदन—१२३  
 बाई च—५४  
 बगड्या—७४  
 बड्या—५४, ७१  
 बछराँ—१३४  
 बट्याँ—१७८  
 बतरी—२११  
 बत्या—१५२  
 बदल—१९२, १९९  
 बदलसार—१८९

वदीउज्जमाल—१४०  
 वदीयुज्जमाल—२६७  
 वलवँद—२१  
 वसरा (मेसोपोटामिया)—२९२  
 वसलाइया—१४५  
 वसलाइये—१६१  
 वसलायकर—३५, १८०  
 वसलाया—३३  
 वहमनी-राज्य (ज)—३, ७९, ८१  
 वहमनी रियासत—८०  
 वहराम—२८६  
 वहराम-गुलन्दाम—१९  
 वहराम गौर—२४०  
 वहराम व हुस्मवानू—१२८, १२९  
 वहरामो-गुलन्दाम—२८५  
 वहार—१३०, १४७, १५२, १६६, १८१,  
 १८६, १९३, १९६, २०४, २०६, २११,  
 २८२, २९२, २९४, ३२९  
 वहुभान—१३८  
 वहोत—२०  
 वा—११८, १२७  
 वाकर—३३४  
 वाकर आगाह—३३०  
 वागर्लिगमपल्ली—२२७  
 वागे-जा-फैजाँ—३०२  
 वा (वा) चा—६, १३  
 वा (वा) ज—४, २०, २८, २९, ३१, ५७,  
 ७४, ९०, १०९, ११०, १११, ११२,  
 ११३, ११९, १४१, १४४, १७१, १७३,  
 १९०, २०५, २२२, २५२, २६०, २६३,  
 २९३, ३२०  
 वाटसारु—१५८  
 वाताँ—४२, ५२, ६१, ६६, ७०, ७२, ९४, १०३  
 वाताँ मने—२४, २०८  
 वातिन—१६३  
 वावर—८१  
 वार—१४६, १४७, १८८, २६१, २६२,  
 २६९, २९६, ३०८  
 वारहमासा—२२१  
 वाव (व)—५१, ५७, ८९, १०३, १०४,  
 १०८, १२६, १३८, १४४, १४८, १६८,  
 १६९, १७५, १८९, १९०, १९६, २३७,  
 २७३, २८२

बावें कधन—१९४  
 बाहिदवारी—६  
 विचकते—१३८  
 विचडावै—६२  
 विव्लोथिक नाशयोनल—२६४  
 विरख—१६२  
 विरखा—२१८  
 विरलावै—१३  
 विसलाइया—१३४  
 विसातीनुस्सलातीन—२२९, २६३  
 विसाते—२५१, २५२  
 विहारी—२८५  
 वींद—१२६  
 वी—२६, ४१, ४३, ४४, ४५, ४८, ५४,  
 ५६, ५९, ६१, ६३, ६४, ६५, ६७, ६८,  
 ६९, ७२, ७३, १३०, २२०, २५०  
 वीजापुर—५, ८, ८०, १२७, १२८, १३२,  
 २२३, २२९, २३९, २४०, २४८, २५१,  
 २६०, २७३, २८४, २९२, ३१८, ३३०  
 वुज—१२३  
 वुडवुडा—९८, ११२, २७२  
 वुडवुडे—११२, १२५, १७५  
 वुडी—१२७  
 वुरहानपुर—३१८  
 वुरहानुद्दीन गरीव—३  
 वुरहानुद्दीन जानम—८, ७९  
 वुलवुल—२२३  
 वुलाख—१४५  
 वेगे च—४५  
 वेद—१३४  
 वेसला—१५२, १७२, २१४  
 वेसलाइ—१७१, २१०  
 वेसलाव—१६१  
 वेसायगी—७३  
 वै (वै) स—१३५, १७५, २०५, ३  
 वैसकर—१४६  
 वैसला—१५९, १७०, २०७  
 वैसलाइ—१७७  
 वैसाइकर—१३९  
 वैसिया—११२  
 वै (वै) सी—१५५  
 वोंप सों—८९  
 वोंबी—१४६

वोय—२८२  
 वोर्ड लियन पुस्तकालय (ऑक्सफोर्ड)—२६४  
 ब्रिटिश म्यूजियम (लंदन)—२६८, २६५

भ

भगवत्-रहस्यसार—११  
 भडकल—३२९  
 भमोल—२१९  
 भमोल्ले—२२२  
 भवमति—२६४  
 भा—१८६, १९०, १९३, १९९, २०९  
 भागनगर—८०, १३१  
 भागमती—८०, ८१, ९०, ९६, १३१, २२७  
 भागवत—१०  
 भागीरथी—७९  
 भाता—११५, १८७, १९०  
 भान—५०, ५२, १५६, १६०, १६१, १७३,  
 १७५, २११  
 भाना—७१, १२५, १४०, १६०, २२६  
 भाना—५२, १५५, १५६  
 भानदास—१०  
 भाने—५३, १३५, १५३, २०७, २१३, ३१७,  
 ३१८  
 भाया—१९६, २८९  
 भाषणे—१८९  
 भार—५७, ६१, ६३, ६६, ६७, ७०, ७३,  
 १३७, १८५, १४८, १४९, १५०, १५४,  
 १६१, १६२, १६४, १७५, १८२, १८९,  
 १९५, १९६, १९७, १९९, २०८, २०९,  
 २१२, २१४, २१५, २१६, २१७, २२६,  
 २३४, २४४, २४९, २७२, २७८, २८३,  
 ३२८, ३३०, ३३७  
 भितराल—१४९  
 भूक—१५३  
 भूपण (कवि)—२७३  
 भ्रम—१६०  
 भोन—५६  
 भौत—१०, ०१, ०७, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५,  
 ३६, ३७, ३८, ३९, ४१, ४३, ४४, ४७,  
 ४९, ५१, ५२, ५६, ५७, ६०, ६१, ६३, ७३,  
 १०२, १३०, १८१, १४५, १५९, २४१,  
 २४९, २५०, २५१, २५४, २८८, २८९,  
 २९०, २९१, ३२८, ३३३, ३३७, ३३९

भौता—७१

भौतिक—८२

भौते च—२३, ३६, ३७, ४९, ५२, ५५, ५७  
 ५८, ६१, ६५, १३९, १५८

भ्वग—९७

म

मँग—२६, ३७, १६८, १६९, २५२  
 मँगता—३२, ३३, ३८, ३६, ३८, ३९,  
 ८१, ४५, ६५, १५९, १९८, २०६,  
 ३१६  
 मँगती—४३, ५४, ५७, ६५, १८९  
 मँगते—४४, ५६, १०६, ११४, १२२  
 मगनहार—१३८  
 मँग-मँग—६१  
 मँग—२२५  
 मँगो—४२, १६२, २६८  
 मँग (गू)—७, ८२, १८७  
 मँग—८२, ९५, ११२, १२४, १५२, १९५,  
 २०४, २२५, २४३, २६३, २७५, २९६  
 मँगगा—२०  
 मँगर-मँगन—८९  
 मझन—२६४, २६५, २६७  
 मदल—१७७  
 मुशी इशा अल्ला खाँ—३३०, ३३२  
 मुशी सदासुखलाल—३३०  
 मल्लूम जी शेख मुहम्मद इब्राहीम—७  
 मयार—३०४  
 मता—१७८  
 मतिराम—२८५  
 मती—१५०, १६५, १६९, १७८  
 मर्या—१४८  
 मद्रास—३१२, ३३०  
 मधुमालती—२६४, २६५, २६९  
 माधोदास गुजराती—२६४  
 मनजीवन—३३२, ३३३  
 मनदपन—३३०  
 मनदीपक—३३२  
 मनमोहन—३३२  
 मनहरन—३३२  
 मन—७, १९, २२, २५, २६, २९, ५०, ९०,  
 ९२, १००, १०१, १०२, १०५, ११२,  
 ११३, ११७, ११८, ११९, १२३, १२५,

रती—१११, ३०२  
रयन—९४, ९६, १०७, १४८, १५९, १६९,  
१८७, १९१, १९८, २३८  
रसन—९३  
रहसी—११५  
रहसे—१६१  
रहेगिया—५९  
राइ—२०२  
राउ—८  
राकस—१४९  
राजकिशन प्रेस—३३३ टि०  
राजवट—५६  
राता—८  
राती—१११  
रामचन्द्र शुक्ल (वाराणसी)—२६४ टि०,  
२६५, २६६  
रामचरितमानस—१०  
रामायण—१०  
राय—२०१, २०३, २०४, २०५, २०६,  
२०७  
रायरायाँ—२०२  
रायाँ—११५  
रायाँ मने—२०३  
रास—२१२  
राहतजान—३३२  
राहरो—२६१  
रियाजुल्जनाँ—३३१  
रियाजुस्-सैर—३३१  
रिसाला—२८५  
रिसाला वारावहार—३३६  
रीते—१६५  
रीस—१०१  
रुधाना—२२८  
रुपेरी—२९५  
रुस्तमी—२४८  
रूपसिगार—३३१  
रुही—३२६  
रै—१२२  
रैया—१०४  
रैवा—१२०  
रैहाँ—१७१  
रोल ने—१९  
रौजतुल्-इसलाम—३३१

रौज तुहश्शुहदा—३१३  
रौं-रौं—११९

ल

लंगर हौज—२२०  
लकलकाट—१७४  
लकवर्स—२३  
लग—२३, २६, ३३, ५४, १३३, १३७,  
१३८, १८३, १८७, १८९, २००, २०८,  
२२२, २३१, २४२, २४४, २४५, २४७,  
२७२, २९४, ३०१, ३१०, ३१७, ३१८,  
३२६, ३२८, ३३०, ३३६, ३३७  
लबद—१२४  
लबदाइ—१४३  
लब्दाये—२६  
लब्दाँ—१४५  
लब्दी—२०९  
लब्दाँ—१२१  
ललललाल—३३०, ३३२  
लसड़ी—१४७  
लाउ—२१४  
लाक—३९  
लागर—१८४  
लानहारी—६५  
लाबाँ—९६  
लाल—३०५  
लीता—९  
लुतरी—६२  
लेखे—१५९  
लै—१४४, १९५, १९९  
लोकाँ—३५, ३७, ४७, ५१, ७३  
लोगाँ—४७, ४९, ६१  
लोड—५६  
लोडना—२१७  
लोडँ—२११  
लोडे—८, २०४, २२७  
लोडया—४८, ५३  
लोलो—३२३  
लोहगाँव—२१८  
लहार—२७२, २७६  
लहो—३२२  
लहोआ—७१  
लहौ आट—१४६

व

- वजही—५ ७, १७, १८ १९, २१, २९, ३०,  
३१, १२८, १३२, २२४, २२८, २३०,  
२५१, २५२, २८६
- वजा—२०, १८०
- वजूदिया—२८५
- वज्जो—३०२, ३०३
- वता—१३७, १४८
- व (व) रजोर—५३, १२३, ३१८
- वली (औरगासादी)—२८५, २९२, ३०५,  
३१२, ३१३, ३१४
- वली (महाकवि)—२५१
- वली दकनी—३०५
- वली मुहम्मद—३०५
- वली वल्लोर—३१२, ३१३
- व (व) स्त्रे—४, ६, २०, २१, २२, २३, ३६,  
४१, ४२ ४३, ४५, ४९, ५१, ५२, ५५,  
५७, ६१, ६२, ६३, ६४, ६७, ६८, ६९,  
७१, ७३, ८७, ९३, ९९, ११०, १११,  
१२३, १२६, १३५, १४१, १४४, १४६,  
१५४, १५७, १६४, १६५, १६७, १६८,  
१८१, १८३, १८५, १८६, १८७, १८८,  
१९२, १९३, १९५, १९८, २००, २०२,  
२०७, २११, २१६, २१७, २३०, २३५,  
२४३, २४४, २४५, २६१, २६२, २६३,  
२६९, २७१, २७२, २८२, ३०३, ३०८,  
३१०, ३३१, ३३३
- वलेकिन—११८, १३१, १८७, १९५, २३१,  
२३४, २३५, २६६, २९९ ३१६, ३३६,
- वा—३६, ३७, ६३, ७३, १२१, १३०, १४७,  
१६८, १७८, १८०, १८३, २०५, २३३,  
२५५, २७७, २९८, ३०७, ३०८, ३३०,  
३३७,
- वाँच—२०४,
- वाँति—१५१, १८०, १९७, २०६, २१३,  
२३१, २६८
- वाँ लग—२०९
- वाँ मो—३१३,
- वाजिया—१५०
- वाया—१०४
- वार—१३० १३४
- वारसू—१२४
- वा रा—१५५

वाराणसी—१०

वालमीकिरामायण—२४८

वास—११८, १२१

विजयनगर—७९

विद्यापति—१७, २५१

वृन्दू—३०५

वै—२७१

वैताँ—१४०

वेलोर—३१२, ३३०

वोकै—१५९

वै (वै)—१३८, १४१, १४४, १४५, १४७  
१४९, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६  
१६३, १७०, १७१, १७२, १७३,  
१७६, १७८, १७९, १८३, १८८, १९२,  
१९७, १९९, २०१, २०२, २०३, २०५,  
२०७, २०८, २०९, २१०, २१३, २१४

व च—३२९

वा—१९, १६६

वा (वो) च—२६, ४२, ४४, ४९, ५५, ६२,  
६३, ६८, २०८, २०९, २११, २१७, २४९

वोगी—८२

श

शागिना—९८

शागाल—१४७

शता—१९४

शमला—३४०

शमा-परवाना—२९०

शम्शूल-उशशाव—५

शाहपारे (जदू)—५

शाहादुतुल-हकोवत—५

शार—१५९

शास्त्र—१९५

शाहअली—११

शाह-आलम—१२८

शाह-उस्ताद (राजगुरु)—१२७, १२८

शाहजहाँ—१८, ८१, २२९, २३०, २४०,  
२५९, २६४

शाहजादा-आजम—२८५

शाहपुर—५

शाहबुरहान—८, ९

शाहमर्गुबुल-कुलुब—५

शाह भौराजी—५

शाहराजू हुसेनी—२८५, २८६, २९२  
 शाहरख—३०  
 शिवाजी—२६२, २७०, २७३  
 शीराज—२२३  
 शुभ—२०६  
 शेख दाऊद जईफी—२९९  
 शेख मंझन—२६४  
 शेख युसुफ देहलवी—२२६  
 शेख वजीहुद्दीन वज्दी—३०२  
 शेख शरफुद्दीन अशरफ—६  
 शेरशाह सूरी—२९०  
 शौकी—२५२  
 श्रीराम शर्मा—१० टि०, ३१ टि०, २२० टि०

स

सँगा (घा) त—२४, ३८, ४३, ४४, ४८, ४९,  
 ५१, ६१, ६२, ७२, १२९, १३१, १३६,  
 १३७, १४४, १४५, १४७, १४८, १४९,  
 १५६, १५८, १६०, १६१, १६८, १७३,  
 १७४, १७७, १९१, १९२, १९६, २०६,  
 २१३, २१७, २५१, २५४, २६३, २६९,  
 २९७, २९९, ३२९, ३३८  
 सँगातिन—१६२, १६४, १६५, १६८  
 सँगा (घा) ती—१२, १३, १११, १४३,  
 १६७, २४२  
 सँगाते च—१५८  
 सँपडती—१०२  
 सँपडा—१००  
 सँपडाइया—१५१  
 सँपडाने—१२२  
 सँपडे—१२३, ३३७  
 सँपडो—७५  
 सँपड्या—४८, ५४, ५५, ११९, १७६, २०६,  
 २२४  
 सँपारा—९३  
 सँपोली—९७  
 संकल्प सूर्योदय—३०  
 संध्याभाषा—८१  
 संपद—८४  
 सकसीं—११४, १६५  
 सकसूँ—२०२  
 सकियाँ—८९  
 सकी—२४, २८, ५३, ८५, ९२, ९५, ९६,

११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११९  
 १२२, १२६  
 सक्याँ—९२, ९३, १०५, ११४, ११८, १२२  
 सगसार—१४९, १५०  
 सगीमाई—१६२  
 सचला—२१६  
 सतियाँ—५७  
 सती—३०२  
 सदलमिश्र—३३०  
 सदी—२८१  
 सनअती—२२८, २२९, २३०, २३२, २५२  
 सनपात—२९८  
 सबई—२२९  
 सबरस—५, १७, १८, २९, ३०, ३० टि०  
 ३१ टि०, ३३ टि०, २३०  
 सनझनहारी—६५  
 समद—१९, २०  
 समर्थ रामदास—२१८  
 समूँकेरा—९  
 सरवन—८३, ११८  
 सराऊँ—१०७, २४०  
 सराने—१३८, १७९  
 सराया—२२४  
 सराँव—२०३  
 सर्वन—१०७  
 सलावतखाँ—२७१, २७३  
 सलावतजंग—२७३  
 सवाद—९, ३२, ५४, ६१, ६५, ७४  
 साँच—२०२  
 साँचली—९३  
 साजाँ—८९  
 सात—२०, २५, २८, ११०, १३७, १३८,  
 १३९, १४४, १४८, १५४, १६७, १७९,  
 १८७, १९१, १९३, १९९, २१०, २१३,  
 २५०, २६३, ३१३, ३१७, ३२०, ३२७  
 सातगढ़ (मद्रास)—३१२  
 साती—५७, १११, २४२  
 सादी (महाकवि)—२५२  
 सार—१०७, १४६, १५५, १५८, १७१,  
 १७५, १८२, १८४, १९१, १९६, १९८,  
 १९९, २०२, २०३  
 सारका—८४, १३४, १४१, १४६, १४९,  
 १५२, १७४, २४३, २७४

- सारके—१४५, १४६  
 सारक्याँ—२३३  
 मान्खा—१५३, १५८, १८७, २०२, २३२,  
 २४५  
 सारखी—३००  
 सारियाँ—५०  
 साव—२३  
 सामानी-वश—२४०  
 मिगा-मुतक—२९ टि०  
 मिहलद्वीप—२९०  
 सिक्न्दर आदिल—२६०  
 सिके—२४०  
 सिक्पा—२०४  
 मिघाट (कडगा, आन्ध्र)—२५३, ३१३  
 सिमहूँ—९  
 सिरन्दीप—२६७  
 मिराने—५७  
 मिलमिला युसुफिया (हैदराबाद)—१८०  
 १८०, २३० टि०  
 'सुखसुहेला'—८  
 सुट—२७, ३३, ४०, ५६, ६१, ९८, १२०,  
 १९४, २०१, २१०, २४४, २७७, २९०,  
 २९१, २९३, २९४, ३१७  
 सुटके—१२३  
 सुटता—६८  
 सुटने—३१८  
 सुटो—१६५, १६९, १९४, १९६, २०१,  
 २३८, २९३  
 सुटुँ—१५७, १६४, १६६, १९३, २६९  
 सुटे—२८, १८४, १५८, १६०, १६९, १७५,  
 १७७, १८४, १८७, १९३, २००, २०८,  
 २३४, २८७, २९८, ३१८  
 सुटो—८४  
 सुट्याँ—२९५  
 सुटया—३४, ४४, ५८, ६७, ९७, १५३,  
 १५५, १६७, १७३, १७६, १८८, २००,  
 २१३, २१५, २७८, २९३, ३०२  
 सुद—५८  
 सुद—२७  
 सुवन—१९१  
 सुनेरो—२९५  
 सुनत-जमात—२२७  
 सुना—३७, ४६, ६८, ६५  
 सुने—२९, ३८, १०८, १२५  
 सुने केरे—१८३  
 सुल्तान—२८५  
 सुल्तान अबुल हमन कुतुब (तानाशाह)—३२६  
 सुल्तान अब्दुल्ला—१३२  
 सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब (शाह)—१३१, १३२,  
 २५१, २५३, २८४  
 सुल्तान अब्दुल्ला हयात बरखी—२२७  
 सुल्तान इब्राहीम आदिल—२२९  
 सुल्तान इब्राहीम कुतुबगाह—२८८  
 सुल्तान इब्राहीम कुली कुतुबगाह—१७  
 सुल्तान मुहम्मद कुतुब (शाह)—१३३, २३९  
 सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुब (शाह)—७९,  
 ८०, ८१, ८२ टि०, २२०, २२७, २५१  
 सुसरा—२००  
 सुहरावै—१२  
 सूका (काँ)—९७, १००  
 सूो—१०३  
 सूनेमने—३०६  
 सूगत—३०७  
 सुरदास—६, ८, २५१  
 सैती—८, २१, ६०, ८२, ८४, ९१, ९६,  
 ९७, ९८, १०२, १०३, १०८, ११४,  
 ११६, ११८, ११९, १२०, १२३, १२४,  
 १२६, १३०, १३१, १४३, १४५, १४७,  
 १५५, १५८, १६२, १६४, १६६, १६७,  
 १७४, १८१, १८२, १८३, १८५, १९०,  
 १९९, २००, २०५, २४२, २४९, २७२  
 २९१, २९२, २९४, २९५, २९६, २९८,  
 ३०२, ३१८, ३२०, ३२१, ३२३, ३२४,  
 ३३३  
 मेते—२०७  
 सेवट—२७९  
 सैफुलमलूक—१३२, १३३, २२३, २३०, २६७  
 'सैफुलमलूक व बदीउज्जमाल'—१३१, १३३  
 सैयद अब्दुल्ला—३२८  
 सैयद मीराजी हुसेनी—२८४  
 सैयद मुहम्मद खाँ इथती—२९२  
 सैयद मुहम्मद फ़याज—३११  
 सैयद मुहम्मद हुसेनी—३  
 सैयद मुहम्मद हुसेनी (मुहम्मद) कादिरि जोर  
 (डॉ०)—४ टि०, १८, ८२ टि०, २५३,  
 ३०५, ३१२, ३२०

सैयद युसुफ शाह—३  
 सैयद युसुफ हुसेनी—२९२  
 सैयद हुसेन—२९२  
 सोस—१८५, १९१, २११  
 सोसी—२७, १९९  
 सौकन—६३, ६४  
 'सौदागर की बीबी'—३२८  
 से:पारा—३  
 स्प्रिगर—३१३, ३२६  
 स्वादकियाँ—६१

ह

हजरत अली—२४८  
 हजरत मुहम्मद—२३२  
 हजाज (अरब)—२२८  
 हट—४५, ५२, ७१, २१०  
 हटकती—३९  
 हत—६०, ८३, ८४, ८६, ८७, ९१, ११४,  
 ११७, १२०, १२३, १३३, १४८, १४९,  
 १५१, २८०  
 हतकडक—१७९  
 हत ते—२८  
 हत म ने—१९३  
 हत में हात—२६८  
 हती—५०, १०५, १३६, २४४, २८७  
 हतीसार—१४७  
 हतेली—९०  
 हत्ती—३९, ५८  
 हथ्याँ—२८३  
 हमचुँ—३१२  
 हमन—७, १२७, १३१, २०६  
 हमनकुँ—१४२, ३२१  
 हमनबाज—१६४  
 हमन मने—११२  
 हमन सेती—११३  
 हमना—५३, १२४  
 हमनाकुँ—८७, १५६, २४६  
 हमनात—२६९  
 हमनापो—२४६  
 हमनासेती—१९६  
 हयात बख्शी वेगम—२२७, २२८  
 हयातवाद—२२८  
 हरक हुँ—३१०

हरना—४९  
 हरेकस कुँ—१८१  
 हलों—१४९, १५०, १५३, १५८, १६३,  
 १६६, १७३, १७७, १८०, १८३, १८४,  
 १९४, १९५, १९६, २०९, २५५  
 'हस्त-बहिष्ट—२३९, २४०, २४२, ३३१,  
 ३३२, ३३३, ३३४  
 हसतियाँ—५९  
 हसन गंगू अलाउद्दीन हसन बहमनशाह—३  
 हस्तिन—९८  
 हाँसू—२३  
 हाजीबाबा—२४१  
 हात—३९, ४६, ४८, ५३, ५७, ६५, ६६,  
 ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, १०५, १०८,  
 १११, ११८, १३१, १३८, १३९, १४१,  
 १४२, १४७, १५०, १५४, १६०, १६३,  
 १६५, १६९, १७४, १७६, १७७, १७९,  
 १८२, १८५, १८९, १९३, १९४, २०६,  
 २०९, २१६, २३३, २३५, २४५, २९६,  
 २९८, ३१५, ३२०, ३२२, ३२३, ३२९,  
 ३३९  
 हातकुँ—४४  
 हात ते—५५  
 हात सों—३१८  
 हाताकुँ—१४६  
 हाता मने—२४२  
 हाताँ—८४  
 हाताँ मने—२४  
 हाताँ सों—१६९  
 हाफ़िज—३०५  
 हारसूँ—१२४  
 हाली—१९६  
 हाशिमअली—३१८, ३२०, ३२४, ३२५  
 हाशिया मनदर्पन (मनदर्पनसार)—३३०  
 हिच—१४४  
 हिदायतनामा—३३१  
 हिदायात हिन्दी—२९९  
 हिन्दी-साहित्य का इतिहास—२६४ टि०.  
 २६५ टि०, २६७ टि०  
 हिरासत खाँ—३१२  
 हिलगे—६१  
 हिलग्या—५९  
 हिलसूँ—१७४



- हिल्पावना—११३  
 हिल्ज्या—१२७  
 हिल्डोनी—९१  
 हीला—२१०  
 हुइर्या—६७  
 हुलग—१६२  
 हुसेनशाह—२६४  
 हुस्नवानू—२४०  
 'हुस्न व दिल'—३०  
 'हुस्नोदिल'—३०  
 है च—१९  
 है गे—३१९  
 हेगा—३१०, ३१२, ३१९, ३२४  
 हेगी—१४३  
 है च—३०७  
 हेदरमहल—८०, ८१, ९०, ९६, १३१, २२७  
 हैदरावाद—२२ टि०, ३० टि०, ३१ टि०,  
 ८०, ८१, १३१, १८२ टि०, २२० टि०,  
 २२८, २३० टि० २५३, ३१३ टि०, ३१४,  
 ३२६, २३८ टि०, ३३६  
 हैदरावाद गाजी बडा दरवाजा—२९२  
 हैयो—१९८  
 होको—२१२  
 होग्या—३५  
 होडो—५७, १४७  
 होतियाँ—६१

- होर—४, १३, १९, २०, २१, २२, २३, २४,  
 २६, २८, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६,  
 ३८, ३९, ४१, ४३, ४४, ४५, ४७, ४८,  
 ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५८, ५९,  
 ६०, ६१, ६२, ६४, ६५, ६६, ६७, ७०,  
 ७१, ७२, ७३, ७५, ८८, ८९, ९३, १०७,  
 १११, ११२, ११४, ११६, ११८, ११९,  
 १२१, १२२, १२४, १२५, १२६, १२८,  
 १३१, १३३, १३६, १३९, १४०, १४१,  
 १४२, १४४, १४५, १४८, १४९, १५०,  
 १५२, १५३, १५४, १५८, १६३, १६४, १६५,  
 १६६, १६८, १७०, १७१, १७७, १७९,  
 १८१, १८२, १८३, १८६, १९२, १९३,  
 १९४, १९६, १९७, २००, २०१, २०२,  
 २०५, २०८, २०९, २११, २१२, २१५,  
 २१६, २१७, २१८, २२०, २२४, २२६,  
 २२७, २२८, २३३, २३४, २३५, २३७,  
 २४०, २४५, २४६, २४९, २५०, २५५,  
 २६८, २६९, २७५, २७७, २८१, २८२,  
 २८८, २९१, २९४, २९५, २९६, २९७,  
 २९८, २९९, ३००, ३०४, ३१६, ३१७,  
 ३१८, ३२६, ३२९, ३३३  
 होरहिया—१०३  
 होसी—२७, ३१, ३२, ६६, २०२  
 होसे—१२२, १५९, १७३, २०२, २०३,  
 २२६, २४४

